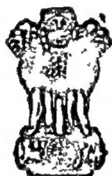
उद्योग-व्यापार पत्रिका



ज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

विषय सूची

विशेष लेख

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा —

जानकारी विभाग

ग्राफ विभाग

सांख्यकी विभाग

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

परिशिष्ट

भारत सरकार के व्यापार और उद्योग मन्त्रालय के प्रकाशन-सम्पादक द्वारा प्रकाशित।

सूचना :—

इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सम्बन्ध जब तक विशेषत स्पष्ट न लिखा जाय, भारत सरकार अथवा उसके किसी भी मन्त्रालय से नहीं होगा।

उद्योग-व्यापार पत्रिका

खण्ड ३] नई दिल्ली, अक्तूबर १९५४ [अङ्क ४

★★★ काजू उद्योग में भारत को एकाधिकार प्राप्त है। विदेशी विनिमय, विशेषतः डालर प्राप्त करने का यह अच्छा साधन है

काजू उद्योग को और भी बढ़ाया जाय

मसाला जांच समिति की महत्वपूर्ण सिफारिशें

काजू उद्योग इधर युद्ध के पश्चात् विशेषत बढा है। अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया आदि में काजू की माग बराबर बढती जा रही है।

इस समय मुख्यत भारत से ही ससार भर को काजू भेजे जाते हैं। अफ्रीका के काजू भी पहले भारत आते है और यहाँ से तैयार होकर अन्य देशों को जाते हैं।

मसाला जाच समिति ने देश में काजू उद्योग को बढाने की जहा सिफारिश की है वहा उसके विकास के लिये भी अनेक सिफारिशें की हैं। समिति ने इसके लिये एक विकास कोष स्थापित करने का भी सुझाव दिया है।

विगत २५ वर्षों में खपत तेजी से बढ़ी

ससार के समस्त देश काजू को मुख्यत भारत से ही मगाते हैं। ससार भर की ६० प्रतिशत माग भारत ही पूरी करता है। भारत के अतिरिक्त पूर्वी अफ्रीका और ब्राजील मे भी काजू का व्यापार होता है। ब्राजील में काजू अपेक्षाकृत कम उपजता है। पूर्वी अफ्रीका का प्राय समस्त कच्चा काजू भारत भेज दिया जाता है और यहा उसकी गिरी निकाली जाती है।

ससार भर में काजू की गिरी की माग बढ़ती जा रही है। पिछले २५ वर्षों में यह विशेषत बढी है। अमेरिका मे काजू की खपत बडी तेजी से बढी है। १९२५ में जहा यह ५० टन से भी कम थी वहा अब वह बढकर २०,००० टन हो गई है। इसी प्रकार आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका और यूरोप के अधिकाश देशों मे भी यह बढी है।

पश्चिमी और पूर्वी तटों पर काजू की खेती

काजू वास्तव मे भारत का मूल पौधा नही है। प्राय ४०० वर्ष पूर्व इसे पुर्तगाली ब्राजील से भारत लाये थे। पहले यह मिट्टी की कटान रोकने के लिये लगाया गया था परन्तु फिर धीरे धीरे इसकी गिरी के कारण भारत मे इसकी खेती होने लगी। इस समय इसका तेल और गिरी दो वस्तुएँ ही उपयोग मे आती है।

काजू की अधिकाश खेती दक्षिण भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी तटो पर होती है। यह सबसे अधिक मद्रास राज्य, मलाबार और दक्षिणी कनाडा जिलों मे होती है। पूर्वी तट के विजगापटम, दक्षिणी आरकाट, तिरुचिरापल्ली, ताजोर और पूर्वी गोदावरी जिलों मे भी यह होती है परन्तु कुछ कम

परिमाण में। मद्रास और आन्ध्र के चिंगलेपट और गुन्टूर आदि जिलों में भी काजू के पेड़ पाये जाते हैं। त्रावनकोर-कोचीन राज्य में प्राय: सर्वत्र काजू उपजता है। बम्बई राज्य के रत्नागिरी और उत्तरी कन्नडी जिला में तथा मैसूर और कुर्ग के कुछ भागों में भी काजू पैदा होता है।

रद्दी और पथरीली भूमि

साधारणत: काजू का पेड़ ३० से ४५ फीट तक ऊंचा होता है। परन्तु कहीं कहीं यह बहुत ऊंचा होता है। इसकी जड़ें बड़ी दूर दूर तक फैलती हैं। इसलिये यह ऊसर, बंजर, रद्दी अथवा पथरीली भूमि में भी पैदा हो जाता है। यह १२० इंच से अधिक भारी वर्षा वाले क्षेत्र में और २५ इंच से कम वर्षा वाले क्षेत्र में भी उपजता है। आंधियों से इसे हानि नहीं पहुँचती परन्तु पाले से यह मर जाता है। इसकी खेती के लिये मौसमी वर्षा आवश्यक होती है।

पश्चिमी तट पर प्रत्येक पेड़ से औसतन २० पौण्ड काजू प्राप्त होते हैं। पूर्वी जिलों में यह औसत कुछ अधिक रहता है। पूर्वी तट पर खेती बिखरी हुई है और नये नये क्षेत्रों में इसका विस्तार होता जा रहा है। इसी कारण उपज का औसत अधिक है।

खेती का क्षेत्र

१९५१ ५० में काजू की खेती कुल २,२३,१२८ एकड़ में हुई जो राज्यों के अनुसार इस प्रकार थी :—

मद्रास	१,३५,०३६ एकड़
त्रावनकोर कोचीन	८२,९४५ ,,
बम्बई	४,५०६ ,,
कुर्ग	१५५ ,,
मैसूर	५०० ,,
योग	२,२३,१२८ ,,

१९५१ ५२ में ६० १०० टन कच्चा काजू उत्पन्न हुआ जो राज्यों के अनुसार इस प्रकार रहा —

मद्रास	३३,००० टन
त्रावनकोर कोचीन	२०,००० ,,
बम्बई	४,५०० ,,
अन्य	२,६०० ,,
योग	६०,१०० टन

काजू की कुल उपज का आधे से अधिक भाग मद्रास राज्य के मलाबार और दक्षिणी कनाडा जिलों में पैदा होता है। कच्चे काजुओं के छिलके उतारने का काम अधिकांश में त्रावनकोर राज्य के क्विलन नगर के कारखानों में होता है। वहां इस प्रकार के प्राय: १५० कारखाने हैं। काजू का तीन चौथाई निर्यात व्यापार भी इसी राज्य से होता है।

देश में खपत

भारत के विभिन्न राज्यों में १९५१ ५२ में ६०,००० टन से अधिक काजू की खपत हुई। १९३८ ३९ से १९४०-४१ तक इस खपत का अनुमान ४५,४०० टन रहा है। इससे प्रकट होता है कि गत दशक में देश में काजू की खपत ३३ प्रतिशत अधिक हो गई। हाल के वर्षों में काजू के क्षेत्र और उत्पादन दोनों में ही वृद्धि के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। अभी उपज बढ़ाने की ओर भी गुंजायश है। मलाबार की अधिकांश और त्रावनकोर कोचीन की प्राय: समस्त उपज को क्विलन के कारखाने खरीद लेते हैं। उपज का केवल थोड़ा सा भाग ही कालीकट और मंगलौर को जा पाता है।

पूर्वी अफ्रीका से अधिक आयात

यद्यपि सब से अधिक काजू भारत में पैदा होता है तथापि विदेशों से भी बहुत सा कच्चा काजू भारत मंगाया जा रहा है। १९५१-५२ में विदेशों से कुल ४७,८५३ टन (३ ०७ करोड़ रु०) बिना छिला काजू मंगाया गया। १९५२ ५३ में यह परिमाण बढ़कर ५१,६८७ टन (४ ६६ करोड़ रु०) हो गया। १९५३ ५४ में परिमाण बढ़कर ६४,२०० टन हो गया परन्तु मूल्य थोड़ा गिरकर ४.७३ करोड़ रु० रह गया। मूल्य में यह कमी मूल्यों का स्तर गिर जाने के कारण हुई है। देश में होनेवाली उपज और विदेशों से आने वाली मांगों के अनुसार ही विदेशों से भारत में काजू का आयात किया जाता है। भारत में कच्चा काजू ब्रिटिश और पुर्तगाली पूर्वी अफ्रीका से आता है। पूर्वी अफ्रीका के ब्रिटिश प्रदेश में काजू के व्यापारिक महत्व को अनुभव किया जाने लगा है और काजू छीलने के कारखाने चालू किये जाने की योजनाएं बनाई जा रही हैं।

उपज बढ़ाने की आवश्यकता

अफ्रीकी काजू के आयात और वितरण का कार्य बम्बई की कुछ प्रमुख फर्मों के हाथ में है। इन फर्मों की पूर्वी अफ्रीका के बन्दरगाहों में शाखाएं हैं और उन्होंने वहां के काजू के व्यापारियों आदि के साथ अच्छे सम्बन्ध बना रखे हैं। इस कारण इनके हाथ में काजू के आयात व्यापार का एक प्रकार से एकाधिकार आ गया है। इसीलिये काजू छीलने वाले कारखानों को अपने लिये माल प्राप्त करने को इन पर निर्भर रहना पड़ता है। भारतीय कारखाने साधारणत: नवम्बर से मार्च तक विदेशी काजू काम में लाते हैं। मार्च के बाद देशी काजू की फसल आने लगती है और फिर ये कारखाने उसकी छिलाई आरम्भ कर देते हैं। विदेशों से आने वाला तीन चौथाई काजू क्विलन के कारखाने ले जाते हैं, शेष एक चौथाई मंगलौर कालीकट के कारखानों को मिलता है। विदेशी और देशी दोनों प्रकार के ही काजू से कारखानों की मांग पूरी नहीं होती। इस समय उन्हें केवल ९-१० महीने के काम लायक काजू ही मिल पाता है। अत: साल में २-३ महीने वे बन्द पड़े रहते हैं। इससे प्रकट होता है कि देश में काजू की खेती बढ़ाने की कितनी आवश्यकता है। कच्चे काजू में से गिरी

निकलने का औसत देशी काजू में २५ प्रतिशत और अफ्रीकी काजू में २६ प्रतिशत रहता है।

कच्चे काजू को छीलने का काम बड़ा नाजुक और कठिन होता है। यदि इसे ठीक ढंग से नहीं किया जाता तो गिरी कम निकलती है और वह खराब भी हो जाती है। काजुओं को साधारणत चार प्रकार से भूना जाता है (१) खुली कढ़ाई में, (२) मिट्टी के बर्तनों में, (३) घूमने वाले ढोलों में और (४) तेल में तलकर।

खाने के लिये देशी काजू की गिरी ही स्वादिष्ट होती है। इसके छिलके से तेल भी अच्छा निकलता है। कच्चे काजू में ७० ७२ प्रतिशत तक छिलका निकलता है और इस छिलके में से २४-२५ प्रतिशत तक तेल निकलता है। अनेक कारखानों में केवल १० १२ प्रतिशत तक तेल निकलता है। तेल का अधिक अंश प्राप्त करने के लिए छिलका उतारने की विधियों में सुधार करने की आवश्यकता है।

डालर प्राप्त करने का साधन

काजू की अधिकांश गिरी विदेशों को भेज दी जाती है। पैकिंग में सुधार होते जाने से इसका निर्यात भी बढ़ रहा है। प्राय २५ वर्ष पूर्व यह निर्यात १,००० टन से भी कम था। परन्तु युद्ध से पूर्व यह बढ़कर १४,००० टन हो गया और १९५२ ५३ में तो बढ़कर २७,४१७ टन हो गया। इस निर्यात का मूल्य भी जहां युद्ध से पूर्व १ २६ करोड़ रु० था वहां १९५२ ५३ में बढ़कर १२ ७६ करोड़ रु० हो गया। अमेरिका को सबसे अधिक– तीन चौथाई से भी अधिक काजू भेजा जाता है। १९५३ ५४ में निर्यात का परिमाण और मूल्य दोनों ही कुछ घटकर क्रमश २६,५३० टन और १० ६३ करोड़ रु० रह गये। अमेरिका के बाद ब्रिटेन और कनाडा का स्थान है। परन्तु वे अपेक्षाकृत कम माल लेते हैं। भारतीय काजू इन सभी देशों में अधिकाधिक लोकप्रिय होते जा रहे हैं। वहां लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं। अत. इसका निर्यात बढ़ाया जा सकता है और इसके द्वारा विदेशी मुद्रा विशेषत डालर अधिक संख्या में प्राप्त किये जा सकते हैं।

देश में खपत का रुख

भारत में काजू की गिरी का अनेक कार्यों में प्रयोग होता है। गिरी को या तो मेवा के रूप में खाया जाता है अथवा मिष्टान्नों के साथ में मिलाया जाता है। नमकीन काजू की मांग भी इधर बहुत बढ़ी है। बादाम पिस्ते आदि अन्य मेवा की अपेक्षा काजू को अनेक स्थलों पर इसके स्वाद के कारण अधिक पसन्द किया जाता है। अत इसकी खपत बढ़ती जा रही है। परन्तु इसके लिये यह आवश्यक है कि इसके मूल्य उचित रहें। प्रति वर्ष देश में इस समय ३,००० टन काजू की खपत का अनुमान है।

गवेषणा का महत्व

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद ने अप्रेल १९५१ से पांच वर्ष के लिये गवेषणा की तीन योजनाएं स्वीकार की हैं। यह गवेषणा मद्रास, बम्बई और ट्रावनकोर कोचीन राज्यों के काजू उत्पादक क्षेत्रों में की जायगी। धन की कमी के कारण अभी यह कार्य सक्रिय रूप में आरम्भ नहीं हुआ है। अब तक काजू उद्योग में विशेष यत्न यही किया जाता रहा है कि छीलने में कम से कम गिरी टूटने पाये।

काजू के छिलके के तेल का उपयोग अधिक होने लगने के कारण उसका भी व्यापारिक महत्व बढ़ गया है। अनुमान है कि भारतीय कारखानों में प्रतिवर्ष ७,००० से ९,००० टन तक छिलके का तेल तैयार होता है। ४० ४५ गैलन के पीपों में इसका निर्यात होता है। इसके निर्यात का योग ६० लाख रु० से अधिक होता है। १९४२ ४३ में इस तेल का मूल्य मुश्किल से १२० रु० प्रति टन था। अब यह बढ़कर १,२०० रु० हो चुका है।

काजू के छिलके का तेल गाढ़ा और गहरा भूरे रंग का होता है। यह अनेक प्रकार के उद्योगों में काम आता है। तेजाबों के मिलाने से यह रबड़ जैसा लचीला रूप धारण कर लेता है कुछ अन्य रासायनिक पदार्थ मिलाने से इससे अनेक प्रकार की वस्तुएं बनाई जा सकती हैं। यह सूख भी शीघ्र जाता है और बहुत से प्रांगारिक पदार्थों में यह सरलता से घुल जाता है।

वस्तुओं पर यह तेल लगा देने से वे पानी से खराब नहीं होतीं। नौकाओं, मछली पकड़ने के जालों और लकड़ी की हलकी चीजों को सुरक्षित रखने के लिये भी इसे काम में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त वारनिश, टाइपराइटर, चिपकाने के पदार्थ, रंगलेप, स्याही, मोमिया कपड़ा आदि के उद्योगों में इसे कच्चे पदार्थ के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

काजू का फल भी बड़ा विचित्र होता है। वह यों तो सेब के बराबर बड़ा होता है परन्तु जो काजू बाजारों में बिकने आता है वह इस सेब के नीचे एक घुन्डी के रूप में निकला होता है। इस पर एक छिलका होता है और छिलके सहित ही इसे सेब से तोड़ कर अलग कर लेते हैं। ऊपर बताया जा चुका है। कि किस प्रकार काजू की गिरी और उसके छिलके का उपयोग किया जाता है परन्तु सेब का अब तक कोई उपयोग नहीं होता। इसके विषय में गवेषणा करने की आवश्यकता है।

मसाला जांच समिति की सिफारिशें

भारतीय मसाला जांच समिति ने काजू उद्योग पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार किया है और उसकी उन्नति के लिये अनेक सिफारिशें की हैं। समिति के अनुसार मद्रास के पूर्वी तट, बम्बई के रत्नागिरी और उत्तरी कनाडा जिलों तथा कुर्ग और मैसूर की बहुत सी बेकार पड़ी भूमि में विशाल परिमाण पर काजू के बाग लगाये जा सकते हैं। इन राज्यों के वन विभागों को भी चाहिए कि वे जंगलों में काजू के पेड़ लगायें और जिस प्रकार अन्य वन्य उत्पादन एकत्रित किये जाते हैं उसी प्रकार काजू भी एकत्रित किये जाने चाहिए। जहां कहीं भी सम्भव हो सार्वजनिक निर्माण विभागों को भी अपने क्षेत्रों में काजू के पेड़ लगाने चाहिए। काजू के बाग

(शेष पृष्ठ २५८ पर)

सूडान में भारतीय माल का आयात

★ १९५३ ... ... ३९.७ लाख मिस्री पौंड

★ १९५२ .. .. ७८.१ लाख मिस्री पौंड

सूडान में भारतीय माल की खपत घटी

जापानी प्रतिस्पर्धा से सावधान रहने की आवश्यकता

सूडान भारतीय माल की खपत का बडा अच्छा क्षेत्र है। वह अपनी कपडे, चाय और जूट सम्बन्धी समस्त आवश्यकताएं अधिकांशत भारत से ही पूरी करता है।

१९५३ में सूडान में भारत से काफी कम माल मंगाया गया। साथ ही भारत को सूडान से अधिक माल भेजा जाने के कारण व्यापार का सन्तुलन भारत के बहुत अधिक प्रतिकूल रहा।

इस समय सूडान में भारत को जापान, रूस, इन्डोनेशिया आदि देशों से प्रतिस्पर्धा होने का खतरा उत्पन्न होता जा रहा है जिसके कारण भारतीय निर्यातकों को सावधान रहने की आवश्यकता है।

भारत को कच्ची रूई देने में सूडान प्रमुख

सिकन्दरिया स्थित भारत के कमिश्नर जनरल की सूडान सम्बन्धी १९५२-५३ की रिपोर्ट के अनुसार सूडान में अब तक सब प्रकार के सूती माल, चाय व जूट के माल को भेजने वालों में भारत ही प्रमुख रहा है। लेकिन अब इनमें से कुछ वस्तुओं के सम्बन्ध में उसे विकट प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड रहा है। सूडान भारत को मुख्यतः कच्ची रूई भेजता है।

उपर्युक्त रिपोर्ट के महत्वपूर्ण अंशों पर प्रस्तुत लेख में प्रकाश डाला गया है।

१९५३ में सूडान में भारत से काफी कम माल मगाया गया जबकि इस वर्ष भारत को सूडान से इतना अधिक माल भेजा गया कि व्यापार का सन्तुलन भारत के बहुत अधिक प्रतिकूल रहा। आलोच्य वर्ष में सूडान ने भारत से केवल ३९.७ लाख मि० पौण्ड का माल आयात किया जबकि १९५२ में ७८.१ लाख मि० पौण्ड का किया था। इसके विपरीत उसने १९५३ में भारत को ५६.५ लाख मि० पौण्ड का माल भेजा जबकि गत वर्ष (१९५२) केवल ३१.२ लाख का भेजा था। सारांश में आलोच्य वर्ष में सूडान का निर्यात २५.२ लाख मि० पौण्ड बढा जबकि भारत का ३८.४ लाख मि० पौण्ड घटा।

१९५३ में सूडान में भारत से जिन २ वस्तुओं का आयात किया गया उनके आंकडे नीचे तालिका में दिये गये हैं। साथ ही १९५२ के परिमाण तथा मूल्य सम्बन्धी तुलनात्मक आंकडे भी दे दिये गये हैं:

वस्तु	इकाई	परिमाण		मूल्य (मिस्री पौण्ड ०००)	
		१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
चाय	टन	३,६११	२,६२९	७१६	६२५
उडनशील तेल	किलोग्राम	६४,९९२	५७,१४९	१४६	१०३
सूत	,,	३,६४४	८१,६७५	२	३०
सिलाई का सूती धागा	,,	१०,१४०	४३६	१०	०.५
नकली रेशम के कपडे	,,	१,३०,७८९	२८,७०९	१६६	३१
सूती कपडा (कोरा)	टन	४,७९२	३,२६७	२,५९४	१,१९४
सूती कपडा (धुला हुआ)	,,	७०५	८२४	६४१	६००
सूती कपडा (टुकडों में रंगा हुआ)	,,	३३५	१८०	३३४	१६५
सूती कपडा (छपा)	,,	६९	१२	६९	९
सूती कपडा (सूत में रंगा हुआ)	,,	३५६	३०६	३५४	३१९
जूते (चमडे के)	जोडे	६१,१९५	७१,६७०	१८	४२
जूते (रबड के)	,,	४,५७,१२३	८,४९,०५५	१००	१७७
जूट की बोरियां	टन	९,९५२	२,९९०	२,१७९	३२८
कोयला	टन	४,५७७	४०	३४	०.३

तालिका से स्पष्ट है कि भारत ने आलोच्य वर्ष में १९५२ की अपेक्षा जूतों के अतिरिक्त प्रायः सभी वस्तुएं कम परिमाण में भेजीं। वह अब तक सूडान को सब प्रकार के सूती माल, चाय तथा जूट के सामान का प्रमुख निर्यातक रहा है। लेकिन अब इनमें से कुछ वस्तुओं के सम्बन्ध में उसे विकट प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड रहा है।

चाय में कमी

सूडान में भारतीय चाय काफी लोकप्रिय है। परन्तु वह महगी होती है। इस क्षेत्र में इण्डोनेशिया की स्थिति सुदृढ बनती जा रही है, क्योंकि वह भारत की अपेक्षा अधिक सस्ती किस्मों की चाय भेज रहा है। नीचे की तालिका में देशों के अनुसार आंकडे दिये गये हैं जिनसे स्पष्ट होगा कि इण्डोनेशिया भारत का कितना बडा प्रतिस्पर्धी है।

देश	परिमाण (टन)		मूल्य (मि० पौण्ड)	
	१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
लंका	३८१	३४६	१,२०,१२२	१,२४,६३६
केनिया	५०९	४८७	१,३७,५७४	१,०३,६५०
युगाण्डा	२२४	२१०	६०,४७९	५०,८९०
इण्डोनेशिया	३,१००	१,१९१	७,३९,०५४	२,७८,५४६
भारत	३,६११	२,६२९	७,१५,९६२	६,५१,६१०
योग (अन्य देशों सहित)	७,९४२	४,९३१	१८,०३,९९३	१२,४०,२१०

तालिका से विदित होता है कि सूडान ने आलोच्य वर्ष मे गत वर्ष की अपेक्षा कम परिमाण मे चाय आयात की। उसने इस वर्ष भारत से भी कम चाय मंगाई। यद्यपि भारत से मगाई गई चाय मे यह कमी अन्य देशों के अनुपात में कम रही, फिर भी हमें इससे निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिये। इण्डोनेशिया की सस्ती किस्म की चाय हमारे लिये चुनौती है। भारतीय निर्यातकों को इस बात की ओर ध्यान रखना उचित होगा।

भारत सूती कपड़ों का प्रमुख निर्यातक

सूडान मे भारत से मंगाये जाने वाले मालों मे सूती कपडे का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। लेकिन आलोच्य वर्ष में भारत ने सूत को छोडकर, इस वर्ग की प्रायः सभी वस्तुएं कम परिमाण मे मगाई गई।

भारत सूडान को सबसे अधिक सूती माल भेजता है। उसकी यह सर्वोपरि स्थिति पिछले महायुद्ध से बनी हुई है, जबकि सूडान में जापानी माल का आना बन्द हो गया था। आलोच्य वर्ष में भी उसकी स्थिति पूर्ववत् रही जिसकी पुष्टि नीचे के आंकडों से होती है :

	इकाई	परिमाण		मूल्य (मि० पौंड)	
		१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
भारत	टन	६,२५७	४,५९०	३९,९२,०६५	२१,८७,६६५
अन्य	टन	६,५२०	२,७४९	५५,५१,६८९	२४,५६,७०६
योग्य	टन	१२,४७७	७,३३९	९५,४३,७५२	४६.४४,३७१

सूडान की कपडे सम्बन्धी स्थिति मे पहले से काफी सुधार हुआ है। यद्यपि उसके पास मोटे कोरे कपडे का स्टाक कम है, फिर भी हल्के कपडे (जिसे विलाया कहते हैं) का भारी स्टाक चिन्ता का विषय बना हुआ है। इस स्टाक को निकालने की नीति से सूडान सरकार ने यह आदेश दिया है कि मोटे कोरे चादरों के कपडे की तीन गाठें मगाने के आयात लाइसेन्स पर, आयातक को सरकारी स्टाक से विलाया की एक गाठ खरीदना आवश्यक होगा।

इस सम्बन्ध में भारतीय निर्यातकों को निश्चिन्त नहीं हो जाना चाहिये। इस समय रूस से होने वाली प्रतिस्पर्धा (विशेषतः छपे कपडों में) तथा आगे जापान से भी होने की सम्भावना को देखते हुए भारतीय निर्यातकों के लिये अधिक जागरूक रहना तथा सूडान में भारतीय कपडे की खपत समुचित बनाये रखना आवश्यक है।

जूट के माल में कमी

सूडान एक कृषि प्रधान देश है। वह कच्ची रूई और अनाज का एक महत्वपूर्ण निर्यातक है। इन पदार्थों को बाहर भेजने के लिये उसे सामान्यतः प्रतिवर्ष लगभग १० हजार टन टाट, बोरियों आदि की आवश्यकता पडती है। यह आवश्यकता फसलों के परिमाण तथा निर्यात के लिये शेष बची उपज के अनुसार बदलती रहती है।

आलोच्य वर्ष मे सूडान ने भारत से जूट का माल कम मंगाया, जिसके मुख्यतः दो कारण थे : (१) १९५० मे कोरियाई युद्ध के कारण बहुत सा माल पहले ही खरीद लिया गया था, जिससे सूडान मे माल का स्टाक काफी बच रहा, (२) मिस्र से जूट के माल के आयात पर कोई प्रतिबन्ध न होने के कारण, वहां से पर्याप्त परिमाण मे माल मगा लिया गया। अन्त में सूडान सरकार ने मिस्र से आयात करने पर प्रतिबन्ध लगाया। उपर्युक्त कारणों का भारत से आनेवाले माल पर बुरा प्रभाव पडा, जिससे वह काफी कम हो गया। परिमाण की अपेक्षा मूल्यों पर और भी बुरा प्रभाव पडा।

आलोच्य वर्ष मे भारतीय जूट के माल के भाव १९५२ की अपेक्षा काफी कम रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि विदेशी मुद्रा के रूप में इस माल के भावों का स्तर और भी अधिक गिर गया। नीचे की तालिका से यह स्पष्ट है :

देश	परिमाण (टन)		मूल्य (मि० पौण्ड)	
	१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
मिस्र	१८०	२,८०२	२१,३८७	४,२३,५४१
भारत	९,९५२	२,९९०	२१,७८,९१४	३,२८,१०६
ब्रिटेन	७१२	१४३	१,४२,१६७	१३,७४६
	११,६३३	५,९३५	२६,५०,६२५	७,६५,४२१

१९५३ के मध्य तक सूडान में सचित जूट के माल के समाप्त हो जाने का अनुमान लगाया गया था।

सुदृढ़ बैंक व्यवस्था देश के आर्थिक जीवन की जान होती है

१९५३-५४ में भारतीय अर्थ-व्यवस्था

रिजर्व बैंक का वार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशित

रिजर्व बैंक के केन्द्रीय निर्देशक मंडल ने, ३० जून १९५४ को समाप्त होने वाले वर्ष में बैंक के काम-काज का वार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशित कर दिया है। इसमें कहा गया है कि १९५३-५४ में भारतीय अर्थ-व्यवस्था में स्थिरता रही।

इस वर्ष जो आर्थिक नीति बरती गयी, उससे स्थिरता लाने वाली शक्तियों को बल मिला। इसके फलस्वरूप, बिना मुद्रा बाहुल्य उत्पन्न किये विकास कार्य पर खर्च करना सम्भव हो सका।

बैंकों की स्थिति सम्बन्धी मुख्य बातें

आलोच्य वर्ष में देश की अर्थ व्यवस्था और बैंकों की स्थिति सम्बन्धी मुख्य बातों का उल्लेख, प्रतिवेदन में इस प्रकार किया गया है —

(१) कृषि और उद्योग, दोनों ही का उत्पादन बढ़ा। इससे विकास पर खर्च बढ़ना और निजी व्यापार व उद्योग को प्रोत्साहन देना सम्भव हुआ।

(२) देश में आर्थिक क्रिया कलाप को तीव्र करने के लिये कई उपाय किये गये। कई जिंसों पर उत्पादन तथा निर्यात शुल्कों को घटाया और संशोधित किया गया, निजी क्षेत्र की वित्त व्यवस्था की जांच के लिये श्राफ-समिति नियुक्त की गयी और विश्व बैंक की सहायता से एक निजी निगम (कारपोरेशन) की स्थापना का समर्थन किया गया और एक सरकारी औद्योगिक विकास निगम की स्थापना के लिये उद्योग किया गया।

(३) आलोच्य वर्ष में मुद्रा की उपलब्धि अच्छी रही। १९५३ ५४ में मुद्रा पूर्ति १९५२ ५३ से दूने से अधिक रही। जून १९५४ के अंत में जून १९५३ से मुद्रा की उपलब्धि ६६ करोड़ रु० अधिक थी।

(४) बजट के घाटे और भुगतान तुला में बचत के अलावा रिजर्व बैंक का उधार का कारोबार बढ़ने से भी मुद्रा की उपलब्धि सरल हुई। जनवरी से जून १९५४ की अवधि में, रिजर्व बैंक ने (बिल मारकेट योजना के अधीन) कुल १२२ करोड़ रु० उधार दिये, जबकि १९५३ की इसी अवधि में केवल ६१ करोड़ रु० दिये गये थे।

(५) वस्तुओं और मुद्रा दोनों ही में, कुल पूर्ति और कुल मांग के बीच अच्छा संतुलन रहा, जिससे मूल्यों के स्थिर रहने में सहायता मिली।

१९५४ के अप्रैल के मध्य से मूल्यों के गिरने के विषय में प्रतिवेदन में कहा गया है कि इससे आगामी वर्षों में विकास कार्यों को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

ऐतिहासिक पक्ष

प्रतिवेदन में बताया गया है कि द्वितीय महायुद्ध के बाद भारतीय अर्थ-व्यवस्था में मुद्रा बाहुल्य की समस्या उठ खड़ी हुई। इसके निवारण के लिये उपयुक्त नीति अपनायी गयी। ऐसी योजनाओं पर सरकारी खर्च कम कर दिया गया, जिनसे जरूरी वस्तुओं के उत्पादन में शीघ्र वृद्धि नहीं होती थी। व्यापार सम्बन्धी नीतियों में भी आवश्यक परिवर्तन करने पड़े। किन्तु देश में मूल्य अधिक होने और अमेरिका में मूल्यों में गिरावट की प्रवृत्ति के कारण, दुर्लभ मुद्रा वाले देशों को वस्तुएं निर्यात करने में बाधा पड़ी और फलतः व्यापार सन्तुलन काफी प्रतिकूल रहा। १९४८ ४९ में विदेशी मुद्रा में २२७ करोड़ रु० की रकम देनी पड़ी। विदेशी मुद्रा बचाने के लिये दुर्लभ मुद्रा देशों से आयात में कमी की गयी। निश्चय हुआ कि १९४८ में इन देशों से आयात के केवल ७५ प्र० श० आयात की अनुमति दी जाय। सितम्बर, १९४९ में रुपये की विनिमय दर घटायी गयी।

मुद्रा-बाहुल्य की रोकथाम

इस अवमूल्यन से मुद्रा बाहुल्य की प्रवृत्ति को बल मिला, जिसकी रोकथाम कई उपायों से की गयी। १९५० के मध्य में ऐसा जान पड़ा कि मुद्रा बाहुल्य की प्रवृत्ति को अवमूल्यन से जो बल मिला था वह खत्म हो

चला है। पर जून १९५० में ही कोरिया की लडाई छिड जाने से स्थिति फिर बिगड गयी और मुद्रा-बाहुल्यने फिर जोर पकडा। इसकी रोकथाम के लिये देश के भीतर चीजो की सप्लाई बढाने और क्रय शक्ति का विस्तार रोकने के उपाय किये गये।

मुद्रा नीति में परिवर्तन

मुद्रा क्षेत्र में भी एक नयी नीति जारी की गयी। नवम्बर, १९५१ में बैंक दर तीन से बढाकर साडे तीन प्र० श० कर दी गयी और रिजर्व बैंक ने निश्चय किया कि विशेष स्थितियों को छोडकर, साधारणतः वह अनुसूचित बैंकों की सामयिक जरूरतें पूरी करने के लिये सरकारी सिक्यॉरिटियां नहीं खरीदेगा। जनवरी १९५२ में बैंक ने बिल मारकेट स्कीम जारी की।

इन सब उपायो के फलस्वरूप और अन्तरराष्ट्रीय मांगो में कमी होने से १९५२ के शुरू में मूल्य गिरने लगे। मार्च १९५२ में थोक मूल्यो का सूचक अंक ३६५ हो गया, जो कोरिया युद्ध से पहले के अंक से ८ प्र० श० नीचे था। अब स्थिति उलटी हो गयी और मंदी को रोकने के प्रयत्न करने पडे।

मुद्रा-बाहुल्य का लोप

जुलाई, १९५२ तक मुद्रा बाहुल्य प्रायः खतम हो चुका था, इस लिये विकास कार्य को तीव्र करने पर पूरा ध्यान लगाना सम्भव हुआ। एक ओर लोगो की क्रय-शक्ति कम हो गयी थी और दूसरी ओर घरेलू उत्पादन तथा आयातों की वृद्धि से देश में वस्तुओं की मात्रा काफी बढ चुकी थी। इसलिये खाद्यों के नियन्त्रण को ढीला करना और विकास पर अधिक रुपये खर्च करना सम्भव हुआ। फिर भी जुलाई १९५३ के प्रारम्भ में स्थिति कुछ अनिश्चित सी ही थी।

१९५३-५४ की घटनाएं

उपर्युक्त समीक्षा के बाद प्रतिवेदन में १९५३ ५४ की मुख्य घटनाओं का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि इस वर्ष स्थिति में काफी सुधार हुआ। कृषि और उद्योग की वस्तुओं का उत्पादन पहले से काफी बढ गया। जून १९५२ में औद्योगिक उत्पादन का सूचक अंक १३२ २ था, जो दिसम्बर १९५३ में १४४.७ हो गया। यद्यपि बाद में यह फिर गिर गया, किन्तु औसतन १३७.६ पर ही (जनवरी मार्च १९५४ में) कायम रहा। १९५२-५३ में खाद्यों का भी उत्पादन बढ गया और १९५३ ५४ में और भी बढने की आशा है। उत्पादन की इस वृद्धि से विकास कार्य पर खर्च बढाने और निजी उद्योग व व्यापार को बढावा देने के उपाय किये गये। अक्तूबर १९५३ में प्रथम पंच-वर्षीय योजना के कुल लागत खर्च में १७५ करोड रु० की वृद्धि की गयी। आगे चलकर मूल्यो और वस्तुओं के वितरण पर अधिकांश नियन्त्रण हटा लिये गये और निजी व्यापार के लिए क्षेत्र बढ गया। विकास व्यय के बढने और निर्यात व आयात शुल्कों में संशोधन करके उद्योगों को रियायतें देने से केन्द्र व राज्य सरकारों के बजट में, घाटा बढकर १५४ करोड रु० हो गया, जो १९५२ ५३ में केवल ६७ करोड रु० था। हालके आंकडों से पता चलता है कि वस्तुतः घाटे की रकम काफी कम बैठेगा। १९५४ ५५ में केन्द्र व राज्यों को ४२० करोड रु० के लगभग घाटा पडने का अनुमान है।

घरेलू अर्थ-व्यवस्था को बल

घाटे की वित्त व्यवस्था के अलावा, देश में आर्थिक गति-विधि बढाने के कई उपाय किये गये। अति महीन कपडे के उत्पादन शुल्क में कमी की गयी। औद्योगिक विस्तार के लिये भी कई कदम उठाये गये। उद्योग के निजी क्षेत्र के लिये रिजर्व बैंक ने एक वित्त समिति नियुक्त की, विश्व-बैंक की सहायता से एक निजी निगम (कारपोरेशन) स्थापित करने की योजना का समर्थन किया गया और सरकार के स्वामित्व में एक औद्योगिक विकास निगम की स्थापना की योजना बनी। साथ ही निर्यात को बढावा दिया गया। निर्यात की मांग भी बढी, और इन सब कारणों से १९५३ की अंतिम तिमाही में निर्यात की आय में काफी वृद्धि हुई।

उधर देश में उत्पादन बढने से आयात कम हो गया। फलतः १९५३ की आखिरी तिमाही में भुगतान सन्तुलन में ८८ करोड रु० की बचत हुई। पूरे वर्ष के भुगतान में भी बचत की आशा है, यद्यपि वह १९५२ ५३ की बचत (६१ करोड रु०) से कुछ कम ही होगी।

बैंक सम्बन्धी कानून और नीति

रिपोर्ट में बैंक सम्बन्धी कानूनों और नीति के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। बैंक सम्बन्धी नीति का यह उद्देश्य था कि बैंकों के काम पर नियन्त्रण किया जाय और रुपया उधार देने की व्यवस्था अधिक विस्तृत क्षेत्र में सुचारु रूप से चल सके।

रिपोर्ट में कहा गया है कि बैंकों के निरीक्षण का काम मार्च १९५० से नियमित रूप से प्रारम्भ हुआ। जून १९५४ तक ५२० बैंको का निरीक्षण किया गया, जिसमें ११३ बैंको में एक से अधिक बार निरीक्षण किया गया। १९५३ ५४ में १९ अनुसूचित और १६६ गैर अनुसूचित बैंको का निरीक्षण किया गया, जिसमें से ६४ बैंको का निरीक्षण बैंकिंग कम्पनी एक्ट सन् १९४९ के २७ वें विभाग के अनुसार कारबार की अनुमति देने के लिये किया गया और बाकी की स्थिति और कारबार का ढंग देखने के लिये इनमें दो बैंकों का निरीक्षण लेन देन स्थगन (मारेटोरियम) के सम्बन्ध में किया गया। २७ अनुसूचित बैंकों और १ गैर अनुसूचित बैंक को भारत में कारबार करने की स्वीकृति दी गई और ६ बैंकों का काम शुरू करने की अनुमति दी गई। जिन क्षेत्रों में बैंक नहीं हैं, वहां बैंकों को शाखा खोलने की इजाजत देने की नीति रही है। शाखाएं खोलने के लिये सन् १९४९ में ७५८ अर्जियां प्राप्त हुई थीं, जिनमें ६०२ मंजूर की गई। भारत के बाहर आफिस खोलने के लिये ३३ अर्जियां आयीं, इनमें से २८ आफिस खोलने की स्वीकृति दी गयी।

बैंकों की साख नीति

रिजर्व बैंक ने बैंको के लेनदेन को आर्थिक नीति के अनुकूल रखनेके लिये प्रयत्न किया है। अनुसूचित बैंको में १० लाख और उससे ऊपर की रकम के उधार का विवरण लिया जाता रहा। कलकत्ता के बैंकों ने जो रुपया कच्चे पटसन के खरीदने के लिये उधार दिया था, उसे निश्चित

अवधि में वापिस लेने की सलाह दी गयी। विशेष कामों के लिये बैंकों से रुपया दिलाने में भी रिजर्व बैंक ने सहायता दी। उदाहरण के लिये भारतीय तथा विदेशी कपास खरीदने के लिये व्यापारियों को उधार दिलाने की व्यवस्था की गयी थी। इसी प्रकार १९५३-५४ में चाय के व्यापार को भी वित्तीय सहायता दिलायी गयी। सन् ५४ में खाद्य पर कंट्रोल हटने के बाद कुछ बैंकों को कहा गया कि अन्न पर दिये गये रुपये का हफ्तेवारी ब्योरा दें।

रिपोर्ट में बताया गया है कि बिलों की खरीद बिक्री की स्कीम काफी सफल रही है और अब यह साख व्यवस्था का स्थायी अंग बन गयी है।

बैंकों का विस्तार

रिपोर्ट में इस बात पर विचार किया गया है कि जिन क्षेत्रों में बैंक कम हैं, वहां बैंकों का विस्तार कैसे किया जाय। गत वर्षों में इसमें जो प्रगति हो गयी है, उस पर भी प्रकाश डाला गया है। 'ख' राज्यों की बैंकिंग और ट्रेजरी व्यवस्था के 'क' राज्यों के साथ एकीकरण के बारे में कार्रवाई की गयी और अब ७ में से ५ 'ख' राज्यों ने रिजर्व बैंक को अपना काम सौंप दिया है। रिजर्व बैंक का एक कार्यालय १ जुलाई, १९५३ को बंगलौर में खोला गया। १ जुलाई १९५३ से लेकर तीन वर्ष में रिजर्व बैंक ने ८० शाखायें खोलना स्वीकार कर लिया है। इसके अलावा रुपया भेजने की व्यवस्था को सुधारने, खजाने का कार्य अच्छे ढंग पर चलाने और डाकखाने में बचत खाते में रुपया जमा करने की व्यवस्था को पुनस्सगठित करने का भी प्रयत्न किया गया।

रिपोर्ट में उन उपायों का उल्लेख किया गया है जिससे कोपरेटिव बैंक कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित अनेक आयोजनों के लिये रुपया की व्यवस्था सुचारु रूप से कर सकें। ग्राम्य अर्थ व्यवस्था सम्मेलन की सिफारिशों के अनुसार इनकी कार्य प्रणाली में भी सुधार किये गये हैं।

१९४६-४७ में सहकारी बैंकों को लगभग ७ लाख ६० ऋण के रूप में दिया गया था, जबकि १९५३-५४ में १६ करोड ३२ लाख रुपये के ऋणों की स्वीकृति दी गयी। सन् १९५१ और ५३ में रिजर्व बैंक अधिनियम में संशोधन करके ग्राम्य क्षेत्रों में रिजर्व बैंक द्वारा ऋण देने के कार्य में वृद्धि की गयी है। अल्पकालीन ऋण की अवधि बढ़ाकर १५ महीने कर दी गयी है और बैंक को ५ साल तक की अवधि के ऋण देने का अधिकार प्राप्त है। सन् १९५३ में रिजर्व बैंक और भारत सरकार ने मिलकर भूमि बंधक बैंकों के ऋणपत्रों (डिबेंचरों) को ४० प्र० श० तक लेना स्वीकार किया। रिजर्व बैंक द्वारा सहकारी बैंकों के स्वेच्छा निरीक्षण की प्रणाली भी चालू की गयी। सन् १९५२-५४ के दो वर्षों में १९ सहकारी बैंकों का इस प्रकार निरीक्षण किया गया।

रिपोर्ट में निजी उद्योगोंके सम्बन्धमें वित्त समितिकी सिफारिशों की भी संक्षेप में समीक्षा की गयी है और उनको कार्यान्वित करने के लिये प्रयुक्त उपायों पर भी प्रकाश डाला गया है। अंत में रिपोर्ट में व्यापारिक तथा सहकारी बैंकों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिये रिजर्व बैंक द्वारा किये गये कार्यों की चर्चा की गयी है। इस वर्ष पूना में सहकारी बैंकों के ४० से ४५ कर्मचारियोंके प्रशिक्षणकी व्यवस्था की गयी। जुलाई १९५४ में मद्रास में भी एक प्रादेशिक प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। व्यापारिक बैंकों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिये बम्बई में कालिज खोलने की व्यवस्था लगभग पूरी हो चुकी है।

लाभ

अंत में रिपोर्ट में रिजर्व बैंक का वार्षिक हिसाब किताब दिया गया है जून १९५४में समाप्त वर्षमें बैंक की आमदनी २१ करोड ९४ लाख रुपये हुई और खर्च ४ करोड ४३ लाख रुपया हुआ। रिजर्व बैंक के अधिनियम के अनुसार खर्च काटकर लाभ से केन्द्रीय सरकार को देने के लिये १७ करोड ५० लाख रु० बचे, जबकि पिछले वर्ष १२ करोड ५० लाख और १९५१-५२ में ७ करोड ५० लाख रुपये दिये गये थे।

★★★ तम्बाकू की खेती युद्ध से पहले की अपेक्षा अब ६ लाख एकड़ अधिक भूमि में होती है।

तम्बाकू का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

१९५२ में विश्व-भर के निर्यात का परिमाण घटा

संसार में शायद ही ऐसा कोई देश होगा जहां तम्बाकू का प्रयोग न होता हो। धूम्रपान और सुंघनी इसके उपयोग के दो प्रमुख रूप हैं। अधिकांश उत्पादक देश अपनी उपज का बहुत बड़ा भाग स्वयं ही काम में ले आते हैं। परन्तु सिगरेट, सिगार आदि के निर्माण के लिये अनेक देश इसे दूसरे देशों से मंगाते हैं।

१९५२ में विश्व-भर में तम्बाकू का व्यापार घट गया। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल की आर्थिक समिति ने बगीचों की फसलों के विषय में १९५३ की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसके अनुसार अमेरिका तथा भारत से १९५२ में तम्बाकू का कम निर्यात होने के कारण विश्व में तम्बाकू का कम व्यापार हुआ।

दक्षिणी रोडेशिया और अमेरिकन तम्बाकू के भाव ऊंचे रहे परन्तु पूर्वी देशों की तम्बाकू के भाव कम रहे।

स्पेनी नाविकों का तम्बाकू के प्रचार में भाग

तम्बाकू को पूर्वी गोलार्द्ध में स्पेनी नाविक १६ वीं शताब्दी में लाये और लाते ही इसका चलन इतनी तेजी से बढ़ा कि शीघ्र ही सर्वत्र फैल गया। तम्बाकू अनेक प्रकार की होती है परन्तु नित्य प्रति के उपयोग में एक किस्म की तम्बाकू ही अधिक आती है जिसे अंगरेजी में निकोटिआना टबेकम (Nicotiana Tabacum) कहते हैं। यह अनेक प्रकार की भूमि और जलवायु में उपज सकती है, यद्यपि उसकी किस्म पर कुछ सीमा तक भूमि और जलवायु दोनों का ही प्रभाव पड़ जाता है। इसे तैयार करने की विधियों से भी इसकी किस्मों में अन्तर पड़ जाता है। बाजार में बिकने वाली तम्बाकू इसी कारण अनेक प्रकार की होती है। किसी क्षेत्र में किस प्रकार की तम्बाकू खपेगी इसका पता उस क्षेत्र के निवासियों की रुचि से ही लगता है। इधर मुद्रा सम्बन्धी कठिनाइयां और तम्बाकू मिलने की बाधाओं के कारण भी कुछ क्षेत्रों में किसी विशेष किस्म की तम्बाकू खपने लगती है।

उदाहरण के लिये ब्रिटेन में सिगरेटों और पाइपों के लिये हलके रंग की, कम तीखी, धूपतापी वर्जीनिया किस्म की पत्ती पसन्द की जाती है। ब्रिटिश साम्राज्य के जो देश इस प्रकार की तम्बाकू ब्रिटेन से मंगाते हैं वे भी इसी प्रकार की पत्ती पसन्द करते हैं। अब वे इसीके उत्पादन पर जोर देते हैं।

तम्बाकू की खेती का क्षेत्र

यद्यपि तम्बाकू पैदा करने वाले कई देशों के विषय में ठीक ठीक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं तथापि अनुमान है कि इस समय संसार में ८० लाख एकड़ भूमि में तम्बाकू उपजती है। युद्ध से पहले की अपेक्षा यह क्षेत्र ६,००,००० एकड़ अधिक है। ८० लाख एकड़ के आधेसे अधिक का क्षेत्र अमेरिका, चीन और भारत में है। अमेरिका में मुख्य किस्मों की तम्बाकू के लिये युद्धसे पहलेसे ही क्षेत्र निर्धारित किया जाता रहा है। वहां १९५१ में तम्बाकू के क्षेत्र में वृद्धि हो गई है। यह वृद्धि विशेषतः धूपतापी तम्बाकू के क्षेत्र में हुई है। १९५२ में भी मुख्य किस्मों के क्षेत्र में वृद्धि हुई, परन्तु थोड़ी सी। धूपतापी तथा वर्ली किस्मों की तम्बाकू के स्टाक इकट्ठे हो जाने के कारण १९५३ में इनकी उपज के क्षेत्र में कमी कर दी गई। इसके फलस्वरूप तम्बाकू के कुल क्षेत्र में ७ प्रतिशत की कमी हो गई।

इण्डोनेशिया के विषय में हाल के वर्षों के सरकारी आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु आशा है कि खाद्यान्नों के उत्पादन पर वहां बल दिये जाने के कारण तम्बाकू उपजने का क्षेत्र युद्ध से पूर्व की अपेक्षा घटकर छोटा हो गया है और घटता ही जा रहा है। दूसरी ओर फिलिपाइन में युद्ध के बाद सबसे अधिक तम्बाकू १९५१ में पैदा हुई जो युद्ध से पहले की अपेक्षा केवल दो तिहाई थी। १९५२ में इसमें और भी कमी हो गई।

तुर्की मे तम्बाकू का क्षेत्र १६५१ में गतवर्ष की अपेक्षा कम हो गया। परन्तु युद्ध से पहले की अपेक्षा यह अब भी बहुत अधिक है। १६५२ के आकड़ा क अनुसार स्थिति अब फिर सुधरने लगी है। १६५० में यूनान मे जितने क्षेत्र में तम्बाकू बोई गई वह युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक था। परन्तु बाद के दो वर्षों तक भाव गिरे रहे और बिक्री सम्बन्धी कठिनाइया बनी रही। इस कारण बाद के वर्षों में क्षेत्र मे तेजी से कमी हो गई। १६५३ में बाजार की स्थिति सुधरने पर क्षेत्र फिर बढना आरम्भ हुआ। इटली में तम्बाकू का क्षेत्र युद्ध से पूर्व की अपेक्षा बढकर दुगुना हो गया है। फ्रास और स्पेन के क्षेत्रो मे भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ब्राजील, मेक्सिको और अर्जेण्टाइना के क्षेत्रों में भी वृद्धि हो गई है। परन्तु १६५१-५२ मे अर्जेण्टाइना का क्षेत्र घट गया।

ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल के देशों मे तम्बाकू का सबसे अधिक क्षेत्र भारत में है। परन्तु भारत और पाकिस्तान का कुल क्षेत्र युद्ध से पहले की अपेक्षा कम है। १६४६ में दोनों देशो का तम्बाकू क्षेत्र बढने लगा था परन्तु १६५२ मे भारतीय क्षेत्र मे तेजी से कमी हुई। पाकिस्तान में वह गत वर्ष के बराबर ही बना रहा। १६५३ के अनुमान के अनुसार भारत मे भी तम्बाकू फिर अधिक क्षेत्र में बोई जाने लगी है। कनाडा मे १६५१ मे तम्बाकू का क्षेत्र बहुत बढा परन्तु १६५२ मे वह घटने लगा। इसका कारण यह था कि किसानो ने ब्रिटेन से धूम्रतापी तम्बाकू का अधिक निर्यात होने की आशा में उसकी खेती का क्षेत्र सीमित कर दिया। १६५३ मे इस क्षेत्र में फिर वृद्धि हुई।

दक्षिणी रोडेशिया और न्यासालैण्ड में १६४७ तक कनाडा की अपेक्षा कम भूमि में तम्बाकू बोई जाती थी परन्तु १६५२ मे दक्षिणी रोडेशिया का क्षेत्र ही बढकर कनाडा से दुगुना हो गया। न्यासालैण्ड का क्षेत्र भी सम्भवत. इतना ही बढ गया है। दक्षिणी अफ्रीका और उत्तरी रोडेशिया में भी क्षेत्र काफी बढा है। आस्ट्रेलिया का क्षेत्र १६३६ की अपेक्षा १६५२ में ८,००० एकड अधिक हो गया यद्यपि यह १६५८ के लिये निर्धारित लक्ष्य से आधा ही है।

उत्पादन में कमी

संसार का तम्बाकू का उत्पादन १६५१ में अपनी चरम सीमा पर जा पहुंचा। १६५२ में वह थोडा घट गया। परन्तु फिर भी युद्ध से पहले की अपेक्षा वह १० प्रतिशत अधिक रहा। अब अमेरिका तथा एशिया महाद्वीपों में प्राय ४० प्रतिशत तम्बाकू उत्पन्न होती है, जबकि युद्ध से पूर्व विश्व भर की तम्बाकू का आधा भाग एशिया में और एक तिहाई अमेरिका में उत्पन्न होता था।

१६५२ में तुर्की और दक्षिणी रोडेशिया को छोडकर प्रायः अन्य सभी बडे निर्यातक देशों मे तम्बाकू का उत्पादन घट गया। मुख्य देशों से उत्पादन सम्बन्धी जो समाचार मिले हैं उनके अनुसार १६५३ में भी उत्पादन में कमी जारी रही है। उत्तरी अमेरिका में फसल कम हुई है।

अमेरिका मे यद्यपि युद्ध से पहले की अपेक्षा तम्बाकू की खेती का क्षेत्र घट गया है तथापि वहा अब प्रति एकड उपज अधिक हो रही है। इसी कारण उत्पादन युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक हो रहा है। १६५१-५२ मे यह २०,००० लाख पौण्ड से भी अधिक हुआ। एशिया मे भी उत्पादन बढ़ना आरम्भ हुआ था परन्तु इण्डोनेशिया और फिलिपाइन का उत्पादन १६५२ मे घटा। जापान का उत्पादन बराबर बढता जा रहा है। तुर्की का उत्पादन भी अधिक रहा परन्तु यूनान के क्षेत्र में भारी कमी हो जाने के कारण उत्पादन इतना कम हो गया जितना कि १६४८ से अब तक कभी न हुआ था। अन्य यूरोपीय देशों में इटली, फ्रास, जर्मनी और यूगोस्लाविया के उत्पादन भी घट गये। परन्तु स्पेन के उत्पादन मे भारी वृद्धि हुई। लैटिन अमेरिका के कुछ महत्पूर्ण देशो का उत्पादन भी गिरा परन्तु वह फिर भी युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक रहा।

ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल के देशों मे भारत और पाकिस्तान का उत्पादन हाल के वर्षों में युद्ध से पूर्व की अपेक्षा प्राय एक तिहाई कम रहा है। भारतीय उत्पादन १६५२ में बहुत अधिक घट गया। पाकिस्तान का उत्पादन १६५१ और १६५२ में कुछ बढ गया। १६५३ के अनुमानो से प्रकट होता है कि भारत के उत्पादन मे अब वृद्धि होने लगी है। कनाडा मे १६५२ मे तम्बाकू का क्षेत्र घटकर तीन चौथाई रह गया था। प्रति एकड उपज अच्छी होनेसे कुल उत्पादन १६५३ में भी अच्छा रहा। दक्षिणी रोडेशिया मे उपज अच्छी हुई यद्यपि उत्तरी रोडेशिया और न्यासलैण्ड मे १६५२ में उपज नही बढी। इसके बाद १६५३ मे इन तीनो देशों की उपज मे अच्छी वृद्धि हुई।

कनाडा की भाति उत्तरी तथा दक्षिणी रोडेशिया मे भी अधिकाश तम्बाकू धूम्रतापी वर्जीनिया किस्म की होती है। परन्तु न्यासालैण्ड मे यह अधिकाश मे बडी अग्नितापी पत्ती की होती है, जिसे मुख्यत अफ्रीकी लोग अपने छोटे छोटे खेतों मे पैदा करते हैं। दक्षिणी अफ्रीका मे १६५१ तथा १६५२ मे धूम्रतापी के बदले एक अन्य किस्म की पत्ती पैदा की जाने लगी है जो निर्यात के लिये अधिक उपयुक्त होती है। १६५१ में इसकी अच्छी उपज हुई परन्तु १६५२ में यह घट गई। कम उत्पादक देशो मे १६५२ में न्यूजीलैण्ड का उत्पादन घट गया जबकि पूर्वी अफ्रीका के प्रदेशो मे यह या तो घट गया अथवा उसमें बहुत थोडा परिवर्तन हुआ। आस्ट्रेलिया मे उत्पादन युद्ध से पूर्व की अपेक्षा पहली बार अधिक हुआ है। उत्तरी क्वीन्सलैण्ड में सिंचाई योजनाए चालू हो जाने पर अगले कुछ वर्षों में उत्पादन में और भी वृद्धि होने की आशा है। नीचे की तालिका मे ससार के प्रमुख देशो का तम्बाकू का उत्पादन दिया गया है.—

(दस लाख पौण्डो मे भार)

	१६३८	१६५१	१६५२
ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल			
भारत और पाकिस्तान	१,१३१	५८६ १६४	४५६ १६८
कनाडा	१०१	१५४	१४०
दक्षिणी रोडेशिया (क)	२७	६२	१००
दक्षिणी अफ्रीका (क)	२०	५३	४४

न्यासालैंड (क) ...	१८	३६	२३
उत्तरी रोडेशिया (क) ...	२	११	१०
न्यूजीलैंड (क)	२	५	४
आस्ट्रेलिया (क) .	६	४	८
टांगानीका	२	५	४
युगान्डा	३	५	५
साइप्रस	—	२	२
अन्य देश			
अमेरिका	१,३८६	२,३३२	२,२५५
चीन (ख)	९८३	१,१००फ	१,२५०फ
ब्राजील ..	२०१	२६०	२३४
इन्डोनेशिया (ग)	६०		
इन्डोनेशिया (घ) .	१४६	१२६	१११
जापान (च) ...	१३८	२११	२११
तुर्की (क) ...	१२७	१८१	२४८
इटली	९५	१७५	१६१
फ्रांस (च) .	७३	१२२	१०६
यूनान (च) .	१०६	१३८	९१
बरमा	९९	१११	१११
मेक्सिको	४२	७८	७९
बल्गारिया	५७	ट	ट
क्यूबा	५५	७९	७५
हंगरी	४८	ट	ट
अर्जेन्टाइना (क)	१७	८४	७३
कोरिया (छ)	६२	ट	ट
अल्जीरिया	४२	४७	४७
डुमीनिकन गणतन्त्र	३१	४०	४०
फिलीपाइन ...	८६	६६	५६
जर्मनी (ग)	७३	५६	५१
युगोस्लाविया	३५	६१	३३
रुमानिया	२६	ट	ट
स्पेन	—	४२	६४
पोर्टोरिका (क)	४४	२६	२८
बेलजियम ..	१२	११	११
योग	५,३८६	६,७५०	६,६००

(क) वर्ष में फसल के अन्त तक का
(ख) १९३७-३९, केवल स्वतन्त्र चीन का
(ग) बगीचों का उत्पादन
(घ) जावा और मदुरा के छोटे उत्पादकों का उत्पादन
(च) मुख्य जापान का
(छ) युद्धोत्तर, केवल दक्षिणी कोरिया का
(ज) युद्धोत्तर, केवल पश्चिमी जर्मनी का
(फ) अनुमानित
(ट) योग में सम्मिलित अनुमान

तम्बाकू का प्रति एकड़ उत्पादन भूमि की किस्म और अन्य स्थानीय अवस्थाओं के अनुसार भिन्न भिन्न रहता है। उत्पादन का सबसे अधिक औसत पश्चिमी यूरोप के कुछ देशों में २,००० पौन्ड प्रति एकड़ तक रहा है। यहाँ की खेती अत्यन्त गहन होती है। उत्तरी अमेरिका में गत १५ वर्षों में खेती की प्रणाली में सुधार हो जाने से उत्पादन का औसत प्रति एकड़ बढ़कर १,३०० पौंड तक हो गया है। ब्रिटिश मध्य अफ्रीका में उत्पादन कम होता है। दक्षिणी रोडेशियामें युद्धके अन्त समय युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक उत्पादन हो रहा था। बाद को वह और भी बढ़ गया। १९५० से वह घटने लगा और ७०० पौंड प्रति एकड़ तक का लक्ष्य भी पूरा नहीं हुआ है। न्यासालैन्ड में अफ्रीकी लोग तम्बाकू पैदा करते हैं। उनके उत्पादन का औसत बहुत कम रहता है।

एशिया में उत्पादन का सबसे अधिक औसत जापान में है जो *कनाडा के बराबर है। भारत का औसत दक्षिणी रोडेशिया के बराबर है।* जिन देशों में विशाल परिमाण पर रासायनिक खाद का प्रयोग आरम्भ नहीं हुआ है वहाँ उपज का औसत कम है और न उसके बढ़ने के लक्षण ही दिखाई देते हैं।

अमेरिका का निर्यात घटा

तम्बाकू के कुल उत्पादन के प्राय पचमांश का ही विश्व व्यापार होता है। अमेरिका, भारत, चीन और रूस आदि विशाल उत्पादक देशों में उपजने वाली अधिकांश तम्बाकू वहां खप जाता है। *अनिर्मित तम्बाकू* के कुल निर्यात में १९४९ से कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ है। १९५१ में कुल निर्यात प्राय १२,००० लाख पौंड का हुआ जो युद्ध से पूर्व की अपेक्षा थोड़ा ही अधिक था। १९५२ में अमेरिका का निर्यात तेजी से घटने के कारण संसार के निर्यात व्यापार में कमी हो गई। अकेले अमेरिका से ही संसार का ४० प्रतिशत निर्यात होता है।

अनिर्मित तम्बाकू के लिये अमेरिका अब विदेशों पर कम निर्भर रहता है। अमेरिका का तम्बाकू उद्योग अपने यहाँ उपजने वाली तम्बाकू का ही अधिकाधिक प्रयोग कर रहा है। १९५२-५३ में अमेरिका की केवल २४ प्रतिशत उपज ही विदेशों को भेजी गई, जबकि गत मौसम में २८ प्रतिशत और १९३८-३९ में ३७ प्रतिशत भेजा गई थी। १९५१ में निर्यात फिर बढ़ गया। १९५२ में वह फिर कुछ घटा।

युद्ध के बाद तम्बाकू का निर्यात करने वालों में तुर्की का दूसरा स्थान है। इसका एक कारण यह भी है कि दुर्लभ मुद्रा क्षेत्र के देशों से माल मिलने में कठिनाई होने के कारण यहाँसे बहुत अधिक तम्बाकू खरीदी गई। १९४९ में तो तुर्की से तम्बाकू का निर्यात चरम सीमा को जा पहुँचा। १९५१ में यह घट गया और १९५२ में भी प्राय १९५१ के बराबर ही बना रहा। अमेरिका को जाने वाले माल में कमी हो गई। परन्तु यह कमी जर्मनी और पूर्वी यूरोप को होने वाले निर्यात में वृद्धि हो जाने से बहुत कुछ पूरी हो गई। यूनान का निर्यात भी १९५२ में तेजी से बढ़ा। यहाँ से बहुत अधिक माल जर्मनी को भेजा गया।

दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील का तम्बाकू उत्पादन बढ़ जाने पर भी

निर्यात कम हुआ। इसका कारण विदेशी मुद्रा में तम्बाकू का मूल्य कम रहना था। क्यूबा में भी उत्पादन बढा परन्तु उसकी अपनी खपत भी बढ गई। १९५१ और १९५२ मे यहाँ से पत्ती का निर्यात अच्छा हुआ।

सुदूर पूर्व में १९५२ में इन्डोनेशिया का निर्यात युद्ध से पूर्व का एक अंश ही रहा। परन्तु फिलिपाइन का निर्यात १९३७ के बराबर जा पहुँचा। चीन से हाल के वर्षों मे पूर्वी यूरोप को तम्बाकू भेजी जाने के समाचार मिले हैं।

डालर क्षेत्र से माल कम मिलने के कारण शेष माग को पूरा करने के लिये ब्रिटेन तथा अन्य देशो ने जो माल खरीदा उसके कारण ब्रिटिश राष्ट्र-मन्डल के अधिकाश देशो के निर्यात को प्रोत्साहन मिला। दक्षिणी रोडेशिया का कुल निर्यात १९५० के बराबर हो गया जो युद्ध से पूर्व की अपेक्षा प्रायः पाच गुना था। इसके बाद १९५१ मे निर्यात कुछ घटा और फिर १९५२ में वह १९५० के बराबर हो गया। न्यासालैन्ड और उत्तरी रोडेशिया मे फसल खराब होने के कारण युद्ध के बाद यहाँ से अधिक निर्यात नहीं हुआ। परन्तु १९५३ मे दशा सुधरने लगी। युद्ध काल से भारत से हुआ निर्यात घटता बढता रहा है। १९५० और १९५१ मे वह युद्ध से पूर्व अविभाजित भारत से हुए निर्यात का दुगना हो गया। १९५२ मे भारत का निर्यात भी फिर घटा और १९५३ की पहली छमाही में १९५२ के बराबर ही रहा।

कनाडा से ब्रिटेन को बहुत अधिक तम्बाकू भेजी जाने के कारण १९५२ मे उसके निर्यात का योग २९० लाख पौंड तक जा पहुँचा, परन्तु १९५३ मे वह कुछ घट गया।

यूरोपीय पुनरुत्थान और पारस्परिक सुरक्षा कार्य क्रमो के अधीन १९५२ के अन्त तक अनिर्मित तम्बाकू के निर्यात का योग ६,६०० लाख पौंड से अधिक रहा। यह निर्यात प्राय सारा ही अमेरिका से हुआ। १९४९ में, जबकि यह निर्यात अपनी चरम सीमा पर था तो अमेरिका से होने वाले तम्बाकू के कुल निर्यात में यह ७० प्रतिशत रहा करता था। परन्तु १९५२ आते-आते यह अनुपात घटकर १० प्रतिशत से भी कम रह गया। यूरोपीय पुनरुत्थान और पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रमा के अन्तर्गत होने वाले निर्यात में से ४३ प्रतिशत ब्रिटेन को और २३ प्रतिशत पश्चिमी जर्मनी को हुआ।

नीचे की तालिका मे मुख्य मुख्य देशो को हुआ निर्यात दिखाया गया है :—

(लाख पौण्ड सूखा भार)

		१९३८	१९५१	१९५२
ब्रिटिश राष्ट्रमन्डल				
दक्षिणी रोडेशिया		२३०	६७०	८८०
भारत (क)	...	५४०	१,०९०	८००
न्यासालैंड	...	१३०	२७०	२१०
कनाडा	...	१७०	२९०	२९०
उत्तरी रोडेशिया	...	२०	१००	९०
अन्य देश				
अमेरिका	... ...	४,८९०	५,२२०	३,९६०
तुर्की	.. ..	९३०	१,२७०	१,२५०
ब्राजील	-	५८०	६३०	६६०
यूनान	...	१,०८९	६९०	९१०
इन्डोनेशिया	...	१,०८९	२७०	२२०
डोमीनिकन गणतन्त्र	..	१६०	३५०	३४०
क्यूबा	..	२८०	३८०	४००
अलजीरिया	...	२५०	३००	२४०
बलगारिया	...	७४०	—	—
इटली		१९०	१७०	१७०
फिलीपाइन	...	२६०	१४०	२५०
हंगरी		१५०	—	—
चीन	.	३३०	—	—
योग	..	१२,०१०	११,८५०	१०,७०

इस तालिका मे दी गई अनिर्मित तम्बाकू में उसके डंठल, कतरनें चूरा आदि भी सम्मिलित है।

(क) समुद्र द्वारा हुआ व्यापार। १९४८ से पहले अविभाजित भारत का जिसमे काठियावाड और ट्रावनकोर का भी सम्मिलित है १९४८ से १९५१ तक के आकडे केवल भारतीय गणराज्य के ही हैं।

स्थल द्वारा १९५२ मे भारत से जो निर्यात हुआ उसका योग ७० लाख पौंड रहा। इसमे से ६० लाख पौण्ड माल पाकिस्तान को गया।

व्यापार का रूप

अमेरिका से तम्बाकू के निर्यात की दिशाओं में युद्ध से पहले की अपेक्षा काफी परिवर्तन हो गया है। १९५१ में जब बहुतसे डालर उपलब्ध थे तो ब्रिटेन को २,२३० लाख पौन्ड तक तम्बाकू भेजी गई जो कुल निर्यात की ४३ प्रतिशत थी। उसके बाद के वर्ष मे डालर कम मिलने से ब्रिटेन को केवल ५५० लाख पौन्ड तम्बाकू ही भेजी गई जो कुल निर्यात की केवल १४ प्रतिशत थी। बाद को कुछ और भी तम्बाकू ब्रिटेन ने अमेरिका से खरीदी परन्तु वह १९५३ के आरम्भ में ही वहा पहुँच सकी।

युद्ध से पहले अमेरिकन तम्बाकू का दूसरा प्रमुख खरीदार चीन था। १९५० से चीन को अमरीकी तम्बाकू जाना बन्द हो गया है। परन्तु हाल के वर्षों में फिलिपाइन और इन्डोनेशिया अधिक प्रमुख खरीदार हो गये हैं। जर्मनी को भी युद्ध से पहले अपेक्षाकृत कम अमरीकन तम्बाकू जाती थी, परन्तु १९५० में वह बढकर ८०० लाख पौन्ड हो गई। फ्रास ने अमेरिका से तम्बाकू लेना कम कर दिया है। परन्तु हालैन्ड बेलजियन, लक्सम्बर्ग, स्वीडन, नारवे और स्वीटजरलैंड ने बढा दिया है।

नीचे की तालिकाओं से विदित होता है कि किन देशों ने किन देशों से कितनी तम्बाकू मंगाई

(दस लाख पौंड सूखा भार)

	अमरीका			भारत			रोडेशिया		
	१९३८	१९५१	१९५२	१९३८	१९५१	१९५२	१९३८	१९५१	१९५२
ब्रिटेन	२६२४	२९२४	५४७	२७६	४९६	३३५	१९१	४२८	५५२
आस्ट्रेलिया	१०३	२०२	२४०	—	०४	०५	—	४२	७३
हांगकांग	१५	४३	३६	०५	१८२	२४	—	—	—
आयर	१०	१३६	१६४	—	०६	०१	—	०१	०१
जर्मनी (ख)	८७	४३७	७९१	—	०१	०७	०७	०२	४१
नीदरलैण्ड	१३५	२४३	२६२	०४	७	२६	—	४१	८१
चीन	६०१	—	—	४०	३३	०४	—	—	—
फ्रान्स	२१२	१००	६७	—	०५	१०	—	—	—
बेल्जियम	१२२	२९६	१५६	—	१०	४	०१	०७	११
स्विट्जरलैण्ड	४८	१०४	१०७	—	०१	—	—	—	—
डेनमार्क	६१	९१	९६	—	०३	—	—	४०	३५
मिस्र	७२	३८	४२	०१	२२	२०	—	०९	१५
अर्जेन्टाइना	१६	०७	—	—	—	—	—	—	—
स्वीडन	६९	१५०	१३०	—	१६	१४	—	०६	०६
इटली	०८	०७	२९	—	०१	०६	—	—	०१
अन्य	५०८	२०१३	१२०७ ग	१७५ घ	२६८ च	२९५ छ	३२	९८	६५
योग	४८९१	५२२१	४९६५	६०१	१००४	७६९	२२६	६७४	८८४

	ब्राजील			तुर्की			यूनान		
	१९३८	१९५१	१९५२	१९३८	१९५१	१९५२	१९३८	१९५१	१९५२
ब्रिटेन	०१	०८	०१	१०	३१	२७	११	१६	२१
जर्मनी (ख)	४८३	१०२	१९३	३६४	१०३	२५६	५६९	१३३	४०९
नीदरलैण्ड	१२०	१०७	६७	४०	११	१६	२१	०४	०९
अमेरिका	—	०४	११	२७९	६९७	५९७	२६९	१०९	१३८
फ्रान्स	९.१	४७	०२	०५	६७	७३	०५	१६८	१३०
बेल्जियम	११	३०	२८	१८	३८	५५	०९	०१	०४
स्पेन	—	६८	१२१	ज	—	११	ज	—	१२
स्विट्जरलैण्ड	०१	७१	६७	०४	१६	२८	१०	११	२२
डेनमार्क	—	२५	४७	०५	०४	०३	०६	०३	—
मिस्र	—	—	—	२३	८०	४५	३०	४४	२९
अर्जेन्टाइना	१०३	२२	—	ज	ज	ज	ज	ज	ज
स्वीडन	०७	०७	०८	०५	११	१८	०३	१२	३०
इटली	—	—	—	७८	१७	३२	२१	५६	१५
अन्य	४३	११६	११९	९६	२००	२१२	१५१	१०७	१००
योग	५८.०	६२७	६६५	९२७	१४७५	१४५.४	१०७८	६६	९१३

क—वित्तीय वर्ष जो १ अप्रैल से आरम्भ होता है। समुद्र द्वारा हुआ निर्यात। १९५१ और १९५२ में केवल भारत गणराज्य का। ख—युद्धोत्तर वर्षों में केवल संघीय गणराज्य का। ग—फिलिप्पाइन द्वीप— ९.७ और इण्डोनेशिया १२.६। घ—बर्मा १०.९। च—सोवियत रूस ७.६। छ—जापान १४.५। ज—निर्यात, यदि कुछ हुआ है तो उसमें 'अन्य' मा सम्मिलित है।

१९५१ से पूर्व लागू समझौते के अनुसार दक्षिणी रोडेशिया की दो तिहाई तम्बाकू प्रति वर्ष ब्रिटेन के निर्माता लेते थे। उसके बाद निर्माताओं ने धूम्रतापी पत्ती की कुछ विशेष किस्में ही मूल्य और किस्म सन्तोषजनक होने की अवस्था में खरीदनी स्वीकार की। परिणाम के विषय में इस प्रकार निश्चय हुआ —

१९५२	७५० लाख पौण्ड
१९५३	८०० ,, ,,
१९५४	८५० ,, ,,
१९५५	८५० ,, ,,
१९५६	८०० ,, ,,
१९५७	८०० ,, ,,

१९५१ मे आस्ट्रेलिया के निर्माताओं के साथ भी इसी प्रकार का समझौता हुआ। ये उस समय रोडेशिया का ६॥ प्रतिशत तम्बाकू लेते थे। इस के अनुसार १९५१ में ८३ लाख पौंड से लेकर १९५५ में ९७ लाख पौंड लेना तय हुआ। आस्ट्रेलिया ने १९५२ मे आयात पर जो प्रतिबन्ध लगाये थे उनसे दक्षिणी रोडेशिया की तम्बाकू मुक्त थी। दक्षिणी रोडेशिया की तम्बाकू हाल के वर्षो मे दक्षिणी अफ्रीका को कम जाने लगी है। परन्तु नीदरलैंड और जर्मनी को उसका निर्यात बढ गया है।

भारतीय तम्बाकू की अब भी सबसे अधिक खपत ब्रिटेन में ही होती है। अन्य देशों को होने वाले निर्यात में प्रति वर्ष परिवर्त्तन होता रहता है। १९५१–५३ में हांगकांग और सोवियत रूस ने अच्छा माल खरीदा। इसके बाद वाले वर्ष में जापान को हुआ निर्यात केवल ब्रिटेन से कम रहा।

१९५२ मे न्यासालैण्ड की उपज का आधे से अधिक भाग ब्रिटेन को भेजा गया, यद्यपि अनुपात में यह युद्ध से पहले की अपेक्षा कम रहा। सिरा लियोन, मिस्र और बेलजियन कांगो को अब इसका निर्यात बढ रहा है। कनाडा की ८० प्रतिशत से अधिक तम्बाकू ब्रिटेन को जाती है। युद्ध से पहले यह ९० प्रतिशत जाती थी। अब शेष भाग ब्रिटिश केरीबियन द्वीपों तथा आस्ट्रेलिया को जाता है।

युद्धोत्तर वर्षों में तुर्की की तम्बाकू का सब से बडा खरीदार अमेरिका रहा है। पहले तुर्की की सबसे अधिक तम्बाकू जर्मनी को जाती थी और यद्यपि युद्ध के बाद जर्मनी फिर तुर्की की अधिकाधिक तम्बाकू खरीद रहा है तथापि वह युद्ध की अपेक्षा कम ही है। युद्ध से पहले तुर्की से ब्रिटेन को जाने वाली तम्बाकू का परिमाण नगण्य ही था, परन्तु १९४९ मे यह १९० लाख पौंड रहा। उसके बाद थोड़ा घट गया है। यूनान से युद्ध के बाद जर्मनी और अमेरिका को थोडा माल जाने लगा है।

आयात करने वाले मुख्य देश

यद्यपि शीतोष्ण कटिबन्ध के देशों मे तम्बाकू की उपज बढ रही है तथापि अब भी वे अपनी अधिकांश आवश्यकता के लिये विदेशों पर निर्भर हैं। ब्रिटेन अब भी संसार भर के समस्त देशों में सब से अधिक तम्बाकू का आयात करता है। परन्तु वह आयात की हुई तम्बाकू का पचमांश निर्मित अवस्था में फिर निर्यात कर देता है। आयात का परिमाण युद्ध के बाद प्रतिवर्ष बदलता रहा है। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के अन्य देशों में आस्ट्रेलिया भी विदेशों से बहुत तम्बाकू मगाता है। उसकी अपनी उपज बहुत थोड़ी होती है। न्यूजीलैंड का उत्पादन भी बढ रहा है। कनाडा यद्यपि अपनी तम्बाकू निर्यात करता है तथापि सिगार की पत्ती वाली तथा पूर्वी देशों की अन्य प्रकार की तम्बाकू कुछ परिमाण मे मगाता है। नाइजेरिया भी इधर आयात करने लगा है।

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के बाहर घरेलू उपयोग के लिये तम्बाकू का आयात करने वाले देशो मे जर्मनी का फिर सबसे ऊचा स्थान हो गया है। १९५२ मे पश्चिमी जर्मनी ने १,१३० लाख पौंड तम्बाकू मंगाई। युद्ध से पहले समस्त जर्मनी में जितनी तम्बाकू खपती थी उसकी यह आधी है। युद्ध के बाद जर्मनी मे बहुत सी तम्बाकू अमेरिका से आने लगी है। इधर कुछ वर्षों से तुर्की और बाल्कन राष्ट्रों ने भी जर्मनी को अधिक तम्बाकू भेजनी आरम्भ कर दी है। लेटिन अमरीकी देशो तथा इण्डोनेशिया से भी अधिक आयात होने लगा है। युद्धकाल से अमरीका भी विदेशी तम्बाकू अच्छे परिमाण मे मंगा रहा है। उसे पूर्व की पत्ती की आवश्यकता होती है, जिसे वह तुर्की और यूनान से मंगाता है और अपने यहा की तम्बाकू में मिलाता है। क्यूबा पोर्टरिको और इण्डोनेशिया से वह सिगार की पत्ती का आयात करता है। १९५१ मे उसने १,०५० लाख पौंड मगाई। १९५२ मे भी उसके आयात का योग प्राय इतना ही रहा, जब कि युद्ध से पूर्व ७५० लाख पौंड रहा था। नीदरलैंड में आने वाली तम्बाकू का योग अब भी युद्ध से पहले की अपेक्षा कम है। इण्डोनेशिया से अब यहा माल आना बहुत कम हो गया है। जितनी तम्बाकू आती है उसमे से प्राय आधी का पुनर्निर्यात कर दिया जाता है। युद्ध से पहले दो तिहाई का निर्यात हो जाता था।

फ्रांसमें तम्बाकू का आयात प्रतिवर्ष घटता बढता रहा है। परन्तु १९५१ और १९५२ मे यह युद्ध मे पूर्व की अपेक्षा सवाया हुआ। अल्जीरिया से पहले के बराबर ही तम्बाकू आने लगी है। यूनान और युगोस्लाविया से भी हाल के वर्षों मे अधिक आई है। अमेरिका से आने वाली तम्बाकू घट रही है। स्पेन ने १९५३ मे ५६० लाख पौंड तम्बाकू मगाई यह मुख्यत लैटिन अमेरिकन देशों और फिलीपाइन से आई। १९५१ से अमेरिका से भी अधिक तम्बाकू आने लगी है। १९५२ में तुर्की और यूनान ने भी युद्ध के बाद पहली बार स्पेन में तम्बाकू भेजी। इटली मे तम्बाकू उपजने लगने के कारण १९४८ से उसका कम आयात किया गया है। चीन ने १९५० से अमरीकी तम्बाकू मगाना बन्द कर दिया है। मिस्र ने युद्ध से पहले की अपेक्षा हाल के वर्षों मे दुगनी तम्बाकू मगाई है।

नीचे की तालिका में विभिन्न देशों द्वारा किया गया तम्बाकू का आयात दिखाया गया है —

(दस लाख पौंड सूखा भार)

	१६३८	१६५१	१६५२
ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल			
ब्रिटेन ...	३४५	२५५	२२४
आस्ट्रेलिया (क)	२३	२७	२७
भारत ..	७	६	६
पाकिस्तान (ख) ..		३	२
कनाडा .	४	१	२
दक्षिणी अफ्रीका	-	५	३
न्यूजीलैन्ड	३	७	७
नाइजेरिया .	३	६	६
आयर गणराज्य	१४	१६	१६
विदेश			
जर्मनी (ग)	२२१	१०२	११३
नीदरलैंड .	१६०	१०६	१३५
अमेरिका	७१	१०५	१०३
चीन	५३	—	—
फ्रांस	५७	७०	७३
बेलजियम	३८	५४	४७
स्पेन	—	४७	५६
स्विट्जरलैंड .	१६	२४	२५
चैकोस्लोवाकिया	१७	—	—
डेनमार्क	२२	२२	२२
मिस्र	१३	२८	२६
अर्जेन्टाइना	१८	६	—
स्वीडन ...	१४	२७	१६
इटली ...	६	६	४
योग ...	१,११४	१,०२६	६२०

इस तालिका में अनिर्मित तम्बाकू में उसके डण्ठल, कतरनें, चूरा आदि सम्मिलित हैं।

(क) दिखाये गये वर्ष के ३० जून को समाप्त होने वाले १० महीने।

(ख) केवल समुद्र द्वारा हुआ आयात।

(ग) १६४८ और १६४६ में सम्पूर्ण जर्मनी का और उसके बाद केवल पश्चिमी जर्मनी का।

उपभोग में उल्लेखनीय विस्तार

अमेरिका और कनाडा में तम्बाकू का उपभोग बहुत बढ़ता जा रहा है। अमेरिका में १६५२ में कुल उपभोग ११,००० लाख पौंड अथवा युद्ध से पहले की अपेक्षा प्रायः ५० प्रतिशत अधिक हुआ। कनाडा में तो उपभोग की गति और भी तेजी से बढ़ी है। १६५१ में तम्बाकू पर अधिक कर लगाने से उपभोग कुछ कम हुआ परन्तु उसके एक वर्ष बाद कर हट जाने पर वह फिर तेजी से बढ़ने लगा। युद्ध से पहले की अपेक्षा तम्बाकू का उपभोग इटली में ३५ प्रतिशत से अधिक हो गया। फ्रांस, नीदरलैंड, डेनमार्क और स्वीडन में भी यह बढ़ गया। बेलजियम में यह बढ़कर युद्ध से पहले के बराबर हो गया है।

तम्बाकू के विभिन्न उत्पादनों में सिगरेटों की खपत बहुत बढ़ी है। अमेरिका, कनाडा, स्वीडन और डेनमार्क में सिगरेटों की बिक्री से युद्ध से पहले की अपेक्षा दुगनी हो गई है। अन्य अनेक देशों में भी ५० प्रतिशत बढ़ा है। दूसरी ओर अधिकांश देशों, विशेषतः अमेरिका में पाइप की तम्बाकू और सुंघनी की खपत घट गई है। पहले नीदरलैंड और डेनमार्क सिगार पीने के बड़े शौकीन थे। परन्तु अब इनमें सिगार की खपत बहुत घट रही है। दूसरी ओर अमेरिका और कनाडा में सिगार की खपत बहुत बढ़ गई है।

नीचे की तालिका में कुछ देशों के तम्बाकू की खपत के आंकड़े दिखलाये गये हैं :—

बड़े सिगार (दस लाख संख्या)

	१६३८	१६५१	१६५२
कनाडा	१३२	१६६	२००
अमेरिका	५,३९६	५,७३५	५,६८२
फ्रान्स	१८१	१०२	६७
इटली (क)	१,१६७	६१२	५६३
नीदरलैंड	१,२३६	५६६	६६२
बेलजियम .	१६५	७७	११७
स्वीडन	२८	२०	२१
डेनमार्क	४६६	९८९	२१४

छोटे सिगार, सिगारिलो और सिगरेटें (दस लाख संख्या)

कनाडा ...	६,८७९	१५,६६७	१७,८४८
अमेरिका . ..	१६३,६९२	३,८०,३५०	३,६४,६६५
फ्रान्स ..	१६,९००	३९,९२०	३३,०२०
इटली (ख)	१७,५१९	२०,३३८	३२,०५२
नीदरलैंड	५,०७७	८,५६६	६,५६४
बेलजियम	५,७९३	८,८५४	८,५८४
स्वीडन .	९,३२०	४,५२०	५,२३५
डेनमार्क	२,०१३	३,६०६	४,४२३

तम्बाकू और सुंघनी (हजार पौण्ड)

कनाडा .	९५,३६८	३१,२२६	३४,८१०
अमेरिका	३,४३,२६२	२,२२,६३७	२,१५,१०१
फ्रान्स	७०,४७२	४६,४६३	४२,८६०
इटली	१४,२२०	१९,६४१	१२,३६१
नीदरलैंड --	२२,२२६	९,९३,२६६	२२,६५४
बेलजियम	२६,१०३	१,७४०	२३,०८६
स्वीडन ...	१२,७१४	६,६३६	६,८६६
डेनमार्क . --	७,७६३	७,२४४	७,०६८

	अनुमानित कुल उपयोग (दस लाख पौण्ड) (ग)		
कनाडा	४५	७३	८३
अमेरिका	७८३	१,१२६	१,१५५
फ्रान्स ..	११४	११८	११७
इटली	६३	८५	८८
नीदरलैण्ड ...	४६	५१	५४
बेलजियम ..	५०	४८	५०
स्वीडन ...	२०	२१	२१
डेनमार्क	१६	२१	२२

(क) सिगारिलो सहित (ख) सिगारिलो रहित

(ग) सिगार और सिगरेटो को विभिन्न देशो मे चालू तौल के विनिमय के अनुसार भार मे बदल कर उत्पादन और भार के आधार पर।

यदि एशियाई देशों को छोड दें तो तम्बाकू की खपत की दृष्टि से ब्रिटेन का स्थान अमेरिका के बाद ही दूसरा है। परन्तु तुलनात्मक आकडे उपलब्ध नहीं हैं। घरेलू उपयोग के लिये ब्रिटेन में जितनी तम्बाकू ली गई है उसके आकडों से प्रकट होता है कि १६४६ तक जो कमी हो रही थी वह १६४६ से वृद्धि मे बदल गई और १६५२ की खपत के आकडे १६३८ से १५ प्रतिशत अधिक रहे। नीचे की तालिका मे तम्बाकू का वह परिमाण दिखाया गया है जो ब्रिटेन मे घरेलू उपयोग के लिये रखा गया था :—

(दस लाख पौण्डों मे)

वर्ष		ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल मे पैदा हुई	विदेशो की	योग
१६३७	...	४४.०	१३८ ४	१८२.४
१६३८	..	४५.२	१४४ २	१८६.४
१६३६	..	४८.१	१५१.१	१६६.२
१६४०	...	४६.७	१४१.२	१६०.६
१६४१	...	६८.६	१५२.७	२२१.६
१६४२	...	७५.७	१५७.४	२३३.१
१६४३		५६.३	१६४.७	२२१.०
१६४४	...	४७.०	१७२.६	२१६.६
१६४५	...	४७.८	१८३.५	२३१.३
१६४६	...	५५.४	१६२.६	२४८ ३
१६४७	...	५०.८	१७३.०	२२३.८
१६४८	...	६० ५	१५२.७	२१३.२
१६४६	...	७२.२	१३८.६	२११.१
१६५०	...	८१ ३	१३२.१	२१३.१
१६५१	...	६० ७	१३० ०	२२०.७
१६५२	...	६७.२	१२०.४	२१७.६

पूर्वी देशों की तम्बाकू के कम मूल्य

१६५२ में अमेरिका तथा कनाडा में धूम्रतापी तम्बाकू के लिये जो मूल्य दिये गये उनका औसत गत दो वर्षों के मूल्यो से कम रहा। अमेरिका मे अच्छे वर्ग की पत्ती के भाव चढते जा रहे हैं। दक्षिणी रोडेशिया की धूम्रतापी तम्बाकू के भाव भी काफी चढ गये हैं। अन्य प्रकार की तम्बाकुओं मे से अधिकाश के भाव गत वर्ष की अपेक्षा आलोच्य वर्ष में कुछ गिर गये। न्यासालैन्ड मे १६५१ की अपेक्षा भाव कुछ चढ गये।

नीचे दी गई तालिका मे ब्रिटेन मे विभिन्न देशो से आने वाली तम्बाकू के घोषित औसत मूल्य दिखाये गये हैं। इनमे इनके मूल्यों की तुलनात्मक स्थिति का पता चल जाता है। परन्तु इनसे कोई निष्कर्ष निकालते समय अत्यन्त सावधान रहना चाहिए। इनसे प्रकट होता है कि १६५२ मे विभिन्न देशो से आने वाली धूम्रतापी तम्बाकू के भाव चढ गये। युद्ध से पूर्व की अपेक्षा ये ३ से ५ गुने तक अधिक थे। दक्षिणी रोडेशिया की पत्ती के मूल्य सब से अधिक चढे। ये १६५२ मे ५ शि० २ पैं० प्रति पौंड रहे, जबकि गत वर्ष ४ शि० ६ पैं० प्रति पौंड और युद्ध से पहले १ शि० २ पैं० प्रति पौंड रहे थे। स्टर्लिंग का अवमूल्यन होने के बाद पहली बार दक्षिणी रोडेशिया की धूम्रतापी तम्बाकू के भाव अमरीकी तम्बाकू से अधिक रहे। अमरीकी तम्बाकू के भाव १६५२ मे ५ शि० प्रति पौंड और युद्ध से पहले १ शि० ३ पैं० प्रति पौंड थे।

भारतीय धूम्रतापी तम्बाकू का भाव १६५२ में २ शि० १० पैं० प्रति पौंड रहा था। यह युद्ध से पहले की अपेक्षा तीन गुने से अधिक रहा। न्यासालैन्ड से १६५१ में धूम्रतापी तम्बाकू कम आई। परन्तु यहाँ की गहरे रग की पत्ती का भाव २ शि० ४ पैं० प्रति पौंड रहा, जो गत वर्ष से २ पैंस प्रति पौंड अधिक रहा। पूर्व देशों की पत्ती का आयात मूल्य १६५२ में गिर गया। यूनानी तम्बाकू का मूल्य १६४६ से बराबर गिरता रहा है, परन्तु तुर्की की तम्बाकू के मूल्य १६५० और १६५१ में कुछ सुधर गये।

(पैंस प्रति पौन्ड, शुल्क छोड़कर)

	१६३८	१६५१	१६५२
हल्की १६३७-३८ :			
धूम्रतापी १६३६-५२ :			
दक्षिणी रोडेशिया	१४.८	५७ ४	६२.३
अमेरिका .	१५.६	५८.६	६०.२
न्यासालैंड	१२.१	५५.१	४२.०
कनाडा	१८.२	५०.५	५२.५
भारत	१२ ६	३३.२	३३ ५
पूर्वी देशों की			
यूनान	२८.७	४१.२	३६.३
तुर्की	१७.५	४८.०	३८.६
गहरी १६३७-३८ :			
धूम्रतापी के अतिरिक्त			
१६३६-५२ :			
उत्तरी बोर्नियो (क) .	३०.६	२४३.०	२७७.७
न्यासालैण्ड (ख) .	११.६	२६ ४	२८.७

(क) सिगार बनाने की पत्ती

(ख) *गहरे रग की अग्नितापी जिसमे थोडी धूप अथवा वायु तापी भी मिली हो।*

अन्तिम उपभोक्ता की दृष्टि से अब बहुत से देशों मे तम्बाकू का मूल्य पत्ती के मूल्य की अपेक्षा उस पर लिये जाने वाले सरकारी शुल्क के अनुसार निर्धारित किया जाता है।

दो महत्वपूर्ण उद्योग

मोटरगाडी उद्योग को सुदृढ आधार पर स्थापित करने की मुख्य कठिनाई यही है कि देश मे अभी मोटर गाडियो की माग बहुत कम है। इस कारण हमे उन फरमो की सख्या परिमित रखनी पडी है जिन्हें गाडिया बनाने की अनुमति दी गई है। गाडियो की किस्मो का भी निर्धारण कर दिया गया है जिससे फरमो को चलते रहने का अवसर मिल सके। इसी प्रकार रग उद्योग के विषय मे भी यदि हम हर किसी को जो वह चाहे करने की स्वतन्त्रता दे दे तो जिन क्षेत्रो मे थोडी बहुत उन्नति हो चुकी है वही कडी-प्रतिस्पर्धा शुरू हो जायगी और उसके कारण नये कारखाने नष्ट हो जायगे। इसके साथ ही दूसरे क्षेत्रो में कभी कोई काम ही आरम्भ नहीं होगा।

विकास परिषदें

उद्योग अधिनियम को नियन्त्रण करने वाले साधन मात्र की दृष्टि से देखना अत्यन्त अवाछनीय होगा। किसी को भी यह नहीं भूल जाना चाहिए कि अधिनियम में विकास को नियमन के ऊपर स्थान दिया गया है। अधिनियम मे विकास के जिन साधनों की कल्पना की गई है वे विकास परिषदें हैं जो आवश्यकतानुसार उद्योग विशेष के लिये स्थापित की जाती हैं। अब तक हम नीचे लिखे उद्योगों के लिये विकास परिषदे स्थापित कर चुके हैं —

(१) भारी रासायनिक पदार्थ (तेजाब और कृत्रिम खाद)
(२) अन्तरदाह इजन और शक्तिचालित पम्प।
(३) बाइसिकलें।
(४) चीनी।

बिजली के भारी सामान तैयार करने वाले उद्योगों, बिजली के हल्के सामान तैयार करने के उद्योगों, दवाइयों बनाने वाले उद्योगो और नकली रेशमी तथा ऊनी कपडे तैयार करने वाले उद्योगो के लिये भी विकास परिषदें स्थापित करने का विचार है। द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना तैयार करने मे इन विकास परिषदो का विशेष भाग होगा।

द्वितीय योजना मे औद्योगिक विस्तार

मेरे मत मे पहली की अपेक्षा द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना मे हमें औद्योगिक विकास पर अधिक जोर देना है। इसके कारण स्पष्ट हैं। जब पहली पञ्चवर्षीय योजना बनाई गई थी तो हमारे सिर पर अकाल की आशका नाच रही थी। उस समय हमे सबसे अधिक चिंता खाद्य की थी। हमारी खाद्य स्थिति सुधर जाने और हमारी बडी बडी सिंचाई योजनाए पूर्ण हो जाने अथवा पूर्णता के निकट पहुँच जाने पर हमारे ध्यान का औद्योगिक प्रगति को और भी तीव्र करने की ओर जाना स्वाभाविक है। आज हम सब इस विषय पर एकमत हैं कि हमारे उद्योगो का तेजी के साथ विकास होना चाहिए।

मेरा सदा से यह विश्वास रहा है कि इस विषय में सरकार को अधिक सक्रिय और सीधी कार्रवाई करनी चाहिए। गतवर्ष इन्हीं दिनों एक औद्योगिक विकास निगम (कारपोरेशन) बनाने का विचार उठा था। इस निगम को औद्योगिक विकास की सीधी उन्नति करने में सरकारी नीति का साधन बनाने की बात थी। उद्योगो और जनता दोनों ने ही इस विचार का उत्साहपूर्वक स्वागत किया है। तब से इसकी योजना काफी विकसित हो चुकी है और अब तक उसका पर्याप्त स्पष्ट रूप प्रकट हो चुका है।

सरकार का भाग

गैर सरकारी क्षेत्र मे भी अब सरकार को जो कुछ करना है उसके स्वीकार कर लिये जाने के फलस्वरूप हमें अपनी द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना का पूर्व निर्धारित रूप बदलना पडेगा। पहली योजना बनाते समय केवल यह अनुमान लगाया गया था कि गैर सरकारी क्षेत्र के उद्योग क्या कर सकेंगे। सरकार ने केवल अपनी शक्ति भर सुविधाए देने के अतिरिक्त और कुछ करने का दायित्व नहीं लिया था। परन्तु मेरा सुझाव है कि दूसरी पञ्चवर्षीय योजना मे हमारा दृष्टिकोण बदल जाना चाहिए। विभिन्न उद्योगो के लिये हम जो योजना बनायें वे ऐसी नहीं होनी चाहिए कि ये उद्योग क्या कर सकेंगे वरन् ऐसी होनी चाहिए कि वे क्या करेंगे। दूसरे शब्दों मे सरकार को केवल विकास के लिये उपयुक्त आर्थिक वातावरण उत्पन्न करके ही सन्तोष नहीं कर लेना चाहिए वरन् लक्ष्य पूरा कर ही लेने के लिये सीधा सहायता देने को भी तैयार रहना चाहिए। निश्चय ही सरकार ऐसा समस्त उद्योगों के विषय में नहीं कर सकती। ऐसे बहुत से उद्योग होंगे जिनके विषय मे सरकार इस प्रकार की सीधी योजना नहीं बना सकेगी। सरकार को आशा है कि ये उद्योग भी फलेंगे और फूलेंगे तथा देश मे आर्थिक हलचल बढने पर उनकी उन्नति को भी प्रोत्साहन मिलेगा। जिन उद्योगो का आयोजन किया जायगा लक्ष्य प्राप्ति के लिये उनके साधनो की सरकार भी पूर्ति अथवा वृद्धि करती रहेगी।

इन लक्ष्यों को निर्धारित करने और इनकी प्राप्ति के उपाय चुनने मे विकास परिषदें और विशेष समितिया महत्वपूर्ण भाग लेंगी। वे प्रत्येक उद्योग की समस्याओं और सम्भावनाओं के विषय मे विचार करेंगी। सब से पहली समस्या उन उद्योगों के चुनाव की होगी जिनका सीधा नियोजन किया जा सकेगा। हमे यह भी विचार करना होगा कि जो लक्ष्य निर्धारित किये जाय उनकी प्राप्ति सरकार किस प्रकार सुनिश्चित कर दे।

अधिक मजदूरी, अधिक उत्पादन

मेरा यह खेदजनक अनुभव रहा है कि यदि मूलभूत उद्देश्य के विषय मे कोई विचार विनिमय कर व्यवस्था अथवा मजदूरी के प्रश्नों को केन्द्र बनाकर चलता है तो उसमें कोई प्रगति नहीं हो पाती। समस्त कर व्यवस्था की इस समय एक ऐसी समिति द्वारा परीक्षा की जा रही है जिसके अध्यक्ष एक ऐसे प्रमुख अर्थशास्त्री और व्यापारी हैं जो हमारी सरकार के वित्त मन्त्री भी रह चुके हैं। मजदूरी के प्रश्न पर मेरा मत यह है कि यदि आज की अपेक्षा उच्चतर स्तर पर मजदूरों को स्थिर कर देने की आवश्यकता को सामान्यत स्वीकार कर लिया जाय तो उससे आज के सघर्ष के कारण दूर होने मे सहायता मिलेगी और अधिक उत्पादन करने योग्य वातावरण भी बन जायगा। अत मै आज आपके समक्ष यह नारा

उपस्थित करता हूँ : "अधिक मजदूरी और अधिक उत्पादन।" परन्तु यहां हम जो समझौता करें वह उच्च स्तर पर रहना चाहिए। हमें इसे किसी एक वर्ग के पक्षपात की भावना से इस समस्या पर विचार नहीं करना चाहिए। एक क्षण के लिये हमें अपने दलों के सम्बन्ध भूल कर यह मान लेना चाहिए कि उद्योग, श्रम और सरकार सभी के लिये यह एक सामान्य समस्या है और विशेष स्वार्थ रखने वाले दलों के मध्य चाहे जो मतभेद हो, हमें इसे सुलझाते समय एक होकर काम करना चाहिए। सम्मिलित प्रयत्न की यही भावना लेकर हमें अगली पञ्चवर्षीय योजना में औद्योगिक भविष्य की रूपरेखा निर्धारित करनी है।

बड़े बनाम छोटे उद्योग

अन्त में मैं तथा कथित छोटे उद्योगों के विषय में भी कुछ शब्द कहना चाहता हूँ। मैंने कार्यक्रम न फोर्ड निधि द्वारा सञ्चालित छोटे उद्योगों की समिति की रिपोर्ट भी सम्मिलित करा ली है। मेरे विषय में प्राय ही कहा जाता है कि मैं बड़े परिमाण के उद्योगों में विश्वास करता हूँ। मैं यह आरोप स्वीकार करता हूँ। इसका कारण यही है कि मैं औद्योगिक, आर्थिक और नैतिक दृष्टि से इस देश को शक्तिशाली बनाने को अत्यन्त उत्सुक हूँ। अन्तिम उद्देश्य तब तक पूरा नहीं होगा जब तक हमारी औद्योगिक प्रगति में पर्याप्त तेजी नहीं आ जायगी। परन्तु इसके साथ ही यदि मेरे विषय में यह कहा जाय कि मैं औद्योगीकरण की सब से आवश्यक बात अर्थात् लोगों को काम देने की उपेक्षा करता हूँ तो मेरे साथ बड़ा भारी अन्याय होगा। मैं अधिक से अधिक लोगों को काम देने की आवश्यकता पूर्ण तौर पर स्वीकार करता हूँ और यह भी मानता हूँ कि लोगों को काम देते समय कोई ऐसा समझौता भी करना होगा जिससे छोटे उद्योगों को यदि वे बिल्कुल ही हानिकर न हों तो चलते रहने का अवसर मिले। इन उद्योगों को सहायता देने की व्यवस्था या तो सीधी सरकार को करनी होगी अथवा उसका भार जहाँ कहीं भी सम्भव होगा उद्योग के अन्य क्षेत्रों पर रखना होगा। परन्तु मेरे विचार में छोटे उद्योगों की लागत और देश के कल्याण के लिए उनकी उपयोगिता का ध्यान किये बिना केवल भावुकता से प्रेरित होकर उनकी सहायता करना गलत है। इन उद्योगों में काम करने वाले व्यक्ति कभी न कभी अधिक उत्पादन द्वारा अधिक उपार्जन की कामना करेंगे। यह भी सोचना ठीक ही होगा कि इन उद्योगों को चलाने वाले व्यक्ति थकाने वाले श्रम को बचाने के लिए मशीनों का प्रयोग करना पसन्द करेंगे। यदि हम इस प्रकार का समझौता करने को प्रस्तुत हैं तो हम एक ऐसा औद्योगिक ढाँचा बना सकेंगे जिसमें बड़े और छोटे तथा अपने उद्योगों सभी के लिए स्थान होगा। मैं इस विचार को इस समय और आगे नहीं बढ़ाना चाहता परन्तु मैं इस अवसर पर आपको यह अवश्य बताना चाहता हूँ कि उद्योग के इस क्षेत्र में हमें अपना उद्योग आप चलाने वालों को प्रोत्साहित करना है और जो ऐसा नहीं कर सकते उनके लिये औद्योगिक सहकारी संगठन बनाने होंगे।

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

स्वीडन की आर्थिक स्थिति समृद्धि की ओर

मई में अमेरिका के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि

हमारे विदेशों में स्थित व्यापार प्रतिनिधियों के पास से प्राप्त नवीनतम रिपोर्टों के अनुसार १९५४ के प्रथम चार महीनों में स्वीडन की आर्थिक स्थिति समृद्धि की ओर अग्रसर होती रही। उत्पादन बढ़ा, बेकारी घटी, मूल्य स्थिर हुए, माल की खपत बढ़ी और अधिक पूंजी लगाई गई।

फरवरी मास में अमेरिका ने भारत से जूट का माल, काली मिर्च और काजू अधिक मंगाया। चाय का आयात विशेषतः बढ़ा। भारत को अमेरिका ने अनिर्मित रूई विशेषतः अधिक भेजी।

मारीशस में भारतीय और मलाया की चाय को बोने के परीक्षण हो रहे हैं, जिनके फलस्वरूप उसका चाय का उत्पादन बढ़ जाने की आशा है।

स्वीडन : जनवरी-अप्रैल १९५४ में विदेशी व्यापार में कमी

गत वर्ष के अन्त में स्वीडन के विदेशी व्यापार में मूल्य व परिमाण दोनों में जो उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी, उसकी अपेक्षा इस वर्ष प्रथम चार महीनों की अवधि में काफी कमी हो गई। जनवरी से अप्रैल १९५४ की चार महीनों की अवधि में कुल आयात २९,००० लाख क्रोनर मूल्य का हुआ, जब कि गत वर्ष की इसी अवधि में यह २६,५०० लाख क्रोनर का हुआ था। इस प्रकार आयात में लगभग १० प्र० श० की वृद्धि हुई। आलोच्य अवधि में कुल निर्यात, गत वर्ष की इसी अवधि में २१,९२० लाख क्रोनर की अपेक्षा, ४ प्र० श० बढ़ कर २२,८६० लाख क्रोनर हो गया। अतः व्यापार-सन्तुलन में ६,१४० लाख क्रोनर का घाटा रहा, जब कि १९५३ की इसी अवधि में घाटा ४,५८७ लाख क्रोनर रहा था।

स्वीडन के विदेशी व्यापार के आकड़े निम्न प्रकार हैं :—

विदेशी व्यापार (लाख क्रोनर)

मास	१९५३ आयात	१९५३ निर्यात	१९५३ व्यापार सन्तुलन	१९५४ आयात	१९५४ निर्यात	१९५४ व्यापार सन्तुलन
जनवरी	६,९७०	५,८१०	—१,१६०	६,९९०	५,८५०	—१,१४०
फरवरी	५,९६०	४,६१०	—१,३५०	६,३७०	४,८९०	—१,४८०
मार्च	६,६९०	५,५५०	—१,१४०	८,०४०	६,०००	—२,०४०
अप्रैल	६,८८०	५,९४०	— ९४०	७,६००	६,१२०	—१,४८०
योग	२६,५००	२१,९२०	—४,५८०	२९,०००	२२,८६०	—६,१४०

मई मास में स्वीडन का निर्यात ७,८२० लाख क्रोनर व आयात ७,७७० लाख क्रोनर का हुआ। इस प्रकार मई में स्वीडन के विदेशी व्यापार में निर्यात की बचत रही। जनवरी—मई तक की पाच महीनों की अवधि में, कुल नियात ३०,६७० लाख क्रोनर तथा कुल आयात ३६,७७० लाख क्रोनर का हुआ। अतः व्यापार-सन्तुलन में ६,१०० लाख क्रोनर का घाटा रहा, जब कि १९५३ की इसी अवधि में यह घाटा ५,५७० लाख क्रोनर रहा था।

व्यापार-सन्तुलन में इस ह्रास से विदेशी विनिमय सुरक्षित कोष को हानि पहुंची है और प्रथम पाच महीनों में यह १,२५० लाख क्रोनर घट गया। जनवरी-अप्रैल की अवधि में स्वीडन को यूरोपीय भुगतान संघ के व्यापार में ५२८ लाख डालर का घाटा पड़ा। फिर भी अप्रैल के अन्त तक संचित बचत १,६८० लाख डालर रही।

भारत-स्वीडन का व्यापार

जनवरी-अप्रैल १९५४ की अवधि में भारत और स्वीडन के बीच हुए व्यापार का विवरण-वस्तुओं के अनुसार-नीचे दिया गया है। तुलना के लिये इन वस्तुओं के, एशिया के कुछ अन्य देशों के साथ हुए व्यापार के, आकड़े भी दे दिये गये हैं। इनसे विदित होगा कि वर्तमान वर्ष के प्रथम चार महीनों में भारत से ९१ लाख क्रोनर का आयात तथा भारत को २२८ लाख क्रोनर का निर्यात हुआ। अतः व्यापार-सन्तुलन १३७ लाख क्रोनर (समायोजित) से स्वीडन के पक्ष में रहा।

प्र० श० तथा १९५३ के मासिक औसत १३,१२७ लाख डालर से लगभग ८ प्रतिशत अधिक है। इसी बीच सामान्य आयात ८,५८० लाख डालर से बढ़कर ६,५७२ लाख डालर हो गया। अत १९५४ की प्रथम तिमाही के औसत ८ ३३६ लाख डालर स लगभग १५ प्र० श० तथा १९५३ के मासिक औसत ६,०६२ लाख डालर से लगभग ६ प्र० श० का वृद्धि हुई। परन्तु इसी अवधि में पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत भेजे गये माल का मूल्य २,०३६ लाख डालर से घटकर १,६४४ लाख डालर रह गया। १९५४ के प्रथम चार महीनों मे कुल नियात [जिसमे पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत भेजा गया माल भी सम्मिलित है] ४८,१९८ लाख डालर हो गया। यह १९५३ की इसी अवधि मे हुए ५२,७६२ लाख डालर के निर्यात की अपेक्षा लगभग ६ प्र० श० कम है। १९५४ के प्रथम चार महीनो मे पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत भेजा गया माल ७,२४७ लाख डालर मूल्य का रहा, जब कि गत वर्ष की इसी अवधि मे इस कार्यक्रम के अन्तर्गत १२,२८० लाख डालर के माल का नियात हुआ था। अत इस वार निर्यात में ५ ०३३ लाख डालर की कमी रही। यदि पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तगत भेजा गया माल निकाल दे तो १९५४ के प्रथम चार महीनो का नियात ४०,९२१ लाख डालर रह जाता है। यह १९५३ की इसी अवधि के ४०,४८२ लाख डालर से थोडा अधिक है। १९५४ के प्रथम चार महानों मे कुल आयात ३४,५८१ लाख डालर का हुआ, जब कि १९५३ का इसी अवधि मे यह ३७,६६१ लाख डालर रहा था।

भारत से व्यापार

अमेरिका के भारत से हुए व्यापार के आकडे सक्षेप मे निम्न तालिका मे दिये गये हैं। इनस विदित होगा कि फरवरी मास मे गत मास की अपेक्षा निम्न वस्तुओ का भारत से आयात बढ गया —जूट व उससे बना माल, इलमेनाइट, चाय, काली मिर्च तथा काजू। चाय के आयात में हुई वृद्धि विशेषत उल्लेखनीय है। लोहक का आयात ४३,५२,००० डालर से घट कर ४०,१३,००० डालर रह गया। अमेरिका द्वारा भारत को निर्यात किए गए माल में अनिर्मित रूई मे विशेष वृद्धि हुई।

अमेरिका का भारत से व्यापार (लाख डालर)

अवधि	अमेरिका का निर्यात	सामान्य आयात
जनवरी १९५४	८८	१७९
फरवरी १९५४	१३७	१९६
मार्च १९५४	१०४	१८५

अमेरिका का भारत से आयात (००० डालर)

वस्तु	१९५३ मे मासिक औसत	जनवरी १९५४	फरवरी १९५४
चमडा व खालें	७६७	७४२	३५१
रूई, अनिर्मित	२२५	२३९	२७९
रूई, अर्धनिर्मित	२११	१५२	८९
जूट व उससे बना माल	५,३९६	४,८५१	५,०७०
ऊन, अनिर्मित	४६८	४८५	४१५
धातु रहित खनिज पदार्थ और उनसे बना माल (अभ्रक सहित)	८३३	४३०	४९४
खनिज लोहक ३५ प्र०श० और अधिक	३,२०३	४,३५२	४,०१३
खनिज इलमेनाइट	१०८	२७८	४२८
चाय	१,९७७	२,०३९	२,४५०
काली मिर्च	१,७२५	१,३०८	१,८०४
काजू	१,६१७	९४३	९८४
अरण्डी का तेल	७६०	२०४	२५१

अमरीका से भारत को निर्यात

वस्तु	१९५३ मे मासिक औसत	जनवरी १९५४	फरवरी १९५४
अनाज व उससे बनी वस्तुए	३,६५५		
रूई, अनिर्मित	४७६	२,११९	५,७६६
पेट्रोलियम व उसके उत्पादन	१,४६१	१,१०९	१,३९७
बिजली की मशीनें आदि	४९८	२८९	४८८
भवन निर्माण, खदाई व खनिज की मशीनें	८८०	३१८	६२२
औद्योगिक मशीनें और पुर्जे	७५२	४३०	६८१
ट्रैक्टर, उनके हिस्से और पुर्जे	३२८	१७०	२४२
मोटर गाड़ियां, ट्रक, बसें व उनके हिस्से	८९३	२,१३४	१,३५९
चिकित्सा का सामान तथा औषधियां	७१२	५२८	३२२
रासायनिक विशेष पदार्थ	२७४	३५	७१

नेपाल : भारत से व्यापार

मई १९५४ मे उत्पादन कर की छूट प्रणाली के अन्तर्गत भारतीय कपडे की २०६ गाठे नेपाल मे आई। इसके अतिरिक्त कर देकर ऊनी तथा रेशमी माल डाक द्वारा भी आ रहा है।

भारत से नपाल को भेजी गई वस्तुओ मे पेट्रोल, चीनी, कपडा, तथा मोटरो व साइकिलो के टायर व ट्यूब मुख्य हैं। विदेशो से मिट्टी का तेल साइकिले, शराब तथा सिगरेटें मगाई गई। उपर्युक्त वस्तुओ का विवरण इस प्रकार है —

भारतीय माल

चीनी	४६५ बोरियां
कपडा	२०६ गाठें
पेट्रोल	२०,४०० गैलन
मोटर टायर	८ नग
साइकिल टायर	२५४ नग
साइकिल ट्यूब	२०० नग

विदेशी माल

मिट्टी का तेल	७,६२० गैलन
साइकिलें ...	१ पेटी
शराब .	११६ पेटियां
सिगरेटें	१ पेटी

विराटनगर में व्यापार

अप्रैल १९५४ में विराट नगर से भारत को निर्यात की गई मुख्य मुख्य वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है :—

वस्तु	परिमाण (मन)
इमारती लकड़ी ..	८१,८००
जूट, कच्चा ...	४,१३३
चमड़ा ..	३८५
लाख, कच्ची	७५
जड़ी बूटियां	२०४
सरसों ..	१,८७५
हड्डियां	३५०
चावल	३१,०००
धान	२६,४५०
जूट का माल	२२,५८०
चीनी	६८
खली	६००

अप्रैल १९५४ में भारत से विराटनगर में आई मुख्य वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है :—

वस्तु	परिमाण (मन)
कोयला ...	४६३०
मशीनों के पुर्जे	१५६०
पेट्रोल	१६७०
टॉ–ल तेल .	३२००
मिट्टी का तेल	४४५०
मट्टी का तेल	५०२०
सूती माल	४०५०
रेशमी माल	४८०
लोहे का सामान .	१४८०
साबुन	४३०
गेहूं .	१२४०
लालटेनें ..	७२
टायर व ट्यूब	२५०
चूना	११२५
मोबिल आयल	३७०
जूते . .	२६०
छाते .	११४
सुपारी ...	३३३
रूई, कच्ची	२०६०
कांच का सामान	५७०
नमक	१४२००
सीमेंट	६३०
बैटरियां .	१६३
दवाइयां	१६५
बिजली का सामान	८५
लिखने की सामग्री	५३०
अलूमीनियम	८५

मारीशस : १९५३ में भारत से व्यापार

१९५३ में भारत से मारीशस में मगाये गये माल के आंकड़े निम्न प्रकार हैं :—

वस्तु	(मूल्य) रु०
खाद्य पदार्थ ..	७,३७,१२८
तम्बाकू	१,८७,२६४
न खाने योग्य कच्चा माल (चमड़ा व खालें जूट, सूती माल आदि सहित) ...	७५,०५६
खनिज तेल, चिकनाई लाने वाले तेल तथा सम्बद्ध वस्तुएं	१०,०४३
पशु, वनस्पति तेल और चर्बियां ...	१०,६४,७५२
रासायनिक पदार्थ	८५,४६४
निर्मित माल (चमड़े का सामान, सूती कपड़ा, सूत, फीते आदि सहित	६६,६२,२०५
मशीनें और यातायात का सामान	२१,५८६
विविध निर्मित माल (जूते, प्रदर्शन के लिये सिनेमा के चित्र, संगीत यन्त्र आदि सहित) —	१३,६५,२४३
विविध सौदे तथा निर्दिष्ट वस्तुएं —	१,६६४
योग	१,०५,७०,८३५

१९५४ में चीनी का उत्पादन

निस्तारित (Guaranteed) चीनियों का मूल्य घटाकर ४१ पौण्ड प्रति हडरवेट निश्चित किया गया है, जब कि १९५३ में यह ४२ पौंड ४ शि० प्रति हडरवेट था। यह मुख्यत. चीनी उद्योग में काम आने वाले माल—विशेषत बोरियों व खाद के सूचक-अंक कम रहने के कारण हुआ है। अनिस्तारित (Unguaranteed) वाले ७५,००० टन माल पहले ही कनाडा को भेज दिया गया है। शेष कोटा सम्भवतः १९५५ में निर्यात किया जाएगा।

१९५३ में चाय का उत्पादन १,००,८०४ पौण्ड हुआ। चाय प्रयोगात्मक केन्द्र (Tea Experimental Centre) में बोई गई। नई मलाया व भारतीय किस्म की चाय के द्वारा अधिक उत्पादन होने की आशा है। भारतीय किस्म की चाय न्यासालैंण्ड से प्राप्त की गई। मुख्यत हांग कांग व भारत से चाय पर्याप्त परिमाण में मगाई गई।

जानकारी विभाग

औद्योगिक विषय

लालटेन उद्योग का संरक्षण हटाया गया

भारत सरकार ने तटकर आयोग की इस राय को स्वीकार कर लिया है कि हरीकेन लालटेन उद्योग को अब संरक्षण की आवश्यकता नहीं है। अतः सरकार ने आयोग की सिफारिश के अनुसार ३१ दिसम्बर, १९५४ के बाद इस उद्योग को संरक्षण न देने का निश्चय किया है। हां, सरकार उद्योग की सहायता करने के संबंध में आयोग की अन्य सिफारिशों पर कार्रवाई करेगी।

जुलाई में कोयले का उत्पादन बढ़ा

जून १९५४ में भारत में कोयले का उत्पादन २८,८६,१६६ टन था, जो जुलाई में बढ़कर २९,६६,१६५ टन हो गया। जुलाई १९५४ में कोयले की निकासी २८,१०,१२७ टन की हुई, जबकि जून में २५,७६,०७५ टन की हुई थी।

महीने के आरम्भ में खानों पर ३६,५७,३२८ टन का स्टाक था, किन्तु महीने के अंत में यह ३६,६३,४११ टन रह गया।

आलोच्य मास में ८३६ खानों में प्रतिदिन औसतन ३,१८,१२२ मजदूर काम करते रहे। कोक के कारखानों में ३,२६,८४३ टन कोक तैयार किया गया और १,८०,८३७ टन की निकासी हुई।

बिजली का उत्पादन

मई १९५४ में भारत में ६५१ बिजली घरों में ६३ करोड़ १९ लाख किलोवाट बिजली पैदा की गई, जिसमें से ५१ करोड़ ५४ लाख किलोवाट बिजली उपभोक्ताओं को बेची गई। अप्रैल मास की तुलना में २,७० लाख किलोवाट बिजली का मई में अधिक उत्पादन हुआ।

शार्कके तेल उद्योग की देखभाल

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बम्बई, कोजिकोड और त्रिवेंद्रम के शार्क मछली का तेल निकालने वाले कारखानों की देखभाल के लिये तीन समितियाँ नियुक्त की हैं। हर समिति में स्वास्थ्य मंत्रालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय और कारखाने का एक एक प्रतिनिधि होगा।

समितियों के सदस्य तेल निकालने के कारखानों का निरीक्षण कर इनके विस्तार के लिये आवश्यक साज सामान के और जो दूसरे उपाय करने चाहिए उनके बारे में अपनी राय देंगे।

औद्योगिक वित्त निगम द्वारा उद्योगों की सहायता

औद्योगिक वित्त निगम (इण्डस्ट्रियल फाइनेंस कारपोरेशन) अपनी स्थापना के समय से अब तक प्राय १३७ कम्पनियों को कुल २१ करोड़ रु० के ऋण स्वीकार कर चुका है, जिसमें से १३ करोड़ रु० के ऋण आवेदकों को दिये भी जा चुके हैं। निगम का छठवां वार्षिक प्रतिवेदन अभी प्रकाशित हुआ है, जिसमें उपर्युक्त सूचना तथा अन्य विवरण विस्तार सहित दिये गये हैं।

इस प्रतिवेदन में ३० जून, १९५४ को समाप्त होने वाले वर्ष में निगम के कार्यों की समीक्षा की गयी है। बताया गया है कि आलोच्य वर्ष में ९ करोड़ रु० के ऋणों के ४३ आवेदन पत्र निगम के पास आये, जिनमें से २६ पर ५.२७ करोड़ रु० के ऋण देने की स्वीकृति निगम ने दी।

अपने जन्म से अब तक के ६ वर्षों में निगम ने विविध उद्योगों को वित्तीय सहायता दी है। सूती वस्त्र उद्योग को ३.०७ करोड़, रासायनिक द्रव्यों को २.४४ करोड़, सीमेंट को २.३५ करोड़, चीनी को २.०५ करोड़, कागज उद्योग को २.०४ करोड़, मिट्टी व कांच को १.३५ करोड़, विद्युत यन्त्र को १.२९ करोड़ और लोहा इस्पात (हलके) उद्योग को १.१२ करोड़ ऋण दिये जा चुके हैं। एक करोड़ से कम पाने वाले उद्योगों में सूती वस्त्र बनाने की मशीनों, ऊनी कपड़ा, नकली रेशम, तेल, बिजली, अलौह धातुओं के कारखाने, अलमुनियम की खान, मोटर गाड़ी और ट्रेक्टर आदि के उद्योग हैं।

निगम ने ऋण के कुल १३७ आवेदनपत्र स्वीकार किये, जिनमें से ७८ दस-दस लाख रु० से कम के ऋणों के लिये, ५७ दस से ५० लाख रु० तक के लिये, एक ९० लाख रु० के और दूसरा १ करोड़ रु० के ऋण के लिये था। प्रतिवेदन में ऋण पाने वालों की पूरी सूची दी गयी है। निगम ने नये काम (१५ अगस्त, १९४७ के बाद) खोलने अथवा पुराने कामों के विस्तार व आधुनिकीकरण, दोनों ही के लिये ऋण दिये हैं। ६८ आवेदनपत्र नये काम खोलने के लिये थे और ६९ पुरानों के विस्तार या आधुनिकीकरण के लिये।

आलोच्य वर्ष में निगम के काम-काज की जांच भी करायी गयी। यह जांच भारत सरकार द्वारा नियुक्त एक जांच समिति ने की थी। प्रस्तुत प्रतिवेदन में इस समिति की सिफारिशों पर सरकार के निश्चय का विवरण दिया गया है।

राज्यों के वित्त निगमों की स्थापना में जो प्रगति हुई है, प्रतिवेदन में उसका भी उल्लेख किया गया है। बताया गया है कि ये राज्यीय निगम पंजाब, सौराष्ट्र, तिरुवाकुर कोचीन, बम्बई, हैदराबाद और प० बंगाल के राज्यों में स्थापित किये जा चुके हैं और आसाम, उत्तर प्रदेश व मध्य भारत में उनकी स्थापना का प्रबन्ध किया जा रहा है।

ऋण की वसूली के सम्बन्ध में बताया गया है कि निगम की स्थापना के बाद में दिये गये ऋणों पर ब्याज का १ ६७ करोड़ रु० होता था, जिसमें से १ ३४ करोड़ रु० प्राप्त हो चुका है। किश्तों के रूप में मूल धन की वापसी में ६ ४४ लाख रु० वसूल हुआ है, जबकि इस मद में ६० २० लाख रु० की वसूली होना था।

मोदीपुर के कांच के कारखाने को दिये गये ऋण के सम्बन्ध में बताया गया है कि कारखाने की कलों ने ठीक तरह से काम नहीं किया इसलिये २० जुलाई, १९५० को यह बन्द कर दिया गया। इसके बाद भट्टी फिर से बनायी गयी तथा कुछ और परिवर्तन किये गये, जिनका काम मई, १९५४ के अन्त में समाप्त हुआ। इस कारखाने को समुचित ढंग से चलाने और दिये गये ऋण की वसूली आदि का प्रश्न विचाराधीन है। ३० जून, १९५४ के दिन इस कम्पनी पर कुल १,०३,२८,८२२ रु० १४ आ० ६ पा० की रकम बाकी थी।

सिंदरी के कोक भट्टी प्लाण्ट में उत्पादन आरम्भ

सिंदरी रासायनिक खाद कारखाने के कोक भट्टी प्लाण्ट ने उत्पादन कार्य आरम्भ कर दिया है। इस प्लाण्ट को, जिसकी उत्पादन क्षमता ६०० टन प्रति दिन है, बनानेमें अनुमानतः २,७५,०० ००० रु० लागत आई है।

उपर्युक्त प्लाण्ट में काम में लाई जाने वाली एक विधि 'प्लास्टिक प्रोसेस' में साधारण कोयले को जिसमें कोक की मात्रा कम हो, प्रथम श्रेणी के सक्रिय कोक में परिवर्तित किया जा सकता है। इस विधि से कोक गैस भी अपेक्षाकृत अधिक परिमाण में प्राप्त की जा सकती है। सिंदरी कारखाने की विस्तार योजनाओं में इस गैस का बड़ा महत्व है। अन्य खादों में मिलाने के लिये इसका विशेष रूप से उपयोग होगा।

इस प्लाण्ट के उत्पादन के साथ कई प्रकार की उप वस्तुएं भी उपलब्ध हो सकेंगी जिनमें कोक गैस के अतिरिक्त अमोनियम, तारकोल, पायर बेंजोल आदि भी होंगे।

अनुमान है कि उप वस्तु के रूप में लगभग १ करोड़ घनफीट कोक गैस से अमोनियम नाइट्रेट तथा यूरिया बनाने का भी विचार है।

कांच के चादर उद्योग का संरक्षण जारी रहेगा

भारत सरकारने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) की चादर उद्योग को संरक्षण जारी रखने सम्बन्धी रिपोर्ट पर अपना निश्चय प्रकाशित कर दिया है।

सरकार ने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) की यह सिफारिश स्वीकार कर ली है कि इस उद्योग को इस समय जो संरक्षण मिला हुआ है वह १ जनवरी, १९५५ से तीन वर्षों के लिये और जारी रखा जाय तथा कांच की चादरों पर संरक्षण शुल्क की दर तत्काल ही बढ़ाकर मूल्य की ७० प्र०श० कर दी जाय। शुल्क की इस वृद्धि के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति भी जारी की जा चुकी है। सरकार ने इस बात पर भी जोर दिया है कि यह उद्योग अपने माल के भाव घटाये। खरीदारों के हितों को सुरक्षित रखने के लिये समुचित उपाय किये जायगे।

सरकार ने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) की उद्योग सहायता देने सम्बन्धी अन्य सिफारिशें भी मान ली हैं।

खनिज रेत साफ करने का कारखाना

राज्य सभा में श्री कलीउल्ला के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि क्या भारत सरकार ने तिरुवाकुर स्थित मेसर्स हापकिन एण्ड विलियम्स लिमिटेड फर्म को खरीद लिया है' प्रधान मंत्री ने निम्न लिखित उत्तर दिया —

भारत सरकार ने इस कारखाने को खरीदा नहीं है। पहले एक बार सरकार ने इस फर्म के ५१ प्र० श० हिस्से खरीदने का इरादा किया था, ताकि उसे कम से कम उस एक कारखाने के काम काज पर नियंत्रण रखने का अधिकार प्राप्त हो सके, जो तिरुवाकुर कोचीन के समुद्र तट की खनिज रेत के खनन, सफाई आदि का काम करता है। किन्तु और सोचने पर सरकार इस निश्चय पर पहुँची कि राज्य के खनिज रेत के सम्पूर्ण उद्योग का राष्ट्रीयकरण ही अधिक ठीक होगा। दिसम्बर १९५० में केन्द्रीय और राज्य सरकारों के बीच राष्ट्रीयकरण के मूल सिद्धांतों पर समझौता हो गया और इस पर आगे की जांच के लिये एक समिति नियुक्त की गयी। इस समिति का प्रतिवेदन प्राप्त होने के बाद, भारत सरकार इस विषय पर फिर विचार करेगी।

पट्टों के उद्योग को संरक्षण

सूत और बालों के पट्टों के उद्योग का संरक्षण जारी रखने के विषय में तटकर आयोग की रिपोर्ट पर भारत सरकार ने अपना प्रस्ताव प्रकाशित कर दिया है।

आयोग ने यह सिफारिश की है कि चूंकि विदेशी पट्टों को बहुत पसन्द किया जाता है और प्लाई के पट्टों द्वारा कड़ी प्रतिस्पर्धा हो रही है, अतः सूत और बालों के पट्टों के उद्योग को ३१ दिसम्बर, १९५६ तक मूल्य का १०॥ प्रतिशत संरक्षण शुल्क लेकर संरक्षण दिया जाता रहना चाहिए। सरकार ने आयोग की यह सिफारिश मान ली है।

आवश्यक किस्म का पर्याप्त सूत उपलब्ध करके भी सरकार इस उद्योग की सहायता करेगी।

कोकोआ और चाकलेट उद्योग का संरक्षण

तटकर आयोग ने यह सिफारिश की थी कि कोकोआ चूर्ण और चाकलेट उद्योग का संरक्षण ३१ दिसम्बर, १९५६ तक के लिये बढ़ा देना चाहिये। इसे भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया है। सरकार ने आयोग की यह सिफारिश भी स्वीकार कर ली है कि कोकोआ चूर्ण पर लिया जाने वाला मूल्य का ३१ प्रतिशत वर्तमान शुल्क (जिसमें सरचार्ज भी शामिल होगा) जारी रहना चाहिए और चाकलेट का शुल्क तत्काल ही (७

सितम्बर से) बढ़ा कर मूल्य का ५० प्रतिशत कर देना चाहिए। इस आशय का सूचना भी ७ सितम्बर को प्रकाशित की जा चुकी है।

इस उद्योग को कोकोआ की फलियां निःशुल्क आयात करने की सुविधा अभी मिली हुई है। आगे भी ये फलियां पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध होती रहें इसके लिये सरकार उपयुक्त उपाय करेगी।

सरकार ने इस उद्योग की सहायता करने के उद्देश्य से आयोग की अन्य सिफारिशें भी मान ली हैं।

सुरमा उद्योग का संरक्षण

टैरिफ आयोग ने सुरमा (Antimony) उद्योग का संरक्षण जारी रखने विषयक जो सिफारिशें की थी उन पर भारत सरकार ने अपना संकल्प प्रकाशित कर दिया है।

आयोग ने सिफारिश की थी कि सुरमे पर मूल्य का ३१॥ प्रतिशत और कच्चे सुरमे पर मूल्य का २१ प्रतिशत संरक्षण शुल्क जारी रखकर ३१ दिसम्बर, १९५६ तक सुरमा उद्योग का संरक्षण जारी रखना चाहिए। सरकार ने इसे स्वीकार कर लिया है।

सरकार ने आयोग की अन्य सिफारिशें भी स्वीकार कर ली हैं और कुछ विस्तृत बातों पर विचार करने के बाद वह इन सिफारिशों को अमल में लाने के लिये उपयुक्त उपाय करेगी।

साइकिल उद्योग का संरक्षण

भारत सरकार ने टैरिफ आयोग की साइकिल उद्योग का संरक्षण जारी रखने सम्बन्धी रिपोर्ट पर अपना संकल्प प्रकाशित कर दिया है।

आयोग ने सिफारिश की थी कि संरक्षण की अवधि ३१ दिसम्बर, १९५६ तक बढ़ा देनी चाहिए। इसे सरकार ने स्वीकार कर लिया है। सरकार ने आयोग की यह सिफारिश भी मान ली है कि ब्रिटेन में बनी हुई पूरी साइकिलों पर इस समय लिया जाने वाला शुल्क घटाकर मूल्य का ४५ प्रतिशत कर देना चाहिये। इसमें सरचार्ज शामिल नहीं होगा। सरचार्ज मिलाकर यह ४७। प्रतिशत होगा। परन्तु सरकार का मत है कि घटाये हुए शुल्क से सम्भवतः सस्ती बाइसिकलों से पर्याप्त संरक्षण प्राप्त नहीं होगा। इसलिये उसने निश्चय किया है कि इसके बदले ६० रु० प्रति बाइसिकल के हिसाब से विशेष शुल्क लिया जाय। ब्रिटेन के अतिरिक्त अन्य देशों की बाइसिकलों पर लिये जाने वाले शुल्क की दर ब्रिटिश साइकिलों के शुल्क से मूल्य की १० प्रतिशत अधिक होगी।

सरकार ने आयोग की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की है कि बाइसिकलों के हिस्सों पर पूरी बाइसिकलों के समान ही शुल्क की दर घटा दी जानी चाहिए। चूंकि देश में बाइसिकलों के बहुत से हिस्से छोटे निर्माताओं द्वारा तैयार किये जाते हैं, जिन्हें विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है अतः सरकार ने निश्चय किया है कि हिस्सों आदि पर वर्तमान दर से ही शुल्क जारी रहना चाहिए।

उद्योग की बड़े तथा छोटे परिमाण पर चलने वाली शाखाओं की सहायता करने के उद्देश्य से सरकार ने आयोग की अन्य सिफारिशें भी स्वीकार कर ली है।

चाय काफी और रबड़ उद्योग की जांच

२० अप्रैल, १९५४ को वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित करके बगीचा उद्योग जांच आयोग नियुक्त होने की घोषणा की थी। सम्बद्ध हितों से प्रारम्भिक बातचीत करने के बाद से आयोगने चाय उद्योग के लिये प्रश्नावलियां तैयार की हैं। एक प्रश्नावली चाय उत्पादक कम्पनियों और मैनेजिंग एजेण्टों के लिये विशेषतः तैयार की गई है। इसकी प्रतियां उन्हें तथा साझेदारों के संगठनों और १०० एकड़ या उससे बड़े बगीचों के मालिकों को भेजी गई हैं। छोटे बगीचों के कुछ प्रतिनिधियों को भी इसकी प्रतियां भेजी जायगी। अन्य छोटे बगीचों के मालिकों को यद्यपि प्रतियां नहीं भेजी जा रही हैं तथापि चाहें तो वे भी उत्तर भेज सकते हैं। प्रश्नावलियों की प्रतियां के लिये वे आयोग के मन्त्री (ब्लाक नं० ६, कमरा नं० ३४३ शाहजहां रोड हटमेण्ट नई दिल्ली) को पत्र लिख सकते हैं।

शेष दो प्रश्नावलियां चाय के दलालों, मिश्रण करने वालों, थोक व्यापारियों, उत्पादकों के एसोसियेशनों, व्यापारियों के एसोसियेशनों, व्यापार चेम्बरों, चाय बोर्ड और चाय उत्पादक राज्यों की सरकारों के लिये हैं। इन प्रश्नावलियों के उत्तर १ नवम्बर, १९५४ तक पहुँच जाने चाहिये।

काफी और रबड़ सम्बन्धी प्रश्नावलियां

काफी और रबड़ सम्बन्धी प्रश्नावलियां काफी और रबड़ पैदा करने वाली कम्पनियों के मैनेजिंग एजेण्टों, भारतीय काफी बोर्ड, भारतीय रबड़ बोर्ड, सम्बद्ध राज्य सरकारों, उत्पादकों के एसोसियेशनों तथा काफी और रबड़ उद्योगों से सम्बद्ध अन्य व्यक्तियों को भेजी गई हैं। जिन व्यक्तियों को प्रश्नावलियों की प्रतियां नहीं भेजी गई हैं वे चाहें तो उन्हें आयोग के सेक्रेटरी ब्लाक नं० ६, कमरा नं० ३४३ शाहजहां रोड हटमेण्ट, नई दिल्ली से प्राप्त कर सकते हैं।

इन प्रश्नावलियों द्वारा साधारणतः पूंजी व्यवस्था, उत्पादन प्रणालियों, और लागत, बगीचों के लिये धन की व्यवस्था और उत्पादन की बिक्री व्यवस्था के विषय में जानकारी मांगी गई है।

बिजली के होल्डरों के उद्योग का संरक्षण

पीतल के बने बिजली के होल्डरों के उद्योग को ३१ दिसम्बर, १९५६ तक २ साल का संरक्षण देने की सिफारिश को भारत सरकार ने मान लिया है। सरकार का यह संकल्प भारत सरकार के सूचना पत्र के असाधारण अंक में प्रकाशित किया जा चुका है। १९५४ के वित्त अधिनियम में शुल्क की जो दरें कम की गयी थी उन्हें कम करने की आयोग की सिफारिश को सरकार ने नहीं माना। होल्डर उद्योग को सहायता देने के सबंध में और कई सिफारिशों को भी सरकार ने मान लिया है।

सुरक्षित फल उद्योग को संरक्षण

भारत सरकार ने टैरिफ आयोग की इस मुख्य सिफारिश को मान लिया है कि सुरक्षित फल उद्योग को १ जनवरी, १९५५ से दो साल तक और संरक्षण मिलना चाहिये। पर सरकार ने इन फलों की दो श्रेणियों पर शुल्क घटाने की सिफारिश को नहीं स्वीकार किया। इस उद्योग को सहायता देने के बारे में आयोग की और अन्य कई सिफारिशों को भी सरकार ने मान लिया है।

गृह उद्योग

दस्तकारी के लिये ऋण

अखिल भारतीय दस्तकारी बोर्ड की कार्य समिति ने देश और विदेशों में बेचने के लिये दस्तकारी का सामान बनाने के निमित्त ऋण देने के बारे में विचार करने के लिये एक उपसमिति स्थापित की है।

सरकार ने राज्य सरकारों से पूछा है कि कच्चा माल और अन्य आवश्यक चीजें खरीदने के लिये धन की कमी आदि की कठिनाइयों से किन २ हाथ के धंधों में उत्पादन कम हुआ है। उनसे यह भी पूछा गया है कि उन चीजों के उत्पादन के लिये कौन सामग्री जिनकी मांग है।

दिल्ली में बांस के सामान की प्रदर्शिनी

अखिल भारतीय दस्तकारी बोर्ड अगले गणतन्त्र दिवस के समय नयी दिल्ली में बांस के सामान तथा लाख की पालिश की हुई वस्तुओं की एक अखिल भारतीय प्रदर्शनी करने का विचार कर रहा है। बोर्ड की कार्य समिति ने दिल्ली में अपनी दो दिन की बैठक में भारत सरकार से प्रदर्शनी करने की एक योजना के लिये सिफारिश की है। इस प्रदर्शनी में बांस की चीजें और लाख की पालिश की हुई चीजें दिखायी जायेंगी।

बढ़िया किस्म की चीजों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए दस्तकारी बोर्ड ने कारीगरों को प्रतियोग पुरस्कार देने का निश्चय किया है। इस प्रदर्शनी में जिन कारीगरों की चीजें सबसे अच्छी समझी जायेंगी उन्हें उन्हीं को इनाम दिया जायेगा। दो सौ, डेढ़ सौ, एक सौ रु० और दो पच्चीस रु० के इनाम बांटने का विचार है।

मध्य भारत में कपड़े की छपाई

चन्देरी और महेश्वर के बने हुए धागे के कपड़े और साड़ियां तो भारत प्रसिद्ध हैं ही परन्तु मध्य भारत के उज्जैन, बाग और तारापुर आदि स्थानों में कपड़ों पर जो सुन्दर और मनमोहक छपाई होती है उसकी ओर लोगों का बहुत कम ध्यान गया है। इन स्थानों पर यह उद्योग उन्नति की चरम सीमा पर है। इनके अतिरिक्त मध्य भारत के अन्य स्थानों पर भी यह धन्धा चल रहा है।

उज्जैन से ५ मील दूर भैरोगढ़ में कपड़े पर ठप्पा से चार पांच रंग तक की सुन्दर छपाई होती है। यह फर्रुखाबाद जैसी होती है। यहां अधिकांश में पलंग की चादरें आदि ही बनाई जाती हैं। इस काम को २५० परिवार करते हैं।

रतलाम और अजमेर के बीच मन्दसौर के कस्बे में भी प्रायः ७१० परिवार कपड़े की छपाई द्वारा अपनी जीविका चलाते हैं। वे पुरानी तथा नई दोनों तरह की छपाई करते हैं और राजस्थानी ढंग की बंधाई करके चुनरी छापने से लेकर फर्रुखाबाद जैसी रंगों तक की छपाई का काम प्रवीणता के साथ करते हैं। चुनरी की बंधाई का काम स्त्रियां करती हैं। इससे सैकड़ों परिवारों के पेट पलते हैं। विवाहों के अवसर पर बंधाई करके रंगी हुई चुनरी बड़ी शुभ मानी जाती है।

नीमच से १२ मील दूर जावद का कस्बा है। यहां भी कपड़े पर सुन्दर छपाई होती है। यहां अलीजरिन रंग की विशेष छपाई होती है जिसका भेद केवल २६ परिवार ही जानते हैं। यह छपाई करने के लिये कपड़े को धोकर अरंडी के तेल आदि में कई बार डुबाया जाता है। इसके बाद इसे हर्र के पानी में डुबोते हैं फिर फिटकरी के घोल से डिजाइनें छापी जाती हैं जो गहरे आलरेड रंग में उभर आती हैं। यदि रंग गहरा करना हुआ तो महुआ की शराब में लोहा डुबाकर घोल तैयार करते हैं और उसमें छपाई करते हैं। जावद में अधिकांश छीपी जाजम छापने का काम करते हैं। इनका छपाई फूल आदि बड़े सुन्दर बनते हैं।

जावद से ३ मील दूर तारापुर के छोटे से कस्बे में छपाई का जो काम चल रहा है उसे बहुत कम लोग जानते हैं। यह कस्बा एक छोटी सी नदी के दोनों ओर बसा है और यहां १४८ परिवार छपाई का यह काम करते हैं। इस नगर में अधिकतर इन्हीं लोगों की बस्ती है। ये छीपी बहुत कम पढ़े लिखे होते हैं परन्तु अपने काम में बड़े प्रवीण होते हैं। यहां कच्चा तथा पक्की दोनों प्रकार की छपाई होती है। पक्की छपाई करने में वे एक प्रकार का मोम काम में लाते हैं। इनकी युक्ति पिता से पुत्र को प्राप्त होता हुई पीढ़ी दर पीढ़ी चली आई है। तारापुर के छीपी इसे अपने व्यापार की कुंजी मानते हैं। यहां प्रायः प्रत्येक छीपा के घर में नीला रंगने का गड्ढा है। कस्बे भर में इन गड्ढों की संख्या ४,००० से अधिक होगी। कहा जाता है कि इन गड्ढों की कभी सफाई नहीं होती। फिर भी इनमें से कोई दुर्गन्ध आदि नहीं आती। तारापुर में भील जाति की स्त्रियों की साड़ियां विशेषतः बनाई जाती हैं। इन साड़ियों का रंग गहरा नीला होता है और उन पर मिर्च, चम्पक, बूटा और आम अंकित करने वाली पक्की छपाई होती है। इसके ऊपर कच्चे रंग की बूंदें रखी जाती हैं। इसे नांदना कहते हैं। मध्य भारत की भील स्त्रियां इन कपड़ों को बहुत पसन्द करती हैं। अतः यहां इनकी बिक्री न होने की कोई समस्या नहीं है। जावद और तारापुर में प्रतिवर्ष प्रायः ७० लाख रुपये का छपे का माल तैयार होता है।

तारापुर के छपे माल का अच्छा प्रचार होने की आवश्यकता है। प्रचार होने पर अन्य बाजारों में भी इसकी खपत हो सकेगी। भीलों की इन लुगड़ियों की कलकत्ते के फैशनेबिल क्षेत्रों में भी मांग होने लगी है, जहां इन्हें दरवाजों के पर्दों के काम में लाया जाने लगा है।

मध्य भारत के गौतमपुरा, आमोन, शिवपुर, इन्दौर, ग्वालियर आदि अन्य स्थानों पर कपड़े की छपाई का काम होता है जिसके द्वारा सैकड़ों परिवारों के पेट पलते हैं।

मध्य भारत सरकार ने इस पुराने उद्योग के आर्थिक महत्व को समझा है। इसमें राज्य के २,००० से अधिक परिवार लगे हुए हैं और प्रति वर्ष इससे १ करोड़ रु० से अधिक का माल तैयार होता है। इस समय सरकार छीपियों का सहकारी ढंग पर संगठन और उनके माल की बिक्री की अच्छी व्यवस्था करने के प्रयत्न कर रही है। इसके लिये प्रायः २

लाख रुपये की एक योजना तैयार की गई है। इसके साथ ही छपाई की नई डिजायनें चालू कराने और छपे हुए कपड़ों को अन्य प्रकार से उपयोग करने की विधियां खोज निकालने के भी यत्न किये जा रहे हैं।

अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड का पुनर्संगठन

अक्तूबर १९५२ में स्थापित किये गये अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड का भारत सरकार ने पुनर्संगठन कर दिया है। नये बोर्ड में ३५ सदस्य होंगे। भारत सरकार के बम्बई स्थित टैक्सटाइल कमिश्नर बोर्ड के एक सदस्य और अध्यक्ष होंगे।

बोर्ड के अन्य सदस्य इस प्रकार होंगे: ज्वाइण्ट टैक्सटाइल कमिश्नर बम्बई (उपाध्यक्ष), प्रो० एन० जी० रंगा संसद सदस्य, श्री ए० क्यू० अंसारी, श्री एम० सोमप्पा, श्री पी० एन० मुदलियार, श्री एस० आर० वासवदा, श्री आर० वी० नायडू, श्री जे० आर० मार्शल, श्री आर० ए० पोद्दार, श्री एन० एल० बालेकर, श्री एस० बनर्जी, नवाब ए० रसूल, श्री के० लक्ष्मण, श्री बी० मरार, श्री एफ० एम० उरटवाड, श्री एम० एम० पटनायक, श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय (अथवा प्रतिनिधि), श्री अब्दुल मजीद, उत्तर प्रदेश और बिहार के उद्योग डाइरेक्टर, हैदराबाद के वाणिज्य और उद्योग के डाइरेक्टर, मद्रास और आन्ध्र के सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार, मध्य प्रदेश के उद्योग डाइरेक्टर, आसाम के रेशम उत्पादन तथा कताई के डाइरेक्टर, मध्य भारत, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, ट्रावनकोर-कोचीन, और उड़ीसा के उद्योग डाइरेक्टर, बम्बई के औद्योगिक सहकारिता तथा ग्रामोद्योग के ज्वाइण्ट रजिस्ट्रार, श्री रघुनाथसिंह संसद सदस्य, भारत सरकार के वित्त मन्त्रालय (वाणिज्य और उद्योग शाखा) के अण्डर सेक्रेटरी और बम्बई स्थित भारत सरकार के टैक्सटाइल कमिश्नर के कार्यालय के सूत तथा हाथकरघा सम्बन्धी डाइरेक्टर।

दस्तकारी को उन्नत करने की योजनाएं

अखिल भारतीय दस्तकारी बोर्ड की कार्यसमिति ने विभिन्न राज्यों द्वारा प्रस्तावित दस्तकारियों की सहायता करने के लिये भारत सरकार से अनेक नई योजनाओं की सिफारिश की है। समिति ने बम्बई, हैदराबाद, पंजाब, बिहार, पश्चिमी बंगाल और दक्षिणी भारत से आई योजनाओं पर विचार किया। पंजाब के लिये सुनहरी वारनिश और अन्य कलापूर्ण दस्तकारी की योजनाओं की सिफारिश की गई है। होशियारपुर के सरकारी औद्योगिक स्कूल में दस्तकारी की शिक्षा देने के लिये एक सायंकालीन कक्षा चलाने की भी सिफारिश की गई है। बम्बई और पश्चिमी बंगाल के लिये पीतल, घण्टियों की धातु, सुनहरी वारनिश, चूड़ी और लकड़ी के खिलौने बनाने के लिये डिजायन तथा गवेषणा केन्द्र खोलने की सिफारिशें की गई हैं। अहमदाबाद में रंगाई और छपाई का उत्पादन तथा गवेषणा केन्द्र स्थापित करने की सिफारिश की गई है। मसलीपट्टम के कलमकारी उद्योग को वित्तीय सहायता देने की सिफारिश की गई है। इस उद्योग के संरक्षण की आवश्यकता है।

कोण्डापल्ली के खिलौनों की मांग बहुत बढ़ रही है। अतः समिति ने ये खिलौने बनाने की शिक्षा नवयुवकों को देने की योजनाएं स्वीकार की हैं। हैदराबाद के लकड़ी के खिलौने बनाने के उद्योग, और कमरहटी (पश्चिमी बंगाल) के फेन्सी बर्तन उद्योग को वित्तीय सहायता दिये जाने की सिफारिश की गई। बम्बई प्रजापति सहकारी उत्पादक मण्डल द्वारा बनाये जाने वाले देशी बर्तनों का विकास करने के लिये एक दस्तकारी केन्द्र खोलने के लिये वित्तीय सहायता देने की सिफारिश की गई।

बिहार सरकार ने दस्तकारी की वस्तुओं का बिक्री संगठन बनाने, पीतल तथा कांसे के काम, लकड़ी और सुनहरी वारनिश के काम तथा पत्थर उद्योग के विकास करने का अनुरोध किया है। इनके लिये भी सरकार से उपयुक्त सिफारिशें की गईं।

व्यापार की उन्नति

रत्नों के सीमाशुल्क में कमी

मार्च १९५३ में बिना जड़े तथा बिना तराशे मंगाये गये रत्नों तथा बिना जड़े मोतियों पर २० प्र०श० शुल्क लगाया गया था।

इस सम्बन्ध में इस आशय की शिकायतें आई हैं कि उपर्युक्त शुल्क से लाल, पन्ना और नीलम पर भारी बोझ पड़ा है, जो प्राय तराश कर निर्यात किये जाते हैं। इस सम्बन्ध में शुल्क को वापस देने की कोई सरल तथा विश्वसनीय विधि मालूम कर सकना सम्भव नहीं हो सका है।

इस धन्धे में लगे हुए व्यक्तियों के हितों का ध्यान करके तथा विदेशी बाजार में रत्नों की स्पर्धा शक्ति बनाये रखने के उद्देश्य से भारत सरकार ने तत्काल ही (२३ अगस्त से) लाल, पन्ना और नीलम का सीमाशुल्क मूल्य के २० प्रतिशत से घटाकर ५ प्रतिशत कर देने का निश्चय किया है।

बर्मा को साबुन और बर्त्तनोंकी आवश्यकता

ज्ञात हुआ है कि भारत से हाथ-मुंह तथा कपड़ा धोने के साबुन और घरेलू बर्तन बरमा में भेजे जा सकते हैं। परन्तु इनकी किस्म अच्छी और भाव ऐसे होने चाहिए जो प्रतिस्पर्धा में टिक सकें। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्रथम सेक्रेटरी (व्यापारिक) भारतीय दूतावास, रंगून से प्राप्त हो सकती है।

पेटेण्टों की प्रगति

१ जून से ३१ अगस्त, १९५४ तक की अवधि में भारत सरकार के पास ६१४ आवेदनपत्र पेटेण्ट कराने के लिये आये। इनमें २ आवेदनपत्र स्त्रियों ने दिये जिन्होंने स्वयं ही आविष्कार किये थे।

६१४ आवेदनपत्रों में से १०८ भारत में दिये गये । इनमें बम्बई, पश्चिमी बंगाल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मद्रास, मैसूर, पंजाब, हैदराबाद और आसाम के क्रमशः ४१, २५, १३, १०, ७, २, ४, २ और २ आवेदनपत्र थे। शेष ४ भारत के अन्य भागों से दिये गये हैं। इन आवेदन पत्रों में से ९३ के आविष्कार होने का दावा भारतीयों ने किया है। शेष १५ का आविष्कार भारत में रहने वाले अन्य व्यक्तियों ने किया है। ३१ अगस्त, १९५४ को कुल १३,४६० पेटेंट चालू थे । इनमें से १,०२१ पेटेन्ट भारत में खोजी गई वस्तुओं के थे।

इसी अवधि में डिजायनों की रजिस्ट्री के लिये ७५३ आवेदनपत्र आये। इनमें ७३५ भारतीयों के और १८ विदेशों के थे । भारतीयों के आवेदनपत्रों में बम्बई, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, दिल्ली, मध्यभारत, पंजाब, मद्रास, मैसूर और सौराष्ट्र के क्रमशः ५४६, ८७,२६, ४५, २१, १६, ७, ३, और १ आवेदनपत्र थे।

६७० डिजायनों की रजिस्ट्री की गई जिनमें से ६५४ भारतीयों के नामों में थीं।

न्यूजीलैंड को पेठा भेजिये

जो भारतीय व्यापारी स्ट्राबेरी का मुरब्बा और डिब्बाबन्द पेठा न्यूजीलैण्ड को भेजना चाहें उन्हें नीचे लिखी बातें ध्यान में रखनी चाहिये।

न्यूजीलैण्ड खाद्य और औषधि नियम १९४६ के अनुसार खाद्य पदार्थ के प्रत्येक पैकेट पर एक लेबिल अवश्य होना चाहिए जिसमें वस्तु का नाम, ट्रेड मार्क अथवा वर्णन लिखा गया हो। यह नाम अथवा ट्रेड मार्क ऐसा होना चाहिये जिससे यह ज्ञात हो सके कि उक्त खाद्य पदार्थ को किस विशेष नियम के अन्तर्गत रखा जा सकेगा।

भारतीय स्ट्राबेरी का मुरब्बा तो न्यूजीलैण्ड के नियमों में आ जाता है परन्तु "पेठा" लिखने से न्यूजीलैंड वालों को यह पता नहीं चलता कि उस से किस प्रकार के खाद्य पदार्थ का आशय है । हो सकता है कि लेबिल आदि देखकर खरीदार यह समझ लें कि अनन्नास जैसी कोई वस्तु है। इस कारण पेठे का स्पष्ट विवरण लेबिल पर दिया जाना चाहिए । इसमें यह लिखना चाहिए कि यह चाशनी में डाला हुआ है और मिठाई के रूप में परोसा जाना चाहिए।

पैक करने वालों को यह भी जान लेना चाहिए कि न्यूजीलैंड के नियमानुसार मुरब्बों में रंग नहीं डालना चाहिए । रंग डाले हुए मुरब्बे को वहां के सीमाशुल्क अधिकारी अपने यहां नहीं आने देंगे।



व्यापार नियन्त्रण

खनिज लोहक से निर्यात शुल्क हटाया जायगा

खनिज लोहक के निर्यात के सम्बन्ध में शिकायतें आई हैं कि अन्य कारणों के अतिरिक्त, खनिज लोहक पर लगाये गये निर्यात शुल्क से भी उसके निर्यात में रुकावट पड़ रही है।

भारत सरकार ने अपनी सामान्य नीति के अनुसार, स्थिति पर पुनर्विचार करके यह निर्णय किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में खनिज लोहक की प्रतिस्पर्धा मूलक स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से, उस पर लिया जाने वाला निर्यात शुल्क तत्काल (१८ अगस्त से) हटा दिया जाय।

बिनौले के तेल का निर्यात

भारत सरकार ने बिनौले के तेल के निर्यात की नीति पर पुनर्विचार करके यह निर्णय किया है कि दिसम्बर १९५४ के अन्त तक एक निश्चित अधिकतम सीमा के भीतर इसका निर्यात करने की अनुमति दी जाय। ये लाइसेन्स बन्दरगाहों पर निर्यात नियन्त्रक अधिकारियों द्वारा जहाजी बिलों के आधार पर दिये जायगे। ये केवल निर्यातकों द्वारा विदेशी व्यापारियों से इकरार होने के ४८ घण्टा के भीतर दर्ज कराये गये सौदों के होंगे। प्रत्येक निर्यातक सब बन्दरगाहों पर मिलाकर अधिक से अधिक ४०० टन के सौदे दर्ज करा सकेगा।

मूंगफली के तेल का निर्यात शुल्क घटा

भावों के वर्तमान रुख को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने मूंगफली के तेल का निर्यात शुल्क तत्काल ही (२ सितम्बर, १९५४ से) ३५० रु० से घटा कर २०५ रु० प्रति टन कर देने का निश्चय किया है।

लोहक तथा लोहे का निर्यात

भारत सरकार ने परिवहन सम्बन्धी उपलभ्य सुविधाओं तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की स्थितियों के प्रकाश में लोहक तथा खनिज लोहे के निर्यात की नीति पर पुनर्विचार किया है।

यह निश्चय किया गया है कि सितम्बर दिसम्बर १९५४ की अवधि में उपर्युक्त खनिजों का, कलकत्ता के बन्दरगाहों को भेजा जाना, कोटे के आधार पर ही नियन्त्रित किया जाता रहे । मद्रास के बन्दरगाह से निर्यात किये जाने के लिये, बेलारी हास्पेट गुण्टाकल (मीटर गेज) क्षेत्र से जाने वाला माल भी इसी प्रकार नियन्त्रित होगा। किन्तु विशाखापट्टनम्, मसलीपट्टम तथा काकिनाड़ा के बन्दरगाहों से निर्यात किये जाने वाले माल का भेजा जाना कोटे के आधार पर नियन्त्रित नहीं होगा। इस लाइन पर रेलवे अधिकारियों द्वारा माल के डिब्बे केवल उन्हीं निर्यातकों, खान के मालिकों तथा अन्तर्देशीय व्यवसाइयों को दिये जा सकेंगे, जो रजिस्टर किये हुए हैं। रजिस्ट्रेशन पत्र पाने के लिये मद्रास के आयात निर्यात सम्बन्धी डिप्टी चीफ कण्ट्रोलर को आवेदन पत्र भेजना होगा। इसके लिये खान के मालिकों को खान के चालू पट्टे तथा पुराने निर्यातकों तथा अन्तर्देशीय व्यवसाइयों को निर्यात व्यापार सम्बन्धी प्रमाण भी देना होंगे। अन्य इच्छुक फर्म भी, जो इन तीन श्रेणियों में नहीं आतीं, तथा विदेशी खरीदारों से सौदा तय कर सकती हैं, उपर्युक्त अधिकारी को

रजिस्ट्रेशन के लिये आवेदन पत्र भेज सकते है। इन आवेदन पत्रों पर उनके महत्व के आधार पर विचार किया जायगा। बंगलोर क्षेत्र के मीटर गेज सेक्शन से जाने वाला माल भी इसी प्रकार नियन्त्रित होगा।

इस नीति की एक नई बात यह है कि लोहक तथा खनिज लोहे के पुराने निर्यातक तथा खान के मालिक, कलकत्ता और मद्रास के बन्दरगाहों से माल निर्यात करने के लिये, सम्बन्धित निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों को चालू व्यापार के आधार पर पूरक कोटे के लिये आवेदन पत्र दे सकते हैं। इस प्रकार के आवेदन पत्रों पर, दो बातों को ध्यान में रख कर विचार किया जायगा पहली, उस समय माल के डिब्बे मिलने सम्बन्धी स्थिति क्या है, तथा दूसरी, निर्यातकों को पहले दिये गये कोटों का उपयोग किस प्रकार किया गया है। इस सम्बन्ध में लाइसेंस प्रणाली का विवरण निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों द्वारा सूचित किया जा रहा है।

इन्सुलेटरों के हिस्सों का आयात

भारत सरकार ने निश्चय किया है कि क्रम संख्या ८३ (२)/२ के अन्तर्गत उच्च टेंशन के इन्सुलेटरों के लिये दिये गये लाइसेन्सों के आधार पर धातु के खुले हुए हिस्सों को चुंगी से छोड़ने की अनुमति नहीं दी जायगी। पिन और केप वाले हिस्से इसके अपवाद होंगे। इस आशय की सूचना भारत सरकार के सितम्बर १९५४ के असाधारण गजट में प्रकाशित हुई है।

आयात की नई सुविधाएं

सामा शुल्क (द्वितीय) संशोधन विधेयक १९५४ के फलस्वरूप और व्यापारियों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखते हुये भारत सरकार ने अनेक वस्तुओं के विषय में आयात सम्बन्धी प्रतिबन्धों को ११ सितम्बर १९५४ को एक सूचना निकाल कर ढीला कर दिया है। मोटे तौर पर इस सूचना में निम्न प्रकार व्यवस्था की गई है —

(१) १३ वस्तुओं को दुर्लभ मुद्रा क्षेत्र से मंगाने के लिये अधिक सुविधायें दी गई हैं।

(२) कुछ वस्तुओं के आयात कोटा में वृद्धि की गई है।

(३) कुछ वस्तुओं के लिये आयात लाइसेन्सों के प्रयोग पर लगे हुए प्रतिबन्ध दूर किये गये है।

(४) उदारतापूर्वक लाइसेन्स देने की प्रणाली को कुछ अन्य वस्तुओं पर लागू कर दिया गया है।

(५) जिन वस्तुओं के लिये आधारभूत अवधि बढ़ाकर १९५२-५३ को भी सम्मिलित कर लिया गया है, उनकी सूची का विस्तार किया गया है।

जो आयातक पिछली नीति के आधार पर अपने कोटों के लाइसेन्स प्राप्त कर चुके हैं उन्हें संशोधित कोटा प्रतिशत के आधार पर अतिरिक्त लाइसेन्सों के लिए नये आवेदन पत्र देने चाहिये। जहां कहीं पुराने आयातकों को अतिरिक्त लाइसेन्स देने अथवा सब प्रकार के आयातकों को उदार आधार पर लाइसेन्स देने का निश्चय किया गया है वहां निश्चित प्रणाली के अनुसार नये आवेदनपत्र देने चाहिए। जो आयातक उन वस्तुओं का अपना कोटा १९५२-५३ में किये वास्तविक आयात के आधार पर पुनः निश्चित कराना चाहते हों, जिन को आधारभूत अवधि में विस्तार कर लिया गया है, उन्हें चाहिए कि शीघ्रातिशीघ्र सम्बद्ध अधिकारियों को आवेदनपत्र दें। आधारभूत आयात में वृद्धि होने के फलस्वरूप अतिरिक्त लाइसेन्स आवेदनपत्र देने पर दिये जायंगे।

गेहूं के चोकर का निर्यात

चूंकि बेलन वाले आटा मिलों को उनके यहां इकट्ठे गेहूँ के चोकर को निकालने में कठिनाई हो रही है इसलिये सरकार ने इन मिलों द्वारा इस चोकर के कुछ और निर्यात किये जाने की अनुमति देने का निश्चय किया है। निर्यात का यह परिमाण उस प्रतिशत के अतिरिक्त होगा जिसकी अनुमति १३ फरवरी, १९५४ को निकाली गई सार्वजनिक सूचना सं० १३ आर० टी० सी (पी० एन०) ५४ में दी जा चुकी है। इन मिलों के अतिरिक्त दूसरी फर्मों को इस निर्यात के लिए आवेदन पत्र देने की अनुमति नहीं है परन्तु जिन मिलों को लाइसेंस दिये जायंगे उनकी ओर से दूसरी फर्में निर्यात कर सकेंगी। इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण बन्दरगाहों और अमृतसर, शिलांग तथा राजकोट के निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों से प्राप्त हो सकता है।

स्पार्क प्लगों का आयात

११ सितम्बर, १९५४ के असाधारण गजट में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना निकाल कर भारत सरकार ने घोषित किया है कि जनवरी से जून १९५२ और जुलाई से दिसम्बर १९५३ तक की अवधियों के लिये जारी किये गये मोटर गाड़ियों के हिस्से के लाइसेन्सों से स्पार्क प्लगों का आयात नहीं किया जा सकेगा। जो फर्में इस सम्बन्ध में सौदे कर चुकी हैं उनके विषय में विशेषतः विचार किया जायगा।

चालू अवधि के लाइसेन्स

यह निश्चय किया गया है कि लाइसेन्सों की चालू अवधि के विषय में आयात लाइसेन्स देने के लिए १५ दिसम्बर, १९५४ के बाद पुराने आयातकों के कोई आवेदनपत्र स्वीकार नहीं किये जायगे।

आयोजन और विकास

राष्ट्रीय विस्तार सेवा में नये क्षेत्र

भारत सरकार ने चालू वर्ष के लिए २४१ राष्ट्रीय विस्तार खंडों की स्वीकृति दी है। इन विस्तार खंडों के अतर्गत एक १ करोड ६८ लाख ७० हजार आबादी के २४,१०० गांव आ जायगे। इस समय ४७१ विस्तार खंडों पर काम चल रहा है, जिससे ३ करोड ८८ लाख आबादी के ४८,७५० गांवों को लाभ पहुँच रहा है। इस प्रकार इस

है। बाद मे इस घोल को ठंडा करके छाना जाता है। छना हुआ तरल पदार्थ निकल सल्फेट के रूप में प्राप्त होता है जो इलेक्ट्रो-प्लेटिंग उद्योग में काम मे लाया जा सकता है। ऊपर बताई गई विधि को व्यवसायिक पैमाने पर कम खर्च से चलाया जा सकता है।

हर्रे से रासायनिक शोधक पदार्थ

बिहार की पटना स्थित औद्योगिक गवेषणा प्रयोगशाला मे हर्रे से एक रासायनिक शोधक पदार्थ तैयार करने की विधि खोज निकाली गई है।

यह शोधक पदार्थ आयन एक्सचेंजर्स (Ion Exchangers) श्रेणी के हैं। इनके द्वारा अनावश्यक कैलशियम, बैरियम, मेगनेशियम, कोबाल्ट और निकल को दूर किया जा सकता है। खारी पानी को ठीक करने के लिये इन शोधक पदार्थों का विशेष महत्व है। पानी का खारापन उसमें घुले हुए लवणों के कारण होता है। इन लवणों के कारण पानी पीने के योग्य तो रहता ही नहीं उद्योगों में भी यह हानि पहुँचाता है। उदाहरण के लिये बायलरों में खारे पानी का उपयोग किया जाता है तो उनमे लवण जम जाते हैं और बायलर को बेकाम कर देते हैं। जिन मशीनो की पतली नालियो मे पानी का प्रयोग करना होता है वे खारे पानी से खराब हो जाती हैं। इस कारण खारे पानी का खारापन दूर करना आवश्यक हो जाता है। यह कार्य हर्रे से बने शोधक पदार्थों से हो सकेगा।

भारत मे हर्रे प्रचुर परिमाण में होती हैं और इनसे विशाल परिमाण पर नया शोधक पदार्थ तैयार किया जा सकता है।

वित्त

राष्ट्रीय योजना ऋण में १३० करोड़ रु०

राष्ट्रीय योजना ऋण मे १४ अगस्त, १९५४ तक १२९.७२ करोड रु० एकत्र हुए थे।

यह ऋण जिसे भारत सरकार ने पचवर्षीय योजना के लिये चालू किया है, गत १९ अप्रैल, १९५४ से चालू किया गया था। इस ऋण के पूरक रूप मे तथा थोडा रुपया लगाने वालो को भी अवसर देने के उद्देश्य से सरकार द्वारा राष्ट्रीय योजना सर्टीफिकेट भी जारी किये गये हैं। ७ अगस्त, १९५४ तक ८३,४०७ व्यक्तियों ने कुल १७६.१२ लाख रु० के ये सर्टिफिकेट खरीदे। ये सर्टिफकेट १० वर्ष के लिये है तथा इन पर ब्याज की दर ४॥ प्र० श० प्रतिवर्ष रखी गई है।

राष्ट्रीय योजना ऋण, जिस पर ब्याज की दर ३॥ प्र० श० है, १० वर्ष अर्थात् १९६४ तक के लिये है। इस ऋण का लेना १६ सितम्बर, १९५४ से बन्द कर दिया गया है। लेकिन राष्ट्रीय योजना सर्टिफिकेट जारी हैं।

थोड़ी-बचत-जुलाई १९५४

जुलाई १९५४ में पोस्ट आफिस सेविंग्स बैंक, पोस्ट आफिस कैश सर्टिफिकेटों, १० वर्षीय डिफेन्स सेविंग्स सर्टिफिकेटों, नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटों और हैदराबाद राज्य नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटों तथा १० वर्षीय नेशनल प्लान सर्टिफिकेटों मे जो धन लगाया गया है उसका योग लगभग ५०० लाख रु० रहा है।

विदेशों में कमाया हुआ लाभ

सितम्बर १९५१ में भारत सरकार ने घोषित किया था कि पिछले वर्ष से पहले दो अथवा अधिक वर्ष तक भारत मे रह चुकने वाले जिस व्यक्ति के पास विदेशों मे कमाया हुआ ऐसा लाभ इकट्ठा है जिस पर भारत मे लाये जाने पर कर लगेगा उसे कुछ अवस्थाओं मे कर से मुक्त कर दिया जायगा। आय कर मे अधिनियम गत वर्ष आवश्यक संशोधन करके यह रियायत अमल में ले आई गई थी।

कर से मुक्त करने की एक मुख्य शर्त यह थी कि भारत लाये जाने वाले धन के आधे भाग को भारत आने के बाद तीन महीनो के भीतर गवर्नमेंट सिक्यूरिटियों में लगा देना होगा। ये सिक्यूरिटिया रिजर्व बैंक के द्वारा खरीदी जायगी और कम से कम दो वर्ष तक के लिये बैंक के पास सुरक्षित रखी जायगी। यह शर्त मुख्यत. मुद्रा बाहुल्य रोकने के उद्देश्य से लगाई गई थी, जिसकी अब उतनी आवश्यकता नहीं रही है जितनी कि इसके लगाये जाने के समय तीन वर्ष पूर्व थी। अत. भारत सरकार ने निश्चय किया है कि ३० सितम्बर, १९५४ के बाद विदेशों मे कमाये लाभ का जो धन भारत लाया जायगा उसे रिजर्व बैंक द्वारा सरकारी सिक्यूरिटियों मे लगाने पर जोर नहीं दिया जायगा। आयकर अधिनियम मे इस आशय का संशोधन भी कर दिया जायगा।

राष्ट्रीय आय में वृद्धि

संसद मे दिये उत्तर के अनुसार १९५०-५१ की तुलना मे १९५१-५२ मे राष्ट्रीय आय में ४.८ प्रतिशत की वृद्धि हो गई है। यदि मूल्यो मे परिवर्तन होने का प्रभाव निकाल कर देखें तो १९५१-५२ में हुई वृद्धि ३॥ प्रतिशत रहती है। १९५२-५३ के पूरे आंकड़े अभी प्राप्त नहीं हुए हैं परन्तु उपलब्ध जानकारी से प्रतीत होता है कि १९५२-५३ में भी राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो रही है।

सरकार राष्ट्रीय आय के अनुमान प्रकाशित करती है। राष्ट्रीय आय समिति की अन्तिम रिपोर्ट मे १९४८-४९ से १९५०-५१ तक के राष्ट्रीय आय के अनुमान दिये गये है। १९५१-५२ के अनुमान भी इसी आधार पर तैयार किये गये हैं।

खाद्य व खेती

मैदा और सूजी की निकासी

जून १९५४ में देशी गेहूँ से मैदा और रवा तैयार करने की अनुमति दी गयी थी। अब देशी तथा विदेशी दोनों ही प्रकार के गेहूँ से मैदा तथा रवा तैयार किया जा सकता है। परन्तु ऐसे देशी अथवा विदेशी गेहूँ से जो मैदा या रवा बनाने के लिए विशेष रूप से न दिया गया हो, यदि मैदा या रवा तैयार किया जाय तो उसे उसी राज्य में कहीं भी भेजा जा सकता है, परन्तु वहाँ से अन्य राज्यों को नहीं भी भेजा जा सकता। मैदा या रवा तैयार करने के लिए विशेष रूप से दिए गये विदेशी गेहूँ का मैदा या रवा ही एक राज्य से दूसरे राज्य को भेजा जा सकता है। इन चीजों को बाहर भेजने के लिये भारत सरकार द्वारा परमिट दिये जाने का विवरण तैयार किया जा रहा है।

यह अब निश्चित किया गया है कि मैदा या रवा बनाने के बाद बचे हुए आटे को उस नये राज्य को नहीं भेजा जायगा।

मुलायम गेहूं से सूजी

मैसूर की केन्द्रीय खाद्य गवेषणाशाला ने मुलायम गेहूँ से सूजी जैसा एक पदार्थ तैयार करने की विधि निकाली है।

गेहूँ की मुख्यत: तीन किस्में होती हैं, कड़ा गेहूँ, मुलायम गेहूँ और दुरम गेहूँ। कड़े अथवा मुलायम साधारण गेहूँ से आटा अथवा मैदा बनाई जाती है। सूजी गेहूँ का दानेदार रूप होता है। यह साधारणत: दुरम और कड़े गेहूँ से बनाया जाती है।

सूजी दलिया आदि गेहूँ के दानेदार उत्पादनों को चावल भोजी क्षेत्रों में आटे की अपेक्षा अधिक पसन्द किया जाता है। इन्हें प्रति वर्ष पर्याप्त परिमाण में विदेशों से मगाया जा रहा है। १९५२-५३ में ही १२ लाख रुपये की सूजी और दलिया विदेशों से मगाया गया था।

खाद्य गवेषणाशाला में सूजी बनाने की जो विधि निकाली गई है उसके अनुसार गेहूं को ३० अंश सेण्टी० तापमान पर ३० मिनट तक भाप में पकाते हैं और फिर उसे सुखा लेते हैं। सूखने पर इस गेहूँ का छिलका उतार देते हैं और फिर दल कर उसका दलिया या सूजी बना लेते हैं। यह विधि बड़ी सरल है और इसे छोटे परिमाण पर उत्पादन करने के लिये भी अपनाया जा सकता है।

उपर्युक्त विधि द्वारा मुलायम गेहूँ से तैयार की गई सूजी से अनेक प्रकार के मीठे और स्वादिष्ट व्यंजन तैयार किये जा चुके हैं। इन्हें खाने वालों ने बहुत पसन्द किया है। कड़े गेहूँ से तैयार की गई सूजी के समान ही यह मुलायम गेहूँ की सूजी भी स्वादिष्ट होती है।

श्रम

जून में औद्योगिक झगड़ों में कमी

जून १९५४ में उद्योग धन्धों में कम झगड़े हुए। कुल झगड़ों की संख्या ७४ है, जिनसे १९,५३६ कर्मियों का सम्बन्ध था और जिनमें कुल १,८४,८७४ जन दिनों की हानि हुई। इनमें से दो झगड़े, पश्चिमी बंगाल में, ताला बन्दी के थे, ५७ झगड़े महीने के भीतर ही समाप्त हो गये और इनमें भी ३४ ऐसे थे जो ५ दिनों से अधिक नहीं चले।

जन दिनों की सबसे अधिक हानि, कुलकी ६६ प्र० श० पश्चिमी बंगाल में हुई। उद्योगों के हिसाब से लकड़ी, पत्थर और कांच उद्योगों में सबसे अधिक समय की हानि हुई, इनके बाद रासायनिक व रंग उद्योगों का नम्बर रहा।

जुलाई में नियोजन की स्थिति

पुनर्वास तथा नियोजन महानिर्देशक के कार्यालय की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि जुलाई १९५४ में काम दिलाऊ केन्द्रों में ५,९०,००० बेरोजगार लोगों के नाम दर्ज थे। यह संख्या पिछले महीने से ४० हजार अधिक रही। इस महीने १,५६,५७८ व्यक्तियों ने नौकरी के लिये नाम लिखाये पिछले महीने यह संख्या १,४३,८८४ थी। इस महीने १५,३२० लोगों को नौकरी दिलायी गयी जबकि पिछले महीने १४,६७८ को नौकरी दिलायी गयी थी। नये नाम लिखाने वालों की संख्या में वृद्धि परीक्षा फल घोषित होने के कारण हुई, क्योंकि इस महीने बहुत से उत्तीर्ण नवयुवकों ने नौकरी के लिये नाम दर्ज कराये।

श्रम मंत्रालय की प्रशिक्षण योजनाओं में प्रौढ़ नागरिक प्रशिक्षण योजना का दूसरा और विस्थापितों के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना का चौथा सत्र क्रमश: जून और जुलाई में समाप्त हुआ। शिक्षकों और निरीक्षकों के प्रशिक्षण की योजना के अन्तर्गत १०९ व्यक्तियों को कोनी बिलासपुर के केन्द्र में शिक्षा दी गयी। इसके अलावा उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में ६६८ विस्थापित अप्रेंटिसों को प्रशिक्षित किया गया।

फसल का अनुमान

मेस्ता का प्रथम अनुमान

केन्द्रीय खाद्य एवं कृषि मंत्रालय के अर्थ व अंक विभाग के प्रथम अखिल भारतीय अनुमान के अनुसार चालू साल, १९५४-५५ में मेस्ता की खेती १ लाख ४४ हजार एकड़ में की गयी है। पिछले साल भी मेस्ता इतने ही क्षेत्र में बोया गया था। यह अनुमान जून के आखिर या जुलाई १९५४ के शुरु तक का है और तब तक सब तरफ फसल अच्छी होने की खबर थी। इस अनुमान में कुछ राज्यों के वे क्षेत्र शामिल नहीं हैं जहाँ बुआई देर से की जाती है। इस लिये पूरे आंकड़े अंतिम अनुमान से ही प्राप्त हो सकेंगे।

सूखी लाल मिर्च का अंतिम अनुमान

१९५३-५४ में सूखी लाल मिर्च के अखिल भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में सूखी लालमिर्च की खेती का क्षेत्रफल १३,२६,००० एकड़ और पैदावार ३,१०,००० टन आकी गई हैं, जबकि १९५२-५३ के अंशतः संशोधित अनुमान से ये संख्यायें क्रमशः १२,३५,००० एकड़ तथा २,८४,००० टन थीं। इस प्रकार पिछले वर्ष की अपेक्षा चालू वर्ष में खेती के क्षेत्रफल में ९१,००० एकड़ या ७.४ प्र० श० की और पैदावार में २६,००० टन या ९.२ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

खेती के क्षेत्र की वृद्धि मुख्यतः आंध्र, हैदराबाद, राजस्थान, पंजाब, मैसूर व मध्य प्रदेश में और पैदावार की वृद्धि मुख्यतः आंध्र व मद्रास में हुई है।

आलू का द्वितीय अनुमान

१९५३-५४ में आलू के अखिल भारतीय द्वितीय अनुमान के अंतर्गत चालू वर्ष में आलू की खेती का क्षेत्रफल ६ लाख ४५ हजार एकड़ और उत्पादन १६ लाख ५७ हजार टन आका है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्याएं क्रमशः ६ लाख ३३ हजार एकड़ और १६ लाख ९८ हजार टन थीं। इस प्रकार खेती के क्षेत्रफल में १२ हजार एकड़ (१.९ प्र० श०) की वृद्धि और उत्पादन में ४१ हजार टन (२.४ प्र० श०) की कमी हुई।

चालू वर्ष में आलू की खेती का क्षेत्रफल बढ़ने के बावजूद भी उत्पादन में कमी रही। यह कमी बिहार, पश्चिमी बंगाल तथा पंजाब में रही और इसका कारण बुआई के समय मौसम की प्रतिकूलता है।

यह अनुमान मई १९५४ के अन्त तक का है। अन्तिम अनुमान में क्षेत्रफल दूसरे अनुमान की अपेक्षा थोड़ा बढ़ जाता है।

विविध

थोक मूल्यों के साप्ताहिक सूचक-अंक

७ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

७ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक-अंक (अगस्त १९३९ में समाप्त हुए सप्ताह को आधार=१०० मानते हुए) ०.२ प्र० श० बढ़कर ३८२.२ हो गया, जबकि गत सप्ताह में इसका रुख ०.६ प्र० श० कमी की ओर था। यह वृद्धि मुख्यतः खाद्य पदार्थों के मूल्य में ०.९ प्र० श० वृद्धि हो जाने से हुई। यह सूचक अंक गत मास के इसी सप्ताह की अपेक्षा ०.६ प्र० श० अधिक और एक वर्ष पूर्व के इसी सप्ताह की अपेक्षा ७.२ प्र० श० कम था।

१४ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

१४ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक-अंक (अगस्त १९३९ में समाप्त हुए सप्ताह को आधार=१०० मानते हुए) ३८१.४ रहा, जबकि गत सप्ताह में यह ३८१.५ (समायोजित) तथा गत मास के इसी सप्ताह में ३८१.६ (समायोजित) रहा था। यह सूचक-अंक एक वर्ष पूर्व के इसी सप्ताह के स्तर से ७.४ प्र० श० कम था।

२१ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

२१ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक (अगस्त १९३९ को समाप्त हुए वर्ष को आधार =१०० मानते हुए) ३८१.७ रहा जबकि पिछले सप्ताह में यह ३८१.४ रहा था। गत मास और एक वर्ष पूर्व के इन्हीं सप्ताहों की अपेक्षा यह अंक क्रमशः ०.३ और ६.८ प्रतिशत कम रहा।

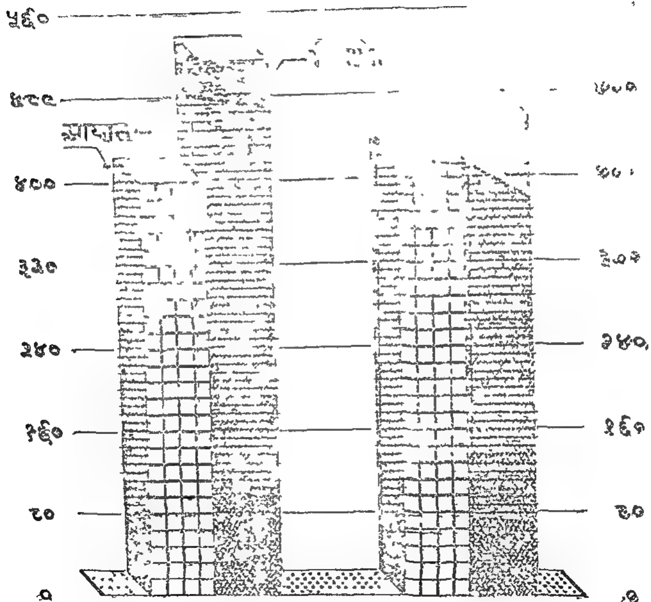
२८ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

२८ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक (अगस्त १९३९ को समाप्त हुए वर्ष को आधार= १०० मानते हुए) ०.८ प्रतिशत की वृद्धि होकर ३८४.८ हो गया। वस्तुओं के सभी वर्गों में वृद्धि होने के कारण सूचक अंक में यह वृद्धि हुई है। गत मास के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक १.२ प्रतिशत अधिक रहा, परन्तु एक वर्ष पूर्व के इसी सप्ताह के अंक की अपेक्षा ५.८ प्रतिशत कम रहा। अगस्त १९५४ का औसत अंक ३८२.३ रहा, जबकि गत मास का संशोधित ३८१.३ और अगस्त १९५३ का ४१०.४ रहा।

४ सितम्बर, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय से प्रकाशित एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि (अगस्त १९३९ में समाप्त वर्ष को आधार= १०० मानते हुए) ४ सितम्बर, १९५४ को समाप्त सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ३८५.२ रह गया। पिछले महीने के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक १.० प्र० श० अधिक और पिछले वर्ष के इसी सप्ताह की अपेक्षा ५.७ प्र० श० कम है।

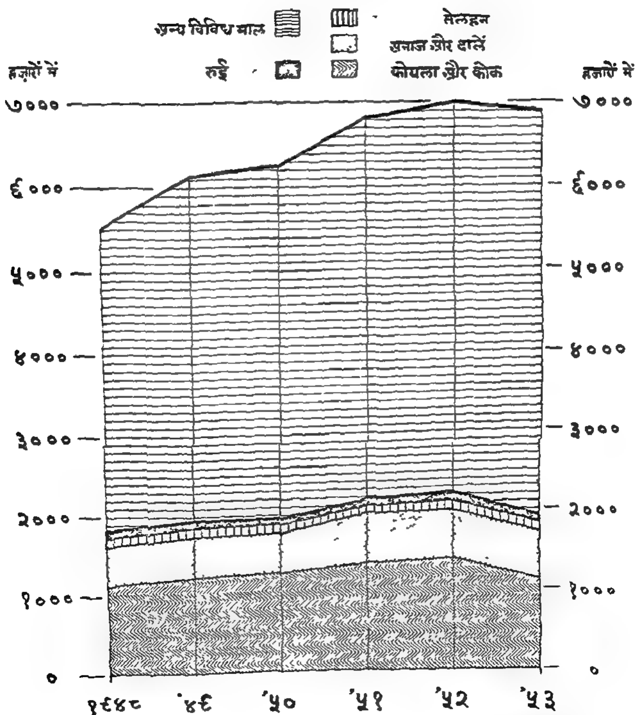
ग्राफ विभाग



* इसमें अनाज, स्टोर आदि के विशेष आयात का मूल्य २१० लाख रु० सम्मिलित नहीं है, जिसका पूर्ण विवरण अभी प्राप्त नहीं हुआ है ॥

एम० ओ० मेहरा
रू० चोप

सेन्ट्रल स्टेटिस्टिकल ऑर्गनाइज़ेशन नं० ३०९/९-५४-२


अन्तर्देशीय परिवहन
लादे गये डिब्बे
(प्रथम श्रेणी की रेलों में)
अन्य विविध माल
तेलहन
अनाज और दालें
रुई
कोयला और कोक
हज़ारों में
हज़ारों में
७०००
६०००
५०००
४०००
३०००
२०००
१०००
०
१९४८
'४९
'५०
'५१
'५२
'५३
एम॰ जी॰ मेहता
म॰ घोष
सेन्ट्रल स्टेटिस्टिकल आर्गनाईज़ेशन नं॰ ३१०/९.५४-२

सांख्यिकी विभाग

१. औद्योगिक उत्पादन*

(१) बुनाई उद्योग

वर्ष	१ सूत (लाख पौंड)	२ सूती कपड़ा (लाख गज)	३ [क] जूट का माल (००० टन)	४ [ख] ऊनी माल (००० पौंड)	५ पट्टे (टन)
१९४६	१३,६६८	३९,०८४	१,०८८.४	२७,०००	
१९४७	१२,९६०	३७,६२०	१,०५१.२	२४,०००	६१५.१
१९४८	१४,४७२	४३,१८८	१,०८८.४	२०,००४	६६०.०
१९४९	१३,५९६	३९,०४८	९४५.६	२१,०००	४०२.०
१९५०	११,७४८	३६,६६८	८३५.७	१८,०००	५१०.०
१९५१	१३,०४४	४०,७९४	८७४.८	१७,७००	६७५.६
१९५२	१४,४९६	४५,९८४	९५१.६	१६,५८४	७०६.२
१९५३	१५,०१०	४८,९००	८६८.८	१७,०२८	७६५.६
१९५४ जनवरी	१,३२०	४,२६०	६७.३	१,२२०	६८.०
फरवरी	१,२४०	४,०१०	६८.३	१,३७४	५९.०
मार्च	१,२४०	४,६६०	७५.६	१,३६८	५३.०
अप्रैल	१,२६०	४,२६०	७५.०	१,२६५	६४.०
मई	१,२६०	४,२७०	७१.३	१,४३७	७०.०
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई					
अगस्त					
सितम्बर					
अक्तूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९४९ से ये आंकड़े इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन की सदस्यता वाले मिलों तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में हैं। [ख] इसमें जम्मू और कश्मीर के आंकड़े भी सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	६ कच्चा लोहा (००० टन)	७ सीधी ढलाई (००० टन)	८ लोह मिश्रित धातु (००० टन)	९ इस्पात के पिण्ड और ढलाई (००० टन)	१० अधूरा तैयार इस्पात (००० टन)	११ तैयार इस्पात (००० टन)	१२ इस्पात की नलियाँ (टन)
१९४६	१,३४६.४	७५.६	१५.६	१,२६३.६	१,०३०.८	८६०.४	·
१९४७	१,३२०.०	६७.२	१८.०	१,२५६.४	१,०२७.२	८९२.८	
१९४८	१,४०५.२	५१.६	७.२	१,२५६.४	१,०११.६	८५६.८	·
१९४९	१,५२७.६	६३.६	१६.७	१,३५२.४	१,१०५.२	९३०.०	४७०.४
१९५०	१,५६२.४	९८.४	१८.०	१,४३७.६	१,१४२.४	१,००४.४	४२७.२
१९५१	१,७०८.८	९२.४	२४.०	१,५००.०	१,२४९.२	१,०७६.४	४५६.०
१९५२	१,६८४.८	१२९.६	४०.८	१,५७८.०	१,३०८.०	१,१०१.८	२१४.८
१९५३	१,६५४.८	११५.२	७.२	१,५०७.२	१,२३०.०	१,०१७.६	अप्राप्त
१९५४ जनवरी	१६३.२	७.३	०.१	१५४.२	१३१.४	१०६.७	शून्य
फरवरी	१४४.०	१२.३	०.४	१३२.६	११४.२	९९.१	१२.१
मार्च	१५६.१	७.७	०.३	१४७.५	१२५.९	११४.५	अप्राप्त
अप्रैल	१३८.६	१०.०	०.४	१२८.७	१०९.७	९९.१	अप्राप्त
मई	१३६.५	१०.०	०.४	१२३.४	१०४.६	९४.७	अप्राप्त
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

*नवीन रिपोर्टों के अनुसार इन अंकों में संशोधन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष		१३ लकड़ी के पेच (००० मोल)	१४ मशीनी पेच (००० ग्रोस)	१५ रेजर ब्लेड (लाख)	१६ हरीकेन लालटेनें (०००)	१७ गैस के लैम्प (०००)	१८ तामचीनी का सामान (००० संख्या)	१९ बटाई हुई धातु (टन)	२० डुप्लिकेटिंग (संख्या)
१९४६					४७० ४	१५ ६		..	
१९४७		७४ ४			९०९.६	१९ २	८,५३२ ०	९७२	१६८
१९४८		१६८ ०	३१ २		९७९ २	३८ ४	६,७६३ २	१,५६४	३४८
१९४९		३४४ ४	८७ ६	७५ ६	१,७२८ ०	३२ ४	६,५९० ४	३००	५५२
१९५०		७०३ २	१५९ ६	१०६ ८	२,८०६ ८	३८ ४	५,४४५ ६	२,१४८	७५१
१९५१		७६६ ८	१२७ २	२२६ २	३,९७६ ८	६२ ४	८,१२५ २	१,८३३	२,५६०
१९५२		१,३२६ ६	१४७ ६	१०८ ०	३,५२३ २	३४ ८	७,६९० ८	२,०१३	२,०२०
१९५३		२,५५४ ८	१६८ ०	२३१ ६	४,३१२ ८	३० ०	९,४४७ ६	१,६४४	९३४
१९५४	जनवरी	२९२ १	१८ ३	५२ ८	४०२ ७	१ १	१,१८९ ५	८८	१०२
	फरवरी	३१० ६	१६ ४	५७ २	३५९ ४	१ ६	१,१७६ ६	८८	६५
	मार्च	४४६ ३	२२ ०	६४ ६	४०८ ५	२ ४	१,१७६ ७	१११	८०
	अप्रैल	४१२ ०	२० ३	८१ ५	४२३ ५	३ ६	१,२५९ २	११३	१२०
	मई	४२१ ६	११ ७	९२ ३	४११ २	२ ७	१ २४८ ६	८६	६४
	जून	५०३ ०	१९ ७	९६ ८	अप्राप्त	५ २	अप्राप्त	९६	अप्राप्त
	जुलाई								
	अगस्त								
	सितम्बर								
	अक्तूबर								
	नवम्बर								
	दिसम्बर								

[४] मशीनें (बिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष		२१ डीज़ल इंजिन (संख्या)	२२ शक्ति चलित पम्प (०००)	२३ सिलाई की मशीनें (संख्या)	२४ मशीनों के औज़ार (मूल्य ००० रुपये)	२५ ट्विस्ट ड्रिल्स (०००)	२६ पेलिको करघे (संख्या)	२७ रिंग स्पिनिंग फ्रेम (पूर्ण) (संख्या)	२८ पिसाई के चक्के (००० पौंड)	२९ धुनाई की मशीनें घूमने वाली चपटी (संख्या)
१९४६		४६८		६,१२० [ग]	६,१२४ ८	६३ ६				
१९४७		६८४	६ ०	५,८५६	४,५८७ ६	२३५ २				
'४८		१,०२०	८ ४	२०,०१६	५,४७३ २	२७६ ०				
१९४९		२,०७६	१४ ४	२५,०३२	४,७२६ २	४०० ८			७०६ ८	
१९५०		४,५९६	३० ०	३०,८८८	२,६६० ४	४४७ २			५०० ४	
१९५१		७,२४८	४८ ०	४४,४६०	४,७३० ४	१,०१७ ६	२,२८०	२७६	७०८ ०	
१९५२		४,२४८	३२ ४	५०,०४०	४,४३७ ६	७७५ २	१,३६८	२८८	८६५ २	१०८
१९५३		३,७२०	२५ २	६२,४२४	४,४०७ ६	३३४ ८	१,८१२	२०४	८०७ ६	१९२
१९५४	जनवरी	६६५	२ ५	६,७६८	३०२ ३	३६ ५	२४	१४	१०० ३	३०
	फरवरी	५४५	२ ४	७,११२	३२५ ७	३९ ८	२८	२०	१०८ १	२०
	मार्च	७१९	२ ३	७,०६३	४४० १	४७ ४	४०	१२	९७ ४	३०
	अप्रैल	६७०	२ ३	७,२४९	४३१ ७	४० १	१४२	१४	९१ ८	२०
	मई	६६२	२ ३	६,८२५	४७० १	४६ १	१५८	२४	७ ४	३५
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	६,४७०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१४	अप्राप्त	अप्राप्त
	जुलाई									
	अगस्त									
	सितम्बर									
	अक्तूबर									
	नवम्बर									
	दिसम्बर									

[ग] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आँकड़े ।

१. औद्योगिक उत्पादन

[५] लोहे से असम्बद्ध धातुएं

वर्ष	३० अलूमीनियम (टन)	३१ सुरमा (टन)	३२ ताँबा (टन)	३३ सीसा (टन)	३४ लोहे से असम्बद्ध धातुओं के नल (टन)	३५ सोना (औंस) [घ]
१९४६	३,२३६ ४	१३२ ०	६,३१० ८	शून्य		१,३१,७७२
१९४७	२,२१४ ८	२३५ २	५,९३१ ६	१८९ ६		१,७१,७-०
१९४८	३,३६१ २	३३० ०	५,८६४ ४	६२५ २	३२४ ०	१,८०,८५२
१९४९	३,४८९ ६	९९ ६	६,३९० ०	५९४ ०	३६० ०	१,६४,१४८
१९५०	३,५६६ ४	३७५ ६	६,६१४ ४	६२७ ६	३३१ २	१,९६,८४८
१९५१	३,८४८ ४	३२७ ६	७,०८३ ६	८५९ २	२४८ ४	२,२६,२३६
१९५२	३,५६६ ४	१८१ २	६,०७९ २	१,२२१ ६	३७० ८	२,५२,६००
१९५३	३,७५८ ४	१३० ८	४,९२० ०	१,६६४ ४	३५७ ६	२,२३,०२०
१९५४ जनवरी	३०२ ३	९ २	३१० ०	१८०	१९ १	१९,२८९
फरवरी	२९५ १	४४ ०	६२० ०	१२५	१४ ९	१९,८३०
मार्च	२८७ ५	३७ ६	३६५ ०	२००	१६ ६	२०,९०१
अप्रैल	३७८ २	५२ ०	६३० ०	२६७	५ ४	२०,८१५
मई	३१५ २	४० ०	३१५ ०	१३०	२१ ०	१८,६८५
जून	५१६	५६ ०	५६ ०	८५	४ ५	अप्राप्त
जुलाई						
अगस्त						
सितम्बर						
अक्तूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैदराबाद में हुए सोने का उत्पादन भी इन आँकड़ों में सम्मिलित है।

[६] बिजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई बिजली [ङ] (लाख किलोवाट प्रति घण्टा)	३७ बिजली ले जाने की नलिया (००० फुट)	३८ सूखे सेल (लाख)	३९ संग्रह की बैटरी (०००)	४० बिजली के मोटर (००० हार्स पावर)	४१ बिजली के ट्रान्सफार्मर (००० के.वी.ए.)	४२ बिजली की बत्तिया (०००)
१९४६	३८ ९२०		८७९ ६	२७ ६	४५ ६	३८ ४	८,११२
१९४७	४०,७३०		८७९ ६	९९ ६	३८ ४	३२ ४	७,९२०
१९४८	४५,७५०	१,७०७ ६	१,२३८ ४	११० ४	६० ०	८१ ६	९,२५२
१९४९	४९,०९०	२,९४८ ४	१,५२१ ६	१०६ ८	६८ ४	१०९ २	११,६४४
१९५०	५०,८८०	२,९६६ ४	१,३८१ २	१८७ २	८१ ६	१७१ ६	१४,३०४
१९५१	५८,५१७	३,९९९ ६	१,४३४ ०	२१२ ४	१४१ ६	१९४ ४	१५,५१६
१९५२	६१,२४	३,६६४ ८	१,३०२ ०	२५८ ४	१५७ २	२१४ ८	२०,८८०
१९५३	६६,२७६	३,७१६ ४	१,४८४ ४	२७६ ४	१६२ ०	३०८ ४	१९,७७६
१९५४ जनवरी	५,८०७	४४२ ६	१-६ ४	१२ ७	१२ ६	२९ ९	१,७४६
फरवरी	५,४२७	५१५.६	१२१ १	८ ९	१४ ३	२४ ७	१,५६७
मार्च	५,८५७	६०३ ४	११७ २	१२ ४	१५ ०	३३ ९	१,९२८
अप्रैल	६,०४-	५१८ ८	१५५ ७	१७ ०	१४ ३	२६ ६	१,८२७
मई	अप्राप्त	५४९ ३	१६८ ७	१७ २	१५ ३	३२ ३	१,८५९
जून	अप्राप्त	५५६ ९	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[ङ] जम्मू और काश्मीर के आकडे भी सम्मिलित हैं। अन्य दो स्टेशनो के साथ सार्वजनिक उपयोग के कार्यों के सब स्टेशन भी इसमें आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन

(६) बिजली के उद्योग (गत पृष्ठ से आगे)

वर्ष	४३ बिजली के पंखे (०००)	४४ रेडियो रिसीवर (संख्या)	४५ तार: तांबे के खुले हुए (टन)	४५ तार: लपेटने के (टन)	४५ तार: रबड़ चढ़े हुए (लाख गज)	४६ घर में लगाने वाले मीटर (संख्या)	४७ घरेलू रेफ्रिजेरेटर (संख्या)
१९४६	१२० ४ [च]		७,८९०	२१६	२२५ ६		
१९४७	१५६ ६	३,०३६					
१९४८	१८० ०	२४,६६६	५,८८०	३३६	२१६ ६		
१९४९	१७ ८	२६,८३६	५,७२४	३३६	१९३ २		
१९५०	१९३ २	४४,३४०	५,६७६	२५२	३३६ ६		
१९५१	२१२ ४	६८,१००	३,०००	३००	४११ ६		
१९५२	१९५ ६	७२,४९६	५,९२८	३९६	३२८ ८	३४ ३५३	६००
१९५३	२०६ ४	५६,२२०	७,३६८	२२८	४८४ ८	८०,६७६	१,१४०
१९५४ जनवरी	१६ ७	४ ५६२	४०६	८	३३ ९	९,४८२	१०२
फरवरी	१६ १	५,७७९	३३५	९	३८ ०	१२,४८५	३०
मार्च	२० ०	६,३०१	३३२	१६	३५ ८	१३,१६२	१५०
अप्रैल	१८ ५	५,०२८	२३७	७५	४० २	११,६२०	१५०
मई	१९ ०	४ ५५८	१४८	२२	४३ ९	१२,४५५	१००
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[च] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आंकड़े।

(७) रासायनिक पदार्थ

वर्ष	४८ गंधक का तेजाब (टन)	४९ कास्टिक सोडा (टन)	५० सोडाएश (टन)	५१ तरल क्लोरीन (टन)	५२ ब्लीचिंग पाउडर (टन)	५३ बाइक्रोमेट (टन)	५४ सुपर-फास्फेट (टन)	५५ अमोनियम (टन)	५६ तूतिया (टन)
१९४६	६०,०००	२,६०४	१२,०००	१,५००	२,००४	३,०७६	४,५००	२२,४६४	
१९४७	६०,०००	३,३१२	१३,६२०	१,७०४	२,५५६	२,६०४	५,००४	२१,२७६	
१९४८	८०,००४	४,३८०	१९,१३८	१,८००	२,८३१	२,६४०	११ ३६०	३५,२०८	४३२
१९४९	९९,४५६	६,३००	१७,६३६	२,६५२	२,४७२	१,७१६	४६,७२८	४५,६३६	४५६
१९५०	१,०२,४८०	१०,८४८	४३,७८८	२,६७२	३,३१२	२,६८०	५२,४२८	४७,३०४	४३२
१९५१	१,०६,६३०	१४,७२४	४७,४३२	५,२६८	२,५८८	३,२७६	६१ ०२०	५२,६०४	५०४
१९५२	९९,०७२	१७,०९४	४४,३२८	६,२४०	७६२	१,४६४	४६,६५६	२,१०,३०८	३३६
१९५३	१,०७,७९६	२२,५३६	५६,८८०	८,५६८	१,९५६	२,३०४	४६,८६०	३,१८,६२०	५१६
१९५४ जनवरी	११,०९५	२,३३७	४,८५९	६७३	२६२	२३०	७,६०८	२४,५३५	५०
फरवरी	१२,०००	२,१९९	४,३९९	५४९	२६४	२२२	८,३००	२३,७५५	४२
मार्च	११,५१५	२,३४८	४,०३०	८५१	२४३	२७२	७,८२५	२५,६६५	३०
अप्रैल	११,४८०	२,३२७	४,३९०	७५९	२४७	३०५	८,५२०	२४,१६६	४४
मई	११,६५०	२,३२२	४,३९३	७४१	१९५	३०७	९,११०	२४,४६०	७१
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई									
अगस्त									
सितम्बर									
अक्तूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

१. औद्योगिक उत्पादन

(८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	५७ रंगलेप और वारनिशें (टन)	५८ दियासलाई [छ] (००० पेटियां) [ज]	५९ साबुन [झ] (टन)	६० सरेस (हंडरवेट)	६१ गैसें धातुओं को जोड़ने की: आक्सीजन (लाख घन फुट)	६१ एसिटलीन (लाख घन फुट)	६२ ग्लिसरीन (टन)	६३ बेकलाइट का सांचे बनाने का चूरा (००० पौंड)
१९४६	३८,४००	४११ ६					१,७८८	
१९४७	३८,६०४	४६५ ६					१,३३२	
१९४८	३५,७२४	५३२ ८	७५,६००	१२,२६४			२,१४८	
१९४९	३०,९२४	५२६ ८	७१,००४	१२,१४४			१,७४०	
१९५०	२७,६४८	५२३ २	७२,६६६	१३,५००			२,००४	
१९५१	३३,४८०	५७७ २	८३,४३६	१४,११२	१,४५२ ०	२९८ ८	२,४२४	४५९ ६
१९५२	३२,१७२	६०८ ४	८६,३७६	१४,६४०	१,६२६ ०	३१५ ६	२,२२०	६६७ २
१९५३	३०,८८८	५६० ४	८०,०८८	१७,१००	१,८८१ ६	३४६ ८	२,५०८	८३६ ४
१९५४ जनवरी	२,१८१	४५ ६	५,२२३	१,६१२	१७० ०	३३ ०	५४	६४ ०
फरवरी	२,४४७	४१ २	५,२४०	१,६२३	१६८ ८	३२ ०	२१८	२३ ६
मार्च	२,६००	४५ ७	६,२७५	१,८६४	१८९ ०	३४ ०	२०२	७३ ६
अप्रैल	२,३९५	३८ ७	५,६८०	१,३१८	१९४ ०	३८ ०	२८२	७४ ४
मई	२,१६५	४३ ६	६,०६५	१,३३०	१६० ०	२८ ०	१४८	८२ ४
जून	अप्राप्त	३४ १	अप्राप्त	१,३०७	१६३ ०	३५ ०	अप्राप्त	६१ ४
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[छ] इसमें जम्मू और काश्मीर के आंकड़े भी शामिल हैं। [ज] ६० तीलियों वाली डिबियों के ५० ग्रोस।
[झ] ये आंकड़े संगठित कारखानों के उत्पादन के हैं।

(८) रसायनिक उद्योग

वर्ष	६४ लिवर का सत्व: इंजेक्शन (००० सी सी)	६४ खाने वाला (००० पौंड)	६५ रेयन (टन)	६६ अलकोहल (००० गैलनों में घुला हुआ): इंजनों में जलने वाला	६६ शुद्ध स्पिरिट	६६ मिश्रित स्पिरिट	६७ अलसी का तेल, पोता हुआ टाट (लिनोलियम) (००० ली० गज)	६८ प्लास्टिक के सांचे (००० ग्रोस)
१९४६				१,३९७ ६	१,१४९ ८	१,०२३ ६		
१९४७				२,७३६ ०	१,७७४ ८	१,०८४ ८		
१९४८				३,७७६ ४	२,३८९ २	१,४०१ ६		
१९४९	७,३१८ ८	१८१ २		४,२३० ०	१,६५० ०	१,०६५ ६		
१९५०	११,२४५ ६	३०१ २		४,४९७ ६	३,४३५ ६	१,४७७ २		
१९५१	१०,६८२ ४	३११ २	२,०८८	५,८०९ २	५,०१० ०	१,६६६ ८		१,४४६ ०
१९५२	१०,३७२ ८	३१० ८	३,५८८	७,७४२ ४	४ ६३२ ०	२,१४८ ९	१५६ ६	१,५५४ ४
१९५३	१०,२३८ ८	[illegible]०४ ४	४,३५६	७,६७७ ६	४,०२६ ०	२,२३८ ०	१६३ २	१,२७० ६
१९५४ जनवरी	१,४०६ ०	२५ २	३०८	६३८ ६	४४५ २	३२३ ४	२० ७	११७ ५
फरवरी	११३ ४	२३ १	३५२	९२६ ४	४७८ ५	२२७ ३	२८ ४	१०४ ९
मार्च	१,१५४ ०	२१ ९	३६६	६७९ ३	४०५ १	२७२ ८	३६ ५	१०४ ६
अप्रैल	१,०५३ ७	२२ १	३९५	८८८ ४	३७६ ०	२७६ १	२६ ६	११४ ८
मई	१,१२३ १	१८ ५	४०४	७०० ०	३२० ९	२४२ ६	२७ १	१०३ ४
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	३८४	६३६ १	३७० ०	२१० ४	१८ ७	अप्राप्त
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(९) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष		६९ सीमेंट (००० टन)	७० सीमेंट की चादरें, एसबेस्टस (००० टन)	७१ सफेद माल (टन)	७२ स्वच्छता के लिये बनाया गया माल (टन)	७३ पत्थर का सामान (००० टन)	७४ चीनी का पालिश वाले नल (००० दर्जन)	७५ ऊंची आंच सहन करने वाली मिट्टी की ईंटें (००० टन)	७६ घिसने वाला सामान (००० रीम)	७७ बिजली अवरोधक (इन्सूलेटर) एच टी. (०००)	७७ बिजली अवरोधक (इन्सूलेटर) एल टी (०००)
१९४६		१,५४२ ०	२५ २	—				१५६ ०	६१ २		
१९४७		१,४४७ १						१७५ २	४० ८	७४ ४	१,४२० ४
१९४८		१,५५२ ८	७६ ८	५,३७६	१,४६४	१५ ६		१-६ ६	४५ ६	९००	२,५०३ ६
१९४९		२,१०२ ४	८६ ४	३,७३२	१,६०-	२२ -		२०८ ८	२५ २	१३६ ८	१,२३९ २
१९५०		२,६१२ ४	८६ ४	६,०६०	१,७-८	२६ ४	९२ ४	२३६ ४	३१ २	१७४ ०	१,२७६ २
१९५१		३,१९५ ६	८१ ६	६,१९२	६४८	३० ०	३१० ८	२३७ ६	३७ २	२४४ ८	१,४१२ ८
१९५२		३,५३७ ६	८७ ६	६,०६०	४३२	३३ ६	३४५ ६	२४३ ६	५५ २	३२५ २	३,०७- ०
१९५३		३,७८० ०	७५ ६	८,०१६	७२०	३३ ६	३७९ २	२२८ ०	५७ ६	५४७ २	२,३०६ ४
१९५४	जनवरी	३६२ ८	७ ७	२५७	५९	२ ८	२२ ६	१८ ७	४ ६	३९ ८	४४८ ६
	फरवरी	३५१ ६	७ ५	८८०	५०	३ २	३७ ५	१७ ८	५ ३	४२ ४	२४७ ६
	मार्च	३८८ ६	७ ०	८५८	१०५	२ १	४५ ६	२० ७	५ ५	४८ १	२९४ ०
	अप्रैल	३५९ ८	६ ३	९१३	१०९	३ ४	२९ ३	२० ३	७ ०	४८ ८	२५४ ०
	मई	३७३ ४	६ ०	-८	११८	३ ५	३५ ७	१५ ४	५ १	५१ २	२५२ ८
	जून	३४७ ४	६ ३	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	जुलाई										
	अगस्त										
	सितम्बर										
	अक्तूबर										
	नवम्बर										
	दिसम्बर										

(१०) काँच और काँच का सामान

वर्ष		७८ काच की चादरें (००० वर्ग फुट)	७९ प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	८० बिजली की बत्तियों के खोल (लाख बत्तियां)	८१ काच का अन्य सामान (टन)
१९४६		८,७३९ ०			
१९४७		५,७१९ २	—		...
१९४८		६,२५५ ६	१,९२०	१११ ६	९३,५१६
१९४९		३,४५१ २	१,६८०	९१ २	९४ ४३८
१९५०		९,५७० ०	२,१६०	१२९ ६	७२,२१६
१९५१		११,०८९ २	२,९८०	१४४ ०	९०,३२४
१९५२		९,०४३ २	१,४७६	१६६ ८	८५,३६-
१९५३		२२,७८६ ८	१,३९२	१६९ २	९७,७७६
१९५४	जनवरी	२,२५३ ४	१७०	१७ ३	७,२१९
	फरवरी	२,१४८ ४	११६	१३ २	५,२६०
	मार्च	२,४०६ ७	११९	१४ ४	७ २७३
	अप्रैल	१,२६७ २	११६	१३ ०	७,११६
	मई	४९० ८	९०	१६ १	७ ०८३
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	जुलाई				
	अगस्त				
	सितम्बर				
	अक्तूबर				
	नवम्बर				
	दिसम्बर				

१. औद्योगिक उत्पादन

(११) रबड़ उद्योग

वर्ष		८२ रबड के जूते (लाख जोड़े)	८३ रबड चढ़ा सामान, खिलौने गुब्बारे आदि (लाख दर्जन)	८४ टायर: मोटर गाडिया (०००)	८४ टायर: साइकिलें (०००)	८४ टायर: ट्रेक्टर (संख्या)	८४ टायर: वायुयान (संख्या)	८४ टायर: तार (०००फुट)	८५ ट्यूब: मोटर गाडिया (०००)	८५ ट्यूब: साइकिलें (०००)	८५ ट्यूब: ट्रेक्टर (संख्या)	८५ ट्यूब: वायुयान (संख्या)
१६४६		१४४ ०		७५० ०	२,६४८ ४				७०० ८	३,७९४ ४		
१६४७				८१० ०	३ २२ ०				८२० ८	४,३२२ ४		
१६४८		१८७ २	२३३ ४	७७० ४	३ ३६६ ६				७५० ▪	३ ७८६ ६		
१६४६		१७७ ६	६८ ४	६८६ ४	४ ६११ ६				७०२ ०	३,१२८ ४		
१६५०		१६५ ६	१०५ ६	६३८ ४	३,३२५ २				६६८ ४	४ २०७ २		
१६५१		२३० ४	११० ४	८७० ४	३ ६४२ ८		२ ४७२	३७३ २	८२० ८	४,८६७ २		६६६
१६५२		२२८ ▪	१३८ ०	७२१ २	४ १ ६ २	३ ८५२	६८४	३८५ २	६६१ २	४ १६६ ४	५,४८४	६.४
१६५३		२४० ०	१२४ ८	७६८ ०	४ ६४५ २	६,६१२	१,२६६	४४२ ८	६५८ ८	४,६०० ८	८,१३६	६२८
१६५४	जनवरी	२४ ३	६ ५	७० ४	४३१ ३	८२८	२६६	२३ ४	५३ ७	४५५ ६	३६१	१०६
	फरवरी	२५ ४	१० ४	७२ ५	४३६ ०	१ ०६३	४०१	४३ ७	६२ १	४ ५ ६	७८६	१३३
	मार्च	२२ ?	१० ४	७३ ६	३६७ ४	१ ४२६	३८७	३७ ८	६७ ८	४२८ ७	६३७	१४२
	अप्रैल	२६ ३	११ १	७४ १	४६४ ३	१ ३११	३७-	३३ १	७१ ३	४६६ ८	७६७	५६
	मई	२५ ५	१३ ६	७४ ०	४४७ २	२,२७४	३३२	१७ ८	७० ८	४ ३ ६	२,०७७	१०१
	जून	२२ ५	१७ ८	७३ ०	४१० ?	१ ५८४	४२१	अप्राप्त	६५ ६	४६७ १	८८८	१११
	जुलाई											
	अगस्त											
	सितम्बर											
	अक्तूबर											
	नवम्बर											
	दिसम्बर											

रबड़ उद्योग (शेषांश)

वर्ष		८६ रबड के नल: रेडिएटर (०००)	८६ रबड के नल: वेकुअम ब्रेक (०००)	८६ रबड के नल: अन्य प्रकार के (०००फुट)	८७ पखों के पट्टे (०००)	८८ रेलो का रबड का सामान (०००)	८९ इबोनाइट (००० पौंड)	९० पानी रोकने वाले वस्त्र (००० गज)	९१ रबड के स्पंज (००० पौंड)
१६४६		.							
१६४७									--
१६४८									
१६४६		१०० ८	३२७ ६	१,८८५ २	४८ ०	१,४१० ▪			
१६५०		२०६ ४	३३३ ६	२,८२० ०	१६० ८	६६१ २			—
१६५१		२२० ८	४७२ ८	३,४७४ ०	२६८ ८	७४८ ८	१६६ २	१,५७६ ८	४७१ ६
१६५२		१५४ ८	४४४ ०	३,८४६ ६	५५८ ०	१,२२६ ८	१२६ ०	२,२६४	६३६ ६
१६५३		१४० ४	४७२ ८	४ ३७४ ०	४३२ ०	१ २३३ ६	८- ८	२,०५४ ४	४६५ ६
१६५४	जनवरी	११ ४	२७ २	३५१ १	५३ ४	१२८ ०	८ ७	१८० ३	५१ ७
	फरवरी	८ ६	२७ ०	३४७ ०	४८ ६	१२४ ६	६ ७	१६२ ६	७४ ०
	मार्च	१० ७	३५ ४	३५० १	४३ २	१०४ ७	७ ३	१७२ ६	६८ १
	अप्रैल	१२ ६	५० १	३६३ ०	४० ३	५० ७	७ २	२०७ ६	७३ २
	मई	१२ २	७० ?	४०४ ७	३८ ६	६२ ५	६ ६	२५० ४	७८ ३
	जून	११ ३	अप्राप्त	४२१ ६	३७ ४	अप्राप्त	८६	२१६ २	६० ४
	जुलाई								
	अगस्त								
	सितम्बर								
	अक्तूबर								
	नवम्बर								
	दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(१२) खाद्य और तम्बाकू

वर्ष		९२ [अ] गेहूँ का आटा (००० टन)	९३ [ट] चीनी (००० टन)	९४ [ठ] काफी (टन)	९५ [ड] चाय (लाख पौंड)	९६ नमक (००० मन)	९७ वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुएं (टन)	९८ सिगरेट (लाख)
१९४६			९२२ ८	२४,०४८	५,५१४ ०	४७,८६८	१,३५,०९९	
१९४७			९०१ २	१६,८४८	५,६१३ ६	५१,६००	९५,११२	१,८८,७९६
१९४८			१,०७५ २	१६,१२-	५,६८६ ८	६३,५२८	१,२९,६९६	२,१८,२४४
१९४९		४१७ ६	१,००० ८	२२,३८०	५,८५० ०	५५,६२०	१,५५,५४४*	२,१८,९०४
१९५०		४७७ ६	९७६ ८	२०,५३२	६,०३६ ०	७१,३१६	१,७१,६३६	२,३६,२९२
१९५१		४८९ ०	१,११४ ८	१८,०९६	७,३०३ २	७४,३७६	१,७२,३२०	२,१४,६८०
१९५२		५११ ४	१,४९४ ०	२१,०९१	६,२२६ ८	७६,८६०	१,९०,८१२	२,०१,१९२
१९५३		४८३ ६	१,२९१ २	२२,५७२	६,०८१ ६	८६,३१६	१,९१,३५२	१,९६,७६४
१९५४	जनवरी	३५ ४	३०३ ९	२,६०९	६४ ०	७,८८९	२५,८९३	१७,१६७
	फरवरी	३६ २	२५२ १	४,८४२	५७ ५	३,६८३	१८,२१७	१९,१११
	मार्च	३९ १	२५५ १	६,१९०	१०० ८	६,९९२	१९,८०३	१६,९२५
	अप्रैल	४० ७	[illegible] ५	४,३८४	३४७ ९	१२,५५९	२२,७७८	६,८८४
	मई	३६ ८	२ ६	३,७३९	५६३ ७	१७,८९४	अप्राप्त	६,१९०
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	८,८१४
	जुलाई							
	अगस्त							
	सितम्बर							
	अक्तूबर							
	नवम्बर							
	दिसम्बर							

[अ] ये आँकड़े केवल बड़ी आटा मिलों के हैं। [ट] ये आँकड़े फसली साल (नवम्बर से अक्तूबर) तक के हैं और केवल गन्ने से बनने वाली चीनी के विषय में हैं। [ठ] ये आँकड़े छानने और पीसने के पश्चात् काफी भण्डार में दे दी जाने वाली काफी के विषय में हैं। [ड] ये मासिक आँकड़े पंजाब (काँगड़ा और मण्डी रियासत) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष		९९ जूते, पश्चिमी ढंग के (००० जोड़े)	१०० जूते, देशी ढंग के (००० जोड़े)	१०१ कमाये चमड़े का क्रोम (०००)	१०२ वनस्पति साधनों से कमाया हुआ गाय भैंस का चमड़ा (०००)	१०३ चमड़े जैसा कपड़ा (००० गज)
१९४६						
१९४७						
१९४८		३,-०१ ६	२,०९७ ६	१,०८७ २	१,९५ ४	
१९४९		२,-५० ०	२,१०- ४	५८० ८	१,८३४ ८	
१९५०		२,८३६ -	१,९९६ -	४६५ ६	१,५१४ ४	
१९५१		३,९४० -	२,०७३ ६	८७९ ६	१,७०[illegible] ०	१,९१८ ८
१९५२		३,३६७ २	१,८०६ [illegible]	६५० ४	१,४७- ४	९३४ ८
१९५३		३,३८८ ०	२ २०४ ४	७०० ८	१,२९८ ४	९८६ ४
१९५४	जनवरी	२९९ ४	१९५ ६	५९ ६	१२० २	८२ ३
	फरवरी	३१७ ५	१ ७८	६६ १	१२० १	६५ २
	मार्च	३२२ १	१३८ ३	७१ ९	१३८ ४	६७ ८
	अप्रैल	[illegible]४९	१४५ ५	६६ ६	१२१ ४	८७ ४
	मई	२७० १	१६३ ४	५९ ३	९२ ८	९५ १
	जून	[illegible]	१६० ३	५७ २	९२ ३	अप्राप्त
	जुलाई					
	अगस्त					
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

१. औद्योगिक उत्पादन

(१४) अन्य उद्योग

वर्ष		१०४ खनिज कोयला (००० टन)	चाय की पेटियां	१०५ प्लाइवुड (००० वर्ग फुट) व्यापारिक	छपाई और लिखाई का	योग	१०६ कागज (टन) लपेटने का	विशेष किस्म का कथ	गत्ते	योग
१९४६		२८,८८४	३५,४००	२३,४००	५८,८००	६४,८६६	१५,६८४	६,८२८	१८,५८८	१,०५,९९६
१९४७		३०,०००	२८,५६०	५,७३६	३४,२१६	५२,७७६	१६,८४८	५,३१६	१८ १५६	९३ ०९६
१९४८		२९,८२०	४५,१०८	८,६२८	५३,७३६	५०,३७६	१७,३८८	११,९१२	१७,२३२	९७,९०८
१९४९		३१,४५२	३८,४००	९,२४०	४७,६४०	५९,४८४	१२,८७६	११,९०४	१८,९३६	१,०३,२००
१९५०		३१,९९२	४१,३७६	८,८४४	५०,२२०	७०,१५२	१४,६१६	५,१९६	१८,९४८	१,०८,९१२
१९५१		३४,३०८	६०,६४८	१०,२००	७०,८४८	७९,२६०	२५,४८८	३,१२०	२४,०४८	१,३१,९१६
१९५२		३६,२२८	७८,२२८	१२,३१२	९०,५४०	९१,४०८	२१,५४०	७,८२०	२१,७२०	१,३७,५०८
१९५३		३५,८४४	४९,५००	११ ३७६	६०,८७६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१,३८,२१९
१९५४	जनवरी	२,९०३	४,२९३	८९२	४,९२५	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१०,३२८
	फरवरी	३,०५६	४,७७२	८८६	५,६६१	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	९,३८८
	मार्च	३,०७१	३,७४१	३६२	४,४०३	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	११,४७३
	अप्रैल	३,०३७	३,९७४	६३९	४,६१३	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१३,७९४
	मई	२,९७७	३,६२९	८३५	४ ४६४	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१०,२२४
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	११,०१७
	जुलाई									
	अगस्त									
	सितम्बर									
	अक्तूबर									
	नवम्बर									
	दिसम्बर									

(१४) अन्य उद्योग (शेषांक)

परिवहन

वर्ष		१०७ मोटर गाड़ियां (संख्या) कारें	ट्रक	योग	१०८ साइकिलें पूरी तैयार (मूल्य ००० रुपये)	हिस्से
१९४६					४२,९८४ (ह)	६६३ ६ (ह)
१९४७					३१,८६० (ह)	१,७१८ ४ (ह)
१९४८					६२,८९१	१,११४ ८ (ग)
१९४९		६,६७२	१५,१३२	२१,८०४	८०,०२८	१,७९६ ४ (ग)
१९५०		६,५८८	८,०१६	१४,६०४	१,०३,१५२	६,४५२ २ (घ)
१९५१		१२,३८४	९,८८८	२२,२७२	१,२४,२७६	९,४६० ४
१९५२		६,९४८	८,३४०	१५,२८८	१,९६,९५६	८,२४७ ६
१९५३		४,९३२	८,९८८	१३,९२०	२,६४,१६८	१०,१९४ ०
१९५४	जनवरी	२७७	९९६	१,२७३	१८,६००	८५७ ०
	फरवरी	अप्राप्त	अप्राप्त	१,२२३	२२,५६३	७९९ ०
	मार्च	५००	७९९	१,२९९	२०,८३५	८६१ ५
	अप्रैल	अप्राप्त	अप्राप्त	८३६	२६,३०४	६३७ ९
	मई	अप्राप्त	अप्राप्त	८१९	३३,०७३	९४५ १
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१,०४३ ३
	जुलाई					
	अगस्त					
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लाख रुपया में)

व्यापारी माल	१९४८-४९	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५३-५४ (अप्रैल मई)	१९५४-५५ (अप्रैल मई)
(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	४,२१,०४	४,७२,०७	५,७८,९८	७,०१,७५*	५,५३,७७	५,१५,६६	७७,८८	६८,०५
स्थल द्वारा	३०,३९(अ)	२७,८८	१७,८२	२७,१४*	१८,८४	७,४६	७८	१,०१
योग	४,५१,४३	४,९९,९५	५,९६,७९	७,२८,८९*	५,७२,६१	५,२३,१५	७८,६६	६९,०६
(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात (केवल समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, पेय और तम्बाकू	९२,३०	१,१५,८८	१,३५,८२	१,५८,२५	१,४३,३०	१,२१,११	१७,४७	१४,२९
२ कच्चा माल तथा उपज और मुख्यत अनिर्मित माल	६७,८७	१,०४,२६	१,२५,७७	१,३६,६८	१,४६,२७	१,०६,८६	२१,३७	१५,३३
३ पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल	२,२६,०६	२,४६,७४	३,१४,७८	४,००,०९	२,६०,०८	२,५३,२५	३८,३४	३७,६७
योग [जिसमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएं भी सम्मिलित हैं]	४,२१,०४	४,७२,०७	५,७८,९८	७,०१,७५	५,५३,७७	५,१५,६६	७७,८८	६८,०५
(ग) पुनर्निर्यात (संक्रमण व्यापार छोड़कर)	७ २६	६,०७	४,५६	४,०५	५,०४	४,७९	१,१७	१,०७
(घ) कुल निर्यात	४,२८,७२	५,०६,०२	६,०१,३५	७,३२,६४	५,७७,६५	५,२७,६४	७६,८३	७०,११
(ङ) आयात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,५७,१७	५,९४,३४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३६,०७*	५,५१,०२*	१,१४,५७	९९,६५
स्थल द्वारा	८५,०० (अ)	३३,७१	४२,७९	८०,४५	२५,१६	२२,६६	१,३७	२,८३
योग	६,४२,१७	६,२८,०५	६,२३,९६	९,५५,३६	६,६१,२३	५,७३,६८	१,१५,९४	९९,४८
संक्रमण व्यापार काटकर		३,१४	६०	८०	१९	१२	३	८
(च) शुद्ध आयात	६,४२,१७	६,२४,९१	६,२३,३६	९,५४,५६	६,६४,०४*	५,७३,८६*	१,१५,९१	९९,४०
(छ) आयात (समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, पेय और तम्बाकू	१,२७,१२	१,५६,६४	१,१०,६२	२,६२,०७	१,७५,६५	९२,७४	३१,०३	६,५५
२ कच्चा माल और उपज तथा मुख्यतः निर्मित वस्तुएँ	१,२७,५७	१,४४,२७	१ ६८,८१	२,५६,०८	१,७३ १६	१,६६,५५	३२,३६	४४,८४
३ पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित वस्तुएं	२,६७,६०	२,८८,६३	२,९९,५४	३,५१,४६	२,७६,३७	२,७६,०३	४७,०१	४४,७८
योग [जिसमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं]	५,५७,२७	५,९४,३४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३६,४९	५,४२,२९	१,११,२०	९९,६५
(ज) व्यापारी माल का व्यापार सन्तुलन	—१,८३,४५	—१,१८,८९	—२२,०१	—२,२१,६५	—८६,३९	—४५ ९२	—३६,०८	—२९,२७

*अनाज दान तथा ऋण के अन्न आयात का मूल्य भी सम्मिलित है।

(अ) केवल पाकिस्तान के लिये।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) खाद्य, पेय और तम्बाकू

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मछलियाँ (००० हंडरवेट)	प्याज* (००० हंडरवेट)	काजू की गिरी (००० हंडरवेट)	इलायची (००० हंडरवेट)	गोल मिर्च (००० हंडरवेट)	चाय (लाख पौंड)	तम्बाकू, अनिर्मित (लाख पौंड)	तम्बाकू, निर्मित (००० पौंड)
१९४८-४९	परिमाण	३३५	३०६	३३६	१८	२४२	४४,३०‡	६,६०	४,६७६*
	मूल्य	१,४७	५०	४,६३	७३	२,६७	६६,२४‡	६,४६	५,६८
१९४९-५०	परिमाण	३११	७२५	३७६	१६	३१३	४४,५०	६,१०	४,२६७*
	मूल्य	१,६१	१,२६	५,६१	१,२५	१४,५०	७२,६१	१२,६४	४,१०
१९५०-५१	परिमाण	३८७	१,११६	५०८	१२	३०८	४४,२०	१०,३०	११,८२८
	मूल्य	२,४६	१,१५	८,५५	१,४८	२०,४०	८०,४२	१४,११	४,३५
१९५१-५२	परिमाण	४३५	६२५	४२६	१४	२६८	४२,६०	११,२०	१२,३५६
	मूल्य	३,२८	१,०७	६,०३	१,६४	२३,२२	६२,८६	१६,१४	६,३६
१९५२-५३	परिमाण	४८८	६६४	५५८	२०	२४८	४२,७०	८,००	५,१४२
	मूल्य	३,८७	११३	१२,६८	१,६६	१३,०६	८०,८८	१३,०२	२,५४
१९५३-५४	परिमाण	५३१	४६६	२७	१८	२४८	४७,१०	६,५०	२,६७८
	मूल्य	४,१६	१८	१०,६३	१,३४	११,७१	१,०२,१४	१०,३२	१,०४
१९५४-५५ :									
अप्रैल	परिमाण	६	१२	३१	१	३३	६०	२०	२६
	मूल्य	८	१	५७	६	१,२४	२,३६	२७	१
१९५३-५४ :									
अप्रैल	परिमाण	२३	५०	४७	१	२४	२,००	६०	१४५
	मूल्य	२१	६	१,०१	७	१,६८	३,६२	८६	५

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा।

(अ) विचाराधीन।

‡ अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजे गये माल के आंकड़ों को छोड़कर

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यत अनिर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		कोयला (००० टन)	अबरक (००० हंडरवेट)	लाख (००० हंडरवेट)	चमड़ा, कच्चा (००० हंडरवेट)	खालें, कच्ची (००० हंडरवेट)	पुराना लोहा व इस्पात पुनर्निर्माण के लिये (००० टन)	खनिज लोहा (००० टन)	खनिज लोहक (००० टन)	मौंगने (००० हंडरवेट)	हड्डियाँ-कारखानों के लिये (००० टन)
१९४८-४९	परिमाण	१,३३२	३४०	४६२	४२	२०४	नगण्य		३०६	६१२	३१
	मूल्य	४,५८	५,६४	८,६१	४६	४,६८	नगण्य		२,८२	५५	५७
१९४९-५०	परिमाण	२,३२३	२१८	४३६	२६	२५८	० २	४	७३९	८४५	३७
	मूल्य	७,६३	६,८५	८,०९	२१	६,२६	० ३१	१	५,८५	६०	६६
१९५०-५१	परिमाण	९६४	४०७	६६२	३८	२४८	२	८५	८२१	८३१	४५
	मूल्य	३,४४	१०,००	११,८६	६६	८,७४	४	२२	८,०१	१,०१	१,१६
१९५१-५२	परिमाण	२,८०१	४०८	७२४	२४	२२०	४३	२८०	१,१२५	८६७	४६
	मूल्य	६,५५	१३,२१	१४,८७	६२	७,६२	७०	१,००	१५,३६	१,३३	१,२८
१९५२-५३	परिमाण	२,६६८	२८४	६८८	१	२२६	४७६	८११	१,४४०	४६६	७२
	मूल्य	१०,०३	६,०१	७,६२	१	५,५४	१०,३३	३,७१	२२,७६	४८	२,२७
१९५३-५४	परिमाण	२,६१७	२५०	५३८		२००	२५०	१,२००	१,५६८	६६७	६६
	मूल्य	६,८८	७,६५	६,७६		६,०६	४,६७	५,५३	२४,२५	६२	२,०४
१९५४-५५ * अप्रैल	परिमाण	२९१	१४	२७	--	२३	७	४६	७६	१६	६
	मूल्य	५५	४०	३७	—	७२	१२	१८	६५	१	१९
१९५३-५४ अप्रैल	परिमाण	१७३	३१	४३	.	१८	५६	८३	१४२	२१	७
	मूल्य	६४	७४	४४		५२	१,१६	३७	१,६३	२	२१

(*) विचाराधीन।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मूँगफली का तेल (००० गैलन)	अरण्डी का तेल (००० गैलन)	अलसी का तेल (००० गैलन)	मूँगफली (००० टन)	अरण्डी का बीज (००० टन)	अलसी (००० टन)	रूई, कच्ची (००० टन)	रूई, रद्दी (००० हंडरवेट)	पटुआ, कच्चा (००० हंडरवेट)	ऊन, कच्ची (००० पौंड)
१६४८-४६	परिमाण	८,६११*	३,००६	२,२८१	३८	...	२५	७६	१,०१७	३६५	८,६५८
	मूल्य	६,७०	२,१८	१,४८	३,१३	...	१,३६	१४,०१	५,१५	१,३६	१,०६
१६४६-५०	परिमाण	७,०४६*	१,१३८	१,७७३	१२६	५	७२	५८	१,५१३	३४२	१७,३६३
	मूल्य	५,४४	६६	१,२८	६,०४	२८	४,५६	१०,६१	८,२२	१,७५	३,७१
१६५०-५१	परिमाण	१६,६६१	५,८६८	१,३५६	१८	७६	६८	१५	१,३०७	२७१	२५,३७१
	मूल्य	१६,७४	४,३५	१,१०	३,५७	५,६२	५,६७	४,६४	१२,४१	१,२८	७,८७
१६५१-५२	परिमाण	५,११६	५,४२२	६,०७७	१०	१	७	२३	६२३	४१७	१८,२६५
	मूल्य	४,३२	६,५७	५,६६	२,३५	१६	७०	२३,६८	७,३५	२,४८	४,६०
१६५२-५३	परिमाण	१६,१६०	८,६२७**	३,८१२*	१३	४	नगण्य	७१	१,२५६	३४२	१७,६६६
	मूल्य	१०,४७	७,७२	४,८२	१,४०	३८	०.५३	१६,३३	६,६४	१,४६	८,४१
१६५३-५४	परिमाण	२६०	४,५३५**	६३८**	५	...	—	१५	१,३३६	३५५	२०,६६१
	मूल्य	२५	३,१६	५६	६३	...	...	६,४०	६,८७	१,१४	५,८७
१६५४-५५: अप्रैल	परिमाण	...	४७३	५१	५४	...	...	२	८५	३१	४,११८
	मूल्य	...	२८	३	५१	...	...	६८	७०	६	१,१४
१६५३-५४: अप्रैल	परिमाण	२६५	१,७०१	२८८	३	...	...	६	६१	२२	१,०७३
	मूल्य	१८	१,१४	१७	३८	...	...	१,६३	७३	७	३१

* केवल समुद्र मार्ग द्वारा।

** अपूर्ण।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		कमाया हुआ चमड़ा (००० हंडरवेट)	कमाई हुई खालें (००० हंडरवेट)	रस्से बटी हुई (००० पौंड)	सूती होजियरी	सूती कपड़ा (कटे का) (लाख गज)	सूती कपड़ा (मिल का) (लाख गज)	हिमानी का बना (मुख्यतः सूत के माल से बना हुआ)	बोरिया (००० टन)	टाट (००० टन)	नकली रेशम का कपड़ा (००० गज)	ऊनी कालीन व कम्बल (००० पौंड)	नारियल की जटा से बनी वस्तुएं (००० हंडरवेट)
१९४८-४९	परिमाण	१८६	१०४	७४०८			३६,२०**		४२७	४३५	२४,४८०	८,३३४	८६६
	मूल्य	४,६६	७,२०	१२६	६५		९६,४६**	५१	६१,४७	८०७२	५,१६	३,६१	४,४७
१९४९-५०	परिमाण	३१५	१६२*	६७,८३५(क)			७०६०		४२४	३०६	१२,२३०	१०,४६५	१,४७४
	मूल्य	८,५३	११,८३	१२,४०	७६		८६,६५	८१	६३,८२	५७,२५	१,४६	३,३१	७,३१
१९५०-५१	परिमाण	३५१	१४८(क)	७५,०६१		६००	१,२२,५०		३४५	२६६	६,६६०	२४,०६१	१,५६०
	मूल्य	१२,०७	१३,३३	१७,२८	८६	१०,८८	१,१२,१७	१,७१	५५,३६	५७,६१	६७	५,५६	१०,८१
१९५१-५२	परिमाण	३३५	१२४(क)	६,१८२(क)		४०० (क)	३८,८०		४७३	२८७	८,४१४	२१,५६१	१,२१६
	मूल्य	१३,६१	१७,४१	१२७	१,८७	६,२०	४२,६५	२,४६	१,३५,२६	१,२४,५८	१,२७	२,८८	१०,१६
१९५२-५३	परिमाण	३११	१५१*	१८,०५३		५,५०	४६,५०(क)		३७१(क)	३०४	१,६७५	७,२१८	१,२८२
	मूल्य	६,२२	१०,८६	५,४१	६६	८,७४	३३,२८	२,३५	६२,३६	६३,०८	५२	३,८०	७,१६
१९५३-५४	परिमाण	३६४	१६८	२२,५८५		६,३०	७०,६०(क)		३५४	३८	२,१७७(क)	८,६६७	१,५२१
	मूल्य	१०,८३	१३,६३	४,७६	१,२३	६,६५	४३,५४	३,२६	४०,२६	६६,५०	४६	३,१६	८,६६
१९५४-५५													
अप्रैल	परिमाण	१४*	७*	५६		२०	५,८०		३४	२४	१५५	८११	६१
	मूल्य	४८*	६२*	१	६	३५	४,१८	३३	४,०८	४,०८	३	३२	५८
१९५३-५४													
अप्रैल	परिमाण	२७*	१२*	२,५८४	..	४०	५,३०		२३	२६	१२१	७२५	८७
	मूल्य	८०*	६६*	५२	६	६८	३,६७	३५	२,६२	४,६२	२	३०	४७

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा। (क) अपूर्ण।

** इसमें अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया माल सम्मिलित नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णत अथवा मुख्यत निर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		पैराफीन मोम (००० टन)	तैयार वस्त्र (होजियरी और जूट तथा जूतों के अतिरिक्त)	ग्लिसरीन* (००० हंडरवेट)	इसबगोल की भूसी** (००० हंडरवेट)	कच्चा लोहा (००० टन)	धातु के बर्तन तथा कटलरी	यंत्र उपकरण आदि	कांच तथा मिट्टी का सामान	मशीनें और कारखानों का सामान (सीने की मशीनों सहित)	कागज गोंद, गत्ता तथा लिखने की सामग्री	रबड़ से बनी वस्तुएं	धातुएं (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९४८ ४९	परिमाण	१०				४५							
	मूल्य	१,१३	७४	...		६३	५४	६४	२,३१	२९	४६	१,६७	६८
१९४९ ५०	परिमाण	१६				७१							
	मूल्य	१,५८	११			६६	६१	७४	३२	६६	३१	३६	५६
१९५० ५१	परिमाण	२०				५४							
	मूल्य	१,२६	२,१२			८६	७८	६६	२६	४७	३३	१,६५	१,२४
१९५१ ५२	परिमाण	३२				२०							
	मूल्य	२,८९	८२			४१	१,२१	१,४७	४३	६५	१,१६	१,०८	१,४१
१९५२ ५३	परिमाण	१६	.	६१	,	११							...
	मूल्य	१,३३	१,६५	६०		४१	११०	१,५५	३५	१,२७	८७	१,४२	२,६७
१९५३ ५४	परिमाण	२४		४५	३०	१५							...
	मूल्य	१,५५	१,४९	६६	५३	२१	११३	१,६१	२६	६९	८६	१,७४	२,७७
१९५४-५५ अप्रैल	परिमाण	२		३	३								
	मूल्य	१३	७	२	४		७	८	२	६	८	९	१०
१९५३ ५४ अप्रैल	परिमाण	१		६	२					..		...	
	मूल्य	७	२४	१०	५	.	६	१२	२	५	४	१३	२६

* अप्रैल १९५२ से यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

** अप्रैल १९५३ से यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ग) आयात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	मशीन के पट्टे	रासायनिक पदार्थ	नरकोल के रंग	फल व तरकारियां	अनाज, दालें और आटा†	धातु के बर्तन	दन्त, जवाहरात आदि	हर प्रकार की मशीनें (मशीन के पट्टों सहित)	लोहा, इस्पात तथा तत्सम्बन्धी बनी वस्तुएं	धातुएं (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९४८-४९	२,२२	२०,५७	१२,३४	८,२५*	१,०१,७०	५,६६	१८,८१	८१,५६	११,११	२२,३३
१९४९-५०	१,०१	७,७१	७,६६	१०,५८	१,३३,८८	६,२४	२०,७५	१,०५,५१	१६,७०	१८,१८
१९५०-५१	१,१६	८,२२	१३,६८	१३,५७	८०,७६	४,५७	१७,७८	९३,००	१६,००	२७,८४
१९५१-५२	२,०७	१६,९०	१४,२७	११,९०	२,३०,३०	६,२४	२०,४३	१,०४,३१	३१,६७	३,६७
१९५२-५३	१,६१	१२,६८	७,५१	१३,७४	१,५६,७३	४,०५	२२,२२	८७,८६	३३,७१	१६,३७
१९५३-५४	१,०८	१२,६९	१२,४२	१३,७८	७२,४६	४,४०	२१,५६	८५,८४	२२,५७	१४,५१
१९५४-५५ अप्रैल	७	१,४०	१,२१	७२	४	४४	१,६७	६,६४	१,८१	१,५५
१९५३-५४ अप्रैल	४	१,०१	५४	९७	१५,२६	३४	२,१८	८,१३	१,६२	९०

† इसमें अनाज, दाल तथा आटे के अन्य आयात की वस्तुएं भी सम्मिलित हैं।

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

वर्ष	कागज	रूई, कच्ची	ऊन, कच्ची	नकली रेशम का सूत	मोटर आदि गाड़ियों के नीचे के ढांचे	मोटर कारें (टैक्सी गाड़ियों सहित)	औषधियां और दवाइयां	सूती कपड़े	रूई ओटी हुई और सूत	ऊनी माल	तेल मसाला की वस्तुएं	जूट, कच्चा
१९४८-४९	१३,१७	६४,४८	३,१८	१२,८३	८,६२	७,६४	८,२२*	६,३०	४,५०	३,२०	७,०८	७१,२४
१९४९-५०	७,७४	६३,७०	३,०३	१०,४६	५,३	३,१८	८,०४	१०,७०	५,७७	२,६४	७,३०	२२,१७
१९५०-५१	६,५०	१,००,७७	५,६२	१४,७१	२,६६	३,२४	१०,५२	२,३१	३०	३३	६,०२	२७,५७
१९५१-५२	१३,१६	१,३०,१८	२,६०	१७,२९	२,८७	४,७०	११,६०	२,३७	१,८२	४५	१०,८४	६७,०७
१९५२-५३	११,२२	७६,९७	६६	७,८९	२,८८	२,६६	११,७६	२,२५	२,०६	६२	५,७१	१६,४८
१९५३-५४	११,३५	५२,७१	२,६४	११,०४	२,१५	२,८२	१२,४५	२,०२	१,३१	८५	६,४२	१४,१२
१९५४-५५ अप्रैल	८४	७,६२	३	६८	२३	२३	९७	८	११	४	५६	८४
१९५३-५४ अप्रैल	९३	७,३८	१२	१,४६	११	३४	१,१२	९	४	४	७४	३५

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	ब्रिटेन		फ्रांस		बेलजियम		जर्मनी		नीदरलैंड	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयान	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,५२,९९	१,०३,२६	३,०१	७,३५	७,१०	५,८६	२,२८	२,६१	५,४५	७,२६
१९४९-५०	१,५३,६६	१,१८,१४	३,८१	५,४२	७,६२	६,२३	६,४२	६,५१	४,६६	७,३७
१९५०-५१	१,३१,४०	१,३६,८२	११,०७	६,०१	६,०४	६,८१	११,०४	१०,६३	६,६८	१०,१६
१९५१-५२	१,५८,१३	१,८६,६६	१०,७२	११,३७	६,५२	८,३६	२८,३४	६,३८	१०,६२	७,६२
१९५२ ५३	१,३८,८४	१,२३,२६	१३,५५	५,६६	६,६०	६,६८	२२,६४	१२,४८	१०,८०	१०,३६
१९५३-५४	१,४२,७१	१,४६,६६	६,६३	५,३२	७,६७	४,५७	३१,१४	११,५६	११,३०	६,८६
१९५४-५५ :										
अप्रैल	१३,०६	६३२	६१	२६	४५	२२	२,६६	६३	१,१२	४६
१९५३-५४ .										
अप्रैल	१२,३६	८,४६	१,०३	५०	३२	४१	२,११	७५	७२	५५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

वर्ष	आस्ट्रिया		हंगरी		पोलैण्ड		चेकोस्लोवाकिया		योगोस्लोविया		तुर्की	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८०	३४	१२	२५	८	३२	२,०८	२,१६	१०	१०	३	६२
१९४९-५०	५६	५३	६	२३	२६	६८	२,८१	१,४६	६१	४४	१४	२,११
१९५०-५१	१,६४	४३	१०	३	३०	४०	२,७७	१,०८	१२	६	३	२,२६
१९५१-५२	२,४७	२,०१	३२	..	३४	२६	२,८१	१,३६	१४	२६	१३	३,५५
१९५२-५३	१,८६	४२	१६	४	२६	४	१,३५	१,१८	६	११	०.८३	४,६५
१९५३-५४	२,५१	५७	१०	२	१६	१५	१,१४	३,०६	७	१	०.३१	२,५८
१९५४-५५ :												
अप्रैल	२६	नगण्य	१	नगण्य	१	..	१०	७	१	...	०.१	५
१९५३-५४ :												
अप्रैल	१७	७	०.४६	१	१	१	१२	१३	१	०.३६	नगण्य	४

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—यूरोप (रूस सम्मिलित)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	स्विट्ज़रलैंड		इटली		स्वीडन		नार्वे		डेनमार्क		रूस	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८,६३	२,२०	१८,३१	६,५५	६,००	२,११	४,३५	८६	१,२८	१६	३,७६	५,३६
१९४९-५०	७,५५	९,५४	१४,८३	५,६६	६,८०	२,३०	२,४४	१,०६	१,१७	२०	१६,६८	३,७४
१९५०-५१	७,६१	२,२३	१६,६०	१५,००	५,२८	२,६८	२,२३	१,३३	१,४६	२१	२३	१,३७
१९५१-५२	९,६४	२,०६	१७,६६	७,०६	७,४७	२,५४	३,५८	२,६०	३,१५	१,०६	१,३८	६,६२
१९५२-५३	६,६५	६१	१२,०१	१०,६२	५,६६	१,८१	२,७६	८८	१,८०	३५	२४	८५
१९५३-५४	६,१०	८२	२२,०७	५,१२	६,१८	१,५३	२,६२	४१	१,८०	१२	६०	१,१५
१९५४-५५ अप्रैल	५१	०	१,६३	३६	४८	१२	२२	६	२२	१	१	७४
१९५३-५४ अप्रैल	१,३४	४	२,०५	६२	४१	१५	१३	२	१०	१	१	

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	अदन		ईराक		बर्मा		पाकिस्तान		पूर्व अफ्रीका		मिस्र	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,७७	२,००	१,२७	१,३६	२०,५०	२,१४*	१,०७,२७	७६,६६	१४,०१	५,५४	११,६०	६,७२
१९४९-५०	१,४६	७,११	३,३८	४,०२	३३,८०	४,८२	४४,०५	४३,३०	१८,४२	६,०३	४०,२४	७,६४
१९५०-५१	१,१६	६,७६	४,२८	२,८६	२७,१४	५,६८	४१,६५	३०,६०	२६,४१	६,०६	३३,८७	५,८७
१९५१-५२	८६	६,३०	३,६१	३,१८	७८,४३	४,३७	८७,५०	५५,३६	३३,६६	१३,३०	४०,४६	६,४६
१९५२-५३	५६	६,२२	२,०५	२,१२	८,५०	२,०७	२६,८८	३३,२४	२५,१३	११,३६	१५,२२	५,६६
१९५३-५४	२२	६,०३	२,५६	२,४४	२,०४	१,५३	१६,३०	८,०४	२०,२७	१०,७६	१७,६६	३,५२
१९५४-५५ : अप्रैल	१	५०	१६	१८	५५	१६	१,०४	६७	२,२७	६५	२,६८	११
१९५३-५४ : अप्रैल	२	१,४६	६	१३	५	२	६०	३८	३,८५	८०	३,१७	५२

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	मोजाम्बिक आयात	मोजाम्बिक निर्यात	लंका आयात	लंका निर्यात	बर्मा आयात	बर्मा निर्यात	मलाया संघ, (सिंगापुर सहित) आयात	मलाया संघ, (सिंगापुर सहित) निर्यात	थाईलैंड आयात	थाईलैंड निर्यात	जापान आयात	जापान निर्यात
१९४८-४९	२,४७	८७	२,७३	१२,३१	२६,२५	१०,५६	६,६०	५,३४	८,५३	२,३७	६,३८	४,५६
१९४९-५०	३,००	६२	२,७३	१६,८२	१४,१७	१४,६३	१४,४८	१७,६८	१२,२४	४,१६	११,३८	५,८७
१९५०-५१	४,४४	५२	४,५१	१६,६८	१८,८०	२२,४५	१६,६६	३६,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५१-५२	३,४२	६२	५,६०	१६,८१	२३,३५	१६,७९	२२,०९	१५,८१	११,६४	८,७६	२४,६५	१४,८१
१९५२-५३	५,६५	६४	४,३६	२०,०८	२६,४७	११,३८	१४,८२	१८,८१	७,७२	४,१६	१५,८२	३१,६६
१९५३-५४	४,४८	७०	५,०८	१८,१२	१७,५५	२१,०६	२०,४५	१४,२१	४५	३,१२	१३,०६	२३,६०
१९५४-५५ : अप्रैल	२४	४	६५	५४	३१	१,४९	२,०२	६६	०.२७	३०	७४	१,१८
१९५३-५२ : अप्रैल	६२	६	२८	१,०६	१,६१	१,३६	१,११	१,१०	१	३०	१,२७	२,६५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आयात	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका निर्यात	कनाडा आयात	कनाडा निर्यात	अर्जेन्टाइना आयात	अर्जेन्टाइना निर्यात	आस्ट्रेलिया आयात	आस्ट्रेलिया निर्यात
१९४८-४९	१,०६,२३	७०,६८	१०,६६	८,३६	१२,८८	१६,६८	३०,०३	२०,६५
१९४९-५०	६५.४१	८१,५३	२३,६३	११,०६	८,६६	७,७८	४७,७५	२६,३६
१९५०-५१	१,१७,८७	१,१५,३८	२१,०२	१३,७९	५	१०,६५	३३,४१	३०,४१
१९५१-५२	२,८८,७०	१,३२,३६	१८,८१	१६,२६	७९	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५२-५३	१,८१,४१	१,१२,७५	२६,३१	१२,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,६८
१९५३-५४	७६,२५	६०,४६	१४,२०	१३,०६	२	१६,५७	२५,६६	१७,५३
१९५४-५५ : अप्रैल	६,५०	६,१०	३४	१,२४	नगण्य	४१	४७	१,७६
१९५३-५४ अप्रैल	१२,७१	८,७०	१,५०	१,२३	...	६१	२,८६	१,०५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
खाद्य पदार्थ							
चावल							
(१) साधारण (न)	कलकत्ता	मन	१६ १२ ०	१६ १२ ०	१६ १४ ०	१६ १२ ०	१६ १२ ०
(२) लाल	पटना	,,	२४ ० ०	१६ ० ०	१७ ० ०	१७ ० ०	१७ ० ०
(३) अनगड्डा (उ)	विजयवाडा	,,	१४ ६ ३	१४ ६ ३	१४ ६ ३	१४ ६ ३	१४ ६ ३
२ गेहूँ							
(१) साधारण	जबलपुर	,,	२० ० ०	१८ १३ ०	१८ ६ ०	१७ ६ ०	१५ १२ ०
(२) ,,	अमृतसर	,,	२२ १३ ०	१६ ० ०	१६ १२ ०	१६ १४ ०	१८ ११ ०
(३) ,,	हापुड	,,	१५ १२ ०	१७ ४ ०	१६ ४ ०	१५ ५ ०	१६ ० ०
३. ज्वार	अमरावती	,,	अप्राप्त	१० १० ०	१० २ ०	९ १० ०	१० २ ०
४ बाजरा	हैदराबाद शहर	२४० पौंड का पल्ला	३६ ० ०	३४ १३ ०	३२ १२ ०	२८ ८ ०	२७ ० ०
५ चना							
(१) देशी	पटना	मन	१७ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०	१३ ० ०	१२ ८ ०
(२) ,,	हापुड	,,	१५ १० ०	१४ ८ ०	१३ ८ ०	११ १० ०	१३ ० ०
६ दाल							
अरहर	,,	,,	१२ १४ ०	१२ ० ०	१० ४ ०	९ १२ ०	१० १२ ०
७ चाय							
(१) आंतरिक उपभोग के लिए	कलकत्ता	पौंड	१ ७ ५	१ १३ २	१ ९ ११	१ १२ ९	२ १ ०
(२) निर्यात —							
(क) निम्न मध्यम ब्रौक पीको	,,	,,	१ ११ ०	अप्राप्त	२ १ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम ब्रौक पीको	,,	,,	१ १२ ०	अप्राप्त	२ २ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
८ काफी							
(१) प्लान्टेशन पीबेरी (गोला)	मगलौर/कोयम्बतूर*	हंडरवेट	२५३ ० ०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२१२ ८ ०
(२) देशी चपटी	,, ,,	,,	अप्राप्त	१७३ ८ ०	१६६ ० ०	१६० ० ०	१४७ ८ ०
९. चीनी (क)							
(१) डी २८	कानपुर	मन	२८ १५ ४	३० ० ४	३० ६ ७	३० ५ ३	३३ १४ ४
(२) डी २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) ई २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१० गुड							
(१) खाने के लिये	अहमदनगर	,,	अप्राप्त	१९ ८ ०	१८ ० ०	१६ ० ०	१९ ० ०
(२) ,, ,,	मुजफ्फरनगर	,,	१९ ८ ०	१५ १४ ०	१५ १० ६	१६ ६ ०	२१ ११ ०

(न) नियन्त्रित मूल्य (उ) उचित मूल्य

(क) कारखाने से चलते समय का मूल्य।

मन = ८२—२/७ पौंड।

बंगाल मन = ८२—२/१५ पौंड।

* प्रतिवर्ष जनवरी से जून तक मंगलौर बाजार के मूल्य और जुलाई से सितम्बर तक कोयम्बतूर बाजार के मूल्य दिये जाते हैं।

† इस तालिका में समस्त भाव प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह के दिये गये हैं।

के भाव : १९५४*

	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०			
	१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१७- ८-०	१७-१२-०			
	१७- ०-०	१४- ०-०	१४- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०			
	१४- ९-३	१४- ९-३	१४- ९-३	१५-१०-८	१६- ५-४			
	१४- ६-०	१४- ०-०	अप्राप्त	१३- ८-०	१३- ४-०			
	१४- ०-६	१०- ०-०	१०-१४-०	१२- ६-०	१३-१३-०			
	१३- ८-०	११-१२-०	१२- ४-०	१२- २-०	१२- ०-०			
	१०- २-०	९- ०-०	९- ४-०	९- ८-०	८- ८-०			
	२३-१२-०	२६- ९-०	२७- ०-०	२९- ४-०	२९- ०-०			
	१२- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०			
	१२- ४-०	१०- ४-०	१०- ०-०	९- ८-०	१०- ०-०			
	१०- ५-०	८- २-०	७-१५-०	७- ४-०	८- २-०			
	१-१२-८	अप्राप्त	२-०-११	२- २-७	२- ८-७			
	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-०	३- १-०			
	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-६	३- १-६			
	२२२- ८-०	२१९- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०			
	१५२- ०-०	१६२- ८-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त			
	३१- ९-४	३०- ८-७	३१- ०-५	३१-१२-०	३२- २-०			
	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३०- २-०	अप्राप्त			
	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त			
	अप्राप्त	१९- ०-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०			
	२०-१०-०	१७-१०-०	१९- ०-०	२१- ८-०	२०- ४-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
११ नमक			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(१) साँभर (न)	दिल्ली	मन	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०
(२) कच्चा	बम्बई	,,	१ ०	१ ० ०	१ २ ०	१ ० ०	१ २ ०
१२ तम्बाकू							
ढ़ा पूला नम्बर (न्यूनतम औसत दर्जे का)	कलकत्ता	बंगाल मन	११५ १ ६	१०१ ३ ८	१०० १ ६	१२० १ ६	अप्राप्त
१३ काली मिर्च							
(१) अलेप्पी (बिना छना हुआ)	,	,	२० ० ०	१०० ० ०	१८० ० ०	१६० ० ०	१७० ० ०
( ) छना हुआ	कोचीन	हंडरवेट	११५ ० ०	२५ ० ०	२१० ० ०	६७ ८ ०	२६० ० ०
१४ काजू							
नरताम	मंगलौर	मन	१८ १५ १०	२० १० ७	१७ १० ७	१३ १४ १०	१५ ३ ०

औद्योगिक कच्चा माल

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ रुई, कच्ची							
(१) जाला एम जी एफ	बम्बई	७८४ पौंड का कैंडी	७०१ ० ०	७६२ ० ०	८२० ० ०	७५४ ० ०	७५२ ० ०
(२) २१६ एफ मा अमेरिका एम जी	,,	,	अप्राप्त	अप्राप्त	६८६ ० ०	६१८ ० ०	६१७ ० ०
(३) बंगाल कच्चा एम जी	,	,	५३० ० ०	६२५ ० ०	६४० ० ०	६२० ० ०	५६५ ० ०
२ जूट, कच्चा							
(१) फर्स्ट मिल	कलकत्ता	४०० पौंड का गाँठ	१५५ ० ०	१७० ० ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०	१७५ ० ०
(२) लाइटनिंग		,,	१४	१६० ० ०	१५० ० ०	१५० ० ०	१६० ० ०
( ) नारायणगंज मिडिल	,	मन	२० ० ०	५ ० ०	३२ ८ ०	३२ ० ०	६२ ० ०
३ रेशम, कच्चा							
(१) २४०० डेनी स्पेशल	मालदा	सेर	५२ ० ०	५५ ० ०	५६ ० ०	६३ ० ०	६४ ० ०
(२) चरखा कच्चा किस्म का	बंगलौर	३६ तोले का पौंड	६ ८ ०	२८ ० ०	२७ ८ ०	३१ ० ०	३६ ८ ०
४ ऊन, कच्चा							
(१) वेंडिया सफेद बढ़िया	बम्बई	मन	८६ ५ ०	अप्राप्त	२७० १० ०	२६७ १० ०	२७७ ११ ३
(२) विल्लता	कालिम्पांग पहुँचने पर	,,	१२० ० ०	१३५ ० ०	१६७ ८ ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०			
२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०			
१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २ ०	१- २-०			
अप्राप्त	१०५-१३-६	१०५-१३-६	९६-१३-६	९४-१३-६			
१५५- ०-०	१५०- ०-०	१३०- ०-०	१३०- ०-०	१६०- ०-०			
२४०- ०-०	१५५- ०-०	१८७-१५-०	२४६- ३-०	२२५- ०-०			
१२-१०-६	१३-१४-६	१२-१०-७	१२-१५-७	१४- ६-४			
७५०- ०-०	७२५- ०-०	६६७- ०-०	७०७- ०-०	७१४- ०-०			
९१०- ०-०	८८८- ०-०	८५७- ०-०	८६३- ०-०	अप्राप्त			
६०५- ०-०	५७५- ०-०	५५०- ०-०	५१५- ०-०	५४०- ०-०			
१६५- ०-०	१५५- ०-०	१४०- ०-०	१४०- ०-०	१५०- ०-०			
१५०- ०-०	१४०- ०-०	१२५- ०-०	१२५- ०-०	१३५- ०-०			
३२- ८-०	अप्राप्त	२७- ०-०	२७- ०-०	३२- ०-०			
६६- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०			
३०- ०-०	अप्राप्त	२८- ०-०	२६- ०-०	२७- ८-०			
२७७-११-३	२७७-११-३	२७२- ६-०	२६७- ७-०	२७२- ६-०			
१७२- ८-०	१७५- ०-०	१७५- ०-०	१६५- ०-०	१६५- ०-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
५. मूँगफली							
(१) बडादाना	बम्बई	हंडरवेट	५२- ८-०	३५-१०-०	३४- ४-०	३५-१२-०	३५- ४-०
(२) मशीन से छिली हुई	बङ्गलोर	मन	३६- ४-४	२४-१०-२	२४-१३-०	२५- ६-०	२५- २-०
६. अलसी							
(१) बडादाना	बम्बई	हंडरवेट	२६- ४-०	२८- ८-०	२६- ०-०	२५- ४-०	२५- ८-०
(२) ५% रिफ्रेक्शन छोटा दाना (तैयार)	कलकत्ता	मन	२१- ०-०	२१- ८-०	२१- ४-०	२०- ४-०	१६- ०-०
७. अरण्डी का बीज							
(१) सलेम क्रिम का	मद्रास	,,	अप्राप्त	१८- ०-०	१५-१५-०	१५- ७-०	१४-१५-०
(२) छोटा साधारण औसत दर्जे का हैदराबादी	बम्बई	हंडरवेट	३३- ०-०	२४- ८-०	२४- ४-०	२२- ४-०	२३- २-०
८. तिल							
(१) सफेद बडादाना ८५%	,,	,,	६०- ०-०	४२- ०-०	४१- ०-०	४०- ८-०	४८- ०-०
(२) मिश्रित (गाजर)	झाँसी	मन	३२- ०-०	२८- ८-०	२५- ८-०	२४- ८-०	२७- ०-०
९. तोरिया							
(१) मिश्रित पटना खुदरा	कलकत्ता	बंगाल मन	२६- ०-०	३६- ४-०	३१- ०-०	२६- ८-०	२६- ८-०
(२) लाल	बम्बई	मन	२६- ७-०	२३-१४-०	२५- ०-०	२३- ८-०	२३-१४-०
(३) सरसों काली	कानपुर	,,	२६- ०-०	२८- ८-०	२४- ४-०	२१-१०-०	२३-१२-०
१०. बिनौला							
(१)	बम्बई	हंडरवेट	१८- १-४	१५- ७-६	१६- ६-५	१५-१४-६	१४-१५-७
(२)	अमरावती	८० पौंड का मन	११-१०-२	१०- ७-३	६-१४-४	६- २-५	१०- २-२
११. नारियल का गोला							
साधारण औसत दर्जे का	कोचीन	६५५.६ पौंड की कैंडी	३६१- ०-०	३६५- ७-०	३५४- ६-०	३४०- ०-०	३२३-१५-०
१२. कोयला (न)							
(१) चुना हुआ झेरिया	कोलाइरी साईडिंग में पहुँचने पर	टन	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०
(२) देशेरगढ़	,,	,,	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०
(३) म०प्र० प्रथम श्रेणी	,,	,,	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०
१३. कच्चा लोहक							
निर्यात मूल्य	विशाखापतनम	,,	१०७- ३-११	१४१-१४-६	११६-१४-४	१६१- ६-४	१७६- ७-४

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०			
३६- ४-०	३१- ४-०	३१- ४- ०	२७- ४-०	२६-१२-०			
२३-११-४	२०-१५-०	२२- ८- ०	१९- ६-०	१८- २-०			
२७- ४-०	२४- ८-०	२३- ४- ०	२३- ८-०	२३- ४-०			
१९-१०-०	१७- ०-०	१७- ८- ०	१६- ४-०	१७- ९-०			
१६- ७-०	१४- ७-०	१४- ७- ०	१४-१५-०	१४-१५-०			
२३-१०-०	२१- ४-०	२२- २- ०	१९-१०-०	१९-१४-०			
अप्राप्त	४२- ०-०	४५- ०- ०	३८- ०-०	३३-१२-०			
२७- ०-०	२५- ०-०	२४- ०- ०	२६- ०-०	२१- ०-०			
२७- ०-०	२४- ०-०	२६- ०- ०	२७- ०-०	२९- ०-०			
अप्राप्त	२१- ५-०	२२-१२- ०	२४- ४-०	२२- ६-०			
२३-१२-०	अप्राप्त	२२- १- ५	२४- ०-०	२४-१०-०			
१५- ९-१	१५- ३-२	१३-१३-१०	१३- ८-५	१२- ४-०			
१०-४-११	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त			
३२७- ८-०	३००- ०-०	३१०- ३- ०	३२०-१२-०	३२३- ८-०			
१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२- ०	१५-१२-०	१५-१२-०			
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४- ०	१६- ४-०	१६- ४-०			
१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८- ०	१७- ८-०	१७- ८-०			
१६२-३-१०	१५४-११-५	१२१- ४- ८	१४३- ०-७	१३४- ०-९			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
१४ चमड़ा, कच्चा							
(१) नमक लगा सूखा गाय का	कलकत्ता	२० पौंड	अप्राप्त	१६ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०
(२) नमक लगा गीला भैंस का	कलकत्ता	२० पौंड	अप्राप्त	१० ० ०	१० ० ०	१० ० ०	१० ० ०
(३) नमक लगा गीला गाय का	कानपुर	कोड़ी	३०० ० ०	२६० ० ०	२७५ ० ०	२७५ ० ०	४०५ ० ०
(४) नमक लगा गीला भैंस का	,,	२० पौंड	९ ६ ७	९ ११ २	१० १०-८	११ ६ १	१० ५ ६
१५ खाल कच्ची							
बकरी की, औसत किस्म की	कलकत्ता	१०० थान	अप्राप्त	३५० ० ०	३५० ०-०	३५० ० ०	३५० ० ०
१६ लाख							
(१) चपड़ा शुद्ध टी० एन०	,,	बंगाल मन	१०६ ८ ०	१०८ ० ०	९५ ८ ०	८७ ० ०	९१ ० ०
(२) बटन शुद्ध	,,	,,	११८ ० ०	१२० ० ०	११४ ० ०	१०९ ८ ०	११२ ८ ०
१७ रबड़							
RMA IX RSS	कोट्टायम	१०० पौंड	१३३ ० ०	१३३ ० ०	१३३ ० ०	१३३ ० ०	१३३ ० ०
अर्द्ध निर्मित वस्तुएं							
१. चमड़ा							
(१) गाय का चमड़ा	मद्रास	पौंड	२ २ ०	३ ० ३	३ १ ०	२ १५ ०	२ १४ ३
(२) बैल का चमड़ा	,,	,,	२ ० ९	२ १ ९	२ १ ९	२ ० ९	२ ० ३
(३) भेड़ की खालें	,,	,,	६ ६ ०	६ ३ ०	५ १५ ०	५ ११ ०	५ ८ ०
(४) बकरी की खालें	,,	,,	४ १२ ६	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १३ ०
२ खनिज तेल							
(क) मिट्टी का तेल (न)							
(१) घटिया थोक	कलकत्ता	८ गैलन	१० ७ ६	९ १५ ०	९ १५ ०	९ १५ ०	९ १५ ०
(२) बढ़िया थोक	,,	,,	१० १४ ६	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०
(ख) पैट्रोल (न)							
(१) थोक पम्प पर	,,	गैलन	२ १२ ०	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६
(२) ,,	दिल्ली	,,	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६
(३ ,,	मद्रास	,,	२ १० ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०
३ वनस्पति तेल							
क नारियल का तेल							
(१) साधारण औसत दर्जे का (तैयार)	कोचीन	६५४ पौंड की कैंडी	५१४ १५ १०	५६२ ६ ०	५२५ १२ ५	४९५ ० ७	४८० १ ३
(२) कोचीन का बढ़िया, खुदरा	कलकत्ता	बंगाल मन	७२ ० ०	८० ० ०	८४ ० ०	७४ ० ०	७२ ० ०
(३) खुला	बम्बई	क्वार्टर	२३ ० ०	२६ २ ०	२५ ४ ०	२३ ० ०	२२ ४ ०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०			
१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०			
१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०			
२४५- ०-०	२३०- ०-०	२३०- ०-०	२४०- ०-०	२७०- ०-०			
११- ०-७	११-११-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७			
३५०- ७-०	३५०- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-७	३००- ०-०			
११४- ०-०	१३८- ०-०	१४३- ०-०	१३७- ०-०	१४६- ०-०			
१२३- ०-०	१४२- ०-०	१५०- ०-०	१५६- ०-०	१६०- ०-०			
१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०			
२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-११-६			
२- ०-०	२- ०-०	२- ०-६	२- ०-६	२- १-०			
५- ८-०	५- ८-०	५- ०-०	५- ३-०	५- ३-०			
४-१३-०	४-१३-०	४-१२-०	४-१४-०	४-१४-०			
९-१५-०	९-१५-०	९-१५-०	९-१५-०	९-१५-०			
१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०			
२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६			
२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६			
२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०			
४८६- ५-०	४४३-१४-७	४५३-१४-३	४७०- १-७	४७०- १-७			
७२- ०-०	६६- ०-०	६६- ०-०	६४- ०-०	६४- ०-०			
२२-१०-०	२१- ०-०	२१- ४-०	२०-१२-०	२१- ८-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
ख. मूँगफली का तेल							
(१) खुदरा	मद्रास	५०० पौंड की कैंडी	४६०- ०-०	३१८ ०-०	३१० ० ०	३०८- ० ०	३१४ ० ०
(२) खुला	बम्बई	क्वार्टर	३० ० ०	१८ १० ०	१७ ४ ०	१७ २ ०	१८ २ ०
(३) गुण्टूर (टीन बन्द)	कलकत्ता	बंगाल मन	८३- ० ०	६०- ० ०	५७ ० ०	५७ ० ०	५८ ८ ०
ग सरसों का तेल							
(१) खुदरा (मिल से निकलते समय)	,,	,,	७१ ८ ०	७४ ८ ०	६६ ८ ०	६० ० ०	६१ ८ ०
(२)	पटना	मन	६७ ४ ०*	७३ ० ०	६५ ० ०	५६- ० ०	६० ० ०
(३)	कानपुर	,,	६३ ०-०	६६ ६ ०	५८ ० ०	५४ ०-०	५८ ०-०
घ अरण्डी का तेल							
(१) न० १ बढ़िया पीला (जहाज पर)	कलकत्ता	मन	७६ ० ०	७२ ० ०	७१- ० ०	६३ ० ०	६६- ० ०
(२)	मद्रास	५०० पौंड की कैंडी	२८० ० ०	२८५- ० ०	२३० ० ०	२१० ० ०	२२० ० ०
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	क्वार्टर	२८ ३ ११	२० ० ०	१६ ८ ०	१८ १० ०	२१ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) कच्चा खुदरा (मिल से निकलते समय)	कलकत्ता	मन	४८ ८ ०	५१- ०-०	४८- ०-०	४७ ० ०	४४ ०-०
(२)	बम्बई	क्वार्टर	१५- ८-०	१६- ०-०	१५- ८ ०	१३ १२ ०	१४ १२-०
४. खली							
(१) मूंगफली	कलकत्ता	मन	६ ४ ०	७ ८-०	७- ८ ०	७- [illegible] ०	७ ८ ०
(२) नारियल	बम्बई	१॥ हंडरवेट	२१- ०-०	२५- ८-०	२७ ०-०	२७ ०-०	२४- ०-०
(३) तिल	,,	टन	३१५ ० ०	३२५- ० ०	३३५- ०-०	३२५- ० ०	३३० ०-०
५. सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरी	कलकत्ता	५ पौंड	६- ८-०	६ १०-०	६-१४-०	६ ६-०	६ १० ०
(२) २० ,,	,,	,,	८ ७ ६	८ ३ ०	८ ८ ०	[illegible] ६-०	८ १५-०
(३) ४० ,,	,,	,,	१२ ० ६	१२ ०-०	१२- ०-०	१२ ० ०	१२ ० ०
(४) सूत २० नम्बरी	बंगलोर	१ पौंड	१७ १० ६	१६ ११-०	१७- ४ ०	१७ ८ ०	१७ १०-०
६ नारियल की सुतली							
(१) अलनी अलारट	कोचीन	६ हंडरवेट की कैंडी	२५५- ०-०	२७५- ० ०	२७५- ०-०	२७३- ५-०	२७८ ५ ०
(२) अनजेंगो बढ़िया	,,	,,	२६५- ० ०	३१५- ० ०	३१५- ०-०	३१५- ०-०	३१५- ० ०

(न) नियन्त्रित मूल्य । * समायोजित मूल्य ।

के भाव : १५९४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०			
३०९- ०-०	२६५- ०-०	२७२- ०-०	२३५- ०-०	२२७- ०-०			
१८- ३ ०	१५- ६-०	१५-१२-०	१४- ०-०	१४- ०-०			
५९- ०-०	४९- ०-०	५१- ०-०	४३- ८-०	४३- ८-०			
६७- ८-०	६०- ८ ०	६१- ८-०	६४- ०-०	६७- ०-०			
६८- ■ ०	६०- ०-०	५७- ०-०	६०- ०-०	६५- ०-०			
६०- ०-०	५४- ८-०	५५- ०-०	५८- ८-०	६४- ०-०			
६६- ०-०	५६- ०-०	५६- ०-०	५३- ०-०	५३- ०-०			
२२७- ०-०	१८७- ०-०	२००- ०-०	१८०- ०-०	१७८- ०-०			
२१- ०-२	अप्राप्त	२०- ०-०	१६- ८-०	१५- ७-११			
४४- ८-०	३६- ०-०	३६- ८-०	३४- ८-०	३७- ० ०			
१५-१२-०	१२-१२ ०	१२-१४-०	१२ १२-०	१३ ०-०			
८ ८ ०	९- ०-०	८- ८-०	८ ०-०	८- ८-०			
२४- ०-०	२१- ०-०	२०- ०-०	१९- ०-०	२०- ०-०			
३४०- ०-०	३२०- ०-०	३३०- ०-०	३२०- ०-०	३२५- ०-०			
६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०			
९- ०-०	९-० -०	९- ०-०	९ ०-०	९- ०-०			
१२- ०-०	१२ ० -०	१२- ०-०	१२- ०-०	१२- ०-०			
१७-१२-०	१८- २-०	१७-१४-०	१७-१४-०	१७-१४-०			
२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२६५- ०-०	२८०- ०-०			
३०३- ५-०	२८८- ५-०	२८०- ० ०	२७४- ३ ०	३००- ०-०			

३. देश मे वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
७ लोहा और इस्पात			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
क कच्चा लोहा (न)							
(१) फाउ ड्री न० १	कलकत्ता पहुँचने पर	टन	१४३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०
(२) लोहा बेसिक	,,	,,	१२७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०
ख अर्द्ध शुद्ध (न)							
फिर गलाने के लिये टुकड़े	कलकत्ता	,,	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०
८ धातु (लोहे के अतिरिक्त)							
(१) जस्ता स्पेल्टर (बिजली वाला) मुलायम	,,	हण्डरवेट	५७ ८ ०	५४ ० ०	५३ ८ ०	५३ ० ०	५७ ८ ०
(२) पातल पीली धातु-सधान (ब्र सियर) ४"×४"	,,	,,	१५७ ८ ०	१४६ ४ ०	१५७-१२ ०	१६५ ० ०	१७७ ८ ०
(३) पातल की चादरें (गिलेयडस)	बम्बई	,,	१४८ ० ०	१४६ ० ०	१५५ ० ०	१५६ ० ०	१६० ० ०
(४) ताम्बे की चादरें (इण्डियन)	,,	,,	१६५ ० ०	१६५ ८ ०	२०२ ० ०	१६६ ० ०	२०१ ० ०
९ लकड़ी							
सागौन के गोल लट्ठे ५ फीट और उससे अधिक परिधि वाले	बल्लारशाह (दक्षिण चान्दा, मध्य प्रदेश)	घन फुट	२१ ० ०	२१ ० ०	११ ० ०	१२ ० ०	२१ ० ०

निर्मित वस्तुएं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ टेक्सटाइल							
क जूट का माल							
टाट							
(१) १०-१/२ औंस ४०"	कलकत्ता	१०० गज	४२ १४ ०	४७ १० ०	४८ २ ०	४६ ० ०	४५ १० ०
(२) ८ औंस ४०"	,,	,,	३३ ० ०	३७ १४ ०	३७ १२ ०	३७ ४ ०	३६ ० ०
बोरियाँ							
(१) बी टिवल	,,	१०० बोरियाँ	९२ २ ०	१०५ ८ ०	१०३ २ ०	१०८ ० ०	१०६ ० ०
(२) सी भारी बोरियाँ	,,	,,	९४ ८ ०	१०३ ० ०	१०४ ८ ०	११२ ८ ०	११८ ८ ०
ख सूती माल							
(१) कोरा कमीज का कपड़ा १२१ ३५"×३८ गज×७ पौंड	बम्बई	एक थान	१६ ३-८	१६ ३-८	१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६
(२) कोरा स्टैन्डर्ड कमीज का कपड़ा—३८ गज	,,	पौंड	२ ० ०	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १४ ७
(३) छींट ४५८८ ४३"×३८ गज	,,	एक थान	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२६ २ ०	२६ २ ०
(४) कोरी धोतियाँ मध्यम ४३"×१०/२ गज×२ ६/१६ पौंड	,,	एक जोड़ा	५ १४ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	६ ६ ०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०			
१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०			
१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०			
२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०			
५७- ८-०	५६- ८-०	५८- ८-०	५३- ८-०	६०- ०-०			
१७२- ०-०	१६७- ०-०	१६८- ०-०	१६३- ८-०	१६० -८-०			
१६४- ०-०	१६५- ०-०	१६०- ०-०	१५६- ०-०	१५४ -०-०			
२०१- ८-०	२०१- ८-०	१९६- ८-०	१९६- ८-०	२०० -०-०			
११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११ -०-०			
४५-१२-०	४६- ४-०	४७- ८-०	४७- ४-०	६४ -०-०			
३६- २-०	३७- ०-०	३७- ८-०	३६-१२-०	३८ -८-०			
११२-१४-०	११३- ६-०	१०९- ८-०	१०४-१२-०	११७ -८-०			
११५- ८-०	११४- ८-०	१११-१२-०	१०४- ८-०	११५ -०-०			
१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७ -३-६			
१-१४-७	१-१४-७	१-१४-७	१-१४-३	१-१४-३			
२६- २-०	२६- २-०	२६- २-०	२४-१५-०	२४-१५-०			
६- ८-०	६- ८-०	६- ८-०	६- ६-०	६ -६-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(५) रंगीन क्रेप—कमीज का कपड़ा एफ० एम०—१०५	मद्रास	गज	१- ० ६	०-१५-३	०-१५-६	०-१५-६	०-१५-६
(६) एम—५०१ ब्लीच किया मलमल ४८" × २०" गज	,,	२० गज	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०
ग. रेयन और रेशम का माल							
(१) टैफेटा कोरा २६—५०", ४—३/४ १ से ५ पौंड तक (रेयन)	बम्बई	गज	०- ७-३	०- ७-०	०- ८-३	०- ६-०	०- ६-६
(२) फूजी (असली रेशम)	,,	५० गज का थान	२७७- ०-०	अप्राप्य	३१०- ०-०	३४०-०-०	४००- ०-०
२. लोहे और इस्पात से निर्मित वस्तुएं (न)							
लोहे और इस्पात की पनालीदार चादरें-२४ गज	कलकत्ता	हंडरवेट	३४ ०-०	३४- ० ०	३४- ०-०	३४- ०-०	३५- ०-०
३. अन्य निर्मित वस्तुएं							
(क) सीमेंट (न)							
भारतीय (स्वस्तिक)	,,	टन	८२-१४-०	८२- ६-०	८२- ६-०	८७- ६-०	८७-१५-०
(ख) कॉच (खिड़कियों का)							
(१) बड़ा साईज३०" × २४" तक	,,	१०० वर्ग फुट	६०- ०-०	६०- ०-०	६०- ०-०	६० ०-०	६० ०-०
(२) मध्यम साईज	,,	,,	५५- ०-०	५३- ०-०	५३- ०-०	५५- ०-०	५५- ०-०
(ग) कागज							
सफेद छपाई, डिमाई १४ पौंड और ऊपर	,,	पौंड	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७	० १०-७	०-१०-०
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फटकरी	,,	हंडरवेट	१५- ०-०	१३- ०-०	१३ ०-०	१३- ०-०	१३- ०-०
(२) गंधक का तेजाब	,,	टन	२३५- ० ०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०
(ङ) रंग							
लाल सीसे का सूखा असली	,,	हंडरवेट	९०- ८-०	८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १६५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०			
०-१५-६	१- ०-०	१- ०-०	१- ०-०	१- ०-०			
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४ ०	१६- ४-०			
०-१०-०	०- ८-०	०- ८-०	०- ८-६	०- ८-६			
अप्राप्त	३४०- ०-०	३४०- ०-०	३१५- ०-०	३१५- ०-०			
३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ० ०	३५- ०-०			
८७-१५-०	८७-१५-०	८८- ०-०	८८ ५-०	८८- ५-०			
६०- ०-०	६५- ०-०	४५- ०-०*	४३ ०-०	४३- ०-०			
५५- ०-०	६०- ०-०	४३- ०-०*	४० ०-०	४०- ०-०			
०-१०-०	०१-०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७			
१३- ०-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०			
२३५- ०-१	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२२०- ०-०			
८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ० ०	८८- ०-०	८८- ०-०			

*२६-६-५४ को समाप्त होने वाले सप्ताह से भारतीय काच के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये काच के मूल्य दिये गये हैं।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत अंक में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहां दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अन्तिम नहीं मान लेना चाहिये। —सम्पादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेज़ी रूप
अग्नितापी तम्बाकू	Fire cured tobacco
अनाज से बनी वस्तुएं	Grain Preparations
आदेशाधीन	Under Orders
आधुनिकीकरण	Modernisation
आविष्कार	Invention
उत्पादनशीलता	Productivity
उधार देने की नीति	Lending Policy
एकस्व	Patent
कच्ची छपाई	Discharge Printing
कलम लगाने की प्रणाली	Vegetative Method
कोकोआ चूर्ण	Cocoa Powder
गिरी	Kernel
चाकलेट उद्योग	Chocolate Industry
चीरी हुई लकड़ी	Sawed Timber
चोकर	Bran
तनाव	Strain
तम्बाकू	Nicotiana Tobacum
दबाव	Stress
द्रव्य	Money
धूपतापी तम्बाकू	Sun Cured Tobacco
धूम्रतापी तम्बाकू	Flue Cured Tobacco
निरोधक	Anti
निर्देशाधीन	Under Instruction
नीलम	Sapphire
पक्की छपाई	Resist Printing
पट्टा	Lease
पट्टा उद्योग	Belting Industry
पन्ना	Emerald
परमादेश	Mandamus
पशुओं का उत्पादन	Animal Products
पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम	Mutual Security Programme (M.S.P.)
पुखराज	Topaz
पुनर्निर्माण	Reconstruction
पेचीदे	Intricate
पेटेन्ट	Patent
प्रत्यक्ष दायित्व	Direct Responsibility
प्रश्नावली	Questionnaire
फीरोज़ा	Turquoise
बिना जड़े	Unset
बिना तराशे	Uncut
मनोनीत	Nominate
माणिक	Ruby
मुक्त	Exempt
मूंगा	Coral
मैदा-सूजी	Fines
मोती	Pearl
युद्धकालीन अर्थ-व्यवस्था	War Economy
यूरोपीय पुनरुत्थान कार्यक्रम	Europeon Recovery Programme (E.R.P.)
रत्न	Precious Stones
रीति	Mode
लहसुनिया	Cat's Eye
लाल	Ruby
वर्षान्त	Close of year
वायुतापी तम्बाकू	Air Cured Tobacco
विचाराधीन	Under Consideration
विधि सम्मत	Lawful
वित्तीय सहायता	Finanacial Aid
विलायत	Wilaya. A light weight cloth in Sudan
विस्तार	Expansion
वैध	Legal
शान्तिकालीन अर्थ-व्यवस्था	Peace Economy
संक्रमण	Transition
संघर्ष	Friction
सुनहरी वार्निश	Lacquer
सिनेमा चित्र	Exposed Films
सम्भावनाएं	Prospects
हीरा	Diamond

उद्योग-व्यापार पत्रिका



वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

उद्योग-व्यापार पत्रिका

खण्ड ३] नई दिल्ली, नवम्बर १९५४ [अङ्क ५

निर्यात के महत्वपूर्ण आंकड़े—

★ गत महायुद्ध से पूर्व	६०० टन प्रति वर्ष
★ गत महायुद्ध के पश्चात	१५,००० टन प्रति वर्ष
★ वर्तमान निर्यात	१७,००० टन प्रति वर्ष

काली मिर्च का व्यापार बढ़ाया जाय

उपज बढ़ाने के लिये गवेषणा करने की आवश्यकता

भारत के निर्यात व्यापार में अब काली मिर्च का एक विशेष और महत्वपूर्ण स्थान बन गया है। अमेरिका इसे अच्छे परिमाण में खरीदता है और इस प्रकार इसके द्वारा हमें अधिक डालर प्राप्त करने में सहायता मिल रही है।

गत महायुद्ध से पहले इण्डोनेशिया और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों से यूरोप तथा अमेरिका को बहुत अधिक काली मिर्च भेजी जाती थी। परन्तु युद्ध के कारण वहां स्थिति सुधरने पर इण्डोनेशिया आदि से पुनः प्रतिस्पर्धा होने की सम्भावना है। अतः आवश्यकता यह है कि भारत में काली मिर्च के उत्पादन और वितरण की लागत घटाई जाय और माल की किस्म अच्छी रखी जाय और उसका वर्गीकरण तथा प्रतिमानीकरण भी किया जाय।

मसाला जांच समिति ने काली मिर्च की खेती तथा बिक्री व्यवस्था को सुधारने के लिये अनेक सिफारिशें की हैं जिनमें खाद का प्रयोग करने, अच्छी पौध देने और सहकारी ढंग पर संगठन करने के सुझाव प्रमुख हैं।

महायुद्ध के बाद मांग बढ़ी

गत महायुद्ध के पश्चात् काली मिर्च का भारत के निर्यात व्यापार में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। युद्ध से पहले इसका निर्यात नगण्य ही था। परन्तु युद्ध आरम्भ होते ही भारतीय काली मिर्च की मांग बढ़ने लगी। अमेरिका और यूरोप के देशों में यह मांग विशेषतः की गई। अब तो ये देश अपनी काली मिर्च सम्बन्धी अधिकांश आवश्यकता भारत से ही पूरी करते हैं। युद्ध से पहले जहां १,००० टन से भी कम निर्यात होता था वहां अब १५,००० टन के लगभग यह निर्यात होने लगा है। युद्धकाल में इण्डोनेशिया में काली मिर्च के बागीचों का भारी विनाश हुआ जिससे वहां से होने वाला निर्यात ६२,००० टन से घट कर केवल १०,००० टन रह गया। इसी प्रकार स्याम, बोर्नियो और हिन्दचीन में भी उत्पादन घट गया है जिसमें वहां ७५ प्रतिशत कम काली मिर्च पैदा हुई। इसके फलस्वरूप भी भारत की काली मिर्च की मांग बढ़ गई।

नीचे की दो तालिकाओं में मार्च १९५४ को समाप्त होने वाले तीन वर्षों में हुए काली मिर्च के निर्यात के मूल्य तथा परिमाण दिये गये हैं:—

निर्यात का परिमाण

(हजार हंड्रेडवेट)

देश	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४
अमेरिका	१५८ ४	१५६ ५	१२६ ८
ब्रिटेन	४३ ७	२३ ७	३० ४
कनाडा	११ ६	११ ७	१० ५
इटली	११ ६	१४ २	११ ६
सोवियत रूस	२३ १	७ ०	१६ ०
पश्चिमी जर्मनी	१० २	४ ६	नगण्य
फ्रांस	६ ८	४ ८	६ ६
मिस्र	२ ६	१ २	० १
योग (अन्य सहित)	२६८ ३	२५८ २	२४८ ३

निर्यात का मूल्य

(लाख रु० में)

देश	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४
अमरिका	१,४४० ६	१,०६४ ०	७३७ ३
ब्रिटेन	३४८ ४	१९६ ६	१४७ २
कनाडा	८५ ५	७५ ७	५६ ३
इटली	६५ २	८९ ४	५८ ६
सोवियत रूस	१६२ ७	१४ ७	६० ६
पश्चिमी जर्मनी	७५	८५	१ २
फ्रांस	५० ८	८ ०	३५ ३
मिस्र	४० ३	८ ६	१२ ४
योग (अन्य सहित)	२,२४४ ३	१,६०६ ५	१,२७१ ७

काली मिर्च त्रावनकोर, मलाबार और दक्षिण कनाडा जिले में ज्ञात नहीं कब से बोई जा रही है। इस समय यह पश्चिमी घाट की तराई में उपजती है। इसके अतिरिक्त मैसूर कुर्ग और बम्बई राज्यों के कुछ भागों में भी यह पैदा होती है। इधर आसाम के सिलहट जिले में और खासी पहाड़ियों में भी यह बोई जाने लगी है परन्तु व्यापारिक दृष्टि से अभी तक इसका कोई महत्व नहीं है।

काली मिर्च का पौधा एक बार पैदा होने के बाद २५ से ३० वर्षों तक बना रहता है। जिन बगीचों में इसकी अच्छी देखभाल की जाती है उनमें यह ६० वर्ष तक भी रह जाता है।

तैयार करने की विधि

काली मिर्च के पौधे में जुलाई के समय में फूल आने लगते हैं और फल जनवरी से लेकर मार्च तक पक कर तैयार हो जाते हैं। बोये जाने के बाद तीसरे वर्ष काली मिर्च का पौधा फलने लगता है। आरम्भ में इसमें कम फल लगते हैं परन्तु प्रतिवर्ष उनका परिमाण बढ़ता जाता है। छठे वर्ष से वे पूरी तौर पर फल देने लगते हैं। ये फल मटर के समान होते हैं।

इनसे काली मिर्च तैयार करने की विधि सरल है। फलों को तोड़ कर चटाई अथवा साफ फर्श पर फैला देते हैं। बाद में इन्हें हाथों से मल डालते हैं अथवा पैरों से कुचल डालते हैं। इस प्रकार फल अलग हो जाते हैं। सूख जाने पर इनका रंग काला पड़ जाता है और बाहर का छिलका सूखने पर सिकुड़ कर उस रूप का हो जाता है जिसमें काली मिर्च बाजार में बिकती है। इसके बाद इन्हें ५-६ दिन तक धूप में सुखाया जाता है।

इन्डोनेशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया के अन्य देशों में सफेद मिर्च भी व्यापार के लिये तैयार की जाती है। सफेद मिर्च भी काली मिर्च के पौधे से ही तैयार होती है। इसे तैयार करने के लिए फलों को तोड़ कर पानी में डाल देते हैं और बाद में उन्हें पैरों से कुचलते हैं जिससे उनके बाहर का छिलका उतर जाता है। इसके बाद उन्हें सुखा लिया जाता है और सफेद गोल मिर्च तैयार हो जाती है।

सफेद मिर्च बहुत कम परिमाण में तैयार की जाती है और व्यापार की दृष्टि से उसका बहुत कम महत्व है।

खेती की प्रणालियां

भारत में काली मिर्च की खेती करने की तीन प्रणालियां हैं। पहली प्रणाली के अन्तर्गत कम ऊंचाई वाली और तराई की भूमि में जंगल साफ करके विशाल परिमाण पर काली मिर्च की खेती की जाती है। यह प्रणाली त्रावनकोर कोचीन, मलाबार और दक्षिणी कनाडा में प्रचलित है। एक एकड़ में औसतन ३०० से ४०० बेल लगाई जाती हैं और प्रत्येक बेल से चौथाई पौण्ड से लेकर २ पौण्ड तक काली मिर्च उत्पन्न होती है। दूसरी प्रणाली के अनुसार पहाड़ियों की तलहटियों और तराई क्षेत्रों में अन्य पौधों के साथ काली मिर्च बोई जाती है। यह खेती प्रायः घरों के अहातों अथवा बाहरी भूभागों में की जाती है। इस प्रकार की खेती में काली मिर्च की बेलें जामुन, आम नारियल आदि के पेड़ों पर चढ़ा दी जाती हैं। इस प्रणाली से अभी बहुत थोड़ी खेती होती है परन्तु इसके बढ़ने की बहुत अधिक गुंजायश है। तीसरी प्रणाली के अन्तर्गत काली मिर्च को कॉफी, इलायची, नारंगियों आदि की सहायक उपज के रूप में पैदा किया जाता है। यह कुर्ग और मैसूर के कुछ भागों में प्रचलित है।

काली मिर्च की खेती का क्षेत्र

फसल के प्रकाशित अनुमानों के अनुसार १९५१-५२ में काली मिर्च की खेती का क्षेत्र १,६०,७३१ एकड़ था जिसमें से १,०२,५०० एकड़ मद्रास के मालाबार और दक्षिणी कनाडा के जिलों में और त्रावनकोर कोचीन राज्य में ५५,७२८ एकड़ थे। बम्बई कुर्ग और मैसूर में काली मिर्च का क्षेत्र केवल २,६०५ एकड़ था। कोरिया युद्ध के कारण हुई मूल्यवृद्धि को देखकर काली मिर्च की नयी बेलें सबसे लगाई गई हैं। त्रावनकोर-कोचीन मलाबार और दक्षिणी कनाडा के जिलों में घरों के अहातों आदि में बहुत सी बेलें लगाई गई जिनके फलस्वरूप अनुमान है कि काली मिर्च के क्षेत्र में ५ से १० प्रतिशत तक की

वृद्धि हो जाने का अनुमान है। मोटे अनुमान के अनुसार इस समय भारत में काली मिर्च के ७५० लाख पौधे हैं जिनमें से ७०० लाख पुरानी झाड़ियों के रूप में हैं और शेष नई बेलों के रूप में हैं जो युद्ध के पश्चात् लगाई गई हैं।

उत्पादन का रुख

भारत के विभिन्न राज्यों में १९५१ ५२ में काली मिर्च का कुल उत्पादन इस प्रकार हुआ :—

त्रावनकोर कोचीन	१२,००० टन
मदरास (मलाबार और दक्षिणी कनाडा)	९,००० टन
बम्बई (उत्तरी कनाडा) ...	१५० टन
कुर्ग	१५० टन
मैसूर और अन्य राज्य . .	नगण्य
योग	२१,३०० टन

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि भारत का काली मिर्च का उत्पादन, त्रावनकोर कोचीन और मदरास राज्यों में ही केन्द्रित है जहां १९५१ ५२ में कुल उत्पादन का ९८ प्रतिशत पैदा हुआ। त्रावनकोर कोचीन में सब से अधिक उत्पादन होता है जो कुल उपज का ५६ प्रतिशत है। इस राज्य के थोडूपुजा, मुवट्टूपुजा, वायकम, चेंगनाचेरी और मीनाचिल (पलाई) तालुकों में काली मिर्च सब से अधिक होती है। मदरास राज्य का स्थान उत्पादन में दूसरा है जहां कुल भारत की ४२ प्रतिशत काली मिर्च उत्पन्न होती है। मदरास राज्य में मलाबार जिले के उत्तरी तालुके और दक्षिण कनाडा जिले का होसदुर्ग तालुका काली मिर्च उत्पादन के प्रधान क्षेत्र हैं। इन दोनों राज्यों में छोटे छोटे बगीचों में उत्पादन होता है। इनमें से प्राय ६० प्रतिशत बगीचे एक एकड से भी कम के हैं। सिरसी, कुर्ग और मैसूर राज्य के मालनद क्षेत्र के कुछ भागों में भी काली मिर्च उत्पन्न होती है। परन्तु यहां का उत्पादन अपेक्षाकृत कम ही होता है। यह भारत की कुल उपज का मुश्किल से २ प्रतिशत होता है।

कोचीन से भारी निर्यात

युद्ध से पहले भारत ९०० टन काली मिर्च का निर्यात करता था। युद्ध के पश्चात् १९४८ ४९ में और १९४९-५० में १५,००० टन से भी अधिक का निर्यात हुआ। इस समय १२,००० टन निर्यात होता है।

विदेशों को काली मिर्च मुख्यत कोचीन के बन्दरगाह से भेजी जाती है। १९५१ ५० में केवल इसी बन्दरगाह से प्रायः १०,००० टन काली मिर्च का निर्यात किया गया। कोचीन बन्दरगाह का सुधार हो जाने के बाद पश्चिमी तट के अलप्पी, कालीकट, मंगलोर आदि अन्य बन्दरगाहों का महत्व घट गया है। युद्ध काल में बम्बई से भी काली मिर्च का निर्यात किया गया। बम्बई से जो माल भेजा गया वह अधिकांश में मलाबार और त्रावनकोर-कोचीन से ही आया था।

विदेशों के मुख्य बाजार

भारत की काली मिर्च का मुख्य बाजार अमेरिका है। युद्ध से पहले भारत की प्रायः ३० प्रतिशत काली मिर्च अमेरिका में खपती थी। युद्ध के बाद भारत से निर्यात ८७३ टन से बढ़कर ११,००२ टन हो गया। इसका भी ८८ प्रतिशत भाग अमेरिका को भेजा गया। १९५० ५१ में कुल निर्यात और भी बढ़कर १५,३६४ टन हो गया जिसका ६६.७ प्रतिशत अमेरिका को गया। युद्ध से पहले अमेरिका प्रायः २४,००० टन काली मिर्च का आयात करता था, जिसमें से अधिकांश इंडोनेशिया से आती थी। इस समय अनुमान है कि अमेरिका प्राय १४,००० टन का आयात करता है जिसमें से ५६.३ प्रतिशत भारत से आती है। भारत से काली मिर्च का अधिकांश निर्यात यद्यपि अमेरिका को ही होता है तथापि अभी इसे और भी बढ़ाया जा सकता है और इस प्रकार काली मिर्च हमारे लिये डालर प्राप्त करने का और भी बड़ा साधन सिद्ध हो सकती है। भारत की काली मिर्च के अन्य महत्वपूर्ण खरीदार ब्रिटेन, इटली, सोवियत रूस, मिस्र, अदन आदि हैं।

विदेशों को साधारणतः छटी हुई काली मिर्च ही भेजी जाती है। यह साफ, सूखी हुई और गर्द तथा धूल आदि से मुक्त होती है। इसमें खोखली और हल्की मिर्च बहुत कम होती है। अमेरिका तथा अन्य देशों को ऐसी ही छटी हुई किस्म की काली मिर्च भेजी जाती है।

द्वितीय महायुद्ध और विशेषत भारत का विभाजन होने के बाद से देश में खपने वाली काली मिर्च की किस्म बहुत घटिया हो गई है। इसकी खपत भी कम हो गई है। युद्ध से पूर्व जहां ९,००० से १०,००० टन तक काली मिर्च देश में खपती थी वहां अब (१९५१ ५२) में प्रायः ५,००० टन ही खपती है।

काली मिर्च भोजन का एक महत्वपूर्ण मसाला है। भारत में इसका प्रयोग अत्यन्त प्राचीन काल से होता आया है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद की अन्य औषधियों में भी यह प्रयुक्त होती है। अमेरिका में इसका आयात अधिकतर मास को पैक करने तथा डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने के लिये किया जाता है। भोजन में मिलाने के लिये इसे पीस कर खाने की मेज पर भी रखा जाता है।

काली मिर्च विकास कोष का प्रस्ताव

मसाला जांच समिति ने तो यह राय तक दी है कि केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि काली मिर्च उद्योग का वैज्ञानिक आधार पर विकास करने के लिये उपयुक्त उपाय करे। इसके लिये उसने यह सिफारिश की कि भारत सरकार को काली मिर्च विकास कोष स्थापित करना चाहिए। निर्यात शुल्क में से एक करोड रुपये अलग करके काली मिर्च के विकास पर व्यय करना चाहिए। यह विकास पौधे प्रदान करने की व्यवस्था करने, नये पौधे तैयार करने के लिये नर्सरियों की स्थापना करने, जड वाली कलमें देने, हानि वाली बेलों के बदले नई बेलें लगाने, इसकी खेती का विस्तार करने, कीटाणुओं और रोगों का नियन्त्रण करने, संग्रह की अच्छी व्यवस्था करने, वर्गीकरण के प्रतिमान निर्धारित करने, व्यवस्थित बिक्री की व्यवस्था करने

और उत्पादन, बिक्री आदि के विषय में आवश्यक जानकारी प्रदान करने आदि सभी के विषय में होगा।

समिति ने यह सुझाव भी दिया कि आरम्भ में केन्द्रीय सरकार को सम्बद्ध राज्य सरकारों से परामर्श करके भारत के काली मिर्च उद्योग का विकास करने के लिये एक दस वर्षीय योजना तैयार करनी चाहिए और इसे शीघ्रतापूर्वक कार्यान्वित करना चाहिए।

वैज्ञानिक ढंग से खेती होने की आवश्यकता

रिपोर्ट के अनुसार ऐसी गवेषणा होने की अत्यन्त आवश्यकता है जिसमें वैज्ञानिक प्रणाली अपना कर काली मिर्च की खेती का खर्च घटाया जा सके। इसके लिये यह सिफारिश की गई है कि त्रावनकोर कोचीन और मलाबार के मुख्य उत्पादक क्षेत्रों में दो प्रादेशिक उपकेन्द्र भी स्थापित किए जाय। यह भी बताया गया है कि आसाम की जलवायु मालाबार तट जैसी ही है, अतः आसाम के विभिन्न स्थानों में काली मिर्च की खेती को लोकप्रिय करने के लिये जांच की जानी चाहिए।

देश में खपत बढ़ाई जाय

कर्मचारियों तथा उपकरणों का व्यय घटाने के लिये गवेषणा के इन प्रादेशिक केन्द्रों तथा उपकेन्द्रों में अन्य मसालों तथा महत्वपूर्ण फसलों के विषय में भी यथा सम्भव गवेषणा की जानी चाहिए।

संसार की काली मिर्च सम्बन्धी मांग को पूरी तौर पर पूरा करने के लिये देश में काली मिर्च का उत्पादन बढ़ाना नितान्त आवश्यक है। युद्ध के बाद भाव चढ़ जाने पर भी काली मिर्च का उत्पादन क्षेत्र पर्याप्त नहीं बढ़ा है। देश में इसकी खपत बढ़ाने के लिए समिति ने ये सिफारिशें की हैं —(१) *काली मिर्च के सभी वर्तमान बगीचों में इसकी गहन* खेती की जाय, (२) सभी वर्तमान बगीचों से पुरानी हानिकारक बेलें उखाड़ कर नई बेलें लगाई जाय और (३) जहां कहीं भी सम्भव हो नये क्षेत्रों में काली मिर्च उगाने के प्रयत्न किये जाय।

केन्द्रीय सलाहकार समिति

प्रस्तावित दस वर्षीय योजना के अन्तर्गत विकास के जिन उपायों के अनुसार किये गये हैं उनका नियन्त्रण करने के उद्देश्य से समिति ने सिफारिश की है कि भारत सरकार को मसालों के विकास के लिए एक छोटी सी केन्द्रीय सलाहकार समिति बना देनी चाहिए। केन्द्रीय समिति की सहायता के लिये तीन प्रादेशिक सलाहकार समितियां होनी चाहिए जिनमें से एक त्रावनकोर कोचीन के लिए, दूसरी मलाबार और दक्षिणी कनारा के लिये और तीसरी मैसूर, कुर्ग और उत्तरी कनारा के लिये होनी चाहिए। प्रादेशिक समितियों में १० से अधिक व्यक्ति नहीं होने चाहिए जिन्हें राज्य सरकारें मनोनीत करें। ये व्यक्ति सरकारी कर्मचारियों, उत्पादकों, व्यापारियों और अन्य सम्बद्ध व्यक्तियों के प्रतिनिधि रूप होने चाहिए। सम्बद्ध प्रादेशिक सरकार का कृषि अथवा विकास सचिव इन समितियों का अध्यक्ष होना चाहिए। प्रादेशिक समितियों की बैठक ६ महीनों में एक बार होनी चाहिए और उन्हें अपने अपने क्षेत्रों में दस वर्षीय काली मिर्च योजना की प्रगति का सिंहावलोकन करके ऐसी समस्त योजनाओं के विषय में अपनी राय देनी चाहिए जिनका सम्बन्ध आयोजन, एकीकरण तथा विकास के विभिन्न उपायों के लिये रुपया निर्धारित करने से हो। दस वर्षीय योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने और उसके लिये दिये गये धन का उचित उपयोग करने का दायित्व तीन प्रादेशिक समितियों पर रहेगा।

काली मिर्च के तीन महत्वपूर्ण उत्पादक क्षेत्रों के लिये अलग अलग प्रादेशिक समितियां नियुक्त करने की सिफारिश का अभिप्राय यही है कि इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र समस्त स्थानीय साधनों का अच्छा कारगर उपयोग कर सके और हमारी अर्थ-व्यवस्था के इस महत्वपूर्ण अंग का विकास होने में जनता का भी सहयोग मिल सके।

नई बेलें लगाने का ढंग

काली मिर्च की जो बेलें बगीचों में लगाई जाती हैं वे बहुत प्रकार की होती हैं। प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अपनी स्थानीय किस्में होती हैं। काली मिर्च की बेल एक बार लगाने पर २० वर्ष तक चलती है। इस लिये इसकी पौध सदा अच्छे ढंग की लगाई जानी चाहिए और इसके लिये उत्पादक क्षेत्रों के विभिन्न स्थानों में बहुत सी नर्सरियां चालू करने की आवश्यकता है जहां से विश्वसनीय पौध पर्याप्त परिमाण में प्रदान की जा सकें। विकास समितियों को ऐसी पुरानी बेलें हटा देने का यत्न करना चाहिये जिनसे अब पर्याप्त फसल नहीं होती और नुकसान होता है। इनके स्थान पर ऐसी नई बेलें लगा दी जानी चाहिए जो वर्षभर नियमित रूप से फलती रहती हैं। यह काम ५ वर्ष में हो जाना चाहिए। साधारण कलम लगाने की अपेक्षा जड़ वाली कलम लगाने से बेल में फल जल्दी आने लगते हैं। इस लिए नर्सरियों से जड़ वाली कलमें देने का प्रबन्ध होना चाहिए। पुरानी बेलों के स्थान पर नई बेलें लगाने का काम विधि-पूर्वक होना चाहिए। प्रत्येक बगीचे में प्रतिवर्ष केवल पचमांश बेलें बदली जानी चाहिए। इस प्रकार ५ वर्ष में सभी बेलें नई हो जायगी और बीच में किसी भी समय फसल आनी बन्द भी नहीं होगी। इस के लिये उत्पादकों को पर्याप्त प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिये। यह सिद्ध किया जा चुका है कि काली मिर्च के बगीचों का उत्पादन, उपाय करने से बढ़ सकता है। अतः इसके लिये खाद आदि के उपयुक्त प्रयोग किये जाने चाहिये।

काली मिर्च में एक प्रकार का उड़नशील तेल भी होता है। इसे निकालने की विधि के विषय में भी जांच होनी चाहिए। परन्तु इस काम के लिए केवल वही काली मिर्च ली जानी चाहिए जिसका और कोई उपयोग न हो सकता हो।

सफेद मिर्च तैयार करने और उसे लाभप्रद ढंग से खपाने की सम्भावनाओं पर भी विचार करने की विशेष आवश्यकता है।

निर्यात बढ़ाने के यत्न

भारतीय काली मिर्च के मुख्य खरीदार अमेरिका और ब्रिटेन हैं। इन देशों में जिन अन्य देशों की काली मिर्च आती है उन्होंने अपने माल की खपत बढ़ाने के लिये वहां विशेष संगठन स्थापित कर रखे हैं। दूसरी ओर भारतीय खपत पुराने रिवाजों के अनुसार अपने भाग्य भरोसे होती चली आ रही है। समिति ने सिफारिश की है कि केन्द्रीय सरकार को न्यूयार्क और लन्दन में ऐसे निर्यात वृद्धि संगठन विशेषतः स्थापित करने चाहियें जिनका उद्देश्य भारतीय काली मिर्च और अन्य मसालों की खपत बढ़ाना हो। यह कार्य ऐसे ही अन्य संगठनों से सहयोग करते हुए किया जाय। न्यूयार्क में इस समय भारत की जिस निर्यात वृद्धि एजेन्सी का प्रधान कार्यालय है उसे ही अमेरिका, कनाडा और अमरीका महाद्वीप के अन्य देशों में खपत बढ़ाने का काम सौंप देना चाहिए। इसी प्रकार लन्दन में जो एजेन्सी है उसे ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों में यह खपत बढ़ाने का कार्य सौंपा जाना चाहिए।

सहकारिता से लाभ उठाया जाय

समिति के मतानुसार काली मिर्च की बिक्री में सरकारी संगठनों का अब तक कोई विशेष भाग नहीं रहा है। काली मिर्च को उगाने वालों में ६० प्रतिशत से भी अधिक व्यक्ति छोटे परिमाण पर यह काम करते हैं। ऐसी दशा में इसकी बिक्री को सहकारिता के ढंग पर आगे बढ़ाने में बड़ा लाभ हो सकता है। अतः मुख्य बाजारों में माल की बिक्री का प्रबन्ध करने के लिये उत्पादकों की सहकारी समितियां बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इन समितियों को धीरे धीरे संगठित करके जिला संगठन बनाने चाहियें और उन्हें फिर प्रादेशिक अथवा राज्य के संगठन के अन्तर्गत ले आना चाहिए। केन्द्रीय और राज्यों की सरकारों को ऐसी सहकारी समितियों के संगठन को प्रोत्साहन देना चाहिए और उनके संघों को निर्यात व्यापार में भाग लेने के लिये सब प्रकार की सुविधाएं देनी चाहिए। इन सुविधाओं में गोदामों आदि की व्यवस्था करने के लिए ऋण अथवा सहायता आदि सम्मिलित होनी चाहिए।

समिति ने जो अन्य सिफारिशें की हैं उनमें आंकड़े रखने की आवश्यकता, निर्यात योग्य माल का प्रतिमानीकरण, सौदों की शर्तें, छोटे उत्पादकों के लाभ के लिए बाजारों के नियमन, सड़क परिवहन का सुधार, महत्वपूर्ण राज्यों में बाजार की जानकारी देने की व्यवस्था आदि उल्लेखनीय हैं। आल इण्डिया रेडियो से प्रतिदिन बाजार की जानकारी का प्रसार किये जाने की भी सिफारिश की गई है।

★★★ देश में मूलभूत रासायनिक पदार्थों से दवाइयां बनाने का यत्न होना चाहिए

औषध-निर्माण को प्रोत्साहन दिया जाय

जांच समिति की रिपोर्ट प्रकाशित : महत्वपूर्ण सिफारिशें

देश में इस समय विदेशी औषधियों की भरमार है। इन पर नियन्त्रण रखना और देश में उनके निर्माण को प्रोत्साहन देना अत्यन्त आवश्यक है। इस समय देश में १६४३ कारखाने औषधियां तैयार करते हैं। इन के उत्पादन कार्य को ठीक ढंग से चलाना भी आवश्यक है। भारत सरकार ने औषधि निर्माण उद्योग की जांच करने के लिये जो समिति नियुक्त की थी उसने अपनी रिपोर्ट में बहुत सी महत्वपूर्ण सिफारिशें की हैं।

देश में घटिया और नकली औषधियों की रोकथाम के लिए जुर्माने और कैद के प्रस्ताव किए गए हैं।

औषधि निर्माण उद्योग को अच्छे आधार पर लाने के लिये आवश्यक गवेषणा और बिक्री व्यवस्था आदि के लिये भी अनेक सिफारिशें की गई हैं।

औषधियों की किस्म अच्छी रखने के यत्न हों

देश में औषध निर्माण उद्योग की जांच करने के लिये भारत सरकार ने मार्च १६५३ में एक समिति नियुक्त की थी। समिति को इस उद्योग की जांच करके ऐसे उपाय सुझाने का भी निर्देश दिया गया था जिनकी सहायता से इस उद्योग को अच्छे ढंग पर संगठित किया जा सके। समिति ने जांच करने के पश्चात् गत जून मास में अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को प्रस्तुत कर दी। चिकित्सा और स्वास्थ्य के भूतपूर्व डाइरेक्टर जनरल और हैदराबाद सरकार के चिकित्सा विभाग के वर्तमान सचिव मेजर जनरल एस० एल० भाटिया समिति के अध्यक्ष और डा० सी० शाह मन्त्री थे। इनके अतिरिक्त डा० के० वसुदेव राव, डा० बी० बी० दत्त, डा० बी० सी० घोष, डा० डी० एन० बनर्जी, डा० आर० सी० शाह, डा० डी० आर० शेषाद्रि, डा० एच० आर० नानजी, श्री के० आर० चन्द्रन, श्री पी० एम० नावार और डा० ए० नागराज राव सदस्य थे।

समिति ने समस्त स्थिति पर विचार करके बड़ी विशद रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसमें उसने ... सिफारिशें की हैं। संक्षेप में वे निम्न बातों से सम्बन्ध रखती हैं : औषध निर्माण उद्योग के क्षेत्र का विस्तार किया जाय। विदेशियों को इस उद्योग में किन सिद्धान्तों पर भाग लेने दिया जाय। औषधि अधिनियम और उसके अन्तर्गत बनाये गए नियमों में ऐसा संशोधन करना जिससे औषधियों की किस्मों का अच्छी तरह से नियन्त्रण किया जा सके। ये संशोधन इस अधिनियम तथा उसके नियमों सम्बन्धी प्रशासन का केन्द्रीकरण करने और औषध निर्माता कारखानों को लाइसेन्स देने से पूर्व उनके स्थान, उपकरण, परीक्षण सम्बन्धी सुविधाओं और प्रामाणिक कर्मचारियों के विषय में निश्चय कर लेने के विषय में होंगे। उद्योग (विकास और नियमन) अधिनियम में संशोधन किया जाय और उद्योग का ठीक ढंग से विकास करने और दोनों अधिनियमों के मध्य अधिक अच्छा एकीकरण करने के लिये विकास परिषद् स्थापित की जाय। गवेषणा और प्रशिक्षण की वर्तमान सुविधाओं में विस्तार किया जाय। औषधियों और औषधों के वितरण की वर्तमान व्यवस्था का संगठन किया जाय।

उद्योग का क्षेत्र

उद्योग के क्षेत्र के विषय में समिति का मत है कि औषध निर्माता कारखानों को केवल औषधों की गोलियां, टिकियां आदि ही नहीं बनानी चाहिए वरन् यह प्रबन्ध करना चाहिए कि मूलभूत रासायनिक पदार्थों आदि से उत्कृष्ट प्रकार की अधिक से अधिक औषधें तैयार की जाय। ये औषधें पर्याप्त परिमाण में तैयार की जानी चाहिये जिससे न केवल उन कारखानों की अपनी आवश्यकता ही पूरी हो सके वरन उन अन्य कारखानों को भी वे मिल सकें जो उनका प्रयोग करते हैं। समिति ने सिफारिश की है कि सरकार को अपने कारखानों में उत्कृष्ट रासायनिक पदार्थ और औषधियां तैयार करनी चाहिए। यदि गैर सरकारी प्रबन्ध द्वारा इन्हें तैयार न किया जा सके तो सरकार को अपने नए कारखाने इस कार्य के लिए खोलने चाहिए।

समिति ने यह भी सिफारिश की है कि सरकारी औषध संग्रह केन्द्रों

(गवर्नमेन्ट मेडीकल स्टोर्स डिपो) के निर्माण कार्य का नये सिरे से व्यापारी ढंग पर संगठन किया जाना चाहिए। इन केन्द्रों के संग्रह सम्बन्धी कार्य को राज्य सरकारों को सौंप देना चाहिए। यदि राज्य सरकारें इन्हें लेने में असमर्थ हों तो समिति के मत से इन्हें बन्द कर देना चाहिए। सरकारी कारखानों में आधुनिक ढंग की मशीनें लगाने और निर्माण की आधुनिक प्रणालियां चालू करने की भी सिफारिशें की गई है। समिति ने यह सुझाव भी दिया है कि कुनैन तथा मलेरिया नाशक अन्य औषधों का विदेशों से आयात घटा कर कुनैन बनाने वाले देशी कारखानों की सहायता करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त इन वस्तुओं पर सीमा शुल्क भी लिया जाना चाहिए।

पेनिसिलीन के कारखाने का विस्तार

समिति का यह भी सुझाव है कि पिम्परी में इस समय पेनिसिलीन का जो कारखाना बनाया जा रहा है उसमें और विस्तार किया जाय जिससे उसमें स्ट्रेप्टो-माइसिन, कैमीथिरापूटिक उत्पादन भी किये जा सकें। इनमें मलेरिया नाशक और सल्फा ड्रग तथा विटामिन बनाने का विशेषतः उल्लेख किया गया है। समिति ने सिफारिश की है कि या तो इस कारखाने में ही विस्तार कर दिया जाय अथवा देश की शेष आवश्यकता पूरी करने के लिये निजी व्यक्तियों को इन्हें तैयार करने की अनुमति दे दी जानी चाहिए।

बम्बई और मद्रास सरकारों के शार्क लीवर आयल के कारखानों के निर्माण और बिक्री व्यवस्था में एकीकरण का जो अभाव है, उसकी आलोचना करते हुए समिति ने कहा है कि इन कारखानों को अपने उत्पादनों के एक से प्रतिमान, पेकिंग और मूल्य तथा नाम रखने चाहिए।

मूलभूत रासायनिक पदार्थों का निर्माण

निजी क्षेत्र के विषय में समिति का कहना है कि विदेशी नियन्त्रण में चलने वाली अधिकांश फर्में भी मुख्यतः विदेशों से मगाई गई औषधियों से टिकिया, गोलियां, मरहम, इंजेक्शन आदि तैयार किया करती है। उनके इस काम में ऐसी कोई विशेष योग्यता अथवा अनुभव की आवश्यकता नहीं पड़ती जो देशी निर्माताओं में न हो। अतः समिति का मत है कि इन फर्मों को भी मूलभूत रासायनिक पदार्थों से आरम्भ करके विशाल परिमाण पर औषधें तैयार करनी चाहिए। यदि मूलभूत रासायनिक पदार्थों के निर्माण से काम आरम्भ न किया जा सके तो मध्यवर्ती अवस्था में उन वस्तुओं से निर्माण आरम्भ किया जाय जो मूलभूत रासायनिक पदार्थों के अत्यन्त निकट हों। इनके निर्माण की योजना ऐसी होनी चाहिए जिससे केवल अपनी ही नहीं वरन् वैसी ही अन्य फर्मों की आवश्यकताएं भी पूरी हो सकें। इन सभी विदेशी फर्मों के पास अपने देशों में आवश्यक अनुभव, पूंजी और गवेषणा के साधन उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से वे यहां के उत्पादन में होने वाली कठिनाइयां दूर कर सकती हैं।

कौन से कारखाने व्यापारिक दृष्टि से लाभजनक माने जा सकते हैं इस सम्बन्ध में समिति का कहना है कि मांग की कमी देखकर निर्माण कार्य निराश होकर बन्द नहीं कर देना चाहिए। यदि मांग कम हो तो भी निर्माण कार्य जारी रहना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह ऐसे कारखानों का विदेशी प्रतिस्पर्धा से तब तक संरक्षण करे जब तक कि देश में उनके उत्पादनों की मांग पर्याप्त बढ़ न जाय।

सरकारी विनियमन की आवश्यकता

समिति का मत है कि देश में अब किसी भी विदेशी फर्म को अपना कारखाना खोलने की अनुमति तब तक नहीं देनी चाहिए जब तक कि वह नई औषधियां अथवा वे औषधियां बनाने का वचन न दे जो अन्य कारखानों में पर्याप्त परिमाण में नहीं बनाई जातीं। प्रतिस्पर्धा को बनाने के लिये सरकार को किसी एक ही औषधि के निर्माण की अनुमति अनेक फर्मों को नहीं देनी चाहिए। कुछ भारतीय और विदेशी फर्मों और विदेशी फर्मों की भारत स्थित शाखाओं अथवा उप-कार्यालयों तथा उनके अपने देशों में स्थित मुख्य कार्यालयों के मध्य हुए करारों का विश्लेषण करने के पश्चात समिति का कहना है कि इन करारों में भिन्न-भिन्न प्रकार की शर्तें रखी गई हैं और कोई स्पष्ट निर्देशक सिद्धान्त नहीं रखे गये हैं। समिति ने कुछ ऐसे मोटे सिद्धान्त भी निर्धारित किये हैं जिनके अनुसार विदेशी फर्मों को औषधि निर्माण उद्योग में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। सरकार को वर्तमान करारों की जांच करनी चाहिए जिससे उन्हें इन सिद्धान्तों के अनुरूप बनाया जा सके।

निश्चित प्रतिमान से घटिया औषधियां न बन सकें इस लिये समिति ने औषध निर्माता कारखानों के लिये न्यूनतम आवश्यक स्थान, उपकरण और योग्य कर्मचारियों के विषय में भी निश्चय कर दिया है। उसकी सिफारिश है कि कारखानों के उपकरणों और कर्मचारियों की योग्यताओं की जांच होनी चाहिए और यदि वे उचित समय के भीतर आवश्यक शर्तें पूरी न करें तो उनके लाइसेंस छीन लेने चाहिए।

पेटेन्ट कानून

पेटेन्ट कानून के विषय में समिति ने कहा है कि इसके कारण भारत में कृत्रिम औषधि निर्माण उद्योग के विकास में बाधा पड़ती है। प्रायः सभी औषधों के पेटेन्ट विदेशी फर्मों के पास हैं जो या तो उनके अनुसार भारत में निर्माण कार्य होना स्वीकार ही नहीं करतीं अथवा भारी रायल्टी लेकर ही अनुमति देने को तैयार होती हैं। सरकार से इस विषय में विचार करने का अनुरोध किया गया है कि क्या अन्तर्राष्ट्रीय पेटेन्ट विनियमों को रद्द किया जा सकता है जिससे देश में सल्फा ड्रग्स, विटामिन, होरमोन्स आदि आवश्यक औषधों का निर्माण विदेशी फर्मों को भारी रायल्टी दिये बिना ही किया जा सके।

समिति ने यह भी कहा है कि औषधि बनाने वाले १६४३ कारखानों में से १,५६८ छोटे परिमाण पर चलते हैं। इनमें से बहुत से अस्वास्थ्यकर स्थानों पर स्थित हैं और उनके उपकरण पुराने ढंग के तथा अपर्याप्त हैं। अधिकांश का निर्माण कार्य शिक्षित और प्रामाणिक कर्मचारियों की देख-रेख में नहीं होता। इनके पास कच्चे माल अथवा तैयार वस्तुओं की

किस्मों की परीक्षा करने के लिए कोई प्रयोगशालाएं भी नहीं हैं। इसलिए समिति ने यह सिफारिश की है कि जो कारखाने समिति द्वारा निर्धारित स्थान, उपकरण और कर्मचारियों विषयक न्यूनतम शर्तें पूरी न करें उनके लाइसेन्स रद्द कर के उन्हें बन्द कर देना चाहिए। जिन फर्मों की दशा अच्छी हो उन्हें इसका प्रबन्ध कर लेने के लिये एक वर्ष का समय देना चाहिए। समिति ने यह भी सुझाव दिया है कि जो फर्में उक्त शर्तों को अलग अलग पूर्ण करने में असमर्थ हों उन्हें चाहिए कि वे आपस में मिलकर सहकारी आधार पर इनके पूर्ण करने का प्रबन्ध करें।

कच्चे माल का प्रबन्ध

उद्योग को कच्चा माल मिलने के प्रश्न पर समिति ने कहा है कि जहां कहीं कच्चे माल के साधन उपलब्ध होते हैं वहां भी कच्चे माल को इकट्ठा करने, संग्रह करने और उसकी बिक्री की व्यवस्था करने के उचित साधन उपलब्ध न होने के कारण यह उद्योग को नहीं मिल पाता। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं सरकार द्वारा आय तथा अन्य उद्देश्यों से उसकी प्राप्ति पर कड़ा नियन्त्रण किये जाने के कारण उसके उद्योग तक पहुँचने में बाधा पड़ती है।

औषधि तैयार करने के पौधों के इकट्ठा करने, संग्रह करने और उनकी बिक्री व्यवस्था करने के लिये संगठन स्थापित होने की आवश्यकता है। केन्द्र तथा राज्यों को इन पौधों की उपज बढ़ाने के लिये प्रोत्साहन देना चाहिए। इन्हें वैज्ञानिक ढंग से पैदा करना चाहिए और इनके पर खेती कार्य के लिये अनुदान दिये जाने चाहिए। विभिन्न राज्यों और अन्य संगठनों द्वारा औषधियों के पौधों की खेती के एकीकरण के लिये भी एक संगठन का सुझाव दिया गया है।

उद्योग को इथाइल एलकोहोल प्राप्त करने में जो कठिनाई हो रही है उसके लिये समिति ने सिफारिश की है कि उत्पादन कर सम्बन्धी विशेष समिति ने जो सिफारिशें की हैं उन्हें तत्काल ही कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

तारकोल के उत्पादनों की प्राप्ति में सुविधा करने की दृष्टि से समिति ने अनेक उपाय सुझाये हैं। वे इस प्रकार हैं (१) तारकोल को शोधक कारखानों तक ले जाने के लिये तेल टोन वाले यान दिये जायें, (२) कोक भट्टी वाले कारखानों के लिये बेंजल का उत्पादन भी अनिवार्य कर दिया जाय, (३) बेंजोल पर से उत्पादन कर हटा दिया जाय, (४) इस्पात के कारखानों द्वारा उनकी भट्टियों में तारकोल का जलाया जाना बन्द कर दिया जाय, और (५) सरकार द्वारा तारकोल के उत्पादन तैयार किये जायें जिन्हें निजी कारखाने तैयार नहीं करते।

मेथाइल एलकोहोल पर लगे हुए प्रतिबन्धों को हटाने की भी समिति ने सिफारिश की है, जिससे देश में कृत्रिम औषधि उद्योग का विकास होने में सहायता मिल सके और गवेषणा तथा परीक्षणशालाओं में भी यह काम में लाया जा सके।

उद्योग को पशुओं की जिन ग्रंथियों (Glands) और अङ्गों की आवश्यकता होती है उन्हें उपलब्ध करने के लिये समिति ने सुझाव दिया है कि मसाली समिति ने बम्बई राज्य के कसाईखानों में और विशेषतः काटे जाने वाले पशुओं की ग्रंथियों और अंग सुरक्षित करने की उनमें जो व्यवस्था है उसे उन्नत करने सम्बन्धी जो सिफारिशें की हैं वे कार्यान्वित होनी चाहिए। देश के अन्य कसाईखानों में भी यह प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

आवश्यक औषधियों का उत्पादन

समिति ने कुछ ऐसी आवश्यक औषधियों की सूची तैयार की है जिनके उत्पादन को प्रोत्साहन देना चाहिए। साथ ही यह भी सुझाव दिया है कि विशेषज्ञ द्वारा इनकी अधिक व्यापक सूची तैयार की जानी चाहिए। इन विशेषज्ञों में चिकित्सकों, निर्माताओं और सरकार के प्रतिनिधि होने चाहिए। समय-समय पर इस सूची में संशोधन भी होते रहने चाहिए। इन औषधियों की देश में कितनी मांग हो सकती है उसके मोटे अनुमान भी समिति ने दिये हैं।

देश में आवश्यक औषधियों के निर्माण को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए कच्चे माल, आवश्यक मशीनों और वैज्ञानिक उपकरणों के आयात शुल्क में कमी करने के भी सुझाव दिये गये हैं।

औषधियों के वर्तमान नियन्त्रण के दोष दूर करने और तैयार औषधों के प्रतिमानों में एकरूपता लाने की दृष्टि से समिति ने सिफारिश की है कि औषधि अधिनियम (Drugs Act) के प्रशासन को केन्द्र के अधीन कर देना चाहिए और इस समय राज्यों के औषधि नियन्त्रक निर्माण, बिक्री और वितरण का जो नियन्त्रण करते हैं वह औषधि नियन्त्रक (भारत) के अधीन कर देना चाहिए। केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय के अधीन एक औषधि नियन्त्रण विभाग भी खोला जाना चाहिए।

औषधि अधिनियम का संशोधन

घटिया और नकली औषधों के निर्माण को रोकने के लिए परीक्षण की सुविधाओं की व्यवस्था का सुझाव देते हुए औषधि अधिनियम और उसके अधीन बनाये गये नियमों में अनेक संशोधन किये जाने की सिफारिशें की गई हैं। इसके लिए "निर्माता" और "औषधि" की नयी परिभाषाएं की गई हैं। गुप्त नुस्खे वाली औषधों की बिक्री की अनुमति न देने, नकली और घटिया औषधों को बनाकर बेचने के लिए कड़े जुर्माने और कड़ी कैद करने, अपराधी के नाम और पते का प्रचार कर देने और उसका लाइसेन्स रद्द कर देने, नकली दवाई का रखना भी जुर्म करार देने, जिला मजिस्ट्रेट की अनुमति लिये बिना नकली दवाइयों की तलाशी लेने के इन्सपेक्टर को अधिकार देने की सहायता की भी सिफारिशें की गई हैं। इनके अतिरिक्त औषधि नियमों में कारखानों के स्थान, उपकरण और प्रमाणिक कर्मचारी रखने आदि तथा औषधों के आयात, निर्माण और बिक्री पर लाइसेन्स शुल्क लेने और कच्चा औषध बेचने वालों को भी लाइसेन्स देने की व्यवस्था करने के संशोधन सुझाये गये हैं।

कलकत्ते की औषधि प्रयोगशाला के कर्मचारियों के वेतनों में वृद्धि करने और देश में अधिक परीक्षण प्रयोगशालाएं खोलने की भी सिफारिशें की गई हैं।

औषधि निर्माण विकास परिषद

समिति ने उद्योग (विकास और नियमन) अधिनियम में भी कई संशोधन करने की सिफारिशें की हैं जिनसे छोटे कारखानों के विकास का नियमन किया जा सके और वर्गीकरण की संशोधित प्रणाली के अनुसार औषधियों और औषधों के उत्पादन को लाइसेन्स प्रणाली के अन्तर्गत ले आया जाय। औषधों और औषधियों के लिये एक विकास परिषद बनाने की भी सिफारिश की गई है। यह परिषद उद्योग के विकास को युक्तियुक्त ढङ्ग पर चलायेगी और समिति की सिफारिशों को कार्यान्वित करायेगी।

विश्व विद्यालयों, सरकारी संस्थाओं और व्यापारी फर्मों द्वारा इस सम्बन्ध में इस समय जो गवेषणा कार्य हो रहा है उसके विस्तार और एकीकरण के लिये भी समिति ने सिफारिश की है। समिति का मत है कि इधर बड़ी तेजी के साथ नये प्रकार की बहुत-सी दवाइयां बाजार में आई हैं और उनका जो प्रभाव होता है उसकी परीक्षा नहीं की जा सकी है। अत एक ऐसा विशेषज्ञ मण्डल नियुक्त किया जाना चाहिए जो नई औषधियों के विषय में समय-समय पर सूचित करता रहे। ये सूचनाएं प्रकाशित की जानी चाहिए। इनके प्रयोग की व्यवस्था भी होनी चाहिए। सैनिक अस्पतालों और डाक्टरी की शिक्षा देने वाली संस्थाओं के साथ सलग्न अस्पतालों में इनके प्रयोग विशेषत. करके देखने चाहिए।

वितरण कार्य

वितरण के विषय में समिति का सुझाव है कि उचित मूल्य प्रणाली लागू की जानी चाहिए जिसके अन्तर्गत एक ऐसे सगठन द्वारा प्रत्येक औषधि और दवाई की बिक्री के मूल्य निर्धारित कर देने चाहिए। यह निर्धारण कार्य एक सगठन को सौंपा जाय जिसमें सरकार और व्यापारियों दोनों के ही प्रतिनिधि रहें। थोक बिक्री के मूल्य ऐसे रहें जिनसे खुदरा विक्रेताओं को भी उचित लाभ मिल जाय। उचित मूल्य से भी सस्ते दामों पर बेचने की प्रवृत्ति रोकी जानी चाहिए।

हाल में ही जो विज्ञापन विधेयक पास हुआ है उसमें झूठे विज्ञापन-दाताओं के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिये अधिकारियों को पर्याप्त अधिकार मिल गये हैं। परन्तु समिति की सिफारिश है कि पत्रों और विशेषतः देशी भाषाओं के पत्रों को ऐसे विज्ञापन न प्रकाशित करने की प्रथा बना लेनी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो सरकार की ओर से भी इन्हें रोकने के लिये कार्रवाई होनी चाहिए।

समिति ने इस बात पर बल दिया है कि औषधि उद्योग और चिकित्सकों के मध्य अच्छा सहयोग होना चाहिए जिससे जनता देश में बनी औषधियों पर विश्वास करने लगे। दोनों को मिलकर ऐसी परीक्षण शालाएं स्थापित करनी चाहिए जो नई दवाइयों की परीक्षा करके प्रमाण पत्र दें।

समिति का मत है कि इस समय देश में विदेशों से आई हुई आवश्यकता से अधिक औषधियां भरी पड़ी हैं। बेकार औषधियों के आ जाने से हमारी विदेशी विनिमय की व्यवस्था पर भार पड़ता है। अत विशेषज्ञों की एक समिति द्वारा आवश्यक औषधियों की सूची बनाई जानी चाहिए जिसकी सहायता से देश में औषधियों के उत्पादन और आयात का नियमन किया जा सके। इधर तैयार दवाइयों की भरमार हो जाने से डाक्टरों द्वारा नुसखा लिखने की कला को धक्का लग रहा है। यदि यह प्रवृत्ति बढ़ती ही गई तो फिर डाक्टर केवल बनी बनाई दवाइयों का ही प्रयोग करने लगेंगे।

समिति का यह भी मत है कि औषधि देने का कार्य केवल फारमेसी वालों का होना चाहिए। एक व्यक्ति की या तो डाक्टर के रूप में रजिस्ट्री करनी चाहिए या फारमेसी वाले के रूप में, दोनों के रूप में कभी नहीं। डाक्टर अपने रोगियों के लिये दवा बनाकर दे सकते हैं। इस कार्य के लिये उन्हें प्रमाणित योग्यता वाले व्यक्ति रखने चाहिए। फारमेसी चलाने के काम को सम्मान पूर्ण माने जाने की आवश्यकता पर समिति ने बल दिया है और इस कार्य को करने वालों के लिये शिक्षण व्यवस्था के लिये सिफारिश की है। फारमेसी अथवा औषधि निर्माण की शिक्षा देने के लिये प्रत्येक राज्य में और एक केन्द्रीय शिक्षण शाला स्थापित होनी चाहिए और फारमेसी अधिनियम समस्त देश में लागू कर दिया जाना चाहिए।

संसद का विगत अधिवेशन

कपड़ा और जूट उद्योगों का युक्तियुक्त संगठन

उद्योग और व्यापार सम्बन्धी अनेक विधेयक और प्रस्ताव

संसद के गत अधिवेशन में, जो ३० सितम्बर १९५४ को समाप्त हुआ, व्यापार और उद्योग के सम्बन्ध में अनेक विधेयक, प्रस्ताव आदि पास किये गये। भारतीय सीमाशुल्क (द्वितीय संशोधन) विधेयक, आयकर संशोधन विधेयक आदि इनमें मुख्य हैं।

रबड़ (उत्पादन और बिक्री व्यवस्था) संशोधन विधेयक और कारखाना व्यापार विस्तार (संशोधन) विधेयक विषयक प्रवर समिति की रिपोर्टें संसद में उपस्थित की गईं।

कपड़ा और जूट उद्योग का युक्तियुक्त संगठन करने के पक्ष में एक प्रस्ताव पास किया गया। वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री टी॰ टी॰ कृष्णमाचारी ने इस प्रकार संगठित कारखानों पर एक कर लगाने का सुझाव उपस्थित किया जिससे इस सम्बन्ध में बेकार हो जाने वाले मजदूरों की सहायता दी जाय।

चालू वित्तीय वर्ष के लिये ३१५.६१ करोड़ रु० की पूरक मांगें भी स्वीकार की गईं।

जूट, रुई और खाद्य पदार्थों का नियन्त्रण अधिकार

संसद का गत अधिवेशन २३ अगस्त से आरम्भ होकर ३० सितम्बर १९५४ को समाप्त हो गया। इसमें संविधान (तीसरा संशोधन) विधेयक पास किया गया। इसके द्वारा संविधान की सातवीं अनुसूची में दी गई विषय सूची में संशोधन करके केन्द्र को जूट, रुई, खाद्य पदार्थ आदि के नियन्त्रण के अधिकार दिये गये हैं।

भारतीय सीमाशुल्क (द्वितीय संशोधन) विधेयक—इस विधेयक द्वारा आयात की २६ मदों का शुल्क बढ़ाने का प्रस्ताव किया गया है। इसे भी गत अधिवेशन में संसद ने पास कर दिया। बढ़े हुये शुल्क ११ सितम्बर १९५४ से लागू हो गए हैं। जिन वस्तुओं के शुल्क बढ़े हैं उनमें पेंसिलें, अलमारी की रद्दा, शराबें, ऊनी कपड़ा, सफ्टी रेजर के ब्लेड आदि प्रमुख हैं। इस प्रकार ४.५ करोड़ रु० की अधिक आय होगी।

इस विधेयक द्वारा सीमाशुल्क कमीशन के परामर्श से कुछ उद्योगों का संरक्षण बनाये रखा जायगा और कुछ का समाप्त कर दिया जायगा। जिनका संरक्षण जारी रहेगा वे ये हैं संरक्षित फल, कोकोआ चूर्ण और चाकलेट, बाइक्रोमेट, फोटोग्राफी के रासायनिक पदार्थ, सूत और माला के पट्टे, कांच की चादरें, अलौह धातुएं, अलूमीनियम, एण्टीमनी, बिजली के मोटर, बाल बेयरिंग, प्लास्टिक, बिजली की बत्तियों के पीतल के दस्ते, बाइसिकिल उद्योग।

१ जनवरी १९५५ से हरीकेन लालटेनों का संरक्षण समाप्त हो जायगा।

आयकर अधिनियम संशोधन विधेयक

यह विधेयक भी पास हो गया। इसके द्वारा उन व्यक्तियों की आय पर कर लगाया जा सकेगा जो पिछली अवधि में आयकर से बच गये हैं। ऐसे मामलों को निबटाने की प्रणाली भी विधेयक में दे दी गई है।

कर सम्बन्धी कुछ कानूनों को जम्मू और कश्मीर में भी लागू करने विषयक एक विधेयक भी पास किया गया। इसके द्वारा आयकर, सीमाशुल्क और उत्पादन कर सम्बन्धी भारतीय कानूनों को आवश्यक परिवर्तनों के साथ राज्य में लागू किया गया है। मार्ग सिगरेट पर जम्मू और कश्मीर की सरकार ही १० वर्ष तक शुल्क लेती रहेगी।

मशीन से बनी बीड़ियों पर कर

मशीन से बनने वाली बीड़ियों पर ० जुलाई १९५४ को एक अध्यादेश निकाल कर ३ रु० प्रति हजार का उत्पादन कर लगाया गया था। इस अध्यादेश के स्थान पर केन्द्रीय उत्पादन कर और नमक (संशोधन) अधिनियम पास किया गया।

प्रश्नोत्तरों द्वारा भी संसद में बहुत सी व्यापार और उद्योग सम्बन्धी जानकारी उपस्थित की गई।

३१ मार्च १९५६ को लोहा और इस्पात नियन्त्रण समायोजन कोष में १३,४७,६७,६४० रु० थे। सरकार ने इसके आधार पर ताता आयरन

एण्ड स्टील कम्पनी और इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी को क्रमशः दस दस करोड़ रु० का ऋण देना स्वीकार कर लिया है। इन ऋणों पर १ जुलाई १९५८ तक कोई व्याज नहीं लिया जायगा। बाद को व्याज की दर और वापसी का ढंग सीमाशुल्क कमीशन के परामर्श से तय किया जायगा।

कपड़ा मिलों में चार करघे की प्रणाली

चार करघा की प्रणाली कई वर्षों से धीरे धीरे कुछ मिलों में चालू की जा रही है। इस समय बम्बई औद्योगिक सम्बन्ध अधिनियम के अधीन ६ मिलों में यह प्रणाली चालू की जा रही है। अहमदाबाद में मालिकों और मजदूरों के संगठनों में इस चालू करने के विषय में समझौता हो चुका है। बम्बई में इसके कारण १६०० कम मजदूरों की आवश्यकता होगी परन्तु इस कारण किसी मजदूर को निकाला नहीं जायगा। अहमदाबाद में जो मजदूर बेकार होंगे वे तीसरी पाली में लग जायेंगे।

खेल के सामान का उद्योग

भारत में इस उद्योग के आगे मुख्य कठिनाइयां शहतूत की लकड़ी और शिक्षित कारीगरों की हैं। इन्हें दूर करने के लिये पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के वन विभागों ने शहतूत के पेड़ लगाने आरम्भ किये हैं। अंग्रेजी शहतूत की लकड़ी का आयात खुले सामान्य लाइसेन्स द्वारा करने की अनुमति दे दी गई है।

मेरठ में उत्तर प्रदेश की सरकार ने खेल का सामान बनाने की शिक्षा देने के लिये एक क्लास खोला है। नैनीताल में इसके उत्पादन का एक नया केन्द्र खोला गया है।

पश्चिमी बंगाल की सरकार ने कारीगरों को शिक्षा देने और खेल का सामान बनाने का केन्द्र खोलने का निश्चय किया है। भारत सरकार ने उसे १९५३-५४ में इसके लिये ६८,४५० रु० की सहायता दी है।

इसके अतिरिक्त अन्य सामान का आयात करने में सहायता दी जाती है। फुटबाल आदि में प्रयुक्त होने वाले चमड़े के लिये जालन्धर का चमड़ा कमाने की शाला में गवेषणा की जा रही है। अच्छा चमड़ा उपलब्ध करने की भी एक योजना है। खेल का सामान वाले धन की सहायता के लिये राज्य सरकारों से मांग कर सकते हैं।

देश में अभ्रक का बहुत कम उपयोग होता है। प्रायः सभी अभ्रक विदेशों को भेज दिया जाता है। अभ्रक सलाहकार समिति ने सिफारिश की है कि टूटा हुआ अभ्रक रसायन और प्लास्टिक उद्योगों में प्रयुक्त किया जाय। केन्द्रीय कांच और सिरेमिक गवेषणाशाला से इस सम्बन्ध में आवश्यक अनुसन्धान करने को कहा गया है।

हाथ का बना कागज

१९५४-५५ में २८ नये केन्द्रों में हाथ से कागज बनाने का प्रबन्ध किया जायगा। इस प्रकार ऐसे केन्द्रों की कुल संख्या ४५ हो जायगी। कागज की किस्म को प्रतिमानित किया जायगा और उच्चकोटि का कागज बनाने के लिए कारीगरों को शिक्षा दी जायगी। उपकरण खरीदने, शिक्षा देने और गवेषणा कार्य के लिये अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड को धन दिया जा रहा है।

१९५३-५४ में सरकार ने तैयार किये गये १२७ टन हाथ के कागज में से ४५॥ टन खरीदा जिसका मूल्य २,१३,६७३ रु० था।

भारतीय लाख उपकर समिति ने सिफारिश की है कि लाख के वायदे के सौदों का नियन्त्रण होना चाहिए और भारत से लाख की कलमों के निर्यात का भी नियमन होना चाहिए। फारवर्ड मार्केट कमीशन इस सम्बन्ध में विचार कर रहा है और उसकी एक अन्तरिम रिपोर्ट सरकार के पास आ गई है।

अखबारी कागज का निर्माण

मध्य प्रदेश में नेपा मिल्स पर अनुमानतः ५५७.५ लाख रु० की लागत आयगी। आशा है कि यह मिल इस वर्ष के अन्त होने तक साधारण देशी लुग्दी तथा विदेशों से आई रासायनिक लुग्दी से अखबारी कागज बनाने लगेगी। यह मिल बांस और सलाई की लकड़ी से कागज बनायेगी जो मध्य प्रदेश में उपलब्ध है। परन्तु कास्टिक सोडा, सोडा ऐश, तरल क्लोरीन आदि बाहर से मंगाने पड़ेंगे।

करघे का कपड़ा

राज्य सरकारों से करघे के कपड़े के उत्पादन विषयक आंकड़े एकत्रित करने की व्यवस्था करने को कहा गया है। करघे के कपड़े का अनुमानतः उत्पादन इस प्रकार है —

१९५१	८,४३० लाख गज
१९५२	११,०८० लाख गज
१९५३	१२,००० लाख गज
१९५४	६,३०५ लाख गज

(जनवरी से जून)

इसका निर्यात बढ़ाने के लिये भी अनेक उपाय किये जा रहे हैं।

दिसम्बर १९५३ से जून १९५४ तक की अवधि में नीचे लिखी वस्तुएं रूस से भारत आई :—

दूरबीनें, सिनेमा चित्र दिखाने के यन्त्र और ध्वनि आलोकक यन्त्र, सिनेमा के चित्र, रंग और अखबारी कागज।

पेंसिल उद्योग

देश में प्रतिवर्ष लगभग ६,००,००० ग्रोस पेंसिलों की आवश्यकता होती है। १९५३ में लगभग १,६१,००० ग्रोस पेंसिलें देश में बनाई गई। पेंसिल निर्माताओं को नीचे लिखी सुविधाएं दी जाती हैं :—

(१) निर्माताओं को अच्छी किस्म का कच्चा माल जैसे सुरमा, लकड़ी आदि का आयात करने की अनुमति दी जाती है।

(२) सस्ती मेल की पेंसिलों की आयात नीति का नियमन करके उद्योग को प्रोत्साहन देने का यत्न किया जाता है।

[शेष पृष्ठ ३४६ पर]

★ अधिक अनाज ★ अधिक कपड़ा ★ अधिक बिजली ★ अधिक लोहा

देश की अर्थ-व्यवस्था में बहुमुखी उन्नति

पंचवर्षीय योजना की तीन वर्षों की प्रगति का विवरण

प्रथम पंचवर्षीय योजना के अनुसार उसके पहले तीन वर्षों में जो कार्य हुआ है उससे देश की अर्थ व्यवस्था को निश्चित रूप से लाभ पहुंचा है। १९४९-५० की अपेक्षा १९५३-५४ में [illegible] लाख टन अधिक अनाज उत्पन्न हुआ।

सरकारी क्षेत्र के उद्योग में अच्छी उन्नति हुई है। निजी क्षेत्र के उद्योगों में सूती कपड़ा, सीमेण्ट, सोडा ऐश, कास्टिक सोडा, रासायनिक खाद, सिलाई की मशीनों इत्यादि का उत्पादन काफी बढ़ा है।

सिंचाई और बिजली योजनाएं पूर्ण हो जाने से प्राय [illegible] लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होने लगी और ४,२०,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली उत्पन्न होने लगी।

मुद्रा प्रसार नहीं होने पाया है। पूंजी की स्थिति मजबूत हो गई है और व्यापारियों में विश्वास की भावना बढ़ी है।

~~~~~~

(१)

आर्थिक विकास का कार्य आगे बढ़ाया जाय

"योजना अवधि के पहले तीन वर्ष पूरे हो चुके हैं और इस समय भारतीय अर्थ व्यवस्था की दशा अपेक्षाकृत दृढ़ और स्थिर बन चुकी है। यह स्थिति संतोषजनक तो है ही, भविष्य के लिए भी आशाजनक है—"ये शब्द आयोजन तथा सिंचाई एवं बिजली मंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने संसद के सदस्यों में पंचवर्षीय योजना की १९५३-५४ की प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये कहे थे।

कुल २३० पृष्ठों के इस प्रतिवेदन में मुख्यतः इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि १९५३-५४ में योजना में क्या प्रगति हुई।

प्रतिवेदन की भूमिका में योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री वी० टी० कृष्णमाचारी ने कहा है कि इस योजना की असली कसौटी यही है कि किस सीमा तक लोगों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित हुआ है। उन्होंने कहा कि इसके आधार पर असंदिग्ध रूप से यह कहा जा सकता है कि विकास सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए योजना के अनुसार जो कार्य किया जा रहा है, उसका लोग स्वागत कर रहे हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि अब तक जो सफलता प्राप्त की जा चुकी है उसके आधार पर और मजबूती से काम किया जाय और आर्थिक विकास तथा सामाजिक प्रगति का भावी कार्यक्रम आगे बढ़ाया जाय।

सर्वतोमुखी प्रगति

प्रतिवेदन में कहा गया है कि पिछले तीन वर्षों में देश की आर्थिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण तथा सर्वतोमुखी प्रगति हुई है। कृषि उपज बढ़ी है, औद्योगिक उत्पादन सतत रूप से वृद्धिशील रहा है, १९५०-५१ के असाधारण रूप से बढ़े हुए मूल्य-स्तर नीचे आकर कोरिया युद्ध से पहले के मूल्य स्तर की अपेक्षा कम गिर गए हैं और देश के भुगतान सन्तुलन की स्थिति में सुधार हुआ है। अनाज पर से सरकारी नियंत्रण हटाने और खुले व्यापार की स्थिति फिर से कायम होने से उपभोक्ताओं को बहुत सहूलियत हुई है।

उत्पादन, मूल्य स्तर तथा जनता के हाथ में धन की उपलब्धि की स्थिति में अपेक्षाकृत जो सुधार हुआ है वह युद्ध के बाद की अवधि में सबसे अधिक संतोषजनक है। आयोग ने कहा है कि युद्ध तथा भारत विभाजन के परिणामस्वरूप बाजार में वस्तुओं की जो कमी और अस्त व्यस्तता हो गई थी, वह दूर होती जा रही है।

अनाजों की उपज के बारे में १९५५-५६ के लिये जो लक्ष्य रखा गया था, उससे भी कहीं अधिक उपज बढ़ाई जा चुकी है। कपास की उपज की स्थिति अभी तक संतोषजनक है। योजना में निर्धारित लक्ष्य के ८० प्र
~~~~~~

श. भाग की पूर्ति अकेले १९५३-५४ मे की गई । जूट तथा गन्ने के मामले में वर्ष प्रति वर्ष स्थिति बदलती रही। कोरिया युद्ध का इन पर प्रतिकूल प्रभाव पडा। वैसे कुल मिलाकर १९५०-५१ की तुलना मे कृषि उत्पादन १८ प्र. श. से भी अधिक बढ चुका है।

औद्योगिक उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। १९४६ को आधार अथवा १०० मानते हुए १९५० मे औद्योगिक उत्पादन का सूचक अंक १०५ था, जो १९५१ में ११७, १९५२ मे १२९ और १९५३ मे १३५ हो गया। १९५४ के पहले चार महीनों मे यह अंक १४० तक पहुंच गया था, जो १९५० की तुलना मे लगभग ३३ प्र. श. वृद्धि का परिचायक है। १९५३-५४ में मिलों ने ४ अरब ९० करोड ६० लाख गज सूती कपडा बनाया, जो १९५५-५६ के लिए निर्धारित लक्ष्य से भी लगभग २१ प्र. श. अधिक है। हाथ करघे के कपडे के उत्पादन में भी वृद्धि हुई।

मूल्यों में स्थिरता

उत्पादन के क्षेत्र मे प्रगति के साथ साथ सब तरफ मूल्यो मे भी स्थिरता आई है। यह महत्वपूर्ण बात है कि योजना के पहले तीन वर्षो मे जो नई पूंजी लगाई गई उससे तनिक भी मुद्रा बाहुल्य नहीं हुआ। योजना आरम्भ होने से तत्काल पहले जो मूल्य स्तर विद्यमान था, वह अब काफी नीचे आ गया है। थोक मूल्यों तथा रहन-सहन के अखिल भारतीय सूचक अंकों का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाता है कि स्थिति मे पर्याप्त सुधार हुआ है।

योजना के आरम्भ मे (३१ मार्च, १९५१ को) धन की प्राप्ति १,९९६ करोड रु० थी, जो मार्च १९५४ के अन्त मे १,८४५ करोड रु० रही। इससे स्पष्ट है कि बजट सम्बन्धी घाटा के बावजूद योजना सचालन के परिणाम स्वरूप किये जाने वाले खर्च से मुद्रा बाहुल्य नहीं हुआ।

पिछले दो वर्षों मे देश के भुगतान सतुलन की स्थिति मे सुधार हुआ है। १९५०-५१ में चालू खाते मे भारत को ५५.६ करोड रु० विदेशों से लेना था, लेकिन अनाज तथा औद्योगिक साज-सामान के भारी आयात के कारण १९५१-५२ मे स्थिति बदल गई और १९६.२ करोड रुपये की देनदारी हो गई। लेकिन फिर स्थिति मे सुधार हुआ और १९५२-५३ मे ७४.१ करोड रु० से भुगतान सतुलन भारत के पक्ष मे हो गया। १९५३-५४ मे भी स्थिति अनुकूल ही बनी रही और इस वर्ष के अस्थायी आंकडा के अनुसार ४८.४ करोड रु० विदेशों से लेना था। देश मे अनाज की उपज की वृद्धि होने से १९५३ मे उसके आयात मे कमी हुई। इससे स्पष्ट है कि वित्तीय मामलों मे स्थिरता आयी है।

यद्यपि १९५१-५२ मे और लगभग जुलाई १९५२ तक रिजर्व बैंक मे पौंड पावने के खाते मे कमी हुई, किन्तु स्थिति में फिर सुधार हुआ। इस समय इस मद मे ७३० करोड रु० है, जो योजना से पहले के स्तर से १५० करोड रु० कम है।

विकास कार्यों पर अधिक खर्च

प्रतिवेदन मे कहा गया है कि योजना अवधि मे कुल २,०४९ करोड रु० के खर्च की व्यवस्था थी, लेकिन अब तक केवल लगभग ८८५ करोड रु० कुल का ४० प्र. श. खर्च हुआ है। अतः अंतिम दो वर्षों मे खर्च की रफ्तार मे काफी तेजी करना बहुत आवश्यक है।

बताया गया है कि यद्यपि १९५२-५३ मे गैर सरकारी सगठित उद्योगो मे कुछ कम पूंजी लगायी गई किन्तु धीरे-धीरे अब इस दिशा में सुधार हो रहा है। १९५२-५३ की अपेक्षा १९५३-५४ मे पूंजीगत माल के निर्माण मे वृद्धि हुई है। १९५३ मे ८१ करोड रु० की नई पूंजी जारी करने की स्वीकृति दी गई, जब कि १९५२ मे यह रकम ४० करोड रु० और १९५१ मे ६० करोड रु० थी।

१९५३ में ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियों में लगी हुई पूंजी में ३९.२ करोड रु० की वृद्धि हुई, जबकि १९५२ में ३९.७ करोड रु० की वृद्धि हुई थी। लेकिन बाद की स्थिति को देखते हुए यह निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि अततोगत्वा अब गैर सरकारी उद्योगों में तेजी से पूंजी लगाई जा रही है। गैर सरकारी उद्योगों की उन्नति के लिए सरकार कुछ सुझावों पर विचार कर रही है।

आयोग ने प्रतिवेदन मे इस बात पर जोर दिया है कि ठीक समय पर योजना को क्रियान्वित करने के लिए भविष्य मे केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों और जनता को अपेक्षाकृत कहीं अधिक प्रयत्न करना होगा। आयोग को आशा है कि योजना की सफलता के लिए जितने प्रयत्न और सहयोग की आवश्यकता है, वह अवश्य मिलेगा।

(२)

प्रगति की कुछ बातें

१९५३-५४ के प्रतिवेदन के अनुसार पचवर्षीय योजना के पहले तीन वर्षों में विभिन्न क्षेत्रो मे जो प्रगति हुई है उसकी कुछ मुख्य-मुख्य बातें इस प्रकार है :—

आधार वर्ष १९४९-५० के मुकाबले १९५३-५४ में खाद्यान्न के उत्पादन में १ करोड १४ लाख टन की वृद्धि हुई है। इस तरह पचवर्षीय योजना की अवधि मे ७६ लाख टन अतिरिक्त अन्न पैदा करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था योजना के तीसरे ही वर्ष मे उत्पादन उससे ३८ लाख टन अधिक हो गया।

इस अवधि में कपास के उत्पादन मे ९६ लाख गाठों की वृद्धि हुई।

सरकार की ओर से प्रतिष्ठापित उद्योगों में प्रायः सर्वत्र ही उत्पादन में वृद्धि हुई है। व्यक्तिगत रूप से ऐसे विभिन्न उद्योगों व कारखानों की स्थिति का संक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है :—

चित्तरंजन का रेल-इंजन कारखाना—पिछले तीन सालों में इस कारखाने में रेल इंजनों और उनमें लगने वाले पुर्जों का उत्पादन बराबर बढ़ता गया है। पंचवर्षीय योजना काल के लिये २६८ रेल इंजनों का लक्ष्य निर्धारित था, जिस में से पहले तीन वर्षों में ११८ रेल-इंजन तैयार हो चुके हैं। ६ जनवरी, १९५४ को इस कारखाने का बना १००वां रेल इंजन निकाला गया, जिसके सारे पुर्जे कारखाने के ही बने थे।

सवारी के डिब्बे—रेलों के सवारी के डिब्बे बनाने का कारखाना पेराम्बुर में खड़ा किया जा रहा है। इस पर कुल ७.५ करोड़ रु० खर्च होने का अनुमान है। १९५५ से डिब्बे बनने लगेंगे। मार्च, १९५४ में कारखाने में एक स्कूल खोला गया है, जिसमें प्रतिवर्ष ६०० शिल्पकारों (टेक्नीशियन्स) को काम सिखाया जायगा।

सिंदरी कारखाना—यह कारखाना रासायनिक खाद बनाता है। आलोच्य वर्ष (१९५३-५४) में इसने २ लाख ८६ हजार टन अमोनियम सल्फेट तैयार किया, जब कि १९५२-५३ में २,१०,००० टन और १९५१-५२ में ३४,८०० टन ही तैयार हुआ था। खाद तैयार करने के लिये 'आयरन आक्साइड' की जरूरत पड़ती है, जो अब कारखाने में ही तैयार किया जाने लगा है और ८५०० रु० प्रति टन पड़ता है। विदेश से यह १० हजार रु० प्रति टन के भाव से मंगाना होता था। कारखाने में ही 'कोक' तैयार करने का भट्टियां भी खड़ी कर ली गयी हैं। खाद तैयार करने के लिये ये भट्टियां प्रति-दिन ६०० टन कोक निकालती हैं।

मैसूर आयरन एण्ड स्टील वर्क्स—पिग आयरन तैयार करने के लिये कारखाने में बिजली की भट्टी (इलेक्ट्रिकल स्मेल्टर) १९५३-५४ के अंत तक लग कर पूरी हो चुकी है। इसके कारण अगले वर्ष पिग आयरन का उत्पादन ३० हजार टन और बढ़ जायगा।

हिन्दुस्तान शिपयार्ड—जहाज बनाने के इस कारखाने का विस्तार किया जा रहा है। तीसरी 'बर्थ' बन कर पूरी हो चुकी है और १०५ टन का एक क्रेन भी लग चुका है। १९५३-५४ में दो और बर्थें बनाने का काम हाथ में लिया गया। १५० लाख रु० के खर्च से एक सूखा डैक बनाने की भी आयोजना है।

इण्डियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज—१९५१-५४ तक के तीन वर्षों में इस उद्योग पर १८० लाख रु० खर्च हुआ है और *संशोधित व्यवस्था* के अनुसार योजना की अवधि में ३४६ लाख रु० खर्च करना है। संशोधित योजना के अनुसार १९५५-५६ तक प्रतिवर्ष ६०,००० टेलीफोन और ४०,००० एक्सचेंज लाइनें तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित है। टेलीफोन सम्बन्धी लक्ष्य पूरा भी हो चुका है।

अन्य योजनायें

हिन्दुस्तान केबिल्स फैक्टरी आलोच्य वर्ष में बन कर प्रायः पूरी हो चुकी है और इसके कई विभागों में माल भी तैयार होने लगा है।

मशीनी औजारों का कारखाना जलहल्ली में बन रहा है। निर्माण-कार्य कुछ पिछड़ गया है, पर आशा है कि नवम्बर, १९५४ में खराद के मशीनों की पहली किस्त तैयार कर ली जायगी।

उत्तर-प्रदेश सरकार का सीमेंट का कारखाना इसी महीने में माल तैयार करने लगेगा। ख्याल है कि बिहार सुपरफास्फेट फैक्टरी और नेपा न्यूजप्रिंट मिल्स में १९५५ से पहले काम न शुरू हो पायेगा। पेनिसिलीन और डी डी टी तैयार करने के कारखाने चालू वर्ष के अंत तक माल तैयार करने लगेंगे।

हिन्दुस्तान हाउसिंग फैक्टरी की रजिस्ट्री जनवरी, १९५३ में हुई थी। इसने लकड़ी का सामान और सीमेंट व कंक्रीट के पाइप बनाने शुरू किये थे। अब कंक्रीट की दूसरी चीजें और इस्पात के ढांचे आदि भी बनने लगे हैं।

रूरकेला (उड़ीसा) में लोहा व इस्पात तैयार करने का नया कारखाना खोला जा रहा है और इसके निमित्त वित्तीय व शिल्पिक सहायता प्राप्त करने के लिए 'क्रप डेमग' नामक प्रसिद्ध जर्मन फर्म के साथ करार हुआ है। १९५४-५५ में कारखाने के निर्माण का काम शुरू हो जायगा। योजना अवधि में इस कारखाने पर ३३ करोड़ रु० खर्च होगा।

बिजली की भारी मशीनें तैयार करने का एक कारखाना सरकारी क्षेत्र में खड़ा करने के संबंध में कई तजवीजें विचाराधीन हैं।

तिरुवांकुर-कोचीन के दुर्लभ मिट्टी कारखाने से निकलने वाले कचड़े से यूरेनियम आक्साइड व थोरियम नाइट्रेट निकालने का एक कारखाना ट्राम्बे में खोलने का निश्चय किया गया है। बंगलौर के पास, तेतार और विद्युत अणु संबंधी साज सामान तैयार करने का एक कारखाना खोलने का निश्चय किया गया है। इस पर ७ करोड़ रु० खर्च होगा।

निजी क्षेत्र

पिछले दो वर्षों में, निजी क्षेत्र के अनेक उद्योगों में भी उत्पादन बढ़ा है। १९५२-५३ में उससे पिछले वर्ष की तुलना में और १९५३-५४ में १९५२-५३ की तुलना में जितने प्रतिशत वृद्धि हुई, कुछ उद्योगों के संबंध में उसके आंकड़े नीचे दिये जा रहे हैं।

उद्योग	पिछले वर्ष की तुलना में उत्पादन की प्रतिशत वृद्धि	
(१)	(२) १९५२-५३	(३) १९५३-५४
वस्त्र उद्योग		
(क) सूत ..	१०.६	२.६
(ख) कपड़ा .	१५.४	२.६
सीमेंट	७.०	१४.७
कांच की चादरें	१३.०	८४.४
सोडा एश ..	६.२	३६.३
कास्टिक सोडा	१३.३	४७.०

(१)	(२)	(३)
सिलाई की मशीनें	८५	३१.१
बाइसिकलें ..	७३.०	३६.२
बाल बेयरिंग	६६.०	४०.०
पेन्ट	२२०	१७०
ट्रान्सफार्मर	१४८	४१५
बिजली के मोटर	०.८	०.२८
ए. सी. एस. आर. कन्डक्टर	०८.४	७७.७
मन्द सार	१६.०	१०.६
शाने	१०८	१.२
नमक	३.०	६.१
वनस्पति	१०६	०

चाना मार्करगाटिया और पेंटिया सिमेरिगो का उत्पादन १९५१-५२ मे ही कम है। जूट के माल और चाय की पेटिया व प्लाइवुड का उत्पादन योजना अवधि के पहले दो वर्षों मे बढ़ा, पर १९५३-५४ में कम पड़ गया।

१९५३-५४ में कुछ नई चीजें देश मे पहले पहल तैयार की गईं जैसे—सीमेंट की पिसाई की मशीनें, स्टील ...ल, मादरिला के प्रोट्रील व चेने, स्वट प्रेन्टिंग, मोबे-बनयान की बुनाई की सुइयां, आर्गिनोमाइमिन, नकली एमेटिकामिट एमिग्रेन आदि।

पेट्रोलियम शोधने के कारखाने

निजी क्षेत्र में पेट्रोलियम की सफाई के लिये स्टैंडर्ड वेक्युअम आयल कम्पनी और बर्मा शैल की शोधन शालायें तैयार हो गई है। आलोच्य वर्ष में इन पर कुल १५ करोड़ रु० खर्च हुआ। आशा है १९५४-५५ के अंत तक इनमें उत्पादन शुरु हो जायगा।

अब तक इन चार उद्योगों के लिये विकास परिषदें स्थापित की जा चुकी है—भारी रासायनिक द्रव्य तथा खादें, अन्दरि इंजन व पम्प, बाइसिकलें और चानी। १९५३-५४ मे कुछ और परिषदें भी कायम होंगी। विचार है कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के औद्योगिक विकास का कार्य क्रम निश्चित करने का काम विभिन्न उद्योगों से संबंधित इन विकास परिषदों को ही सौंपा जायगा।

(४)

सिंचाई और बिजली उत्पादन की प्रगति

पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विशाल सिंचाई योजनाएं पूर्ण होने से २८ लाख एकड़ से अधिक भूमि के लिये सिंचाई की व्यवस्था हो चुकी है और ४,५०,००० किलोवाट बिजली का उत्पादन होने लगा है।

सिंचाई और बिजली योजनाओं पर इस प्रकार व्यय हुआ है:—

(लाख रुपये में)

	व्यय	योजना मे पहले की गई व्यवस्था १९५२
१९५१-५२ (वास्तविक)	८१७१	८,५१०
१९५२-५३ (वास्तविक)	९७७६	१२,१००
१९५३-५४ (वास्तविक)	१२०५६	१२,७००
योग	३०००६	३३,३००

१९५४-५५ में सिंचाई और बिजली योजनाओं के लिये कुल १६७.५१ करोड़ रुपये रखे गये है, जब कि पहले १०७ करोड़ रु० रखे गये थे।

पहली पंचवर्षीय योजना में सिंचाई और बिजली का जो कार्यक्रम रखा गया है वह दीर्घकालीन योजना का एक भाग मात्र है। दीर्घकाल में योजना यह है कि १५-२० वर्षों में सिंचाई क्षेत्र को दुगना कर दिया जाय और प्राय: ७० लाख किलोवाट बिजली पैदा की जाय। तात्कालिक कार्यक्रम के अनुसार ८५ लाख एकड़ नये क्षेत्र में सिंचाई होगी और ११ लाख किलो-वाट बिजली पैदा होगी। योजना अवधि में इस कार्यक्रम पर ५५८ करोड़ रु० व्यय होगा। इसमें से ४२० करोड़ रु० बड़ी योजनाओं पर और १२८ करोड़ बिजली की योजनाओं पर व्यय होंगे। १९५३ के अन्त में सिंचाई और बिजली की योजनाओं के लिये ६५ करोड़ की एक अतिरिक्त योजना भी सम्मिलित कर ली गई थी। इसमें ४० करोड़ रु० उन सिंचाई योजनाओं के लिये थे जिनमें अन्नाभाव वाले क्षेत्रों को स्थायी रूप से लाभ पहुँचेगा।

बहुउद्देशीय योजनाएं

३१ मार्च १९५४ को समाप्त हुए तीन वर्षों में बहुउद्देशीय योजनाओं के विषय में जो प्रगति हुई उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

भाकरा नांगल योजना—पंजाब में नांगल बांध और नांगल हाइडल चैनल का निर्माण हो गया है। भाकरा नहरें भी खोदी जा चुकी हैं। जुलाई १९५४ को प्रधान मन्त्री ने इन नहरों का उद्घाटन किया। अब राजस्थान और पेप्सू मे नहरें खोदी जा रही है। भाकरा बांध की नींव का एक विराट काम समाप्त हो गया है। गंगुवाल और कोटला के पावर हाउसों में मशीनें लगाई जा रही है। इन योजनाओं पर पहले तीन वर्षों में कुल ५,५५८ लाख रु० व्यय होने का अनुमान है।

हरी के बांध—पंजाब के इस बांध का काम भी समाप्त हो चुका है। इस पर पहले तीन वर्षों में १०७ लाख रु० व्यय होने का अनुमान है।

दामोदर घाटी योजना—बोकारो थर्मल पावर स्टेशन ने १९५३ में काम आरम्भ कर दिया है। यहां २००,००० किलोवाट बिजली पैदा होगी। तिलैया हाइड्रो स्टेशन फरवरी १९५३ से चालू हो गया। कोनार बांध मई १९५४ तक बन कर तैयार हो गया। बराकर नदी के मायथान बांध

का दो तिहाई काम समाप्त हो गया है। इससे दामोदर घाटी में बाढ़ भी रोकी जायगी। अब पन्चेट हिल बाध और दुर्गापुर बाध तथा नहरों का काम चल रहा है। १९५१-५४ में इन सब पर ४,४१४ लाख रु० व्यय हुए।

हीराकुड बांध—बाइं ओर के पुश्ते में ११५ लाख घनफीट कंक्रीट और दाहिनी ओर के पुश्ते में ७९ लाख घनफीट कंक्रीट डाली जा चुकी है। इस प्रकार इनका क्रमश: ६५ और ३५ प्रतिशत काम समाप्त हो चुका है। मिट्टी वाले भाग में ४,३२४ लाख घनफीट में से ७२० लाख घनफीट मिट्टी जमाई जा चुकी है। ८४ प्रतिशत नहरें और ७० प्रतिशत उनके रजबहे खोदे जा चुके हैं। बिजली पैदा करने की मशीनें पहुँचने लगी हैं और पूरा पावर हाउस १९५७-५८ तक बन कर तैयार हो जायगा। इस योजना पर पहले तीन वर्षों पर अनुमानत: २,५८८ लाख रु० व्यय हुए हैं।

सिंचाई योजनाएं

सिंचाई योजनाओं पर १९५१-५४ में आन्ध्र में ५६९ लाख रु० व्यय हो चुके है। आसाम के लिये जो धन रखा गया था उसमें से अब तक २० प्रतिशत व्यय हुआ है। बिहार में ९७३ लाख में से ४०१ लाख रु०, बम्बई में २,२६६ लाख में से १,११५ लाख रु०, मध्य प्रदेश में २०८ लाख में से ९६.६ लाख रु० व्यय हो चुके हैं। १९५३-५४ में बम्बई में १,४०,००० एकड़ भूमि को सिंचाई योजना में ले आने का लक्ष्य रखा गया था। इसमें से ८०,००० एकड़ ले आये गये। इसी प्रकार मध्य प्रदेश में २१,००० में से १०,००० एकड़ ले आये गये हैं।

मदरास में इन योजनाओं के लिये २,०१६ लाख रु० रखे गये थे जिनमें से १,१४६ लाख व्यय हो चुके है और ८०,००० एकड़ के लक्ष्य में से ४४,५०० एकड़ सिंचाई योजना में ले आये गये है। अन्य राज्यों में व्यय हुई रकमें और सिंचाई वाले एकड़ इस प्रकार हैं। कोष्टक में निर्धारित लक्ष्य की संख्याएं दी गई है, उड़ीसा १७१ लाख रु० (३०० लाख रु०) और ६२,००० एकड़ (३,७२,००० एकड़), पंजाब २३२ लाख रु० (३२६ लाख रु०), उत्तर प्रदेश १,४८८ लाख रु० (१,६११ लाख रु०) और ७,४७,५०० एकड़ (९२ ३३,००० एकड़), पश्चिमी बंगाल ८६८ लाख रु० (१,५३७ लाख रु०), हैदराबाद १,३६६ लाख रु० (२,४७१ लाख रु०) और ३३ ००० एकड़ (१,०२,००० एकड़), जम्मू और कश्मीर १६० लाख (३४० लाख रु०) मध्य भारत १०४ लाख (३२८ लाख रु०), मैसूर ७१४ लाख रु० (१,४३६ लाख रु०) और ६,५०० एकड़ (१२,००० एकड़), पेप्सू में ३४ लाख का ५० प्रतिशत और राजस्थान में ५०४ लाख का ४१ प्रतिशत। राजस्थान में १२,६००० एकड़ लक्ष्य में से ७२,५०० एकड़ भूमि में सिंचाई होने लगी। सौराष्ट्र ३४० लाख रु० (४७५ लाख रु०) और ४६,५०० एकड़ (२६,००० एकड़), त्रावनकोर कोचीन ४७८ लाख का ५५ प्रतिशत और १२,००० अतिरिक्त एकड़ में सिंचाई होने लगी। अजमेर १०६ लाख रु० (११ लाख रु०), हिमाचल प्रदेश १६ लाख रु० (८० लाख रु०), कच्छ ५२ १७ लाख (६१ लाख रु०)।

बिजली का उत्पादन

निजी क्षेत्र में ८६,००० किलोवाट बिजली पैदा करने वाली नई मशीनें काम करने लगी हैं। दिल्ली राज्य बिजली बोर्ड ने भी २०,००० किलोवाट की मशीनें लगाई हैं। इनके अतिरिक्त केन्द्रीय रेलों ने अपने कल्याण स्टीम पावर स्टेशन में २४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा करनी आरम्भ की है और १९५५-५६ तक १८,००० किलोवाट और पैदा करने लगेगी।

विभिन्न राज्यों में इस सम्बन्ध में अब तक जो प्रगति हुई है वह इस प्रकार है —

आन्ध्र—मच्छकुण्ड पावर हाउस जून १९५५ में चालू हो जायगा और तुंगभद्रा केन्द्र १९५७ के प्रारम्भ में बिजली देने लगेगा। १९५१-५४ तक पहली तीन वर्षों की अवधि में १,०६६ लाख रु० व्यय किए गये, जब कि २,०४१ लाख रु० रखे गये थे।

आसाम—उमतरू जल विद्युत योजना १९५६-५७ तक पूरी हो जायगी।

बिहार—७०६ लाख रु० में से २८२ लाख रु० व्यय किये जा चुके हैं।

बम्बई—१०४३ लाख रु० में से ७५५ लाख व्यय हो चुके है। साउथ गुजरात ग्रिड स्कीम के अनुसार १५,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा होने लगी है। चोला में बम्बई सरकार का बिजली केन्द्र १९५४ में ही चालू हो जाने की आशा है। उत्तरी गुजरात ग्रिड स्कीम की भी पर्याप्त प्रगति हो चुकी है।

मध्यप्रदेश—६०० लाख में से ३६१ लाख व्यय हो चुके हैं और ५१,००० किलोवाट शक्ति वाली मशीनें लगाई जा चुकी हैं।

मदरास—मोयार और पापनाशम योजनाओं के फलस्वरूप ६८,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली तैयार होने लगी है। पायकारा और मदरास की अन्य योजनाएं १९५४-५५ में तैयार हो जायगी। पेरियार जल विद्युत योजना भी संशोधित कार्यक्रम में सम्मिलित कर ली गई है। अब तक २,६६७ लाख रु० में से १,४४८ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

उड़ीसा—कटक थर्मल योजना पूर्ण हो चुकी है। हीराकुड योजना से १९५८-५९ में बिजली मिलने लगेगी। हीराकुड को छोड़ कर अन्य योजनाओं के लिये ३६१ लाख रु० रखे गये थे जिनमें से १६० लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

पंजाब—३६० २ लाख में से ७२ लाख व्यय हो चुके है। भाखरा-नांगल योजना का व्यय इससे अलग है।

उत्तर प्रदेश—मध्यम आकार की अनेक जल विद्युत योजनाएं कार्यान्वित की जा रही है। मोहम्मदपुर का बिजली घर चालू हो गया है। पथरी और शारदा की जल विद्युत योजनाएं १९५५ के आरम्भ में चालू हो जायेंगी। पूर्वी जिलों में अनेक थर्मल केन्द्र भी स्थापित किये जा रहे हैं। १,४११ लाख में से १,०१५ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

पश्चिमी बंगाल—दामोदर घाटी कारपोरेशन की लाइनें कलकत्ता नगर तक लाई जा रही हैं। ग्रामों में बिजली देने की भी कई योजनाएं पूर्ण की जा रही हैं। ७६ लाख रु० में से ७१ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

हैदराबाद—रामागुण्डम थर्मल योजना और निज़ाम सागर जल-विद्युत योजना १९५५-५६ में चालू हो जायेगी। हैदराबाद राज्य की ओर वाली तुंगभद्रा जल विद्युत योजना पर भी शीघ्र ही काम आरम्भ होगा। ९२१ लाख रु० में से ७०५ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

मध्य भारत—३०८ लाख में से १७६ लाख रु० व्यय हो चुके हैं और ४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा होने लगी है।

मैसूर—१,३६८ लाख में से ७४४ लाख रु० व्यय हो चुके हैं। जोग पावर हाउस में ७२,००० किलोवाट की अतिरिक्त मशीनें लगाई जा चुकी हैं।

पेप्सू—३१ लाख में से ५ लाख रु० व्यय हुए।

राजस्थान—४६३ लाख में से ६० लाख रु० व्यय हुए। १९५५-५६ तक २४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली मिलने लगेगी।

सौराष्ट्र—२१२ लाख में से २७ लाख रु० व्यय हुए।

कोचीन—१०३५ लाख में से ६४० लाख रु० व्यय हुए।

"ग" श्रेणी के राज्यों में १६६ लाख में से ७५ लाख रु० व्यय किये गये।

मद्रास, मैसूर, त्रावनकोर कोचीन आदि कुछ राज्यों के ग्रामों में भी बिजली देने में पर्याप्त प्रगति हो चुकी है। मद्रास में १९५४ तक ७,५०० गांवों में बिजली दी जा चुकी है।

नयी योजनाएं

इस समय चम्बल, कोयना, कृष्णा, रिहण्ड, और कोसी की नयी योजनाएं विचाराधीन हैं। रिहण्ड योजना में २,४०,००० किलोवाट बिजली मिलेगी जिससे उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग, बिहार के पश्चिमी भाग और विन्ध्य प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के निकटवर्ती भागों को लाभ पहुँचेगा। इस योजना के लिए भारत अमरीकी शिल्पिक सहयोग कार्यक्रम १९५३-५४ के अन्तर्गत ११० लाख डालर का करार हो चुका है।

अभावग्रस्त क्षेत्रों की दशा सुधारने के लिये केन्द्र ने राज्यों को सहायता दी है। इसके फलस्वरूप १५ लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि में खेती होने लगेगी जिसमें से लगभग १० लाख की सिंचाई होगी। यह सहायता इस प्रकार की गई है।

आन्ध्र ५०० लाख रु०, आसाम १०० लाख रु०, बिहार २५० लाख रु०, बम्बई ४८७ लाख रु०, मद्रास ६२० लाख रु०, उत्तर प्रदेश ६७३ लाख रु०, पश्चिमी बंगाल १०० लाख रु०, हैदराबाद २०० लाख रु०, मैसूर २५० लाख रु०, राजस्थान २५० लाख रु०, सौराष्ट्र २५० लाख रु० और अजमेर २५ लाख रु०।

इनके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार ऋण भी देगी जो ३० वर्षों में वापस लिया जायगा। इस ऋण पर पहले ५ वर्षों में कोई ब्याज नहीं लिया जायगा। शीघ्र लाभ पहुँचाने की दृष्टि से ये योजनाएं बनाई गई हैं। इनमें महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं:—

योजना	कुल व्यय (लाख रु० में)
आन्ध्र	
(१) निचली सागेलेरू ...	४४.७०
(२) कर्नूल कडप्पा नहर का सुधार	८६०.००
आसाम	
(३) बाढ़ रोकने और पानी निकालने की योजना	६०.२०
बिहार	
(४) त्रिवेणी नहर का विस्तार	३६.००
(५) पानी निकालने की योजनाएं	४७.२०
(६) बाढ़ नियन्त्रण की योजनाएं ...	६५.४०
बम्बई	
(७) घोड़ नदी योजना ...	२००.००
(८) दोहद तालुके की पाटाडूंगरी तालाब योजना	४१.६८
मद्रास	
(९) आगाद सिंचाई योजना	२५०.००
(१०) अमरावती सिंचाई योजना	२७०.००
उत्तर प्रदेश	
(११) माताटीला बांध	४००.००
(१२) सुरेसागर योजना (प्रथम चरण)	२७३.४०
पश्चिमी बंगाल	
(१३) ७५० अतिरिक्त नलकूप ...	३१.००
हैदराबाद	
(१४) मूसी योजना ...	६८.००
मैसूर	
(१५) भद्रा योजना की सहायता	५०.००
सौराष्ट्र	
(१६) मच्छू	८६.०३

[५]

योजना के व्यय का विवरण

पञ्चवर्षीय योजना के मार्च १९५४ को समाप्त होने वाले तीन वर्षों में अनुमानत लगभग ८८५ करोड रु० व्यय हुए हैं। योजना पर जितना धन व्यय करने का प्रस्ताव किया गया था उसका यह ४० प्रतिशत है। इसमें केन्द्र ने ४४४ ६ करोड और राज्यों ने ४३६ ६ करोड रु० व्यय किये हैं। १९५४ ५५ में ५७२ करोड रु० व्यय करने का प्रस्ताव है जिसमें से ३५६ करोड केन्द्र द्वारा और २१६ करोड रु० राज्यों द्वारा होगा। १९५३ ५४ के संशोधित व्यय से यह २१५ करोड रु० अधिक है। कृषि, सामूहिक योजनाओं, सिंचाई और बिजली, रेलों, बन्दरगाहों और पत्तनों, बडे उद्योगों, शिक्षा, स्वास्थ्य, मकानों, स्थानीय निर्माण कार्यों और पुनर्वास पर अधिक खर्च होने से यह वृद्धि हुई है।

३१ मार्च १९५४ तक केन्द्र द्वारा व्यय किये गये ८८५ करोड रु० में से लगभग ६० प्रतिशत अर्थात् ५३५ २ करोड रु० साधारण बजट में से दिये गये। लगभग १५ प्रतिशत अर्थात् १३१.४ करोड रु० विदेशी सहायता से मिले और शेष २१८ १ करोड रु० अर्थात् प्राय. २५ प्रतिशत शेष नकदी, सिक्यूरिटियों की बिक्री और अल्पकालीन ऋणों से प्राप्त हुए।

राज्य सरकारों ने १९५१ ५४ तक जो ४४० करोड रु० व्यय किये उनमें से प्राय १९० आय की बचत में से और ५२ करोड रु० जनता से ऋण लेकर किये। केन्द्र से राज्यों को १२२ करोड रु० की सहायता दी गई। शेष धन सिक्यूरिटियों की बिक्री आदि से प्राप्त किया गया। कमीशन का मत है कि ५ वर्षों की योजना अवधि में सरकार को जनता से इतना रुपया मिल जायगा कि उससे वह कमी पूरी हो जायगी जिसे वह अतिरिक्त आय अथवा करो द्वारा पूर्ण नहीं कर सकी है।

योजना पर धन व्यय करने की गति भी निर्धारित गति की अपेक्षा कम रही है। मद्रास, बम्बई, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और बिहार ने ६० प्रतिशत अथवा उससे कुछ अधिक व्यय कर डाला है। परन्तु हैदराबाद, सौराष्ट्र, मैसूर, मध्य प्रदेश, उडीसा और त्रावनकोर कोचीन ने लगभग ४० प्रतिशत ही व्यय किया है। शेष राज्यों ने तो और भी कम किया है। इस तथा अगले वर्ष राज्यों को केन्द्र द्वारा उनके हिस्से का समस्त शेष धन देने के प्रयत्न किये जायगे।

विदेशी सहायता के २३४ करोड रु० में से १९५१ से १९५४ तक प्राय. १३२ करोड रु० व्यय हो चुके हैं। चालू वर्ष के लिए ४८ करोड रु० और पांचवे वर्ष के लिये ५४ करोड रु० निर्धारित किये गये हैं।

कपड़ा और जूट उद्योगों का युक्तियुक्त संगठन [पृष्ठ ३४१ का शेषांश]

उद्योगों में लगाई गई पूंजी

१९५१ से १९५४ तक उद्योगों में जो पूंजी लगाई गई है वह इस प्रकार है :—

उद्योग	पूंजी (लाख रु० में)
१ लोहा और इस्पात (मुख्य उत्पादक)	१,१९८
२. अल्यूमीनियम	१४३
३ अन्य धातु शोधन उद्योग	७५
४. बाइसिकिल	२११
५ डीजल इंजन और पम्प	६०
६. मोटर गाडियां	११२
७. कपडा मिल मशीन	१७५
८ रेल के इंजन डिब्बे	६२२
९ जहाज निर्माण	६०१
१०. बिजली के तार और केबिल	१९८
११ बिजली बनाने की मशीनें	१,६२६
१२ अन्य इंजीनियरी उद्योग	८८१
१३. भारी रासायनिक पदार्थ, कृत्रिम खाद और औषधियां	१,४०४
१४ रंगलेप और वार्निशें	४५
१५ पेट्रोलियम शोधन	१,७०२
१६. कागज	५८८
१७ रेयन	४८७
१८ सीमेण्ट	६२८
१९ चीनी	७२
२० वनस्पति और साबुन	८२
२१ कांच	१९५
२२ सूती कपडा	४५०
२३ अन्य उद्योग	४३६

चोरी से आने वाला सोना

भारत में नीचे लिखे अनुसार चोरी से लाया जाने वाला सोना पकडा गया और जब्त करके बम्बई और कलकत्ता की सरकारी टकसालों में रख दिया गया। अभी इस सोने को बेच देने का प्रस्ताव नहीं है :—

१९५१	६५,११८ तोला
१९५२	५४,७७३ तोला
१९५३	१९,६८६ तोला
१९५४ (पहली छमाही)	५१,०५४ तोला

जून १९५४ को भारत के स्टर्लिंग पावने का योग ७४४ करोड रु० था, जब कि जनवरी १९५४ में यह ७२७ करोड रु० था।

पश्चिमी बंगाल—दामोदर घाटी कारपोरेशन की लाइनें कलकत्ता नगर तक लाई जा रही हैं। ग्रामों में बिजली देने की भी कई योजनाएं पूर्ण की जा रही हैं। ७६ लाख रु० में से ७५ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

हैदराबाद—रामागुण्डम थर्मल योजना और निजाम सागर जल-विद्युत योजना १९५५-५६ में चालू हो जायगी। हैदराबाद राज्य की ओर वाली तुंगभद्रा जल विद्युत योजना पर भी शीघ्र ही काम आरम्भ होगा। २२१ लाख रु० में से २०५ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

मध्य भारत—२०८ लाख में से १७६ लाख रु० व्यय हो चुके हैं और ४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा होने लगी है।

मैसूर—१,२६८ लाख में से ७४४ लाख रु० व्यय हो चुके हैं। जोग पावर हाउस में ७२,००० किलोवाट की अतिरिक्त मशीनें लगाई जा चुकी हैं।

पेप्सू—३१ लाख में से ५ लाख रु० व्यय हुए।

राजस्थान—४६२ लाख में से ६० लाख रु० व्यय हुए। १९५५-५६ तक २४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली मिलने लगेगी।

सौराष्ट्र—२१२ लाख में से २७ लाख रु० व्यय हुए।

ट्रावनकोर-कोचीन—१०३५ लाख में से ६४० लाख रु० व्यय हुए।

"ग" श्रेणी के राज्यों में १६६ लाख में से ८५ लाख रु० व्यय किये गये।

मदरास, मैसूर, ट्रावनकोर कोचीन आदि कुछ राज्यों ने ग्रामों में भी बिजली देने में पर्याप्त प्रगति हो चुकी है। मदरास में १९५० तक ९,५०० गांवों में बिजली दी जा चुकी है।

नयी योजनाएं

इस समय चम्बल, कोसी, कृष्णा, रिहण्ड, और कोयना की नयी योजनाएं विचाराधीन हैं। रिहण्ड योजना से २,४०,००० किलोवाट बिजली मिलेगी जिससे उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग, बिहार के पश्चिमी भाग और विन्ध्य प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के निकटवर्ती भागों को लाभ पहुँचेगा। इस योजना के लिए भारत अमरीकी शैल्पिक सहयोग कार्यक्रम १९५३-५४ के अन्तर्गत ११० लाख डालर का करार हो चुका है।

अभावग्रस्त क्षेत्रों की दशा सुधारने के लिये केन्द्र ने राज्यों को सहायता दी है। इसके फलस्वरूप १५ लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि में खेती होने लगेगी जिसमें से लगभग १० लाख की सिंचाई होगी। यह सहायता इस प्रकार की गई है।

आन्ध्र ५०० लाख रु०, आसाम १०० लाख रु०, बिहार ३५० लाख रु०, बम्बई ४८३ लाख रु०, मदरास ६२० लाख रु०, उत्तर प्रदेश ६७३ लाख रु०, पश्चिमी बंगाल १०० लाख रु०, हैदराबाद ३०० लाख रु०, मैसूर ३५० लाख रु०, राजस्थान २५० लाख रु०, सौराष्ट्र २५० लाख रु० और अजमेर २५ लाख रु०।

इनके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार ऋण भी देगी जो ३० वर्षों में वापस लिया जायगा। इस ऋण पर पहले ५ वर्षों में कोई व्याज नहीं लिया जायगा। शीघ्र लाभ पहुँचाने की दृष्टि से ये योजनाएं बनाई गई हैं। इनमें महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं:—

योजना	कुल व्यय (लाख रु० में)
आन्ध्र	
(१) निचली सगिलेरू ..	४४.००
(२) करनूल कडप्पा नहर का सुधार	३९०.००
आसाम	
(३) बाढ़ रोकने और पानी निकालने की योजना	६३.९०
बिहार	
(४) त्रिवेणी नहर का विस्तार	३६.००
(५) पानी निकालने की योजनाएं	४७.२०
(६) बाढ़ नियन्त्रण की योजनाएं ...	६५.४०
बम्बई	
(७) घोड़ नदी योजना ...	२००.००
(८) दोहद तालुके की पाटाडूंगरी तालाब योजना	४१.६८
मदरास	
(९) वागाइ सिंचाई योजना	२५०.००
(१०) अमरावती सिंचाई योजना	७३०.००
उत्तर प्रदेश	
(११) मानाटीला बांध	४००.००
(१२) सुरेमागर योजना (प्रथम चरण)	३७३.४०
पश्चिमी बंगाल	
(१३) ७५० अतिरिक्त नलकूप	३१.००
हैदराबाद	
(१४) मूसी योजना ...	६८.००
मैसूर	
(१५) नादरा योजना की सहायता	२०.००
सौराष्ट्र	
(१६) मच्छू	८९.०३

[५]
योजना के व्यय का विवरण

पञ्चवर्षीय योजना के मार्च १९५४ को समाप्त होने वाले तीन वर्षों में अनुमानत लगभग ८८५ करोड रु० व्यय हुए हैं। योजना पर जितना धन व्यय करने का प्रस्ताव किया गया था उसका यह ४० प्रतिशत है। इसमें केन्द्र ने ४४४ ६ करोड और राज्यों ने ४३६ ६ करोड रु० व्यय किये हैं। १९५४ ५५ में ५७२ करोड रु० व्यय करने का प्रस्ताव है जिसमें से ३५६ करोड केन्द्र द्वारा और २१६ करोड रु० राज्यों द्वारा होगा। १९५३ ५४ के संशोधित व्यय से यह २१५ करोड रु० अधिक है। कृषि, सामूहिक योजनाओं, सिंचाई और बिजली, रेलों, बन्दरगाहों और पत्तनों, बड़े उद्योगों, शिक्षा, स्वास्थ्य, मकानों, स्थानीय निर्माण कार्यों और पुनर्वास पर अधिक खर्च होने से यह वृद्धि हुई है।

३१ मार्च १९५४ तक केन्द्र द्वारा व्यय किये गये ८८५ करोड रु० में से लगभग ६० प्रतिशत अर्थात् ५३५ ३ करोड रु० साधारण बजट में से दिये गये। लगभग १५ प्रतिशत अर्थात् १३१.४ करोड रु० विदेशी सहायता से मिले और शेष २१८ १ करोड रु० अर्थात् प्राय २५ प्रतिशत शेष नगदी, सिक्यूरिटियों की बिक्री और अल्पकालीन ऋणों से प्राप्त हुए।

राज्य सरकारों ने १९५१ ५४ तक जो ४४० करोड रु० व्यय किये उनमें से प्राय १६० आय की बचत में से और ५२ करोड रु० जनता से ऋण लेकर किये। केन्द्र से राज्यों को १२२ करोड रु० की सहायता दी गई। शेष धन सिक्यूरिटियों की बिक्री आदि से प्राप्त किया गया। कमीशन का मत है कि ५ वर्षों की योजना अवधि में सरकार को जनता से इतना रुपया मिल जायगा कि उससे वह कमी पूरी हो जायगी जिसे वह अतिरिक्त आय अथवा करों द्वारा पूर्ण नहीं कर सकी है।

योजना पर धन व्यय करने की गति भी निर्धारित गति की अपेक्षा कम रही है। मद्रास, बम्बई, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और बिहार ने ५० प्रतिशत अथवा उससे कुछ अधिक व्यय कर डाला है। परन्तु हैदराबाद, सौराष्ट्र, मैसूर, मध्य प्रदेश, उड़ीसा और त्रावनकोर कोचीन ने लगभग ४० प्रतिशत ही व्यय किया है। शेष राज्यों ने तो और भी कम किया है। इस तथा अगले वर्ष राज्यों को केन्द्र द्वारा उनके हिस्से का समस्त शेष धन देने के प्रयत्न किये जायगे।

विदेशी सहायता के २३४ करोड रु० में से १९५१ से १९५४ तक प्राय १३२ करोड रु० व्यय हो चुके हैं। चालू वर्ष के लिए ४८ करोड रु० और पांचवें वर्ष के लिये ५४ करोड रु० निर्धारित किये गये हैं।

कपड़ा और जूट उद्योगों का युक्तियुक्त संगठन

[पृष्ठ ३४१ का शेषांश]

उद्योगों में लगाई गई पूंजी

१९५१ से १९५४ तक उद्योगों में जो पूंजी लगाई गई है वह इस प्रकार है :—

उद्योग	पूंजी (लाख रु० में)
१ लोहा और इस्पात (मुख्य उत्पादक)	१,१९८
२, अलुमीनियम	१९३
३ अन्य धातु शोधन उद्योग	७५
४, बाइसिकिल	२२१
५ डीजल इंजन और पम्प	४०
६, मोटर गाड़ियां	१९२
७ कपड़ा मिल मशीन	१७५
८ रेल के इंजन डिब्बे	९२२
९ जहाज निर्माण	६०१
१०, बिजली के तार और केबिल	१९८
११ बिजली बनाने का मशीनें	१,६२९
१२, अन्य इंजीनियरी उद्योग	८८१
१३ भारी रासायनिक पदार्थ, कृत्रिम खाद और औषधियां	१,४०४
१४ रंगलेप और वार्निशें	४५
१५ पेट्रोलियम शोधन	१,७०२
१६ कागज	५८८
१७ रेयन	४८७
१८ सीमेन्ट	६२८
१९, चीनी	७२
२० वनास्पति और साबुन	८२
२१ जूट	१९५
२२ सूती कपड़ा	४५०
२३ अन्य उद्योग	४३६

चोरी से आने वाला सोना

भारत में नीचे लिखे अनुसार चोरी से लाया जाने वाला सोना पकड़ा गया और जब्त करके बम्बई और कलकत्ता की सरकारी टकसालों में रख दिया गया। अभी इस सोने को बेच देने का प्रस्ताव नहीं है :—

१९५१	६५,११८ तोला
१९५२	५४,७७३ तोला
१९५३	१६,९८६ तोला
१९५४ (पहली छमाही)	५१,०५४ तोला

जून १९५४ को भारत के स्टलिंग पावने का योग ७४४ करोड रु० था, जब कि जनवरी १९५४ में यह ७२७ करोड रु० था।

★ भारत और चीन के बीच व्यापार का विकास किया जाय

★★ दोनों के मध्य पहले से ही जो मैत्री है उसे और सुदृढ़ किया जाय

भारत और चीन के बीच पहला व्यापार-करार

दोनों देशों में व्यापार और मैत्री बढ़ाने की आकांक्षा

गत १४ अक्तूबर १९५४ को भारत और चीन के बीच एक व्यापार करार पर हस्ताक्षर हो गये। दोनों देशों के बीच अपनी तरह का यह पहला करार है। इस का उद्देश्य दोनों देशों के वर्तमान मैत्रीभाव को और दृढ़ करना तथा समानता एवं पारस्परिक लाभ के सिद्धांत पर दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ाना है। आयात, निर्यात और मुद्रा-विनिमय सम्बन्धी नियमों के अनुसार ही दोनों देशों में व्यापार किया जायगा। शुरू-शुरू में यह करार दो वर्षों के लिये हुआ है। बातचीत करके यह अवधि और बढ़ाई जा सकेगी।

करार में दो परिशिष्ट हैं, जिनमें निर्यात और आयात की जाने वाली जिन्सों की सूची दी गई है।

करार की एक विशेषता यह भी है कि इसे भारत की राजभाषा हिन्दी में लिखा गया है और हिंदी प्रति को प्रामाणिक माना गया है। इससे पूर्व ऐसा कोई करार हिन्दी में नहीं लिखा गया था।

करार होने के समय दो पत्रों का भी आदान प्रदान हुआ है। एक पत्र में यह बताया गया है कि कुछ ऐसा माल जिसकी चीन के तिब्बत प्रदेश को जरूरत होती है और जिसकी पूर्ति भारत से नहीं हो सकती—चीन से भारत होकर तिब्बत भेजने के लिये क्या तरीका अपनाया जायगा। दूसरा पत्र भारत चीन व्यापार में उपस्थित होने वाली कई समस्याओं के सम्बन्ध में है। दोनों सरकारों के बीच तय हुआ है कि इन व्यावहारिक समस्याओं के विषय में विस्तारपूर्वक बात चीत बाद में की जायगी।

करार पर भारत की ओर से वाणिज्य एवं उद्योग सचिव श्री एच० वी० आर० आयंगर ने और जन-गणराज्य चीन की ओर से चीनी विदेशी व्यापार के उप मंत्री तथा भारत आये हुये चीनी व्यापार मंडल के नेता महामहिम श्री कुंग युआन ने हस्ताक्षर किये हैं।

समता तथा पारस्परिक हित का प्रयत्न

पूर्ण करार इस प्रकार है —

भारत गणराज्य की सरकार और चीन के जनवादी गणराज्य की केन्द्रीय जनवादी सरकार ने दोनों देशों के बीच व्यापार विकसित करने तथा भारत और चीन की सरकारों और जनता में पहले से ही जो मैत्री है उसे और भी सुदृढ़ करने की सामान्य आकांक्षा से प्रेरित होकर समता तथा पारस्परिक हित के आधार पर निम्नलिखित करार किया है —

अनुच्छेद १

दोनों संविदाकारी पक्ष दोनों देशों के बीच व्यापार का विस्तार करने के लिये सब समुचित उपायों को अपनाने की आकांक्षा से ऐसे व्यापार को बढ़ाने के सब सुझावों पर पूर्णतम विचार करने के लिए सहमत हैं।

अनुच्छेद २

दोनों संविदाकारी पक्ष सहमत हैं कि दोनों देशों के बीच सब वाणिज्यिक सौदे अपने अपने देशों में समय समय पर प्रवृत्त आयात, निर्यात तथा वैदेशिक-विनिमय विनियमों के अनुसार किये जायेंगे।

अनुच्छेद ३

दोनों संविदाकारी पक्ष दोनों देशों में तत्समय प्रवृत्त विधियों और विनियमों के अधीन संलग्न अनुसूचियों 'क' और 'ख' में दी गई वस्तुओं के आयात और निर्यात के लिये सुविधायें देने के लिये सहमत हैं।

अनुच्छेद ४

वर्तमान करार दोनों संविदाकारी पक्षों को उन वस्तुओं के व्यापार में सुविधा देने से नहीं रोकेगा जो संलग्न अनुसूचियों 'क' और 'ख' में नहीं दी गई हैं।

अनुच्छेद ५

भारत गणराज्य और चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश के बीच व्यापार उस करार के उपबन्धों के अनुसार किया जायगा जिस पर पेकिंग में २९ अप्रैल, १९५४ को भारत गणराज्य और चीन के जनवादी

गणराज्य के बीच भारत और चीन के तिब्बत प्रदेश के बीच व्यापार और समागम के लिये हस्ताक्षर हुये हैं।

अनुच्छेद ६

भारत गणराज्य की सरकार सहमत है कि चीन के जनवादी गणराज्य की सरकार की प्रार्थना पर वह प्रवृत्त नियमों के अधीन ऐसी वाणिज्यिक वस्तुओं के लिये जो भारत में प्राप्त नहीं हो सकती, कलकत्ता पत्तन में प्रवेश की तथा तदनन्तर चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश में जाने देने की उचित सुविधायें प्रदान करेगी। ये सुविधायें केवल उन वस्तुओं को प्रदान की जायेंगी जिनका उत्पत्ति-स्थान चीन हो।

अनुच्छेद ७

भारत गणराज्य और चीन के जनवादी गणराज्य के बीच सब वाणिज्यिक और अवाणिज्यिक भुगतान, पारस्परिक सुविधानुसार, भारतीय रुपयों या पौंड स्टर्लिंग में किये जा सकेंगे। ऐसे भुगतानों की सुविधा के प्रयोजन से चीन का जनवादी बैंक भारत में एक या अधिक ऐसे वाणिज्यिक बैंक (बैंकों) में जो वैदेशिक विनिमय में व्यवहार करने के लिए प्राधिकृत हों, 'क' कहलाने वाला (वाले) लेखा (लेखे) खोलेगा। इसके अतिरिक्त चीन का जनवादी बैंक, यदि आवश्यक हो, भारत के रिजर्व बैंक में, 'ख' कहलाने वाला एक अन्य लेखा खोलेगा। दोनों देशों के बीच सब भुगतान लेखा (लेखे) 'क' द्वारा किया जायगा। लेखा 'ख' का उपयोग केवल, जब कभी आवश्यक हो, लेखा (लेखे) 'क' में शेष राशि की पूर्ति के लिये किया जायगा। भारत के निवासियों द्वारा चीन के जनवादी गणराज्य के निवासियों को किये जाने वाले भुगतान, ऐसे भुगतान की राशि को उपर्युक्त लेखा (लेखे) 'क' में आकलन द्वारा किये जा सकेंगे। चीन के जनवादी गणराज्य निवासियों द्वारा भारत के निवासियों को किये जाने वाले भुगतान उक्त लेखा (लेखे) 'क' से निकलन द्वारा किये जायेंगे। लेखा (लेखे) 'क' की पूर्ति, जब और जैसी आवश्यकता पड़े, निम्नलिखित रीतियों में से एक के द्वारा की जायेगी, अर्थात् —

(१) चीन के जनवादी बैंक के अन्य वाणिज्यिक बैंक के साथ अन्य लेखा 'क' में से या भारत के रिजर्व बैंक के साथ लेखा 'ख' में से निधियां स्थानान्तरित कर के,

(२) सम्बन्धित बैंक को, स्टर्लिंग बेच कर।

लेखा 'ख' की पूर्ति या तो भारत के रिजर्व बैंक को स्टर्लिंग बेच कर या लेखा (लेखे) 'क' से रकमें स्थानान्तरित कर के की जायेगी।

२. इस करार के अनुच्छेद ७ में निम्नलिखित भुगतान आते हैं —

(१) वर्तमान करार के अन्तर्गत आयात और निर्यात की गई वस्तुओं के लिये भुगतान,

(२) वाणिज्यिक सौदों से सम्बन्धित भुगतान और बीमा, भाड़ा (किसी एक देश के जहाजों द्वारा वस्तुएं भेजने की दशा में), पत्तन सम्बन्धी व्यय, संग्रह और आगे भेजने का तथा माल लादने का व्यय मिलाकर,

(३) चल चित्रों के वितरण के लिये तथा सांस्कृतिक अभिनयों और अन्य प्रदर्शनियों की आय तथा व्यय के लिये भुगतान,

(४) वाणिज्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक अथवा शासकीय स्वरूप के प्रतिनिधि मण्डल की यात्राओं के व्यय का भुगतान,

(५) चीन में भारत गणराज्य के राजदूतावास, वाणिज्य दूतावास और व्यापार अभिकरणों के सधारण के लिये भुगतान तथा भारत में चीन के जनवादी गणराज्य के राजदूतावास, वाणिज्य दूतावास और व्यापार अभिकरणों के सधारण के लिये भुगतान,

(६) अन्य अवाणिज्यिक भुगतान जिन पर भारत के रिजर्व बैंक और चीन के जनवादी बैंक के बीच करार हो जाय।

३ चीन के जनवादी बैंक द्वारा सधृत लेखा (लेखे) 'क' या लेखा 'ख' के आकलन पक्ष में शेष राशियां स्टर्लिंग में, मांग पर किसी भी समय, भारतीय विनिमय बैंक संस्था द्वारा समय समय पर निश्चित बैंकों की स्टर्लिंग के लिए सामान्य विक्रय दर पर परिवर्त्य होंगी। उपर्युक्त शेष राशियां इस करार के समाप्त होने के बाद भी परिवर्त्य होंगी।

४ भारत गणराज्य और चीन के जनवादी गणराज्य के सीमावर्ती व्यापार के लिये भुगतान, रूढ़िगत प्रथा के अनुसार तय किये जायेंगे।

अनुच्छेद ८

दोनों सविदाकारी पक्ष ऐसे प्रश्नों पर एक दूसरे से परामर्श करने के लिये सहमत हैं जो करार को कार्यान्वित करने के दौरान में उत्पन्न हों।

अनुच्छेद ९

यह करार इस पर हस्ताक्षर होने की तिथि से प्रभावी होगा और दो वर्ष की अवधि के लिये मान्य रहेगा।

यह करार दोनों सविदाकारी पक्षों के बीच इसकी समाप्ति से ३ मास पूर्व प्रारम्भ होने वाली वार्ता द्वारा आगे को बढ़ाया या नवीकृत किया जा सकेगा।

१४ अक्तूबर, १९५४ को नई दिल्ली में हिन्दी, चीनी और अंग्रेजी भाषाओं में दो दो प्रतियों में सम्पादित हुआ। सब पाठ समान रूप से प्रामाणिक होंगे।

कुंग युआन
चीन के जनवादी गणराज्य की
सरकार की ओर से।

ह० व० रा० अय्यगार
भारत गणराज्य की सरकार
की ओर से।

अनुसूची (क)

चीन से भारत को निर्यात के लिये उपलब्ध वस्तुयें

१. अनाज

(१) चावल (२) चावल के अतिरिक्त अन्य अनाज (३) हरी फलियां (४) सोयाबीन—हरी तथा काली।

२. मशीनें

जिसमें प्लेनिंग और शेपिंग की मशीनें, बरमे की मशीनें, अन्य मशीनों के औजार इसक्वाइनेबल बालिंग प्रेस, वाष्प एंजिन, फसल काटने

के यन्त्र, सड़क कूटने के बेलन (रोड मशाल), बिजली के पम्प, पत्थर कम्प्रेसर कंक्रीट मिलाने वाले यन्त्र, पत्थर फोड़ने के यन्त्र, छापने की मशीनें, मोनोटाइप की मशीनें, ट्यूबवेल पम्प, बिजली की मोटरें, बीज बोने की मशीनें, मोटर ग्रेडिंग मशीनें, सूती कपड़ा बनाने की मशीनें, जूट का टाट बनाने की मशीनें, टेलीफोन एक्सचेंज स्टेशन, रबड़ चढ़े तार, टेलिप्रिन्टर, वायरलेस का सामान, डी० सी० तथा ए० सी० जेनरेटर और स्विचगियर उपकरण सम्मिलित हैं।

३. खनिज पदार्थ

(१) एल्यूमिना, बक्साइट और धातुएं (२) जिप्सम (३) ग्रेफाइट (४) फ्लोरस्पार (५) गन्धक (६) मन शिला (मनसल) (७) हरताल (८) सोहागा (९) शोधित नैफ्थालीन (१०) चिकनी मिट्टी (११) आर्सिनोआक्साइड (आर्सेनिक आक्साइड)।

४. रेशम तथा रेशमी कपड़ा

(१) सफेद तथा पीला कच्चा रेशम, वाष्प द्वारा कोये से निकाल कर लपेटा गया (२) बंटा हुआ रेशम (३) टसर रेशम (जंगली रेशम) (४) डुपियान रेशम (५) रेशमी कपड़ा (६) पूर्ण रेशमी कपड़ा (७) टसर रेशमी कपड़ा।

५. पशुओं से प्राप्त वस्तुएं

(१) ऊन (२) चमड़ा तथा खालें (३) बतख के पर, हंस के पर (४) ऊनी धागा (५) सफेद मोम (६) शहद।

६. कागज तथा लेखन-सामग्री

(१) अखबारी कागज (२) छापने के कागज के लिए मशीन से बनाई गई लुगदी (३) लपेटने का कागज (४) स्टैंसिल कागज (५) स्याही सोखता (६) फाउन्टेनपेन (७) पेंसिल (८) स्याही (९) छापने की स्याही (१०) मुद्रांकन मशीनें।

७. रासायनिक पदार्थ

(१) डाइक्लोरो बैंजीन (२) सोडियम फास्फेट (३) कार्बोलिक अम्ल (फिनोल) (४) पोटेशियम कार्बोनेट (५) मोनो क्लोरो बैंजीन (६) ६६६ कीटनाशक (७) ब्लीचिंग पाउडर।

८. तेल

(१) टार तेल (लकड़ी का तेल) (२) दालचीनी का तेल (३) पेपरमैंट का तेल।

९. विविध

(१) कपूर (२) तेजपात (३) कस्तूरी (४) गटाल (५) सौंफ का दाना (दाना साफ) (६) मेथल के रवे (७) सुवान की मिरी (८) गलेनल (९) रेजिन (१०) वनस्पति चिकित्सीय पदार्थ (११) बाला की झाली (१२) प्रतिदीप्त नलिका (१३) रंगलेप (१४) बार्डमिरल (१५) खेल का सामान (१६) फ्लैशलाइट (१७) कांच तथा कांच का सामान (१८) मुद्रित चीजें तथा पुस्तकें (१९) डिब्बों में बन्द वस्तुयें (२०) टार्चें (२१) निर्वात फ्लास्क (२२) बटन (२३) अल्लादाम चढ़ा सामान (२४) पटाखे (२५) मोजे बनियान आदि बुनने की कुरसी (२६) सिलाई की सुइयां (२७) मछली तथा समुद्री उत्पादन (२८) सूखे फल (२९) सब्जियां तथा सब्जियों से बनी वस्तुयें (३०) लहसुन (३१) ग्रामोफोन (३२) सिनेमा फिल्में (चित्र अंकित)।

अनुसूची (ख)

भाग १

तिब्बत समेत चीन को निर्यात के लिये भारत से उपलब्ध वस्तुयें

खाद्य पदार्थ तथा तम्बाकू

(१) चने, चावल और दालें (२) मसाले, जिनमें लाल मिर्च सम्मिलित है (३) कच्चा तम्बाकू।

कच्चा माल तथा मुख्यतः अनिर्मित पदार्थ

अयस्क तथा सान्द्रित पदार्थ

(१) सीस अयस्क (२) क्यानाइट अयस्क (३) मैंगनीज अयस्क (४) सीसा और जस्ता सान्द्रित।

वनस्पति तेल

मूंगफली का तेल

वाष्पशील तेल

(१) अगिया घास का तेल (२) चन्दन का तेल।

बुनने के रेशे

(१) कच्ची रुई (२) कच्चा ऊन।

लकड़ी तथा इमारती लकड़ी

चन्दन की लकड़ी।

खालें तथा चमड़ा

बकरे की कच्ची खालें और भेड़ का भाग भैंस की खालें और कमाई हुई खालें तथा चमड़ा।

विविध

(१) हर्रा तथा हर्रा का सत (२) पैराफिन मोम (३) कृत्रिम चमड़ा।

मुख्यतः निर्मित पदार्थ

रासायनिक द्रव्य, रासायनिक पदार्थ और औषधि तथा औषधें

(१) रासायनिक द्रव्य (आइसोप्रिल, कैलशियम क्लोराइड, बोरिक अम्ल, ग्लिसरीन, मैग्नेशियम क्लोराइड, मैग्नेशियम सल्फेट, नैफ्थालीन, पोटेशियम ब्रोमाइड, पोटेशियम नाइट्रेट, सोडियम ब्रोमाइड, सोडियम सल्फाइड, सोडियम सल्फाइट) (२) औषध, औषधें तथा चिकित्सा सम्बन्धी जड़ी बूटियां (३) तैयार किये हुये रंग (४) शार्क मछली का तेल।

औजार, उपकरण तथा साधन

(१) तापमापक थर्मामीटर (२) बिजली के लैम्प (३) विद्युत-प्रयोगक सामान (४) विद्युत चिकित्सा सम्बन्धी उपकरण (५) गणित

सम्बन्धी औज़ार (६) शल्य चिकित्सा सम्बन्धी औजार (७) एक्स रे उपकरण (८) टेलीफोन (९) बिजली के पखे।

मशीने

(१) बाल तथा रोलर बेयरिंग्ज (२) जनित्र (३) मोटरें (४) कपडा बनाने की मशीनें, जिनमे स्पिंडिल्स, रिंग फ्रेम, धुनने के एंजिन, करघे और फिनिशिंग की मशीनें सम्मिलित हैं (५) बायलर।

मशीनी औजार

इसमें सेंटर लेथ, बरमे की मशीनें, शेपिंग की मशीनें, स्लाटिंग की मशीने, प्लेनिंग की मशीने हेक्सा की मशीनें, यांत्रिक शक्ति दाबक, लेथ चक्स, लेथ सैंटर्स और ड्रिल चक्स, लेथ मैंड्रिल्स, वाइसेज प्लेन मशीने, ड्रिल स्लीव्ज, लकडी का मोटाई के प्लेनर्स, राउण्ड कालेट्स, एसिटिलीन जनित्र, राउण्ड सीमिंग मशीने, शक्तिचालित बैल्ट वाली गिलोटिन शीयरिंग मशीनें, लाइव सैंटर्स, हाथ के तथा पैर के दाबक, ह्रैंडल गिलोटिन शीयरिंग मशीने, प्लेन मिलिंग मशीनें सम्मिलित हैं।

धातु निर्मित चीजें

१ एल्युमिनियम, पीतल और तांबे का सामान २ कन्टेनर्स को छोड कर लोहे और इस्पात से निर्मित चीजे ३ अलौहस धातु के उत्पादन।

कपडा

१. सूती कपडे के थान और सूत से निर्मित चीजे २ सूती ट्विस्ट और धागा ३ फ्लैक्स से निर्मित चीजें ४ सिसल के रस्से और ट्वाइन ५. जूट से निर्मित चीजें।

वाहन

१ बाइसिकलें २. मोटर कारें।

विविध

१. भारतीय फिल्में (चित्र खिंची) २ हल्की इंजीनियरिंग की वस्तुए, केन्द्रापसारी पम्प, जी० आई० बाल्टियां, हरीकेन लालटेनें, सिलाई की मशीनें ३. प्लास्टिक से निर्मित चीजें ४ चपडा ५ अभ्रक ६ अदह सीमेंट की चादरें ७. सीमेंट ८ ह्यूम पाइप ९. मकान बनाने वालों का लोहे का सामान १०. टायर और ट्यूब ११ मशीनो के पट्टे १२ कागज १३ राल मिश्रित वस्तुयें १४. खेती के औजार १५ रोगाणुनाशक चीजें।

भाग २

चीन के तिब्बत प्रदेश को भारत से निर्यात के लिये उपलब्ध वस्तुएं

खाद्य पदार्थ तथा तम्बाकू

१. मिठाइयां २ उद्जनित तेल ३. डिब्बों मे बन्द फल और सब्जियां ४. सिगरेट।

कच्चा माल तथा मुख्यत: अनिर्मित पदार्थ

वनस्पति तेल

१. अरंडी का तेल २. कर्डीसीड का तेल ३. अलसी का तेल ४. सरसों का तेल ५. नाइगरसीड का तेल ६. रेपसीड का तेल।

कपडा

पहनने के वस्त्र।

विविध

वनूल गोंद के अतिरिक्त अन्य गोंद।

मुख्यत निर्मित पदार्थ

औजार, उपकरण तथा साधन

१ मचायन २ बिजली के तार और केबिल ३ विज्ञान सबन्धी औज़ार ४ ट्रांसमिशन लाइन उपस्कर ५ वायरलैस सम्बन्धी औज़ार।

मशीनें

स्ट्रोल तथा ट्रांसमिशन गीयर।

धातु निर्मित चीजे

१ बोल्ट और नट २ इनेमल का सामान ३ लकडी के पेंच।

कागज समेत लेखन सामग्री

कागज तथा लेखन-सामग्री।

वाहन

(१) ट्रक्स (२) गैरिजें तथा गाडियां (३) गाडियो के पहिये और धुरे।

विविध

(१) मोमबत्तियां (२) दीवाल की घडियां (क्लाक) (३) निर्मित मूगा (४) दियासलाइयां (५) साबुन तथा धोने के पाउडर (६) प्रसाधन वस्तुयें (७) सुअर की चर्बी (८) सुअर का मांस (९) चीनी (१०) बरसातियां (११) रबड के जूते (१२) रीइन्फोर्समेन्ट के लिये लोहे के सरिये (१३) जस्ता चढा लोहे का तार (१४) कांटेदार तार (१५) इस्पात की प्लेटें और चादरें (१६) सडक कूटने के बेलन (१७) गैसोलीन, मिट्टी का तेल, डीजल और इंजन के तेल (१८) सादी तथा नालीदार जस्ता चढी लोहे की चादरें (१९) चमडा और चमडे की वस्तुएं (२०) सेफ्टी रेजर ब्लेड (२१) बिस्कुट (२२) टायरों तथा ट्यूबों को छोड कर रबड की बनी चीजें (२३) कांच की चादरें और कांच का सामान (२४) खेल का सामान (२५) सख्त लकडी।

दो पत्र

भारत सरकार,
वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय
नयी दिल्ली
१४ अक्तूबर, १९५४

प्रिय श्री कुंग,

उस चर्चा के दौरान मे, जिसके फलस्वरूप भारत गणराज्य की सरकार और चीन के जनवादी गणराज्य की सरकार के बीच व्यापार करार हुआ है, यह स्वीकार किया गया था कि अनुच्छेद ६ और उसे कार्यान्वित करने की प्रक्रिया के बारे में दोनो सरकारों के अभिप्राय पत्र विनिमय द्वारा अभिलिखित किये जाने चाहिये।

(२) समता और पारस्परिक हित के आधार पर दोनों सरकारें भारत और चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश के बीच वर्तमान सामान्य व्यापार को मजबूत तथा विकसित करना चाहती हैं।

(३) भारत गणराज्य की सरकार यह समझती है कि चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश को कतिपय ऐसी आर्थिक वस्तुओं की आवश्यकता पड़ सकती है, जो भारत से प्राप्त नहीं हो सकतीं। अतएव वह ऐसी वस्तुओं को चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश में जाने देने के लिये कलकत्ता होकर निष्कासन की समुचित सुविधायें देने के लिए राजी है पर शर्त यह है कि इन वस्तुओं का उत्पत्ति स्थान चीन होना चाहिये।

(४) यह स्वीकार किया जाता है कि पिछली कंडिका में उल्लिखित वस्तुओं के निष्कासन और परिवहन के लिये प्रक्रिया की निम्नलिखित स्थूल बातें अपनाई जायें :—

(१) निष्कासन और परिवहन को सुविधाजनक बनाने की दृष्टि से चीन के जनवादी गणराज्य की सरकार भारत सरकार को चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश को भेजी जाने वाली ऐसी वस्तुओं की अग्रिम सूचना भारत में ऐसी वस्तुओं की उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए यह सुनिश्चित करने के लिये देगी कि क्या निष्कासन और जाने देने की सुविधायें प्रदान की जा सकती हैं। ऐसी वस्तुओं के परिवहन से सम्बन्धित विवरों को नयी दिल्ली स्थित चीनी राजदूतावास और भारत सरकार के बीच बातचीत कर के तय किया जावेगा।

(२) निष्कासित किये जाने के लिए स्वीकृत वस्तुयें, आयात होने पर, कलकत्ता पत्तन के सीमाशुल्क गृह में रखी जावेंगी।

(३) भारतीय सीमाशुल्क विनियमों के अधीन रहते हुये, और सीमा शुल्क अधिकारियों द्वारा अपेक्षित निरीक्षण करने पर सीमाशुल्क मुहर के अन्तर्गत उन वस्तुओं को स्वीकृत मार्गों से चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश में भेजे जाने के लिये निष्कासित किया जावेगा।

(४) वस्तुओं को अन्तिम निर्गम स्थान पर स्थल सीमाशुल्क पदाधिकारी के समक्ष सीमाशुल्क की अक्षत मुहरों सहित प्रस्तुत किया जावेगा और चीन के जनवादी गणराज्य के तिब्बत प्रदेश को निर्यात के लिये निष्कासित किया जावेगा।

(५) यदि वस्तुएं अखण्डित मुहरों सहित प्राप्त हों तो स्थल सीमा शुल्क अधिकारी वस्तुओं को निष्कासित करेगा और इस आशय का प्रमाण पत्र देगा।

(६) कलकत्ता पत्तन पर सीमाशुल्क अधिकारियों के समक्ष ऐसा प्रमाण पत्र उपस्थित किये जाने पर उस प्रमाणपत्र बन्ध को काट कर, जिस पर पारस्परिक सहमति हो, निक्षेप को लौटा दिया जावेगा।

(५) यह पत्र और आप की पुष्टि दोनों सरकारों द्वारा करार का अंग माने जायेंगे।

भवदीय

ह० व० रा० अय्यंगार

तत्रभवान कुंग युआन
चीन के वैदेशिक व्यापार उपमंत्री,
तथा चीनी व्यापार प्रतिनिधिमण्डल के नेता,
नयी दिल्ली

भारत सरकार,
वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,
नयी दिल्ली
१४ अक्तूबर, १९५४

प्रिय श्री कुंग,

उस वार्ता के दौरान में जिसके फलस्वरूप भारत और चीन के बीच वर्तमान व्यापार करार हुआ है, दोनों प्रतिनिधिमण्डलों ने यह माना था कि निरीक्षण, सर्वेक्षण, नौवहन, बीमा और व्यापारियों द्वारा यात्रा की समस्याओं पर विचार किया जाना चाहिये और उन्हें व्यावहारिक रूप से हल किया जाना चाहिये जिससे कि करार के उद्देश्यों को और भी अच्छी तरह से पूरा किया जा सके और दोनों देशों के बीच व्यापार सम्बन्ध और भी दृढ़ हो सकें। ये समस्यायें सिद्धान्त की अपेक्षा ब्यौरे के प्रश्नों से अधिक सम्बन्ध रखती हैं और इसी के अनुसार दोनों प्रतिनिधिमण्डल इस बात पर सहमत हो गये हैं कि इन विषयों पर चर्चा बाद की किसी तिथि के लिए स्थगित कर दी जावे। आशा है कि इन बाद की चर्चाओं में हमारी दोनों सरकारें ऐसा रचनात्मक हल निकाल सकेंगी जो हमारे दोनों देशों के बीच व्यापार को प्रोत्साहित करने और उसे सरलता से आगे बढ़ाने में सहायक होगा।

(२) इस बीच दोनों देशों के बीच व्यापार उस आधार पर होता रहेगा जिस पर सम्बन्धित आयात तथा निर्यात करने वाले सहमत होंगे।

(३) यह पत्र और आप की पुष्टि दोनों सरकारों द्वारा करार के अंग माने जायेंगे।

भवदीय

ह० व० रा० अय्यंगार

तत्रभवान श्री कुंग युआन,
चीन के वैदेशिक व्यापार उपमंत्री,
तथा चीनी व्यापार प्रतिनिधिमण्डल के नेता,
नयी दिल्ली।

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

नारवे का औद्योगिक उत्पादन बढ़ा

भारत को रासायनिक पदार्थों आदि का निर्यात

संसार के विभिन्न देशों में स्थित हमारे व्यापार प्रतिनिधियों की जो नवीनतम रिपोर्ट प्राप्त हुई है उनके अनुसार नारवे के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हो गई है। इन उत्पादनों का निर्यात भी अच्छा हुआ है। स्वीडन का व्यापार सन्तुलन अब उसके कम प्रतिकूल रह गया है।

लंका और भारत का व्यापार सन्तुलन जून १९५४ में ७०७ लाख रु० से लंका के प्रतिकूल रहा जबकि मई १९५४ में १०३.२ लाख रु० से रहा था।

नेपाल भारत से पेट्रोल, चीनी, कपड़ा, जूते आदि नित्यप्रति काम आने वाली वस्तुएं मंगा रहा है।

~~~~~~

नारवे : औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि

नारवे के औद्योगिक उत्पादन की गत रुकी रहने के बाद, १९५४ की प्रथम तिमाही में काफी वृद्धि हो गयी। यह वृद्धि मुख्यतः कुछ प्रमुख उद्योगों के उत्पादनों का निर्यात बहुत बढ़ जाने के कारण हुई।

१९५१ तक नारवे के उद्योग में उन्नति होती रही और उस वर्ष का सामान्य सूचक अंक १२१ (आधार १९४९=१००) रहा। उसके बाद मन्दी आ गयी। १९५२ में उत्पादन में कोई वृद्धि नहीं हुई और सूचक अंक १२२ रहा। परन्तु १९५३ के शिशिर में उत्पादन में पुनः वृद्धि हो गयी और १९५४ की प्रथम तिमाही में वह और भी बढ़ गया।

नारवे के उद्योगों के विस्तार का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है —

(आधार १९४९=१००)

	कुल उद्योग			निर्यात करने वाले उद्योग		
	१९५२	१९५३	१९५४	१९५२	१९५३	१९५४
प्रथम तिमाही	१३३	१३३	१४४	१५८	१५०	१७८
द्वितीय तिमाही	११६	१२४	—	१२०	१२१	—
तृतीय तिमाही	१०६	१०७	—	१११	१२६	—
चतुर्थ तिमाही	१२७	[illegible]	—	१२५	१२६	—

इमारती लकड़ी उद्योग में, जो नारवे के निर्यात करने वाले प्रमुख उद्योगों में से एक है, विशेष उन्नति हुई। निर्यात करने वाले उद्योगों की उन्नति से नारवे की आर्थिक स्थिति पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा है, विशेषतः यह देखते हुए कि हाल में ही मुद्रा सम्बन्धी गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ा था। निर्यात के आंकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि १९५४ की प्रथम तिमाही में निर्यात का मूल्य, गत वर्ष की इसी अवधि की अपेक्षा, काफी बढ़ गया। आयात का व्यय बराबर कम होता गया है और व्यापार सन्तुलन का कुल घाटा ९५ से ३० प्र० श० तक कम हो जाने की आशा है। १९५४ की प्रथम तिमाही में व्यापार की शर्तों का सूचक अंक १०० रहा, जब कि १९५३ की इसी अवधि में यह ९३ था।

दूसरी ओर व्यापारी जहाज, जिन्हें देश की आर्थिक उन्नति में मुख्य भाग लेना पड़ता है, उनकी स्थिति प्रतिकूल बनी रही। जहाजों के किरायों की कमाई अब भी बहुत कम है और नारवे के व्यापारी जहाजों की कमाई में बराबर कमी होती जा रही है। १९५४ की प्रथम तिमाही में नारवे के कुल भुगतान सन्तुलन में ३,११० लाख क्रोनर का घाटा रहा, जो १९५३ की इसी अवधि के लगभग बराबर ही है। फिर भी अमेरिका तथा स्वीडन से ऋण प्राप्त होने से नारवे की मुद्रा स्थिति में हाल में कुछ सुधार हुआ है।

भारत से व्यापार

१९५४ की प्रथम तिमाही में नारवे ने भारत से जो वस्तुएं मंगाई उनमें ये प्रमुख हैं : चाय (१,७५,००० क्रोनर मूल्य), गोल मिर्च (१,२४,००० क्रो०), मसाले (२,३१,००० क्रो०), ऊन (२,०२,००० क्रोनर), रुई रद्दी (१,९८,००० क्रो०), तेल (९६,००० क्रो०), सूती कपड़ा और सूत
~~~~~~

(३ ४,००० क्रो०), जूट का मोटा टाट पटुआ और जूट की बोरियां (१ ०६ ०० क्रोनर) आदि।

इसी अवधि में स्वीडन से भारत को जो वस्तुएं गयीं, उनमें प्रमुख थे—छपाई और रद्दी कागज (४५ ३४ ००० क्रो०), फूलभूत धातुएं (४,८४,००० क्रो०), रसायनिक व मिश्रित पदार्थ (२,१७,००० क्रो०), रबड़ के पट्टे तथा रबड़ का अन्य सामान (१,०५,००० क्रो०) धातुओं से बना सामान (५,६०,००० क्रो०) आदि।

स्वीडन : जनवरी-जून १९५४ में व्यापार-सन्तुलन की प्रतिकूलता घटी

वर्तमान वर्ष की प्रथम व द्वितीय तिमाहियों में स्वीडन के निर्यात का परिमाण लगभग ०० प्र० श० कम गया, जब कि आयात में केवल ४ प्र० श० की वृद्धि हुई। जनवरी से जून १९५४ की पूरी छमाही में निर्यात व आयात दोनों में गतवर्ष की इसी अवधि की अपेक्षा, १० प्र० श० की वृद्धि हुई।

आयात मूल्य वर्तमान वर्ष की प्रथम दो तिमाहियों में, सामान्यतः स्थिर रहे, जब कि आयात मूल्यों की दर कुछ वृद्धि की ओर थी। १९५० के आयात मूल्यों में कुछ कमी रही थी तो आयात में निर्यात की अपेक्षा अधिक था।

१९५४ की प्रथम छमाही में स्वीडन का सब से प्रमुख निर्यात बाजार ब्रिटेन रहा, जिसने स्वीडन के ०८,४४० लाख क्रो० के कुल निर्यात में लगभग पांचवें भाग अर्थात् ७,०८० लाख क्रो० का माल मंगाया। स्वीडन का माल मंगाने वालों में ब्रिटेन के बाद क्रमानुसार पश्चिमी जर्मनी, नार्वे, डेनमार्क, हालैण्ड और अमेरिका का स्थान रहा। स्वीडन को माल भेजने वालों में पश्चिमी जर्मनी सब से प्रमुख रहा और अब उसकी यह स्थिति पुष्ट हो गयी है। माल भेजने वालों में पश्चिमी जर्मनी के बाद क्रमानुसार अमेरिका हालैण्ड, ब्रिटेन, लक्समबर्ग और फ्रांस का स्थान रहा।

एशिया में स्वीडन का प्रमुख ग्राहक भारत था। वर्तमान वर्ष की प्रथम छमाही में स्वीडन ने भारत को ०३७ लाख क्रो० का माल भेजा, जब कि १९५३ की इसी अवधि में ३१० लाख क्रो० का भेजा था। इसके बाद क्रमानुसार इण्डोनेशिया ने २०८ लाख क्रो०, जापान ने २९६ लाख क्रो०, और पाकिस्तान ने ११६ लाख क्रो० का माल मंगाया।

१९५४ की प्रथम छमाही का आर्थिक विवरण

१९५४ की प्रथम छमाही में स्वीडन के विदेशी व्यापार में कुल ५,८८० लाख क्रो० का आयात अधिक हुआ था। पूरा विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

स्वीडन का विदेशी व्यापार

(लाख क्रोनर)

	कुल आयात	कुल निर्यात	आयात (—) निर्यात (+) बचत
१९४८	६,०७८	५,८४२	— २३६
१९४९	५,३३३	५,२५०	— ८३
१९५०	६,१०२	५,००७	— १०९५
१९५१	६,१८४	६,२२५	+ ४१
१९५२	८,९४७	८,१२४	— ८२०
१९५३*	८,१६१	७,६४५	— ५१६

*प्रारम्भिक आंकड़े।

भारत स्वीडन का व्यापार

१९५४ के प्रथम पांच महीनों में भारत स्वीडन का व्यापार-सन्तुलन १७० लाख क्रो० (लगभग १८० लाख रु०) से भारत के प्रतिकूल रहा। प्रथम छमाही में यह ००० लाख क्रो० (लगभग ०११ लाख रु०) से प्रतिकूल रहा था जब कि गतवर्ष की इसी अवधि में यह १६६ लाख क्रो० (लगभग १०८ लाख रु०) से प्रतिकूल रहा था। इससे सम्बन्धित आंकड़े निम्न तालिका में दिए गये हैं —

भारत से आयात

(लाख स्वीडन क्रोनर)

वस्तु	जनवरी—जून १९५४
खाद्य पदार्थ	०८
(कॉफी चाय और मसाले)	(००)
खनिज और पृथ्वी से खोदकर निकाले गये पदार्थ	१४
कपड़े बनाने के रेशे	१७
कपड़ा मोजा-बनियान	११
योग (अन्य वस्तुओं सहित)	६२

भारत को निर्यात

वस्तु	जनवरी—मई १९५४
खाद्य पदार्थ (दूध, मक्खन आदि दुग्धशाला के उत्पादन)	५
रासायनिक पदार्थ	६
लकड़ी व उससे बना माल	५
लुग्दी	४७
कागज और गत्ता	८३
लोहा व इस्पात का सामान	५१
मशीनें (बिजली के सिवा)	६१
मशीनें (बिजली की)	११
योग (अन्य वस्तुओं सहित)	५८३

औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि

१९५४ की प्रथम छमाही में स्वीडन के उद्योगों के उत्पादन का औसत परिमाण, गतवर्ष की इसी अवधि की अपेक्षा, ५ प्र० श० बढ़ गया। जून मास में सूचक अंक ००६ (आधार १९३५=१००) हो गया जब कि मई १९५४ में यह ०११ तथा जून १९५३ में ०१४ था, यद्यपि मौसम के अनुसार समायोजित अंक ०१७ था।

वर्तमान वर्ष की प्रथम छमाही के औद्योगिक उत्पादन की, १९५३ की इसी अवधि के उत्पादन से तुलना करने से मालूम होता है कि लुगदी व कागज उद्योग में लगभग १७ प्र० श० की वृद्धि हुई है, जब कि इमारती लकड़ी का उत्पादन १० प्र० श० घटा है। इस वर्ष लकड़ी के सामान का निर्यात ऊंचे स्तर पर हुआ है। खरीदारों की पसन्द मुख्यतः बढ़िया किस्मों पर केन्द्रित रही है। गत छः महीनों में लुगदी के मूल्य स्थिर रहे और मूल्यों की जो गतिविधि हुई है, उसका रुख वृद्धि की ओर रहा है।

खानों में लोहा निकालने के उद्योग में लगभग १० प्र० श० की कमी रही। दूसरी ओर लोहे व इस्पात सम्बन्धी कारखानों का उत्पादन ७ प्र० श० बढ़ गया परन्तु १९५३ में लोहे सम्बन्धी कारखानों में, आर्डरों की कमी रही जो वर्तमान वर्ष की प्रथम छमाही में भी जारी रही।

डेनमार्क : भारत से व्यापार

जनवरी से मई १९५४ की अवधि में डेनमार्क में कुल १०,९८० लाख क्रो० अर्थात् १९५३ की इसी अवधि से २,८८० लाख क्रो० अधिक का आयात हुआ। मई मास में ही आयात का योग ६,४५८ लाख क्रो० हो गया, जब कि एक मास पूर्व यह ६,२३९ लाख क्रो० था। दूसरी ओर निर्यात में ४५६ लाख क्रो० की वृद्धि हो गयी, जिससे मई में आयात की बचत, अप्रैल में १,६१८ लाख क्रो० से, घटकर ९४२ लाख क्रो० रह गयी।

भारत तथा अन्य कुछ देशों से हुए डेनमार्क के व्यापार का विवरण निम्न प्रकार है :

(००० क्रोनर)

	डेनमार्क से आयात	डेनमार्क को निर्यात	व्यापार सन्तुलन
भारत	९,८४५	५,११४	— ४,७३१
पाकिस्तान	१,२२३	२९९	— ९२४
बर्मा ...	२,४४३	७०२	— १,७६१
लंका ...	१,०९९	२,१९७	+ १,०९८
जापान	१०,९७८	१,८६५	— ९,११३
चीन	५७२	१,७६४	+ १,१९१
इण्डोनेशिया	८,६४३	६५	— ८५७८
मलाया	७,३७५	१२,६०२	+ ५,२२७

भारत से आयात

(००० क्रोनर)

वस्तु	
काफी, कोकोआ, चाय, चाकलेट, और मसाले	११९
चारा व पशुओं के खाने की अन्य वस्तुएं	१०४
रबड़, कच्चा व कृत्रिम	३१
बुनाई के रेशे	१,३४८
कृत्रिम खाद व कच्चे खनिज पदार्थ ...	२६
विविध, पशुओं तथा वनस्पतियों का कच्चा उत्पादन	७८
पशुओं तथा वनस्पतियों से उत्पन्न तेल और चिकनाई वाले पदार्थ	६५
सूत और कपड़ा ...	३,१४९
योग (अन्य वस्तुओं सहित)	५,११४

भारत को निर्यात

(००० क्रोनर)

वस्तु	
दूध, मक्खन आदि दुग्धशाला के उत्पादन, अण्डे और शहद	४,५४३
पेय पदार्थ	२३५
खाद व कच्चे खाद्य पदार्थ	२८१
चमड़ा रंगने और कमाने के पदार्थ	७८
औषधें	१,६००
धातु रहित खनिज पदार्थों से बना सामान	१५२
धातुओं से बना सामान	१९२
मशीनें (बिजली के सिवा)	१,०५०
बिजली की मशीनें आदि	१,१९०
योग (अन्य वस्तुओं सहित)	९,८४५

मारीशस : अनुकूल व्यापार-सन्तुलन

१९५४ की प्रथम तिमाही में मारीशस के कुल व्यापार का मूल्य १०,५७,७६,७९३ रु० रहा, जिसमें निर्यात ५,७७,११,८६३ रु० और आयात ४,८०,६४,९३० रु० का हुआ। यह अनुकूल व्यापार सन्तुलन, १९५३ में शेष बचे हुए चीनी के उत्पादन का बहुत बड़ा भाग निर्यात हो जाने के कारण हुआ है।

वर्तमान वर्ष की प्रथम तिमाही में कुल आयात का मूल्य, १९५३ की इसी अवधि की अपेक्षा, २४ प्र० श० घट गया है। यह कमी, बर्मा से चावल तथा पूर्व अफ्रीका से खाने योग्य तेल व चिकनाई वाले पदार्थों का आयात बहुत ही कम हो जाने के कारण हुई है।

आयात

कुछ प्रमुख देशों से हुए आयातों का (लागत, भाड़ा, बीमा सहित) मूल्य रुपयों में निम्न प्रकार है

मूल देश	(रुपये)
ब्रिटेन . .	२०,४९२ ६०७
आस्ट्रेलिया	८,०६४ ७५०
हांगकांग ..	५०६ ४५५
भारत	०,६०५,९६६
स्ट्रेट्स सेटलमेण्ट्स	७६७,०१४
बेलजियम . ..	६६७,६८०
फ्रांस	१,३३०,३८५
जर्मनी .	१,६८६,१८७
इटली	७१०,४०५
जापान	११०,८४०
स्याम ..	१,१४३,०१६
अमेरिका ... —	३५८,८८३
योग (अन्य सहित)	४८,०६४,६३०

निर्यात

मारीशस से कुछ प्रमुख देशों को किये गये निर्यात का जहाज किराया आदि व्यय मुक्त (F O B) मूल्य रुपयों में निम्न प्रकार है —

अन्तिम गन्तव्य स्थान	(रुपये)
ब्रिटेन ...	५,०८,६१,७१५
लंका	५३,६१,१७४
भारत	२
केनिया	६,८३८
टांगानीका .	५,१२७
फ्रांस	६,१५१
जर्मनी	७,०००
मैडागास्कर ...	२,५६७
अमेरिका ...	७,५८,८००
योग (अन्य सहित)	५,७०,४६,७४६

स्थानीय उत्पादन की निर्यात की गयी कुछ प्रमुख वस्तुओं के जहाज किराया आदि व्यय मुक्त (F O B) मूल्य रुपयों में निम्न प्रकार हैं —

वस्तु		परिमाण	मूल्य (रुपए)
चीनी .	किलो	१०९ ०८३ ०४८	५४,७५६,०६६
शीरा	,,	४४ ८०५,४०७	२,१६६,३३०
इथाइल एल्कोहॉल	लिटर	—	—
चाय	किलो	० ६७७	६४,९६०
मुसब्बर का रेशा ...	,,	१५ ०००	७,०००
अन्य घरेलू पदार्थ		—	५४,६३०
योग घरेलू निर्यात			५७,०४६,७४६

भारत से व्यापार

भारत तथा अन्य देशों से आने वाले सूती कपड़े, मिश्रित रेशे के कपड़े तथा काच के रेशे के आयात का तुलनात्मक विवरण निम्न तालिका में दिया गया है —

सूती कपड़े	वर्ग मीटर	लागत भाड़ा आदि सहित मूल्य
भारत .	१,०१०,५८७	९४५,७२७
ब्रिटेन	८६,४८१२	१,५९९,३६४
हांगकांग .	११,६१६	१३,९४७
जापान .	१,०७८	१,४४४
स्ट्रेट्स सेटलमेण्ट	४१५	१,७०७
फ्रांस .	१३२	७६६
बेलजियम .	७०	१,०७५
स्विट्जरलैण्ड ...	४६	४७१
योग	१,९०५ १५५	७,५३६,६०२
काच और कृत्रिम रेशों के कपड़े		
ब्रिटेन ...	५६०,९०४	१,१०६,१६१
हांगकांग .	०१ ०१३	७२,४०६
इटली .	४६ ६४१	३६,६२५
भारत ..	४७,३१०	४७,४८८
जापान ...	२४,६६०	३०,७७२
फ्रांस	१० १४८	३०,५५५
जर्मनी .	१५६	१,०५३
मैडागास्कर ..	६	६५
योग ...	६८४,३१८	१,३२८ १५५

लंका : भारत से प्रतिकूल व्यापार-सन्तुलन

मई व जून १९५४ तथा जून १९५३ में लंका द्वारा भारत से किये गये आयात व निर्यात का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है —

(लाख रु०)

	मई १९५४	जून १९५४	जून १९५३
भारत से लंका में आयात .	१४३०	१४३८	१६५१
भारत को लंका से निर्यात ...	३९८	३६८	२३५
भारत के अनुकूल व्यापार सन्तुलन	१०३२	१०७०	१४१६

इस प्रकार जून १९५४ में भारत का लंका से व्यापार सन्तुलन, एक मास पूर्व की अपेक्षा, कुछ सुधर गया है। भारत ने लाल मिर्च, इमली, अण्डे, सूखी मछली, गुड़ और नकली रेशम, मई १९५४ की अपेक्षा, अधिक मूल्य के भेजे, जब कि सूती माल विशेषतः हाथ करघे के सारंग, साड़ियाँ और रंगे हुए माल कम मूल्य के भेजे। जून १९५४ में भारत ने नारियल का तेल, मई १९५४ की अपेक्षा, अधिक मंगाया।

प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन

मई व जून १६५४ में लंका द्वारा किये गये आयात (सोना, चांदी व सिक्कों सहित) व निर्यात (पुनर्निर्यात सहित) का विवरण नीचे दिया गया है। तुलना की दृष्टि से जून १६५३ के आंकड़े भी दिये गये हैं —

(लाख रुपये)

	मई १६५४	जून १६५४	जून १६५३
लंका से निर्यात	१ ४६७	१,४७३	१ २६०
लंका में आयात	१,०१५	१,४८४	१,४६०
व्यापार सन्तुलन ...	४५२	—११	—२२०

नेपाल : भारत से व्यापार

जून १६५४ में भारत से नेपाल में आई वस्तुओं में पेट्रोल, चीनी, कपड़ा, कपड़े के जूते तथा मोटर व साइकिलों के टायर व ट्यूब मुख्य हैं। विदेशों से मिट्टी का तेल, लौंग, मूंगा, साइकिलें तथा शराब मंगाई गई। उपर्युक्त वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है —

भारतीय माल	
चीनी	११० बोरियां
पेट्रोल	२० ८०० गैलन
कपड़ा	६६ गांठें
कपड़े के जूते	१६० दर्जन
मोटर टायर	२८ संख्या
मोटर ट्यूब	२१ ,,
साइकिल टायर	२०० ,,
साइकिल ट्यूब	१६० ,,
विदेशी माल	
मिट्टी का तेल	३,६६६ गैलन
साइकिलें	१ पेटी
शराब	३४ पेटियां
मूंगा	१ पार्सल
लौंग	११ पेटियां
मोटर साइकिलें	८ संख्या

विराटनगर से व्यापार

मई व जून १६५४ में भारत से विराटनगर में आई मुख्य वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है —

	मई (मन)	जून (मन)
कोयला	५६००	७०००
मशीनें	१७००	१४५०
पेट्रोल	१६५०	१६००
डीजल तेल	१८५०	२८००
मिट्टी का तेल	२७५०	३८००
मट्टी का तेल	५१५०	५६००
सूती माल	३०००	२५००
रेशमी माल	३६५	३३५
लाख का सामान	१५००	१५५०
सीमेंट	३८५०	२३६०
नमक	११००	८०००
कांच व कांच का सामान	४५०	५३०
साबुन ...	३००	३५०
दवाइयां	१६०	२००
मसाले	६६०	५५०
लिखने की सामग्री	६६०	८५०
मेवा	११०	८००
गेहूं	२६५०	२४८०
दालें	११००	१२५०
रूई कच्ची	१४५०	१२००

इसी अवधि में विराटनगर से भारत को निर्यात की गई मुख्य मुख्य वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है —

	मई (मन)	जून (मन)
कोयला	२,०८,०००	६०,५५०
जूट कच्चा	४३५०	२०००
चमड़ा व खालें	७२०	१५०
लाख कच्ची	३१५	१००
जड़ी बूटियां	२३०	२०५
चावल	२६,०००	१८ ०००
धान	१८,०००	१०,०००
जूट का सामान	१६,०००	१३,०००
शीरा	६०१	१३६
खलियां	८०६	१२५

जानकारी विभाग

औद्योगिक विषय

उद्योगों में लगी पूंजी

लोक सभा में पूछे गये उद्योग सम्बन्धी एक प्रश्न के उत्तर में योजना उप-मन्त्री श्री एस० एन० मिश्र ने योजना काल के प्रथम तीन वर्षों (१९५१-५४) में विभिन्न उद्योगों में लगाई गई पूंजी के विवरण की एक तालिका उपस्थित की। यह तालिका इस प्रकार है —

	उद्योग	लाख रुपयों में (अनुमानित)
१	लोहा व इस्पात-प्रमुख उत्पादक	१,१६८
२	अलूमीनियम	१४२
३.	धातु सम्बन्धी अन्य उद्योग	७५
४.	बाइसिकिल ...	२४१
५.	डीजल इंजिन व पम्प	४०
६.	मोटर गाड़ी	११२
७.	कपड़ा मिल की मशीनें .	१७५
८.	रेल के इंजन डिब्बे	६४२
९.	जहाज निर्माण	६०१
१०.	बिजली के केबिल और तार ..	१६८
११.	बिजली बनाने की मशीनें	१,६२६
१२.	अन्य इंजीनियरी उद्योग ...	८८१
१३	भारी रासायनिक पदार्थ, रासायनिक खाद तथा औषधि	१,४०४
१४.	रंग लेप और वारनिशें ...	४५
१५.	पट्रोलियम शोधक कारखाने	१,७०७
१६.	कागज ...	५८८
१७.	रेयन . ..	४८७
१८	सीमेण्ट	६२८
१९.	चीनी	७२
२०.	वनस्पति तेल, वनस्पति तथा साबुन	८२
२१.	कांच .. .	१६५
२२.	सूती कपड़ा .. .	४५०
२३.	अन्य उद्योग ... -- ...	४२६
	योग .	१०,५५४

खानों से अधिक लोहा निकाला गया

खानों के मुख्य निरीक्षक से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, भारत में लोहे की खानों में जुलाई १९५४ में ३,१५,६३२ टन कच्चा लोहा निकाला गया, जब कि जून १९५४ में ३,०६,५४५ टन निकाला गया था।

६० खानों से जो विवरण जुलाई १९५४ का मिला है, उससे ज्ञात होता है कि कुल मिलाकर ३,०२,६४० टन कच्चा लोहा, लोहे और इस्पात के कारखानों को तथा ४९,६८९ टन विदेशी मण्डियों को भेजा गया। महीने के अन्त में स्टाक में ६,२६,४०८ टन कच्चा लोहा जमा था।

डीजल फ्यूअल इंजेक्शन इक्विपमेंट उद्योग की जांच

सामा शुल्क आयोग (टैरिफ कमीशन) ने ६ अक्तूबर १९५३ की प्रेस विज्ञप्ति में बताया था कि वह मोटरगाड़ी के डीजल फ्यूअल इंजेक्शन इक्विपमेन्ट उद्योग को संरक्षण तथा सहायता देने की मांग का अध्ययन कर रहा है। अपनी जांच में आयोग को विदित हुआ कि डीजल फ्यूअल इंजेक्शन इक्विपमेन्ट के बहुत से हिस्से मोटर गाड़ी के डीजल इंजन तथा अन्य प्रकार के डीजल इंजिनों में भी काम आते हैं। अतएव आयोग ने संरक्षण तथा सहायता देने की मांग पर, अन्य इंजनों को भी ध्यान में रखते हुए, विचार करने का निश्चय किया है। उद्योग की व्यापक जांच करने के लिये उसने उत्पादकों, उपभोक्ताओं तथा संस्थाओं के लिये एक प्रश्नावली बनाई है जो जारी किये जाने के लिए तैयार है। जो सम्बन्धित फर्में, संस्थाएं तथा व्यक्ति आयोग को अपने विचार भेजना चाहते हों, वे प्रश्नावली की प्रतियां सेक्रेटरी, टैरिफ कमीशन, कण्ट्रेक्टर बिल्डिंग, निकल रोड, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई—१ से मंगा सकते हैं।

खनिज लोहे के उत्पादन में कमी : अगस्त १९५४

खानों के मुख्य निरीक्षक द्वारा प्रकाशित सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत में खनिज लोह का अनुमानित उत्पादन जुलाई १९५४ के ३,१०,१७० टन से घटकर अगस्त १९५४ में २,७०,९२४ टन रह गया। ६४ खानों से प्राप्त सूचना के अनुसार आलोच्य मास में लोहे तथा इस्पात के कारखानों को २,७४,०८४ टन तथा निर्यात के लिये ८५,६२७ टन माल दिया गया। माल का स्टाक मास के अन्त में ८,३८,१०२ टन रहा।

अगस्त में कोयले के उत्पादन में कमी

खानों के मुख्य निरीक्षक के अनुसार, अगस्त १९५४ में भारत की खानों में कोयले का उत्पादन जुलाई १९५४ के ३६,७०,२६५ टन से घटकर ३६,५८,७५५ टन रह गया। इस मास में कोयले की निकासी ३६,०५,… टन की हुई जबकि गत मास में ३८,९३,७७५ टन की हुई थी। परन्तु खानों में कोयले का स्टाक, जो इस महीने के आरम्भ में ३७,०७,५७८ टन का था, महीने के अन्त में घटकर ३२,७७,७९६ टन रह गया।

आलोच्य मास में ८३० खानों में ८३० प्रतिदिन औसतन ३,२३,२६३ मजदूर काम करते रहे। खनिक तथा लादने वालों के प्रति जन-पाली उत्पादन का अनुमान लगभग १ ११ टन, खानों में अन्दर तथा बाहर काम करने वाले सब मजदूरों का ० ६१ टन तथा काम पर लगाये गये सब व्यक्तियों (ऊपर काम करने वाले मजदूरों सहित) का ० ३६ टन लगाया गया है।

इस मास में खानों के कोक बनाने के कारखानों में तथा अन्य स्थानों पर कड़ा, मुलायम व अन्य किस्मों का २,४५,१८८ टन कोक तैयार हुआ और १,६०,७३० टन की निकासी हुई।

जून १९५४ में बिजली का उत्पादन

जून १९५४ में भारत के ६६० सार्वजनिक उपयोग के बिजली घरों में कुल ६,०५३ लाख किलोवाट घण्टे बिजली उत्पन्न की गई, जिसमें से ५,१०३ लाख किलोवाट घण्टे उपभोक्ताओं को बेच दी गई। इन आंकड़ों में ३ नये बिजली घर और ६ नये केन्द्रों के आंकड़े भी सम्मिलित हैं। ये बिजली घर बिहार के बोकारो और तिलैया नगरों में तथा पश्चिमी बंगाल के ताम्रलिप्त नगर में हैं। नये केन्द्र पश्चिमी बंगाल के पाण्डवेश्वर नगर, पंजाब के खरार, कुराली और माडल टाउन (हिसार) तथा उड़ीसा के कुर्दा जली और पिपली नगरों में हैं। मई की अपेक्षा, इस मास का उत्पादन ६६ लाख किलोवाट घण्टे कम रहा।

जून १९५३ में बिजली के उत्पादन व बिक्री के आंकड़े क्रमशः ५,४३१ लाख किलोवाट घण्टे तथा ४,५०२ लाख किलोवाट घण्टे और जून १९३९ में २,०९९ लाख किलोवाट घण्टे तथा १,७७४ लाख किलोवाट घण्टे रहे थे।

इस्पात के कारखाने के लिये शिल्पकारों की ट्रेनिंग

७०५ करोड़ रुपये की लागत के हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स का काम संचालन के लिये, भारत के अनुभवी शिल्पकारी (टेक्निशियन्स) में से १८० को ट्रेनिंग के लिये जर्मनी भेजा जा रहा है। ये लोग अगले वर्ष के प्रारम्भ में भेज दिये जायेंगे इनमें से ७० को फोरमैनी की ट्रेनिंग दिलायी जायगी। भारत लौटने पर, उपर्युक्त कारखाने का काम काज संचालन का मुख्य भार इन्हीं लोगों पर डाला जायगा। भारतीय इस्पात कारखाने की स्थापना के निमित्त जर्मनी की क्रप डेमग कम्पनी सलाहकार बनाई गई है और शिल्पकारों की ट्रेनिंग का प्रबन्ध भी उसी में किया गया है।

हिंदुस्तान स्टील वर्क्स की स्वीकृति पूंजी १०० करोड़ रु० की है। कारखाने के बन जाने पर, उसमें प्रतिवर्ष ३½ लाख टन इस्पात तैयार किया जा सकेगा। आगे चलकर उत्पादन बढ़ाकर १० लाख टन तक पहुंचाया जा सकेगा। भारत-सरकार और जर्मन कम्पनी ने ४ और १ के अनुपात में हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स के शेयर खरीदे हैं।

मोटरगाड़ी के लीफ स्प्रिंग उद्योग का संरक्षण जारी रहेगा

भारत सरकार ने सीमाशुल्क आयोग (टैरिफ कमीशन) की मोटर गाड़ी के 'लीफ स्प्रिंग' उद्योग सम्बन्धी रिपोर्ट पर अपना निर्णय प्रकाशित कर दिया है।

सरकार ने आयोग की यह सिफारिश मान ली है कि 'लीफ स्प्रिंग' तथा उससे मोटर गाड़ियों (मोटर साइकिल तथा मोटर स्कूटरों को छोड़ कर) में काम आने वाले हिस्से-पुर्जों पर मूल्य का ५० प्रतिशत संरक्षण शुल्क लगाया जाय। उद्योग का संरक्षण ३१ दिसम्बर १९५६ तक बढ़ा दिया गया है।

सोडा एश उद्योग का संरक्षण

सीमाशुल्क आयोग (टैरिफ कमीशन) ने सोडा एश उद्योग का संरक्षण ३१ दिसम्बर १९५४ के बाद भी जारी रखने का प्रश्न पर जांच आरम्भ कर दी है। इस सम्बन्ध में उत्पादकों, आयातकों तथा उपभोक्ताओं के लिये बनाई गई प्रश्नावलियां जारी की जाने के लिये तैयार हैं। जो फर्म व्यक्ति तथा संस्थाएं इस उद्योग अथवा उन उद्योगों से सम्बन्ध रखती हैं या जो सोडा एश की खपत पर निर्भर हैं, वे सम्बद्ध प्रश्नावलि की प्रतियां सेक्रेटरी टैरिफ कमीशन, कण्ट्रक्टर बिल्डिंग, निकल रोड, बेलार्ड इस्टेट बम्बई—१ से प्राप्त कर सकता है। आवेदन पत्र भेजते समय प्रार्थी को यह भी बता देना चाहिये कि वह किस हित का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे उसे उसी की प्रश्नावली भेजी जा सके।

केलशियम क्लोराइड उद्योग

केलशियम क्लोराइड उद्योग को संरक्षण दिया जाना जारी रहे या नहीं इसकी जांच आरम्भ करते समय सीमाशुल्क आयोग के अध्यक्ष श्री एम० डी० भट्ट ने कहा कि इस उद्योग की वर्तमान कठिनाइयां इसके उत्पादन की पर्याप्त मांग न होने के कारण हैं। इस कारण उद्योग को अपने उत्पादन की किस्म अच्छी करके और लागत घटाकर मांग बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये।

श्री भट्ट ने आगे कहा कि इस उद्योग को प्रायः ७ वर्षों से संरक्षण प्रदान किया जाता रहा है। इस समय देश में १,५०० टन केलशियम क्लोराइड प्रतिवर्ष उत्पन्न हो सकता है। परन्तु १९५० में १,३४५ टन, १९५१ में ९५६ टन, १९५२ में १९३ टन, ९५३ में ७३३ टन और १९५४ की पहली छमाही में ३०५ टन उत्पन्न हुए हैं। उद्योग ने फिर संरक्षण और सहायता की मांग की है। सहायता के रूप में यह मांग की गई है कि केलशियम क्लोराइड के आयात का नियमन किया जाय। इसके लिये रेल द्वारा कोयला और चूने की ढुलाई का भाड़ा कम किया जाय और सस्ता पानी भाड़े दी जाय जिनमें इसे भरने के पात्र बनाये जायं।

सीमेन्ट के पैक करने के दाम

२७ मार्च १९५४ को भारत सरकार ने यह घोषणा की थी कि सीमेन्ट पैक करने के दाम प्रत्येक तिमाही में निर्धारित होंगे। तात्कालिक गत नौ महीनों के प्रत्येक सप्ताह में बाजार में पैक करने से सामान के जो अधिकतम व न्यूनतम मूल्य रहेंगे, उनके औसत में १ रु० ४ आ० प्रति टन का प्रासंगिक व्यय (Incidental charges) मिलाकर जो योग होगा वही निर्धारण का आधार होगा। इसके अनुसार चालू तिमाही में पैक करने के दाम १२ रु० ५ आ० प्रति टन रखे गये हैं। १ अक्तूबर १९५४ से आरम्भ होने वाली अगली तिमाही के लिए ये १३ रु० प्रति

काँच का सामान, साइकिल के पुर्जे, ताले, हाथी दाँत व लकड़ी का काम, लुहारी, रेल के सामान, हिसाब-किताब तथा नाप के सरल औज़ार। इनके अतिरिक्त पीतल व धातु के धन्धे बनाने, डिब्बासाजी, मिट्टी के बर्तन तथा जूता के उद्योग भी थे।

राज्य वित्तीय निगमों के मार्फत छोटे तथा मध्यम प्रकार के उद्योगों के विकास के लिये वित्तीय सुविधाएं प्रदान करने की व्यवस्था किये गये हैं। मार्च १९५४ तक पंजाब, मद्रास, त्रावनकोर कोचीन, बम्बई, हैदराबाद और पश्चिमी बंगाल के ७ राज्यों में ऐसे निगम स्थापित हो चुके थे। सब प्रकरणों में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया द्वारा जारी की गई पूंजी का ...००० रु० प्राप्त किया गया है जो समस्त रूप में ९ करोड़ रु० होता है। आलोच्य वर्ष में पंजाब वित्त निगम द्वारा ८.६० लाख रु० ऋण देना स्वीकार किया गया तथा मार्च १९५४ तक ८.८० लाख रु० वितरण किया गया।

फोर्ड फाउन्डेशन के तत्त्वावधान में विशेषज्ञों का एक अन्तर्राष्ट्रीय दल गत नवम्बर १९५३ में भारत आया था जिसका उद्देश्य छोटे उद्योगों की समस्याओं की छानबीन करना था। इस दल ने अपनी रिपोर्ट मार्च १९५४ में प्रस्तुत की। भारत सरकार ने इस दल की सिफारिशों का अध्ययन करके, निम्न सिफारिशों को यथा शीघ्र कार्यान्वित करने का निश्चय किया है।

(१) छोटे उद्योगों को उनकी उत्पादन विधि व व्यवस्था सुधारने, ऋण तथा वित्त जुटाने, कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा माल अधिकाधिक मात्रा में बिक्री व्यवस्था करने तथा छोटे उद्योगों को बड़े उद्योगों का सहायक बनाने तथा उनके उत्पादन कार्यों का समन्वय करने में सहायता देने के उद्देश्य से प्रादेशिक संस्थाएं स्थापित करना। ये संस्थाएं उद्योगों के लिए सर्विस एजेन्सी के रूप में काम करेंगी।

(२) एक व्यापार व्यवस्था सेवा निगम की स्थापना करना। बाद में इस निगम के कार्यों का एकीकरण शिल्पकला सम्बन्धी संस्थाओं के कार्यों में होगा।

(३) सरकारी आर्डरों के अनुसार उत्पादन व्यवस्थित करने के लिये छोटे उद्योगों का एक निगम स्थापित करना।

दल की अन्य सिफारिशें विचाराधीन हैं। यह तो निश्चय किया ही जा चुका है कि पूर्वी प्रदेश के लिए यह संस्था हावड़ा में स्थापित की जाए। अन्य संस्थाओं की स्थापना इस प्रकार किये जाने का विचार है, उत्तरी संस्था—दिल्ली के समीप फरीदाबाद में, पश्चिमी संस्था बम्बई व पूना के समीप, दक्षिणी संस्था मद्रास राज्य के मदुराई नगर में।

राज्यों की योजनाएं

योजना प्रगति रिपोर्ट में बताया गया है कि राज्य सरकारों ने अपने गृह तथा छोटे उद्योगों सम्बन्धी योजनाओं पर पहले तीन वर्षों में केवल २.६४ करोड़ रु० व्यय किया। इन योजनाओं पर कुल १०.६४ करोड़ रु० व्यय करने की व्यवस्था है। यद्यपि उत्तर प्रदेश, मद्रास, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, भोपाल और पंजाब राज्य में इन तीन वर्षों में रखी गई राशि का लगभग ५० प्र० श० व्यय किया गया है किन्तु अन्य राज्यों में इस सम्बन्धी प्रगति धीमी रही है। योजनाओं में समालोचन के पश्चात कई नई योजनाएं सम्मिलित की गई हैं जिन पर ४०.७ लाख रु० का अतिरिक्त व्यय होगा। इन योजनाओं में पश्चिमी बंगाल सरकार की (हावड़ा में) इंजीनियरी उद्योग की योजना तथा मैसूर राज्य की गांवों के औद्योगीकरण की योजना है।

व्यापार की उन्नति

केलिफोर्निया के मेले में भारतीय स्टाल

गत सितम्बर मास में केलीफोर्निया के व्यापारी मेले में भारत ने बड़ी सफलता-पूर्वक भाग लिया। भारत का स्टाल अन्य देशों (ब्रिटेन, पाकिस्तान, पश्चिमी जर्मनी, स्वीडन, फिनलैण्ड, डेन्मार्क और नीदरलैण्ड) की अपेक्षा नाप में बड़ा था। मेले में सर्वोत्तम अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शन स्थल होने का पदक उसे ही मिला। गत वर्ष भी भारतीय स्टाल को ही यह पदक मिला था। अब तक किसी भी देश को यह पदक लगातार दो वर्षों तक नहीं मिला है।

भारतीय स्टाल का १५ मिनट तक टेलीविज़न से प्रसार किया गया और अनेक बार रेडियो द्वारा प्रसार करने के लिये भी उसके विषय में रेकार्ड तैयार किये गये। मेले के सिनेमा में भारत के सूचना फिल्म भी प्रतिदिन दिखाये गये।

भारतीय दस्तकारी की वस्तुओं की किस्मों और विभिन्नता की भूरि भूरि प्रशंसा की गई। साड़ियों, चटनी और मुरब्बों, महिलाओं के बटुआ आदि के विषय में बहुत पूछताछ हुई।

पूर्वी जर्मनी से व्यापार सम्बन्ध

वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय तथा जर्मनी के लोकतन्त्रात्मक गणराज्य के व्यापार प्रतिनिधि मंडल के बीच नयी दिल्ली में जो बातचीत हो रही थी उसके फलस्वरूप वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय के सचिव श्री एच० वी० आर० आयंगार और जर्मन व्यापार प्रतिनिधि मंडल के नेता श्री हर्बर्ट मेयर के मध्य पत्रों का आदान-प्रदान हुआ। इन पत्रों में जो व्यवस्था निर्धारित की गई है वह तुरन्त लागू होगी और एक साल तक जारी रहेगी।

भारत से जर्मन लोकतन्त्रात्मक गणराज्य को निर्यात किये जाने योग्य कुछ मुख्य व्यापारिक पदार्थों की सूची इस प्रकार है—चाय, कहवा, तम्बाकू व तम्बाकू की बनी चीजें, कच्चा मोम, कच्चा लोहा, वनस्पति तेल, परिस्रुत तेल, मसाले जिनमें काली मिर्च भी है, कपास, सूती कपड़ा, रेशम, ऊन, जूट की बनी चीजें, नारियल का रेशा और उसकी बनी चीजें, खालें और चाम (कमाई हुई), चमड़ा, अबरक, हरड़, हरड़ का सत, कमाया हुआ चमड़ा और उसकी बनी चीजें।

जर्मन लोकतन्त्रात्मक गणराज्य से भारत में आयात किये जाने योग्य मुख्य पदार्थों की सूची इस प्रकार है — रासायनिक और औषध उद्योगों के लिये मशीनें और साज सामान, खानों में काम करने वाली मशीनें, कपड़ा बुनने की मशीनें और उनके कलपुर्जे, ट्रैक्टर और उनके कल पुर्जे, औजार और यन्त्र, रासायनिक द्रव्य, सादा फिल्म और अखबारी कागज।

डिजाइनों की रजिस्ट्री के लिये अधिक आवेदनपत्र

१९५३ में डिजाइनों की रजिस्ट्री के लिये आवेदनपत्रों की संख्या बढ़कर पिछले वर्ष की संख्या से लगभग दुगनी हो गई। १९५२ में यह संख्या १,२९६ थी, परन्तु १९५३ में २,५१३ हो गई।

डिजाइनों की रजिस्ट्री के लिये बाहर से केवल ३५ आवेदनपत्र आये। कपड़े की डिजाइनों के लिये २,०२८ आवेदनपत्र प्राप्त हुए। बम्बई राज्य से १,८९६ आवेदनपत्र आये, जिनमें से १,६७० कपड़े की डिजाइनों के लिये थे।

रिपोर्ट में बताया गया है कि जिन आविष्कारों के पेटेंटों के लिये आवेदनपत्र भेजे गये, वे उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं। भारतीय आविष्कारकों ने दर्दनाशक, ज्वरनिरोधक और क्षय निवारक औषधियों, चीनी, गन्धक, कंकरीट का सामान, कृषि यन्त्रों और कुछ भारतीय भाषाओं के टाइपराइटरों के निर्माण में विशेष रुचि दिखाई।

सन् १९५३ में पेटेंटों के लिये २,२२५ आवेदन आये, जबकि १९५२ में २,२७२ आये थे। इन आवेदनपत्रों में से ४६१ इस देश से प्राप्त हुए, जिनमें से ४०६ भारतीय नागरिकों द्वारा और बाकी विदेशियों द्वारा भेजे गये थे। लगभग ६० प्र० श० आवेदनपत्र बम्बई और पश्चिमी बंगाल से आये और २५ प्र० श० मद्रास, मैसूर, उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली से। विदेशी आवेदनपत्र ज्यादातर ब्रिटेन, अमेरिका, स्विटजरलैंड और जर्मनी से प्राप्त हुए।

विदेशी आविष्कारकों ने अधिकतर रंग-द्रव्यों, औषधि द्रव्य तत्वों, कृत्रिम धागों और उनसे बने कपड़ों, ईंधन और चिकनाई वाले तेलों, तपेदिक और मलेरिया की औषधियों आदि के आविष्कारों के बारे में पेटेंटों की मांग की। उन्होंने धातु के काम, मोटर-कारों, पालिश करने और पीसने की मशीनों और डीजल इंजन में भी विशेष रुचि दिखाई।

कपड़ा-उद्योग-सम्बन्धी अधिकांश आविष्कार विदेशों में ही हुए हैं। ये प्रायः रूई ओटने, धुनने, पूनी करने और सूत के बंडल बनाने तथा नकली धागे तैयार करने और कपड़े रंगने एवं कपड़े छापने की मशीनों से सम्बन्ध रखते हैं।

सन् १९५३ में पेटेंट कार्यालय की आय लगभग ७,२१,००० रु० थी और व्यय लगभग ४,४१,००० रु०। पिछले वर्ष आय ६,७३,००० रु० थी और व्यय ३,६०,००० रु० था।

वायुयान द्वारा अफगानिस्तान से फलों का आयात

अफगानिस्तान से वायुयान द्वारा फलों के आयात को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत सरकार ने यह निश्चय किया है कि अमृतसर के हवाई अड्डे पर धुआं देने के पश्चात् अफगानी फलों का आयात किया जा सकता है।

फलों और शाकों को धुएं द्वारा शुद्ध करने के लिए अमृतसर के हवाई अड्डे पर १ अगस्त १९५४ से एक धूम्रीकरण केन्द्र खोल दिया गया है। इस बार में लगभग ६० मन फलों के धूम्रीकरण का प्रबन्ध किया जा चुका है।

धूम्रीकरण का व्यय आयातक से एक रुपया आठ आना प्रतिमन के हिसाब से लिया जायगा। यह शुल्क वृक्ष संरक्षण परामर्शदाता, नई दिल्ली या अमृतसर में उसके प्रतिनिधि के पास भेजा जायगा। वायुयान द्वारा मंगाये गये फलों पर धूम्रीकरण का कम से कम शुल्क एक रु० आठ आना होगा। लेकिन यात्री लोग अपने साथ सामान के रूप में अधिक से अधिक ५ पौंड फल ला सकेंगे और उनकी धूम्री करण निःशुल्क किया जायगा।

व्यापार नियन्त्रण

बढ़िया किस्म के तम्बाकू का निर्यात

अन्तर्राष्ट्रीय बिक्री-व्यवस्था की दृष्टि से भारतीय तम्बाकू की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह जरूरी समझा जा रहा है कि पुराने, क्षति ग्रस्त अथवा घुने तम्बाकू का निर्यात रोकने के लिए हर सम्भव उपाय से काम लिया जाय। इस विषय में तम्बाकू की जांच करने वाले विभाग को आदेश दिये जा चुके हैं और उनसे कहा गया है कि वे केवल उच्च कोटि का ही तम्बाकू विदेशों में जाने दें। 'एगमार्क' ने विदेशी बाजारों में जो सिक्का जमाया है, उसकी रक्षा पूरी तौर से की जानी चाहिए।

निर्यातकों का ध्यान, मार्केटिंग सीरीज ७० के अन्तर्गत जारी किये गये आदेशों की ओर आकृष्ट किया जाता है। इन आदेशों के अनुसार वर्गीकृत और चिन्हित तम्बाकू के पुलिन्दों की जांच रेलवे स्टेशन, गोदाम या हवाई बन्दरगाह पर फिर से की जा सकेगी। जो तम्बाकू एक साल से ज्यादा पुराना

हो चुका है, उसे फिर से जंचवाकर, उसके लिए नये सर्टिफिकेट प्राप्त कर लिये जाने चाहिए। मगर तम्बाकू तो विदेशों को कदापि न भेजना चाहिये।

जिन निर्यातकों या पैकरों के पास घटिया तम्बाकू हो, उन्हें पूरी सावधानी से काम लेना चाहिये जिससे कि वर्गीकरण किये बिना निर्यात के लिये तम्बाकू के पुलिन्दे न बांधे जाय।

लाल मिर्च के अतिरिक्त कोटे

भारत सरकार ने लाल मिर्च के सम्बन्ध में निर्यात-नीति पर फिर से विचार कर लिया है और निश्चय किया है कि चालू छमाही के लिए अतिरिक्त कोटे दिये जायें। लाइसेंस-विधि का विवरण बन्दरगाहों पर निर्यात व्यापार नियन्त्रण प्राधिकारियों द्वारा सूचित किया जा रहा है।

साइकिल के पुर्जों के आयात के लाइसेन्स

भारत सरकार को इस आशय के आवेदन प्राप्त हुए हैं कि जिन लोगों के पास पूरी साइकिलों के आयात के कोटा मौजूद हैं, परन्तु जो साइकिलों के पुर्जे बाहर से नहीं मंगा सकते, उन्हें साइकिलों के कुछ पुर्जे मंगाने के लिये अतिरिक्त लाइसेंस दिये जायें, जिससे उन्हें साइकिलों की मरम्मत आदि के करने में सुविधा हो सके।

सरकार ने इस विषय पर विचार करके निश्चय किया है कि साइकिल के स्थायी आयातकों को साइकिल के पुर्जों के आयात के लिये अतिरिक्त लाइसेन्स दिये जायें। इन व्यापारियों के पास जुलाई और दिसम्बर १९५४ के मध्य जितने मूल्य की साइकिलें मंगाने का लाइसेन्स होगा, उसके ७॥ प्रतिशत मूल्य के साइकिल-पुर्जे वे मंगा सकेंगे। परन्तु जिनको इसी अवधि में साइकिल पुर्जों के मंगाने का भी लाइसेंस मिला होगा, वे उतने मूल्य के साइकिल पुर्जे और मंगा सकेंगे, जो साइकिल के कोटे के मूल्य के ७॥ प्रतिशत और साइकिल-पुर्जों के कोटे के मूल्य के अन्तर के बराबर होगा।

अतिरिक्त लाइसेन्स केवल साइकिल की तीलियां, फ्राईवील, चेना, बी० सी० शैलों और गद्दियों के आयात के लिये दिये जायेंगे।

इन अतिरिक्त लाइसेन्सों की एक शर्त यह भी है कि कोई भी एक पुर्जा लाइसेन्स में निर्दिष्ट मूल्य के पांचवें भाग से अधिक का न मंगाया जाय।

लाइसेन्सों के लिये आवेदन पत्र निश्चित फार्म पर, १५ नवम्बर १९५४ से पहले, बन्दरगाहों पर लाइसेन्स प्राधिकारियों के पास भेज देने चाहिये। आवेदन पत्र के साथ लाइसेन्सों का पूरा विवरण भी भेजना चाहिये।

क्यानाइट के निर्यात के अतिरिक्त कोटे

सारी स्थिति पर मौन विचार करने के बाद भारत सरकार ने 'क्यानाइट' के निर्यात के अतिरिक्त कोटे देने का निश्चय किया है। जो खान मालिक और पुराने निर्यातक अपने पिछले कोटों का सारा माल भेज चुके हैं, किन्तु विदेशी व्यापारियों के साथ जिनके सौदे अधिक माल की सप्लाई के लिये हुए शेष पड़े हैं, उन्हें अतिरिक्त निर्यात के कोटे दिये जा सकेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य निर्यातकों को भी उचित आधार पर ऐसे सौदों के लिए कोटे दिये जायगे जिन्हें वे विदेशी व्यापारियों के साथ तय कर चुके हैं। इन कोटों का माल ३१ दिसम्बर १९५४ तक भेज देना होगा। इच्छुक निर्यातकों को सम्बन्धित बन्दरगाहों के लाइसेंस अधिकारियों के पास आवेदन पत्र भेजने चाहिये।

क्रोम खनिज का निर्यात

क्रोम खनिज की निर्यात नीति पर पुनः विचार किया गया है। यह पुनर्विचार स्टाक, निर्यात के लिये दिये गये चालू माल की तत्सम्बन्धी प्रगति तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की स्थिति को ध्यान में रखकर किया गया है। इसके फलस्वरूप यह निश्चय किया गया है कि जहाजी बिलों के दिखाने पर खनिज क्रोम के निर्यात लाइसेन्स असीम रूप में दिये जाय। उपर्युक्त निर्णय तत्काल से (७ सितम्बर ५४ से) लागू हो गया है।

कच्चे ऊन का निर्यात

भारत सरकार ने कच्चे ऊन की उपलब्धि तथा देश के उद्योग को होने वाली उसकी आवश्यकता के प्रकाश में, उसकी निर्यात नीति पर पुनर्विचार किया है और यह निश्चय किया है कि १ अक्तूबर १९५४ से ३१ मार्च १९५५ की अवधि में निर्यात के लिये और माल दिया जाय। यह निर्यात पुराने तथा नये निर्यातकों को कोटा के आधार पर करने दिया जायगा। इस सम्बन्ध में लाइसेन्स प्रणाली का विस्तृत विवरण निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों द्वारा बन्दरगाहों पर सूचित किया जा रहा है।

उपर्युक्त नीति की एक नई बात यह है कि जिन पुराने कोटा पाने वालों के कोटे छः मास से पहले समाप्त हो गये हैं, उनके पूरक कोटे सम्बन्धी आवेदन-पत्रों पर उनके विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विचार किया जायगा। किन्तु यह विचार इन बातों का भी ध्यान में रखकर किया जायगा कि आवेदन-पत्र देते समय माल की पूर्ति तथा उसकी भाव सम्बन्धी स्थिति क्या है।

निर्यात के लिये मूंगफली का और तेल

यह निश्चय किया गया है कि मूंगफली तथा मूंगफली के तेल के पुराने निर्यातकों को निर्यात के लिये और मूंगफली का तेल दिया जाय। पुराने निर्यातक यदि इसके लिए बन्दरगाहों पर लाइसेन्स अधिकारियों को आवेदन पत्र देंगे तो उन्हें उनके द्वारा १९५१-५२ को समाप्त होने वाले चार वर्षों के किसी भी वर्ष में किये गये निर्यात के १५ प्र० श० के बराबर निर्यात का कोटा दे दिया जायगा, किन्तु किसी एक निर्यात के लिए यह कोटा अधिक-से-अधिक ४०० टन तथा कम से-कम ५ टन होगा।

इन कोटों की अवधि दिसम्बर १९५४ अन्त तक रहेगी।

चाय का निर्यात शुल्क बढ़ा

भारत सरकार ने चाय का निर्यात शुल्क तत्काल ही (७ अक्तूबर १९५४ से) बढ़ाकर ४ आने से ७ आने प्रति पौंड कर देने का निश्चय किया है।

चाय के निर्यात शुल्क (४ आने प्रति पौंड) में १९४७ से कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। यद्यपि १९५२ में चाय उद्योग को मन्दी का सामना करना पड़ा था, किन्तु १९५३ व १९५४ के वर्षों में भावों में क्रमिक सुधार होता रहा है। भारत सरकार ने पिछले बजट के समय शुल्क बढ़ाने के प्रश्न पर विचार किया था, किन्तु उस समय उसने ऐसा करना उचित न समझा, क्योंकि उद्योग को १९५२ की मन्दी में जो क्षति उठानी पड़ी थी, उसकी पूर्ति के लिए मुश्किल से एक ही वर्ष बीता था।

भावों के वर्तमान ऊंचे स्तर पर ७ आने से भी अधिक का शुल्क लगाना उचित होता। किन्तु भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में दीर्घकालीन स्थिति का विचार करते हुए केवल इतनी ही वृद्धि की है जिससे चाय के निर्यात व्यापार को कोई हानि नहीं पहुँचेगी।

~~~~~~

वैज्ञानिक गवेषणा

हाइड्रोजन पर ओक्साइड को सुरक्षित रखने की विधि

बंगलोर की भारतीय विज्ञानशाला में किये गये अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि कुछ रासायनिक पदार्थों की सहायता से हाइड्रोजन परओक्साइड को सुरक्षित रखा जा सकता है। हाइड्रोजन पर ओक्साइड औद्योगिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण वस्तु है। परन्तु यह बिगड़ बड़ा जल्दी जाता है। साधारण तापमान की अपेक्षा अधिक तापमान होने पर तो यह और भी शीघ्रता पूर्वक खराब हो जाता है। अतः इसे सुरक्षित रखना अब तक एक समस्या बना हुआ था।

हाइड्रोजन पर ओक्साइड में ताम्बे, लोहे, मैंगनीज, सीसे आदि का जो अंश होता है उसी के कारण यह बिगड़ जाता है। यदि इन अंशों को दूर कर दिया जाय तो हाइड्रोजन पर ओक्साइड सुरक्षित रह सकता है। इनका दूर करना बड़ा कठिन है। परन्तु यदि इसमें कुछ रासायनिक पदार्थ मिला दिये जाय तो वे ताम्बे आदि के अंश को निष्क्रिय कर देते हैं और फिर हाइड्रोजन पर ओक्साइड अच्छा बना रहता है। बंगलौर की विज्ञानशाला ने ज्ञात किया है कि सोडियम सेलीसाइलेट के मिश्रण, सल्फेनीलेमाइड, सिफाजिन, एसिटेनिलाइड और फिनासीन आदि को मिलाया जाय तो हाइड्रोजन पर ओक्साइड सुरक्षित बना रहता है और खराब नहीं होता। इन पदार्थों में से कोई किसी धातु के अंश को निष्क्रिय करता है तो कोई किसी को। इस कारण इनके मिश्रण को मिलाने से ही अच्छा फल होता है।

बेकार सीरे से चीनी तैयार करने की विधि

उत्तर प्रदेश में सरदार नगर की सराया डिस्टिलरी (शराब खींचने का कारखाना) की प्रयोगशाला में मद्यसार के प्रयोग से बेकार सीरे से चीनी निकालने के एक तरीके के बारे में सफलतापूर्वक परीक्षण किये जा रहे हैं।

प्रतिदिन २४ टन सीरे का प्रयोग कर सकने वाली एक मशीन पहले ही से डिस्टिलरी [redacted] लगी हुई है। अनुमान है कि इस तरीके से प्रतिदिन लगभग [redacted] मन चीनी तैयार की जा सकती है।

यह तरीका डिस्टिलरी के प्रधान रसायन शास्त्री स्वर्गीय डा० क्लापेन बर्ग द्वारा निकाला गया था। व्यापारिक लाभ की दृष्टि से अभी तक इस तरीके का परीक्षण नहीं किया गया। यदि इस दृष्टि से यह तरीका सफल साबित हुआ तो देश में चीनी का उत्पादन बढ़ाने में बड़ी सहायता मिल सकेगी।

देशी सामग्री से चमड़ा कमाने की उन्नत विधि

मद्रास की केन्द्रीय चमड़ा गवेषणाशाला में चमड़ा कमाने के काम आने वाले डिवीडिवी के बीज और अन्य देशी सामग्रियों का प्रयोग करने की एक सरल विधि खोज निकाली गई है।

देश में चमड़ा कमाने के वनस्पति साधन प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं। डिवीडिवी के बोड़े भी इनमें से एक हैं। इनमें चमड़ा कमाने के लिये जो तरल पदार्थ तैयार किया जाता है उसमें चीनी का अंश होता है, जिससे उसमें मद्य के कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं। इससे कमाने का अंश घट जाता है। फल यह होता है कि इस तरल पदार्थ से कमाया हुआ चमड़ा काला पड़ जाता है। इन्हीं दोषों के कारण डिवी डिवी के बोड़े और अन्य सामग्रियों का चमड़ा कमाने में अधिक उपयोग नहीं किया जाता। एक ओर यह दशा है तो दूसरी ओर चमड़ा कमाने की बहुत सी सामग्री विदेशों से मंगानी पड़ती है।

नई विधि में बोड़ों को आक्सेलिक एसिड और सोडियम बाइसलफाइट के घोल में डाल दिया जाता है। बाद को छानकर इस तरल पदार्थ को काम में लाया जाता है। यदि थोड़ा सा फारमिक एसिड मिला दिया जाय तो इसे ४ से ६ सप्ताह तक काम लायक अच्छी दशा में रखा जा सकता है।

पूर्व-भारतीय चमड़ा रंगने का तरीका

मद्रास केन्द्रीय चमड़ा गवेषणाशाला में चमड़ा रंगने का एक प्रायोगिक कारखाना स्थापित हो जाने से पूर्व-भारतीय चमड़ा रंगने के तरीके का नियमित अध्ययन किया जाने लगा है।

पूर्व भारतीय चमड़ा रंगने का तरीका भारत में सामान्यतः छोटे
~~~~~~

पहले २४ फरवरी १९५२ को कानपुर और दिल्ली मे लागू हुए। बाद मे पजाब के सात उद्योग क्षेत्रो और नागपुर मे भी लागू हो गये।

सामान्य लाभ

इस योजना से बीमाशुदा व्यक्तियो को पाच प्रकार के लाभ होते हैं— बीमारी, प्रसव, शक्तिहीनता, आश्रितो और चिकित्सा सम्बन्धी। बीमारी और काम करते समय चोट आदि लग जाने की हालत मे मिलने वाले लाभ, क्षेत्र मे योजना लागू होते ही मिलने आरम्भ हो जाते हैं। बीमारी और प्रसव सम्बन्धी लाभ, योजना लागू होने मे ६ महीने बाद मिलते हैं। दिल्ली और कानपुर में ये लाभ २३ नवम्बर १९५२ से और पजाब में १३ फरवरी १९५४ से मिलने लगे, नागपुर में ९ अप्रैल १९५५ से और वृहत्तर बम्बई मे २ जुलाई १९५५ से मिलेंगे।

जहा जहा योजना लागू हो गयी है वहा-वहा चिकित्सा सम्बन्धी लाभ मिलने लगे हैं।

चिकित्सा व्यवस्था के सुधार के लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं, और अस्पतालो की सख्या बढाई जा रही है। बम्बई मे जब तक अस्पतालो का स्थापना न हो, तब तक वर्तमान अस्पतालो मे पलगो का सुरक्षित रखना आवश्यक हो गया है। वृहत्तर बम्बई मे रोगो के निदान के लिये सुविधायें और विशेषज्ञ सेवाये प्रदान करने के लिए विशेष केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं। ये सुविधाये अन्य क्षेत्रो मे भी दी जायेंगी। बीमा शुदा व्यक्तियो के परिवारो के लिए भी चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाये देने का विचार हो रहा है। इन दोनो समस्याओ के अलावा, वर्तमान लाभो को बढाने का भी प्रस्ताव है। परन्तु इन लाभो मे वृद्धि करने मे पूर्व वित्तीय समस्या का भी ध्यान रखना है। परिवार की चिकित्सा व्यवस्था पर काफी खर्च होने की सम्भावना है।

भविष्य की योजनाये

समस्त देश मे योजना का लागू होना बहुत ही महत्व का विषय है। देश भर मे कारखानेदार, विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं, इसलिए कर्मचारियो को जितना जल्दी लाभ मिले उतना ही अच्छा। सम्भव है, वर्तमान वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक यह योजना अहमदाबाद, कलकत्ता, हावडा जिला, कोयम्बटूर, हैदराबाद, ग्वालियर, इदौर, उज्जैन, रतलाम, और अन्य राज्यो के विभिन्न शहरो में भी लागू हो जाय, जिससे योजना के अन्तर्गत बीमा शुदा व्यक्तियों की कुल सख्या लगभग १०.९६ लाख हो जायगी। यदि प्रगति योजनानुसार होती रही तो १९५५ की समाप्ति तक देश के लगभग सभी महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्रो मे यह योजना लागू हो जायगी।

अगस्त में नियोजन की स्थिति

अगस्त १९५४ में काम दिलाऊ केन्द्रो मे नाम दर्ज कराने वालो तथा पुनः दर्ज कराने वालो की सख्या कम हो गयी। तब भी, इस मास के अन्त मे, काम दिलाऊ केन्द्र द्वारा काम चाहने वाले रजिस्टर्ड व्यक्तियो की सख्या ५,६६,३६० थी, जो इससे पहले महीने की अपेक्षा १०,५२३ अधिक है। आलोच्य महीने मे १,२७,७३४ व्यक्तियो ने रजिस्टरो मे अपने नाम दर्ज कराये और १२,०६२ व्यक्तियो को काम से लगाया जा सका। गत मास मे ये आकडे क्रमश १,५६,५७८ और १५,३२० थे।

इस मास मे काम दिलाऊ केन्द्रो को सूचित किये गये रिक्त स्थानो की सख्या २०,५५० से कम होकर १७,६३३ रह गई। यद्यपि नये नाम दर्ज कराने वालो की सख्या घट गई, तथापि रिक्त स्थानो और दिलाये गये कामो की सख्या कम हो जाने से अगस्त के अन्त तक इन केन्द्रो द्वारा काम पाने के इच्छुक रजिस्टर्ड व्यक्तियो की कुल सख्या बढ गई। इस प्रकार नियोजन की स्थिति असन्तोषजनक बनी रही।

इस मास के अन्त तक श्रम मन्त्रालय की प्रशिक्षण योजनाओं के अन्तर्गत ८,०५१ व्यक्ति विभिन्न प्रशिक्षण संस्थाओं और केन्द्रों में ट्रेनिंग पा रहे थे। इनमे ५६७ स्त्रियां और २,०१७ विस्थापित थे। इसके अतिरिक्त कोनी विलासपुर की केन्द्रीय प्रशिक्षण सस्था मे १०८ उम्मेदवार शिक्षक व उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल मे विस्थापितो के लिये "उम्मेदवार शिक्षण योजना" के अन्तर्गत ७८५ उम्मेदवार शिक्षार्थी प्रशिक्षण पा रहे थे।

जुलाई में औद्योगिक झगडे

जुलाई १९५४ मे औद्योगिक झगडो की सख्या मे काफी कमी हुई, परन्तु पिछले महीने की अपेक्षा झगडो मे शामिल मजदूरो की सख्या मे वृद्धि हुई और हानि भी अधिक जनदिनो की हुई। आलोच्य मास मे ६० झगडे हुए, इनमे २२,२३१ मजदूरो ने भाग लिया और २ लाख ३३ हजार ४५९ जनदिनो का हानि हुई। इन झगडो की औसत अवधि ६.७ दिन रही, जब कि जून १९५४ का औसत ६.५ दिन रहा था।

चार झगडो मे तालाबन्दी रही। इन झगडों में ५,५६७ मजदूरो ने भाग लिया और ८७ हजार ८२३ जनदिनो की हानि हुई। इनमे से दो झगडे पश्चिमी बगाल मे और एक आन्ध्र और एक बम्बई मे हुआ।

हडतालो और तालाबन्दियो के अतिरिक्त ऐसे ५ मामलो मे काम बन्द रहा, जिनको औद्योगिक झगडे नहीं कहा जा सकता। इनमें ८,०१८ मजदूरो ने भाग लिया और ८,२८० जनदिनों की हानि हुई। ये सब मामले बम्बई मे हुए।

४६ झगडे, आलोच्य मास मे समाप्त हुए। इनमे से ३२ झगडे ५ दिन से भी कम और तीन ३० दिन से अधिक चले। १६ झगडो का मुख्य कारण मजदूरी, भत्ता और बोनस था और २७ झगडो का कारण अधिकारियो के सम्बन्ध मे शिकायत था। ११ झगडों मे मजदूरो को पूर्ण या आशिक सफलता मिली और २२ मे वे असफल रहे। १० झगडो का परिणाम अनिश्चित रहा और ३ के सम्बन्ध में अभी परिणाम का पता नही चल सका है।

राज्यो मे, आलोच्य मास में, पश्चिमी बगाल मे झगडो, इनमें भाग लेने वाले मजदूरो तथा जन दिनो की हानि की सख्या सबसे अधिक रही। इस राज्य मे, गत मास को अपेक्षा झगडे कम हुए परन्तु जन दिनो की हानि की सख्या बढ गयी। मद्रास और आन्ध्र में भी, इस मास मे, जन-दिनों की हानि अधिक हुई। समय की हानि की दृष्टि से, बम्बई, मध्य प्रदेश, बिहार, पजाब और दिल्ली की स्थिति मे सुधार हुआ।

२२० अमेरिकन, १४७ स्विस, ८८ जर्मन, ७३ डेनिश, ६७ डच, ५५ स्वेडिश, ४५ पाकिस्तानी और ४० चीनी हैं। ब्रिटिश नागरिकों की संख्या १९४७ में ६,६०१ थी जो बढ़कर १९५२ में ७,२१४ हो गई, परन्तु पिछले २ वर्षों में घटकर ६,७४७ रह गई है। पिछले २ वर्षों में, डच, जर्मन, स्वेडिश, आइरिश और कनाडियन नागरिक कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

फसल का अनुमान

तिल का प्रथम अनुमान

१९५४-५५ में तिल के अखिल भारतीय प्रथम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में तिल की खेती का क्षेत्रफल ३७ लाख ६ हजार एकड़ आंका गया है जब कि १९५३-५४ में यह क्षेत्रफल ३६ लाख ६३ हजार एकड़ था। इस प्रकार खेती के क्षेत्रफल में ४३ हजार एकड़ या १ प्र० श० से कुछ अधिक की वृद्धि हुई।

यह अनुमान जुलाई १९५४ के अन्त तक का है और इसका क्षेत्रफल कुल का ५५ प्र० श० बैठता है।

गन्ने का प्रथम अनुमान

खाद्य एवं कृषि मंत्रालय के अर्थ व अंक विभाग ने १९५४-५५ में गन्ने के अखिल भारतीय प्रथम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में गन्ने की खेती का क्षेत्रफल ३६,३७,००० एकड़ आंका है, जब कि १९५३-५४ के संशोधित प्रथम अनुमान में यह संख्या ३४,४६,००० एकड़ थी। इस प्रकार खेती के क्षेत्र में १,९१,००० एकड़ या ५.५ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

यह वृद्धि मुख्यत: उत्तर प्रदेश में हुई बतायी जाती है। गुड़ का अधिक भाव, मौसम की अनुकूलता और सिंचाई की अधिक सुविधा ही इस वृद्धि के मुख्य कारण हैं। इस अनुमान में साधारणत: जून १९५४ के मध्य तक की अवधि शामिल की जाती है। किन्तु इसमें १९५४-५५ में गन्ने की खेती का पूरा क्षेत्रफल शामिल नहीं है।

मूंगफली का प्रथम अनुमान

१९५४-५५ में मूंगफली के अखिल भारतीय प्रथम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में मूंगफली की खेती का क्षेत्रफल ८२,४०,००० एकड़ आंका गया है, जब कि १९५३-५४ के प्रथम संशोधित अनुमान में यह क्षेत्रफल ७७,६५,००० एकड़ था। इस प्रकार क्षेत्रफल में, गत वर्ष की अपेक्षा, ४७,७७,००० एकड़ अर्थात् ६.१ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

चालू वर्ष में मूंगफली की खेती के क्षेत्रफल में यह वृद्धि मुख्यत: सौराष्ट्र, बम्बई, आन्ध्र, मध्य भारत और मद्रास में सामान्यत: बुआई के समय पर्याप्त व सामयिक वर्षा होने से हुई है। दूसरी ओर वर्षा की कमी के कारण बुआई में देर होने से हैदराबाद, मध्य प्रदेश और मैसूर में क्षेत्रफल में कमी हुई है।

वर्तमान अनुमान में सामान्यत: जुलाई १९५४ के अन्त तक की जानकारी सम्मिलित है। तब तक फसल की स्थिति सामान्यत: सन्तोषजनक थी।

इस अनुमान में १९५४-५५ में मूंगफली की बुआई वाला सारा क्षेत्र सम्मिलित नहीं है। गत अनुभव से विदित हुआ है कि प्रथम अनुमान के समय का क्षेत्रफल अन्तिम रूप से बोये हुये क्षेत्रफल का लगभग ६० प्र० श० होता है।

इस अनुमान में, प्रथम बार ही, मैसूर के बेलारी जिले और उत्तर प्रदेश की जानकारी सम्मिलित की गयी है। इस के अतिरिक्त चालू वर्ष में पहली बार ही अनुमान के क्षेत्र में आन्ध्र के सब जिलों को सम्मिलित किया गया है। १९५४-५५ की फसल में, यह क्षेत्र सम्मिलित करने से, क्षेत्रफल में ६,३६,००० एकड़ की वृद्धि हुई है।

गेहूं का अन्तिम अनुमान

१९५३-५४ में गेहूँ के अखिल भारतीय अन्तिम अनुमान के अंतर्गत चालू वर्ष में गेहूँ की खेती का क्षेत्रफल २,६०,६८,००० एकड़ और उत्पादन ७७,९२,००० टन आंका गया है, जबकि १९५२-५३ के आंशिक समायोजित अनुमान में ये अंक क्रमश: २,४२,८५,००० एकड़ और ७३,८३,००० टन थे। इस प्रकार क्षेत्रफल और उत्पादन में क्रमशः १८,१३,००० एकड़ अर्थात् ७.५ प्र० श० और ४,०९,००० टन अर्थात् ५.५ प्र० श० की वृद्धि हुई।

क्षेत्रफल में वृद्धि मुख्यत: उत्तरप्रदेश, बम्बई, बिहार, पंजाब, भोपाल, राजस्थान, विन्ध्य प्रदेश, हैदराबाद, सौराष्ट्र तथा हिमाचल प्रदेश में हुई है। यह वृद्धि मुख्यत: बुआई के समय पर्याप्त व सामयिक वर्षा होने से हुई है। भोपाल व विन्ध्य प्रदेश में बंजर खेतों को फिर खेती योग्य बना लेने, विस्तारित कृषि तथा अन्य 'अधिक अन्न उपजाओ' योजनाओं से भी यह वृद्धि हुई है। वर्तमान वर्ष की गेहूँ की फसल में मध्य भारत, तथा जम्मू व कश्मीर के क्षेत्रफल में नगण्य कमी बताई जाती है।

गेहूं पैदा करने वाले प्राय: सब राज्यों से उत्पादन में भी वृद्धि होने के समाचार मिले हैं। उत्तर प्रदेश, बम्बई, भोपाल, बिहार, पेप्सू, विन्ध्य-प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, सौराष्ट्र और हैदराबाद में विशेष वृद्धि हुई है। उत्पादन में इस वृद्धि का कारण कुछ तो खेती की भूमि में वृद्धि होना और कुछ वर्तमान वर्ष में फसल पकने के अनुकूल मौसम रहना है। राजस्थान, जम्मू व कश्मीर, पंजाब और अजमेर के उत्पादन में कुछ कमी हुई है। राजस्थान में यह कमी मौसम प्रतिकूल रहने से हुई, जबकि पंजाब में बीमारी लग जाने से फसल को हानि पहुँची।

इस अनुमान में उन क्षेत्रों की भी सूचना सम्मिलित है, जिनके अनुमान तैयार नहीं होते। आन्ध्र, आसाम, मध्य प्रदेश (केवल जंगल क्षेत्र), मद्रास, जम्मू व कश्मीर, त्रावनकोर कोचीन और मनीपुर ऐसे ही क्षेत्र हैं। इन सब में १९५३-५४ में कुल २,५७,००० एकड़ में खेती हुई

अपने सुझाव भेजिये

उद्योग व्यापार पत्रिका, उद्योग और व्यापार से सम्बन्ध रखने वाले पाठकों की सेवा गत १६ महीनों से कर रही है। इस अल्प अवधि में ही पत्रिका ने अपना एक विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। देश के औद्योगिक और व्यापारी क्षेत्रों में इसका हृदय से स्वागत किया गया है।

पत्रिका को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु इस सम्बन्ध में हम अपने प्रिय पाठकों के सुझाव भी चाहते हैं। अतः निवेदन है कि पाठकगण अपने सुझाव हमें शीघ्र लिख भेजने की कृपा करें। सुझाव केवल इसी दृष्टि से होने चाहिए कि पत्रिका को उनके लिये किस प्रकार और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।



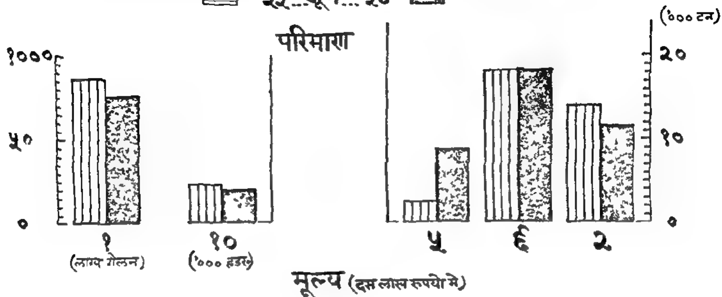
सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,

भारत सरकार, नई दिल्ली

आयात की चुनी हुई वस्तुएँ



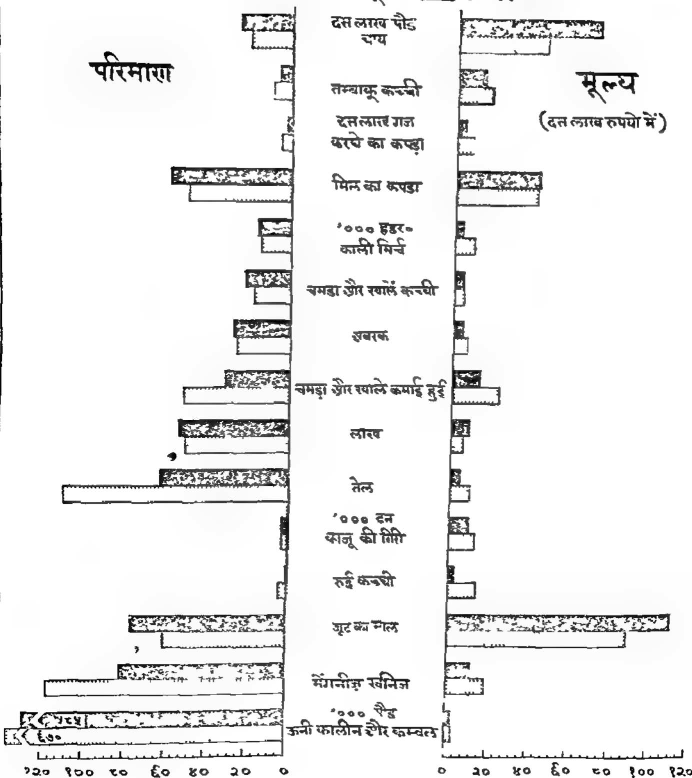
मूल्य (दस लाख रुपयों में)

८०
६०
४०
२०
०
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

खनिज तेल	१
रुई कच्ची	२
मशीनें और मिल का सामान	३
गाड़ियाँ	४
धातु, लोहा तथा इस्पात छोड़ कर	५
लोहा अथवा इस्पात	६
रासायनिक पदार्थ	७
चमड़ा कमाने और रंगने का सामान	८
बिजली का सामान	९
कागज	१०
औषधियाँ	११
औजार आदि, बिजली के छोड़ कर	१२

एम० जी० मेहरा
ए० घोष

सेन्ट्रल स्टेटिस्टिकल आर्गनाइजेशन – नं० ३०८/९-५४-२


निर्यात की चुनी हुई वस्तुएँ
१९५४ जून १९५३
परिमाण
मूल्य
(दस लाख रुपयों में)
दस लाख पौंड चाय
तम्बाकू कच्ची
दस लाख गज
चरखे का कपड़ा
मिल का कपड़ा
'००० हंडर०
काली मिर्च
चमड़ा और खालें कच्ची
अबरक
चमड़ा और खालें कमाई हुई
लाख
तेल
'००० टन
काजू की गिरी
रुई कच्ची
जूट का माल
मैंगनीज़ खनिज
'००० पैंड
ऊनी कालीन और कम्बल
१२० १०० ८० ६० ४० २० ०
० २० ४० ६० ८० १०० १२०
सेन्ट्रल स्टैटिस्टिकल ऑर्गनिज़ेशन

१. औद्योगिक उत्पादन*

(१) बुनाई उद्योग

वर्ष	१ सूत (लाख पौंड)	२ सूती कपड़ा (लाख गज)	३ [क] जूट का माल (००० टन)	४ [ख] ऊनी माल (००० पौंड)	५ पट्टे (टन)
१९४६	१३ ६६८	३९ ० ४	१ ०—४	२७,०००	
१९४७	१२ ६६०	३७ ६२०	१ ०५१ २	२४ ०००	६१५ ६
१९४८	१४,४७२	४३ १—	१ ०— ४	२० ००४	६६० ०
१९४९	१३ ९६६	३९ ०४	९४५ ६	२१ ०००	४०२ ०
१९५०	११ ७४८	३६ ६६	—३९ २	१—,०००	५१० ०
१९५१	१३,०४४	४० ७६४	८७४	१७,३००	६७१ ६
१९५२	१४ ९९६	४१ ६ ४	९५१ ६	१६ ९८४	७०६ २
१९५३	१५,०६०	४ ६००	८६८ ८	१७,०२८	७६५ ६
१९५४ जनवरी	१,२२७	४ १७	६७ ३	१,२२०	६८ ०
फरवरी	१,२२१	३ ६७६	६—३	१,३७४	५६ ०
मार्च	१,२५२	४ ०५	७५ ६	१ ३१८	५३ ०
अप्रैल	१,२६०	४ २६०	७५ ०	१,२३५	६४ ०
मई	१,२६०	४ २७०	७१ ३	१ ४३७	७० ०
जून	१,२८०	४ ३२०	७४ ६	१ ६०२	६० ०
जुलाई	१,३६०	४ ४१०	० ७	१,७ २	अप्राप्त
अगस्त					
सितम्बर					
अक्तूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९४९ से ये आंकड़े इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन की सदस्यता वाले मिलों तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में हैं। [ख] इसमें जम्मू और कश्मीर के आंकड़े भी सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	६ कच्चा लोहा (००० टन)	७ सीधी ढलाई (००० टन)	८ लोह मिश्रित धातु (००० टन)	९ इस्पात के पिण्ड और ढलाई (००० टन)	१० अधूरा तैयार इस्पात (००० टन)	११ तैयार इस्पात (००० टन)	१२ इस्पात की नलियाँ (टन)
१९४६	१,३४६ ४	७५ ६	१५ ६	१,२६३ ६	१,०३० ८	८९० ४	
१९४७	१,३२० ०	६७ २	१८ ०	१,२४९ ४	१,०२७ २	८९२ ८	
१९४८	१,४०५ २	५१ ६	७ २	१,२५६ ४	१,०११ ६	८५६ ८	
१९४९	१,५२७ ६	६३ ६	१९ २	१,३५२ ४	१,१०५ २	९३० ०	४७० ४
१९५०	१,५९२ ४	६८ ४	१८ ०	१,४२७ ६	१,१४२ ४	१,००४ ४	४२७ २
१९५१	१,७०८ ८	९२ ४	२४ ०	१,५०० ०	१,२४९ २	१,०७६ ४	४५६ ०
१९५२	१,६८४ ८	१२९ ६	४० ८	१,५७— ०	१,३०८ ०	१,१०२ ८	२१४ ८
१९५३	१,६५४ ८	११५ २	७ २	१,५०७ २	१,२३० ०	१,०१७ ६	अप्राप्त
१९५४ जनवरी	१६३ २	७ ३	० १	१५४ २	१३१ ४	१०६ ७	शून्य
फरवरी	१४४ ०	१२ ३	० ४	१३२ ६	११४ २	९९ १	१२ १
मार्च	१५६ १	७ ७	० ३	१४७ ५	१२५ ६	११४ ५	अप्राप्त
अप्रैल	१३८ ६	१० ०	० ४	१२८ ७	१०९ ७	९९ १	अप्राप्त
मई	१४३ ८	११ ८	० ४	१२७ ७	१०६ ४	९८ २	अप्राप्त
जून	१३८ ४	१३ ३	० ८	१३१ ०	११५ ३	९६ ६	अप्राप्त
जुलाई							अप्राप्त
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

*नवीन रिपोर्टों के अनुसार इन अंकों में संशोधन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष		१३ लकड़ी के पेच (००० ग्रोस)	१४ मशीनी पेच (००० ग्रोस)	१५ रेजर ब्लेड (लाख)	१६ हरीकेन लालटेनें (०००)	१७ गैस के लैम्प (०००)	१८ तामचीनी का सामान (००० संख्या)	१९ बटाई हुई धातु (टन)	२० इलेक्ट्रोप्लेटिंग (संख्या)
१९४६					४३० ४	१८ ६		..	
१९४७		७४ ४	.		९०६ ६	१६ २	८,४२२ .	६७२	१६८
१९४८		१६८ ०	३१ २		६७६ २	३८ ४	६,७८३ २	१,४६४	३४८
१९४९		३४४ ४	८७ ६	७५ ६	१,७२८ ०	३२ ४	६,५६० ४	३००	५५२
१९५०		७०३ २	१२९ ६	१०६ ८	२,८०६ ८	३८ ४	५,४४५ ६	२,१४८	७५६
१९५१		७६६ ८	१२७ २	२२६ २	३,६७६ -	६२ ४	८,१३० ०	१,८६६	१,५६०
१९५२		१,३२९ ६	१४७ ६	१०८ ०	३,५२३ [illegible]	३४ ८	७,६६० ८	२,०१६	१,०२०
१९५३		२,५७१ ६	१६- ०	२३१ ६	४,३१२ ८	३० ०	९,४८३ ६	१,६५६	६२४
१९५४	जनवरी	२६२ १	१- ३	५२ ८	४०२ ७	१ १	१,१८६ ५	१८२	१०२
	फरवरी	३१० ६	१६ ४	५७ २	३५६ ४	१ ६	१,१७६ ९	२२५	६५
	मार्च	४४६ ३	२२ ०	६४ ६	४०८ ५	२ ४	१,२५६ २	२२४	८०
	अप्रैल	४१२ ०	२० ३	८१ ५	४२३ ५	३ ९	१,१६६ २	१७०	११०
	मई	४२६ ९	२० ६	९१ ३	४११ २	२ ७	१ १६७ ६	२३६	६४
	जून	५०२ ०	१८ ४	९६ ८	३३७ ०	५ २	१,१६८ ३	१२६	२८
	जुलाई	४५- ०	१७ ८	१२६ ६	४७० ०	३ ७	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	अगस्त								
	सितम्बर								
	अक्तूबर								
	नवम्बर								
	दिसम्बर								

[४] मशीनें (बिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष		२१ डीजल इंजिन (संख्या)	२२ शक्ति चलित पम्प (०००)	२३ सिलाई की मशीनें (संख्या)	२४ मशीनों के औजार (मूल्य ००० रुपये)	२५ ट्विस्ट ड्रिलस (०००)	२६ केलिको करघे (संख्या)	२७ रिंग स्पिनिंग फ्रेम (पूर्ण) (संख्या)	२८ पिसाई के चक्के (००० पौंड)	२९ धुनाई की मशीनें घूमने वाली चपटी (संख्या)
१९४६		४६८		६,१२० [ग]	६,१२४ -	६३ ६				
१९४७		६८४	६ ०	४,८५६	४,५-७ ६	२३५ २				
१९४८		१,०२०	८ ४	२०,०१६	५,४७३ २	२७६ ०				
१९४९		२,०७८	१४ ४	२५,०३२	४,७२६ २	६०० ८			७०६ ८	
१९५०		४,५६६	३० ०	३०,--८	२,६९० ४	४४७ २			५०० ४	
१९५१		७,२४८	४८ ०	४४,४६०	४,७३० ४	१,०१७ ६	२,२-०	२७६	७०८ ०	
१९५२		४,२४८	३२ ४	५०,०४०	४ ४३७ ६	७७५ २	१,३६८	१८८	८६५ ०	१०८
१९५३		३,७२०	२५ २	६२,४२४	४,४०७ ६	३३४ -	१,-१२	२०४	८०७ ६	१६२
१९५४	जनवरी	६६५	२ ५	६,७८८	३०२ ३	३६	२४	१४	१०० ३	३०
	फरवरी	५४५	२ ४	७,११८	३२५ ७	३- -	२८	२०	१०८ १	२०
	मार्च	७१६	२ ३	७,०८३	५४० १	४७ ४	४०	२२	९२ ४	३०
	अप्रैल	८-०	२ ३	७,२४६	४३५ ७	५० १	१६-	१४	९१ ८	३०
	मई	६६२	२ ३	६ ८१५	४५ १	४६ १	१५-	१४	७ ४	३५
	जून	७७३	२ ६	६ ४५०	४२१ ०	२५ ३	१ ६	२४	९० ४	४०
	जुलाई	अप्राप्त	अप्राप्त	७,०५५		२	१-७	अप्राप्त	अप्राप्त	४०
	अगस्त									
	सितम्बर									
	अक्तूबर									
	नवम्बर									
	दिसम्बर									

[ग] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आँकड़े ।

१. औद्योगिक उत्पादन

[५] अलौह धातुएं

वर्ष	३० अलूमानियम (टन)	३१ सुरमा (टन)	३२ तांबा (टन)	३३ सीसा (टन)	३४ लोहे से असम्बद्ध धातुओ के नल (टन)	३५ सोना (औंस) [घ]
१९४६	३,२३६ ४	१३२ ०	६,३१० –	शून्य		१,३१,७७२
१९४७	३,२१४ –	२३५ २	५ २३१ ६	१८९ ६		१,७१,७–०
१९४८	३,३६१ ७	३३० ०	५ ६४ ४	६२५ २	३२४ ०	१,८०,८५२
१९४९	३,४– ६	९९ ६	६ ३२० ०	५८४ ०	३६० ०	१,६४,१४८
१९५०	३,५ ६	३०५ ६	६ ९४ ४	६२७ ६	३३१ २	१,९६,–४८
१९५१	३,८४– ४	३०७ ६	७० ३ ६	८१९ ७	२४८ ४	२,२६,२३६
१९५२	३,५६६ ४	१८१ ७	६ ०७ ७	१,१३१ ६	३७० ८	२,५२,९००
१९५३	३,७५– ४	१३० ८	४ ९७० ०	१,६६४ ४	३५७ ६	२,२३,०२०
१९५४ जनवरी	३०२ ७	९ २	३१० ०	१८०	१९ १	१९,२८९
फरवरी	२९ ५	४४ ०	६२० ०	१२५	१४ ९	१९,८३०
मार्च	३ ७५	३७ ६	६६५ ०	२००	१६ ६	२०,९०१
अप्रैल	३७– २	५२ ०	६३० ०	१६७	५ ४	२०,८१५
मई	३१५ १	४० ०	६१५ ०	१३०	२१ ०	१८,६८५
जून	२३४ ६	५६ ०	५६० ०	८५	४ ५	२१,२०२
जुलाई	—	५ –	६२३ ०	१५०	अप्राप्त	२१,१३७
अगस्त						
सितम्बर						
अक्तूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैदराबाद में हुए सोने का उत्पादन भी इन आंकड़ों में सम्मिलित है।

[६] बिजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई बिजली [ङ] (लाख किलोवाट प्रति घण्टा)	३७ बिजली ले जाने की नलियां (००० फुट)	३८ सूखे सेल (लाख)	३९ संग्रह की बैटरी (०००)	४० बिजली के मोटरें (००० हार्स पावर)	४१ बिजली के ट्रान्स-फार्मर (००० के.वी.ए.)	४२ बिजली की बत्तियां (०००)
१९४६	३८ ९२०		८७९ ६	२७ ६	४५ ६	३८ ४	८,११२
१९४७	४०,७३०		८७९ ६	६९ ६	३८ ४	३२ ४	७,३२०
१९४८	४५,७५०	१,७०७ ०	१,२३८ ४	११० ४	६० ०	८१ ६	९,२५२
१९४९	४९,०९०	२,९४८ ४	१,५२१ ६	१०६ ८	६८ ४	१०९ २	१३,६४४
१९५०	५० ८८०	२,९६६ ४	१,३८१ ७	१८७ २	८१ ६	१७१ ६	१४,३०४
१९५१	५८,५१७	३,९६९ ६	१,४३४ ०	२१२ ४	१४१ ६	१९४ ४	१५,५१६
१९५२	६१,२४–	३,६९४ ८	१,३०२ ०	१५८ ४	१५७ २	२१४ ८	२०,८८०
१९५३	६६,२७६	३,७१६ ४	१,४८४ ४	१७६ ४	१६२ ०	३०८ ४	१९,७७६
१९५४ जनवरी	५,८०७	४४२ ६	१४६ ४	१२ ७	१२ ६	३० ०	१,७४६
फरवरी	५ ४२७	५११.६	१२१ १	८ ९	१४ ३	२४ ७	१,५६७
मार्च	५,–५७	६०३ ६	११७ २	१२ ४	१५ ०	३४ ०	१,९२८
अप्रैल	६,०४९	५१८ ८	१५१ ७	१७ ०	१४ ३	२६ ६	१,८२७
मई	६,३१९	५४९ ३	१६– ७	१७ ३	१५ ३	३२ ४	१,८४७
जून	६ २५२	५५४ ८	१६६ ९	अप्राप्त	१५ २	३१ ०	१,९८१
जुलाई		अप्राप्त	अप्राप्त	,,	१७ ०	३४ १	२० १६६
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[ङ] जम्मू और काश्मीर के आंकड़े भी सम्मिलित है। अन्य दो स्टेशनों के साथ सार्वजनिक उपयोग के कार्यों के सब स्टेशन भी इसमें आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन

(६) बिजली के उद्योग (गत पृष्ठ से आगे)

वर्ष	४३ बिजली के पंखे (०००)	४४ रेडियो रिसीवर (संख्या)	४५ तार — तांबे के बने हुए (टन)	लपेटने के (टन)	रबड़ चढ़े हुए (लाख गज)	४६ घर में लगाने वाले मोटर (संख्या)	४७ घरेलू रेफ्रीजरेटर (संख्या)
१९४६	१२०.४ [च]		७,८६०	२१६	२२५.६		
१९४७	१५८.६	३,०३६					·
१९४८	१८०.०	२४,६६६	६,८८०	८३६	२१६.६		
१९४९	१७८.८	१६,८३६	५,७०४	५२६	१६३.२		
१९५०	१६३.२	४४,२४०	५,६७८	८५२	३३६.६		
१९५१	२१२.४	८२,७८८	३,०००	५००	४११.६		
१९५२	१६५.६	७१,४०६	५,—	३६६	३२८.८	३४,३५६	६००
१९५३	२०७.६	५६,०६८	७,०६८	२५८	४८४.८	८०,६७२	१,१४०
१९५४ जनवरी	१६.७	४,५६२	४०६	८	३३.६	६,४८२	१०२
फरवरी	१६.१	५,१७६	३०५	६	३५.०	१२,५८५	३०
मार्च	२०.०	६,३०१	८३२	१६	३५.—	१३,१६२	१५०
अप्रैल	२१.५	५,०२८	२०७	१५	४०.२	११,६००	१५०
मई	२०.५	४,४०६	१४८	२२	४३.६	१०,४५५	१००
जून	१६.८	अप्राप्त	३४२	२	५५.४	१३,०६८	१७५
जुलाई	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	११८
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[च] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आंकड़े।

(७) रासायनिक पदार्थ

वर्ष	४८ गंधक का तेजाब (टन)	४९ कास्टिक सोडा (टन)	५० सोडा ऐश (टन)	५१ तरल क्लोरीन (टन)	५२ ब्लीचिंग पाउडर (टन)	५३ बाइक्रोमेट (टन)	५४ सुपर-फास्फेट (टन)	५५ अमोनियम (टन)	५६ तूतिया (टन)
१९४६	६०,०००	२,६०४	१२,०००	१,५००	२,००४	२,०७६	४,५००	२२,४६४	·
१९४७	६०,०००	३,२१२	१३,६२०	१,७०४	२,५५६	२,३०४	५,००४	२१,२७६	
१९४८	८०,००४	४,३८०	२६,१४८	१,८००	२,८३२	२,६४०	२१,३६०	३५,२०८	४३२
१९४९	६६,४५६	६,३००	२७,६१६	२,६५२	२,४७२	१,७१६	४६,७२८	४५,६३६	४५६
१९५०	१,०२,४८०	१०,८४८	४३,७८८	३,६७२	३,३१२	१,६८०	५२,४२८	४७,३०४	४३२
१९५१	१,०६,६३२	१४,७२४	४७,५३२	५,२६८	३,५८८	३,२७६	६१,०२०	५२,६०४	५०४
१९५२	६६,०८४	१७,०६४	४४,३२८	६,२४०	७८२	१,४६४	४६,६५६	१,२०,३०८	३३६
१९५३	८०,६२१	२२,६०८	५६,८६८	८,१३६	१,६४४	२,५०८	४८,३००	३,१६,६२०	५१६
१९५४ जनवरी	११,१३७	२,३३७	४,८५६	६७३	२६२	२३०	७,६०८	२४,५३५	५०
फरवरी	१२,०००	२,१६६	४,३६६	५४६	८६४	२०७	८,३००	२३,७६५	४२
मार्च	११,५१५	२,३४८	४,०३०	८५१	२४३	२७२	७,८२५	२५,६६५	३०
अप्रैल	११,४८०	२,३२७	४,३६०	७५६	२४७	३०६	८,५२०	२४,१६६	४४
मई	११,६५०	२,३४७	४,२६२	७४१	१६५	३०७	६,११०	२४,४६०	७१
जून	११,४२०	२,३२४	२,६७८	७८७	२७१	८६५	१०,७००	२७,०५७	७६
जुलाई	अप्राप्त	अप्राप्त	३,२३२	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२४,०००	६६
अगस्त									
सितम्बर									
अक्तूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

१. औद्योगिक उत्पादन

(८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	५७ रंगलेप और वार्निशें (टन)	५८ दियासलाई [छ] (००० ग्रोस) [ज]	५९ साबुन [झ] (टन)	६० सीमेंट (हंडरवेट)	६१ गैसें धातुओं को जोड़ने का: आक्सीजन (लाख घन फुट)	६१ गैसें धातुओं को जोड़ने का: एसिटिलीन (लाख घन फुट)	६२ ग्लिसरीन (टन)	६३ बेकलाइट का साँचे बनाने का चूरा (००० पौंड)
१९४६	३८,४००	४११ ६					१,७८८	
१९४७	३८,६०४	४६१ ६					१,३३२	
१९४८	३५,७७४	५३२ ८	७१,६००	१२,२६५			२,१४८	
१९४९	३०,९२४	५२६ –	७१,००६	१२,१४६			१,७४०	
१९५०	२७,६४८	५२३ २	७२,६६९	१३,५००	१ ४५२ ०	२९८ ८	२,००४	
१९५१	३३,४८०	५७७ २	८३ ४२७	१४ ११२	१ ८२६ ६	३१५ ६	२,४२४	४५९ ६
१९५२	३२,१७२	६०८ ४	६ ३७६	१६ ६५०	१ ८८१ ६	३४६ ८	२,२२०	६६७ २
१९५३	३१,०५२	५५० ४	७,२००	१७ १००			२,५०८	८३७ ६
१९५४ जनवरी	३,२८१	४५ ६	५,११२	१,६१२	१७० ०	३३ ०	५४	६४ ०
फरवरी	२,४४७	४१ २	५,२४०	१,६२३	१६	३२ ०	२१८	२३ ६
मार्च	३,११५	४५ ७	६,२७५	१, ६४	१८६ ८	३४ ०	२०२	७३ ६
अप्रैल	२,६३६	३८ ७	५,६८०	१,३६८	१६८ ०	३४ ०	२८२	७४ ४
मई	२,४६१	४३ ६	६,०६५	१,३३०	१९१ ०	३५ ०	१४८	८२ ४
जून	२,७२६	३४ १	अप्राप्त	१ ३०७	१९२ ०	३३ ०	१४५	६३ ४
जुलाई	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१,४१२	१६८ ०	३९ ०	अप्राप्त	१०८ ४
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[छ] इसमें जम्मू और काश्मीर के आँकड़े भी शामिल हैं। [ज] ६० तीलियों वाली डिबिया के ५० ग्रोस।
[झ] ये आँकड़े संगठित कारखानों के उत्पादन के हैं।

(८) रसायनिक उद्योग

वर्ष	६४ लिवर का सत: इंजेक्शन (००० सी. सी.)	६४ लिवर का सत: खाने वाला (००० पौंड)	६५ रेक्स (टन)	६६ अलकोहल (००० गैलनों में खुला हुआ): इंजनों में जलने वाला	६६ अलकोहल: शुद्ध स्पिरिट	६६ अलकोहल: मिश्रित स्पिरिट	६७ अलसी का तेल, पोता हुआ टाट (लिनोलियम) (००० ली० गज)	६८ प्लास्टिक के साँचे (००० ग्रोस)
१९४६				२,३९७ ६	२,१४६ ८	१,०२३ ६		
१९४७				२,७३६ ०	१,७७४ ८	१,०८४ ८	...	
१९४८				३,७७६ ४	२,३८६ २	१,४०१ ६		
१९४९	७,३१८ ८	१८१ २		४,२३० ०	१,९५० ०	१,०९५ ६		
१९५०	११,१४५ ६	३०१ २		४,४९७ ६	३,४३५ ६	१,४७७ २		
१९५१	१०,६८२ ४	३१६ २	२,०४०	५,८०९ २	५,०१९ ६	१,९९६ ८	.	१,४४६ ०
१९५२	१०,३७२ ८	३१० ८	३,५८–	७,७४२ ४	४ ६६८ ०	२,१७८ ०	१५९ ६	१,५५४ ४
१९५३	१०,२३८ –	२०४ ४	४,३५६	८,१२० ४	४,३७६ ४	२,४९३ ६	१६३ २	१,३५७ ६
१९५४ जनवरी	१,४१६ ०	२४ २	३८८	६३– ६	४४५ १	३२३ ४	२० ७	११७ ५
फरवरी	६१३ ४	३३ २	३५२	६२६ ४	४७ ६	२२७ ३	२८ ५	१०४ ६
मार्च	११५४ ०	११ ६	३६६	६७६ ३	४०५ १	२७२ ८	३६ ५	१०४ ६
अप्रैल	१,०५३ ७	२२ १	३९५	८–– ४	३७६ ०	२७६ १	२६ ६	११४ ८
मई	१ १२३ २	१– ५	४०४	७०० ०	३३० ४	२४० ५	२७ १	१०३ ४
जून	६२१ ४	१६ ८	३ ५	६३७ २	३८५ ८	२१० ४	१८ ७	१०२ ६
जुलाई	अप्राप्त	अप्राप्त	३७३	४–२ ४	अप्राप्त	अप्राप्त	३१ ४	अप्राप्त
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(९) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष		६९ सीमेंट	७० सीमेंट की चादरें, एसबेस्टस	७१ सफेद माल	७२ स्वच्छता के लिये बनाया गया माल	७३ पत्थर का सामान	७४ चीनी की पालिश वाले नल	७५ कच्ची आंच सहन करने वाली मिट्टी की ईंटें	७६ घिसने वाला सामान	७७ बिजली-अवरोधक (इन्सूलेटर) एच.टी.	७७ बिजली-अवरोधक (इन्सूलेटर) एल.टी.
		(००० टन)	(००० टन)	(टन)	(टन)	(००० टन)	(००० दर्जन)	(००० टन)	(००० रीम)	(०००)	(०००)
१९४६		१,५४२ ०	२५ २					१५७ २	६१ २		
१९४७		१,४४७ १						१७५ २	६० ८	७४ ४	१,४२० ४
१९४८		१,५५२ ८	७६ ८	५,०७६	१,४६४	१५ ६		१८९ ६	४५ ६	९० ०	१,५०३ -
१९४९		२,१०२ ४	८६ ४	३,७३२	१,६०८	२२ ८		२०८ ८	२५ २	१९६ ८	१,२३६ २
१९५०		२,६१२ ४	८६ ४	६,०६०	१,७८-	-६ ४	६२ ४	--६ ४	८१ २	१७४ ०	१,-७ २
१९५१		३,१९५ ६	८१ ८	९,१६५	६४८	३० ०	३१० ८	२३७ ६	३७ २	२४४ ८	१,४३२ -
१९५२		३,५३७ ६	८७ ६	६,०६०	४३०	३३ ६	३४५ ६	-४३ ६	५१ २	३२५ २	३,०७ ०
१९५३		३,७८० ०	७५ ६	१०,४४०	६८८	३३ ६	२७४ ४	३३८ ०	५७ ६	४६३ २	२,४६० ०
१९५४	जनवरी	३६२ ८	७ ७	९८४	५६	२ ८	२२ ६	१८ ७	४ ६	३९ ८	४४८ ६
	फरवरी	३५१ ६	७ ५	६०६	५०	३ ५	३७ ५	१७ ८	५ ३	४२ ४	२४७ ६
	मार्च	३८९ ०	७ ०	८८०	१०७	३ १	४५ ६	२० ७	५ ५	४० १	१९४ ०
	अप्रैल	३५६ ८	६ ३	९३३	१०६	३ ५	३_ ३	२० ५	७ ०	४८ ८	२६३ १
	मई	३७३ ४	६ ७	८७०	११२	३ ३	३५ ७	१७ ७	५ २	५२ ४	२५८ ६
	जून	३५२ ५	५ ६	८१६	१०६	३ ०	अप्राप्त	१८ ०	६ १	४० १	२३६ ३
	जुलाई	२६२ ६	६ ८	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१६ ०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	अगस्त										
	सितम्बर										
	अक्तूबर										
	नवम्बर										
	दिसम्बर										

(१०) कांच और कांच का सामान

वर्ष		७८ कांच की चादरें (००० वर्ग फुट)	७९ प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	८० बिजली की बत्तियों के खोल (लाख बत्तियां)	८१ कांच का अन्य सामान (टन)
१९४६		८,७३६ ०		..	...
१९४७		५,७१६ २	१,६२०	२११ ६	६३,५१६
१९४८		६,२५५ ६	१,६८०	६१ ७	६४,४२८
१९४९		३,४५१ २	२,१६०	१२६ ६	७२,२१६
१९५०		६,५७० ०	१,६८०	२४४ ०	६०,३२४
१९५१		११,०८६ २	१,४७६	१६६ ८	८५,३६८
१९५२		९,०४३ २	१,३२०	१६६ ७	७२,४४४
१९५३		२२,७८६.८		१७ ३	७,२१६
१९५४	जनवरी	२,२५३ ४	१७०	१३ ४	५,२६०
	फरवरी	२,१४८ ४	११८	१४ ४	७,२७३
	मार्च	२,४०६ ८	११६	१३ ०	७,२५२
	अप्रैल	१,८६७ २	११६	१६ १	७,२४२
	मई	४२० -	११४	१५ ६	६,७३२
	जून	५६६ १	११६	अप्राप्त	अप्राप्त
	जुलाई	अप्राप्त	अप्राप्त		
	अगस्त				
	सितम्बर				
	अक्तूबर				
	नवम्बर				
	दिसम्बर				

१. औद्योगिक उत्पादन

(११) रबड़ उद्योग

वर्ष	८२ रबड के जूते (लाख जोड़े)	८३ रबड चढ़ा माल, खिलौने गुब्बारे आदि (लाख दर्जन)	८४ टायर: मोटर गाड़ियां (०००)	८४ टायर: साइकिलें (०००)	८४ टायर: ट्रैक्टर (संख्या)	८४ टायर: वायुयान (संख्या)	८४ टायर: तार (०००फुट)	८५ ट्यूब: मोटर गाड़ियां (०००)	८५ ट्यूब: साइकिलें (०००)	८५ ट्यूब: ट्रैक्टर (संख्या)	८५ ट्यूब: वायुयान (संख्या)
१९४६	१४४ ०		७५० ०	[illegible]				७०० ८	३,७४४		
१९४७			८१० ०	[illegible]				८१० ८	४,३२२ ४		
१९४८	१८७ २	२३३ ४	७७० ४	३,३६? ६			.	७५० ०	३,७८६ ६		.
१९४९	१७७ ६	६८ ४	६८६ ४	४,६११ ६				७०२ ०	३,१२८ ४		
१९५०	१९५ ६	१०५ ६	६३८ ४	३,३७५ २				६६८ ४	४,२०७ ?		
१९५१	२३० ४	११० ४	८७० ०	३,४०–		२,६७२	३७३ २	८३० ८	४,८६७ ?		६९६
१९५२	२२८ ०	१३–	७२१ ?	[illegible]	३,–[illegible]	६–४	३८५ २	६६१ २	४,२६६ ४	५,४–४	६८४
१९५३	२४० ०	१२४ ८	७६८ ०	४,६४५ ?	[illegible]	[illegible]	४४२ ८	६५८ ८	४,६०० –	८,१३६	४२८
१९५४ जनवरी	२४ ३	९ ५	७० ६	४३१ ३	८२–	२९९	२३ ४	५३ ९	४५५ ९	३६१	१०६
फरवरी	२५ ४	१० ४	७२ ९	६३९ ०	१,०६७	४०१	४३ ७	६२ १	४८५ ६	७–६	१३३
मार्च	२२ ?	१० ४	७३ ६	३९७ ?	१,४२९	३–७	३७ ८	६७ ९	४२८ ७	९३७	१४२
अप्रैल	२६ ३	११ १	७४ २	५६४ ३	१,३११	३७	३३ १	७१ ४	४९९ ?	७६७	५६
मई	२५ ५	१२ ५	७४ ०	४४७ ७	२,१७४	३३२	१७ ८	७० ९	४८३ ६	२ ०७७	१०१
जून	२२ ७	१७ ७	७३ ०	४०९ १	१,५–४	६२?	२५ ७	६५ ६	५०२ ७	८८८	१११
जुलाई	२५ ५	अप्राप्य	६– १	[illegible]	१६,१३	२७०	१३ ६	६४ ९	[illegible]	२,४८६	२१९
अगस्त											
सितम्बर											
अक्तूबर											
नवम्बर											
दिसम्बर											

रबड़ उद्योग (शेषांश)

वर्ष	८६ रबड के नल: रेडिएटर (०००)	८६ रबड के नल: वैकुअम ब्रेक (०००)	८६ रबड के नल: अन्य प्रकार के (०००फुट)	८७ पंखा के पट्टे (०००)	८८ खेलों का रबड का सामान (०००)	८९ इबोनाइट (००० पौंड)	९० पानी रोकने वाले वस्त्र (००० गज)	९१ रबड के स्पंज (००० पौंड)
१९४६	—					...		
१९४७								
१९४८	.	.	.			..		
१९४९	१०० ८	३७७ ६	२,८८५ २	४८ ०	१,४१० ०	.	.	
१९५०	२०६ ४	३३३ ६	२,८२० ०	१६० ८	९६१ २			
१९५१	२२० ८	४७२ ८	३,४७५ ०	२९८ ८	७४८ ८	१९९ २	१,५७६ ८	४७१ ६
१९५२	१५४ ८	४४४ ०	३,८४९ ६	५५८ ०	१,२१६ ८	१२६ ?	१,२६४ ८	६३९ ६
१९५३	१४० ४	४७२ ८	४,४२२ ०	४३२ ०	१,२३३ ६	८८ ८	२,०५४ ४	४९५ ६
१९५४ जनवरी	११ ४	२७ २	३५? १	५३ ४	१२८ ०	८ ७	१८० ३	५१ ७
फरवरी	८ ६	२७ ०	३४७ ०	४८ ६	१२४ ६	९ ७	१९२ ६	७४ ०
मार्च	१० ७	३५ ४	३५० १	४३ २	१०४ ७	७ ३	१७२ ६	६८ १
अप्रैल	१२ ६	५० १	३६३ ०	४० ३	५० ७	७ २	२०७ ६	७३ २
मई	१२ २	७० ?	४०४ ७	३८ ८	९२ ५	६ ६	२५० ५	७८ ३
जून	११ ५	७२ ६	१८०	३७ ५	११ ०६	८ ९	२१९ २	९१ ९
जुलाई	१६ ८	५३ २	४४२ ९	३७ ९	१२४ ८	—	..	
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(१२) खाद्य और तम्बाकू

वर्ष		९२ [अ] गेहूँ का आटा (००० टन)	९३ [ट] चीनी (००० टन)	९४ [ठ] कॉफी (टन)	९५ [ड] चाय (दस लाख पाउंड)	९६ नमक (००० मन)	९७ वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुएं (टन)	९८ सिगरेट (लाख)
१९४६			९२२ ८	२४,०४८	५५८ ०	४७,८६८	१,३५,०६६	
१९४७			६०१ ७	१६,८४-	५६१ ६	५१,६००	६८,११२	१,८८,७०६
१९४८			१,०७५ ७	१६,११	५६८ ८	६३,५२८	१,२६,६६६	२,१८,४४४
१९४९		४१७ ६	१,००० ८	२२,३८०	५८५ ६	५५,६७०	१,५५,५४४	२,१८,६०४
१९५०		४७७ ६	९७६ ८	२०,५२९	६१५ ७	७१,३१६	१,७१,६३६	२,३६,४६२
१९५१		४८६ ०	१,११४ ८	१८,०६६	८६८ ८	७४,३७६	१,७२,३२०	२,१४,४८८
१९५२		५१२ ४	१,४८४ ०	२१,०६६	६१४ ४	७६,८६०	१,६०,८१२	२,०१,१६९
१९५३		४८३ ६	१,२६१ १	२२,५७२	६०८ ४	८६,३१६	१,६१,६५२	१,६८,३९२
१९५४	जनवरी	३५ ४	३०३ ६	२,६०८	६ ४	१,८८६	२५,८६३	१७,६३६
	फरवरी	३६ २	२५१ १	४,८४१	५ ८	३,६८३	१८,११७	१६,७३३
	मार्च	३६ १	१५५ १	६,१००	१० १	६,६६२	१६,८०३	१६,७१५
	अप्रैल	४० ७	४२ ५	४,३८४	३४ ८	१२,५५६	८२,८२०	१५,९६०
	मई	३६ ८	२ ६	३,७३६	५६ ०	१७,८६४	२३,२७६	१५,५६५
	जून	३० ६		१,६२५	६६ ३	१६,१४३	१६,०८४	१७,५६०
	जुलाई	३८ ३	अप्राप्त	१,०६६	८५ ४	६,३३३	अप्राप्त	१८,६४०
	अगस्त							
	सितम्बर							
	अक्तूबर							
	नवम्बर							
	दिसम्बर							

[अ] ये आँकड़े केवल बड़ी आटा मिलों के हैं। [ट] ये आँकड़े फसली साल (नवम्बर से अक्तूबर) तक के हैं और केवल गन्ने से बनने वाली चीनी के विषय में हैं। [ठ] ये आँकड़े शोधन और पीसने के पश्चात् कॉफी भण्डार में दे दी जाने वाली कॉफी के विषय में हैं। [ड] ये मासिक आँकड़े पंजाब (काँगड़ा और मण्डी रियासत) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष		९९ जूते, पश्चिमी ढंग के (००० जोड़े)	१०० जूते, देशी ढंग के (००० जोड़े)	१०१ कमाये चमड़े का खोल (०००)	१०२ वनस्पति साधनों से कमाया हुआ गाय-भैंस का चमड़ा (०००)	१०३ चमड़े जैसा कपड़ा (००० गज)
१९४६						...
१९४७						
१९४८		३,२०१ ६	२,०६७ ३	१,०८७ २	१,६५८ ४	
१९४९		२,८५० ०	२,१०८ ४	५८० ८	१,८३४ -	
१९५०		२,८३६ ८	१, ६६ -	४८१ ६	१,४१६ ४	
१९५१		३,६४० ८	२,००३ ६	७६६	१,७०६ ०	१,६१८ ८
१९५२		३,३६७ २	१,८०६ ०	६२० ३	१,४७ ४	६५४ ०
१९५३		३,३४८ ०	२ २०४ ६	७०० ८	१,२ ८ ४	६८५ २
१९५४	जनवरी	२८६ ५	१ ६	५६	१०० २	८२ ३
	फरवरी	३१७ ५	१८७ ८	६८	१० ६	६५ २
	मार्च	३२२ १	१३ ३	७१ ६	१३ ४	६७ ८
	अप्रैल	२६४ ६	१४५ ३	६६ ६	१०१ ४	८७ ४
	मई	२७७ १	१३२ ४	३	६२ -	६५ १
	जून	२५२ ३	१८० ३	५७ -	५	६१ ८
	जुलाई	३०३ ६	२०३ -	५४ -	६३ १	१०६ २
	अगस्त					
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

१. औद्योगिक उत्पादन

(१४) अन्य उद्योग

वर्ष		१०४ खनिज कोयला (००० टन)	चाय की पेटियां	१०५ प्लाइवुड (००० वर्ग फुट) व्यापारिक	छपाई और निर्माण का	योग	१०६ कागज (टन) लपेटने का	विशेष किस्म का कागज	गत्ते	योग
१९४६		२८,८८४	३५,४००	२३,६००	५–, ००	६४, ९६	१५,६–४	६,८२८	१८,५८८	१,०५,९९६
१९४७		३०,०००	२८,५६०	५,७३६	२४,२९६	५२,७७६	१६,८४–	५,३१६	१८ १५६	९३ ०९६
१९४८		२९,८२०	४५,१०८	–,६२–	५३,७३६	५०,३७६	१७,३८८	१२,९१२	१७,२३२	९७ ९०८
१९४९		३१,४५२	३८,४००	९,२४०	४७,६५०	५–,४–६	१२,८७६	११,९०४	१८,९३६	१,०३,२००
१९५०		३१,९९२	४१,३७६	, ६६	५० २२०	७०,२५२	१४,६१६	५,१९६	१८,५४–	१,०८,९१२
१९५१		३४,३०८	६०,६४–	१०,२००	७२,–६	[illegible] २६०	२५,४८८	३,१२०	२४,०४८	१,३१,९१६
१९५२		३६,२२८	७–,२२८	१२,३१२	६०,५४०	६१,४२–	२१,५४०	२,८२०	२१,७२०	१,३७,५०८
१९५३		३५,८४४	४६,७–८	११,३७६	६० ७६	६५ ६२–	२१,२४४	३,८२०	१९ ५१२	१,३९,७०४
१९५४	जनवरी	२,९०३	४,२६३	८६३	५,२२६	८ ४ ५	२,१७७	२०२	१,४६५	१०,३२८
	फरवरी	३,०५६	४,७–९	–९	५ ६७–	५ –४७	२ ००५	८६८	१,२८६	९,४०६
	मार्च	३,०७१	६ २४४	१ २११	७ ४५५	७ ३६७	२ २९४	३००	१,६१३	११,४७४
	अप्रैल	३,०३७	५ ७२४	१ २७४	८ ––	५०	२,२६०	५६३	२,११२	१३,७९५
	मई	२,९७७	५ २८७	१ ०२४	६,२११	९ ८७३	१ १०३	३०२	१,९२०	१२,९९८
	जून	२,८८५	४,०५९	५–५	५,६४४	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१३,०५७
	जुलाई	२,९९६	४,६९२	७६४	५,४५६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	अगस्त									
	सितम्बर									
	अक्तूबर									
	नवम्बर									
	दिसम्बर									

(१४) अन्य उद्योग (शेषांश)

परिवहन

वर्ष		१०७ मोटर गाड़ियां (संख्या) कारें	ट्रक	योग	१०८ साइकिलें पूरी तैयार (मूल्य ००० रुपये)	हिस्से
१९४६					४२,९८४ (ढ)	९९३ ६ (ढ)
१९४७		.	...		३१,८६० (ढ)	१,७१८ ४ (ढ)
१९४८		.			५५,४५३	१,१२४ ८ (ण)
१९४९		६,६७२	१५,१३२	२१,८०४	६४,४२८	१,७९६ ४ (ण)
१९५०		६,५८८	–,०१६	१४,६०४	१,०३,१५२	६,४५१ १ (ण)
१९५१		१२,३८४	९,८८–	२२,२७२	१,१४,२७८	४९,४८८ ४
१९५२		६,९४८	८,३४०	१५,२८८	१,९६,९५६	८,२४७ ६
१९५३		४,९३२	८,९८८	१३,९२०	२,६४,१९८	१०,१९४ ०
१९५४	जनवरी	२७७	९९६	१,२७३	१८,६००	८९७ ०
	फरवरी	४२३	७ ०	१,११३	२२,५६३	८५३ [illegible]
	मार्च	५००	७९९	१,२९९	२७,८३५	९२९ ७
	अप्रैल	४७१	३६५	८३६	२६,३०४	१,०७६ ३
	मई	४०३	४१६	८१९	३३,०७३	९९४ ८
	जून	४४२	३१३	७५५	३४,४१७	१,१०५ ९
	जुलाई	अप्राप्त	अप्राप्त	९९६	अप्राप्त	अप्राप्त
	अगस्त					
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

[ढ] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आंकड़े। [ण] १९४८ [illegible] १९५० तक के वर्षों के अंकों में पूरी साइकिलें बनाने वाली फर्मों द्वारा तैयार किये गये हिस्से शामिल नहीं हैं।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लाख रुपयों में)

व्यापारी माल	१९४८-४९	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५३-५४ (अप्रैल जुलाई)	१९५४-५५ (अप्रैल जुलाई)
(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	४,०१,०४	४,७२,०७	५,७८,६८	७,०१,७५*	५,५३,७७	५,१५,६६	१५७,४२	१४६,२२
स्थल द्वारा	३०,५४(अ)	२७,८८	१७,८१	२७,१४*	१८,०४	७,४६	१,५७	२,१०
योग	४,३१,५८	४,९९,९५	५,९६,४९	७,२८,८९*	५,७१,८१	५,२३,१२	१५८,९९	१४८,३१
(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात (केवल समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, पेय और तम्बाकू	६२,३०	१,१४,[illegible]	१,३५,८१	१,५८,२५	१,४३,३०	१,५१,१३	३८,५१	४४,६७
२ कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिर्मित माल	६७,८७	१,०४,३६	१,२५,७७	१,३६,६८	१,४६,२७	१,०६,८६	३८,७७	३०,६१
३ पूर्ण अथवा मुख्यतः निर्मित माल	२,२६,०६	२,४६,७४	३,१५,७०	४,००,०६	२,६०,०८	२,५३,२५	७८,७४	७३,६७
योग [इसमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएं भी सम्मिलित हैं] ...	४,०१,०४	४,७२,०७	५,७८,६८	७,०१,७५	५,५३,७७	५,१५,६६	१५७,४२	१४६,२२
(ग) पुनर्निर्यात (सक्रमण व्यापार छोड़कर)	७,०६	६,०७	४,५६	४,०५	४,०४	४,७६	१,८४	१,७८
(घ) कुल निर्यात	४,३८,७२	५,०६,०२	६,०१,३५	७,३२,९४	५,७७,६५	५,२७,९८	१६०,८३	१५०,१०
(ङ) आयात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,५७,१७	५,६४,३४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३६,०७*	५,४१,०२*	२,१६,३२	१,६३,०२
स्थल द्वारा . ..	८५,०० (अ)	३३,७१	४२,७६	८०,४५	२५,१६	३१,६६	५,८८	५,६०
योग	६,४२,१७	५,९८,०५	६,२३,९३	९,५५,०९	६,६१,२३	५,७२,६८	२,२२,२०	१,६८,६२
सक्रमण व्यापार काटकर		३,२४	६०	८०	१६	१२	६	६
(च) शुद्ध आयात .	६,४२,१७	५,९४,८१	६,२३,३३	९,५४,२९	६,६१,०७*	५,७२,५६*	२,२२,१४	१६८,५६
(छ) आयात (समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, पेय और तम्बाकू	१,२७,१२	१,५६,६४	१,१०,६१	२,६२,०७	१,७४,६५	६२,७५	४४,३६	२१,३७
२ कच्चा माल और उपज तथा मुख्यतः निर्मित वस्तुएँ	१,२७,४७	१,४४,२७	[illegible]	२,४६,०८	१,७९,१६	१,६६,५५	६५,६६	[illegible],०६
३. पूर्ण अथवा मुख्यतः निर्मित वस्तुएं -	२,६७,६०	२,८[illegible],६०	२,६[illegible]	[illegible]	२,५६,३७	२,७६,०३	८८,५४	६२,४२
योग [इसमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएं भी सम्मिलित हैं] ...	५,५७,१७	५,६४,३४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३६,०७	५,४१,०२	२,०६,८७	१६३,०२
(ज) व्यापारी माल का व्यापार सन्तुलन	—१,८३,४५	—[illegible]	—[illegible]	—[illegible]	—८,३६	—५[illegible]२	—६१,३१	१८,७२

*अनाज, दाल तथा आटे के अन्य आयात का मूल्य भी सम्मिलित है

(अ) केवल पाकिस्तान के लिये।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएं*

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) खाद्य, पेय और तम्बाकू

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मछलियां (००० हन्डरवेट)	प्याज* (००० हन्डरवेट)	काजू गिरी (००० हन्डरवेट)	इलायची (००० हन्डरवेट)	गोल मिर्च (००० हन्डरवेट)	चाय (लाख पौंड)	तम्बाकू अनिर्मित (लाख पौंड)	तम्बाकू, निर्मित (००० पौंड)
१९४८-४९	परिमाण	२३८	३०८	३६६	७	१४१	४४,३०‡	६,६०	४,६७६*
	मूल्य	१,४७	८०	४,८३	७३	२,६७	६६,२४‡	६,४६	५,६८
१९४९-५०	परिमाण	३२१	७१५	३०६	१६	११३	४४,५०	६,२०	४,३६७*
	मूल्य	१,६१	१,२६	८,५१	१,२८	१४,८०	७२,६१	११,६४	४,१०
१९५०-५१	परिमाण	३८७	१,१८६	४०८	२१	१०८	४४,२०	१०,३०	११,८२८
	मूल्य	१,४६	१,१५	८,५५	१,४८	२०,४०	८०,४२	१४,११	४,३५
१९५१-५२	परिमाण	४३५	६१५	४२६	१४	२६८	४२,६०	११,२०	१२,३५६
	मूल्य	३,२८	१,०७	६,०३	१,६४	२३,२२	६३,८६	१६,१४	६,३६
१९५२-५३	परिमाण	४८८	६६४	५५-	२०	२४८	४२,७०	८,००	५,१४२
	मूल्य	३,८७	११३	१२,६८	१,६६	१६,०६	८०,८८	१३,०३	२,५४
१९५३-५४	परिमाण	५३६	४६६	२७	१८	२४८	४७,१०	६,५०	२,६७८
	मूल्य	४,१६	६८	१०,६३	१,३४	१२,७२	१,०२,१४	१०,२२	१,०४
१९५४-५५									
जून	परिमाण	३२	४७	५७	१	१६	२५०	६०	२७००
	मूल्य	३५	७	१,०२	११	४३	६,६२	१,२६	६
१९५३-५४									
जून	परिमाण	३१	४४	४८	१	१५	२,१०	६०	१,३६०(अ)
	मूल्य	२६	१२	१,३०	७	१,००	४,२७	१,७४	५

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा ।

‡ अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजे गये माल के आकड़ों को छोड़कर

(अ) स्थल मार्ग के आकड़े छोड़कर ।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		कोयला (००० टन)	अभ्रक (००० हंडरवेट)	लाख (००० हंडरवेट)	चमड़ा, कच्चा (००० हंडरवेट)	खालें, कच्ची (००० हंडरवेट)	पुराना लोहा व इस्पात पुनर्निर्माण के लिये (००० टन)	खनिज लोहा (००० टन)	खनिज लोहक (००० टन)	खली (००० हंडरवेट)	हड्डियां कारखानों के लिये (००० टन)
१९४८-४९	परिमाण	१,३१२	३४०	४६१	४२	२०४	नगण्य		३०६	६१२	३१
	मूल्य	४,५८	५,६४	८,६६	४६	४,६८	नगण्य	...	३,८१	५५	५७
१९४९-५०	परिमाण	२ ३२३	२९८	४५६	१६	२५	० २	४	७३६	८४५	३७
	मूल्य	७,६३	६,८५	८,०६	२१	६,५६	० ३१	१	५,८५	६०	६६
१९५०-५१	परिमाण	९६४	४०७	६६२	३८	२४८	२	५	८८१	८२१	४५
	मूल्य	३,४४	१०,००	११,८६	६६	८,७४	४	२२	८,०१	१,०३	१,१६
१९५१-५२	परिमाण	२,८०१	४०८	७१४	२४	२१०	४३	२८०	१,१२५	८६७	४६
	मूल्य	६,५५	१३,२१	१४,८७	६२	७,६२	७०	१,००	१५,६६	१,१३	२,२८
१९५२-५३	परिमाण	२,९६८	२८४	६८८	१	२२१	४७_	८११	१,४४०	५१६	७२
	मूल्य	१०,०३	६,०१	७,६१	२	५,५४	१०,२३	३,७१	२१,७६	४८	२,२७
१९५३-५४	परिमाण	१,९१७	२५०	५३८		२०७	२५०	१,२००	१,५६८	६६७	६६
	मूल्य	६,७८	७,६५	६,७६		३,०६	४,३७	५,५३	२४,७५	६१	२,०४
१९५४-५५ जून	परिमाण	२०२	२७	५३	—	१८	१३	४४	८२	११९	४
	मूल्य	६२	४८	९२	—	५०	१०	१६	१,२०	८	१५
१९५३-५४ जून	परिमाण	१५७(अ)	२६	५०		१६	१४	७२	११७	७०	६
	मूल्य	५२	७४	५६		४६	२३	३२	१,५०	६(अ)	१६

(अ) स्थल मार्ग के आंकड़े छोड़ कर

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यत अनिर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मूँगफली का तेल (००० गैलन)	अरण्डी का तेल (००० गैलन)	अलसी का तेल (००० गैलन)	मूँगफली (००० टन)	अरण्डी का बीज (००० टन)	अलसी (००० टन)	रूई, कच्ची (००० टन)	रूई, रद्दी (००० हंडरवेट)	पटुआ, कच्चा (००० हंडरवेट)	ऊन, कच्ची (००० पौंड)
१९४८-४९	परिमाण	८,६२१*	३,००९	२,२८१	३८		२५	७९	१,०१७	६६५	८,६५८
	मूल्य	६,७०	७,१८	१,६८	३,१३		१,३६	१४,०१	५,१५	३,३६	१,०६
१९४९-५०	परिमाण	७,०४६*	१,१३८	१,७७३	१२६	५	७२	५८	१,५११	३४२	२७,३६३
	मूल्य	५,४४	६६	१,७८	६,०४	२८	४,५६	१०,६१	८,२२	१,७५	३,७१
१९५०-५१	परिमाण	१६,६६१	५,८६८	१,३१६	३	७६	६८	१५	१,२०७	१७१	१५,२७१
	मूल्य	१६,७४	४,३१	१,१०	३,२७	५,६२	२,६७	४,६४	१३,४१	१,२८	७,८७
१९५१-५२	परिमाण	५,११६	५,५२२	६,०७३	२०	१	७	२३	६२३	४१७	१८,२६५
	मूल्य	४,३२	६,५७	८,१६	२,३५	१६	७०	१३,६८	७,३५	१,४८	४,६०
१९५२-५३	परिमाण	१६,१६०	८,६२७**	६,८१२*	१३	४	नगण्य	७१	१,२५६	३४२	३७,६६६
	मूल्य	१०,४७	७,७२	४,८२	१,५०	३८	०.५३	१६,३३	६,६४	१,४६	८,४१
१९५३-५४	परिमाण	३६०	४,५६५**	६३८**	५	...	...	३५	१,२६६	३५५	२०,६६१
	मूल्य	७५	३,१६	५६	६३	...	..	६,४०	६,८७	१,१४	५,८७
१९५४-५५: जून	परिमाण	...	५१७	५३	०.०४	...	...	१	६३	५१	२,७३६
	मूल्य	..	२८	३	१	...	...	२६	५१	२२	८५
१९५३-५४: जून	परिमाण	१०	७७८	१८२	०.२	..	...	५	६०	२१	२,२५४
	मूल्य	१	५६	१०	२	...	...	१,४०	७४	७	६१

* केवल समुद्र मार्ग द्वारा।

** अपूर्ण।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष		कमाया हुआ चमड़ा (००० हन्डरवेट)	कमाए हुए खालें (००० हन्डरवेट)	रुई छोटी हुई (००० पौंड)	सूती होजियरी	सूती कपड़ा (करघे का) (लाख गज)	सूती कपड़ा (मिल का) (लाख गज)	सिलाई का धागा (मुख्यतः सूती माल से बना हुआ)	बोरिया (००० टन)	टाट (००० टन)	नकली रेशम का कपड़ा (००० गज)	ऊनी कालीन व कम्बल (००० पौंड)	नारियल की जटा से बनी वस्तुएं (००० हन्डरवेट)
१९४८-४९	परिमाण	१८६	१०४	७,४०-			३६ ७०**		४५७	४३५	२४,४८०	८,३३४	८६६
	मूल्य	४,६६	७,२०	१ ८६	६५		३ ५८**	५१	६१,४७	८०,७२	२,६६	२,६१	४,४७
१९४९-५०	परिमाण	३१५	१६२*	६७,-३५(अ)			७० ६०		४३४	३०६	१२ ३३०	१०,४६५	१,४२४
	मूल्य	८,५३	११ -३	१२,४०	७६		५६ ६५	-१	६३,८२	५७ २५	२,४६	३,३१	७,२१
१९५०-५१	परिमाण	३५१	१४८(अ)	७५,०६१		६ ००	१ -२,४०		३४५	२६६	६,६६०	१४,०६१	१,५६०
	मूल्य	१२,०१	१३,३३	१७,२८	८६	१०,८८	१,१२,१७	१ ७१	५५,३६	५२,६१	६७	५,५६	१०,८१
१९५१-५२	परिमाण	३३५	१२४(अ)	६ १८२(अ)		४,०० (अ)	३८,८०		४७३	२८७	८,४१४	११,५६१	१,२३६
	मूल्य	१३,६१	११,४१	१,६७	१,८०	६,२०	४२,६५	२,४६	१,३५,२६	१,२४,५८	१,१७	५,८८	१०,३६
१९५२-५३	परिमाण	३१३	१५५*	१-,०५३		५,५०	५६,५०(अ)		३७१(अ)	३०४	३,६७५	७,१२८	१,२८२
	मूल्य	६,२२	१०,८६	४,४१	६६	८,७४	५३,२-	२,५५	६१,३६	६३,०८	५२	२,८०	७,३६
१९५३-५४	परिमाण	३६४	१६८	२२,५८२		६,३०	७०,६०(अ)		३५४	३-६	३,१७७(अ)	८,६६७	१,५२१
	मूल्य	१०,८३	११,६३	४,७६	१,२३	६ ९५	५३ ५४	३,२६	४० ३६	६१ ५०	४६	३,३६	८,१६
१९५४-५५ जून	परिमाण	२१*	८*	...		३०	५,-०		४६	३८	४२५	५८५	११२
	मूल्य	६४*	७१*	...	...	३७	४ ०६	२८	५,७-	४,८६	७	२६	६४
१९५३-५४ जून	परिमाण	३६*	१५*	२,४-६(ब)	--	५०	४ ६०	.	२८	३०	१६३	६७०	१३०
	मूल्य	१,०२*	१,२७*	५५	...	८४	३ ६७३	२०	३ १५	५,५०	३	२६	६७

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा। (अ) अपूर्ण। (ब) स्थल भाग व आंकड़े छोड़कर।

** इसमें अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया माल सम्मिलित नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णतः अथवा मुख्यत. निर्मित माल: (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		पैराफीन मोम (००० टन)	तैयार वस्त्र (हाजिअरी और जूट तथा जूतों के अतिरिक्त)	फिल्म रोल* (००० हन्ड्रेडवेट)	इस्पात की भूसी** (००० हन्ड्रेडवेट)	कच्चा लाख (००० टन)	धातु के बरतन तथा कटलरी	यंत्र उपकरण आदि	काच तथा मिट्टी का सामान	मशीनें और कारखाना का सामान (सीने की मशीनों सहित)	कागज, गोंद, गत्ता तथा लिखने की सामग्री	रबड़ से बनी वस्तुएँ	धातुएं (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९४८-४९	परिमाण	२०				४५			..	.	.		..
	मूल्य	१,२३	७४	...	...	६३	५४	६४	२,३२	२६	४६	१,६७	६८
१९४९-५०	परिमाण	१६				७१			..	...		.	...
	मूल्य	१,५८	५१			६६	६१	७४	३२	६६	३१	६६	५६
१९५०-५१	परिमाण	२०				५४		.	..	.	.		..
	मूल्य	२,२६	१,१५	...	.	८६	७८	६२	२६	४७	३३	१,६५	१,२४
१९५१-५२	परिमाण	३२	..			३०	...	...	...	...	...	...	...
	मूल्य	२,८२	८२			४१	१,२१	१,४७	४३	६५	१,२६	१,०८	१,४१
१९५२-५३	परिमाण	१६		६१		११		..	...	...	...	...	...
	मूल्य	१,३३	१,६५	६०		४१	११०	१,८५	३५	१,२७	८७	१,४२	२,६७
१९५३-५४	परिमाण	२४	.	४८	३०	१५	.	...	...	..	...	...	...
	मूल्य	१,५५	१,४६	६६	८३	२१	११३	१,६१	२६	६२	८६	१,७४	१,७७
१९५४-५५ : जून	परिमाण	३	...	० ३	४	...	...	...	...	...	...	...	...
	मूल्य	१६	६	१	८	..	८	१४	२	६	६	१२	७
१९५३-५४ : जून	परिमाण	२	.	७	३	३	...	..	.	...	...	...	...
	मूल्य	८	१३	११	६	३	६	१२	२	६	६	१३	१५

* अप्रैल १९५२ से यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

** अप्रैल १९५३ से यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ग) आयात की मुख्य वस्तुएं*

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	मशीन के पट्टे	रासायनिक पदार्थ	नारकोल के रंग	फल व तरकारियां	अनाज, दालें और आटा†	धातु के बर्तन	यन्त्र, उपकरणादि	हर प्रकार की मशीनें (मशीन के पट्टों सहित)	लोहा, इस्पात तथा तत्सम्बन्धी बनी वस्तुएं	धातुएं (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९४८-४९	२,११	२०,५७	१२,३४	८,२५*	१,०१,७०	५,६६	१८,८१	८१,५६	१२,३१	२२,३३
१९४९-५०	१,०१	७,७६	७,६६	१०,५८	१,३३,८८	६,२४	२०,७५	१,०५,५१	१३,७०	१८,१८
१९५०-५१	१,१९	६,२२	११,६८	१३,५७	८०,७६	४,५७	१७,७६	६३,००	१६,००	१७,८४
१९५१-५२	२,०७	१६,६०	१४,२७	१३,६०	२,३०,३०	६,२४	२०,४३	१,०४,३१	२१,६७	१,६७
१९५२-५३	१,६१	१२,६८	७,५१	१३,७४	१,५६,७३	४,०५	२२,२२	८७,८६	२३,७१	१६,३७
१९५३-५४	१,०८	१२,६९	१५,४५	१३,७०	७२,९३	४,४७	२१,५६	८५,८४	२३,५७	१४,५१
१९५४-५५										
जून	६	१,६०	१,३६	३९	३,६६	४२	१,४६	६,१२	१,७६	१,६६
१९५३-५४										
जून	५	७२	१,००	१,०४	१२,३१	३३	१,८०	५,९६	१,७८	६१

† इसमें अनाज, दाल तथा आटे के अन्य प्रकार की वस्तुएं भी सम्मिलित हैं।

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

वर्ष	कागज	रूई, कच्ची	ऊन, कच्ची	नकली रेशम का सूत	मोटर आदि गाड़ियों के नीचे के ढांचे	मोटर कारें (टैक्सी गाड़ियों सहित)	औषधियां और दवाइयां	सूती कपड़े	रूई छोटी हुई और सूत	ऊनी माल	तेल भण्डार की वस्तुएं	जूट, कच्चा
१९४८-४९	११,३७	६४,४८	३,१८	११,८१	८,६२	७,६४	८,११*	९,३०	४,५०	३,१०	७,०८	७१,३५
१९४९-५०	७,७४	६३,७६	३,०३	१०,४६	५,३८	३,१०	८,०४	१०,७०	५,७७	१,६४	७,३०	२१,१७
१९५०-५१	६,५०	१,००,७७	५,६२	१४,७१	५,६६	३,२४	१०,५२	५,३१	३०	१३	६,०२	३७,५७
१९५१-५२	१३,२६	१,३७,१८	२,६०	१७,२६	२,८७	४,७०	१५,६०	२,३७	१,८२	४५	१०,८४	६७,०७
१९५२-५३	११,२२	७०,६७	६६	७,८५	२,८८	२,५६	११,४६	१,५५	२,०९	६२	५,७१	१६,४८
१९५३-५४	११,२५	४२,७१	१,६४	१२,०४	२,१५	२,८२	१२,४५	१,०२	१,३१	८५	६,४२	१४,३२
१९५४-५५												
जून	६२	५,४०	२२	१,०२	२५	२४	८६	५	६	३	७१	१,०४
१९५३-५४												
जून	१,०३	६,१२	२३	१,०३	८	३०	७६	५	१०	७	७०	१,०४

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	ब्रिटेन		फ्रांस		बेल्जियम		जर्मनी		नीदरलैण्ड	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,५७,९९	१,०३,२६	३,०१	७,६८	७,५०	८,८६	२,२८	२,६१	५,४८	७,२६
१९४९-५०	१,५३,९९	१,१८,१४	३,८१	८,६७	७ ६७	६,२३	६,४२	६,५१	४,६६	७,३७
१९५०-५१	१,३१,४०	१,२६,८२	११,०७	६,०१	६,०७	६,८१	११,०४	१०,६३	६,६८	१०,१६
१९५१-५२	१,५८,२१	१,८६,६६	१०,७२	११,३७	६,८२	८,३६	२८,३४	६,३८	१०,६२	७,६२
१९५२-५३	१,३८,८४	१,२३,२६	१३,५५	८,६६	६,६०	६,६८	२२,६४	१२,४८	१०,८०	१०,३६
१९५३-५४	१,४२,७१	१,४६,६६	६,८३	८,३२	७,६७	४ ४७	३१,२४	११,५६	११,३०	६,८६
१९५४-५५ :										
जून	१०,६६	१२,६६	७०	३२	६४	८०	२,७०	१०६	१,१०	१०,८
१९५३-५४ :										
जून	८,६५	६,५८	६७	८८	७२	४३	२,७५	४६	१,६०	५०

निर्यात मे पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

वर्ष	आस्ट्रिया		हंगरी		पोलैण्ड		चेकोस्लोवाकिया		योगोस्लोविया		तुर्की	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८०	३४	१२	२५	८	३२	२,०८	२,१६	१०	१०	६	६२
१९४९-५०	८६	५३	६	२३	२६	६८	२,८१	१,४६	६१	४४	१४	२,६१
१९५०-५१	१,६८	४३	१०	३	३०	४०	२,७७	१,०८	१२	६	३	२,२६
१९५१-५२	२,४७	१,०१	३२		३४	२६	२,८१	१,२६	१४	२६	१३	३,५५
१९५२-५३	१,८६	४२	१६	४	२६	४	१,३५	१,१८	६	११	०,८३	४,६५
१९५३-५४	२,६१	५७	१०	२	१६	१८	१,२४	३,०६	७	१	० ३१	२,५८
१९५४-५५ :												
जून	१६	१	नगण्य	नगण्य	० ४		१	६	० १	...	...	८
१९५३-५४ :												
जून	१२	१२	० ६	नगण्य	२	२	१३	१५	१	...	नगण्य	१५

निर्यात मे पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—यूरोप (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष	स्विट्जरलैण्ड		इटली		[illegible]		नार्वे		फिनलैण्ड		रूस	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८,६६	१,२२	१८,३१	६,५५	६,०[illegible]	[illegible]	४,३५	[illegible]६	१,३८	१६	३,७६	५,३१
१९४९-५०	७,५५	२,५४	१४,८३	५,६[illegible]	६,७०	२,३	२,४४	१,०६	१,१७	२०	१६,६८	३,७४
१९५०-५१	७,६१	२,२३	१३,६०	१५,००	४,[illegible]	२,६८	२,७३	१,३३	१,४६	२१	२३	१,३७
१९५१-५२	६,६४	२,०६	१७,६६	७,६०	७,४७	२,५४	३,५८	१,६०	३,२५	१,०६	१,३८	६,६२
१९५२-५३	६,६५	६१	१२,०१	१०,६१	५,६६	१,[illegible]	२,७[illegible]	८८	१,८०	२५	२४	८५
१९५३-५४	६,१२	८२	२३,०७	५,१२	६,१	१,५३	२,६२	४१	१,८७	१२	६०	१,१५
१९५४-५५ जून	६६	११	१,४४	५१	[illegible]	[illegible]	५३	३	१०	२	५	१
१९५३-५४ जून	५७	११	[illegible] ५३	२६	[illegible]	[illegible]	२८	२	२७	१	३	

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	अदन		ईराक		ईरान		पाकिस्तान		पूर्वी अफ्रीका		मिस्र	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,७७	२,००	१,२७	१,३६	२०,५०	३,१४*	१,०७,३७	७६,६६	१४,०३	५,५४	३१,६०	६,७१
१९४९-५०	१,५८	७,११	३,३८	४,०७	३२,५०	४,८२	४४,०५	४३,३०	१८,४२	६,०३	४०,२४	७,६४
१९५०-५१	१,१६	६,७६	४,२६	२,८६	३७,१४	५,६८	४३,६५	३०,६०	२२,४३	६,०६	३२,८७	५,८७
१९५१-५२	८६	६,३०	२,६१	३,१६	२८,६३	४,१७	८७,५०	४५,२६	२३,६६	१२,१०	४०,४६	६,४६
१९५२-५३	५६	६,३२	२,०५	२,११	२,५०	[illegible],०७	२१,८८	३१,१४	२४,१३	११,३०	१५,१२	५,६६
१९५३-५४	३२	६,०३	२,५६	२,४४	२,०४	१,५३	१६,३०	८,०४	२०,१७	१०,७६	२७,६६*	३,५१
१९५४-५५ जून	१	३६	२	२१	२६	२६	१४६	६५	१७७	१०३	१,२५	३१
१९५३-५४ जून	१२	६३	१०	२६	६	१	१५७	४०	२६८	७५	२,३६	१८

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	मोजाम्बिक		लंका		बर्मा		मलाया संघ (सिंगापुर सहित)		थाईलैंड		जापान	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	२,४७	८७	२,७३	१२,३१	२६,२५	१०,५६	९,६०	५,३४	८,९३	२,३७	६,३८	४,९९
१९४९-५०	३,००	६२	२,७३	१६,८२	१४,२७	१४,६३	१४,४८	१७,६८	१२,२४	४,१९	२१,३८	५,८७
१९५०-५१	४,४४	९२	४,५३	१९,६८	१८,८०	२२,९९	१६,६३	३३,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५१-५२	३,४२	६२	५,६०	१६,८२	२३,३५	१६,७६	२२,०९	२५,८१	११,६४	८,७६	२४,६५	१४,८१
१९५२-५३	५,६५	९४	४,२९	२०,०८	२६,४७	२२,३८	१४,८२	१८,८६	७,७२	४,३९	१५,८२	३१,९९
१९५३-५४	४,४८	७०	५,०८	१८,१२	१७,५५	२१,०९	२०,४५	१४,२१	४५	३,६२	१३,०६	२३,६०
१९५४-५५ जून	५	९	४२	११०	३,१५	१,८६	१,७५	६९	१	१२	९२	७४
१९५३-५४ : जून	३६	५	२५	१,३२	९,००	१,६७	१,५३	१,०९	०३	२६	८९	२,५३

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका		कनाडा		अर्जेन्टाइना		आस्ट्रेलिया	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,०९,१३	७०,६८	१०,६६	८,३६	१२,८८	१६,९८	३०,०३	२०,६५
१९४९-५०	६५ ४१	८१,५३	२३,६३	११,०६	८,९९	७,७८	४७,७९	२६,३६
१९५०-५१	१,१७,८७	१,१५,३८	२१,०२	१३,७९	५	१०,६५	३३,४९	३०,४१
१९५१-५२	२,८८,७०	१,३२,३६	१८,८१	१६,२९	७६	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५२-५३	१,८१,४१	१,२२,७५	२६,३१	१२,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,९८
१९५३-५४	७९,२५	६०,४६	१४ १०	१३,०९	२	१९,५७	२५,९९	१७,९३
१९५४-५५ जून	८,१७	६,५०	१९	१,०४	नगण्य	८०	१,४९	२,४६
१९५३-५४ जून	५,२९	७,११	९८	९८		२१७	४,१८	२,३०

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

३. देश में वस्तुओं

मद	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
खाद्य पदार्थ							
१ चावल							
(१) साधारण (न)	कलकत्ता	मन	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०
(२) लाल	पटना	,,	२१ ० ०	१६ ० ०	१७ ० ०	१७ ० ०	१७ ० ०
(३) अनगड्डा (उ)	विजयवाड़ा	,,	१४ ६ ४	१४ ६ ४	१४ ६ ४	१४ ६ ४	१४ ६ ३
२ गेहूं							
(१) साधारण	जबलपुर	,,	१६ ६ ०	१८ १० ०	१८ ६ ०	१७ ६ ०	१५ १० ०
(२) ,,	अमृतसर	,,	१५ १३ ०	१६ ० ०	१६ १२ ०	१६ १४ ०	१८ ११ ०
(३) ,,	हापुड़		१८ ० ०	१७ ४ ०	१६ ४ ०	१५ ५ ०	१६ ० ०
३ ज्वार	अमरावती	,,	९ ८ ०	१० १० ०	१० २ ०	९ १० ०	१० ४ ०
४ बाजरा	हैदराबाद शहर	२४० पौंड का पल्ला	[illegible] ४ ०	२४ १३ ०	३२ [illegible] ०	२८ ८ ०	२७ ० ०
५ चना							
(१) दरी	पटना	मन	१७ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०	१३ ० ०	१४ ८ ०
(२) ,,	हापुड़	,,	१४ १४ ०	१४ ८ ०	१२ ८ ०	११ १० ०	१४ ० ०
६ दाल							
अरहर	,,	,,	१३ ४ ०	१४ ० ०	१० ४ ०	९ १४ ०	१० १४ ०
७ चाय							
(१) आन्तरिक उपभोग के लिए	कलकत्ता	पौंड	१ ११ ०	१ १४ ४	१ ६ ११	१ १४ ९	२ १ ०
(२) निर्यात —							
(क) निम्न मध्यम ब्रोकन पीको	,,	,,	१ १४ ६	अप्राप्त	२ १ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम ब्रोकन पीको	,,	,,	१ १४ ०	अप्राप्त	२ ३ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
८ काफी							
(१) प्लान्टेशन पावेरा(गोल्ड)	मंगलौर कोयम्बतूर*	हण्डरवेट	२५० ० ०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२३४ ८ ०
(२) दशा [illegible]	,,	,,	अप्राप्त	१७२ ८ ०	१६६ ० ०	१६० ० ०	१४७ ८ ०
९. चीनी (क)							
(१) डी २८	कानपुर	मन	८ १० ३	[illegible] ४	३० ६ ७	३० ५ ३	३३ १४ ४
(२) [illegible] २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) [illegible] २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१० गुड़							
(१) खाने के लिये	अहमदनगर	,,	अप्राप्त	१९ ८ ०	१८ ० ०	१६ ० ०	१९ ० ०
(२) ,, ,,	मुजफ्फरनगर	,,	१६ ८ ०	१५ १४ ०	१५ १० ६	१६ ६ ०	२१ ११ ०

(न) नियंत्रित मूल्य (उ) उचित मूल्य — मन = ८२—२/७ पौंड।

(क) कारखाने से चलने समय का मूल्य। — बंगाल मन = ८२—२/१५ पौंड।

* प्रतिवर्ष जनवरी से जून तक मंगलौर बाजार के मूल्य और जुलाई से दिसम्बर तक कोयम्बतूर बाजार के मूल्य दिए जाते हैं।

† इस तालिका में समस्त भाव प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह के दिये गये हैं।

के भाव : १६५४*

मइ	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०		
१७ १२ ०	१६ १४ ०	१६ १२ ०	१७ ८ ०	१७ १२ ०	१६ १५ ०		
१७ ० ०	१४ ० ०	१४ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०	१३ ० ०		
१४ ६ ३	१४ ६ ३	१४ ६ ३	१५ १० ८	१६ ५ ४	१६ ० ०		
१४ ६ ०	१४ ० ०	अप्राप्त	१३ ८ ०	१३ ४ ०	१५ ० ०		
१४ ० ६	१० ० ०	१० १४ ०	१२ ६ ०	१३ १३ ०	१४ ७ ३		
१३ ८ ०	११ १२ ०	१२ ४ ०	१२ २ ०	१२ ० ०	१२ ८ ०		
१० २ ०	६ ० ०	६ ४ ०	६ ८ ०	८ ८ ०	८ ४ ०		
२३ १२ ०	२६ ६ ०	२७ ० ०	२६ ४ ०	२६ ० ०	२४ ० ०		
१२ ८ ०	११ ० ०	१० ८ ०	११ ० ०	१० ८ ०	१० ८ ०		
१२ ४ ०	१० ४ ०	१० ० ०	६ ८ ०	१० ० ०	६ १२ ०		
१० ५ ०	८ २ ०	७ १५ ०	७ ४ ०	८ २ ०	७ ८ ०		
१ १२ ८	अप्राप्त	२ ० ११	२ २ ७	२ ८ ७	अप्राप्त		
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२ १२ ०	३ १ ०	अप्राप्त		
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२ १२ ६	३ १ ६	अप्राप्त		
२२२ ८ ०	२१६ ० ०	२२१ ० ०	२२१ ० ०	२२१ ० ०	२९० ० ०		
१५२ ० ०	१६२ ८ ०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	बिक्री नहा		
३१ ६ ४	३० ८ ७	३१ ० ५	३१ १२ ०	३२ २ ०	३१ १५ ४		
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३० २ ०	अप्राप्त	अप्राप्त		
अप्राप्त	अप्राप्त	प्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त		
अप्राप्त	१६ ० ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१८ ० ०		
० १० ०	१७ १० ०	१६ ० ०	२१ ८ ०	२० ४ ०	२ १९ ०		

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
११ नमक			रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
(१) साम्भर (न)	दिल्ली	मन	४ ८ ०	४ ८ ०	२ ८ ०	४ ८ ०	४ ८ ०
(२) काला	बम्बई	,,	१ ४ ०	१ ४ ०	१ ४ ०	१ २ ०	१ ४ ०
१२ तम्बाकू							
जाति पूला मध्यम (साधारण औसत दर्जे का)	कलकत्ता	बंगाल मन	१२० १२ ६	१२० १२ ६	१२० १२ ६	१२० १२ ६	अप्राप्त
१३ काली मिर्च							
(१) एलप्पी (बिना छटा हुआ)	,,	,,	२६० ० ०	२२० ० ०	१८० ० ०	१६० ० ०	१७० ० ०
(२) छटा हुआ	कोचीन	हन्डरवेट	४०० ० ०	४२५ ० ०	३१० ० ०	२६७ ८ ०	२६० ० ०
१४ काजू							
भारतीय	मंगलौर	मन	१८ १५ ०	१२ १० ७	१४ १० ७	१३ १५ ०	१५ ३ ०

औद्योगिक कच्चा माल

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ रुई कच्ची							
(१) जरीला एम जी एफ	बम्बई	७८४ पौंड का कैंडी	७०० ० ०	७६३ ० ०	८२० ० ०	७५४ ० ०	७५२ ० ०
(२) २१६ एफ पी अमेरिका एम जी	,,		अप्राप्त	अप्राप्त	९८६ ० ०	९१८ ० ०	९१७ ० ०
(३) बंगाल देशिया एम जी	,,	,,	५८० ० ०	६४५ ० ०	६४० ० ०	६२० ० ०	५६५ ० ०
२ जूट कच्चा							
(१) फस्ट्स	कलकत्ता	४०० पौंड की गांठ	१४० ० ०	१३० ० ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०	१७५ ० ०
(२) लाइटनिंग	,,	,,	१४५ ० ०	१६० ० ०	१५० ० ०	१५० ० ०	१६० ० ०
(३) भारतीय नार मिडिल	,,	मन	३१ ० ०	३५ ० ०	३२ ८ ०	३२ ० ०	३३ ० ०
३ रेशम कच्चा							
(१) २४०० ताना खामरू	मालदा	सेर	५६ ० ०	५५ ० ०	५६ ० ०	६३ ० ०	६४ ० ०
(२) नम्बरी बाल्या किस्म का	मंगलौर	३६ तोले का पौंड	२६ ० ०	२८ ० ०	२३ ८ ०	३१ ० ०	२६ ८ ०
४ ऊन, कच्चा							
(१) जोडिया मरीन बढ़िया	बम्बई	मन	२६१ ८ ०	अप्राप्त	२७० १० ०	२६७ १० ०	२७७ १२ ३
(२) तिब्बती	कालिम्पांग पहुँचने पर	,,	२३० ० ०	२२५ ० ०	२६७ ८ ०	२६५ ० ०	२६५ ० ०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाइ	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०		
२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२- ८ ०	२ ८ ०		
१ २ ०	१ २ ०	१ २ ०	१ २ ०	१- २-०	१ २ ०		
अप्राप्त	१०५ १३ ६	१०५ १३ ६	९६ १३ ६	९४-१३-६	अप्राप्त		
१५५ ० ०	१५० ० ०	१३० ० ०	१३० ० ०	१६० ०-०	१६५ ० ०		
२४० ० ०	१५५ ० ०	१८७ १५ ०	२४६ ३ ०	२२५ ०-०	१९० ० ०		
१२ १० ६	१३ १४ ६	१२ १० ७	१२ १५ ७	१४ ६ ४	१२ १० ७		
७५० ० ०	७२५- ० ०	६६७ ० ०	७०७ ० ०	७१४- ० ०	अप्राप्त		
९१० ० ०	८८८ ० ०	८५७ ० ०	८६२ ० ०	अप्राप्त	अप्राप्त		
६०१ ० ०	५७५- ० ०	५५० ० ०	५१५ ० ०	५४०- ०-०	अप्राप्त		
१६५ ० ०	१५५ ० ०	१४० ० ०	१४० ० ०	१५० ०-०	अप्राप्त		
१५० ० ०	१४० ० ०	१२५ ० ०	१२५ ० ०	१३५ ०-०	अप्राप्त		
३२ ८ ०	अप्राप्त	२७ ० ०	२७ ० ०	३२ ०-०	३२ ८ ०		
६६ ० ०	६३ ० ०	६२ ० ०	६३ ० ०	६३- ० ०	६५ ० ०		
३० ० ०	अप्राप्त	२८ ० ०	२९ ० ०	२७ ८-०	अप्राप्त		
२७७ ११ ३	२७७ ११ ३	२७२ ६ ०	२६७ ७ ०	२७२ ६ ०	२६७ ७ ०		
१७२ ८ ०	१७५ ० ०	१७५ ० ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०	१८० ० ०		

३. देश मे वस्तुओ

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५२	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
५ मूँगफली							
(१) बगलाना	बम्बई	हन्डरवेट	४० ० ०	३५ १० ०	२४ ४ ०	२५ १२ ०	२५ ४ ०
(२) मद्रास से छिला हुई	कडुलोर	मन	२५ ६ २	२४ १० २	२४ १३ ०	२५ ६ ०	२५ २ ०
६ अलसी							
(१) बगलाना	बम्बई	हन्डरवेट	२७ १२ ०	२८ ८ ०	२६ ० ०	२५ ४ ०	२५ ८ ०
(२) ५° रिफ्रेक्शन छोटा दाना (तैयार)	कलकत्ता	मन	१८ ८ ०	२१ ८ ०	२१ ४ ०	२० ४ ०	१९ ० ०
७ अरण्डी का बीज							
(१) मलेम किस्म का	मद्रास	,,	१६ ७ ०	१८ ० ०	१५ १५ ०	१५ ७ ०	१४ १५ ०
(२) छोटा साधारण औसत दर्जे का हैदराबादी	बम्बई	हन्डरवेट	२ ० ०	२४ ८ ०	२४ ४ ०	२२ ४ ०	२३ २ ०
८ तिल							
(१) सफेद बगलाना ८५%	,,	,	४४ ० ०	४२ ० ०	४१ ० ०	४० ८ ०	४८ ० ०
(२) मिश्रित (गाजर)	झांसी	मन	२४ ० ०	२८ ८ ०	२५ ८ ०	२४ ८ ०	२७ ० ०
९ तोरिया							
(१) मिश्रित पीला छुट्टा	कलकत्ता	बंगाल मन	७ ० ०	२६ ४ ०	२१ ० ०	२६ ८ ०	२६ ८ ०
(२) लाल	बम्बई	मन	२१ ५ ०	२१ १४ ०	२५ ० ०	२३ ८ ०	२३ १४ ०
(३) सरसों काला	कानपुर	,	२४ १० ०	२८ ८ ०	२४ ४ ०	२१ १० ०	२३ १२ ०
१० बिनौला							
(१)	बम्बई	हन्डरवेट	१४ १५ ७	१५ ७ ६	१६ ६ ५	१५ १४ ६	१४ १५ ७
(२)	अमरावती	८० पौंड का मन	११ ६ ४	१० ७ ३	६ १४ ४	६ २ ५	१० २ २
११ नारियल का गोला							
साधारण औसत दर्जे का	कोचीन	६५५ ६ पौंड का कैंडी	३४७ ८ ०	६५ ७ ०	३५४ ६ ०	४० ० ०	३२ १५ ०
१२ कोयला (न)							
(१) चुना हुआ नागदा	कालाइरा भारिया में पहुंचने दर	मन	१५ १ ०	१५ १ ०	५ १० ०	१५ १० ०	१५ १ ०
(२)		,	१८ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०
( ) म०प्र प्रथम श्रेणी		,	१३ ८ ०	१७ ८ ०	१३ ८ ०	१३ ८ ०	१७ ८ ०
१३ कच्चा लोहा							
निम्न मल्ल	विशाखापटनम		११० ७ ०	१४१ ४ ६	११६ १४ ४	१६१ ६ ४	१३६ ७ ४

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १६५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०		
३६ ४ ०	३१- ४ ०	३१ ४ ०	२७ ४ ०	२६-१२-०	२६ ० ०		
२३ ११-४	२०-१५ ०	२२- ८ ०	१६ ६ ०	१८ २-०	१७ १-०		
२७ ४ ०	२४- ८ ०	२३- ४- ०	२३- ८ ०	२३- ४-०	२३ ८ ०		
१६ १० ०	१७ ०-०	१७- ८ ०	१६- ४ ०	१७ ६ ०	१७ २ ०		
१६- ७ ०	१४- ७-०	१४- ७- ०	१४ १५ ०	१४ १५-०	१७-१५-०		
२३-१० ०	२१- ४ ०	२२- २ ०	१६ १० ०	१६-१४ ०	१६ ४ ०		
अप्राप्त	४२- ० ०	४५ ० ०	३८ ०-०	३३-१२ ०	२८ ०-०		
२७ ०-०	२५ ०-०	२४ ०- ०	२६ ० ०	३१- ० ०	१६ ०-०		
२७- ० ०	२४ ० ०	२६ ०- ०	२७ ० ०	२६- ०-०	२७ ०-०		
अप्राप्त	२१- ५ ०	२२-१२ ०	२४- ४-०	२२ ६-० ,	२३ ८-०		
२३ १२ ०	अप्राप्त	२२ १ ५	२४- ० ०	२४ १०-०	२४ १०-०		
१५ ६-१	१५- ३ २	१३ १३-१०	१३- ८ ५	१२ ४-०	१२ ५-४		
१० ४-११	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त		
३२७- ८ ०	३००- ०-०	३१० ३- ०	३२० १२ ०	३२३ ८-०	३३१ ६ ०		
१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२-०	१५ १२ ०		
१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६- ४ ०	१६ ४ ०		
१७ ८ ०	१७ ८-०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७- ८-०	१७ ८ ०		
१६२ ३ १०	१५४ ११ ५	१२१ ४- ८	१४३ ० ७	१३४ ० ६	१४३-१-१०		

३. देश मे वस्तुओं

वस्तुए	बाजार	इकाइ	अक्तूबर १६५२	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
१४ चमडा, कच्चा							
(१) नमक लगा सूखा गाय का	कलकत्ता	४० पोंड	अप्राप्त	१६ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०
(२) नमक लगा गीला भैंस का	कलकत्ता	४० पोंड	अप्राप्त	१० ० ०	१० ० ०	१० ० ०	१० ० ०
(३) नमक लगा गीला गाय का	कानपुर	कोडी	२१० ० ०	२६० ० ०	२३५ ० ०	२७५ ० ०	२०५ ० ०
(४) नमक लगा गीला भैंस का	,,	२० पोंड	६ ११ २	६ ११ २	१० १०-८	११ ६ १	१० ५ ६
१५. खाल कच्ची							
बकरा का औसत किस्म का	कलकत्ता	१०० थान	अप्राप्त	२५० ० ०	२५० ० ०	३५० ० ०	३५० ० ०
१६. लाख							
(१) चपडा शुद्ध टी० एन०	,,	बगाल मन	६१ ० ०	१०८ ० ०	६५ ८ ०	८७ ० ०	६१ ० ०
(२) बटन शुद्ध	,,	,,	१०८ ० ०	१२० ० ०	११४ ० ०	१०६ ८ ०	११२ ८ ०
१७ रबड							
RMA IX RSS	कोट्टायम	१०० पोंड	१३३ ० ०	१३३ ० ०	१३३ ० ०	१३३ ० ०	१३३ ० ०

अर्द्ध निर्मित वस्तुए

वस्तुए	बाजार	इकाइ	अक्तूबर १६५२	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रल
१ चमडा							
(१) गाय का चमडा	मद्रास	पोंड	२ १५ ३	३ ० ३	३ १ ०	२ १५ ०	२ १४ ३
(२) भैंस का चमडा	,,	,	१ १५ ६	२ १ ६	२ १ ६	२ ० ६	२ ० ३
(३) भेड का खालें	,,		६ ४ ०	६ २ ०	५ १५ ०	५ ११ ०	५ ८ ०
(४) बकरा का खालें	,,		४ १० ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १३ ०
२ खनिज तेल							
(क) मिट्टी का तेल (न)							
(१) खाल्या थोक	कलकत्ता	८ गैलन	१० ७ ६	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०
(२) खाल्या थोक	,		१० १४ ६	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०
(ख) पैट्रोल (न)							
(१) थोक पम्प पर	,,	गैलन	२ १२ ०	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६
(२)	दिल्ली		२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६
(३	मद्रास		१२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०
३ वनस्पति तेल							
क नारियल का तेल							
(१) साधारण औसत दर्जे का (तैयार)	कोचीन	६५४ पौंड का वैन	४६५ १० ३	५८० ६ ०	५०५ १२ ५	४६५ ० ७	४८० १ ३
(२) कोचीन का खाल्या, बम्बई	कलकत्ता	गाल मन	[illegible] ० ०	८० ० ०	८४ ० ०	७४ ० ०	७२ ० ०
(३) गुल्ला	बम्बई	कैण्डी	८०	७६ ७ ०	५ ४ ०	७३ ० ०	७२ ४ ०

(न) नियन्त्रित मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	अक्तूबर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ० पा०		
१५ ०-०	१५ ०-०	१५- ० ०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ० ०		
१०- ० ०	१०- ० ०	१० ० ०	१० ०-०	१०- ०-०	१०- ० ०		
२४५ ०-०	२३०- ०-०	२३० ० ०	२४० ० ०	२७०- ०-०	२७० ० ०		
११- ० ७	११-११ ७	११- ०-७	११ ० ७	११ ०-७	११ ० ७		
३५० ७-०	३५० ० ०	३०० ० ०	३००- ० ७	३००- ०-०	३०० ०-०		
११४- ० ०	१३८- ०-०	१४३ ० ०	१३७ ० ०	१४६ ०-०	अप्राप्त		
१२३ ० ०	१४२- ०-०	१५०- ० ०	१५६ ० ०	१६०- ०-०	अप्राप्त		
१३३- ० ०	१३३ ० ०	१३३- ०-०	१३३ ० ०	१३३- ०-०	१३३- ० ०		
२-१२-३	२ १२ ३	२ १२-३	२ १२ ३	२-११-६	२ ७-६		
२- ० ०	२- ०-०	२- ०-६	२ ० ६	२- १-०	१ १५-६		
५- ८-०	५ ८-०	५ ० ०	५- ३ ०	५- ३ ०	५- ३ ०		
४ १३-०	४ १३-०	४-१२ ०	४ १४ ०	४-१४-०	५ ० ०		
६ १५-०	६-१५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	६-१५-०	६ १५ ०		
१० ७-०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१०- ७-०	१० ७ ०		
२ ११ ६	२-११-६	२ ११-६	२ ११ ६	२-११-६	२ ११ ६		
२ १४-६	२-१४ ६	२ १४-६	२ १४ ६	२-१४-६	२-१४-६		
२ १२-०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२-०	२ १२ ०		
४८६ ५ ०	४४३ १४ ७	४५३ ९ ३	४७० १ ७	४७०- १ ७	४८८ १३ १		
७२ ०-०	६६- ० ०	६६ ० ०	६४ ० ०	६४- ० ०	अप्राप्त		
२२ १०-०	२१ ०-०	२१ ४ ०	२० १२ ०	२१ ८ ०	२१ ८ ०		

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
ख मूंगफली का तेल							
(१) खुदरा	मद्रास	५०० पौंड का कैंडा	३२० ० ०	३१८ ० ०	३१० ० ०	३०८ ० ०	३१९ ० ०
(२) खुला	बम्बई	क्वार्टर	२१ ८ ०	१८ १० ०	१७ ४ ०	१७ २ ०	१८ २ ०
(३) गुण्डूर (लाल रंग)	कलकत्ता	बंगाल मन	६३ ० ०	६० ० ०	५७ ० ०	५७ ० ०	५८ ८ ०
ग सरसों का तेल							
(१) खुदरा (मिल से निकलते समय)	,,	,,	६३ ० ०	७४ ८ ०	६६ ८ ०	६० ० ०	६३ ८ ०
(२)	पटना	मन	६९ ० ०*	७९ ० ०	६५ ० ०	५६ ० ०	६० ० ०
(३)	कानपुर	,,	५८ ० ०	६६ ६ ०	५८ ० ०	५४ ० ०	५८ ० ०
घ अरण्डी का तेल							
(१) नं० १ बढ़िया पाला (जहाज पर)	कलकत्ता	मन	७६ ० ०	७२ ० ०	७१ ० ०	६३ ० ०	६६ ० ०
(२)	मद्रास	५०० पौंड की कैंडा	२८५ ० ०	२८५ ० ०	२३० ० ०	२१० ० ०	२२० ० ०
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	क्वार्टर	अप्राप्त	२० ० ०	१६ ८ ०	१८ १२ ०	२१ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) कच्चा खुदरा (मिल से निकलते समय)	कलकत्ता	मन	४१ ८ ०	५१ ० ०	४८ ० ०	४७ ० ०	४४ ० ०
(२)	बम्बई	क्वार्टर	१३ ८ ०	१६ ० ०	१५ ८ ०	१३ १२ ०	१४ १० ०
४. खली							
(१) मूंगफली	कलकत्ता	मन	८ १२ ०	७ ८ ०	७ ८ ०	७ ० ०	७ ८ ०
(२) नारियल	बम्बई	१। हन्डरवेट	२३ ४ ०	५ ८ ०	२७ ० ०	२७ ० ०	२४ ० ०
(३) तिल	,,	टन	२६० ० ०	३२५ ० ०	३३५ ० ०	३२५ ० ०	३३० ० ०
५ सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरी	कलकत्ता	५ पौंड	६ ८ ०	६ १० ०	६ १४ ०	६ ६ ०	६ १० ०
(२) २० ,,	,,	,,	८ ७ ६	८ ३ ०	८ ८ ०	८ ६ ०	८ १२ ०
(३) ४० ,,	,,	,,	१२ ० ६	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०
(४) सूत २० नम्बरी	अमृतसर	१ पौंड	१७ १० ०	१६ ११ ०	१७ ४ ०	१७ ८ ०	१७ १० ०
६ नारियल की सुतली							
(१) अलसी अलाप्पी	कोचीन	६ हन्डरवेट की कैंडी	२६० ० ०	२७५ ० ०	२७५ ० ०	२७३ ५ ०	२७८ ५ ०
(२) अनजेंगो बाण्या	,,	,,	२६० ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०

(न) नियन्त्रित मूल्य। * समायोजित मूल्य।

के भाव : १५९४ (गत पृष्ठ से आगे)

मइ	जून	जुलाइ	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०		
३०९ ० ०	२६५ ० ०	२७२ ० ०	२३५ ० ०	२२७ ० ०	२२० ० ०		
१८ ३ ०	१५ ६ ०	१५ १२ ०	१४ ० ०	१४ ० ०	१३ १० ०		
५९ ० ०	४९ ० ०	५१ ० ०	४३ ८ ०	४३ ८ ०	अप्राप्त		
६७ ८ ०	६० ८ ०	६१ ८ ०	६४ ० ०	६७ ० ०	६७ ८ ०		
६८ ० ०	६० ० ०	५७ ० ०	६० ० ०	६५ ० ०	६१ ० ०		
६० ० ०	५४ ८ ०	५५ ० ०	५८ ८ ०	६४ ० ०	६७ ८ ०		
६६ ० ०	५६ ० ०	५६ ० ०	५३ ० ०	५३ ० ०	५५ ० ०		
२२७ ० ०	१८७ ० ०	२०० ० ०	१८० ० ०	१७८ ० ०	१८५ ० ०		
२१ ० २	अप्राप्त	२० ० ०	१६ ८ ०	१५ ७ ११	१४ ० ०		
४४ ८ ०	३६ ० ०	३६ ८ ०	३४ ८ ०	२७ ० ०	२६ १२ ०		
१५ १२ ०	१२ १२ ०	१२ १४ ०	१२ १२ ०	१३ ० ०	१३ २ ०		
८ ८ ०	९ ० ०	८ ८ ०	८ ० ०	८ ०	८ ४ ०		
२४ ० ०	२१ ० ०	२० ० ०	१९ ० ०	२० ० ०	१८ ८ ०		
३४० ० ०	३२० ० ०	३३० ० ०	३२० ० ०	३२५ ० ०	३२५ ० ०		
६ १० ०	६ १० ०	६ १० ०	६ १० ०	६ १० ०	६ ८ ०		
९ ० ०	९ ० ०	९ ० ०	९ ० ०	९ ० ०	९ ० ०		
१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०	१३ ० ०		
१७ १२ ०	१८ २ ०	१७ १४ ०	१७ १४ ०	१७ १४ ०	१७ १२ ०		
२७० ० ०	२७० ० ०	२७० ० ०	२६५ ० ०	२८० ० ०	२८२ ८ ०		
३०३ ५ ०	२८८ ५ ०	२८० ० ०	२७४ ३ ०	३०० ० ०	२९० ० ०		

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
७ लोहा और इस्पात							
क कच्चा लोहा (न)							
(१) फाउ ड्री नं० १	कलकत्ता पहुंचने पर	टन	१४२ ० ०	१६३ ० ०	१६२ ० ०	१६२ ० ०	१६२ ० ०
( ) लोहा ब्लाक	,,	,,	१२७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०
ख अर्द्ध शुद्ध (न)							
फिर गलाने के लिये टुकडे	कलकत्ता	,,	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०
ग धातु (लोहे के अतिरिक्त)							
(१) कच्चा स्पेल्टर (बिजली वाला) मुलायम	,,	हंडरवेट	५५ ८ ०	५४ ० ०	५३ ८ ०	५३ ० ०	५७ ८ ०
(२) पतले पाले धातु-खंडान (ब्रासिनर) ४"X४"	,,	,	१५७ ८ ०	१४६ ४ ०	१५७ [illegible] ०	१६५ ० ०	१७७ ८ ०
(३) पीतल की चादरें (गिलेटस्ड)	बम्बई	,,	१४६ ० ०	१४६ ० ०	१५५ ० ०	१५६ ०	१६० ० ०
(४) ताम्बे की चादरें (इंडियन)	,,	,,	१६२ ८ ०	१६५ ८ ०	२० ० ०	१६६ ० ०	२०१ ० ०
८ लकडी							
सागौन के गोल लट्ठे ५ फुट और उससे अधिक घेराव वाले	बल्लारशाह (चान्दा, मध्य प्रदेश)	घन फुट	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०

निर्मित वस्तुए

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ टक्सटाइल							
क जूट का माल							
टाट							
(१) १०–१ २ औंस ४०"	कलकत्ता	१०० गज	४५ १२ ०	४७ १० ०	४८ २ ०	४६ ० ०	४५ १० ०
(२) ८ औंस ४०"			३४ १२ ०	३७ १४ ०	३७ १२ ०	३७ ४ ०	३६ ० ०
बोरियाँ							
(१) [illegible]	,	१०० बोरियाँ	६ [illegible] ०	१०५ ८ ०	१०३ २ ०	१०८ ० ०	१०६ ० ०
(२) [illegible]		,	६४ १२ ०	१०२ ० ०	१०४ ८ ०	११२ ८ ०	११८ ८ ०
ख सूती माल							
(१) [illegible] कपडा ३५"×३८ गज×७ पौंड	बम्बई	एक थान	१[illegible] ३-८	१६ ३-८	१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६
(२) [illegible] कपडा ८ गज		पौंड	२ ० ०	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १४ ७
(३) [illegible] ४५८८ ४२" [illegible] गज		एक थान	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२६ २ ०	२६ २ ०
(४) [illegible] धोती मध्यम ४२"× १० २ गज ६ १६ पौंड	,	एक जोडा	५ १४ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	६ ६ ०

(न) नियंत्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०		
१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०		
१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०		
२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०		
५७ ८ ०	५६ ८ ०	५८ ८ ०	५३ ८ ०	६० ० ०	अप्राप्त		
१७२ ० ०	१६७ ० ०	१६८ ० ०	१६३ ८ ०	१६० ८ ०	१६३ ८ ०		
१६४ ० ०	१६५ ० ०	१६० ० ०	१५६ ० ०	१५४ ० ०	१६३ ० ०		
२०१ ८ ०	२०१ ८ ०	१९९ ८ ०	१९६ ८ ०	२०० ० ०	२१६ ० ०		
११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०		
४५ १२ ०	४६ ४ ०	४७ ८ ०	४७ ४ ०	६४ ० ०	अप्राप्त		
३६ २ ०	३७ ० ०	३७ ८ ०	३६ १२ ०	३८ ८ ०	अप्राप्त		
११२ १४ ०	११३ ६ ०	१०६ ८ ०	१०४ १२ ०	११७ ८ ०	अप्राप्त		
११५ ८ ०	११४ ८ ०	१११ १२ ०	१०४ ८ ०	११५ ० ०	अप्राप्त		
१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६		
१ १४ ७	१ १४ ७	१ १४ ७	१ १४ ८	१ १४ ३	१ १४ ३		
२६ २ ०	२६ २ ०	२६ २ ०	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२४ १५ ०		
६ ८ ०	६ ८ ०	६ ८ ०	६ ६ ०	६ ६ ०	६ ६ ०		

३. देश मे वस्तुओं

वस्तुए	बाजार	इकाई	अक्तूबर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(५) रंगीन क्रेप—कमाज या क्रपल एफ० एम०—१०५	मद्रास	गज	१ ० ६	० १५ ३	० १५ ६	० १५ ६	० १५ ६
(६) एम—५०१ ब्लाच किया मलमल ४८ × २०" गज	,,	२० गज	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०
ग रेयन और रेशम का माल							
(१) टैफेटा कारो २६–५०", ४–३/४ १ स ५ पौंड तक (रेयन)	बम्बई	गज	० ६ ६	० ७ ०	० ८ ३	० ९ ०	० ९ ६
(२) फूजा (चाना रेशम)	,,	५० गज का थान	२७५ ० ०	अप्राप्त	३१० ० ०	३४० ० ०	४०० ० ०
२ लोहे और इस्पात से निर्मित वस्तुए (न)							
लोहे और इस्पात की पनालीदार चादरें २४ गज	कलकत्ता	हंडरवेट	३४ ० ०	३४ ० ०	३४ ० ०	३४ ० ०	३५ ० ०
३ अन्य निर्मित वस्तुए							
(क) सीमेंट (न)							
भारतीय (स्वास्तिक)	,,	टन	८२ ९ ०	८२ ९ ०	८२ ९ ०	८७ ९ ०	८७ १५ ०
(ख) काच (खिडकियो का)							
(१) छोटा साइज३० × २४" तक	,	१०० वर्ग फुट	६० ० ०	६० ० ०	६० ० ०	६० ० ०	६० ० ०
(२) मध्यम साइज	,,	,	५७ ० ०	५२ ० ०	५३ ० ०	५५ ० ०	५५ ० ०
(ग) कागज							
सफेद छपाई डिमाई १४ पौंड और ऊपर	,,	पौंड	० १० ७	० १०-७	० १० ७	० १० ७	० १० ०
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फिटकरी	,,	हंडरवेट	१५ ० ०	१३ ० ०	१३ ० ०	१३ ० ०	१३ ० ०
(२) गंधक का तेजाब		टन	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२३५ ० ०
(ङ) रंग							
लाल म म का सूखा अमन्ना	,	हंडरवेट	९० ८ ०	८६ ० ०	८६ ० ०	८६ ० ०	८६ ० ०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०		
० १५ ६	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०		
१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०		
० १० ०	० ८ ०	० ८ ०	० ८ ६	० ८ ६	० ७ ६		
अप्राप्त	३४० ० ०	३४० ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०	३३० ० ०		
३५ ० ०	३५ ० ०	३५ ० ०	३५ ० ०	३५ ० ०	३५ ० ०		
८७ १५ ०	८७ १५ ०	८८ ० ०	८८ ५ ०	८८ ५ ०	८८ ५ ०		
६० ० ०	६५ ० ०	४५ ० ०*	४३ ० ०	४३ ० ०	४३ ० ०		
५५ ० ०	६० ० ०	४३ ० ०*	४० ० ०	४० ० ०	४० ० ०		
० १० ०	० १ ० ७	० १० ७	० १० ७	० १० ७	० १० ७		
१३ ० ०	१३ ४ ०	१३ ४ ०	१३ ४ ०	१३ ४ ०	१३ ४ ०		
२३५ ० १	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२२० ० ०	२२० ० ०		
८६ ० ०	८६ ० ०	८६ ० ०	८८ ० ०	८८ ० ०	८८ ० ०		

*२६ ६ ५४ को समाप्त होने वाले सप्ताह से भारतीय काच के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये काच के मूल्य रखे गये हैं।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत ग्रंथ में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहां दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अन्तिम नहीं मान लेना चाहिये। —सम्पादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप
अखबारी कागज	Newsprint	पटाखा	Cracker
अगिया घास	Lemon Grass	पत्तन	Port
अदह	Asbestes	पक्ष	Party
अभिकरण	Agency	पूर्वगामी	Foregoing
अयस्क	Ore	प्रभावी होना	To come into force
अलौह	Nonferrous	प्रतिदीप्त नलियां	Flourecent Tubes
आकलन	Credit	प्रलाक्षारस चढ़ा सामान	Lacquer ware
उत्पत्ति स्थान	Place of Origin	प्रवृत्त	In Force
उपकरण	Equipment	प्रासंगिक	Incidental
औषधि	Drug	फ्लोरस्पार	Flourspar
औषध	Pharmaceuticals	मनसल	Munsell
कण्डिका	Para	मन शिला	Realgar
कृत्रिम चपड़ा	Art Shellace	मुनक्का	Raisin
क्रमांकन मशीनें	Numbering Machines	मोटर गाड़ी का ढांचा	Chassis
क्रमहीन	Orderless	रक्षित	*Reserve*
खूबानी	Apricot	रोगाणुनाशक	Insecticide
चमेली	Jasmin	वाष्प द्वारा कोये से निकालकर लपेटा गया	Steam Filature
चिकनी मिट्टी	Clay	विकलन	Debit
छोटे पशु की खाल	Kip	विनियमन	*Regulation*
जड़ी बूटी	Herbs	विरंजक	Bleaching
जनित्र	Generator	शहतूत	Mulberry
जस्ता	Zinc	संचरण	Movement
टसर रेशम	Tusbah Silk	संधारण	maintaining
टीन	Tin	संविदा	Contract
धतूरा	Stramonium	संविदाकारी	Contracting
धूम्रीकरण	Fumigation	सत	Extract
नयनसुख	Jaconet	सहमत	Agreed
नवीकरण	Renewal	साबर का चमड़ा	Chamois Leather
नियम	Rule	सान्द्रित	Concentrated
निर्वात फ्लास्क	Vaccuum Flask	सुरमा	Graphite
निष्कासन	Clearance	स्राव प्रणाली	Leaching Method
निक्षेप	Deposit	स्थूल सिद्धांत	Broad Principles
नींबू घास	Lemon grass	हरिताल	Orpiment

परिशिष्ट

१. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार-प्रतिनिधि ।

२. भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि ।

परिशिष्ट—१

विदेशों में भारत सरकार के व्यापार प्रतिनिधि

नाम और पता	कार्य क्षेत्र
यूरोप	
(१) लन्दन (१) श्री एस० आर० एम० सिंह, आई० सी० एस०, मन्त्री (व्यापारिक), (२) डा० टी० वी० मेनन और (३) श्री के० ए० शाह, ब्रिटेन में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)। इण्डिया हाउस, आल्डविच, लन्दन, डब्ल्यू० सी० २। तार का पता —हिकोमिण्ड (HICOMIND), लन्दन।	ब्रिटेन और आयर
(२) पेरिस श्री एम० जी० रामचन्द्रन, आई० एफ० एस, भारतीय दूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), १५ रियू अल्फ्रेड डेहोडेंक, पेरिस १६ एमे (फ्रांस)। तार का पता :—इण्डाट्रेकम (INDATRACOM), पेरिस।	फ्रांस और नारवे
(३) जनेवा श्री एम० सेन, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, १३ रियू, चन्टेपोलेट, स्टेशन प्लाजा (दूसरी मंजिल), जनेवा (स्विटजरलैण्ड)। तार का पता :—कनजेण्डिया (CONGENDIA) जनेवा।	स्विटजरलैण्ड
(४) रोम श्री एम० एस० राजपेट, भारतीय राजदूतावास के व्यापारिक परामर्शदाता, वाया फ्रैन्सेस्को डेन्जा ३६, रोम (इटली)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रोम।	इटली, यूनान और यूगोस्लाविया
(५) बोन श्री बी० पी० आडरकर, जर्मनी में भारतीय राजदूतावास के मन्त्री (व्यापारिक), २६२, कोबलेन्जर स्ट्रासे, बोन (जर्मनी)। तार का पता :—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बोन।	जर्मनी
(६) वायना डा० के० डा० रामस्वामी, आस्ट्रिया में भारत के वाइस कंसल और एजेन्सी, भारतीय लीगेशन, १७, रेनगैस, वायना, १८ (आस्ट्रिया)। तार का पता :—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), वायना।	आस्ट्रिया
(७) ब्रसेल्स बेल्जियम में भारतीय राजदूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), ६२, एवेन्यू फ्रैंकलिन रूजवेल्ट, ब्रसेल्स (बेल्जियम)। तार का पता :—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), ब्रसेल्स।	बेल्जियम
(८) स्टाकहोम श्री पी० टी० वी० मेनन, भारतीय लीगेशन के व्यापारिक एजेन्ट, स्ट्रैण्डवेगन ४७ ४, स्टाकहोम (स्वीडन)। तार का पता —इण्डलीगेशन (INDLEGATION), स्टाकहोम।	स्वीडन, फिनलैण्ड और डेनमार्क

नाम और पता	कार्यक्षेत्र

अमेरिका

नाम और पता	कार्यक्षेत्र
(९) न्यूयार्क श्री ए० एस० लाल, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, ३ ईस्ट ६४ स्ट्रीट, न्यूयार्क, २१, एन० वाई० । तार का पताः—कनजेण्डिया (CONGENDIA), न्यूयार्क ।	पूर्वी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका और क्यूबा
(१०) सेन फ्रांसिस्को श्री एम० ए० हुसैन, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, ४१७, मान्टगोमरी स्ट्रीट, सेन फ्रांसिस्को, कैलीफोरनिया ।	पश्चिमी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका
(११) वाशिंगटन श्री एस० कृष्णमूर्ति, आइ० एफ० एस०, भारतीय दूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), २१०७, मैसेचुसेट्स एवेन्यू, एन० डब्ल्यू० वाशिंगटन—८ डी० सी० (संयुक्त राष्ट्र अमेरिका)। तार का पताः—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), वाशिंगटन ।	संयुक्तराष्ट्र अमेरिका और मैक्सिको
(१२) ओटावा श्री आर० अगजेल खान, कनाडा में भारतीय हाई कमीशन के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), २००, मैक्लोरन स्ट्रीट, ओटावा, ओन्टेरियो (कनाडा)। तार का पताः—हिकोमिण्ड (HICOMIND), ओटावा ।	कनाडा

अफ्रीका और मध्यपूर्व

नाम और पता	कार्यक्षेत्र
(१३) मोम्बासा श्री ए० बी० धडानी, मोम्बासा में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, जुबली इन्श्योरेन्स बिल्डिंग, पो० बा० नं० ६१४, मोम्बासा (केनिया)। तार का पताः—इण्डोकम (INDOCOM), मोम्बासा ।	पूर्वी अफ्रीका (केनिया, उगाण्डा और टांगानीका), जन्जीबार, उत्तरी रोडेशिया, दक्षिणी रोडेशिया और न्यासालैण्ड
(१४) सिकन्दरिया श्री रघुनाथ सिन्हा, आई० एफ० एस०, मिस्र में भारत के कंसल जनरल तथा सूडान, सीरिया साइप्रस और जार्डन में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, अल-बसीर बिल्डिंग, नं० ५, रू अटिब डे इसाक, अवेन्यू डि ला रेनो नाज़ली, सिकन्दरिया (मिस्र)। तार का पताः—"इण्डियाकम (INDIACOM), सिकन्दरिया ।	मिस्र, सूडान, सीरिया, लेबनान, साइप्रस और ट्रान्सजार्डन
(१५) तेहरान श्री एम० के० रे, भारतीय राजदूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), अवेन्यू शाह रजा, तेहरान (ईरान)। तार का पताः—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), तेहरान ।	ईरान
(१६) बगदाद डा० जगदीश चन्द्र, भारतीय लीगेशन के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), ८/८, सफी-अल-दीन-इल हिली स्ट्रीट, वज़ीरिया, बगदाद (ईराक)। तार का पताः—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), बगदाद ।	ईराक
(१७) अदन श्री ए० एस० धवन, अदन में भारत सरकार के कमिश्नर, अदन। तार का पताः—कोमिण्ड (COMIND), अदन ।	अदन, ब्रिटिश सोमालीलैण्ड और इटैलियन सोमालीलैण्ड

नाम और पता	कार्यक्षेत्र
आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड	
(१८) सिडनी श्री एम० जी० पटेल, आइ० एफ० एस०, भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, प्रुडेन्शल बिल्डिंग, ३९-४९, मार्टिन प्लेस, सिडनी (आस्ट्रेलिया)। तार का पता.—आस्ट्रिण्ड (AUSTRIND), सिडनी।	आस्ट्रेलिया
(१९) वेलिंगटन श्री एल० केशवन, न्यूज़ीलैण्ड में भारत के हाइ कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), विन्डसर बिल्डिंग, ८९, विलिस स्ट्रीट, वेलिंगटन, (न्यूज़ीलैण्ड)। तार का पता.—ट्रैकोमिण्ड (TRACOMIND), वेलिंगटन।	न्यूज़ीलैण्ड
एशिया	
(२०) टोकियो डा० ए० एम० शर्मा, जापान में भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), एम्पायर हाउस (नाइगाइ बिल्डिंग), मारूनाची, टोकियो (जापान)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), टोकियो।	जापान
(२१) कोलम्बो श्री के० आर० एफ० खिलनानी, आइ० एफ० एस०, लंका में भारत के हाइ कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), पो० बा० नं० ८९६, फोर्ट, कोलम्बो। तार का पता —ट्रेडिण्ड (TRADIND), कोलम्बो।	लंका
(२२) रंगून श्री एम० पी० माथुर, आइ० एफ० एस०, भारत के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), रनडेरिया बिल्डिंग, फायर स्ट्रीट, पो०बा०नं० ७५१, रंगून (बर्मा)। तार का पता.—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रंगून।	बर्मा
(२३) कराची श्री एस० खान, आइ०, एफ० एस०, पाकिस्तान में भारत के हाइ कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), चार्टर्ड बैंक चैम्बर्स, "बजीरा महल," एम० ए० जेन्ना रोड, न्यू टाउन, करांची ५ (पश्चिमी पाकिस्तान)। तार का पता.—इण्ट्राकम (INTRACOM), करांची।	पाकिस्तान
(२४) ढाका श्री पी० दासगुप्ता, पाकिस्तान में भारत के हाइ कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), गोपी कृष्ण लेन, पो० आ० रामना, ढाका (पूर्वी पाकिस्तान)। तार का पता —"गुडविल" (GOODWILL), ढाका।	पूर्वी पाकिस्तान
(२५) सिंगापुर श्री जे० कोइल्हो, आइ० एफ० एस०, मलाया में भारत सरकार के प्रतिनिधि के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), इण्डिया हाउस, पो० बा० नं० ८३६, सिंगापुर (मलाया)। तार का पता —इण्डिट्रेकम (INDITRACOM), सिंगापुर।	मलाया
(२६) मनीला मन्त्री, व्यापारिक विभाग, भारतीय लीगेशन, ६१४ नेबरास्का, मनीला (फिलिपाइन)। तार का पता —इण्डलीगेशन (INDLEGATION), मनीला।	फिलिपाइन
(२७) जकार्ता श्री के०आ० अमीन, आइ० एफ०एस० भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी, पो०बा०नं० १७८४४, केबुन सिरीह, जकार्ता (इण्डोनेशिया)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), जकार्ता।	इण्डोनेशिया
(२८) बैंकाक श्री गुरबचनसिंह आइ० एफ० एस०, भारतीय राजदूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), बैंकाक (थाइलैण्ड)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बैंकाक।	थाइलैण्ड

सूचना—(१) तिब्बत में निम्नलिखित अधिकारी भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं—

१. गंगटोक सिक्कम में भारतीय पोलिटिकल अफसर के व्यापारिक सेक्रेटरी।

२. भारत के व्यापार एजेण्ट, यातुंग (तिब्बत)।

(२) जिन देशों में अलग व्यापारिक प्रतिनिधि नहीं हैं, उनमें भारतीय राजदूत और कन्सलर अफसर भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं।

परिशिष्ट—२

भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि

देश	पद	पता
१. अफग़ानिस्तान	भारत में शाही अफगान राजदूतावास के आर्थिक एटेची।	२४, रेटण्डन रोड, नई दिल्ली।
२. अमेरिका	भारत में अमेरिकन दूतावास के आर्थिक मामलों के कौंसिलर।	बहावलपुर हाउस, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली।
३. आस्ट्रिया	भारत में आस्ट्रिया के व्यापार प्रतिनिधि।	कत्रान्स मैनशन, बेस्टियन रोड, फोर्ट, बम्बई।
४. आस्ट्रेलिया	(१) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैंटाइल बैंक बिल्डिंग, ५२ ६६, महात्मा गांधी रोड, जनरल पी० ओ० बा० न० २१७, बम्बई।
	(२) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	२, फेअरर्ली प्लेस, कलकत्ता।
५. इटली	भारत में इटली के राजदूतावास के व्यापारिक सक्रेटरी।	१७, यार्क रोड, नई दिल्ली।
६. इण्डोनेशिया	भारत में इण्डोनेशियन दूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	२१, कर्जन रोड, नई दिल्ली।
७. कनाडा	(१) भारत में कनाडा हाई कमीशन के व्यापारिक कौंसलर।	४, औरंगजेब रोड, नई दिल्ली।
	(२) भारत में कनाडा हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	ग्रेशम एश्योरेन्स हाउस, मिंट रोड, बम्बई।
८. चीन	भारत में चीनी गणतन्त्र के राजदूतावास के व्यापारिक मामलों के कौंसिलर।	चीन हाउस, लिटन रोड, नई दिल्ली।
९. चेकोस्लोवाकिया	(१) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक एटेची।	४५, औरंगजेब रोड, नई दिल्ली।
	(२) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	हिमालय हाउस, पालटन रोड, बम्बई।
१०. जर्मनी	भारत में जर्मनी के संघीय गणराज्य के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	८६, सुन्दर नगर, मथुरा रोड, नई दिल्ली।
११. जापान	भारत में जापानी दूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	४, सरदार पटेल रोड, डिप्लोमेटिक एनक्लेव, नई दिल्ली।
१२ डेनमार्क	भारत में शाही डैनिश लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर।	पोलोजी मैनशन, न्यू काफ परेड, बम्बई।
१३. तुर्की	भारत में तुर्की दूतावास के व्यापारिक एटेची।	मेडन्स होटल, दिल्ली।
१४. नारवे	(१) भारत में नारवे लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर।	५०, मेडन्स होटल, दिल्ली।
	(२) भारत में नारवे के कसलेट जनरल के व्यापारिक एटेची।	इम्पीरियल चेम्बर्स, विलसन रोड, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई।
१५. नीदरलैंड	भारत में नीदरलैंड राजदूतावास के व्यापारिक एटेची।	२६८, बाजार गेट स्ट्रीट, बम्बई।
१६. न्यूज़ीलैण्ड	भारत में न्यूज़ीलैण्ड सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैंटाइल बैंक बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, महात्मा गांधी रोड, बम्बई १।

देश	पद	पता
१७. पाकिस्तान	भारत में पाकिस्तान हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	शाहजहां रोड मेस, नई दिल्ली।
१८. फिनलैंड	भारत में फिनिश लेगेशन के मरचेन्ट मेम्बर (व्यापारिक)।	१ हुमायूं रोड नई दिल्ली।
१९. फ्रांस	भारत में फ्रेन्च दूतावास के आर्थिक मामलों के कौंसिलर।	..., थियेटर कम्युनिकेशन बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली—
२०. बर्मा	भारत में बर्मा दूतावास के व्यापार कमिश्नर।	क्वीन्स वे, रेसीडेन्स रोड, नई दिल्ली।
२१. ब्रिटेन	(१) भारत में ब्रिटेन के हाई कमिश्नर के आर्थिक सलाहकार और (२) भारत में ब्रिटेन के सीनियर व्यापार कमिश्नर।	६, अलबुकर्क रोड, नई दिल्ली।
	(३) कलकत्ता में ब्रिटेन के मुख्य व्यापार कमिश्नर।	१, हैरिंगटन स्ट्रीट, कलकत्ता—१६।
	(४) मद्रास में ब्रिटेन के व्यापार कमिश्नर	पो० बा० नं० १५७५, आरमीनियन स्ट्रीट, मद्रास।
२२. बेलजियम	भारत में बेल्जियम के दूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	थियेटर कम्युनिकेशन बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली—१।
२३. मिस्र	भारत में मिस्र दूतावास के व्यापारिक एजेन्ट।	कमरा नं० ०६ स्विस होटल, दिल्ली।
२४. रूमानियां	भारत में रूमानिया के व्यापार प्रतिनिधि।	होटल एम्बेसेडर, बम्बई।
२५. रूस	भारत में रूस के व्यापार प्रतिनिधि।	४, कामक स्ट्रीट, कलकत्ता।
२६. लंका	भारत में लंका हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	सीलोन हाउस, ब्रूस स्ट्रीट, बम्बई।
२७. स्विटजरलैंड	भारत में स्विटजरलैण्ड के व्यापार कमिश्नर।	पो० बा० १०७, ग्रेशम एश्योरेन्स हाउस, बम्बई।

सूचना :—जिन देशों के अलग व्यापार प्रतिनिधि नहीं हैं, उनके व्यापारिक हितों को, भारत में स्थित उनके राजनैतिक व कौंसलर विभाग, ध्यान में रखते हैं।

भारतीय रुपये का मूल्य : विभिन्न देशों की मुद्राओं में

देश	भारतीय मुद्रा		विदेशी मुद्रा
१. पाकिस्तान	१०० रु०	=	६६ पाकिस्तानी रु० ६ आ०
२. लका	१०० रु० ६ आ०	=	१०० लका के रु०
३. बरमा	१०० रु० ४ आ०	=	१०० क्यात
४. अमेरिका	४७५ रु०	=	१०० डालर
५. कनाडा	४८२ रु० ११ आ०	=	१०० डालर
६. मलाया	१५६ रु०	=	१०० डालर
७. हागकाग	८३ रु० ४ आ०	=	१०० डालर
८. ब्रिटेन	१ रु०	=	१ शि० ५-३१/३२ पैंस
९. न्यूजीलैण्ड	१ रु०	=	१ शि० ५-३१/३२ पैंस
१०. आस्ट्रेलिया	१ रु०	=	१ शि० १०-३/८ पैंस
११. दक्षिणी अफ्रीका	१ रु०	=	१ शि० ५ १५/१६ पैंस
१२. पूर्वी अफ्रीका	६७ रु० २ आ०	=	१०० शि०
१३ मिस्र	१३ रु० १३ आ०	=	१ पौंड
१४. फ्रास	१०० रु०	=	७,३५० फ्रान्क
१५. बेलजियम	१०० रु०	=	१,०४५ फ्रान्क
१६. स्विटजरलैंड	१०० रु०	=	९१-३/८ फ्रान्क
१७. पश्चिमी जर्मनी	१०० रु०	=	८७ ११ १६ मार्क
१८ नीदरलैंड	१०० रु०	=	७९ ११ ३२ गिल्डर
१९. नारवे	१०० रु०	=	१४९ १ ४ क्रोनर
२०. स्वीडन	१०० रु०	=	१०८ ५ ८ क्रोनर
२१. डेनमार्क	१०० रु०	=	१४५ १/१६ डेनमार्क क्रोनर
२२. इटली	१ रु०	=	१३० लीरा
२३. जापान	१ रु०	=	७८ येन
२४. फिलिपाइन	२३७ रु०	=	१०० पीसो
२५. ईराक	१,३२८ रु०	=	१०० दीनार

(ये विनिमय दरें मई १९५४ में भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार हैं।)

उद्योग-व्यापार पत्रिका





वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

विषय सूची

भारत सरकार के व्यापार और उद्योग मन्त्रालय के प्रकाशन-सम्पादक द्वारा प्रकाशित।

सूचना :—

इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सम्बन्ध जब तक विशेषतः स्पष्ट न लिखा जाय, भारत सरकार अथवा उसके किसी भी मन्त्रालय से नहीं होगा।

उद्योग-व्यापार पत्रिका

खण्ड ३] नई दिल्ली, सितम्बर १९५४ [अङ्क ३

★★★ यदि अच्छे ढंग से चलने लगें तो गृहउद्योग देश की काया पलट कर दे सकते हैं......

छोटे और ग्राम उद्योगों का विकास

विभिन्न राज्यों में हुई बहुमुखी प्रगति का सिंहावलोकन

विभिन्न राज्यों में अब छोटे और ग्राम उद्योगों के विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। जहां कहीं भी इस कार्य के लिये पहले से कोई संस्थाएं या संगठन थे, उन्हें अब नये सिरे से संगठित करके अधिक सक्रिय और लाभदायक बनाने के यत्न किये जा रहे हैं। जहां इनका अभाव था वहां नई संस्थाएं और नये संगठन चालू किये जा रहे हैं।

इन उद्योगों का विकास करने के लिये जो नये केन्द्र खोले जा रहे हैं उनमें प्रदर्शन, शिक्षण और उत्पादन की व्यवस्था की जाती है। गांवों के कारीगरों को नई विधियां सिखा कर उनके पुराने उद्योगों को आधुनिक ढंग का कर देने के यत्न किये जा रहे हैं।

ग्राम उद्योगों के उत्पादनों की बिक्री के लिये भी विशेष यत्न किये जा रहे हैं। इसके लिये नगरों में बिक्री-भण्डार खोले गये हैं। प्रस्तुत लेख से इस दिशा में हुई प्रगति का संक्षेप में आभास मिल जाता है।



हैदराबाद में तीन सलाहकार बोर्ड

भारत सरकार ने छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करने की जो नीति अपनाई है उसी के अनुसार हैदराबाद की सरकार ने भी नीचे लिखे तीन सलाहकार बोर्ड बनाये हैं —

(१) हाथकरघा सलाहकार बोर्ड,

(२) खादी और ग्रामोद्योग सलाहकार बोर्ड, और

(३) दस्तकारी सलाहकार बोर्ड।

इन बोर्डों के अध्यक्ष गैर सरकारी व्यक्ति बनाये गये हैं। हाथ करघा बोर्ड ने कुछ योजनायें बनाकर उपस्थित कर दी हैं जिनमें २० उत्पादन तथा बिक्री व्यवस्थापक केन्द्रों, ६ बिक्री भण्डारों और ३० खुदरा बिक्री की दुकानें खोलने की व्यवस्था की गई है। इनका खर्च अखिल भारतीय हाथ करघा बोर्ड देगा। ऊनी उद्योग के विकास की योजनायें भी तैयार कर ली गई हैं, जिन पर १६,७०,००० रु० व्यय होने का अनुमान है।

पिछली योजनायें हाथकरघा, ऊन और चमड़ा कमाने के उद्योगों का विकास करने के विषय में था, इसलिये विभाग ने इनका अन्य महत्वपूर्ण ग्राम उद्योगों से सम्बन्ध स्थापित करने के उद्देश्य से एक संगठित ग्रामोद्योग

उत्पन्न हुई कठिनाइयों को दूर करने की ओर विशेषतः ध्यान दिया गया है। इसमे लगे हुए बुनकरों को सहायता दी गई है। उत्पादन और बिक्री बढ़ाने तथा बुनकरों को काम देने के लिये हाथ करघा बुनकर सहकारी समितियों के द्वारा अनेक उपाय किये गये हैं। इस समय राज्य में ३० उत्पादन केन्द्र चल रहे हैं। जिलो के केन्द्रों और अन्य महत्वपूर्ण स्थानो पर बिक्री भण्डार खोले जा रहे है। सितम्बर १९५२ मे एक हाथ करघा गवेषणा और डिजायन केन्द्र चालू किया गया था जिसे विभाग अब भी चला रहा है। १९५३ में राज्य मे ऊनी कपड़े और कम्बल तैयार करने की ओर विशेषत. ध्यान दिया गया है। देहाती क्षेत्रों मे जहा कच्चा माल उपलब्ध है, प्रदर्शन और प्रचार के ६ केन्द्र चालू किये गये हैं। कोलार के सरकारी ऊनी बुनाई केन्द्र मे धुनने की मशीनें लग चुकी हैं। खादी उद्योग का विकास करने के लिये १ लाख रुपये का अनुदान दिया गया है। करघा उद्योग का विकास करने के लिये दो योजनाए स्वीकृत हो चुकी हैं जिन पर ३,१०,००० रु० व्यय होगे।

पेप्सू की योजनाएं

योजना कमीशन के परामर्श के अनुसार पेप्सू सरकार ने छोटे उद्योगों के विकास के लिये नीचे लिखी योजनाओं मे संशोधन किया है और नई योजनाएं तैयार की है। इनमे गृह उद्योगों पर विशेषत. जोर दिया गया है :—

संशोधित योजनाएं :—

१. केन्द्रीय कला कौशल भण्डार

२ रेशम उत्पादन

३. गृह तथा छोटे उद्योगो के लिए बिक्री भण्डार

४. हाथ करघा विकास योजना, और

५ स्त्रियों के लिये शिक्षण तथा काम का केन्द्र

नई योजनाएं :

१. चमड़ा उद्योग।

२. ऊन धुलाई और बुनाई केन्द्र।

३. रुई कताई और बुनाई केन्द्र।

४. तेल की कच्ची घानी का उद्योग।

५ उद्योगों के लिये शैल्पिक सहायता की व्यवस्था।

६. कलाकौशल क्लब, और

७. साइकिल तथा सिलाई की मशीनो के हिस्से बनाने की शिक्षा देने के लिए औद्योगिक स्कूल।

राजस्थान का प्रयत्न

गृह उद्योग की वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिये राजस्थान की सरकार ने भी विशेष यत्न किये हैं। इसके लिये उसने दिल्ली, जयपुर और जोधपुर में बिक्री भण्डार खोले हैं। राज्य मे तथा राज्य के बाहर, हैदराबाद, साचो, दिल्ली आदि स्थानो पर हुए मेले तथा प्रदर्शनियो मे भी उसने इन वस्तुओ की बिक्री तथा प्रदर्शन का प्रबन्ध किया है। गृह उद्योगो को प्रोत्साहन देने के लिये राज्य के अनेक स्थानों पर उत्पादन केन्द्र खोले गये हैं। ये केन्द्र सामूहिक योजना क्षेत्रो मे स्थित हैं, जहा शिक्षण और उत्पादन कार्य दोनो ही किये जाते है। पुरानी विधियो मे सुधार करके परीक्षण किये जाते हैं और फिर सुधरी हुई विधियां कारीगरो को सिखाई जाती है।

आलोच्य वर्ष में ५ गृह उद्योगशालाएं भी चलती रहीं। ताड़ गुड़ उद्योग ने बराबर उन्नति की है। १९५२ में उसके ३० नये केन्द्र चालू हुए हैं। राजस्थान मे ताड के प्रायः २० लाख पेड हैं। भेड और ऊन विभाग की सन्तोषजनक प्रगति और विकास हुआ। गृह उद्योगों की कुछ वस्तुओं की राज्य मे तथा बाहर अच्छी माग हुई है। इनमे छपे और रगे हुए कपड़े, कटाई किये हुए चमड़े के थैले और जूते, धातु की सुराहियां, लाख की चूड़ियां, मीनाकारी की हुई पीतल की वस्तुएं इत्यादि उल्लेखनीय है।

सौराष्ट्र में तीन बोर्डों की स्थापना

छोटे उद्योगो की सहायता के लिये सौराष्ट्र की सरकार ने नीचे लिखे बोर्ड स्थापित किये है :—

१ सौराष्ट्र लघु उद्योग (दस्तकारी बोर्ड)

२ सौराष्ट्र हाथ करघा बोर्ड, और

३ सौराष्ट्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड।

वाणिज्य और उद्योग मन्त्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी ने नवम्बर १९५३ में इन बोर्डों का उद्घाटन किया था।

सौराष्ट्र लघु उद्योग (दस्तकारी) बोर्ड—छोटे उद्योगों को ऋण देने के लिये ५ लाख रु० निश्चित कर दिये गये हैं। ऋण देने के नियमों की जाच की जा रही है। छोटे तथा गृह उद्योगो को ऋण देने के लिये बोर्ड सरकार को सलाह देगा। छोटे उद्योगों के उत्पादन की बिक्री के लिये एक भण्डार खोलने, शिक्षण देने, गवेषणा करने तथा उन्नत विधियों को चालू करने के प्रस्ताव भारत सरकार के पास भेजे गये हैं।

सौराष्ट्र हाथ करघा बोर्ड अखिल भारतीय हाथ करघा बोर्ड ने हाथ करघा उद्योग को प्रोत्साहित करने और उसके बुनकरो की उन्नति करने का काम उठाया है। सौराष्ट्र की सरकार ने भी उद्योग मन्त्री की अध्यक्षता मे एक बोर्ड बनाया है। हाथ करघा बुनकरों के लिये जो आदर्श सहकारी समितियां बनाने का विचार है उनका संविधान बोर्ड ने तैयार कर लिया है। १,००० बुनकरों को सहकारी समितियां के अन्तर्गत ले आने के लिये नई समितियां बनाई जा रही हैं। इसके सिवा नये करघे लगाने के लिये १,००० बुनकरो को धन की सहायता देने की योजनाएं बनाई जा रही है। सहकारी समितियों के हिस्से खरीदने और पूजी रूप मे प्रयोग करने के लिये बुनकरों को ऋण देने का निश्चय किया गया है। १९५३-५४ मे बुनकरों को कुल ५,०६,००० रु० की सहायता देने की योजना है।

सौराष्ट्र खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड—सौराष्ट्र मे पहले एक गृह उद्योग बोर्ड था। यह एक स्वतन्त्र संगठन था जिसकी ओर से चमड़ा

और फरवरी १६५३ मे इनमे २,००० पौधे रोपे गये। जुलाई मे शहतूत के २,५०० पौधे मण्डी जिले के जमींदारो को दिये गये और धौलाकुआ के बगीचे में ५५० पौधे लगाये गये। मण्डी और सरपूर के बगीचो मे पैदा किये गये शहतूत के २०,००० पौधे विभाग ने किसानों को दिये है।

कच्चे रेशम का उत्पादन— मण्डी मे कोओं से रेशम कातने का प्रबन्ध किया गया है। सरकारी कारखाने मे ४४ पौंड रेशम का धागा तैयार किया गया है। विभाग के बगीचो मे ६ व्यक्तियो को काम सिखाने के लिये नियुक्त किया गया। इन्हे काम के लिये मजदूरी भी दी गई। रेशम उद्योग की ऊंची शिक्षा लेने के लिये विभाग का एक एम ग्रेजुएट कश्मीर और मैसूर को भेजा गया है।

रेशम के कीड पालना— उद्योग को बढ़ाने के लिये रेशम के कीड़े पालने की योजना चालू की गई है। इसके अनुसार विभाग प्रतिवर्ष कीड पालने वाले १२ व्यक्तियो को झोपड़िया बनाने के लिये ५० रु० की सहायता देता है। इसके अतिरिक्त इन्हे उपकरण भी दिये जाते हैं। ये लोग विभाग की देखरेख म रेशम के कोये उत्पन्न करते है जिसे विभाग बीज के लिए ले लेता है।

विन्ध्य प्रदेश के गृह उद्योग

१६५३-५४ के आरम्भ मे विन्ध्य प्रदेश मे नीचे लिखी शैल्पिक और औद्योगिक सस्थाए चल रही थी —

(१) शिल्प शाला (Technical Institute) रीवा,जिसमे

(क) लकडी का कारखाना,

(ख) बुनाई का कारखाना, और

(ग) बास तथा बेंत का कारखाना था।

(२) ताड गुड उत्पादन और शिक्षण केन्द्र, टीकमगढ

(३) दरी तथा कालीन शाखा, टीकमगढ, और

(४) चमडा कमाने और उसकी चीजे बनाने वाली सरकारी सस्था रीवा।

शिल्प शाला का लकडी का सरकारी कारखाना व्यापारिक आधार पर चलाया जाता है। विभिन्न सरकारी विभागो की फरनीचर सम्बन्धी समस्त आवश्यकता यहीं से पूरी करने के यत्न किये जाते हैं। १६५३ म नीचे लिखी सस्थाओं का खोला जाना स्वीकृत हुआ और आशा है कि वे शीघ्र ही चालू हो जायगी.—

(१) हाथ के कागज का केन्द्र उमरिया, जहा शिक्षण और उत्पादन की व्यवस्था होगी।

(२) बुनाई केन्द्र पृथ्वीपुर। यहा भी शिक्षण और उत्पादन की व्यवस्था होगी।

उपर्युक्त योजनाओ के अतिरिक्त विन्ध्य प्रदेश की सरकार कुछ अन्य योजनाओ पर भी विचार कर रही है। स्त्रियो को शिक्षण देने का केन्द्र चलाने का भी प्रस्ताव है। सामूहिक योजना खण्डो में ग्रामीण कला कौशल के विकास का काय भी आरम्भ किया गया है। चमडा कमाने का एक केन्द्र, ताड गुड उत्पादन का एक केन्द्र और एक बास तथा बेत के कामो का केन्द्र चालू किया जा चुका है।

दक्षिणी अमेरिका में कोलम्बिया और इक्वेडर को छोड़ कर अन्य देशों में उपज घट गई। ब्राज़ील को छोड़ कर अन्य सभी देशों में रुई का क्षेत्र भी घट गया। अर्जेन्टाइना दक्षिण में, पाराग्वे और कोलम्बिया का उत्पादन युद्धोत्तर वर्षों में इस वर्ष सब से अधिक रहा।

रूस, चीन और पूर्वी यूरोप में रुई का उत्पादन बराबर बढ़ता आ रहा है। अनुमान है कि चीन ने १९५३-५४ में १०० लाख एकड़ भूमि में रुई बोई जिससे ३० लाख गाठ उत्पन्न हुई। रूस में ४२.५ लाख गाठ उत्पादन होने का अनुमान है, जब कि पिछले मौसम में ४० लाख गाठ हुई थी।

खपत भी बढ़ी

दुनिया में रुई की खपत का रुख भी बढ़ती की ओर रहा। आलोच्य वर्ष में कुल खपत का अनुमान ३४५ लाख गाठ रहा, जब कि १९५२-५३ में ३३५ लाख गाठ था। इसमें से उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, एशिया, पश्चिमी यूरोप और अफ्रीका में २६६ लाख गाठ की खपत हुई, जब कि रूस, चीन और पूर्वी यूरोप में ७९ लाख गाठ की हुई। १९५२-५३ में यही आंकड़े क्रमशः २५९ लाख गाठ और ७६ लाख गाठ रहे थे। अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में १९५३-५४ में खपत १८० लाख गाठ हुई जो १९५२-५३ की अपेक्षा १५ लाख गाठ अथवा १० प्रतिशत अधिक है।

इस वृद्धि के सम्बन्ध में कई रोचक बातें ध्यान में रखने योग्य हैं। यह ऐसे समय में हुई जब नकली रेशों से रुई की जोरदार प्रतिस्पर्धा हो रही थी। अतः इससे प्रकट होता है कि रुई नकली रेशों से अधिक सफल रही है। रुई का उत्पादन भी बढ़ जाने से बढ़ी हुई खपत का रुई की स्थिति पर बुरा प्रभाव नहीं हुआ। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में भी रुई की खपत बढ़ गई है।

पश्चिमी यूरोप में भी खपत बढ़ी

पश्चिमी यूरोप में रुई की खपत गतवर्ष की अपेक्षा आलोच्य वर्ष में ६-७ लाख गाठ अधिक हुई। ब्रिटेन में कपड़ा उद्योग की स्थिति सुधर गई। यहां १९५३-५४ में रुई की खपत का अनुमान १८.५ लाख गाठ है। १९५०-५१ में बहुत अधिक खपत हुई थी और गत वर्ष बहुत कम। आलोच्य वर्ष की खपत इन दोनों के बीच में रही है।

एशिया में युद्ध के पश्चात् रुई की खपत बराबर बढ़ती रही है। पिछली तीन फसलों में प्रतिवर्ष ७॥ लाख गाठ से अधिक वृद्धि होती रही है। जापान में फिर कपड़ा उद्योग चालू हो जाने और भारत में उसका निरन्तर विस्तार होने के कारण ही ऐसा हुआ है। अब पाकिस्तान में कपड़ा तैयार होने के यत्न हो रहे हैं। अतः वहां भी रुई की खपत बढ़ेगी। पाकिस्तानी मिलों में करघों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है और इसी मौसम में वहां ४.५ लाख गाठ रुई खपत की आशा है, जो १९५२-५३ से प्रायः दुगनी होगी।

भारतीय मिलों में देशी रुई

इधर भारत की यह विशेषता रही है कि उसने कपड़ा मिलों में भारतीय रुई को अधिकाधिक परिमाण में उपयोग करने का प्रयत्न किया है। इसका कारण यह है कि अब भारत में भी लम्बे रेशे की अच्छी रुई उपजने लगी है। साथ ही रुई का क्षेत्र और उपज भी बढ़ गई है।

कुछ प्रमुख वर्षों में भारत में जिस प्रकार रुई की खपत हुई है उसके आंकड़े नीचे दिये गये हैं :—

(४०० पौंड वाली लाख गाठों में)

फसल		भारतीय रुई	पाकिस्तानी रुई	अन्य देशी की रुई	योग
१९४२-४३	...	३०.३	१३.६	४.७	४८.६
१९४४-४५	.	२९.९	१२.५	६.५	४८.९
१९४५-४६	.	२७.०	१२.६	६.०	४६.६
१९४७-४८††	...	२८.६	७.२	६.३	४२.१
१९५०-५१	..	२५.२	०.२	१०.९	३६.३
१९५१-५२	..	२९.९	नगण्य	१०.८	४०.७
१९५२-५३		३६.१	नगण्य	८.५	४४.६
१९५३-५४†		१९.५	नगण्य	३.४	२२.९

†† १९४७-४८ से पहले अविभाजित भारत के आंकड़े हैं।

† केवल ६ महीने।

दक्षिणी अमेरिका के देशों में रुई की कुल खपत १९५१-५२ के बराबर हो जाने की आशा है। इसका कारण यह है कि अर्जेन्टाइना में कपड़ा उद्योग की दशा अब सुधर गई है। इन देशों में खपत में १ लाख गाठ की वृद्धि हो जायगी जिससे मांग बढ़कर १६ लाख गाठ हो जायगी।

महाद्वीपों के अनुसार १९५३-५४ में खपत का रुख नीचे की तालिका से प्रकट होता है :—

महाद्वीप		१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४
			(लाख गाठें)	
उत्तरी अमेरिका	.	९९	१०२	९३
पश्चिमी यूरोप	..	६८	६५	७२
एशिया		६५	७२	८०
दक्षिणी अमेरिका		१६	१५	१६
अफ्रीका		४	५	५
योग		२५२	२५९	२६६
रूस	..	२८	३१	३२
चीन		३१	३२	३४
पूर्वी यूरोप		१२	१३	१३
संसार का योग	.	३२३	३३५	३४५

रूई का स्टाक

हाल के वर्षों में संसार में रूई, खपत की अपेक्षा पैदा अधिक हुई है। अतः उसके स्टाक बढ़ते जा रहे हैं। १९५२-५३ के मौसम में रूई का निर्यात करने वाले देशों में स्टाक ३१ लाख गाठ की वृद्धि होकर १०४ लाख गाठ हो गया था। आयात करने वाले देशों में स्टाक घटकर १० लाख गाठ रह गया था। यह इतना कम बहुत वर्षों बाद हुआ है। विश्वभर में रूई के भाव के रुख घटते हुए रहे। इसी कारण आयात करने वाले देशों ने रूई का अधिक स्टाक नहीं किया। १९५३-५४ में भी यही रुख बना रहा जैसा कि नीचे की तालिका से प्रकट होता है :—

क्षेत्र	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५४-५५
	(लाख गाठें)			
अमेरिका	२३	२८	५६	९९
आयात करने वाले अन्य देश	२७	४४	४८	३१
निर्यात करने वाले देशों का योग	५०	७२	१०४	१३०
आयात करने वाले देशों का योग	५७	६१	५१	५०
योग †	१०७	१३२	१५५	१८०

† इनमें रूस चीन और पूर्वी यूरोप के आकडे शामिल नहीं हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि

१९५३-५४ में रूई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी वृद्धि हो गई। इसका अनुमान ११५ लाख गाठ है, जब कि १९५२-५३ में यह १०६ लाख गाठ रहा था। आयात करने वाले देशों में रूई की खपत बढ़ जाने के कारण ही यह ९ लाख गाठ की वृद्धि हुई है। अमेरिका के बाहर (रूस और चीन को छोड़ कर) रूई का कुल निर्यात प्रायः ८० लाख गाठ का ही हुआ, जबकि पिछले मौसम में ७६ लाख गाठ का ही हुआ था। इस वर्ष ब्राजील से फिर रूई का निर्यात होने लगा। भाव सस्ता होने के कारण ब्राजील से काफी निर्यात हुआ। १९५३-५४ में इसका अनुमान १२.५ से लेकर १५ लाख गाठ तक का है, जबकि पिछले मौसम में यह नगण्य था। पाकिस्तान में खपत बढ़ जाने और उत्पादन घट जाने के कारण निर्यात के लिये बहुत कम रूई रह जाती है। इस मौसम में मिस्र, सुडान, युगान्डा और पीरू से मिली किस्म की रूई की भारी माग हुई।

इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की एक विशेषता यह भी रही कि युद्ध के बाद पहली बार रूस अब पुनः निर्यातक के रूप में मैदान में आ गया है। उसने लगभग १.२ लाख गाठ यूरोपीय देशों को भेजी है। अभी कह नहीं सकते कि रूस आगे इन देशों को और अधिक रूई भेजेगा परन्तु लक्षण कुछ ऐसे ही लगते हैं।

आयात के स्रोतों में परिवर्तन

इस वर्ष संसार के मुख्य रूई आयातक देश जिन देशों से रूई का आयात करते हैं उनमें उल्लेखनीय परिवर्तन हो गये। ब्रिटेन ने फिर मिस्र और सुडान से पहले के समान माल खरीदना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त ब्राजील से भी उसने काफी रूई ली है। डालर क्षेत्र से उसने कम रूई मगाई। भारत ने अमेरिका से गत वर्ष की अपेक्षा बहुत कम रूई मगाई। पूर्वी अफ्रीका से भी कम आयात हुआ। परन्तु मिस्र और सुडान से अधिक रूई मगाई। पश्चिमी जर्मनी ने रूई पैदा करने वाले छोटे देशों से अधिक माल मगाना आरम्भ किया है। यूरोप के कुछ रूई आयातक देशों ने अफ्रीका में रूई की खेती बढ़ाने के प्रयत्न किये जिससे उन्हें वहां से अधिक परिमाण में रूई मिल सके। १९५३-५४ में रूई आयातक तथा निर्यातक देशों के बीच बहुत से समझौते हुए। नकली रासायनिक रेशों के प्रयोग पर बल दिये जाने के कारण भी रूई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिये जापान रासायनिक रेशों का चलन बढ़ाने के लिये रूई की खपत को सीमित कर देने के विषय में विचार कर रहा है। पश्चिमी यूरोप के कुछ देशों के विषय में भी ऐसा ही हो रहा है।

क्षेत्र कम हो जाने पर भी उपज बढ़ जाने की आशा से आलोच्य वर्ष के आरम्भ में संसार के रूई बाजारों का गिरता हुआ रुख रहा। शीघ्र ही यह भी प्रगट हो गया कि क्षेत्र कम हो जाने पर भी अमेरिका का उत्पादन अधिक होगा। साथ ही इस आशय के समाचार भी मिलने लगे कि अन्य देशों में भी फसल की हालत अच्छी है। इससे भी आरम्भ में भाव गिरे। अमेरिका में साधारणतः भाव बहुत कम घटे बढ़े। परन्तु अमेरिका से बाहर उसकी मध्यम दर्जे की रूई के भावों में मौसम के समय काफी परिवर्तन हुए। गैर डालर क्षेत्र में पाकिस्तान और तुर्की के भावों में विशेष परिवर्तन हुए। अन्य देशों में बहुत थोड़ी वृद्धि हुई।

१९५३-५४ की एक विशेषता यह भी रही कि विभिन्न देशों में रूई के भाव अमेरिकन भावों के आधार पर चले। मिस्र ने अपनी १९५२-५३ की नीति में अपनी रूई के भाव न्यूयार्क के सौदों के आधार पर ही निश्चित किये। न्यूयार्क के भावों से मिस्र में कारनक रूई के भाव ३० प्रतिशत और अश्मौनी के ५ प्रतिशत अधिक रहे। ब्राजील ने भी विदेशों के हाथ अपनी रूई बेचने का आधार न्यूयार्क का भाव ही चुना है।

दक्षिणी अमेरिका में कोलम्बिया और इक्वेडर को छोड़ कर अन्य देशों मे उपज घट गई। ब्राजील को छोड़ कर अन्य सभी देशों में रूई का क्षेत्र भी घट गया। अर्जेन्टाइना पीरू मे, पारागुए और कोलम्बिया का उत्पादन युद्धोत्तर वर्षों मे इस वर्ष सब से अधिक रहा।

रूस, चीन और पूर्वी यूरोप मे रूई का उत्पादन बराबर बढ़ता जा रहा है। अनुमान है कि चीन ने १९५३-५४ मे १०० लाख एकड़ भूमि मे रूई बोई जिसमे ३२ लाख गांठ उत्पन्न हुई। रूस मे ४२.५ लाख गांठ उत्पादन होने का अनुमान है, जब कि पिछले मौसम मे ४० लाख गांठ हुई थी।

खपत भी बढ़ी

दुनिया मे रूई का खपत का रुख भी बढ़ती की ओर रहा। आलोच्य वर्ष मे कुल खपत का अनुमान ३४५ लाख गांठ रहा, जब कि १९५२-५३ मे ३३५ लाख गांठ था। इसमें से उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, एशिया, पश्चिमी यूरोप और अफ्रीका मे २६६ लाख गांठ की खपत हुई, जब कि रूस, चीन और पूर्वी यूरोप मे ७९ लाख गांठ की हुई। १९५२-५३ मे यही आंकड़े क्रमशः २५६ लाख गांठ और ७६ लाख गांठ रहे थे। अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों मे १९५३-५४ मे खपत १८० लाख गांठ हुई जो १९५२-५३ की अपेक्षा १५ लाख गांठ अर्थात १० प्रतिशत अधिक है।

इस वृद्धि के सम्बन्ध में कई रोचक बातें ध्यान में रखने योग्य हैं। यह ऐसे समय में हुई जब नकली रेशों से रूई को जोरदार प्रतिस्पर्धा हो रही थी। अतः इससे प्रकट होता है कि रूई नकली रेशों से अधिक सफल रही है। रूई का उत्पादन भी बढ़ जाने से बढ़ी हुई खपत का रूई की स्थिति पर बुरा प्रभाव नहीं हुआ। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में भी रूई की खपत बढ़ गई है।

पश्चिमी यूरोप में भी खपत बढ़ी

पश्चिमी यूरोप मे रूई की खपत गतवर्ष की अपेक्षा आलोच्य वर्ष मे ६-७ लाख गांठ अधिक हुई। ब्रिटेन मे कपड़ा उद्योग की स्थिति सुधर गई। यहां १९५३ ५४ मे रूई की खपत का अनुमान १८.५ लाख गांठ है। १९५०-५१ मे बहुत अधिक खपत हुई थी और गत वर्ष बहुत कम। आलोच्य वर्ष की खपत इन दोनों के बीच मे रही है।

एशिया मे युद्ध के पश्चात् रूई की खपत बराबर बढ़ता रही है। पिछली तीन फसलों मे प्रतिवर्ष ७॥ लाख गांठ मे अधिक वृद्धि होती रही है। जापान मे फिर कपड़ा उद्योग चालू हो जाने और भारत ने उसका निरन्तर विस्तार होने के कारण ही ऐसा हुआ है। अब पाकिस्तान मे कपड़ा तैयार होने के यत्न हो रहे हैं। अतः वहां भी रूई की खपत बढ़ेगी। पाकिस्तानी मिलों में करघों की संख्या तेजी मे बढ़ रही है और इस मौसम मे वहां ४.५ लाख गांठ रूई खपत की आशा है, जो १९५२-५३ में प्राय दुगनी होगी।

भारतीय मिलों में देशी रूई

इधर भारत की यह विशेषता रही है कि उसके कपड़ा मिलों में भारतीय रूई को अधिकाधिक परिमाण मे उपयोग करने का प्रयत्न किया है। इसका कारण यह है कि अब भारत मे भी लम्बे रेशे की अच्छी रूई उपजने लगी है। साथ ही रूई का क्षेत्र और उपज भी बढ़ गई है।

कुछ प्रमुख वर्षों मे भारत मे किस प्रकार रूई की खपत हुई है उसके आंकड़े नीचे दिये गये हैं:—

(४०० पोंड वाली लाख गांठों मे)

फसल		भारतीय रूई	पाकिस्तानी रूई	अन्य देशों की रूई	योग
१९४१-४२	...	३० ३	१३.६	४.७	४८.६
१९४४-४५	...	२९.९	१२.५	६.५	४८.९
१९४५ ४६	...	२७ ०	१२.६	६ ०	४६.६
१९४७ ४८††	...	२८.६	७.२	६.३	४२.१
१९५०-५१	...	२५.२	०.२	१०.९	३६ ३
१९५१ ५२	...	२९.९	नगण्य	१० ८	४०.७
१९५२-५३	..	३६.१	नगण्य	८.५	४४.६
१९५३ ५४†	...	१९ ५	नगण्य	३.४	२२.९

†† १९४७-४८ से पहले अविभाजित भारत के आंकड़े हैं।

† केवल ६ महीने।

दक्षिणी अमेरिका के देशों मे रूई की कुल खपत १९५१ ५२ के बराबर हो जाने की आशा है। इसका कारण यह है कि अर्जेन्टाइना मे कपड़ा उद्योग की दशा अब सुधर गई है। इन देशों में खपत मे १ लाख गांठ की वृद्धि हो जायगी जिससे माग बढ़कर १६ लाख गांठ हो जायगी।

महाद्वीपों के अनुसार १९५३ ५४ मे खपत का रुख नीचे की तालिका मे प्रकट होता है:—

महाद्वीप		१९५१-५२	१९५२ ५३	१९५३ ५४
			(लाख गांठें)	
उत्तरी अमेरिका	.	९९	१०२	९३
पश्चिमी यूरोप	.	६८	६४	७२
एशिया		६५	७०	८०
दक्षिणी अमेरिका	.	१६	१५	१६
अफ्रीका		४	५	५
योग	.	२५२	२५६	२६६
रूस	..	२८	३१	३२
चीन	..	३१	३०	३४
पूर्वी यूरोप		१८	१२	१३
संसार का योग	..	३२३	३३५	३४५

रूई का स्टाक

हाल के वर्षों में संसार में रूई, खपत की अपेक्षा पैदा अधिक हुई है। अतः उसके स्टाक बढते जा रहे हैं। १९५२-५३ के मौसम में रूई का निर्यात करने वाले देशों में स्टाक ३१ लाख गाठ की वृद्धि होकर १०४ लाख गाठ हो गया था। आयात करने वाले देशों में स्टाक घटकर १० लाख गाठ रह गया था। यह इतना कम बहुत वर्षों बाद हुआ है। विश्वभर में रूई के भाव के दर घटते हुए रहे। इसी कारण आयात करने वाले देशों ने रूई का अधिक स्टाक नहीं किया। १९५३-५४ में भी यही क्रम बना रहा जैसा कि नीचे की तालिका से प्रकट होता है :—

क्षेत्र	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५४-५५
		(लाख गाठें)		
अमेरिका ..	२३	२८	५६	९९
आयात करने वाले अन्य देश	२७	४४	४८	३१
निर्यात करने वाले देशों का योग	५०	७२	१०४	१३०
आयात करने वाले देशों का योग	५७	६१	५१	५०
योग † .	१०७	१३२	१५५	१८०

† इनमें रूस चीन और पूर्वी यूरोप के आकडे शामिल नहीं हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि

१९५३-५४ में रूई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी वृद्धि हो गई। इसका अनुमान ११५ लाख गाठ है, जब कि १९५२-५३ में यह १०६ लाख गाठ रहा था। आयात करने वाले देशों में रूई की खपत बढ जाने के कारण ही यह ९ लाख गाठ की वृद्धि हुई है। अमेरिका के बाहर (रूस और चीन को छोड कर) रूई का कुल निर्यात प्रायः ८० लाख गाठ का ही हुआ, जबकि पिछले मौसम में ७६ लाख गाठ का ही हुआ था। इस वर्ष ब्राजील से फिर रूई का निर्यात होने लगा। भाव सस्ता होने के कारण ब्राजील से काफी निर्यात हुआ। १९५३-५४ में इसका अनुमान १२.५ से लेकर १५ लाख गाठ तक का है, जबकि पिछले मौसम में यह नगण्य था। पाकिस्तान में खपत बढ जाने और उत्पादन घट जाने के कारण निर्यात के लिये बहुत कम रूई रह जाती है। इस मौसम में मिस्र, सुडान, युगाडा और पीरू में मिली किस्म की रूई की भारी माग हुई।

इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की एक विशेषता यह भी रही कि युद्ध के बाद पहली बार रूस अब पुनः निर्यातक के रूप में मैदान में आ गया है। उसने लगभग १.२ लाख गाठ यूरोपीय देशों को भेजी है। अभी कह नहीं सकते कि रूस आगे इन देशों को और अधिक रूई भेजेगा परन्तु लक्षण कुछ ऐसे ही लगते हैं।

आयात के स्रोतों में परिवर्तन

इस वर्ष ससार के मुख्य रूई आयातक देश जिन देशों से रूई का आयात करते हैं उनमें उल्लेखनीय परिवर्तन हो गये। ब्रिटेन ने फिर मिस्र और सुडान से पहले के समान माल खरीदना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त ब्राजील से भी उसने काफी रूई ली है। डालर क्षेत्र से उसने कम रूई मगाई। भारत ने अमेरिका से गत वर्ष की अपेक्षा बहुत कम रूई मगाई। पूर्वी अफ्रीका से भी कम आयात हुआ। परन्तु मिस्र और सुडान से अधिक रूई मगाई। पश्चिमी जर्मनी ने रूई पैदा करने वाले छोटे देशों से अधिक माल मगाना आरम्भ किया है। यूरोप के कुछ रूई आयातक देशों ने अफ्रीका में रूई की खेती बढाने के प्रयत्न किये जिससे उन्हें वहा से अधिक परिमाण में रूई मिल सके। १९५३-५४ में रूई आयातक तथा निर्यातक देशों के बीच बहुत से समझौते हुए। नकली रासायनिक रेशों के प्रयोग पर बल दिये जाने के कारण भी रूई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव पडा है। उदाहरण के लिये जापान रासायनिक रेशों का चलन बढाने के लिये रूई की खपत को सीमित कर देने के विषय में विचार कर रहा है। पश्चिमी यूरोप के कुछ देशों के विषय में भी ऐसा ही हो रहा है।

क्षेत्र कम हो जाने पर भी उपज बढ जाने की आशा से आलोच्य वर्ष के आरम्भ में ससार के रूई बाजारों का गिरता हुआ रुख रहा शीघ्र ही यह भी प्रकट हो गया कि क्षेत्र कम हो जाने पर भी अमेरिका का उत्पादन अधिक होगा। साथ ही इस आशय के समाचार भी मिलने लगे कि अन्य देशों में भी फसल की हालत अच्छी है। इससे भी आरम्भ में भाव गिरे। अमेरिका में साधारणतः भाव बहुत कम घटे बढे। परन्तु अमेरिका से बाहर उसकी मध्यम दर्जे की रूई के भावों में मौसम के समय काफी परिवर्तन हुए। गैर डालर क्षेत्र में पाकिस्तान और तुर्की के भावों में विशेष परिवर्तन हुए। अन्य देशों में बहुत थोडी वृद्धि हुई।

१९५३-५४ की एक विशेषता यह भी रही कि विभिन्न देशों में रूई के भाव अमेरिकन भावों के आधार पर चले। मिस्र ने अपनी १९५२-५३ की नीति में अपनी रूई के भाव न्यूयार्क के सौदों के आधार पर ही निश्चित किये। न्यूयार्क के भावों से मिस्र में कारनक रूई के भाव ३० प्रतिशत और अश्मौनी के ५ प्रतिशत अधिक रहे। ब्राजील ने भी विदेशों के हाथ अपनी रूई बेचने का आधार न्यूयार्क का भाव ही चुना है।

१९५२ में निर्यात

★ काली मिर्च ४,७७,००० हण्डरवेट

★ लौंग १,४८,००० हण्डरवेट

★ सौंठ १,३०,००० हण्डरवेट

मसालों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

काली मिर्च, लौंग और सोंठ की महत्वपूर्ण स्थिति

यों तो मसाले सभी उपयोगी होते हैं परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में काली मिर्च, लौंग और सोंठ का विशेष स्थान है। ब्रिटिश राष्ट्र-मण्डल की अर्थ समिति ने बगीचों में होने वाले उत्पादनों के विषय में १९५३ की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसमें मसालों के व्यापार का सुन्दर विवेचन किया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार १९५२ में काली मिर्च का शुद्ध निर्यात ४,७७,००० हण्डरवेट हुआ, जबकि गत वर्ष यह ४,०६,००० हण्डरवेट हुआ था। लौंग का शुद्ध निर्यात ३,८०,००० हण्डरवेट से घटकर १,४८,००० हण्डरवेट रह गया। सोंठ का निर्यात भी १५६,००० हण्डरवेट से घट कर १,३०,००० हण्डरवेट रह गया।

आशा है मसालों के व्यापार की यह जानकारी हमारे व्यापारी वर्ग के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

~~~~~~

गोल मिर्च का भारत सबसे बड़ा उत्पादक

गोल मिर्च एक बेल में गुच्छियों के रूप में लगती है। यह बेल दक्षिण भारत, लंका और मलाया में बहुत उपजती है। इसके अतिरिक्त इण्डोनेशिया, हिन्दचीन और सयाम में भी यह पैदा होती है। यह दो किस्म की होती है (१) काला और (२) सफेद। गुच्छियां साधारणतः जब हरी होती हैं अथवा उनका रंग बदलने लगता है तभी उन्हें तोड़ लिया जाता है। इनमें पके फलों को अलग करके सात आठ दिन तक पानी में डाल रखते हैं अथवा किसी एक ओर इनका ढेर लगा रखते हैं। जब इनका गूदा मुलायम पड़ जाता है तो उसे मसल डालते हैं। गूदा साफ करने पर उसके भीतर से जो गुठलियां निकल आती हैं वहां सूखने पर सफेद गोल मिर्च कहलाती हैं। काली मिर्च बनाने के लिये सब प्रकार की गुच्छियों का ढेर लगा दिया जाता है। चार दिन पड़ी रहने के बाद इनमें जो हरे फल होते हैं उनका गूदा भी मुलायम पड़ जाता है। गूदे का रस निचोड़ कर निकाल दिया जाता है और फिर गुच्छियों को धूप में सूखने के लिये फैला दिया जाता है। जब यह सूख कर कड़ी और काली पड़ जाती हैं तो काली मिर्च कहलाती हैं।

अधिकांश क्षेत्रों में काली मिर्च की दो फसलें होती हैं। इनमें बड़ी फसल अगस्त या सितम्बर में और छोटी मार्च अथवा अप्रैल में होती है। परन्तु मिर्च तैयार करने का काम वर्ष भर चलता रहता है। भारत में लम्बी काली मिर्च और जावा जैसी काली मिर्च भी पैदा होती है। परन्तु अधिक न होने के कारण इनका निर्यात नहीं होता और अधिकांश में स्थानीय निवासी ही उन्हें अपने काम में ले आते हैं। काली मिर्च का बहुत सा भाग मांस का संरक्षण करने और डिब्बाबन्द करने में काम आ जाता है। इस कार्य के लिये अमेरिका में इसकी भारी मांग होती है।

गोल मिर्च का उत्पादन अधिकतर दक्षिण पूर्वी एशिया में ही होता है। वहां जापान का अधिकार हो जाने पर इसे भारी धक्का लगा था। गोल मिर्च की बेल तीन से लेकर पांच वर्ष तक में फलने लगती है।

युद्ध से पहले इण्डोनेशिया में १० से लेकर १५ लाख हण्डरवेट तक गोल मिर्च प्रतिवर्ष पैदा होती थी। युद्ध के बाद सबसे अधिक, अर्थात् १,६०,००० हण्डरवेट १९५० में हुई। १९५१ में इसका उत्पादन घट कर ६५,००० हण्डरवेट रह गया परन्तु १९५२ में यह फिर बढ़कर
~~~~~~

१,००,००० हंडरवेट हो गया। सरावक में गोल मिर्च की खेती का क्षेत्र १९४९ मे फिर युद्ध से पहले के बराबर हो गया। भाव चढ जाने से अगले वर्ष इसकी खेती मे और भी विस्तार हुआ। फसल में बीमारी लगने और बाढ आने पर भी कुल उपज १९५१ की अपेक्षा अधिक रही। हिन्दचीन मे युद्ध के बाद गृहयुद्ध, उपद्रव आदि होने के अतिरिक्त पौधों मे रोग भी फैल गया, जिसके कारण उपज घटकर केवल २४,००० हंडरवेट के लगभग रह गई, जबकि युद्ध के पहले वह ८०,००० हंडरवेट थी। बाद को इसमें और भी कमी होती रही।

युद्ध के बाद इण्डोनेशिया के बदले भारत गोल मिर्च का सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है। यहा १९५०-५१ में १,६७,००० एकड़ क्षेत्र में ६,१०,००० हण्डरवेट गोल मिर्च उत्पन्न हुई। १९५१-५२ में क्षेत्र बढ़कर २,०२,००० एकड़ हुआ परन्तु उत्पादन घट कर ४,६०,००० हण्डरवेट ही रह गया। इसका कारण मौसम की प्रतिकूलता थी। १९५२-५३ में क्षेत्र २,०३,००० एकड़ रहा और उत्पादन ४,३०,००० हण्डरवेट हो गया।

युद्ध के बाद गोल मिर्च का व्यापार

युद्ध के बाद विश्वभर में गोल मिर्च का जितना व्यापार हुआ वह युद्ध से पहले की अपेक्षा आधे से भी कम है। भारत युद्ध से पहले गोल मिर्च का आयात करता था। परन्तु युद्ध के बाद वह उसका भारी निर्यात करने लगा है। १९५० में तो कुल उपज का लगभग आधा भाग निर्यात कर दिया गया। १९५१ और १९५२ में निर्यात में कमी हो गई। इसका कारण अमेरिका को कम माल भेजा जाना था। १९५१ में इण्डोनेशिया का निर्यात भी बहुत कम हो गया था। परन्तु १९५२ में वह बढ़कर लगभग १९५० के बराबर हो गया। सरावक का निर्यात १९५१ में बढा और १९५२ मे बढ़कर ८०,००० हण्डरवेट रह गया। यह युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक और केवल १९३४ से ही कम था। दूसरी ओर हिन्दचीन का निर्यात युद्ध से पहले की अपेक्षा कम ही बना रहा।

मलाया से अधिकांश में इण्डोनेशिया और सरावक से आया हुआ माल ही निर्यात होता है। १९५२ मे सरावक से अधिक माल आ जाने के कारण मलाया का निर्यात भी बढ गया। नीचे की तालिका से गोल मिर्च के व्यापार का रूप प्रकट होता है। (हजार हण्डरवेट)

देश	१९३७	१९३८	१९५०	१९५१	१९५२
निर्यात					
मलाया ...	२१४	१५३	७७	६६	९३
सरावक ..	४३	६०	६	२४	८०
भारत .	२६	१४	३०८	२९८	४६
ब्रिटेन	१४	२७	१७	१०	२७
इण्डोनेशिया	६११	१,०७३	१४१	६६	१३६
हिन्दचीन ...	७६	१०९	२०	१३	८
अमेरिका	१०	२३	६		१
मेडागास्कर ..	२	४	५	[illegible]	८
योग . .	९९६	१,४९३	५८०	४८७	५९९
शुद्ध निर्यात ...	७५२	१,२४६	४८५	४०६	४७७

देश	१९३७	१९३८	१९५०	१९५१	१९५२
आयात					
मलाया .	१९८	१९०	७१	६६	९०
ब्रिटेन	८९	९९	३९	४७	५७
भारत	२२	२४	१	२	४
कनाडा	१५	१७	१९	१६	१५
आस्ट्रेलिया ..			८	९	७
अमेरिका	३०६	५१६	२६६	२१६	२५६
जर्मनी	१२४	८८	२८	२६	३२
फ्रान्स	५२	५०	२६	२६	२८
इटली	४२	३०	१६	१०	१७
चीन ...	२७	३६	...	..	...
अर्जेण्टाइना ..	१७	१३	१	५	४
मिस्र	१५	१५	४	३	३
नीदरलैण्ड ...	१३	८	३	२	३
ब्राजील	...	...	९	२१	१३
ईरान	११	६	५	४	२
स्वीडन ..	१३	१५	४	५	६
योग ...	९४४	१,०५०	५३०	४५८	५३७

भारतीय गोल मिर्च का सबसे बड़ा खरीदार अब भी अमेरिका के बाद ब्रिटेन ही है। कुछ वर्षों में सोवियत रूस ने भी काफी माल लिया है। इण्डोनेशिया से अमेरिका, नीदरलैण्ड और जर्मनी को १९५२ में कुछ अधिक माल भेजा गया, परन्तु पुनर्निर्यात के लिए मलाया को कम माल भेजा गया। मलाया से जो निर्यात हुआ वह अमेरिका और ब्रिटेन को अधिक परिमाण में गया। यूरोप में नीदरलैण्ड के बदले मुख्यत जर्मनी को माल भेजा गया।

१९५२ मे ब्रिटेन में ५७,००० हंडरवेट गोल मिर्च मगाई गई जो १९४९ की अपेक्षा अधिक थी। परन्तु युद्ध से पहले की अपेक्षा यह अब भी दो तिहाई थी। १९५२ मे ब्रिटेन ने आयात कम किया परन्तु पुनर्निर्यात अधिक किया।

देशों के अनुसार गोल मिर्च का व्यापार नीचे की तालिका मे दिया गया है :—

१९५२ में जंजीबार से अन्य सब देशों को तो बहुत कम माल भेजा गया परन्तु मलाया को इस वर्ष भी बहुत भेजा गया। भारत ने इस वर्ष कोई माल नहीं मंगाया जबकि १९५० और १९५१ दोनों ही वर्षों में ८०,००० हण्डरवेट से अधिक मंगाया था।

इण्डोनेशिया को भी कम माल भेजा गया परन्तु अमेरिका को दुगुना भेजा गया। १९५२ में मैडागास्कर से सभी देशों को १९५१ की अपेक्षा कम माल भेजा गया। मलाया को तो अपेक्षाकृत सबसे कम भेजा गया। यह १,१७,००० हण्डरवेट से घटकर ३५,००० हण्डरवेट रह गया। अमेरिका और फ्रान्स को भेजा गया माल भी घटकर आधा रह गया। १९५२ में यहां से इण्डोनेशिया और ब्रिटेन को कोई माल नहीं भेजा गया।

१९५२ में ब्रिटेन ने कुल ५,००० हण्डरवेट लौंग मंगाए जो सबकी सब जंजीबार से आए।

सोंठ: नाइजेरिया में उत्पादन बढ़ा

अदरख ही सूखकर सोंठ बन जाता है। यह उष्ण कटिबन्ध के अनेक देशों में उत्पन्न होता है। भारत, जमैका और सिरालियोन इसके प्रमुख निर्यातक हैं। इधर नाइजेरिया में इसकी उपज बढ़ी है और आस्ट्रेलिया में बढ़ाने के यत्न हो रहे हैं। चीन में भी अदरख बहुत होता है परन्तु उसे मसाले के रूप में काम में न लाकर केवल अदरख के रूप में ही लाते हैं।

१९५१ में सोंठ के भाव बढ़ जाने से १९५२ में संसार भर में इसका उत्पादन बहुत बढ़ा जिससे भाव तेजी से गिर गये। भारत में सोंठ स्थानीय उपभोग के लिये ही होता है। अब १९५१-५० में इसका उत्पादन ३,००,००० हण्डरवेट हुआ जो अगले वर्ष घटकर २,७५,००० हण्डरवेट रह गया। सिरालियोन में सोंठ अधिकतर निर्यात के लिये पैदा की जाती है। यहां प्रारम्भ में सोंठ की खेती का क्षेत्र बहुत कम था परन्तु बाद को उसका विस्तार हो गया। जमैका में बिक्री व्यवस्था अच्छी न होने और १९५० तथा १९५१ में क्षेत्र का विस्तार हो जाने के कारण उत्पादकों और निर्यातकों के पास पर्याप्त स्टाक इकट्ठा हो गया।

नीचे की तालिका में सोंठ के व्यापार के आंकड़े दिये गये हैं —

(हजार हण्डरवेट)

देश	१९३८	१९५०	१९५१	१९५२
निर्यात				
सिरा लियोन	५४	४५	६५	४०
भारत (क)	६०	४४	५२	६४
जमैका	२६	२३	४७	२७
नाइजेरिया	७	९	१२	९
योग ..	१४७	१२१	१५६	२३०
आयात				
ब्रिटेन	३८	३६	५८	२६
अदन (ख)	३३	१३	२५	३३
कनाडा	५	६	४	३
मलाया	१०	८	२३	२३
अमेरिका	६	३४	४३	३५
जर्मनी (ग)	१४	२	—	—
अरब (घ)	११	१३	१२	१२
योग ...	१०७	११०	१६५	१३२

(क) केवल समुद्र द्वारा हुआ व्यापार। १९४८ के बाद केवल भारत संघ का।

(ख) अधिकांश अरब को पुनर्निर्यात।

(ग) युद्धोत्तर वर्षों में पश्चिमी जर्मनी।

(घ) अरब को भारत से निर्यात। वित्तीय वर्ष।

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के देशों में ही संसार भर की अधिकांश सोंठ उत्पन्न होती है। इसका अधिकांश आयात व्यापार भी इन्हीं के हाथों में है। १९५० में सोंठ का उत्पादन घट जाने पर संसार के सोंठ के व्यापार में भी कमी हो गई, यद्यपि मुख्य देशों का कुल निर्यात युद्ध से पहले के वार्षिक औसत से कुछ ही कम रहा। भारत का निर्यात १९५२-५३ में घट गया, जबकि जमैका का १९५१ के बराबर १९५२ में भी बना रहा। सिरालियोन का निर्यात घट कर आधा रह गया। आयातक देशों में ब्रिटेन और अमेरिका ने जमैका और सिरालियोन का अधिकांश माल खरीदा। जमैका से अमेरिका को १९५१ की अपेक्षा १९५० में अधिक माल भेजा गया। इन दोनों ही देशों से ब्रिटेन में कम माल आया। सिरालियोन से तो १९५१ की अपेक्षा केवल एक तिहाई माल ही मंगाया। भारत से सोंठ मुख्यतः अदन और अरब को भेजी जाती है। अदन को भेजा जाने वाला माल भी अरब को ही भेज दिया जाता है। हांगकांग से मुख्यतः सुरक्षित अदरख का ही निर्यात होता है। अमेरिका को कुछ परिमाण में सोंठ भेजी जाती है।

ब्रिटेन में १९५० में ९६,००० टन सोंठ आई जो गत वर्ष से आधी थी। युद्धकाल से पुनर्निर्यात व्यापार महत्वपूर्ण होता जा रहा है। १९५२ में आयात कम हुआ जो युद्ध से पहले की अपेक्षा एक तिहाई से भी कम है।

नीचे की तालिका में सोंठ के व्यापार का विवरण दिखाया गया है —

(हजार हण्डरवेट)

देश	जमैका			सिरालियोन			भारत(क)		
	१९३८	१९५१	१९५२	१९३८	१९५१	१९५२	१९३८	१९५१	१९५२
ब्रिटेन	१४	११	१०	१५	४२	१४	५	२	१
कनाडा	३	२	१	२	१	—	—	(ख)	(ख)
आस्ट्रेलिया	१	१	—	१	—	—	३	(ख)	(ख)
अदन	—	—	—	१	—	—	२३	१६	२६
अमेरिका	८	११	१४	२२	१४	९	३	(ख)	(ख)
अरब	—	—	—	—	—	—	१०	१२	१२
अन्य		२	२	१३	८	७	१६	२२	२५
योग...	२६	२७	२७	५४	६५	३०	६०	५२	६४

(क) केवल समुद्र मार्ग द्वारा हुआ व्यापार। १९५१ से वित्तीय वर्ष के आंकड़े जो भारत संघ के हैं।

(ख) यदि कोई है तो अन्य में सम्मिलित।

यहाँ जिन उत्पादनों का उल्लेख किया गया है उनमें जायफल, जावित्री दालचीनी, लालमिर्च, इलायची इत्यादि भी सम्मिलित है। परन्तु कालीमिर्च, लौंग और सोंठ की तुलना में इन अन्य मसालों का बहुत कम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है।

जायफल और जावित्री एक ही वृक्ष से निकलते हैं। जायफल तो उसका बीज होता है और जावित्री बीज में से जाली जैसी वस्तु निकलती है। लौंग के समान यह भी मलक्का का पौधा है और अब भी संसार भर का आधा उत्पादन इण्डोनेशिया में ही होता है। अब यह पश्चिमी द्वीप समूह में भी होने लगा है। इण्डोनेशिया के बाद इसकी उपज में दूसरा स्थान ग्रेनेडा का है। इण्डोनेशिया से इसका १९५१ और १९५२ में बराबर निर्यात हुआ जो युद्ध से पहले की अपेक्षा दो तिहाई था। १९४९-५० में ग्रेनेडा में ६१,००० हण्डरवेट जायफल पैदा हुआ परन्तु फिर दो फसलों में यह घट कर केवल ५३,००० हण्डरवेट रह गया। इसके साथ ही निर्यात भी घटा परन्तु १९५२ में निर्यात फिर बढ़ गया और यद्यपि वह १९५० की सीमा पर तो नहीं पहुँच सका तथापि युद्ध से पहले के स्तर से अधिक हो गया।

दालचीनी का पेड़ लंका में होता है और मसाले के रूप में उस पेड़ की छाल काम में लाई जाती है। अब भी संसार को अधिकांश दालचीनी लंका से ही मिलती है। यह पेड़ सेशेल्स द्वीप और हिन्दचीन में भी होता है परन्तु वहां दालचीनी का उत्पादन अनिश्चित होता है। तेजपात भी दालचीनी के ही वर्ग का होता है और दालचीनी के बदले भी काम में लाया जाता है। कुछ दिन पहले तक तेजपात बड़े परिमाण में चीन से मंगाया जाता था परन्तु हाल में ही यह इण्डोनेशिया से बड़े परिमाण में आने लगा है। १९५०-५१ में यह मलाया से भी मंगाया गया। मलाया से जो तेजपात आता है वह भी इण्डोनेशिया का ही होता है।

लालमिर्च भारत में बहुत पैदा होती है। १९५२-५३ में भारत में ६० लाख हण्डरवेट लालमिर्च उत्पन्न हुई जो गत वर्ष से कुछ कम थी। उसका निर्यात भी यद्यपि काफी हुआ तथापि अधिकांश स्वपत देश में ही हुई। युद्ध के बाद मेक्सिको ने लालमिर्च का अच्छा निर्यात किया है। युगाण्डा और नाइजेरिया का निर्यात १९५० और १९५१ में बढ़ने के बाद १९५२ में फिर गिर गया।

इलायची भारत और लंका में बहुत होती है। पहले हिन्दचीन भी इलायची बहुत निर्यात करता था। परन्तु युद्धकाल से उसका निर्यात बहुत कम हो गया है।

अन्य मसालों का ब्रिटेन ने १९५० में बहुत कम मंगाया। १९४६ के बाद इतना कम आयात १९५० में ही हुआ है। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के देशों से होने वाला आयात विशेषतः कम हुआ है। इन देशों में टांगानीका, भारत और लंका भी सम्मिलित हैं। फ्रांसीसी मोरक्को से भी उसने कम मसाले मंगाये।

ब्रिटेन मसालों का जो पुनर्निर्यात करता है उसमें १९५२ में कुछ वृद्धि हुई परन्तु १९५० की तुलना में वह फिर भी कम रहा।

नीचे की तालिका में अन्य मसालों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सम्बन्धी आंकड़े दिये गये हैं।

अन्य मसालों का निर्यात

(हजार हण्डरवेट)

	१९३८	१९५०	१९५१	१९५२
जायफल और जावित्री				
ग्रेनेडा ...	४१	६८	२८	५१
इण्डोनेशिया .. .	६५	६२	५४	५५
दालचीनी				
लंका	४७	६८	४४	५०
सेशेल्स	१	५	४	३
हिन्दचीन	२२	४	१	—
तेजपात				
मलाया	■	२२	३७	५
चीन	११७	८६(च)	३३(च)	१(च)
इण्डोनेशिया (क) ...	४६	६५	७५	६३
लाल मिर्च				
भारत (ख)	१२५	६१	८७	२०२
बरमा	६६	—	—	—
युगाण्डा	१	१८	१८	११
नाइजेरिया (ग) ...	—	१६	१४	४
मेक्सिको (घ)	४८	१७०	१६६	१७६
पिमेन्टो				
जमैका	७७	३६	६४	४०
इलायची				
भारत (ख)	१३	१२	१४	१६
लंका	४	२	३	२
हिन्दचीन	१०	३	२	—
वनीला				
मेडागास्कर ..	७	१४	१०	८
मेक्सिको (घ)	३	२	५	३
फ्रान्सीसी ओशिनिया	२	४	४	४

(क) सम्पूर्ण भाग १९४६ से १९४९ केवल संघीय प्रदेश का।

(ख) केवल समुद्र द्वारा हुआ व्यापार। १९४८ के बाद विर्तीय वर्ष में भारतीय संघ का। स्थलमार्ग द्वारा पाकिस्तान को १९४९-५० में २७,१९५०-५१ में १,१९५१-५२ में १८७ और १९५२-५३ में ७८ निर्यात हुआ।

(ग) सुरक्षित लाल मिर्च।

(घ) ताजी और सूखी लाल मिर्च।

(च) चीन से कुछ आयातक देशों में आयात।

नीचे की तालिका में लन्दन के बाजार के मसालों के भाव दिये गये

हैं। लौंग का भाव गत वर्ष की अपेक्षा कना खुला और आलोच्य वर्ष मे चढ़कर दुगना हो गया। जमैका की सोंठ का भाव अफ्रीकी सोंठ से काफी ऊंचा खुला परन्तु आलोच्य वर्ष मे दोनों के भाव पर्याप्त गिर गये। दोनो के भावो का अन्तर भी काफी कम हो गया। काली मिर्च के भाव वर्ष के आरम्भ मे साधारणत एक वर्ष पूर्व के भावों से कम थे। आलोच्य वर्ष मे मलाबार की काली मिर्च के भाव कुछ चढे परन्तु सरावक की मिर्च के गिरे। जायफल और जावित्री के भाव आरम्भ मे अच्छे थे परन्तु बाद को वे गिर गये। तालिका इस प्रकार है —

	काली मिर्च			लौंग		सोंठ		जावित्री	जायफल		पिमेन्टो
	लेम्पोंग काली (प्रति पौंड) शि०पै०	सरावक काली (प्रति पौंड) शि०पै०	मलाबार काली (प्रति हण्डर०) शि०	जंजीबार (प्रति पौंड) शि०पै०	मैडागास्कर (प्रति पौंड) शि०पै०	अफ्रीकी (प्रति हण्डर०) शि०	जमैका न० ३ (प्रति हण्डर०) शि०	पश्चिमी द्वीप पीलीपत्ती (प्र०पौं०) शि०पै०	पश्चिमी द्वीप ८० (प्रति पौंड) शि०पै०	पूर्वी द्वीप ८० (प्रति पौंड) शि०पै०	(प्रति पौण्ड) शि०पै०
१९३७ जनवरी	■ ३½			० ८½	० ७¾	६२	६० ९०	२ ८	० ९	० १०½	० ८½
१९३८ जनवरी	■ २⅜			० ८	० ६¾	५२½	६० ९०	२ ४	० ९	१ १½	१ ७¾
१९३९ जनवरी	० २⅝			० ८¾	० ८	२९½	४० ७५	१ ९	■ ८½	० १०¹	■ ८
१९४६ जनवरी				१ ७½		८०(क)		५ ०	४ ■		१ ६
१९४७ जनवरी	२ ०			० १०¾		८०(क)	११०	७ ९	४ ९		१ ०½
१९४८ जनवरी	१ ११¾(क)		२१०(क)	० ९¾		६७½	९५	७ ३	३ ६	२ ८	१ २½
१९४९ जनवरी	३ २¹(क)	३ १०	२९५	१ ०	० १०½	८७½	१३०	६ ८	३ १	२ ८½	१ २
१९५० जनवरी	■ ४½	१४ ६	१,०००	१ ३	१ ४¹	३४५	३५५	६ ०	२ ९	२ १०	१ ६½
१९५१ जनवरी	१० १०½	१८ ७½	१,३४८	३ २(क)		३२०(क)	३९५	८ ६	४ ६(क)	५ ७	१ ९
१९५२ जनवरी	११ ०(क)	१४ ९	१,१८०(क)	५ ०	४ ८(क)	२३५	४५०	९ ३	४ ६	३ ८¼	१ ११½
फरवरी	११ ०(क)	१५ ९	१,२००(क)	६ ५	६ १	२००(क)	४००(क)	९ ०			
मार्च	११ ०(क)	१४ ९	१,०२५(क)	७ १½	६ ०	१७५	३२०(क)				..
अप्रैल	९ १½(क)	१२ ०	९७५	६ १०		१२५	१६०		४ ०	३ ६	२ ०
मई	८ ०(क)	१० ३(क)	९४५	६ १०½		१२५	१९५		३ ६	३ ४	
जून	९ ०(क)	११ ०	१,१००	८ ०	७ ०	१२०		८ ९	३ ६	२ ८	२ ०
जुलाई	१० ९(क)	११ ३	१,३६०	९ ०(क)	८ ०(क)	११५	१९०	८ ६	३ ४		
अगस्त	१० ४½(क)	१० १०½(क)	१,४८८	९ ०(क)		११७½	१५०				
सितम्बर	१० १½	११ ९	१,४७५	१० ०(क)		११५	१४०		३ ६	२ ८½	...
अक्तूबर	८ ३	११ ०	१,४००(क)	१० ९		११०	१३२½	८ ३	३ ४		२ १
नवम्बर	९ ६(क)	१० ७½	२,३५०(क)	११ ०		१००	१२७¼	८ ०		२ ५	
दिसम्बर	९ ६	९ ६	१,२९५	११ ९		९२½	१२०	८ ■	३ ०	२ ७¼	२ १½
										२ ७½	..

लन्दन के स्थानीय भाव जो महीने के आरम्भ मे अथवा उसके निकट।
(क) नाममात्र।



(लाख गाठो मे)

मौसम	१६५३-५४	१६५२-५३	१६५१ ५२
जुलाई ...	४.४६ (१.६२)	२ ६१ (०.२२)	२.२६ (१.६२)
अगस्त ...	४.६३ (१.६५)	२.६५ (०.५८)	३.३१ (२.१३)
सितम्बर ...	४.४६ (१.७६)	३.७७ (०.४६)	४.६३ (२.६३)
अक्तूबर ...	४.३४ (० ६३)	६.२६ (२.१६)	६ ६८ (२.५१)
नवम्बर ...	५.०६ (०.८२)	६.०० (२.६२)	६ २८ (२.१८)
दिसम्बर ...	६.०७ (१.२८)	६.३७ (२.२२)	४.६६ (०.६६)
जनवरी .	४.११ (१.२५)	५.२१ (१.४०)	६.०३ (१.२७)
फरवरी ...	४.४५ (१ १६)	४.११ (०.८१)	३.६३ (१.५७)
मार्च ...	३.५६ (०.८३)	४.८४ (१.०४)	३.३८ (१.३१)
अप्रैल ..	३ ८ (०.७८)	३.०० (०.३८)	२ ८० (०.५७)
मई . .	३.५१ (१ ०७)	३.७४ (०.२१)	३ ६२ (०.४२)
जून ...		४.५३ (१.१२)	२.१६ (०.५३)
योग	५३.५+ (१५.०)	५४.७ (१३.२५)	५०.४२ (१८.३०)

कोष्टकों में दिये गये अंक पाकिस्तान से आये जूट के हैं।

\+ अनुमानित।

उत्पादन में थोड़ी कमी

१६५३ ५४ मे जूट के माल का उत्पादन थोडा घट गया। गतवर्ष यह जहा ८.६२ लाख टन हुआ था, वहा आलोच्य वर्ष मे ८.६६ लाख टन ही हुआ। यह कमी कुछ सीमा तक मिलों की उत्पादन नीति मे परिवर्तन होने के कारण हुई है, क्योंकि उन्होंने अपनी कुछ शक्ति को बोरियो के बदले टाट बनाने में लगा दिया है। मौसम की दूसरी छमाही मे टाट की माग बढने लगी थी। मौसम भर भारतीय जूट मिल्स एसोसियेशन के सदस्य मिलो ने प्रति सप्ताह ४२॥ घन्टे काम किया। १६५३-५४ के मौसम मे टाट का उत्पादन ३ ६० लाख टन रहा, जबकि १६५२ ५३ और १६५१ ५२ मे क्रमश: ३.४८ लाख टन और ३.०६ लाख टन रहा था। बोरियों का उत्पादन कुछ घट कर ४ ४५ लाख टन रहा, जबकि १६५२-५३ और १६५१-५२ में क्रमश: ५.१० लाख टन और ६.०७ लाख टन रहा। जूट के माल के उत्पादन का रुख गिरता हुआ होने के कारण मिलों मे कच्चे जूट की खपत भी घट कर १६५३ ५४ मे ५०.४५ लाख गाठ रही, जबकि गत दो मौसमों मे क्रमशः ५३.१८ लाख गाठ और ५६.३६ लाख गाठ रही थी। इस उत्पादन मे उन मिलो का उत्पादन सम्मिलित नहीं है जो एसोसियेशन के सदस्य नहा है। इन मिलो का उत्पादन १६५२ ५३ और १६५१-५२ मे क्रमशः ३६,००० टन और ३८,००० टन रहा था।

नीचे की तालिका में गत तीन मौसमो मे हुए जूट के माल के उत्पादन के आकडे दिये गये है। इनसे प्रकट होता है कि उत्पादन का रुख कैसा रहा है :—

(अक हजारों मे)

	१६५३-५४	१६५२ ५३	१६५१ ५२
जुलाई	७८.८	८३ ८	७१.६
अगस्त	६८.१	७४.३	७५.७
सितम्बर	७३.१	७०.०	६६ ३
अक्तूबर ...	६६.८	७६.८	६६.२
नवम्बर	६६.०	७२.२	८२.०
दिसम्बर ..	७७.८	७८.८	८४.३
जनवरी .	७६.३	७३.०	६१.८
फरवरी	६८.३	६८ ६	८३.७
मार्च	७५ ६	७४.४	८२.६
अप्रैल	७५ ०	७४.३	८१.७
मइ	७१.३	७२.५	८२.५
जून	७४.६	७२.८	७३.३
योग	८६५.७	८६१.५	६४५.०

निर्यात में वृद्धि

मौसम के आरम्भ में जूट के माल के निर्यात की प्रगति सन्तोषजनक नहीं थी। इसलिये भारत सरकार ने टाट का निर्यात शुल्क २७५ रु० से घटा कर १२० रु० प्रतिटन कर दिया। इससे भारतीय टाट विदेशी बाजारो में अन्य देशों के टाट से अच्छी प्रतिस्पर्धा कर सका। १६५३-५४ की पहली छमाही मे जूट के माल के निर्यात का कुल योग ४. १६ लाख टन था, जबकि पिछली दो छमाहियो मे यह क्रमशः ३ ३१ लाख टन और ३.४६ लाख टन रहा था। निर्यात हुए ४.१६ लाख टन में २.२१ लाख टन टाट, १.८२ लाख टन बोरिया और १३,६४० टन अन्य वस्तुए थीं। तीसरी तिमाही मे निर्यात का योग १.६० लाख टन रहा और अन्तिम तिमाही मे भी इतना ही बने रहने का अनुमान है। बोरियों के निर्यात मे भी थोडी वृद्धि हुई। मार्च १६५४ मे यह ४६,२०० टन रहा। १६५३ ५४ मे जूट के माल के कुल निर्यात का योग ८.१ लाख टन होने का अनुमान है, जो १६५२ ५३ के ६ ७७ लाख टन और १६५१-५२ के ७.६६ लाख टन से कहीं अधिक है। यहा यह ध्यान देने योग्य है कि १६५३-५४ में निर्यात १६४८ ४६ के बाद से सब से अधिक हुआ है जबकि उसका योग ८.७२ लाख टन रहा था।

नीचे की तालिका में हाल के वर्षों में हुआ जूट के माल का निर्यात दिखाया गया है —

जूट के माल का निर्यात

मौसम	(लाख टनों में)
१९४६ ४७	७ ४६
१९४७ ४८	८ ६६
१९४८ ४९	८ ७२
१९४९ ५०	७ ५४
१९५० ५१	७ १६
१९५१ ५२	७ ६६
१९५२ ५३	६ ७७
१९५३ ५४	८ ००*

*अनुमानित

स्टाक की अच्छी स्थिति

१९५३ ५४ में मिलों में उत्पादन कम होने पर भी निर्यात अधिक हो सका। इसका कारण यही था कि मिलों के पास माल का काफी स्टाक था जिसमें से वे निर्यात के लिये माल दे सके। मौसम आरम्भ होने पर मिलों के पास बहुत अधिक स्टाक इकट्ठा था। इसका अनुमान जुलाई १९५३ में १ ३७ लाख टन तक था। टाट का स्टाक ४४ ६००० टन और बोरियों का ८० १०० टन था। इस स्टाक में धीरे धीरे कमी होती गई और नवम्बर के अन्त में वह घट कर ६७ ८०० टन ही रह गया। मई में यह सबसे कम अर्थात् ८६ २०० टन रह गया। १९५३ ५४ का मौसम समाप्त होते समय स्टाक फिर कुछ बढ़ कर ८६ ६०० टन हो गया।

मिलों में स्टाक की स्थिति नीचे के आंकड़ों से स्पष्ट हो जाती है —

(हजारों में)

	१९५३ ५४	१९५२ ५३	१९५१ ५२
जुलाई	१३६ ७	१०० ५	७४ ६
अगस्त	१२३ ४	९३ ८	६९ ०
सितम्बर	११८ ६	९१ ५	६३ ५
अक्तूबर	१०७ ९	९५ ०	७२ ०
नवम्बर	९८ ३	१०४ ४	८ ४
दिसम्बर	९८ ९	११५ ०	८४ ५
जनवरी	९५ ७	१२८ ४	८६ ४
फरवरी	९५ ४	१३६ ०	१०६ ४
मार्च	९२ ९	१३८ ७	१११ ५
अप्रैल	९१ ४	१३७ ३	११६ ४
मई	८६ ५	१६८ ८	१०३ ८
जून	८६ ९	१३३ ८	९८ ६

अमेरिका में टाट की खपत घटी

१९५३ ५४ में अमेरिका में टाट की खपत गत मौसम की अपेक्षा कम हुई। पहली तिमाही में खपत [illegible] लाख गज रही जबकि पिछले दो मौसमों की पहली तिमाहियों में यह क्रमशः २५०० लाख गज और १,०६० लाख गज रहा था। दूसरी तिमाही में यह खपत थोड़ी बढ़कर २,०८० लाख गज हो गई जबकि गत मौसम की इसी तिमाही में यह २,३४० लाख गज रही थी। तीसरी तिमाही में यह घट कर १,९७० लाख गज रह गई और अन्तिम तिमाही में इसके और भी घट कर १,७३० लाख गज रह जाने का अनुमान है। १९५३ ५४ के कुल मौसम में अमेरिका में टाट की खपत का योग ८१२० लाख गज होने का अनुमान है, जबकि १९५२ ५३ और १९५१ ५२ में यह क्रमशः ८७०० लाख गज और ५ ७६० लाख गज रहा था।

नीचे की तालिका में १९५३ ५४ में कच्चे जूट और जूट के माल के मूल्यों के आंकड़े दिये गये हैं —

मास*	कच्चा जूट		जूट का माल	
	आसाम बाटम प्रति मन	मिल प्रथम प्रति गांठ	टाट १०० गज के ११ पौंड	बोरियां १०० की हिस्सियन
	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
जुलाई	२४-८	१६० ०	४५ ४	९७ १२
अगस्त	२६ ०	१८० ०	४५ १४	१०२ ४
सितम्बर	२६-८	१६५ ०	४२ ६	९४ १४
अक्तूबर	२४-८	१४५ ०	४३ १४	९ १४
नवम्बर	२६-८	१७० ०	४६ २	९९ ०
दिसम्बर	२७-८	१८० ०	४७ ३	१०३ ४
जनवरी	२८-८	१८५ ०	४६ ५	१०७ ४
फरवरी	२८ ०	१८० ०	४५ ७	१०२ १४
मार्च	२५ ०	१८० ०	४४ १४	१०६ १०
अप्रैल	२६ ०	१८० ०	४२ १५	१०८ १२
मई	२५ १	१७५ ०	४४ ०५	११३ १४

*प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में रहे मूल्य।

जूट की फसल का पूर्वानुमान

(लाखों में)

मौसम		क्षेत्र (एकड़)	फसल
१९५० ५१			
पश्चिमी बंगाल		६ ७०	१५ ४३
शेष भारत		७ ८४	१० ५८
	योग	१४ ५४	३३ ०१
१९५१ ५२			
पश्चिमी बंगाल		९ ०१	२३ ९२
शेष भारत		१० ५०	७ ८६
	योग	१९ ५१	४५ ७८
१९५२ ५३			
पश्चिमी बंगाल		८ ४४	२४ २१
शेष भारत		९ ७३	२१ ८४
	योग	१८ १७	४६ ०५
१९५३ ५४			
पश्चिमी बंगाल		५ ५०	१५ ३६
शेष भारत		६ ४६	१५ ९२
	योग	११ ९६	३१ २८

★★★ खरीदार देसी माल का विश्वास नहीं करते और विदेशी माल को मंहगा होते हुये भी खरीदते हैं...परन्तु क्यों?

भारत में प्रतिमान निर्धारण

खरीदारी में धोखे से बचने का सर्वोत्तम उपाय

(ले०—श्री टी० टी० कृष्णमाचारी, अध्यक्ष भारतीय प्रतिमानशाला)

भारतीय प्रतिमानशाला १९४७ में स्थापित की गयी थी। इस अल्पजीवन में शाला ने लगभग ५०० प्रतिमान प्रकाशित किये हैं। स्थापना के समय शाला के केवल १०० सदस्य थे पर आज उनकी संख्या बढ़कर लगभग ८०० हो गयी है। भारतीय प्रतिमानशाला अंतर्राष्ट्रीय प्रतिमान संगठन से भी सम्बद्ध है और अबरक तथा लाख के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमान निकालने में इसने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रतिमानशाला का इतिहास संतोषजनक अवश्य है किन्तु, औद्योगिक विकास में प्रतिमानों को अभी महत्व नहीं दिया जा रहा है। उद्योगपतियों को शिकायत है कि खरीदार देसी माल का विश्वास नहीं करते और विदेशी माल को, महंगा होते हुए भी, खुशी से खरीदते हैं। सरकार भी विदेशी माल का आना पूरी तरह नहीं रोक सकती। अतः प्रतिमान निर्धारण ही ऐसा इलाज है जिससे दुकानदार और खरीदार दोनों को संतोष और सुविधा हो सकती है। दुकानदार समझ सकता है कि उसका माल नियत प्रतिमान का होने के कारण उसमें धोखा नहीं हो सकता और ग्राहक भी इसपर विश्वास करेगा।

आसान काम नहीं

प्रतिमान निर्धारण कोई आसान काम नहीं। यह काम शाला की बहुत सी उप समितियों द्वारा किया जाता है और उपभोक्ता व्यापारी, खरीदार और प्रौद्योगिक जानकार सभी इनके सदस्य हैं। आरम्भ में इन सदस्यों की संख्या केवल ६०० थी और अब ४,५०० हो गयी है। १९५२ में भारतीय प्रतिमानशाला (प्रमाणीकरण चिन्ह) अधिनियम बन जाने से प्रतिमान शाला के अधिकार बढ़ गये हैं। शाला को प्रमाणीकरण चिन्ह देने और कम्पनियों को भारतीय प्रतिमानों के अनुसार माल तैयार करने के लाइसेंस देने का अधिकार मिल गया है। इससे उचित किस्म के माल को प्रोत्साहन मिलेगा और सस्ते तथा घटिया माल के मुकाबले का डर कम हो जायगा। केन्द्रीय सरकार की नीति है कि जहां तक हो नियत प्रतिमान की चीजें ही खरीदी जायं। ज्यों ज्यों उपभोक्ता प्रतिमान वाली चीजों पर भरोसा करेंगे त्यों त्यों औद्योगिक विकास की गति तीव्र होती जायगी। हमारे जैसे निर्धन देश में तो कच्चे माल की बचत का महत्व युद्ध और शांतिकाल दोनों में एक सा है।

इस समय भारतीय प्रतिमानशाला इमारतों में काम आने वाले इस्पात के प्रतिमान निर्धारण और निर्माण विधियों के नियम निर्धारित करने का यत्न कर रही है। इससे हर साल काफी बचत हो सकती है। प्रतिमान निर्धारित न होने से भारी मात्रा में उत्पादन करना कठिन होता है। इसी प्रकार विदेशों में हमारे माल की बिक्री में भी कठिनाई होती है। विदेशी व्यापारी माल को आंख से देखे बिना नहीं खरीदते। यदि नियत प्रतिमान का माल हो तो केवल तार द्वारा ही सौदा पक्का हो सकता है।

४२० समितियां

प्रतिमानशाला की ४२० समितियां हैं। इनका संचालन (१) इंजीनियरिंग विभाग परिषद (२) निर्माण विभाग परिषद (३) वस्त्र विभाग परिषद और (४) रासायनिक विभाग परिषद करती हैं। शीघ्र ही खाद्य और कृषि उत्पादन विभाग परिषद भी स्थापित करने का विचार किया जा रहा है।

प्रधान मंत्री द्वारा भारतीय प्रतिमान शाला के भवन का शिलान्यास देश के औद्योगिक विकास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। पर अभी बहुत कुछ करना बाकी है। शाला का काम इसके सदस्यों के चन्दे से चलता है। प्रायः सब राज्य सरकारें इसकी सदस्य हैं और केन्द्रीय सरकार से भी सहायता मिलती है। पर इससे भी बढ़कर है व्यापारियों और उपभोक्ताओं तथा जनता का सहयोग। ज्यों ही प्रतिमानों का महत्व उनकी समझ में आ जायगा बस समझ लीजिए कि आधा मैदान उसी दिन सर हो जायगा।

प्रतिमानों का राष्ट्रीय महत्व

भारतीय प्रतिमानशाला का कार्य

ऊपर श्री टी० टी० कृष्णमाचारी, अध्यक्ष भारतीय प्रतिमानशाला के लेख में शाला के कार्य और महत्व पर प्रकाश डाला गया है। भारतीय प्रतिमानशाला ने अब तक क्या किया है और उसके कार्य का कितना महान् राष्ट्रीय महत्व है, यह संक्षेप में नीचे के विवरण से ज्ञात हो सकेगा।

क्या क्लर्क, क्या गृहिणी और क्या कोई बड़ा कर्मचारी, भारतीय प्रतिमानशाला सब के लाभ का काम करती है। आप पूछेंगे कैसे? साबुन का ही उदाहरण ले लीजिए। आखिर साबुन तो सभी इस्तेमाल करते हैं। साबुन भी अच्छा और बुरा होता है। यदि साबुन में चिकनाई का अंश बढ़ गया तो वह खराब हो जाता है और क्षार का अंश बढ़ गया तो भी

उसकी उपयोगिता और मूल्य घट जाता है। अत. अच्छे साबुन के लिये सब पदार्थों का नियत अनुपात होना चाहिये। प्रतिमानशाला ने अभी तक ५०० प्रतिमान जारी किये हैं। उनमें से एक नहाने के साबुन का भी है। इसके लिए क्षार का अधिकतम परिमाण ०५ प्र० श० निश्चित किया गया है।

यही बात बिजली के पखा के बारे में है। हिसाब लगाया गया है कि घटिया पखे से एक व्यक्ति को १० साल में ३ हजार रु० की हानि उठानी पड़ती है। इस समय भारत में ३६ से लेकर ८४ इंच व्यास तक के ६ तरह के छत के पखे बनाये जाते हैं। ये एक मिनट में १५० से लेकर ३७५ तक घूम सकते हैं। ६० इंच की पखुड़िया के छत के एक भी पखे से कम से कम ६,५०० घनफुट और प्रतिवाट शक्ति से १५० घनफुट हवा फेंकी जानी चाहिए।

छत के बिजली के पखा का प्रतिमान निर्धारित करने में शाला की औद्योगिक समिति के १५ सदस्यों को चार वर्ष लगे। इसके लिए सदस्यों को पिछले २० सालों के आकड़ों का गहन अध्ययन करना पड़ा। ऐसे कामों के लिये सदस्य कारखानों में जाकर निर्माण की विधियों आदि का अध्ययन भी करते हैं और यह भी देखते हैं कि क्या भारत में मिलने वाले कच्चे माल से हो ये चीजें बनाई जा सकती हैं।

प्रतिमान क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि एक आवर्तक आवश्यकता की पूर्ति का नाम ही प्रतिमान है। कारखानों में बनाई जाने वाली किसी भी वस्तु की फलोत्पादकता और कार्य सम्पन्नता का एक नियत स्तर कायम करना ही प्रतिमान निर्धारण करना है। सबसे बड़ी बात यह है कि प्रतिमान देश के औद्योगिक विकास के सूचक भी माने जाते हैं।

प्रतिमान निर्धारण कोई नयी चीज नहीं। नारवे, मिस्र या और किसी देश की पाषाण कालीन सभ्यता के जो चिह्न आज मिलते हैं उन सबमें एक ही पत्थर की छुनिया मिलती हैं। इसी प्रकार उस काल के कुदाल भी बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। आज, आधुनिक अर्थ में, प्रतिमान निर्धारण से चीजों की किस्मे कम हो जाती हैं और थोडी सी किस्मो का अधिक परिमाण में कम खर्च में उत्पन्न किया जाता है।

प्रतिमान निर्धारण से ग्राहक और उत्पादनकर्ता दोनों को लाभ है। ग्राहक को सतोष रहता है कि उसे अपने पैसे से पूरी और बढ़िया चीज मिलती है और उत्पादनकर्ता के माल की देश और विदेश में साख बनती है। प्रतिमान आदर्श और वास्तविकता के मध्य समझौता कराने वाला विचरानी है।

व्यापक समर्थन

भारतीय प्रतिमानशाला का कार्य अब राष्ट्रीय महत्व प्राप्त कर चुका है। शाला ७ साल पहले सरकार और जनता के समर्थन से आरम्भ की गई थी और यह भारत में खपने और बनने वाली चीजों के नाप, किस्म और काम से प्रतिमान निर्धारित करती है। यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमान सगठन में भी भारत का प्रतिनिधित्व करती है। शाला को केन्द्रीय सरकार सहायता देती है। इसके अलावा राज्य सरकारें औद्योगिक एव व्यापारिक सस्थाएं, कारखाने, औद्योगिक शालायें, नगरपालिकायें और निगम आदि भी शाला के सदस्य हैं और इसके लिये चन्दा देते हैं। इसके काम की लोकप्रियता और महत्व इसी बात से प्रकट होता है कि अब कारखानों के मालिक अपनी चीजों के प्रतिमान निर्धारित करने की माग स्वय करने लगे हैं।

इस समय शाला ईधन गवेषणाशाला के सहयोग से तेल के लैम्पों का प्रतिमान निर्धारित करने का यत्न कर रही है। कच्चे लोहे का प्रतिमान बनाया हो जा चुका है। शाला की इजीनियरिंग शाखा, तावे, जस्त, बिजली के पखों, मोटरों तथा कृषि आदि के औजारों के १०० प्रतिमान जारी कर चुकी है।

जूट, रेशम, ऊन और सूती वस्त्रों के भी ७० प्रतिमान जारी किये जा चुके हैं और १५६ तैयार किये जा रहे हैं। अ० भा० करघा बोर्ड ने भी करघे के कपड़े के लिये प्रतिमानों के निर्धारण का सुझाव रखा है।

भारतीय प्रतिमानशाला के विकास में सबसे महत्वपूर्ण बात है १९५२ का भारतीय प्रतिमानशाला अधिनियम। इस अधिनियम के अतर्गत शाला को प्रमाणीकरण चिह्न और प्रतिमानों के अनुसार माल बनाने के लाइसेन्स देने का अधिकार प्राप्त हो गया है। इससे अनुचित मुकाबले की सम्भावना बहुत कम हो जायगी। अगले ६ महीनों में प्रमाण पत्र की व्यवस्था चालू हो जायगी और आई० एस० आई० की मुहर देखकर ग्राहक को माल के परियापन का विश्वास हो जायगा।

भारतीय प्रतिमानशाला की प्रगति

भारतीय प्रतिमानशाला की प्रगति पर निम्न आकड़ों से अच्छा प्रकाश पड़ता है :—

	३१ मार्च १९४८	३१ मार्च, १९५०	३१ मार्च, १९५२	३१ मार्च १९५४
१. प्रतिमान जारी किये गये		११०	३००	४७३
२. [illegible] रहे थे		३७०	४९५	७३०
३. समितिया, उप-समितिया आदि की सख्या	७३	२२६	२६७	४२३
४. समितिया और उप-समितिया की कुल सदस्य सख्या	४८६	१,८७२	२,६१८	४,०६६
५. चन्दा देने वाले सदस्यों की सख्या	३५६	५६३	७५८	८९६
६. शाला के अफसरों की सख्या	६	११	११	२३
७. अन्य कर्मचारियों की सख्या	३६	५८	८३	११९
८. प्रतिमानो की बिक्री (रु० में)	७००	३०,९००	१,१५,१००	१,५७,८००

गृह तथा छोटे उद्योग धन्धे और प्रतिमान निर्धारण

देश के स्वदेशी आन्दोलन में गृह तथा छोटे उद्योग धन्धों ने महत्व पूर्ण भाग लिया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी खादी के विकास पर ही नहीं, अपितु अन्य गृह उद्योगों की उन्नति पर भी बहुत जोर देते थे। इन उद्योगों के महत्व को सन् १९४८ में मान्यता मिली, जब भारत सरकार ने आल इण्डिया काटेज इन्डस्ट्रीज बोर्ड की स्थापना की। सन् १९४९ से भारतीय प्रतिमानशाला ने भी इस तरफ ध्यान दिया। बाद में योजना आयोग ने पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत अखिल भारतीय आधार पर इन उद्योगों के विकास पर जोर दिया।

माननिर्धारण में कठिनाई

गृह उद्योग के क्षेत्र में मान निर्धारण करने में अनेक कठिनाइयां हैं। वस्तुओं की किस्म को नियमित करना भी कठिन है। केन्द्र तथा राज्य की सरकारें वर्तमान समस्याओं का निराकरण करने के लिए देश के प्रमुख नगरों में, औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र तथा शो रूम (प्रदर्शन कक्ष) स्थापित करने की व्यवस्था कर रही हैं। हाल ही में भारत सरकार ने फोर्ड फाउण्डेशन द्वारा समर्थित एक अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ दल को यहां के छोटे मोटे उद्योग धन्धों के अध्ययन तथा उनकी उन्नति के लिए अपना सुझाव देने को आमन्त्रित किया है।

भारतीय प्रतिमानशाला ने गृह व छोटे उद्योगों की अनेक वस्तुओं के मान निर्धारण की दिशा में पर्याप्त ध्यान दिया है।

सूती वस्त्र

भारतीय राष्ट्रीय झण्डा हाथ के कते और हाथ के बुने सूत से बनता है। शाला ने विभिन्न आकार के झण्डे बनाने का प्रतिमान निश्चित किया है। इसी प्रकार मिर्जापुर में करघे पर बने गलीचों का, भारतीय प्रतिमान के अंतर्गत, सूत की किस्म बनावट तथा पक्के रंग के बारे में आवश्यक बातों का उल्लेख किया गया है।

ऊन के वर्गीकरण का भारतीय प्रतिमान बन जाने के कारण पहले जैसी वर्गीकरण सम्बन्धी गड़बड़ी समाप्त हो गई है, और विदेशों को माल भेजने में अधिक सावधानी बरती जाती है। करघे पर बने सामान का प्रतिमान-निर्धारण किया जाने वाला है।

लाख और अबरक

भारत लाख आदि रालों का संसार में सब से अधिक निर्यात करता है। इस सम्बन्ध में तीन प्रतिमान अब तक निर्धारित किये जा चुके हैं।

अबरक के क्षेत्र में भारत का वस्तुतः एकाधिकार है। अबरक उद्योग में अनेक छोटे छोटे उद्योग हैं जिनके द्वारा अबरक निकाला और साफ किया जाता है। अबरक के लिए दो प्रतिमानों का निर्धारण किया जा चुका है।

गृह व छोटे उद्योगों के अन्तर्गत खेल के सामान का खूब निर्माण होता है। पाकिस्तान बनने से पूर्व, भारत खेल के सामान का काफी निर्यात करता था। देश के बटवारे से उत्पन्न गड़बड़ी के शान्त होने के बाद यह उद्योग पुनर्जीवित हुआ है और अब विदेशों में माल की खपत बढ़ रही है। क्रिकेट, हाकी के गेंद, फुटबाल, तथा टेनिस के बल्लों की तांत के प्रतिमान छाप दिये गये हैं।

नहाने तथा कपड़े धोने का साबुन तथा वनस्पति तेलों के प्रतिमान भी प्रायः निर्धारित किये जा चुके हैं।

लोहे का सामान तथा ताले

इमारत आदि बनाने में कम खर्चा हो, इस उद्देश्य से कुछ लोहे के इमारती सामान के प्रतिमानों का निर्धारण किया गया है, जैसे किवाड़ की चिटकनी, कब्जे आदि। लोहे का कुछ सामान पड़ौसी देशों को भी भेजा जाता है। अलीगढ़ में गृह उद्योग तथा छोटे धन्धे के रूप में ताले बनाने का जो काम होता है, उसका प्रतिमान निर्धारित किया जा चुका है।

पूर्वी पंजाब में साइकिल के विभिन्न भाग बनाये जाते हैं। यह काम वहां छोटे उद्योग धन्धे के रूप में होता है, परन्तु यदि इसे ठीक ढंग से संगठित किया जाय, तो इससे बड़े पैमाने पर चलने वाले कारखानों को विशेष सहायता मिल सकती है। साइकिल के बहुत से पुर्जों के प्रतिमानों के प्रारूप तैयार करके समीक्षा के लिए प्रस्तुत किये गये हैं। इस उद्योग का विकास निर्धारित प्रतिमानों का ठीक उपयोग करने पर निर्भर करता है।

चाय की पेटियां

करीब ४ करोड़ की लागत की, चाय रखने की पेटियां, निर्यात करने के लिए, प्रतिवर्ष बनाई जाती हैं। कुछ समय पूर्व तक भारत अपनी जरूरत का आधा सामान विदेशों से मंगाता था। चाय की पेटियां बनाने के इस उद्योग को अब भारतीय प्रतिमानों के आधार पर नियमित किया जा रहा है। अब बाहर से चाय रखने की पेटियां नहीं मंगाई जातीं।

बड़े पैमाने पर चलने वाले उद्योगों द्वारा बनाई जाने वाली वस्तुओं के प्रतिमान भी निर्धारित किये गये हैं। गृह उद्योगों के विकास में टांका बनाने का लोहा, इस्पात की पनालीदार चादरें, लोहे चादरें, बर्तनों के लिये अलूमीनियम, टीन, तांबा, लकड़ी, पालिश, तारपीन का तेल, कांच बनाने का रेत, कच्चा रेशम आदि का महत्वपूर्ण स्थान है, इसलिये इनके भी प्रतिमान निर्धारित किये गये हैं। भारतीय प्रतिमानशाला इन वस्तुओं के प्रतिमान निर्धारण कर देश के विभिन्न छोटे छोटे उद्योगों में लगे दस्तकारों की बड़ी सेवा कर रही है। देश के बहुत से लोगों को इससे काम मिल रहा है।

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

हालैण्ड में भारतीय माल की खपत बढ़ी

हांगकांग को कोयला भेजने वालों में भारत का मुख्य स्थान

संसार के विभिन्न देशों में नियुक्त हमारे व्यापार प्रतिनिधियों की नवीनतम रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि १९५३ में हालैण्ड ने भारत से ३६३ लाख गिल्डर का माल मंगाया। १९५२ में मंगाये भारतीय माल से यह ८.६ प्रतिशत अधिक है।

हांगकांग को कोयला भेजने वालों में अब भी भारत का मुख्य स्थान है। वहां के उद्योगों का कारोबार बढ़ता जा रहा है, जिससे प्रोत्साहित होकर नये-नये कारखाने खुलते जा रहे हैं।

मार्च मास में अमेरिका का आयात ८,०८७ लाख डालर से बढ़कर ८,४८१ लाख डालर हो गया परन्तु निर्यात ११,८१४ लाख डालर से घटकर ११,११८ लाख डालर रह गया।

नेपाल में सूत, चाय, चीनी और सस्ती सिगरेटों की मांग बहुत अधिक हो रही है।

हालैण्ड : भारत से व्यापार

१९५३ में भारत द्वारा हालैण्ड को अनुमानतः ३,६३,४०,००० गिल्डर मूल्य का माल भेजा गया। यह १९५२ में भेजे गये ३,३४,४५,००० गिल्डर के माल की अपेक्षा ८.६ प्र० श० अधिक है। इसी अवधि में भारत को ६,१७,५०,००० गिल्डर मूल्य का माल भेजा गया। अतः इस बार, १९५२ के ८,५६,५९,००० गिल्डर के निर्यात की अपेक्षा, २८ प्र० श० से अधिक की कमी रही।

भारत डच व्यापार की हाल के वर्षों में जो प्रगति हुई है, उसकी कुछ जानकारी निम्न आंकड़ों से मिल सकेगी :—

(मूल्य लाख गिल्डरों में)

	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२	१९५३
हालैण्ड को भारतीय निर्यात	३५२	५७८	४३८	३३५	३६३
हालैण्ड से भारत में आयात	४४७	३११	६६०	८५७	६१८

१९५१, १९५२ व १९५३ में हालैण्ड को भेजी गई प्रमुख भारतीय वस्तुएं इस प्रकार थीं –

(मूल्य लाख गिल्डरों में)

वस्तु	१९५१	१९५२	१९५३
१	२	३	४
विभिन्न प्रकार के सन . .	१३०	७६	९९
रुई—कच्ची व रद्दी	८३	३५	६७
वनस्पति तेल .. .	८०	३७	२९
चाय	१९	२४	४७
मूंगफली तथा अन्य तेल उत्पन्न करने वाले बीज	५	२४	१७
तम्बाकू	२२	१७	३१
खनिज पदार्थ ...	१४	२१	१५
खनिज धातुएं	९	२४	१
कपड़े ..	२८	५८	२९

इसी अवधि में भारत को भेजी गई डच वस्तुओं में प्रमुख ये थीं —

(मूल्य लाख गिल्डरों में)

वस्तु	१९५१	१९५२	१९५३
दूध तथा उससे बनी वस्तुएं	१३६	११०	१२१
मांडा, हरा वनस्पति का सत आदि	६०	१२	९
रासायनिक पदार्थ	१५	११	१६
पैराफिन, वैसलीन, चिकनाई वाले तेल आदि	८	१००	११
गत्ता और कागज	१७	२५	१६
पश्मन, सूत आदि	२०	१९	६
सूत . .	६८	११५	१४८
जस्ता और उससे बना माल ..	७	१८	३
यातायात के साधन ..	८४	३७	२८
मशीनें और औज़ार .	६४	९०	११८
टीन और उससे बना माल	१	५३	०
लोहे और इस्पात का सामान	०	२४	२६
रंगरोगन, वार्निश आदि .	१६	८	१३

जनवरी व फरवरी १९५४ की दो मास की अवधि मे भारत से हालैण्ड को ७४,५१,००० गिल्डर मूल्य का निर्यात हुआ और इसी अवधि में हालैण्ड ने भारत को १,०२,८०,००० गिल्डर का माल भेजा।

जनवरी व फरवरी १९५४ की अवधि में भारत से हालैण्ड को भेजी गई वस्तुओं में प्रमुख ये थीं:—

वस्तु	मूल्य
सूत	२०,५४,००० गिल्डर
काफी	१३,७२,००० ,,
रूई कच्ची व रद्दी	८,६६,००० ,,
चाय	७,४६,००० ,,
कपड़े	६,१३,००० ,,
तम्बाकू पत्ती	३,८५,००० ,,
खनिज पदार्थ ... — ...	३,२०,००० ,,
उडनशील तेल आदि .	२,८४,००० ,,
गोंद, राल आदि	२,५७,००० ,,

भारतीय माल की खपत की सम्भावना

काफी:—१९५३ में हालैण्ड ने भारत से ३,१६,००० गिल्डर की काफी मंगाई। १९५४ के प्रथम दो महीनों मे वह १३,७२,००० गिल्डर मूल्य की भारतीय काफी मगा चुका है। हालैण्ड के काफी व्यापार अधिकारियों से जाच करने पर ज्ञात हुआ है कि काफी के आयात मे जो वृद्धि हुई है उसका मुख्य कारण यह है कि डच व्यापारियों को अपने सामान्य-साधन, पुर्तगीज अफ्रीका, जहा गत वर्ष की अनावृष्टि से फसल को बहुत हानि पहुँची है; से पर्याप्त मात्रा में काफी प्राप्त करने में कई कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ा। अफ्रीका में कम फसल होने से रोबस्टा (Robusta) काफी के मूल्य मे बहुत वृद्धि हो गई है।

भारतीय काफी, डच बाजार में अपने लिये स्थायी स्थान बना लेगी या नहीं, यह मुख्यतः काफी की किस्म तथा भारत से ठीक समय पर उसके पहुंचते रहने पर निर्भर होगा। हाल में पहुँचे माल को किस्म के बारे में लोगों का कहना है कि भारतीय काफी इतने प्रकार की आई है कि अभी उसके विषय में कोई निश्चित मत नहीं दिया जा सकता।

तम्बाकू—कुछ समय के लिये हालैण्ड मे भारतीय तम्बाकू खरीदे जाने की बहुत कम सम्भावना है। कारण कि भारतीय निर्यातक कुछ समय से पश्चिमी यूरोप को बडे परिमाण में तम्बाकू भेजते रहे हैं, जो बाजारों में न खप सकने के कारण अमस्टर्डम, रोटरडम और एन्टवर्प के गोदामो में पडी हुई है। हालैण्ड और बेलजियम में बिना बिकी हुई ऐसी तम्बाकू का स्टाक ५,००० से ७,००० गाठ तक पडा हुआ है। भारतीय तम्बाकू के ये स्टाक हेम्बर्ग और ब्रे मेन शहरो के गोदामों मे भी हैं।

ज्ञात हुआ है कि डच तम्बाकू उद्योग अपने मिश्रणों मे भारतीय तम्बाकू का बहुत कम उपयोग करता है। इसलिये समझा जाता है कि गोदामों में पडी हुई तम्बाकू कुछ समय तक बाजार की माग को पूरा करती रहेगी।

मूल्यों के विषय मे बताया गया है कि १९५३ की फसल की आग मे तपाई हुई वरजीनिया एल० एम० जी० किस्म की तम्बाकू गोदाम के बाहर ६॥ पैंस प्रति पौण्ड पर तैयार मिल रही है परन्तु उसके कोई अधिक खरीदार नहीं हैं। एल० बी० वाइ० किस्म की तैयार तम्बाकू भी ४॥ पैंस प्रति पौण्ड पर उपलब्ध है परन्तु इसके भी खरीदार नहीं हैं।

हांगकांग : कोयला भेजने वालों में भारत प्रमुख

ज्ञात हुआ है कि हागकाग में भारतीय सूत व्यापार को कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। कारण कि भारतीय बाजार के मूल्य भारतीय माल की लागत से कम हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय फर्मों की व्यापार की हीन विधियों के कारण ये कठिनाइया और भी बढ रही हैं। इसी कारण भारतीय सूत का आयात काफी कम हो गया है। हांगकांग को कोयला भेजने वाले देशो में भारत अब भी प्रमुख है। फरवरी १९५४ में भारत से जो आयात हुआ और जो निर्यात किया गया उसके मूल्य निम्न प्रकार हैं:—

भारत से आयात

वस्तु	हांगकांग डालर
सूत	१०,९७,८८२
चादरों का कोरा कपडा	३,७२,९७७
टाट की बोरिया	४,१८,३४५
विविध	१२,२४,१७५
योग	३१,१३,०८९

भारत को निर्यात

वस्तु	हांगकांग डालर
लच्छों में कच्चा रेशम	४,५३,६९३
पौधे, बीज, फूल आदि	२,४०,९०८
विविध	६,२१,३२८
योग	१३,१६,३२८

व्यापार में उदारता

फरवरी मास में आवश्यक वस्तु-पूर्ति प्रमाणपत्र नियन्त्रण के अन्तर्गत और भी अधिक सुविधाओं की घोषणा कर दी गई।

इससे प्रभावित वस्तुएं इस प्रकार हैं:—

कुछ किस्मो के मीटर, सामान्यतः सर्वत्र काम आने वाले पुल, वोल्ट वाले मीटर, लकडी चीरने के गोल आरे, लकडी चीरने के पट्टी वाले आरे, हाथ से धातु काटने वाली आरियां, विविध प्रकार के पेंच के यन्त्र, टेलीफोन ऐम्पलीफायर।

औद्योगिक उन्नति

हांगकांग में नये-नये कारखाने खुलते जा रहे हैं। यह उद्योगों के कारोबार में अपेक्षाकृत वृद्धि होने का द्योतक है। एक बड़ी आटा पीसने की मिल प्रायः बन कर तैयार हो गई है। इसमें प्रतिदिन ५० पौंड वाली आटे की ५,००० बोरियाँ पिस कर तैयार होंगी। ग्रामोफोन के कोरे रेकार्ड बनाने के लिये भी एक कारखाना तैयार हो रहा है। सूत कातने का ५,६०० तकुओं वाला एक नया कारखाना भी तैयार होने पर है। फरवरी मास में हॉंगकांग में बनी वस्तुओं के निर्यात का कुल मूल्य ४०७ लाख हां० कां० डालर रहा।

अमेरिका : मार्च में निर्यात घटा और आयात बढ़ा

वाणिज्य विभाग के गणना केन्द्र ने घोषित किया है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के घरेलू व विदेशी व्यापारी माल का निर्यात फरवरी में ११,८१४ लाख डालर से घटकर मार्च में ११,७१८ लाख डालर रह गया। यह १९५३ के मासिक औसत १३,१३७ लाख डालर के स्तर से लगभग १५ प्र० श० कम है। इसी अवधि में, सामान्य आयात ८,०८७ लाख डालर से बढ़कर ८,५८१ लाख डालर हो गया। फिर भी १९५३ के मासिक औसत ९,०६२ लाख डालर से लगभग ५ प्र० श० कम रहा। पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत किये गये निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसका मूल्य १,८४४ लाख डालर से बढ़कर २,०३६ लाख डालर हो गया। १९५४ की प्रथम तिमाही में कुल निर्यात [जिसमें पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत किया गया निर्यात भी सम्मिलित है] का मूल्य ३३,९४२ लाख डालर हो गया। यह १९५३ की इसी अवधि में हुए ३८,८२५ लाख डालर के निर्यात की अपेक्षा लगभग १३ प्र० श० कम है। १९५४ की प्रथम तिमाही में पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत भेजा गया माल ५,५७३ लाख डालर मूल्य का रहा, जबकि १९५३ की इसी अवधि में इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत ८,८८२ लाख डालर के माल का निर्यात हुआ था। अतः इस बार निर्यात में ३,३०९ लाख डालर की कमी रही। यदि पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत भेजा गया माल निकाल दें, तो १९५४ की प्रथम तिमाही का निर्यात, १९५३ की इसी अवधि के निर्यात की अपेक्षा, ५ प्र० श० कम रहा। १९५४ की प्रथम तिमाही में कुल आयात २४,९९७ लाख डालर का हुआ जबकि १९५३ की इसी अवधि में यह २७,८२९ लाख डालर रहा था।

भारत से व्यापार

मार्च १९५४ में अमेरिका का भारत से आयात व निर्यात व्यापार क्रमशः १८५ लाख डालर और १०४ लाख डालर का हुआ, जबकि गत मास में यह क्रमशः १९६ लाख डालर व १३७ लाख डालर का हुआ था।

अमेरिका द्वारा भारत से मंगाये गये माल के प्रारम्भिक आंकड़ों से पता चलता है कि १९५३ में कई वस्तुओं का डालर मूल्य कम हो गया। ये आंकड़े निम्न प्रकार हैं.—

अमेरिका का भारत से आयात

(लाख डालर)

वस्तु			१९५२	१९५३
चमड़ा व खालें	...	...	९८	९२
जूट व उससे निर्मित वस्तुएं		...	१,०३२	६४७
अनिर्मित ऊन	..	...	१२२	५६
खनिज पदार्थ	...	..	९७	९९
लोहे के मिश्रण	...	...	२३८	४०५
चाय .	...	...	१४६	१६५
काजू ..	. .	...	१८७	१९४
खनिज इल्मेनाइट	.	..	२१	१३
अरण्डी का तेल	...	...	७६	८०
काली मिर्च	...	...	२७५	२०७

नेपाल : भारतीय माल की खपत

मई मास में ऊनी व रेशमी माल, जो डाक द्वारा आता रहा है, उसके अतिरिक्त भारतीय कपड़े की २१८ गांठें आयीं। नेपाल मोटी किस्म का कपड़ा अभी और ले सकता है।

यहां सूत बहुत कम परिमाण में पहुँचता है। इसकी यहां बहुत मांग है। कारण कि यहां के गरीब लोग अपना कपड़ा अपने हाथ से करघा पर ही तैयार करते हैं और इसके लिए उन्हें सूत की आवश्यकता होती है।

प्रायः सब किस्म की चाय के मूल्य घट गये हैं। इस की यहां बहुत मांग है।

विदेशी बाइसिकलों और मोटर साइकिलों का आयात जारी है। यदि भारत में बनी साइकिलें यहां भेजी जांय तो इनकी अच्छी खपत हो सकती है। फिर भी भारतीय साइकिलों की किस्म व मजबूती के सम्बन्ध में लोगों को विश्वास दिलाना पड़ेगा। यहां के बाजारों में अपना पैर जमाने के लिये मूल्य के अनुसार किस्म भी अच्छी होनी चाहिये।

यद्यपि प्रतिदिन चीनी के मूल्य बढ़ते जा रहे हैं, तथापि इस आवश्यक वस्तु की यहां बड़ी मांग है। यदि और अधिक चीनी यहां भेजी जाय तो उसका स्वागत किया जायगा। अप्रैल मास में काठमाण्डू में चीनी की ६२० बोरियां आयीं।

मोटर व साइकिलों के टायर और ट्यूब पश्चिमी बंगाल से आ रहे हैं और यहा इनकी बडी ख्याति है। यहा सुपारी, दालचीनी, इलायची और मसालो की बहुत अच्छी माग है, परन्तु ये सब वस्तुएं मलाया से आती हैं। अगराग, इत्यादि शृंगार-सामग्री की भी अच्छी बिक्री है और इस समय भारतीय व विदेशी- दोनो प्रकार के माल यहा आते हैं। घर के बर्तन तैयार करने के लिये पीतल व ताम्बे की चादरो का नैपाल में अच्छा व्यापार हो सकता है। तम्बाकू और शीरे की बहुत अच्छी खपत होती है और इसे १०० प्र० श० तक आसानी से बढाया जा सकता है। सस्ती किस्म की सिगरेटो की माग प्रायः असीमित है। इस्पात, लोहा धातु के टुकडे, टीन और पनालीदार लोहे की चादर भी यहा बहुत कम परिमाण में पहुँचती हैं और उनकी भारी माग रहती है।

विदेशी व्यापार

मई मास में भारत से आने वाली वस्तुओ में पेट्रोल, मोटर व साइकिलों के टायर व ट्यूब, कपडा और चीनी मुख्य थीं। विदेशो से मगाई गई वस्तुओ में घडिया, मिट्टी का तेल, जायफल, रेडियो, अखबारी कागज, शराब, सिगरेटें व सुपारी प्रमुख थीं। उपर्युक्त वस्तुओं का विवरण निम्न प्रकार है:—

विदेशी माल

घडिया	२३ नग
जायफल	१८ बोरिया
रेडियो ...	१६ पेटिया
सफेद चमकीला अखबारी कागज	४४ गाठें
सुपारी	२४२ बोरिया
मिट्टी का तेल	७,६२०
शराब	२६ पेटिया
सिगरेटें	७ पेटिया

इन वस्तुओं पर कुल रु० ५८,०१६ ६ ० की सीमाशुल्क की छूट दी गई।

भारतीय माल

पेट्रोल .	१६,२०० गैलन
चीनी	६२० बोरिया
कपडा ...	२१८ गाठें
मोटर के टायर ..	४८ सख्या
मोटर ट्यूब . .	३४ सख्या
साइकिल टायर	५० सख्या

इन वस्तुओं पर कुल रु० ३७,३२०-१-० की उत्पादन शुल्क की छूट दी गई।

मलाया : १९५३ में प्रतिकूल व्यापार संतुलन

१९५३ में मलाया का कुल आयात ३२,३८१ लाख म० डालर तथा कुल निर्यात २९,११५ लाख म० डालर रहा। अत. व्यापार-सतुलन ३,२६६ लाख म० डालर से उसके प्रतिकूल रहा, जबकि १९५२ में यह ५२७ लाख म० डालर से उसके प्रतिकूल व १९५१ मे १२,७०२ लाख म० डालर से उसके अनुकूल रहा था।

निम्न तालिका में १९५२ व १९५३ में हुए मलाया के विश्व व्यापार का तुलनात्मक विवरण दिया गया है:—

	(००० मलाया डालर)	
	१९५२	१९५३
आयात	३८,४७,४१०	३२,३८,१६४
निर्यात	३७,९४,७२९	२९,११,५२१
व्यापार सन्तुलन	—५२,६८१	— ३,२६,६४३

मलाया के कुल आयात में, १९५२ की अपेक्षा, ६,०९० लाख म० डालर व कुल निर्यात में ८,८३० लाख म० डालर की कमी रही। यह कमी मुख्यतः रबड व टीन के मूल्य कम हो जाने के कारण हुई। इस वर्ष मलाया का इण्डोनेशिया, अमेरिका व ब्रिटेन से व्यापार कम हो गया। इसी कारण आयात व निर्यात का अन्तर बढ गया।

१९५३ में मलाया के कुल व्यापार में ब्रिटेन का भाग १८.७ प्र० श०, इण्डोनेशिया का १६.५ प्र० श०, अमेरिका का १०.० प्र० श०, जापान का ४ ६ प्र० श०, थाइलैण्ड का ६.६ प्र० श०, सरावक का ४.० प्र० श० आस्ट्रेलिया का ५.० प्र० श० और भारत का ३.० प्र० श० रहा। १९५३ में उपर्युक्त ८ देशों से हुआ व्यापार मलाया के कुल व्यापार का ६८.४ प्र० श० है।

१९५३ में मलाया के कुल व्यापार में केवल रबड का भाग ही २५.२ प्र० श० रहा। अन्य व्यापार की प्रमुख वस्तु टीन थी जिसका भाग ६.३ प्र०श०रहा। अन्य मुख्य वस्तुए पेट्रोलियम उत्पादन (१५.७ प्र० श०), सूती कपडा (३.१ प्र० श०) और खाद्य पदार्थ (१९.६ प्र० श०) थीं।

भारत मलाया का व्यापार

दिसम्बर १९५३ में मलाया का भारत से कुल ९५ लाख म० डालर का व्यापार हुआ, जिसमे भारत से आयात ५५ लाख म० डालर का व भारत को निर्यात ४० लाख म० डालर का हुआ। अतः व्यापार-सतुलन १५ लाख म० डालर से भारत के अनुकूल रहा, जबकि गत मास मे यह १० लाख डालर मे उसके प्रतिकूल रहा था। १९५३ में भारत-मलाया का व्यापार-सतुलन १३६ लाख म० डालर से मलाया के अनुकूल रहा, जबकि १९५२ में यह ४४१ लाख म० डालर से भारत के अनुकूल रहा था। १९५३ में मलाया मे भारत से आयात, १९५२ की अपेक्षा, ४७९ लाख म० डालर से घट गया। परन्तु मलाया का भारत को निर्यात ९९ लाख म० डालर से बढ गया।

१९५२ व १९५३ में मलाया का भारत से जो व्यापार हुआ उसका तुलनात्मक विवरण निम्न प्रकार है:—

	(००० मलाया डालर)	
	१९५२	१९५३
भारत से आयात	१,३२,६५५	८४,८०९
भारत को निर्यात	८८,५४९	९८,४३१
व्यापार सतुलन	—४४,१०६	+१३,६२२

१९५३ मे मलाया का भारत से आयात कुल ८४८ लाख मलाया डालर का हुआ। यह १९५२ की अपेक्षा ४७८ लाख डालर कम है।

१९५२ व १९५३ मे भारत से मलाया मे मगाई गई मुख्य वस्तुओ का तुलनात्मक विवरण निम्न तालिका मे दिया गया है —

(००० मलाया डालर)

वस्तु	१९५२	१९५३
१	२	३
सूती कपडा	६७,१९५	३७,५९६
सूती मराग	८,५४७	७,००५
सिगरेट	१,०७७	३६
ताटगुड	६ ३६२	१,०४२
जूट का माल (टाट की बोरिया)	५,६३१	२,४७०
प्याज और लहसन	२,४७४	२.०७८
छत के खपरे	३,८५७	२ १४०
नारियल की रस्सिया	१,१५७	१,२८१
तैयार चमडा ..	१,४१७	१,३०३
कोयला	६ २४७	१,६१५
सिलाई की मशीनें ..	४०२	१६१
छत के पत्ते	३५०	४५२
इस्पात का फर्नीचर .	४३	६१
चमडे के जूते	४८४	२२५
सिनेमा के चित्र (प्रदर्शन के लिये)	३३६	५७४
छपी हुई पुस्तकें . ..	४९६	६५३
अनिर्मित तम्बाकू . .	२६४	७४०
ताजी मछली	५५	४५६
मछली कटी हुई	४२१	१६५
शार्क मछली के पर	६६३	४६८
ताजे फल	३८५	२६६
सूखी तरकारिया	२३४	१९९
बूरा	६४६	१,४५७
मूंगफली का तेल	७४४	३४२
पेटेन्ट औषधिया ..	२०८	९०
मोटर गाडियो के टायर	१७१	३५८
साइकिल टायर	—	१२७
जूट की रस्सी	१,५६२	६४०
अन्य रस्सिया	६०६	४३८
अलूमीनियम के बरतन	३८४	१६३

१९५३ मे मलाया ने भारत को कुल ६८४ लाख म० डालर का माल भेजा। यह १९५२ की अपेक्षा ६६ लाख म० डालर अधिक है।

१९५२ व १९५३ मे मलाया से भारत को भेजी गई मुख्य वस्तुओं का तुलनात्मक विवरण इस प्रकार है —

(मूल्य लाख म० डालरो में)

	१९५२	१९५३
पेट्रोलियम उत्पादन	३२१	३५६
टीन	१६३	१७१
रबड .	५३	४
सुपारी ...	१८३	१४६
ताड का तेल	७	८३
नारियल का गोला	६	१६
नारियल का तेल	१०१	११४

फिजी : भारत से व्यापार

१९५३ के व्यापार आकडे, जो फिजी सरकार ने हाल मे ही प्रकाशित किये हैं, उनसे पता लगता है कि १९५० के बाद पहला बार फिजी का व्यापार-सन्तुलन उसके अनुकूल रहा है। यह विशेष करके चीना व केला के निर्यात मे वृद्धि होने से हुआ है। इसका मुख्य कारण मौसम का अनुकूल रहना है। १९५३ में हुए फिजी के कुल आयात व निर्यात का मूल्य, १९५२ की तुलना में, नीचे दिया गया है।

(पौण्डो मे)

वर्ष	आयात	निर्यात
१९५३	१,०५,४८,६०७	१,३१,८० ६६८
१९५२	१,४०,०८,६००	९८,७१,५५०

फिजी का आयात व्यापार कम हो जाने से स्वभावत ब्रिटेन व आस्ट्रेलिया, जो फिजी को माल भेजने वालों मे प्रमुख हैं, से होने वाले आयात को धक्का पहुँचा। फिर भी इस सम्बन्ध मे भारत से होने वाले आयात पर अन्य देशों की अपेक्षा अधिक प्रभाव पडा है। यह भारत से मगाये गये माल के गत ५ वर्षो के आकडो से स्पष्ट है। आकडे नीचे की तालिका मे दिये जाते हैं —

वर्ष	भारत से आयात (पौण्ड)
१९५३	५,८६,६३६
१९५२	८,०४,६६०
१९५१	६,६०,४६१
१९५०	३,६६,१९०
१९४९	३,८६,९६०

खपत की सम्भावना

फिजी तथा उसके आस पास के द्वीप, टोंगा, समोआ और न्यू कैलाडोनिया में सिन्कुटा के आर्तरिक टापिस और अच्छी किस्म की धानी की मिठाइयों का बडी माग है। वे अभी आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन से मगाई जाती हैं। इनमें से कुछ भारतीय मिठाइयो से काफी घटिया होती हैं।

जानकारी विभाग

औद्योगिक विषय

मैसूर का लोहे और इस्पात का कारखाना

ऊपर से लटकती एक बाल्टी आती है और कच्ची धातु के ढेर में से थोड़ा सा भरकर तार के सहारे चलती है तथा भट्ठी में उसे जा उड़ेलती है। चार घंटे के बाद यह धातु पिघलकर शुद्ध रूप में बाहर निकलती है और ठंडी होकर लोहे के बड़े बड़े ढोकों की शक्ल में बदल जाती है। यह क्रम भद्रावती के मैसूर आयरन एण्ड स्टील वर्क्स में निरंतर चलता रहता है। इस कारखाने में इस्पात और लोहे के नलों के अलावा प्रतिदिन १०० टन कच्चा लोहा तैयार होता है। पंचवर्षीय योजना के अंत तक इसका उत्पादन दुगना हो जाने की आशा है।

भद्रावती का लोहे और इस्पात का कारखाना बंगलौर से लगभग १०० मील की दूरी पर है। इसकी स्थापना १९२३ में हुई थी और उस समय इसका मुख्य उद्देश्य इस स्थान के निकट मिलने वाले खनिजों का उपयोग करना था। भद्रावती से ३० मील दूर केम्मनगुंडी में लोहे की खानें और २५ मील दूर चूने के पत्थर की खानें हैं। आस पास के जंगलों से लकड़ी का कोयला आसानी से मिल जाता है।

आरम्भ में कारखाने का उत्पादन केवल ५ हजार टन कच्चे लोहे तक ही सीमित रखा गया था। इस लोहे का अधिकांश बाहर भेज दिया जाता था। १९३६ में इस्पात का भी कारखाना स्थापित किया गया। इसके बाद सीमेंट और फेरोसिलीकन के कारखाने स्थापित किये गये।

कारखाने के विस्तार के साथ साथ इसका आधुनिकीकरण भी होता रहा है। उदाहरण के लिये देश में केवल इसी कारखाने में बिजली की भट्ठी है। बिजली की भट्ठी से लोहा बनाने का आर्थिक महत्व है। जोग के झरना से जो बिजली तैयार होती है यह भट्ठी उसी से गर्म होती है और अक्तूबर १९५२ से बराबर काम कर रही है। दो और भट्ठियां शीघ्र ही लगाई जाने वाली है।

बिजली की भट्ठी द्वारा कच्चे लोहे से इस्पात बनाने की एक नई विधि निकाली गई है। अब इस्पात बनाने के लिए लोहे को ठंडा करने की आवश्यकता नहीं रही है। गर्म लोहे में ही चूने का पत्थर और दूसरी चीजें मिला दी जाती हैं और सांचा में डालकर इस्पात ढाल दी जाती है।

इस्पात की सलाखों को सरिए और पतर बनाने वाले कारखाना में ले जा कर हथौड़ा से पीटकर गोल चौकोर और चपटे आकार का बना दिया जाता है। कपास और पटसन की गांठें बांधने की पत्तियां भी यहां बनाई जाती हैं। इन सब चीजों का वार्षिक उत्पादन २० हजार टन है।

कुछ इस्पात नल ढालने के काम आता है। इस्पात, कच्चे लोहे और टलाई के काम आने वाले लोहे को मिलाकर पानी के नल बनाये जाते हैं। इनका वार्षिक उत्पादन साढ़े सात से ९ हजार टन के बीच होता है। कारखाने को गर्डरों, बिजली के खंभों, पानी की टंकियां, चिमनियों, मकानों के ढांचों और खम्भों आदि के बनाने के भी आर्डर मिलते रहते हैं।

यह कारखाना देश के और इस्पात कारखानों की भी सहायता करता है। देश में यही एक ऐसा कारखाना है जो फेरो सिलीकन नामक एक मिश्रित धातु बनाता है। यह मिश्रित धातु इस्पात बनाने में काम आती है। अभी तक इसका वार्षिक उत्पादन ५ हजार टन है। पर कारखाने की शक्ति अनुसार उत्पादन होने पर, न केवल इससे देश की सारी आवश्यकता पूरी होगी बल्कि इस्पात का निर्यात भी हो सकेगा। यहां पर लोहे की अन्य मिश्रित धातुएं (फेरो अलाय) जैसे फेरो क्रोम, फैरो मैंगनीज आदि बनाने के लिए भी यत्न किये जा रहे हैं।

आस पास चूने का पत्थर, मिट्टी और नदी की रेत प्रचुर मात्रा में मिलने के कारण मैसूर के इस्पात कारखाने ने सीमेंट बनाने का भी विचार किया और १९३८ से सीमेंट बनाना शुरू कर दिया। पहले पहल तो यहाँ प्रतिदिन ६० टन सीमेंट ही बनता था पर १९५२ से दैनिक उत्पादन २२५ टन हो गया है।

कारखाने के विस्तार के साथ मजदूरों के हित और कल्याण की ओर भी ध्यान दिया जाता है। पांच वर्ग मील के क्षेत्र में मजदूरों की एक बस्ती भी बसायी गयी है। कारखाने के ६ हजार कर्मचारियों में से आधे से अधिक इसी में रहते हैं। यहां ३१ रोगियों को रखने योग्य एक अस्पताल भी है, जहां कर्मचारियों की मुफ्त चिकित्सा होती है। इसके अलावा ६ प्रारम्भिक पाठशालाएं, दो मिडिल स्कूल और लड़के और लड़कियों के दो हाई स्कूल हैं। नौसिखियों के लिये एक औद्योगिक स्कूल भी है।

इन सुविधाओं के अलावा यहां कैंटीन, सहकार समितियां, वाचनालय, भजन मंदिर, महिला शिक्षा केन्द्र और खेलने के क्लब भी हैं।

बाइक्रोमेट उद्योग का संरक्षण जारी रहेगा

भारत सरकार ने टक्कर आयोग (टैरिफ कमीशन) की बाइक्रोमेट उद्योग को संरक्षण जारी रखने सम्बन्धी रिपोर्ट पर अपना निश्चय प्रकाशित कर दिया है।

सरकार ने टक्कर आयोग (टैरिफ कमीशन) की यह मुख्य सिफारिश मान ली है कि उद्योग को इस समय जो संरक्षण मिला हुआ है वह १ जनवरी,

१९५५ से चार वर्षों के लिये और आगे बढ़ा दिया जाय। संरक्षण शुल्क की दर वही रहेगी; जो इस समय है, अर्थात् मूल्य का ३१॥ प्रतिशत जिसमें सरचार्ज भी सम्मिलित है। संरक्षण का यह शुल्क मोम मिश्रणों तथा सोडियम व पोटाशियम बाइक्रोमेटों पर भी लिया जाता रहेगा।

सरकार ने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) की उद्योग को सहायता देने सम्बन्धी कुछ अन्य सिफारिशें भी मान ली हैं।

केन्द्रीय उद्योग सलाहकार परिषद्

भारत सरकार ने उद्योग (विकास और नियमन) अधिनियम १९५१ के अन्तर्गत नियुक्त की गई केन्द्रीय उद्योग सलाहकार परिषद् का पुनः संगठन कर दिया है। वाणिज्य और उद्योग मन्त्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी परिषद् के अध्यक्ष हैं और उसमें अनुसूचित उद्योगों के १२, इन उद्योगों में काम करने वालों के ५, उपभोक्ताओं के ५, और प्राथमिक उत्पादकों आदि के ५ प्रतिनिधि सदस्य रूप में रहेंगे। यह परिषद् पहले मई १९५२ में २ वर्षों के लिये बनाई गई थी।

अनुसूचित उद्योगों के प्रतिनिधि इस प्रकार हैं श्री बी० एम० बिड़ला, श्री जी० डी० बिड़ला, श्री कस्तूर भाई लाल भाई, श्री मुरारजी जे० वैद्य, श्री जे० सी० बर्न्स, श्री जी० एल० मेहता, लाला श्रीराम, श्री कस्तूरचन्द थापर।

काम करने वालों के प्रतिनिधि श्री एस० आर० वसावदा, श्री खण्डूभाई के देसाई, श्री माइकल जान, श्री एस० ए० डांगे और श्रीमती मणिबेन कारा।

उपभोक्ताओं के प्रतिनिधि पं० हृदयनाथ कुंजरू, श्री एन० कानूनगो, श्री विमल कुमार घोष, श्रीमती अनुसूया बाई काले, और श्री आर० वेंकटरमन।

प्राथमिक उत्पादकों आदि के प्रतिनिधि डा० जे० सी० घोष, श्री रामस्वामी मदलियार, श्री रावसाहब माधोराव देशमुख, श्री गुरु गोविन्द बसु, और श्री डी० एल० देशपाण्डे।

अप्रैल १९५४ में बिजली का उत्पादन

अप्रैल १९५४ में भारत के ६५१ बिजली घरों में कुल ६,०४६ लाख किलोवाट घण्टे बिजली उत्पन्न की गई, जिसमें से ५,०४४ लाख किलोवाट घण्टे उपभोक्ताओं को बेच दी गई। इन आंकड़ों में ३ नये बिजली घरों के उत्पादन भी सम्मिलित हैं जो आन्ध्र के चित्तूर में, बम्बई के कारवार नगर में और बिहार के सरकारी स्थान में है। मार्च की अपेक्षा इस मास का उत्पादन १६२ लाख किलोवाट घण्टे अधिक रहा।

अप्रैल १९५३ में बिजली के उत्पादन व बिक्री के आंकड़े क्रमशः ५,२५६ लाख किलोवाट घण्टे तथा ४,३८१ किलोवाट घण्टे और अप्रैल १९३९ में २,०४७ किलोवाट घण्टे तथा १,७२० किलोवाट घण्टे रहे थे।

जून में कोयले के उत्पादन में कुछ कमी

खानों के मुख्य निरीक्षक के अनुसार जून १९५४ में कोयले व कोक के उत्पादन तथा भारत की कोयले की खानों में दैनिक रूप से काम पर लगाये गये मजदूरों की औसत संख्या में सामान्य कमी रही।

आलोच्य मास में ८४६ कोयला-खानों में काम होता रहा, जबकि गत मास ८४८ खानों में होता रहा था।

कोयले का उत्पादन मई में ३६,७६,११४ टन से घटकर जून में ३८,८५,९८२ टन रह गया। खानों के कोक बनाने के कारखानों में तथा अन्य सख्त, मुलायम व अन्य किस्मों का ३,३६,२२५ टन कोक तैयार हुआ, जबकि मई में ३,३८,६४० टन कोक तैयार हुआ था।

जून में दैनिक रूप से काम करने वाले मजदूरों का औसत मई में ३,०४,०६२ से घटकर ३,२०,२६० रह गया। खनिकों तथा लादने वालों का प्रति टन वाली उत्पादन लगभग १०६ टन पर स्थिर रहा। अनुपस्थितों का प्रतिशत, मई में १३.४६ से घटकर जून में १३.३६ रह गया।

चीनी के नये कारखानों के लिये आवेदनपत्र

चीनी के नये कारखाने स्थापित करने अथवा पुरानों का विस्तार करने के लिए भारत सरकार के पास जो आवेदनपत्र आते हैं उन पर विचार करने के लिए लाइसेन्स समिति ने एक उपसमिति स्थापित की है। इसके सदस्य निम्न प्रकार हैं श्री बी० डी० सक्सेना, डिप्टी सेक्रेटरी, वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय, श्री टी० प्रसाद, विशेष पदाधिकारी (चीनी), खाद्य और कृषि मन्त्रालय, श्री जी० सी० भार्गव, चीनी अनुसन्धानशाला, कानपुर में चीनी इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर, श्री नन्दलाल दत्त, डाइरेक्टर, चीनी गवेषणा केन्द्र कोयम्बतूर और श्री के० पी० जैन, डिप्टी डाइरेक्टर (चीनी) खाद्य और कृषि मन्त्रालय।

राज्यों के आवेदनपत्रों पर विचार करते समय उपसमिति में राज्य सरकार के एक-दो प्रतिनिधि और ले लिये जायंगे। रेल प्रशासन का एक प्रतिनिधि भी आवश्यकतानुसार रखा जायगा।

गृह उद्योग

ग्रामोद्योगों का विकास

भारत सरकार ने छोटे दस्तकारी तथा ग्राम उद्योगों के विकास के लिये और भी अनुदान व ऋण देना स्वीकार किया है।

अखिल भारतीय खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड को १७ लाख रु० का ऋण दिया गया है। इस रकम में से ६ लाख रु० गांव के तेल उद्योग के विकास में तथा ८ लाख रु० धान को हाथ से कुटाई करने सम्बन्धी योजना को कार्यान्वित करने में लगाए जाएंगे।

गृहउद्योग के विकास के सिलसिले में, राजस्थान को एक चमड़ा कमाने का प्रदर्शन केन्द्र स्थापित करने के लिये २१,०४० रु० तथा सौराष्ट्र को विभिन्न गृहउद्योगों की प्रशिक्षण व्यवस्थाओं के लिये १२,००० रु० मिले हैं।

हाथ करघा उद्योग के विकास के लिये आन्ध्र को ३,११,०८६ रु० का अनुदान प्राप्त हुआ है। अनुदान की रकम का उपयोग अन्य कार्मो के अतिरिक्त डिजाइनें तैयार करने की फैक्टरियां खोलने तथा अच्छे उपकरण उपलब्ध करने में किया जायगा।

मद्रास को १,५०,००० रु० दिये गये हैं, जिसमें से आधी रकम अनुदान के रूप में तथा शेष आधी ऋण के रूप में दी गई है।

पश्चिमी बंगाल को ४५,००० रु० का अनुदान तथा २५,००० रु० का ऋण दिया गया है। अनुदान की रकम से अच्छे उपकरण खरीदे जायगे, जबकि ऋण का उपयोग उन कपड़ों को खरीदने में किया जायगा जो चलती फिरती गाड़ियों में बेचे जायगे।

मणिपुर को उसकी सहकारी समितियों की पूंजी के लिये ३०,००० रु० का ऋण दिया गया है।

आसाम को हथकरघे के कपड़े के विक्रय पर छूट देने के लिये २५,००० रु० का अनुदान प्राप्त हुआ है।

पेप्सू को १३,६५० रु० ऋण स्वरूप दिये गये हैं। इस रकम का उपयोग बुनकरों की चालू तथा नई सहकारी समितियों की पूंजी के रूप में किया जायगा।

मध्यप्रदेश को ५,३३० रु० का अनुदान मिला है। इस रकम से राज्य के हथकरघा उद्योग के विकास का आवर्तक व्यय चलाया जायगा।

गृह उद्योगों के विकास के लिये सहायता

भारत सरकार ने १० अगस्त, १९५४ को समाप्त दो सप्ताहों में करघा, खादी, ग्राम तथा गृह उद्योगों के विकास के लिए और अधिक अनुदान तथा ऋण देना मंजूर किया है।

आन्ध्र राज्य को उसके हाथ करघा उद्योग के विकास के लिए ६,७३,१२५ रु० का ऋण तथा गृह उद्योगों के विकास के लिए ३,००० रु० का अनुदान स्वीकार किया गया है। ऋण की रकम का उपयोग सहकारी समितियों में सम्मिलित होने वाले ६,५०० बुनकरों के लिए हिस्सा पूंजी लगाने के रूप में तथा इन समितियों की काम चलाऊ पूंजी के रूप में होगा। अनुदान की रकम सूत की कुटाई, तैयारी आदि का केन्द्र स्थापित करने में लगाई जायगी।

त्रिपुरा को २३,८५० रु० का अनुदान दिया गया है। इस रकम से २ रंगाई घर खोले जायगे तथा धागेवाले शटल के ८७५ करघा के बदले फ्लाई शटल करघे लगाए जायगे।

करघे के कपड़ा की बिक्री की दूकान खोलने के लिए पेप्सू को ७,८६८ रु० का अनुदान दिया गया है।

आसाम को ८३,२०० रु० प्राप्त हुए हैं जिसमें ७३,२०० रु० अनुदान के रूप में तथा शेष ऋण स्वरूप हैं। अनुदान की रकम का उपयोग ४ विक्रय-भंडार खोलने तथा २ चल फिर कर कपड़ा बेचने वाली गाड़ियां खरीदने में किया जायगा, जबकि ऋण का उपयोग इन गाड़ियों के लिए कपड़ा खरीदने में किया जायगा।

मध्यप्रदेश को १४,७५० रु० का अनुदान तथा १,५०० रु० का ऋण देना स्वीकार किया गया है। यह रकम लोहे की १,००० नलियें तथा बेक गार्ड लगे हुए १० करघे खरीदने में लगाई जायगी।

गृह उद्योगों का विकास करने के लिए पंजाब को ७६,०८७ रु० का अनुदान दिया गया है। इस रकम का उपयोग मुख्यतः इन उद्योगों से सम्बद्ध प्रशिक्षण या उत्पादन केन्द्र स्थापित करने में किया जायगा। चमड़ा पुनः कमाने तथा समापन का केन्द्र ५८,८८६ रु०, बांस की तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादन का प्रशिक्षण केन्द्र १०,०६८ रु०, ग्राम क्षेत्रों में जहां बिजली उपलब्ध है, लोहारी के काम का एक प्रशिक्षण केन्द्र ४,६१८ रु०, जूते तथा चमड़े के सामान बनाने का प्रशिक्षण उत्पादन केन्द्र ४,५८५ रुपये।

चमड़ा कमाने के उद्योग का विकास करने के लिए बम्बई को ४३,६८५ रु० का अनुदान दिया गया है। इसके अन्तर्गत चमड़ा कमाने की १४ प्रशिक्षण शालाए खोली जायगी।

उपर्युक्त राज्यों के अतिरिक्त हाथ करघा उद्योग के विकास के निमित्त अखिल भारतीय हाथ करघा बोर्ड को ४,२०,००० रु० की रकम दी गई है।

अखिल भारतीय खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड को विभिन्न प्रकार के गृह उद्योगों के विकास के लिए अनुदान तथा ऋण स्वीकार किया गया है। इसका विवरण इस प्रकार है :

(१) खादी उद्योग—इस उद्योग के विकास के लिए बोर्ड को २,३४,००० रु० देने की स्वीकृति दी गई है जिसमें १,५६,००० रु० अनुदान के रूप में तथा शेष ऋण के रूप में होगा। यह रकम गोदाम बनाने तथा बुनाई केन्द्रों में बुनकरों के परिवारों को फिर से बसाने के काम में लाई जायगी।

(२) हाथ से चावल कुटाई उद्योग—इस सम्बन्ध की एक योजना को कार्यान्वित करने के लिए बोर्ड को १,३१,००० रु० का अनुदान दिया गया है। यह रकम १,२०० कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने तथा प्रचार आदि के कामों पर लगाई जायगी।

(३) गुड़ तथा खाडसारी उद्योग—इस सम्बन्ध में बोर्ड को १,३५,००० रु० का ऋण दिया गया है, जो गोदाम बनवाने और गुड़ तथा खाडसारी के विकास पर होने वाले अतिरिक्त व्यय के लिए ६ केन्द्रों को कुछ और ऋण देने के काम में लाया जायगा।

(४) तेल उद्योग—गांव के इस उद्योग की एक योजना को कार्यान्वित करने के लिए बोर्ड को ७०,००० रु० अनुदान दिया गया है।

(५) मिट्टी के बर्तनों का उद्योग—इस उद्योग के विकास के लिए बोर्ड को २०,००० रु० का ऋण दिया गया है।

(६) ग्रामोद्योग—ग्रामोद्योग के विकास के व्यवस्थित कार्यक्रम के निमित्त १५,००० रु० का अनुदान दिया गया है।

(७) चमड़ा उद्योग—गांव के इस उद्योग के विकास के लिये बोर्ड को २,०७,६०० रु० दिये गये हैं, जिनमें ७७,००० रु० ऋण के रूप

मे हैं। यह रकम ६० शिक्षार्थियों का खर्च पूरा करने तथा ७ आदर्श चर्मशालाएं खोलने आदि पर लगाई जायगी।

(८) मधुमक्खी पालन उद्योग—इसके विकास के लिए बोर्ड को १,३५,००० रु० का अनुदान दिया गया है। इस रकम से मधुमक्खी पालन के २५ आदर्श केन्द्र तथा ५० उपकेन्द्र खोले जायंगे। इनके अतिरिक्त इससे कुछ व्यक्तियों को प्रशिक्षण भी दिया जायगा।

व्यापार की उन्नति

भारत और इटली का व्यापार

भारत और इटली की सरकारों के बीच जो व्यापार सम्बन्धी बातचीत चल रही थी उसके फलस्वरूप २६ जुलाई, ५४ को नई दिल्ली में, दोनों सरकारों के प्रतिनिधियों के मध्य एक व्यापार व्यवस्था हो गई। यह व्यवस्था तत्काल ही अमल में आ चुकी है और ३१ दिसम्बर, १६५५ तक लागू रहेगी। इस व्यापार व्यवस्था में जो अनुसूचियां लगाई गई हैं उन पर १६५५ के आरम्भ में पुनर्विचार किया जा सकेगा।

व्यापार में उन्नति करने के उद्देश्य से दोनों देशों ने एक दूसरे के साथ वही व्यवहार करना स्वीकार किया है जो वे उसी मुद्रा-वर्ग के अन्य देशों के साथ करते हैं।

भारत से इटली को जो वस्तुएं भेजी जा सकेंगी उनमें कुछ महत्वपूर्ण ये हैं :—चाय, तम्बाकू, कोयला, खनिज जैसे खनिज लोहक, क्यानाइट खनिज, क्रोम खनिज (ऊंची श्रेणियों के अतिरिक्त) व बाक्साइट, लाख व चमड़ा, बकरे व भेड़ की कच्ची खालें, वनस्पति उड़नशील तेल, रूई—कच्ची व रद्दी, रेशम रद्दी, कुछ दवाइयां व औषधियां, तारपीन, चमड़े के जूते, कालीन, नारियल की जटा और उसकी सुतली तथा उससे बनी वस्तुएं, कच्चे बाल, खेल का सामान (थरमास फ्लास्क के अतिरिक्त), लिनोलियम, कार्डिंग इंजन, खेल के सामान, दस्तकारी की वस्तुएं तथा भारतीय फिल्में।

इटली से भारत को जो वस्तुएं भेजी जा सकेंगी, उनमें कुछ ये हैं:—मिठाई, सुरक्षित खाद्य, नकली रेशमी सूत व वस्त्र, बिसाती का सामान, अल्यूमीनियम व उसके मिश्रित पदार्थ, मैगनीशियम के मिश्रित पदार्थ व सम्बद्ध वस्तुएं, रेल के इंजन डिब्बे, बाल व रोलर बेयरिंग, खेती के यंत्र तथा कई प्रकार के औद्योगिक व बिजली के यंत्र, टाइप राइटर, हिसाब किताब करने की मशीनें, मशीनी औजार, औद्योगिक भट्टियां सिनेमा चित्र, प्रदर्शन के यंत्र, उपकरणादि फोटो खींचने के कैमरे चित्रों की फिल्में एक्सरे ट्यूब, गंधक—कच्ची व शोधित, रंग और आग बुझाने के यंत्र उपकरणादि।

दोनों सरकारों द्वारा एक दूसरे को निम्न प्रकार की सुविधायें देना भी स्वीकार किया गया है:—

(१) एक दूसरे के जहाजों को बिना पक्षपात की नीति बरते, वही सुविधाएं देना जो वे अन्य देशों के जहाजों को देते हैं।

(२) दोनों देशों की हवाई लाइनों की उन्नति के लिये माल व यात्रियों के परिवहन को प्रोत्साहित करना।

(३) दोनों देशों के बीच आर्थिक तथा औद्योगिक सहयोग घनिष्ठतर करना।

सीमाशुल्क तथा व्यापारिक सामान्य समझौता

अप्रैल व मई १६५४ में भारत सरकार ने जेनेवा में सीमाशुल्क तथा व्यापार सम्बन्धी सामान्य समझौते (General Agreement of Tariffs and Trade) के तत्वावधान में बातचीत की थी जिसका उद्देश्य कुछ ऐसी वस्तुओं पर आयात शुल्क बढ़ाने की छूट प्राप्त करना था जिन पर पहले और अधिक शुल्क न बढ़ाया जाना तय हुआ था। यह बातचीत विशेषतः उन देशों के प्रतिनिधियों के साथ की गई जिन्हें या तो पहले रियायतें दी गई थीं या जो सम्बद्ध वस्तुओं को भारत भेजना चाहते थे।

उपर्युक्त बातचीत के फलस्वरूप भारत को निम्न वस्तुओं पर आयात शुल्क बढ़ाने की छूट मिल गई है :—

(क) तारकोल के रंग, जो भारतीय सीमाशुल्क मद नं० ३०७३ में सम्मिलित हैं।

(ख) रेजर ब्लेड।

(ग) कांच के मनके व नकली मोती, और

(घ) शराबें जिनमें प्रूफ स्पिरिट ४२ प्रतिशत से अधिक न हो।

(१) शैम्पेन तथा अन्य चमकदार शराबें, और

(२) अन्य प्रकार की शराबें।

उपर्युक्त शुल्क बढ़ाने की सुविधा के बदले भारत ने भी निम्न वस्तुओं पर शुल्क कम करना स्वीकार कर लिया है :—

(क) प्लास्टिक के कुछ कच्चे माल जैसे, सेल्यूलोस प्लास्टिक (सेल्यूलोस एसीटेट, विनाइल रेजिन तथा स्टीरिन को छोड़कर)

(ख) निम्न कच्चे माल जो छोटे औजारों को बनाने के काम आते हैं।

(१) कठोर इस्पात जिसमें १३ प्रतिशत से अधिक टंगस्टन (Tungsten) न हो।

(२) विशेष मिश्रित इस्पात जिसमें, इनमें से कोई एक वस्तु हो।

(क) ●६० प्रतिशत या अधिक क्रोमियम व निकल।

(ख) ०.६० प्रतिशत या अधिक उपधातु (Molybdenum) टंगस्टन या वेनेडियम।

इसके अतिरिक्त भारत ने निम्न वस्तुओं पर आयात शुल्क यथावत् रखना भी स्वीकार किया है। एन्टी बायोटिक औषधियां, सुनने के यंत्र (बिजली के) धातु की फ्रेमों के टाइप तथा दूध की खाद्य वस्तुएं।

चीन भारतीय तम्बाकू खरीदेगा

भारत के वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय मे प्राप्त सूचना के अनुसार चीन भारत से उसकी १९५३ की फसल की २,००० टन (मीट्रिक) तम्बाकू खरीदेगा। यह सौदा सरकार की ओर से सुदूर पूर्व के देशों को भेजे गये भारतीय तम्बाकू प्रतिनिधि मण्डल द्वारा किया गया है।

वाणिज्य व्यवसाय

समुद्र तथा वायु मार्गो द्वारा भारत का विदेशी व्यापार

जून १९५४

जून १९५४ मे निजी तथा सरकारी साधनो से समुद्र और वायु मार्गों द्वारा हुए विदेशी व्यापार के अन्तर कालीन आकडे नीचे दिये गये हैं। ये आकडे कलकत्ते के व्यापारिक जानकारी और सांख्यकी विभाग मे उपलब्ध सामग्री के आधार पर तैयार किये गये है।

व्यापारिक माल—

इनमे पाकिस्तान होकर हुआ संक्रमण व्यापार सम्मिलित नहीं है, परन्तु स्थल सीमा से लगे अन्य देशों से हुआ व्यापार शामिल है —

निर्यात	४,१८८ लाख रु०
पुनर्निर्यात	४३ लाख रु० (संक्रमण व्यापार ५ लाख रु०)
आयात ..	४,३७८ लाख रु० (संक्रमण व्यापार नगण्य)
कुल व्यापार .	८,६०९ लाख रु०

कोष—

निर्या०—	
करेंसी नोटों का निर्यात (पुनर्निर्यात सहित) ...	४ लाख रु०
अन्य	शून्य
आयात—	
सोने का आयात .	२ लाख रु०
करेंसी नोटो का आयात .	९८ लाख रु०
अन्य	शून्य

व्यापार सन्तुलन—

आयात किये गये व्यापारी माल मे ऐसे सरकारी माल का मूल्य शामिल नहीं किया गया है जिसका समायोजन होना शेष है। आयात के आकडो से इस मूल्य के अलग रहने और संक्रमण व्यापारी माल शामिल न करने के पश्चात् निर्यात किये गये व्यापारी माल (जिसमे पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है) सोने और चादी का कुल मूल्य, आयात किये गये माल से १५४ लाख रु० कम रहा।

व्यापार नियन्त्रण

मूंगफली के तेल का निर्यात

इस वर्ष के आरम्भ में मूंगफली के तेल का मूल्य बराबर गिरता रहा है। अब अधिकाश बाजारो मे यह लगभग १,२०० रु० प्रति टन पर स्थिर हो गया है। दक्षिण भारत के कुछ भागों मे, ये मूल्य और भी गिरते प्रतीत होते हैं।

उत्पादकों तथा व्यापारियों के पास बडी मात्रा मे मूंगफली तथा कहीं कहीं मूंगफली के तेल का स्टाक पडा हुआ है। इसलिये और भी मूल्य गिर जाने की सम्भावना हैं। सरकार वर्तमान स्तरों पर मूल्यों को स्थिर रखने के पक्ष में है और यह नहीं चाहती कि मूल्य और अधिक गिर जाय। इसी उद्देश्य से यह निश्चय किया गया है कि पुराने निर्यातकों द्वारा मूंगफली के तेल का थोडे परिमाण में निर्यात करने की स्वीकृति दी जाय प्रति टन ३५० रु० निर्यात शुल्क लगाने से, मूल्यो को वर्तमान स्तर पर स्थिर करने का विचार है।

निर्यात के कोटे बन्दरगाहो पर लाइसेन्स अधिकारियो द्वारा पुराने निर्यातकों को दिये जायगे। ये कोटे उन्हे उनके सर्वोत्तम वर्ष के निर्यात के आधार पर दिये जायगे। ये १९४८ ४९, १९४९ ५०, १९५०-५१, १९५१ ५२ इन चार वर्षों मे से किसी भी एक वर्ष में, जो उन्होंने पहले ही चुन लिया है, उनके द्वारा हुए निर्यात का १५ प्र० श० होंगे। परन्तु ये प्रति निर्यातक के लिए अधिक से अधिक ४०० टन और कम से कम ५ टन के लिये होगे। इन कोटो के अनुसार अक्तूबर १९५४ के अन्त तक निर्यात किया जा सकेगा।

इसके साथ ही प्रकाशित की गई अन्य विज्ञप्ति द्वारा सरकार ने ३५० रु० प्रति टन (२,२४० पोंड का एक टन) निर्यात शुल्क लगा दिया है।

चाय के निर्यात का कोटा

अप्रैल के प्रथम सप्ताह मे, ३,९५९ लाख पौंड चाय, जो भारत के प्रतिमानित निर्यात कोटे का १०५ प्र० श० है, निर्यात करने के लिये दी गई, जबकि अधिक से अधिक १३५ प्र० श० निर्यात की जा सकती है। हाल मे चाय के निर्यात कोटा के मूल्य मे असाधारण वृद्धि हो जाने से, भारत सरकार ने १५ प्र० श० तक और भी चाय निर्यात के लिये दे देने का निश्चय किया है। इससे निर्यात का कुल परिमाण बढ़कर ४,१७९ लाख पौंड हो जायगा।

रुई का अगाऊ व्यापार

भारत सरकार रुई के अगाऊ सौदों का अगाऊ व्यापार (नियमन) अधिनियम, १९५२ [Forward Contracts (Regulation) Act, 1952] के अन्तर्गत नियमन करने के प्रश्न पर विचार कर रही थी। सावधानी के साथ विवेचन के पश्चात् तथा अगाऊ बाजार आयोग (Forward Markets Commission) की सिफारिशों के आधार

पर, यह निश्चय किया गया है कि यह अधिनियम तत्काल ही भारतीय रुई पर लागू किया जाय। भारत सरकार के ३० जुलाई, १९५४ के असाधारण गजट में एक सूचना प्रकाशित हुई है जिसके अनुसार इस अधिनियम की धारा १५ को समस्त देश में भारतीय रुई पर लागू कर दिया गया है।

इस विज्ञप्ति के अनुसार मान्य संस्थाओं के सदस्यों या किसी सदस्य के द्वारा किये गए सौदों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के अग्रिम सौदे अवैध माने जायेंगे।

इस सूचना के परिणामस्वरूप बम्बई अग्रिम व्यापार नियन्त्रण अधिनियम १९४७ की वे धाराएं जो भारतीय रुई से सम्बन्ध रखती थीं अब रद्द हो जायेंगी। अग्रिम सौदे (नियमन) अधिनियम की धारा २६ के अनुसार बम्बई सरकार द्वारा ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसियेशन लि० बम्बई को दी गई मान्यता तब तक यथावत बनी रहेगी जबतक कि इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा अग्रिम सौदे (नियमन) अधिनियम के अन्तर्गत उचित कार्यवाही नहीं कर दी जायगी।

चावल की चोकर का निर्यात

भारत सरकार ने चावल की चोकर विदेशों को निर्यात करने सम्बन्धी नीति पर पुनर्विचार किया है तथा विशेष उद्देश्य के आधार पर, एक सीमित कोटे में उसका निर्यात करने की अनुमति देने का निश्चय किया है। इस सम्बन्ध में कोटे की सीमा तथा लाइसेन्स प्रणाली आदि का विस्तृत विवरण निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों द्वारा बन्दरगाहों पर तथा राजकोट में सूचित किया जा रहा है।

तम्बाकू के निर्यात में सुविधा

भारत सरकार को बताया गया है कि कई देशों को भारतीय तम्बाकू का निर्यात करने की बड़ी गुंजाइश है, लेकिन विदेशी मुद्रा व भुगतान सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण विदेशों के व्यापारी भारत की यह तम्बाकू वस्तुतः नहीं मंगा पाते हैं। जो विदेशी कम्पनियां या व्यापारी भारत की यह तम्बाकू आयात करना चाहते हैं उनका कहना है कि उसके मूल्य का भुगतान वे भारत को अधिक माल भेजकर करना चाहते हैं, जिसकी सुविधा उन्हें नहीं है।

अतएव, भारतीय तम्बाकू का निर्यात बढ़ाने और विदेशी व्यापारियों की तत्सम्बन्धी भुगतान कठिनाइयां दूर करने के लिए भारत सरकार ने 'निर्यात प्रोत्साहन योजना' को ध्यान में रखकर कुछ शर्तों के साथ तदर्थ आयात लाइसेंस' मंजूर करने का निश्चय किया है। शर्तें ये हैं :—(१) भारत में जिस चीज का आयात करना है, वह सरकार की आयात सम्बन्धी उदार नीति के अन्दर आता हो (२) जिस देश से बदले में माल मंगाना है, उसे भारत से तम्बाकू मंगाने में भुगतान सम्बन्धी दिक्कतें हों, और (३) उपर्युक्त आवेदक सरकार को लिखित प्रमाण दे सके कि निश्चित किस्मों की भारतीय तम्बाकू की खरीद के लिए सम्बन्धित देश के व्यापारी से उसका सौदा पक्का हो चुका है।

ऊपर की शर्तें पूरी होने पर, पहले अस्थायी आयात लाइसेंस दिये जायेंगे। बाद में जब यह प्रमाणित हो जायगा कि तम्बाकू उस विदेश को भेज दी गयी, तब इन अस्थायी आयात-लाइसेंसों की पुष्टि कर दी जायगी।

यदि तम्बाकू का निर्यात पहले करने में वास्तविक अड़चनें हैं, और भारतीय व्यापारी तम्बाकू के बदले विदेश से सामान पहले मंगाना चाहता है तो उसे लाइसेंस अधिकारी को यह प्रमाण देना होगा कि निश्चित किस्मों की भारतीय तम्बाकू के निर्यात करने के लिये सम्बद्ध देश से जहां से बदले में वह माल मंगा रहा है, उसका सौदा पक्का हो चुका है। आयात लाइसेंस की पुष्टि किये जाने पर, ऐसे लाइसेंस से माल छुड़ाया जा सकेगा। लेकिन इस सम्बन्ध में व्यापारी को सम्बद्ध बन्दरगाहों पर आयात नियन्त्रण अधिकारियों के साथ इस आशय का एक बन्धक-(Bond) भरना आवश्यक होगा कि आयात लाइसेंसों के दिये जाने से चार महीनों के भीतर तम्बाकू का निर्यात किया जायगा। इस बन्धक का दायित्व किसी बैंक पर होगा जो आयात लाइसेंस के २० प्र० श० मूल्य के लिये उत्तरदायी होगा। लाइसेंस प्राप्तकर्ता द्वारा निर्धारित अवधि में सम्बद्ध व्यापार नियन्त्रण अधिकारी को तम्बाकू के वास्तविक निर्यात करने का प्रमाण न दिये जाने पर, उपर्युक्त रकम सरकार द्वारा जब्त की जा सकेगी।

तम्बाकू के निर्यात का आवश्यक प्रमाण देने पर बन्धक रद्द कर दिया जायगा। साथ में खाद्य व कृषि मन्त्रालय, के प्रमुख तम्बाकू अधिकारी का यह प्रमाण पत्र भी होना चाहिये कि भेजा गया तम्बाकू का माल निश्चित किस्मों तथा १९५४ से पूर्व की फसल का था।

प्याज का निर्यात

भारत सरकार ने जुलाई दिसम्बर १९५४ के लिये बम्बई व सौराष्ट्र के राज्यों से प्याज का निर्यात करने के कोटे दे दिये हैं। इस सम्बन्ध में लाइसेंस प्रणाली का विवरण निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों द्वारा बम्बई तथा राजकोट में सूचित किया जा रहा है।

चावल का निर्यात

भारत सरकार ने केवल बम्बई व कलकत्ता के बन्दरगाहों से कुछ परिमाण में चावल का निर्यात करने की अनुमति देने का निश्चय किया है। इसके लिये लाइसेंस उन सौदों की बुनियाद पर दिये जायेंगे जिन्हें निर्यातक विदेशी खरीदारों के साथ सौदा करने के बाद ४८ घण्टे के भीतर सम्बद्ध निर्यात व्यापार कन्ट्रोलर के यहां दर्ज करा देगा। माल भेजने की अनुमति दिसम्बर १९५४ के अंत तक होगी। निर्यातकों के लिये यह आवश्यक होगा कि वे सम्बद्ध कस्टम कलक्टर को किसी मान्य मजिस्ट्रेट या चेम्बर आफ कामर्स से इस आशय का प्रमाण पत्र प्राप्त कर प्रस्तुत करें कि भेजा जानेवाला माल खरीदार व बेचने वाले के बीच हुए सौदे के अनुसार है।

साथ ही में एक अन्य विज्ञप्ति भी जारी की गई है जिसके अनुसार सरकार ने चावल और धान (जिसमें चावल का आटा सम्मिलित है किन्तु उसकी चोकर व भूसी नहीं) पर ८ आने ८ पाई प्रतिमन (८२॥ पौंड का) की दर से लगने वाले वर्तमान निर्यात शुल्क की दर में संशोधन कर दिया है। संशोधित निर्यात शुल्क मूल्य का २० प्रतिशत होगा।

नकली रेशमी धागे का आयात

३० मई, १९५४ को घोषित की गई नकली रेशमी धागे की जुलाई से दिसम्बर १९५४ तक की अवधि की आयात नीति में बताया गया था कि जिन व्यक्तियों के पास नकली रेशमी धागे के आयात लाइसेंस हैं वे इनमें अधिक से अधिक १५ प्रतिशत मूल्य तक से हा १२० डेनियर का चमकीला रेशमी धागा और अधिक से अधिक ५ प्रतिशत मूल्य तक से हो १५० डेनियर का चमकीला रेशमी धागा मगा सकेंगे। इन डेनियरों के धागे की कमी देखकर अब १२० डेनियर के आयात की सीमा २५ प्रतिशत और १५० डेनियर का १० प्रतिशत कर देने का निश्चय किया गया है। चालू अवधि के लिये पहले जो लाइसेंस जारी किये जा चुके हैं उन पर भी प्रतिशत की यह वृद्धि लागू होगी।

रूई का नियन्त्रण जारी रहेगा

भारत सरकार ने सितम्बर १९५४ से अगस्त १९५५ तक के मौसम में भी रूई का नियन्त्रण जारी रखने का निश्चय किया है। विभिन्न प्रकार की रूई के अधिकतम और न्यूनतम मूल्य निश्चित किये जाते रहेंगे। अनेक तथ्यों पर विचार करके भारत सरकार ने न्यूनतम मूल्य में ५५ रु० प्रति कैन्डी कमी कर देने का निश्चय किया है। जुलाई १९५२ से पूर्व भी यही न्यूनतम भाव था। इस प्रकार २५ ३२ इंची रेशेवाली जरीला किस्म की रूई का न्यूनतम मूल्य ४६५ रु० प्रति कैन्डी होगा। अन्य किस्मों के न्यूनतम मूल्य भी इसी प्रकार घटा दिये जायेंगे। अधिकतम मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

मिलों के लिये कोटा निश्चित करने की प्रणाली भी जारी रहेगी। चूंकि बहुत से मिलों ने १९५३-५४ की फसल में से निर्धारित अपना कोटा खपा डाला है अत: मिलों को उनके कोटे की २५ प्रतिशत और रूई तत्काल देने का निश्चय किया गया है। मिलों को रूई देने के लिए देश को उत्तर और दक्षिणी दो क्षेत्रों में अब तक विभाजित किया गया था। परन्तु अब यह विभाजन दूर कर दिया गया है। अब मिल जहां से भी चाहे अपने लिये रूई खरीद सकेंगे।

भारत सरकार ने १९५४-५५ की फसल के विषय में अगाऊ व्यापार करने की अनुमति देने का भी निश्चय किया है। फरवरी १९५५ के सौदे अगस्त १९५४ के सौदों के साथ ही हो सकेंगे। सट्टेबाजी को रोकने के लिये कानून में संशोधन करने के लिए विचार हो रहा है।

बंगाल देशी रूई का अब इस मौसम में और निर्यात करने की अनुमति नहीं दी जायगी। धोलेरा और मथिया किस्मों की रूई के निर्यात की अवधि ३० सितम्बर १९५४ से बढ़ा कर ३१ दिसम्बर १९५४ कर दी गई है।

वैज्ञानिक गवेषणा

चमड़े का गत्ता

मद्रास की केन्द्रीय चमड़ा गवेषणशाला ने क्रोम की छीलनों से चमड़े का गत्ता तैयार किया है।

चमड़े की छीलनों को पीस कर किसी चिपकने पदार्थ में मिला दिया जाता है और फिर उसे दबाकर वांछनीय आकार का गत्ता बना लिया जाता है। इसके लिये स्टार्च डैक्सट्रिन (गेहूँ के सत से निकलने वाला पदार्थ) और केसीन (दूध से तैयार होने वाला पदार्थ) से तैयार किये गये कई सस्ते चिपकाने वाले पदार्थों का प्रयोग किया गया है और वे सतोषजनक पाये गये हैं। लैटेक्स इमलशन को भी चिपकाने के काम में लाने पर उत्साह वर्द्धक परिणाम निकले हैं। इस सम्बन्ध में अभी और भी खोज हो रही है।

हाल में ही गवेषणशाला ने, रंगने के कुछ उपयुक्त पदार्थ, जो इस समय बाहर से मंगाये जाते हैं, बनाने के लिये जांच आरम्भ की है। ऐसे कई पदार्थ तैयार किये जा चुके हैं और इन्हें परीक्षण कर के व्यापारियों ने अच्छा बताया है। चमड़े के कारखाना में परीक्षण के लिये इन्हें अधिक बड़े परिमाण पर तैयार करने का प्रस्ताव है।

पायरेथ्रम का सत

हाल ही में जम्मू की औषधि गवेषणा शाला में गुलदाउदी जिसे अंग्रेजी में पायरेथ्रम कहते हैं, के फूलों से घनीभूत सत तैयार करने की विधि निकालने के सम्बन्ध में गवेषणा की गई है। इन फूलों से व्यावसायिक उपयोग के कई आवश्यक पदार्थ बनाये जा सकते हैं।

पायरेथ्रम के फूलों से कई प्रकार के कीटनाशक पदार्थ तैयार किये जाते हैं जो खेती, पशुचिकित्सा तथा घरेलू कामों के लिये बड़े उपयोगी होते हैं। अब इन फूलों की खेती जम्मू व काश्मीर राज्य में व्यवस्थित ढंग से की जा रही है और आशा है कि निकट भविष्य में ये फूल अधिक परिमाण में उपलब्ध हो सकेंगे जिससे अधिक मात्रा में कीटनाशक पदार्थ तैयार किये जा सकें।

गवेषणशाला में ऐसे सत भी तैयार किये गये हैं जिनमें पायरेथ्रीन (फूल का सक्रिय अंश) की मात्रा १५ २० प्रतिशत हो। इस सत से मच्छरों को मारने वाला एक प्रकार की क्रीम या मरहम भी तैयार की गई है जिसमें पायरेथ्रीन की मात्रा ०.२ प्र० श० होती है। इस मरहम को खुले शरीर पर लगा देने से मच्छर चार पांच घंटे पास तक नहीं फटकते।

विटामिन मिला मूंगफली का तेल

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक गवेषणा परिषद की सहायता से कलकत्ता विश्वविद्यालय में अभी हाल में विटामिन 'ए' मिले तेलों के बारे में जांच की गई है।

अब यह मान लिया गया है कि तरह तरह के खाद्यों और खाद्य पदार्थों में विटामिन 'ए' मिलाया जाय तो इससे इनके पोषक तत्व बढ़

यथाशीघ्र सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी।

इस सम्बन्ध में भारत सरकार के वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय ने विचार किया कि मशीनों का प्रयोग करने से फैलनेवाली बेरोजगारी को किस प्रकार रोका जा सकता है। मशीनों के कारण पर्याप्त गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है। जिस पर शीघ्र विचार करने की आवश्यकता है।

बीड़ी उद्योग में मशीनों को बढ़ावा न देने तथा इसकी जीविका देने सम्बन्धी क्षमता को बनाये रखने की नीति के अनुसार ३० जुलाई, १९५४ को केन्द्रीय उत्पादन कर व नमक (संशोधन) अध्यादेश, १९५४ जारी किया गया। इस अध्यादेश के अनुसार जिन बीड़ियों को बनाने में किसी शक्तिचालित या बिना शक्तिचालित मशीनों की सहायता लेनी पड़ती है, उन पर ३ रु० प्रति हजार के दर से उत्पादन-कर लिया जायगा। यह कर उपर्युक्त विधि से बनाई गई बीड़ियों के उन स्टाकों पर भी लिया जायगा जो अध्यादेश के जारी किये जाने पर मौजूद थे।

ग्राम क्षेत्रों में छोटी बचत का आन्दोलन

ग्राम्य क्षेत्रों में लोगों को छोटी-मोटी रकमें बचाने को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ने हाल में ही कई नयी योजनाएं चालू की हैं। इनके अन्तर्गत गांवों के गण्य-मान्य लोगों तथा ग्राम-पंचायतों को बारह-साला नैशनल सेविंग्स सार्टिफिकेटों के बिक्री करने के अधिकार दिये गये हैं। ये योजनाएं पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और सौराष्ट्र में क्रियान्वित भी की जाने लगी हैं। इन योजनाओं के द्वारा छोटी-बचत आन्दोलन को ग्राम्य क्षेत्रों में भी फैलाने का आयोजन किया गया है। अब तक आन्दोलन का अधिक जोर शहरी क्षेत्रों में ही था यद्यपि १९५२ में इस दिशा में थोड़ा-बहुत प्रयास हुआ था।

पश्चिमी बंगाल में यह योजना पिछले साल अगस्त में केवल दो जिलों में चालू की गयी थी, पर अब सब राज्य में चालू है। इसके अनुसार यूनियन-बोर्ड का अध्यक्ष या ग्राम्य म्युनिसिपल्टी का सभापति सर्टिफिकेटों की बिक्री के लिए अधिकृत एजेंट नियुक्त किया जा सकेगा और बिक्री पर उसे १।) प्र० श० का कमीशन मिलेगा।

मध्य प्रदेश में, ग्राम-पंचायतें नैशनल सेविंग सर्टिफिकेट बेचने के लिए एजेंट का काम करेंगी। उन्हें जो कमीशन मिलेगा, वह पंचायत की आमदनी के खाते में दर्ज होगा। ऐसी ही योजना सौराष्ट्र में भी, पिछले अप्रैल के महीने में, २१ महीने के लिए चालू की गयी थी। मध्य प्रदेश में कुल १०० और सौराष्ट्र में कुल ५०० ग्राम-पंचायतों को एजेंट बनाने की योजना है।

उत्तर प्रदेश में जो योजना चलायी गयी है, उसके अनुसार राज्यीय विधान मंडल के सदस्यों और कानूनगो व लेखापाल (पटवारी) जैसे सरकारी कर्मचारियों को छोटी बचतों की रकमें इकट्ठी करने के लिए एजेंट के अधिकार दिये गये हैं।

इन योजनाओं के अतिरिक्त, एजेंसी देने की साधारण व्यवस्था के अन्तर्गत भी ग्राम्य क्षेत्रों के लिए एजेंट नियुक्त किये जा सकते हैं। यह व्यवस्था मैसूर, हैदराबाद, मणिपुरा, त्रिपुरा और बिलासपुर के सिवा अन्य सभी राज्यों में चालू है। इसके अंतर्गत एजेंटों की संख्या के बारे में कोई सीमा नहीं है और न नियुक्ति की अवधि के ही बारे में। एजेंट को दो हजार रु० की जमानत देनी होती है, जो नैशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटों या ट्रेजरी सेविंग्स डिपाजिट सर्टिफिकेटों के रूप में होनी चाहिए।

जो 'एक्स्ट्रा डिपार्टमेंट ब्रांच पोस्टमास्टर' छोटी बचतों के काम में सहायता देना चाहें, वे भी एजेंट नियुक्त किये जा सकते हैं। उन्हें नैशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटों के रूप में १०० रु० की जमानत देनी होगी, और सर्टिफिकेट सरकार के पास बंधक रख देने होंगे। इन्हें भी १।) प्र० श० का कमीशन मिलेगा।

लगभग ७० हजार व्यक्तियोंने योजना सर्टिफिकेट खरीदे

भारत सरकार के राष्ट्रीय बचत आयुक्त (नैशनल सेविंग्स कमिश्नर) को प्राप्त सूचनाओं के अनुसार जुलाई, १९५४ के अन्त तक लगभग ७० हजार व्यक्तियों ने राष्ट्रीय योजना सार्टिफिकेट खरीदे। उक्त तिथि तक इनसे लगभग १ करोड़ ५३ लाख रु० की रकम इकट्ठी हुई है।

१० मई, १९५४ को इन सार्टिफिकेटों की बिक्री खुली थी। अभी हाल में इकट्ठी हुई कुल रकमों का ब्यौरा इस प्रकार है :—

खरीद की अवधि	रकम	खरीददारों की संख्या
३ जुलाई, १९५४ तक	८७ लाख रु०	३४,७४६
१७ जुलाई, १९५४ तक	११८ लाख ६६ हजार रु०	५२,६२२
३१ जुलाई, १९५४ तक	१५२ लाख ८६ हजार रु०	६६,६६१

ये सर्टिफिकेट कम से कम २५ रु० के खरीदे जा सकते हैं और १० वर्ष की मियाद पूजने पर इन पर साढ़े चार प्र० श० के हिसाब से ब्याज भी दिया जायगा। पंचवर्षीय योजना के लिए धन जुटाने के निमित्त सरकार ने जो राष्ट्रीय योजना ऋण जारी किया था, ये सर्टिफिकेट उसके पूरक हैं। जुलाई के अन्त तक ऋण में कुल १ अरब २५ करोड़ ५ लाख रु० की रकम इकट्ठी हुई।

छोटी बचत

मई और जून १९५४ में पोस्ट आफिस सेविंग्स बैंक, डिफेन्स सेविंग्स बैंक, पोस्ट आफिस कैश सर्टिफिकेटों, १० वर्षीय डिफेन्स सेविंग्स सर्टिफिकेटों, नैशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटों और १० वर्षीय राष्ट्रीय योजना सर्टिफिकेटों में जो धन लगाया गया है उसका योग क्रमशः ८०.४ लाख और २७० लाख रु० है।

सीमाशुल्क और उत्पादन कर से आय

मई १९५४

व्यापारिक जानकारी और सांख्यकी विभाग (Department of Commercial Intelligence and Statistics) में प्राप्त हुए आंकड़ों के अनुसार मई १९५४ में भारत को समुद्र तथा स्थल

पा रहे थे। इनमें ४३५ स्त्रियां और २९४ विस्थापित थे। इनके अतिरिक्त कोनी बिलासपुर की केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्था में १०६ उम्मेदवार शिक्षक व उत्तर प्रदेश व पश्चिमी बंगाल में विस्थापितों के लिये "उम्मेदवार शिक्षण योजना" के अन्तर्गत ६४० उम्मेदवार शिक्षार्थी प्रशिक्षण पा रहे थे।

मई १९५४ में औद्योगिक झगड़ों में कमी

मई १९५४ के औद्योगिक झगड़ों के अस्थायी आंकड़ों से पता चलता है कि गतमास की अपेक्षा इस महीने इन झगड़ों की संख्या कम रही, परन्तु इनमें शामिल होने वाले मजदूरों तथा जन दिनों की हानि की संख्या अधिक हो गई। इस महीने कुल ७८ झगड़े हुए, जिनमें ३६,९११ मजदूरों ने भाग लिया और २,१२,३६९ जन दिनों की हानि हुई। इन झगड़ों का औसत अवधि ५.३ दिन रही, जबकि अप्रैल १९५४ का औसत ५.६ दिन रहा था।

छः झगड़ों में तालाबन्दी की नौबत आयी, जिनका ५,४११ मजदूरों पर प्रभाव पड़ा। इनमें ७५,५१६ जन दिनों की हानि हुई। इनमें ४ पश्चिमी बंगाल में और शेष बम्बई में हुए।

हड़तालों और तालाबन्दियों के अतिरिक्त ऐसे ५ मामलों में तालाबन्दी हुई, जिनको औद्योगिक झगड़े नहीं कहा जा सकता। इनमें ६,६४६ मजदूरों ने भाग लिया और ८,२११ जन-दिनों की हानि हुई। ये सब मामले बम्बई में हुए।

इस मास ५६ झगड़े समाप्त हुए जिनमें २३ झगड़े ५ दिन से अधिक नहीं चले। २६ झगड़ों का मुख्य कारण मजदूरी, भत्ता और बोनस था और ३० झगड़ों का कारण अधिकारियों के सम्बन्ध में शिकायतें था। १९ झगड़ों में मजदूरों को पूर्ण या आंशिक सफलता मिली और १६ में वे असफल रहे। १८ झगड़ों का परिणाम अनिश्चित रहा और १० के सम्बन्ध में अभी परिणाम का पता नहीं चल सका है।

इस मास पश्चिमी बंगाल में झगड़ों, इनमें भाग लेने वाले मजदूरों तथा जन दिनों की हानि की संख्या सबसे अधिक रही। झगड़ों व समय की हानि की संख्या को देखते हुए इस राज्य की स्थिति में, गत मास की अपेक्षा, काफी सुधार हुआ। बम्बई में यद्यपि झगड़ों तथा इनमें शामिल होने वाले मजदूरों की संख्या काफी कम हो गई तथापि जन दिनों की हानि कुछ अधिक हुई। समय की हानि की दृष्टि से, आन्ध्र व मध्य प्रदेश की स्थिति पहले से खराब हो गई परन्तु मद्रास व उत्तर प्रदेश की स्थिति में सुधार हुआ।

झगड़ों से प्रभावित उद्योगों में, लकड़ी, पत्थर और कांच उद्योगों में समय की हानि सब से अधिक हुई। समय की हानि की दृष्टि से जूट के कारखानों, कागज और छपाई, कोयले की खानों, म्युनिसिपैलिटियों तथा विविध उद्योगों की स्थिति में, गत मास की अपेक्षा, काफी सुधार हुआ। बुनाई उद्योग (जूट के अतिरिक्त) खाद्य, पेय तथा तम्बाकू, रासायनिक पदार्थ, रंग, कोयले के अतिरिक्त अन्य खानों में अधिक समय नष्ट हुआ। इस मास परिवहन और बगीचा के उद्योगों में कोई झगड़ा नहीं हुआ।

बीमा उद्योग के झगड़े

श्रम मंत्रालय की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि भारत सरकार ने फिलहाल बीमा उद्योग में, औद्योगिक झगड़ों के निबटारे के लिए अखिल भारतीय न्यायाधिकरण नियुक्त न करने का निश्चय किया है। सन १९४७ के औद्योगिक विवाद अधिनियम के अंतर्गत बीमा कम्पनियों के औद्योगिक झगड़े भी निबटाये जा सकते हैं।

बीमा कर्मचारियों की कुछ संस्थाओं ने भारत सरकार से अखिल भारतीय न्यायाधिकरण नियुक्त करने का अनुरोध किया था, इसी सिलसिले में यह निर्णय किया गया है।



फसल का अनुमान

गेहूं का चतुर्थ अनुमान

१९५३-५४ में गेहूं के अखिल भारतीय चतुर्थ अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में गेहूं की खेती का क्षेत्रफल २,४७,७१,००० एकड़ और उत्पादन ७१,६७,००० टन आंका गया है, जबकि १९५२-५३ के संशोधित चतुर्थ अनुमान में ये अंक क्रमशः २,३४,२६,००० एकड़ और ६७,६१,००० टन थे। इस प्रकार १९५३-५४ के अनुमान के क्षेत्रफल में, १९५२-५३ की अपेक्षा, १३,४५,००० एकड़ अर्थात् ५.७ प्र० श० और उत्पादन में ४,३६,००० टन अर्थात् ६.४ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

वर्तमान वर्ष में गेहूं के क्षेत्रफल में वृद्धि गेहूं पैदा करने वाले प्रायः सब राज्यों में हुई है। इनमें उत्तर प्रदेश, बम्बई, राजस्थान, पंजाब, हैदराबाद, पेप्सू, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और सौराष्ट्र मुख्य हैं। क्षेत्रफल में यह वृद्धि मुख्यतः बुआई के समय पर्याप्त व सामयिक वर्षा होने से हुई है। फिर भी, वर्तमान वर्ष की गेहूँ की फसल में विन्ध्य प्रदेश, बिहार और मध्य भारत के क्षेत्रफल में नगण्य कमी बताई जाती है।

गेहूँ पैदा करने वाले प्रायः सब राज्यों से उत्पादन में भी वृद्धि होने के समाचार मिले हैं। उत्तर प्रदेश, बम्बई, राजस्थान, मध्य भारत और पेप्सू में विशेष वृद्धि हुई है। उत्पादन में इस वृद्धि का कारण कुछ तो खेती की भूमि में वृद्धि होना, और कुछ वर्तमान वर्ष में फसल बढ़ने के लिये अनुकूल मौसम रहना है। चालू वर्ष के उत्पादन में केवल पंजाब में नगण्य कमी बताई जाती है।

वर्तमान अनुमान में सामान्यतः अप्रैल के अन्त या मई के आरम्भ तक की जानकारी सम्मिलित है। तब तक फसल की स्थिति सामान्यतः सन्तोषजनक थी। बम्बई के करनाटक भाग और विन्ध्य प्रदेश के सीधी, टीकमगढ़, दतिया और छतरपुर जिलों में ओले पड़ने व वर्षा की न्यूनता से फसल को हानि पहुँची। बम्बई के कुछ भागों में कीड़े मकोड़ों ने फसल को हानि पहुँचाई।

इस अनुमान मे गेहूँ की बुआई वाला प्रायः सारा क्षेत्र सम्मिलित है और अन्तिम अनुमान मे, वर्तमान अनुमान से, कोई अधिक अन्तर होने की सभावना नहीं है। इस मे, पहली बार ही, बेलारी जिले, जो अब मैसूर का एक भाग है, की जानकारी सम्मिलित की गई है। वर्तमान वर्ष मे इस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल २,८२६ एकड और उत्पादन ४६४ टन आका गया है।

अरहर का अन्तिम अनुमान

१६५३-५४ में अरहर के अखिल भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष मे अरहर की खेती का क्षेत्रफल ५७,७६,००० एकड और उत्पादन १७,८२,००० टन आका गया है, जबकि १६५२ ५३ के अशतः समायोजित अनुमान में ये अक क्रमश. ५६,२७,००० एकड और १६,७५,००० टन थे। इस प्रकार पिछले वर्ष की अपेक्षा, इस वर्ष के अनुमान के क्षेत्रफल मे १,५१,००० एकड अर्थात् २.५ प्र० श० की कमी और उत्पादन मे १,०८,००० टन अर्थात् ६ ४ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

वर्तमान अनुमान मे क्षेत्रफल की यह कमी मुख्यत. बिहार, उत्तर प्रदेश व पश्चिमी बगाल में बुआई के समय प्रतिकूल मौसम रहने से हुई। परन्तु हैदराबाद, बम्बई, और मैसूर राज्यो मे बुआइ के समय पर्याप्त वर्षा होने से क्षेत्र में जो वृद्धि हुई, उससे बिहार, उत्तर प्रदेश व बगाल की कमी कुछ हद तक दूर हो गई।

उत्पादन मैं वृद्धि मुख्यतः मध्य प्रदेश, बम्बई और हैदराबाद राज्यो मे हुई। यह वृद्धि कुछ तो फसल की चराई के समय अनुकूल मौसम रहने और कुछ खेती का क्षेत्रफल बढ जाने से हुई। इस वृद्धि ने, मुख्यतः उत्तर प्रदेश व बिहार राज्यो के क्षेत्रफल में कमी होने से उत्पादन मे जो कमी हुई थी उसे पूरा कर दिया।

चने का अन्तिम अनुमान

१६५३ ५४ मे चने के अखिल भारतीय अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में चने की खेती का क्षेत्रफल १,८८,६२,००० एकड और उत्पादन ४५,५१,००० टन आका गया है, जबकि १६५२ ५३ के अशत. समायोजित अनुमान में ये सख्यायें क्रमश. १,८०,१४ ०००, एकड और ४१,६५,००० टन थीं। इस प्रकार चालू वर्ष के अनुमान मे खेती के क्षेत्रफल मे १६५२ ५३ की अपेक्षा ८,७६,००० एकड अर्थात् ४.६ प्र० श० और उत्पादन मे ३,८६,००० टन अर्थात् ६ ६ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

वर्तमान अनुमान क क्षेत्रफल मे यह वृद्धि बिहार, मध्य भारत, मैसूर और दिल्ली के अतिरिक्त चना बोने वाले प्राय सब राज्यो में हुइ है। उत्तर प्रदेश, पजाब, पश्चिमी बगाल हैदराबाद तथा बम्बइ राज्यो मे बुआई के समय पर्याप्त व सामयिक वर्षा के कारण क्षेत्रफल में काफी वृद्धि बताई जाती है। परन्तु बिहार मध्य भारत, मैसूर तथा दिल्ली में बुआई के समय अपर्याप्त नमी रहने से क्षेत्रफल मे जो कमी हुइ, उसने अन्य राज्यो की वृद्धि कुछ हद तक घट गई है।

उत्पादन मे वृद्धि भी, चना बोने वाले प्राय सब राज्यो में हुई है। पजाब, उत्तर प्रदेश, पेप्सू, बम्बई तथा पश्चिमी बंगाल इनमें मुख्य हैं। यह वृद्धि कुछ तो खेती की भूमि में विस्तार तथा कुछ फसल बढ़ने की अवधि में अनुकूल मौसम रहने से हुई है। फिर भी बिहार, राजस्थान, मध्य भारत तथा भोपाल मे फसल बढने के दिनो मे प्रतिकूल मौसम रहने के कारण चालू वर्ष के उत्पादन मे कमी हो गई बतायी जाती है। राजस्थान मध्य प्रदेश, भोपाल तथा विन्ध्य प्रदेश मे कोहरा, ठण्ड व ओस पडने तथा सर्दी का मौसम मे अपर्याप्त वर्षा होने के कारण फसल को हानि पहुँची।

इस अनुमान मे उन क्षेत्रों की भी सूचना सम्मिलित है, जिसके अनुमान तैयार नहीं होते। आसाम, मध्य प्रदेश (वन क्षेत्र) तथा जम्मू व काश्मीर ऐसे ही क्षेत्र है। इन सब मे १६५३ ५४ मे ११,००० एकड मे खेती हुई और ६,००० टन उत्पन्न हुआ। ये अक इस अनुमान में सम्मिलित हैं।

तोरिया और सरसों का अन्तिम अनुमान

१६५३-५४ में तोरिया और सरसो के अखिल भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष मे तोरिया और सरसो की खेती का क्षेत्रफल ५३,७३,००० एकड और उत्पादन ८,२६,००० टन आका गया है, जब कि १६५२-५३ मे आशिक समायोजित अनुमान मे ये अक क्रमशः ५१,६६,००० एकड और ८,३७,००० टन थे। इस प्रकार पिछले की अपेक्षा, इस वर्ष के अनुमान के क्षेत्रफल में १,७४,००० एकड अर्थात् ३.३ प्र० श० की वृद्धि तथा उत्पादन में ११,००० [redacted] अर्थात् १.३ प्र० श० की कमी रही है।

वर्तमान अनुमान के तोरिया और सरसो के क्षेत्रफल में यह वृद्धि मुख्यतः राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पेप्सू तथा पजाब प्रदेशो में बुआई के समय सामान्यतः अनुकूल मौसम रहने से हुई। परन्तु बिहार व पश्चिमी बगाल के क्षेत्रफल मे बुआई के समय प्रतिकूल मौसम रहने के कारण काफी कमी रह गई।

यद्यपि क्षेत्रफल मे सब प्रकार से वृद्धि हो गइ, तथापि उत्पादन में कुछ कमी रही। यह कमी मुख्यत उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बगाल और बिहार में फसल बढने की अवधि मे प्रतिकूल मौसम रहने के कारण हुई। उत्तर प्रदेश के कुछ भागो मे ओले व कोहरा पडने से भी फसल को हानि पहुँची। पजाब, पेप्सू, तथा राजस्थान के उत्पादन में कुछ वृद्धि हो जाने से यह भी कुछ हद तक दूर हो गई।

जौ का अन्तिम अनुमान

१६५३ ५४ मे जौ के अखिल भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष मे जौ की खेती का क्षेत्रफल ८१ ६०,००० एकड और पैदावार ०७ ०१ ००० टन आकी गई है, जबकि १६५२ ५३ के अशतः समायोजित अनुमान मे ये सख्यायें क्रमश. ८०,१०,००० एकड और २८,४६,००० टन थी। इस प्रकार चालू वर्ष के अनुमान में खेती के क्षेत्रफल में १,८०,००० एकड अर्थात् २.२ प्र० श० की वृद्धि और पैदावार में १,२८,००० टन अर्थात् ४ ५ प्र० श० की कमी हुई है।

क्षेत्रफल में वृद्धि मुख्यतः उत्तर प्रदेश, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, पेप्सू और बम्बई में बुआई के समय पर्याप्त पानी मिलने से हुई। परन्तु बिहार, राजस्थान, मध्य भारत तथा जम्मू व काश्मीर में बुआई के समय प्रतिकूल मौसम रहने से क्षेत्रफल में कमी हो गई। जिससे क्षेत्रफल में अन्य राज्यों में हुई वृद्धि काफी हद तक बराबर हो गई।

क्षेत्रफल में वृद्धि होने पर भी पैदावार में गत वर्ष की अपेक्षा कमी हुई। पैदावार की यह कमी मुख्यतः राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य भारत में कुछ तो खेती की भूमि में कमी होने तथा कुछ फसल कटने की अवधि में प्रतिकूल जलवायु रहने के कारण हुई। उत्तर प्रदेश में ओले व तेज वर्षा होने से फसल को हानि पहुँची। राजस्थान व विन्ध्य प्रदेश के कुछ भागों में भी ओले व ठण्ड पड़ने तथा वर्षा की कमी रहने से फसल को कुछ हद तक हानि पहुँची। फिर भी, पंजाब, पेप्सू, पश्चिमी बंगाल, जम्मू व काश्मीर तथा बम्बई में फसल कटने के समय अनुकूल मौसम रहने से चालू वर्ष के उत्पादन में वृद्धि हुई है।

इस अनुमान में उन क्षेत्रों की भी सूचना सम्मिलित है, जिनके अनुमान तैयार नहीं होते। आन्ध्र, मद्रास, जम्मू व काश्मीर ऐसे ही क्षेत्र हैं। इन सब में १९५३-५४ में कुल ६०,००० एकड़ में खेती हुई है और १६,००० टन पैदावार हुई है। ये अब इस अनुमान में सम्मिलित हैं।

रबी की दालों का अंतिम अनुमान

१९५३-५४ में रबी की दालों (चना और अरहर को छोड़कर) के अखिल भारतीय अंतिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में रबी की दालों की खेती का क्षेत्रफल १,११,३०,००० एकड़ और उत्पादन २०,७५,००० टन आंका गया है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्याएं क्रमशः १,११,८५,००० एकड़ और २०,४२,००० टन थीं। इस प्रकार खेती के क्षेत्रफल में ५५,००० एकड़ अर्थात् ०.५ प्र० श० की कमी और उत्पादन में ३३,००० टन अर्थात् १.६ प्र० श० की वृद्धि हुई।

१९५३-५४ के क्षेत्रफल में यह कमी मुख्यतः उर्द के सम्बन्ध में मध्य प्रदेश व पश्चिमी बंगाल में बुआई के समय पर्याप्त नमी न रहने के कारण हुई। बिहार प्रदेश के सब दालों के क्षेत्रफल में भी बुआई के समय प्रतिकूल मौसम रहने से कमी रही। परन्तु विशेषतः बम्बई, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, हैदराबाद व विन्ध्य प्रदेश में अन्य सब दालों में वृद्धि हो जाने से यह कमी काफी हद तक दूर हो गई।

रबी की दालों की खेती के क्षेत्रफल में कमी होने के बावजूद भी उगने के समय मौसम अनुकूल होने के कारण इन दालों के उत्पादन में कुछ वृद्धि हुई है। यह वृद्धि बिहार, बम्बई, और पश्चिमी बंगाल राज्यों में उर्द और मटर को छोड़कर प्रायः सभी दालों में हुई है। उर्द और मटर के उत्पादन में कमी मुख्यतः मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में हुई है और इसका कारण उत्तर प्रदेश में उगने के समय मौसम की प्रतिकूलता तथा मध्य प्रदेश में खेती के क्षेत्रफल में कमी और मौसम की प्रतिकूलता है।

तम्बाकू का तृतीय अनुमान

तम्बाकू के अखिल भारतीय तृतीय अनुमान के अंतर्गत, १९५३-५४ के चालू वर्ष में तम्बाकू की खेती का क्षेत्रफल ८,७०,००० एकड़ और उत्पादन २,५०,००० टन आंका गया है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्यायें क्रमशः ८,५८,००० एकड़ और २,३१,००० टन थीं। इस प्रकार चालू वर्ष के अनुमान के अनुसार खेती के क्षेत्रफल और उत्पादन में क्रमशः १२,००० एकड़ अर्थात् १.४ प्र० श० तथा १९,००० टन अर्थात् ८.२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

क्षेत्रफल तथा उत्पादन, दोनों में यह वृद्धि मुख्यतः बम्बई प्रदेश में हुई है। यह वृद्धि बुआई के समय तथा बाद में फसल कटने के समय अनुकूल मौसम रहने के कारण हुई है। फिर भी, आन्ध्र में बुआई के समय बहुत वर्षा होने से जो कमी हुई, उससे यह वृद्धि कुछ हद तक घट गई है।

इस अनुमान में उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली प्रदेश की देर से होने वाली फसल का उल्लेख नहीं है। गत अनुभव से विदित हुआ है कि अन्तिम अनुमान के आंकड़े, तृतीय अनुमान के आंकड़े से केवल थोड़े अधिक होते हैं।

काली मिर्च का अन्तिम अनुमान

१९५०-५४ में काली मिर्च के अखिल भारतीय अंतिम अनुमान के अंतर्गत चालू वर्ष में काली मिर्च की खेती का क्षेत्रफल २,०८,५०० एकड़ और उत्पादन २[illegible],३०० टन आंका गया है, जबकि १९५२-५३ में क्षेत्रफल २,०४,८०० एकड़ और उत्पादन २१,६०० टन था।

इस प्रकार खेती के क्षेत्रफल में ३,७०० एकड़ अर्थात् १.८ प्र० श० और उत्पादन ७०० टन अर्थात् ३.२ प्र० श० की वृद्धि हुई है। खेती की भूमि व उत्पादन, दोनों में वृद्धि केवल मद्रास राज्य में वर्तमान वर्ष में अधिक अच्छा मौसम रहने से हुई।

अलसी का अन्तिम अनुमान

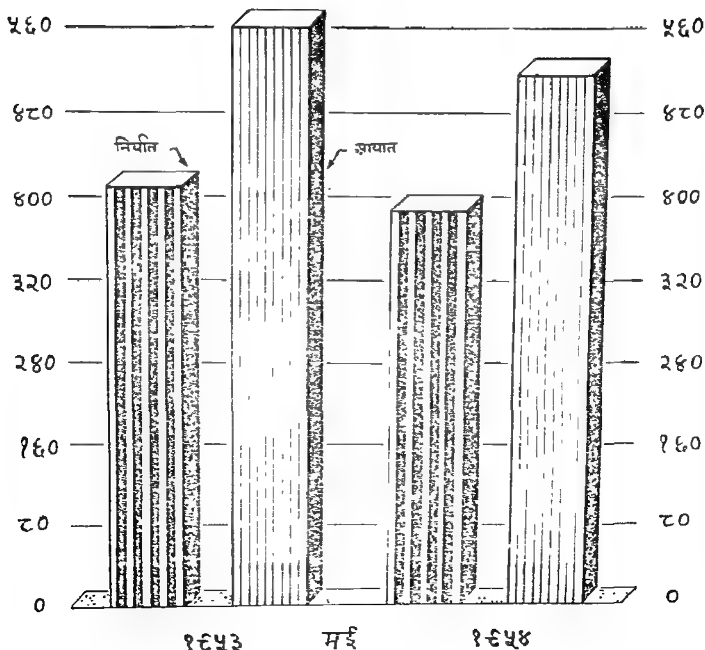
१९५३-५४ में अलसी के अखिल भारतीय अनुमान के अंतर्गत चालू वर्ष में अलसी की खेती का क्षेत्रफल ३३,६६,००० एकड़ और उत्पादन ३,५५,००० टन आंका गया है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्याएं क्रमशः ३३,९५,००० एकड़ और ३,५९,००० टन था। इस प्रकार खेती के क्षेत्रफल में २९,००० एकड़ अर्थात् एक प्र० श० से भी कम और उत्पादन में ४,००० टन अर्थात् एक प्र० श० से कुछ अधिक की कमी हुई।

चालू वर्ष में खेती के क्षेत्रफल में यह कमी मुख्यतः हैदराबाद राजस्थान और मध्यप्रदेश में हुई है। क्षेत्रफल में यह कमी तेज वर्षा होने के कारण फसल बोने में देर हो जाने से हुई और अन्य प्रदेशों में बुआई के समय अपर्याप्त नमी रहने के कारण यह कमी हुई। फिर भी, विन्ध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में वृद्धि होने से यह कमी काफी हद तक दूर हो गयी है।

चालू वर्ष में उत्पादन में थोड़ी कमी मुख्यतः उत्तर प्रदेश, हैदराबाद तथा राजस्थान में हुई और इसका कारण कुछ तो खेती की भूमि में कमी तथा कुछ फसल कटने की अवधि में ऋतु की प्रतिकूलता है। इस सम्बन्ध में यह बात उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश के क्षेत्रफल में यद्यपि कमी हो गई तथापि उसके उत्पादन में, फसल कटने की अवधि में अधिक अच्छा मौसम रहने, से वृद्धि हुई है।

ग्राफ विभाग

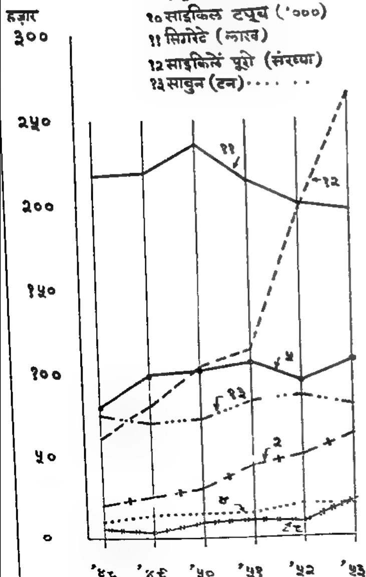
१. भारत का विदेशी व्यापार
२. औद्योगिक उत्पादन—१
३. औद्योगिक उत्पादन—२
४. आयात की चुनी हुई वस्तुएं
५. निर्यात की चुनी हुई वस्तुएं

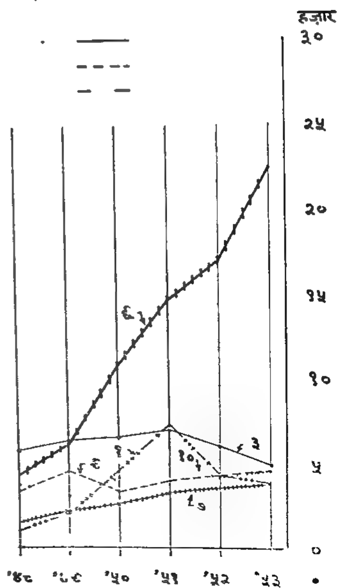

भारत का विदेशी व्यापार
(समुद्र, वायु और स्थल द्वारा)
दस लाख रुपयों में
५६०
४८०
४००
३२०
२४०
१६०
८०
०
निर्यात
आयात
१९५३
मई
१९५४
A. GHOSH.
CENTRAL STATISTICAL ORGANISATION
NO. 262/8/54-II

औद्योगिक उत्पादन
(चुनी हुई वस्तुएं)

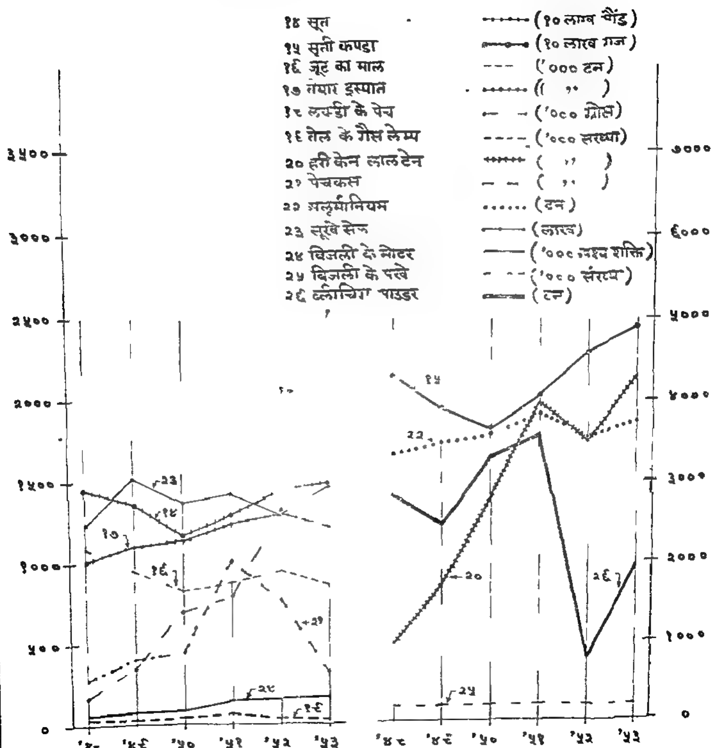
१ डीज़ल इंजन (संख्या)
२ सिलाई की मशीनें (संख्या)
३ तांबा (टन)
४ बिजली की बत्तियां ('०००)
५ गन्धक का तेज़ाब (टन)
६ कास्टिक सोडा (टन)
७ सीमेंट ('००० टन)
८ कांच की चादरें (००० वर्ग फीट)
९ साइकिल टायर ('०००)
१० साइकिल ट्यूब ('०००)
११ सिगरेटें (लाख)
१२ साइकिलें पूरी (संख्या)
१३ साबुन (टन)......





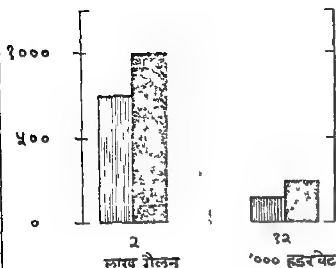


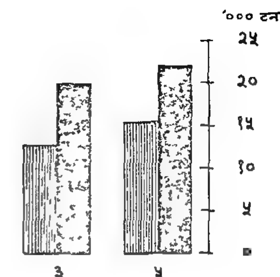
CENTRAL STATISTICAL ORGANISATION
264/8 54-I


औद्योगिक उत्पादन
(चुनी हुई वस्तुएं)
१४ सूत (१० लाख पौंड)
१५ सूती कपड़ा (१० लाख गज)
१६ जूट का माल ('००० टन)
१७ तैयार इस्पात (,,)
१८ लकड़ी के पेच ('००० ग्रोस)
१६ तेल के गैस लेम्प ('००० संख्या)
२० हरीकेन लालटेन (,,)
२१ पेचकस (,,)
२२ अल्यूमीनियम (टन)
२३ सूखे सेल (लाख)
२४ बिजली के मोटर ('००० अश्व शक्ति)
२५ बिजली के पंखे ('००० संख्या)
२६ ब्लीचिंग पाउडर (टन)
३५००
३०००
२५००
२०००
१५००
१०००
५००
०
७०००
६०००
५०००
४०००
३०००
२०००
१०००
०
'४८ '४९ '५० '५१ '५२ '५३
'४८ '४९ '५० '५१ '५२ '५३
A GHOSH
CENTRAL STATISTICAL ORGAN SATION
NO 265/8 54

आयात की चुनी हुई वस्तुएं

परिमाण

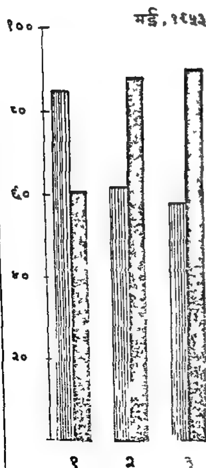




मई, १९५३ — मई, १९५४

मूल्य

दस लाख रुपये

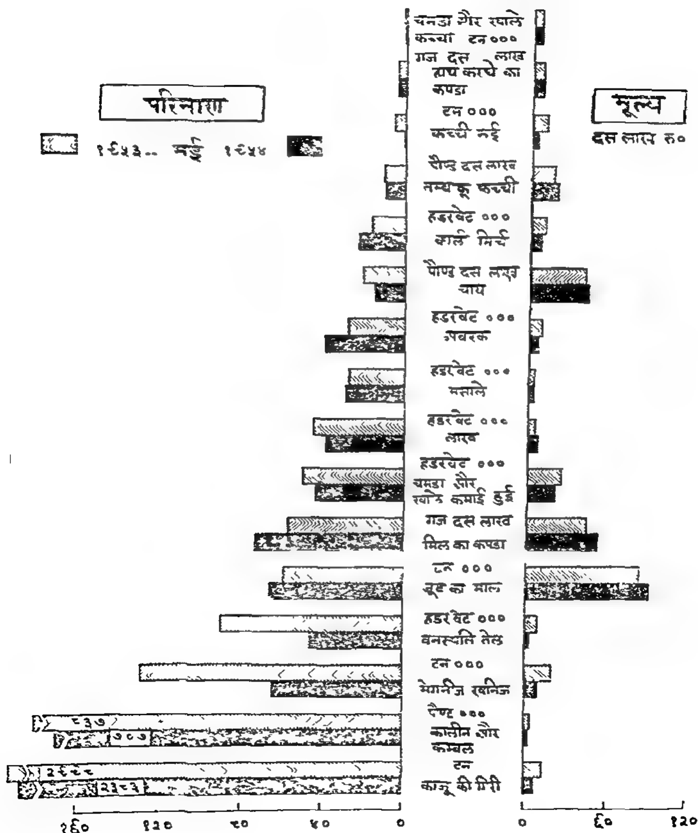


मशीनें और मिलों का सामान १
खनिज तेल २
कच्ची रुई ३
धातु, लोहा और इस्पात के अतिरिक्त ४
लोहा और इस्पात ५
चमड़ा कमाने और रंगने की वस्तुएं ६
औषधियां ७
रासायनिक पदार्थ ८
बिजली का सामान ९
गाड़ियां १०
औजार और उपकरण (बिजली के अतिरिक्त) ११
कागज १२

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

A. GHOSH

CENTRAL STATISTICAL ORGANISATION
NO. 263/8/54-II



निर्यात की चुनी हुई वस्तुएँ
परिमाण
१९५३... मई १९५४
मूल्य
दस लाख रु०
चमड़ा और खालें कच्चा टन ०००
गज दस लाख
हाथ करघे का कपड़ा
टन ०००
कच्ची रुई
पौण्ड दस लाख
तम्बाकू कच्ची
हंडरवेट ०००
काली मिर्च
पौण्ड दस लाख
चाय
हंडरवेट ०००
हंडरवेट ०००
मसाले
हंडरवेट ०००
लाख
हंडरवेट ०००
चमड़ा और खालें कमाई हुई
गज दस लाख
मिल का कपड़ा
टन ०००
जूट का माल
हंडरवेट ०००
वनस्पति तेल
टन ०००
मैंगनीज खनिज
पौण्ड ०००
कालीन और कम्बल
टन
काजू की गिरी
८३७
७०७
२६८८
२३८३
१६० १२० ८० ४० ०
० ६० १२०
M G MEHRA
CENTRAL STATISTICAL ORGANISATION – 267/8 54 II

१. औद्योगिक उत्पादन*

(१) बुनाई उद्योग

वर्ष	१ सूत (लाख पौंड)	२ सूती कपडा (लाख गज)	३ [क] जूट का माल (००० टन)	४ [ख] ऊनी माल (००० पौंड)	५ पट्टे (टन)
१९४६	१३,९६८	३९,०८४	१,०८८ ४	२७,०००	
१९४७	१२,९६०	३७,६२०	१,०५१ २	२४,०००	६१५ ६
१९४८	१४,४७२	४३,१८८	१,०८८ ४	२०,००४	६६० ०
१९४९	१३,५९६	३९,०४८	९४५ ६	२१,०००	४०२ ०
१९५०	११,७४८	३६,६६८	८३५ २	१८,०००	५१० [illegible]
१९५१	१३,०४४	४०,७६४	८७४ ८	१७,७००	६७५ ६
१९५२	१४,४९६	४५,९८४	९५१ ६	१६,५८४	७०६ २
१९५३	१५,०६०	४८,९००	८९८ ८	१७,०२८	७६५ ६
१९५४ जनवरी	१,३२०	४,१९०	९७ ३	१,२२०	६८ ०
फरवरी	१,२४०	४,०७०	९ ३	१,३७४	५९ ०
मार्च	१,२४०	३,९६०	७५ ६	१,३६८	८३ [illegible]
अप्रैल	१,२६०	४,२६०	७५ ०	१,२३५	६४ ०
मई	१,२६०	४ २७०	७१ ३	१,४३७	७० [illegible]
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई					
अगस्त					
सितम्बर					
अक्तूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९४९ से ये आंकड़े इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन की सदस्यता वाले मिलों तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में हैं। [ख] इसमें जम्मू और कश्मीर के आंकड़े भी सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	६ कच्चा लोहा (००० टन)	७ सीधी ढलाई (००० टन)	८ लोह मिश्रित धातु (००० टन)	९ इस्पात के पिण्ड और ढलाई (००० टन)	१० अधूरा तैयार इस्पात (००० टन)	११ तैयार इस्पात (००० टन)	१२ इस्पात की नलियाँ (टन)
१९४६	१,३४९ ४	७५ ६	१५ ६	१,२९३ ६	१,०३० ८	८९० ४	
१९४७	१,३२० ०	६७ २	१८ ०	१,२५६ ४	१,०२७ २	८९२ ८	
१९४८	१,४०५ ७	५१ ६	७ २	१,२५६ ४	१,०११ ६	८५६ ८	
१९४९	१,५७७ ६	६३ ६	१६ २	१,३५२ ४	१,१०५ २	९३० ०	४७० ४
१९५०	१,५६२ ४	९८ ४	१८ ०	१,४३७ ६	१,१४२ ४	१,००४ ४	४२७ २
१९५१	१,७०८ ८	९२ ४	२४ ०	१,५०० ०	१,२४९ २	१,०७६ ४	४५६ ०
१९५२	१,६८४ ८	१२६ ६	४० ८	१,५७० ०	१,३०८ ०	१,१०२ ८	२१४ ८
१९५३	१,६५४ ८	११५ २	७ २	१,५०७ २	१,२३० ०	१,०१७ ६	अप्राप्त
१९५४ जनवरी	१६३ २	७ ३	० २	१५४ २	१३१ ४	१०६ ७	शून्य
फरवरी	१४४ [illegible]	१२ ३	० ४	१३२ ९	११४ २	९९ १	१२ १
मार्च	१५६ ७	७ ७	० ३	१४७ ५	१२५ ९	११४ ५	अप्राप्त
अप्रैल	१३८ ६	१० [illegible]	० ४	१२८ ७	१०९ ७	९९ १	अप्राप्त
मई	१३९ ५	१० ०	० ४	१२३ ४	१०४ ६	९४ ७	अप्राप्त
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

*नवीन रिपोर्टों के अनुसार इन अंकों में संशोधन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष	१३ लकड़ी के पेंच (००० ग्रोस)	१४ मशीनी पेंच (००० ग्रोस)	१५ रेजर ब्लेड (लाख)	१६ हरीकेन लालटेनें (०००)	१७ गैस के लैम्प (०००)	१८ तामचीनी का सामान (००० संख्या)	१९ बढ़ाई हुई धातु (टन)	२० डुप्लिकेटिंग (संख्या)
१९४६	...			४३०.४	१५.६		.	
१९४७	७४.४			९०६.६	१९.२	८,५३२.०	९७१	१९८
१९४८	१६८.८	३१.२	.	९७६.२	३८.४	६,७३३.२	१,४६४	३४८
१९४९	३४४.४	८७.६	७५.६	१,७२८.०	३२.४	६,५६०.४	३००	५५२
१९५०	७०३.२	१५६.६	१०६.८	२,८०६.८	३८.४	५,४४५.६	२,१४८	७५६
१९५१	७५६.८	१२७.२	२२६.२	३,६७६.८	६२.४	८,१२५.२	१,८६६	१,५६०
१९५२	१,३२९.६	१४७.६	१०८.०	३,५२३.२	३४.८	७,९६०.८	२,०१३	१,०२०
१९५३	२,५५४.८	१६८.०	२३१.६	४,३१२.८	३०.०	६,४४७.६	१,६४४	६२४
१९५४ जनवरी	२६२.१	१८.३	५२.८	४०२.७	२.१	१,१८६.५	८८	१०२
फरवरी	३१०.६	१६.४	५७.२	३५६.४	१.६	१,२७६.६	८८	६५
मार्च	४४६.३	२२.०	६४.६	४०८.५	२.४	१,२७६.७	१२१	८०
अप्रैल	४१२.०	२०.३	८१.५	४७३.५	३.६	१,२५९.२	११६	१२०
मई	४२६.६	११.७	६२.३	४११.२	२.७	१,१४८.६	८६	६४
जून	५०३.०	१६.७	६६.८	अप्राप्त	५.२	अप्राप्त	६६	अप्राप्त
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[४] मशीनें (बिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष	२१ डीजल इंजिन (संख्या)	२२ शक्ति चालित पम्प (०००)	२३ सिलाई की मशीनें (संख्या)	२४ मशीनों के औज़ार (मूल्य ००० रुपये)	२५ ट्विस्ट ड्रिल्स (०००)	२६ केलिको करघे (संख्या)	२७ रिंग स्पिनिंग फ्रेम (पूर्ण) (संख्या)	२८ पिसाई के चक्के (००० पौंड)	२९ धुनाई की मशीनें घूमने वाली चपटी (संख्या)
१९४६	४२८		६,१२० [ग]	६,१२४.८	६३.६				
१९४७	६८४	६.०	५,८५६	४,५८७.६	२३१.२				
१९४८	१,०२०	८.८	१०,०१६	५,४७३.२	२७६.०				
१९४९	२,०७२	१४.४	२१,०३२	४,७२६.२	४००.८			७०६.८	
१९५०	४,५९६	३०.०	३०,८८८	२,६६०.४	४४७.२			५००.४	
१९५१	७,२४८	४८.०	४४,४६०	४,७३०.४	१,०१७.६	२,२८०	२७६	७०८.०	
१९५२	४,२४८	३२.४	५०,०४०	४,४३७.६	७७१.२	२,३६८	२८८	८६१.२	१०८
१९५३	३,७२०	२५.२	६२,४२४	४,४०७.६	३३४.८	१,८१२	२०४	८०७.६	१६२
१९५४ जनवरी	६६१	२.१	६,७२१	३०२.३	३६.१	२४	१४	१००.३	३०
फरवरी	५४५	२.४	७,[illegible]	३२५.७	३६.८	२८	२०	१०८.१	२०
मार्च	७१६	२.३	७,०६३	४४०.१	४७.४	४०	१२	६३.४	३०
अप्रैल	६८०	२.३	७,२४६	४३१.७	४०.१	१४२	१४	६१.८	३०
मई	६६२	२.३	६,८२५	४६८.१	४६.१	१५८	१४	७६.४	३५
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	६,४७०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१४	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई									
अगस्त									
सितम्बर									
अक्तूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

[ग] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आँकड़े।

१. औद्योगिक उत्पादन

[५] लोहे से असम्बद्ध धातुएं

वर्ष	३० अलूमीनियम (टन)	३१ सुरमा (टन)	३२ तांबा (टन)	३३ सीसा (टन)	३४ लोहे से असम्बद्ध धातुओं के नल (टन)	३५ सोना (औंस) [घ]
१९४६	३,२३६ ४	१३२ ०	६,३१० ८	शून्य		१,३१,७७२
१९४७	२,२१४ ८	२३५ २	५,६३१ ६	१८६ ६		१,७१,७८०
१९४८	३,३६१ २	३३० ०	५,८६४ ४	६२५ २	३२४ ०	१,८०,८५२
१९४९	३,४८६ ६	९९ ६	६,३९० ०	५९४ ०	३६० ०	१,६४,१४८
१९५०	३,५६६ ४	३७१ ६	६,६१४ ४	६२७ ६	३३१ २	१,९६,८४८
१९५१	३,८४८ ४	३१७ ६	७,०८३ ६	८५६ २	२४८ ४	२,२६,२१६
१९५२	३,५६६ ४	१८१ २	६,०७९ २	२,१३१ ६	३७० ८	२,५२,६००
१९५३	३,७१८ ४	१३० ८	४,९२० ०	२,३६४ ४	३५७ ६	२,२३,०२०
१९५४ जनवरी	३०२ ३	६ २	३१० ०	१८०	१६ १	१९,२८९
फरवरी	२६५ १	४४ ०	६२० ०	१२५	१४ ९	१९,८३०
मार्च	३८७ ५	३७ ६	६६५ ०	२००	१६ ६	२०,६०१
अप्रैल	३७० २	५२ ०	६३० ०	१६७	५ ४	२०,८१५
मई	३१५ १	४० ०	६१५ ०	११०	२१ ०	१८,९८५
जून	५१६	५६ ०	५६ ०	८५	४ ५	अप्राप्त
जुलाई						
अगस्त						
सितम्बर						
अक्तूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैदराबाद में हुए सोने का उत्पादन भी इन आँकड़ों में सम्मिलित है।

[६] बिजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई बिजली [ङ] (लाख किलोवाट प्रति घण्टा)	३७ बिजली ले जाने की नलिया (००० फुट)	३८ सूखे सेल (लाख)	३९ संग्रह की बैटरी (०००)	४० बिजली के मोटर (००० हार्स पावर)	४१ बिजली के ट्रान्स-फार्मर (००० के वी ए)	४२ बिजली की बत्तिया (०००)
१९४६	३८,९२०		८७६ ६	२७ ६	४५ ६	३८ ४	८,११२
१९४७	४०,७३०		८७९.६	९९ ६	३८ ४	३२ ४	७,९२०
१९४८	४५,७५०	१,७०७ ६	१,२३८ ४	११० ४	६० ०	८१ १	९,३५१
१९४९	४९,०९०	२,६४८ ४	१,५२१ ६	१०६ ८	६८ ४	१०६ २	११,६४४
१९५०	५०,८८०	२,६९९ ४	१,३८१ २	१८७ २	८१ ६	१७१ ६	१४,३०४
१९५१	५८,५१७	३,६९९ ६	१,४३४ ०	२१२ ४	१४१ ६	१६४ ४	१५,४१६
१९५२	६१,२४८	३,६६४ ८	१,३०२ ०	१५८ ४	१५७ २	२१४ ८	२०,८८०
१९५३	६६,२७६	३,७१६ ४	१,४८४ ४	१७६ ४	१९२ ०	३०८ ४	१६,७७६
१९५४ जनवरी	५,८०७	४४२ ६	१२६ ४	१२ ७	१२ ६	२९ ९	१,७४६
फरवरी	५,४२७	५१५ ६	१२११	८ ९	१४ ३	२४ ७	१,५६७
मार्च	५,८१७	६०३ ४	११७ २	१२ ४	१५ ०	३३ ९	१,६२८
अप्रैल	६,०४-	५१८ ८	१५/ ७	१७ ०	१४ ३	२६.६	१,८२७
मई	अप्राप्त	५४६ ३	१६८ ७	१७ २	१५ ३	३२ ३	१,८५९
जून	अप्राप्त	५५६ ९	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[ङ] जम्मू और काश्मीर के आंकड़े भी सम्मिलित हैं। अन्य दो स्टेशनों के साथ सार्वजनिक उपयोग के कार्यों के सब स्टेशन भी इसमें आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन

(६) बिजली के उद्योग (गत पृष्ठ से आगे)

वर्ष	४३ बिजली के पंखे (०००)	४४ रेडियो रिसीवर (संख्या)	४५ तार — तांबे के खुले हुए (टन)	४५ तार — लपेटने के (टन)	४५ तार — रबड़ चढ़े हुए (लाख गज)	४६ घर में लगाने वाले मीटर (संख्या)	४७ घरेलू रेफ्रीजरेटर (संख्या)
१९४६	११० ४ [च]		७,८६०	२१६	२२५ ६		..
१९४७	१५९ ६	३,०३६					.
१९४८	१८० ०	२४,९९६	५,८८०	३३६	२१६ ६		.
१९४९	१७८ ८	१६,८३६	५,७७४	३३६	१६३ २	.	.
१९५०	१९३ २	४४,३४०	८,६७६	२५२	३३६ ६		
१९५१	२१२ ४	६८,१००	३,०००	३००	४११ ६		
१९५२	१९५ ६	७१,४८६	५,९२८	८९६	३२८ ८	२४,३५६	६००
१९५३	२०६ ४	५६,२२०	७,३६८	२२८	४८४ ८	८०,६७६	१,२४०
१९५४ जनवरी	१६ ७	४,५६२	४०३	८	३३ ६	६,४८२	१०२
फरवरी	१६ १	५,१७६	३३८	६	३८ ०	१२,५८५	१०
मार्च	२० ०	६,३०१	३३२	१६	३५ ८	१३,२६२	१५०
अप्रैल	१८ ५	५,०२८	२८७	१५	४० २	११,६२०	१५०
मई	१९ ०	४ ५५८	१४८	२२	४३ ६	१२,४५५	१००
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[च] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आंकड़े।

(७) रासायनिक पदार्थ

वर्ष	४८ गन्धक का तेजाब (टन)	४९ कास्टिक सोडा (टन)	५० सोडा ऐश (टन)	५१ तरल क्लोरीन (टन)	५२ ब्लीचिंग पाउडर (टन)	५३ बाइक्रोमेट (टन)	५४ सुपर-फास्फेट (टन)	५५ अमोनियम (टन)	५६ तूतिया (टन)
१९४६	६०,०००	२,६०४	१२,०००	१,५००	२,००४	२,०७६	४,८००	२२,४६४	..
१९४७	६०,०००	३,३१२	१३,६२०	१,७०४	२,५५६	२,३०४	५,००४	२१,२७६	..
१९४८	८०,००४	४,३८०	२६,१४८	१,८००	२,८३२	२,६४०	२१ ३६०	३५,२०८	४११
१९४९	९९,४५६	६,३००	१७,९१६	२,६५२	२,४७२	१,७१६	४६,७२८	४५,९३६	४५६
१९५०	१,०२,४८०	१०,८४८	४३,७८८	३,८७२	३,३१२	१,९८०	५२,४२८	४७,३०४	४३२
१९५१	१,०६,९३२	१४,७२४	४७,५३२	५,३२८	३,५८८	३,२७६	६१,०२०	५२,६०४	५०४
१९५२	९६,०७२	१७,०६४	४४,३२८	६,२४०	७८२	१,४६४	४६,६५६	२,२०,३०८	३३६
१९५३	१,०७,७८९	२२,५३६	५६,८८०	८,५६८	१,६५६	२,३०४	४५,८६०	३,१९,६२०	५१६
१९५४ जनवरी	११,०९५	२,३३७	४,८५९	६७३	८९२	२३०	७,६०८	२४,५३५	५०
फरवरी	१२,०००	२,१९९	४,३९९	५४६	८६४	२२२	८,३००	२३,७६५	४२
मार्च	११,५१५	२,३४८	४,०३०	८५१	२४३	२७२	७,८२५	२५,६६५	३०
अप्रैल	११,४८०	२,३२७	४,३६०	७५६	२४७	३०५	८,५२०	२४,१९९	४४
मई	११,९५०	२,३३२	४,२६३	७४१	१९५	३०७	६,११०	२४,४६०	७१
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई									
अगस्त									
सितम्बर									
अक्तूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

१. औद्योगिक उत्पादन

(८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	५७ रगलेप और वारनिशें (टन)	५८ दियासलाई [छ] (००० पेटिया) [ज]	५९ साबुन [झ] (टन)	६० सरेस (हडरवेट)	६१ गैसें धातुओं को जोडने की — आक्सीजन (लाख घन फुट)	एसिटलीन (लाख घन फुट)	६२ ग्लिसरीन (टन)	६३ बेकलाइट का साचे बनाने का चूरा (००० पौंड)
१९४६	३८,४००	४११ ६					१,७८८	
१९४७	३८,६०४	४६५ ६					१,३३२	
१९४८	३५,७२४	५३२ ८	७५,६००	१२,२६४			२,१४८	
१९४९	३०,९२४	५२६ ८	७१,००४	१२,१४४			१,७४०	
१९५०	२७,९४८	५२३ २	७२,६९६	१३,५००			२,००४	
१९५१	३३,४८०	५७७ २	८३,४३६	१४,११२	१,४५२ ०	२९८ ८	२,४२४	४५९ ६
१९५२	३२,१७२	६०८ ४	८६,३७६	१४,६४०	१,६२६ ०	३१५ ६	२,२२०	६६७ २
१९५३	३०,८८८	५९० ४	८०,०८८	१७,१००	१,८८१ ६	३४६ ८	२,५०८	८३६ ४
१९५४ जनवरी	३,१८१	४५ ६	५,१२३	१,९१२	१७० ०	३३ ०	५४	६४ ०
फरवरी	२,४४७	४१ २	५,२४०	१,६२३	१६८ ८	३२ ०	२१८	२३ ६
मार्च	२,६००	४५ ७	६,२७५	१,८९४	१८९ ८	३४ ०	२०२	७१ ९
अप्रैल	२,३६५	३८ ७	५,६८०	१,३९८	१९४ ०	३८ ०	२८२	७४ ४
मई	२,१९५	४३ ९	६,०६५	१,३३०	१९० ०	३८ ०	१४८	८२ ४
जून	अप्राप्त	३४ १	अप्राप्त	१,३०७	१९३ ०	३५ ०	अप्राप्त	६३ ४
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[छ] इसमें जम्मू और काश्मीर के आकड़े भी शामिल हैं। [ज] ६० तीलियों वाली डिबियों के ५० ग्रोस।
[झ] ये आकड़े सगठित कारखानों के उत्पादन के हैं।

(८) रसायनिक उद्योग

वर्ष	६४ लिवर का सत्व — इजेक्शन (००० सी सी)	खाने वाला (००० पौंड)	६५ रेयन (टन)	६६ अलकोहल (००० गैलनों में खुला हुआ) — इजनों में जलने वाला	शुद्ध स्पिरिट	मिश्रित स्पिरिट	६७ अलसी का तेल, पोता हुआ टाट (लिनोलियम) (००० वर्ग० गज)	६८ प्लास्टिक के साचे (००० ग्रोस)
१९४६				२,३९७ ६	२,१४६ ८	१,०२३ ६		
१९४७				२,७३६ ०	१,७७४ ८	१,०८४ ८		
१९४८				३,७७६ ४	२,३८९ १	१,४०१ ६		
१९४९	७,३१८ ८	१८१ २		४,२३० ०	१,६५० ०	१,०९५ ६		
१९५०	११,१४५ ६	३०१ २		४,४९७ ६	३,४३८ ६	१,४७७ २		
१९५१	१०,६८२ ४	३१९ २	२,०८८	५,८०९ २	५,०१० ०	१,९६६ ८		१,४४६ ०
१९५२	१०,३७२ ८	३१० ८	३,५८–	७,७४२ ४	४ ६३२ ०	२,१४८ ९	१५९ ६	१,५५४ ४
१९५३	१०,१३८ ८	२०४ ४	४,३५६	७,९७७ ६	४,०२६ ०	२,२३८ ०	१६३ २	१,२७० ६
१९५४ जनवरी	१,४१६ ०	२५ २	३८८	६३८ ६	४४८ २	३२३ ४	२० ७	११७ ५
फरवरी	६१३ ४	२३ १	३५२	६२९ ४	४७– ५	२२७ ३	२८ ४	१०४ ६
मार्च	१,१५४ ०	२१ ६	३९९	६७९ ३	४०५ १	२७२ ८	३६ ५	१०४ ६
अप्रैल	१,०५३ ७	२२ १	३६५	८८– ४	३७६ ०	२७६ १	२६ ६	११४ ८
मई	१,१२३ १	१८ ५	४०४	७०० ०	३२० ६	२४२ ६	२७ १	१०३ ४
जून	अप्राप्त	अप्राप्त	३८४	६३६ १	३७० ०	२१० ४	१८ ७	अप्राप्त
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(९) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष		६९ सीमेंट (००० टन)	७० सीमेंट की चादरें, एसबेस्टस (००० टन)	७१ सफेद माल (टन)	७२ स्वच्छता के लिये बनाया गया माल (टन)	७३ पत्थर का सामान (००० टन)	७४ चीनी की पालिश वाले नल (००० दर्जन)	७५ ऊंची आंच सहन करने वाली मिट्टी की ईंटें (००० टन)	७६ घिसने वाला सामान (००० रीम)	७७ बिजली-अवरोधक (इन्सूलेटर) एच.टी. (०००)	७७ बिजली-अवरोधक (इन्सूलेटर) एल.टी. (०००)
१९४६		१,५४२ ०	२५ २					२४६ ०	६१ २		
१९४७		१,४४७ १					.	१७५ २	४० ८	७४ ४	१,४२० ४
१९४८		१,५५२ ८	७६ ८	५,३७६	१,४६४	१५ ६	..	१८६ ६	४५ ६	६० ०	२,५०३ ६
१९४९		२,१०२ ४	८६ ४	३,७३२	१,६०८	२२ ८		२०८ ८	२५ २	१३६ ८	२,२३९ २
१९५०		२,६१२ ४	८६ ४	६,०९०	१,७८८	२६ ४	६२.४	२३६ ४	३१ २	१७४ ०	१,२७९ २
१९५१		३,१९५ ६	८१ ६	९,१९२	६४८	३० ०	३१० ८	२३७ ६	३७ २	२४४ ८	१,४३२ ८
१९५२		३,५३७ ६	८७ ६	९,०३०	६३२	३३ ६	३४५ ६	२४३ ६	५५.२	३२५ २	३,०७८ ०
१९५३		३,७८० ०	७५ ६	८,०१६	७२०	३३ ६	३७६ २	२२८ ०	५७ ६	५४७ २	२,३०३ ४
१९५४	जनवरी	३६२ ८	७ ७	२४७	४६	२ -	२२ ६	१८ ७	४ ६	३६ ८	४४८ ६
	फरवरी	३५१ ६	७ ५	८-०	५०	३ २	३७ ५	१७ ८	५ ३	४२ ४	२४७ ६
	मार्च	३८८ ६	७ ०	८५८	१०५	३ ?	४५ ६	२० ७	५ ५	४८ १	१९४ ०
	अप्रैल	३५९ ८	६ ३	९१३	१०६	३ ४	२६ ३	४० ३	७ ०	४८ ८	२५४ ०
	मई	३७३ ४	६ ०	८८८	११-	३ ५	३५ ७	१५ ४	५ १	५१ २	२५२ ८
	जून	३४७ ४	६ ३	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	जुलाई										
	अगस्त										
	सितम्बर										
	अक्तूबर										
	नवम्बर										
	दिसम्बर										

(१०) काँच और काँच का सामान

वर्ष		७८ कांच की चादरें (००० वर्ग फुट)	७९ प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	८० बिजली की बत्तियों के खोल (लाख बत्तियां)	८१ कांच का अन्य सामान (टन)
१९४६		८,७३६ ०			
१९४७		५,७१९ २			
१९४८		६,२५५ ६	१,६२०	१११ ६	६३,५१९
१९४९		३,४५१ २	१,६८०	९१ २	६४ ४२८
१९५०		९,५७० ०	२,१६०	१२९ ६	७२,२१६
१९५१		११,०८९ २	१,६८०	१४४ ०	९०,३२४
१९५२		९,०४३ २	१,४७६	१६६ ८	८५,३६८
१९५३		१२,७८६ ८	१,३९२	१९९ २	६७,७७६
१९५४	जनवरी	२,२५३ ४	१७०	१७ ३	७,२१९
	फरवरी	२,१४८ ४	११९	१३ २	५,२६०
	मार्च	२,४०६ ७	११९	१४ ४	७,२७३
	अप्रैल	१,९६७ २	११६	१३ ०	७,११६
	मई	४६० ८	९०	१६ १	७,०८३
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	जुलाई				
	अगस्त				
	सितम्बर				
	अक्तूबर				
	नवम्बर				
	दिसम्बर				

१. औद्योगिक उत्पादन

(११) रबड़ उद्योग

वर्ष	८२ रबड के जूते (लाख जोड़े)	८३ रबड़ चल सामान, खिलौने गुब्बारे आदि (लाख दर्जन)	८४ टायर मोटर गाड़ियां (०००)	८४ टायर साइकिलें (०००)	८४ टायर ट्रैक्टर (संख्या)	८४ टायर वायुयान (संख्या)	८४ टायर तार (०००फुट)	८५ ट्यूब मोटर गाडियां (०००)	८५ ट्यूब साइकिलें (०००)	८५ ट्यूब ट्रैक्टर (संख्या)	८५ ट्यूब वायुयान (संख्या)
१९४६	२४४ ०		७५० ०	२,६४८ ४				७०० ८	३,७९४ ४		
१९४७			८१० ०	३,२२८ ०				८२० ८	४,३२२ ४		
१९४८	१८७ २	२३३ ४	७७० ४	३ ३६६ ६				७५० ०	३,७८६ ६		
१९४९	१७७ ६	६८ ४	६८६ ४	४,६११ ६				७०१ ०	३,१२- ४		
१९५०	१६५ ६	१०५ ६	६३८ ४	३,३२५ २				६९८ ४	४ २०७ २		
१९५१	२३० ४	११० ४	८७० ४	३ ६४२ ८		२,४७२	३७३ २	८२० ८	४,८९७ २		९९६
१९५२	२२- ०	१३८ ०	७२१ २	४ १८६ २	३,८५२	६८४	३८५ २	६६१ २	४,१६६ ४	५,४८४	९८४
१९५३	२४० ०	१२४ ८	७६८ ०	४ ६४५ २	६,६१२	१,२६६	४४२ ८	६५८ ८	४,६०० ८	८,१३६	५२८
१९५४ जनवरी	२४ ३	९ ५	७० ४	४३१ ३	८२	२९९	२३ ४	५३ ७	४५५ ९	३९१	१०६
फरवरी	२५ ४	१० ४	७२ ५	४३९ ०	१ ०६३	४०१	४३ ७	६२ १	४८५ ६	७८६	१३३
मार्च	२२ ५	१० ४	७३ ६	३९७ ४	१ ४२६	३-७	३७ ८	६७ ८	४२- ७	९९७	१४२
अप्रैल	२६ ३	१३ १	७४ १	४६४ ३	१ ३११	३७८	३३ १	७१ ३	४९९ ८	७६७	५६
मई	२५ ५	११ ९	७४ ०	४४७ २	२ १७४	३३२	१७ ८	७० ८	४ ३ ६	२,०७७	१०१
जून	२२ ५	१७ ८	७३ ०	४१० १	१ ५-४	४२१	अप्राप्त	६५ ६	४९७ १	८८८	१११
जुलाई											
अगस्त											
सितम्बर											
अक्तूबर											
नवम्बर											
दिसम्बर											

रबड़ उद्योग (शेषांश)

वर्ष	८६ रबड के नल रेडियेटर (०००)	८६ रबड के नल वेकुअम ब्रेक (०००)	८६ रबड के नल अन्य प्रकार के (०००फुट)	८७ पट्टा के पट्टे (०००)	८८ रेलों का रबड का सामान (०००)	८९ इबोनाइट (००० पौंड)	९० पानी रोकने वाले वस्त्र (००० गज)	९१ रबड़ के स्पंज (००० पौंड)
१९४६								
१९४७								
१९४८								
१९४९	१०० ८	३२७ ६	१,८८५ २	४८ ०	१,४१० ०			
१९५०	२०६ ४	३३३ ६	२,८२० ०	१६० ८	९६१ २			...
१९५१	२२० ८	४७२ ८	३,४७४ ०	२९८ ८	७४८ ८	१९९ २	१,५७६ ८	४७१ ६
१९५२	१५४ ८	४४४ ०	३,८४९ ६	५५८ ०	१,२१६ ८	१२६ ०	१,२९४ ८	६३९ ६
१९५३	१४० ४	४७२ ८	४,३७४ ०	४३२ ०	१,२३३ ६	८८ ८	२,०५४ ४	४९५ ६
१९५४ जनवरी	११ ४	२७ २	३५१ २	५३ ४	१२८ ■	८ ७	१८० ३	५१ ७
फरवरी	८ ६	२७ ०	३४७ ■	४८ ९	१२४ ६	९ ७	१९२ ६	७४ ०
मार्च	१० ७	३५ ४	३५० २	४३ २	१०४ ७	७ ३	१७२ ६	६८ १
अप्रैल	१२ ६	५० १	३६३ ०	४० ३	५० ७	७ २	२०७ ६	७३ २
मई	१२ २	७० २	४०४ ७	३८ ९	९२ ५	६ ६	२५० ४	७८ ३
जून	११ ३	अप्राप्त	४३१ ६	३७ ४	अप्राप्त	८ ९	२१९ २	९० ४
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(१२) खाद्य और तम्बाकू

वर्ष		९२ [अ] गेहूँ का आटा (००० टन)	९३ [ट] चीनी (००० टन)	९४ [ठ] काफी (टन)	९५ [ड] चाय (लाख पौंड)	९६ नमक (००० मन)	९७ वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुएं (टन)	९८ सिगरेट (लाख)
१९४६			९२२ ८	२४,०४-	५,५१४ ०	४७,८६८	१,३५,०६६	
१९४७			९०१ २	१६,८४-	५,६१३ ६	५१,६००	९५,११२	१,८८,७१६
१९४८			१,०७५ २	१६,१२-	५,६८६ ८	६३,५२८	१,२९,६६६	२,१८,२४४
१९४९		४१७ ६	१,००० ८	२२,३८०	५,८५० ०	५५,६२०	१,५५,५४४	२,१८,९०४
१९५०		४७७ ६	९७६ ८	२०,४१२	६,०६६ ०	७१,३१६	१,७१,६३६	२,३६,२६२
१९५१		४८६ ०	१,११४ ८	१८,०९६	७,३०१ २	७४,३७६	१,७२,३२०	२,१४,६८०
१९५२		५,१२ ४	१,४६४ ०	२२,०९६	६,२२६ ८	७६,८६०	१,९०,८१२	२,०१,१६२
१९५३		४८३ १	१,२६१ २	२२,५७२	६,०८१ ६	८६,३१६	१,६१,३५२	१,६६,७६४
१९५४	जनवरी	३५ ४	३०३ ६	२,६०१	६४ ०	?,८८६	२५,८६३	१७,१९७
	फरवरी	३६ २	२५१ ?	४,८४१	५७ ५	३,६८३	१८,२१७	१६,१११
	मार्च	३६ १	१५५ १	६,?९०	१०० ८	६,६६२	१६,८०३	१६,६२५
	अप्रैल	४० ७	४२ ५	४,३८४	३४७ ६	१२,५५६	२२,७७८	६,८८४
	मई	३६ ८	२ ६	३,७३६	५६३ ७	१७,८६४	अप्राप्त	६,१९०
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	८,८१४
	जुलाई							
	अगस्त							
	सितम्बर							
	अक्तूबर							
	नवम्बर							
	दिसम्बर							

[अ] ये आँकड़े केवल बड़ी आटा मिलों के हैं। [ट] ये आँकड़े फसली साल (नवम्बर से अक्तूबर) तक के हैं और केवल गन्ने से बनने वाली चीनी के विषय में हैं। [ठ] ये आँकड़े शोधने और पीसने के पश्चात् काफी भण्डार में दे दी जाने वाली काफी के विषय में हैं। [ड] ये मासिक आँकड़े पंजाब (काँगड़ा और मण्डी रियासत) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष		९९ जूते, पश्चिमी ढंग के (००० जोड़े)	१०० जूते, देशी ढंग के (००० जोड़े)	१०१ कमाया चमड़े का कोम (०००)	१०२ वनस्पति साधनों से कमाया हुआ गाय भैंस का चमड़ा (०००)	१०३ चमड़े जैसा कपड़ा (००० गज)
१९४६						
१९४७						...
१९४८		३,२०१ ६	२,०९७ ६	१,०८७ २	१,६५८ ४	
१९४९		२,८५० ०	२,१०८ ४	५८० -	१,८३४ ८	
१९५०		२,८३६ ८	१,६६६ ८	४६५ ६	१,५१४ ४	
१९५१		३,६४० ८	२,०७३ ६	८७१ ६	१,७०१ ०	१,६१८ ८
१९५२		३,३६७ २	१ ८०६ ०	६५० ४	१,४७- ४	९३४ ८
१९५३		३,३४८ ०	२ २०४ ४	७०० -	१,२६८ ४	९८८ ४
१९५४	जनवरी	२९९ ४	१९५ ६	५९ ६	१२० २	८? ३
	फरवरी	३?७ ५	१८७ ८	६६ १	१२० ६	६५ २
	मार्च	३२२ ?	१३८ ३	७? ९	१३८ ४	६७ ८
	अप्रैल	२९४ ९	१४५ ५	६६ ६	१३१ ४	८७ ४
	मई	२७० १	१६० ४	५९ ३	९२ ८	९५ २
	जून	२५२ ७	१६० ३	५७ २	९२ ३	अप्राप्त
	जुलाई					
	अगस्त					
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

१. औद्योगिक उपादन

(१४) अन्य उद्योग

वर्ष		१०४ खनिज कोयला (००० टन)	घाय की पेटिया	१०५ प्लाइवुड (००० वर्ग फुट) व्यापारिक	छपाई और लिपाई का	योग	१०६ कागज (टन) लपेटने का	विशेष किस्म का कटा	गत्ते	योग
१९४६		२८,८८४	३५,४००	२३,४००	५८,८००	६४,८९६	१५,६८४	६,८२८	१८,५८८	१,०५,९९६
१९४७		३०,०००	२८,५६०	५,७३६	३४,२४६	५२,७७६	१६,८४८	५,३१६	१८ १५६	९३ ०९६
१९४८		२९,८२०	४५,१०८	८,६२८	५३,७३६	५०,३७६	१७,३८८	१२,९१२	१७,२३२	९७ ९०८
१९४९		३१,४५२	३८,४००	९,२४०	४७,६४०	५६,४८४	१२,८७६	११,९०४	१८,९३६	१,०३,२००
१९५०		३१,९९२	४१,३७६	८,८४४	५०,२२०	७०,१५२	१४,६१६	५,१९६	१८,९४८	१,०८,९१२
१९५१		३४,३०८	६०,६४८	१०,२००	७०,८४८	७५,२६०	२५,४८८	३,१२०	२४,०४८	१,३१,९१६
१९५२		३६,२२८	७८,२२८	१०,३१२	९०,५४०	९१,४७८	२१,५४०	२,८२०	२१,७२०	१,३७,५०८
१९५३		३५,८४४	४९,५००	११,३७६	६०,८७६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१,३८,२१६
१९५४	जनवरी	२,९०३	४,२६३	८६२	४,९२८	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१०,३२८
	फरवरी	३,०५६	४,७७२	८८९	५,६६१	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	९,३८५
	मार्च	३,०७१	३ ७४१	६६२	५,४०३	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	११,४७३
	अप्रैल	३,०३७	३ ९७४	६३९	४,६१३	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	११,७९४
	मई	२,९७७	३,६२९	८३५	४,४६४	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१०,२२४
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१३,०१७
	जुलाई									
	अगस्त									
	सितम्बर									
	अक्तूबर									
	नवम्बर									
	दिसम्बर									

(१४) अन्य उद्योग (शेषांक)

परिवहन

वर्ष		१०७ मोटर गाड़िया (संख्या) कारें	ट्रक	योग	१०८ साइकिलें पूरी तैयार (मूल्य ००० रुपये)	हिस्से
१९४६					४२,९८४ (ढ)	९९३ ६ (ढ)
१९४७					३१,८६० (ढ)	१,७१८ ४ (ढ)
१९४८					६१,८९६	२,११४ ८ (ण)
१९४९		६,६७२	१५,१३२	२१,८०४	८०,०२८	१,७९९ ४ (ण)
१९५०		६,५८८	८,०१६	१४,६०४	१,०३,१५२	६,४५२ २ (ण)
१९५१		१२,३८४	९,८८८	२२,२७२	१,२४,२७६	९,४३० ४
१९५२		६,९४८	८,३४०	१५,२८८	१,९६,९५६	८,२४७ ६
१९५३		४,९३२	८,९८८	१३,९२०	२,६४,१६८	१०,१९४ ०
१९५४	जनवरी	२७७	९९६	१,२७३	१८,६००	८५७ ०
	फरवरी	अप्राप्त	अप्राप्त	१,२१३	२२,५६३	७९९.०
	मार्च	५००	७९९	१,२९९	२७,८३५	८६१ ५
	अप्रैल	अप्राप्त	अप्राप्त	८३६	२६,३०४	६३७ ९
	मई	अप्राप्त	अप्राप्त	८१६	३३,०७३	९४५ १
	जून	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१,०४३ ३
	जुलाई					
	अगस्त					
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लाख रुपयों में)

व्यापारी माल	१९४८-४९	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५३-५४ (अप्रैल-मई)	१९५४-५५ (अप्रैल-मई)
(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	४,२१,०४	४,७२,०७	५,७८,६८	७,०१,७५*	५,५३,७७	५,१५,६६	७७,८८	६८,०५
स्थल द्वारा	३०,३९(अ)	२७,८८	१७,८१	२७,१४*	१८,८४	७,४९	७८	१,०१
योग	४,५१,४३	४,९९,९५	५,९६,७९	७,२८,८९*	५,७२,६१	५,२३,१५	७८,६६	६९,०६
(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात (केवल समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१. खाद्य, पेय और तम्बाकू	९२,३०	२,१५,८८	२,३५,८२	२,५८,२५	२,४३,३०	२,२२,१३	१७,४७	१४,२६
२. कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिर्मित माल	९७,८७	२,०४,२६	२,२५,७७	२,३६,६८	२,४६,२७	२,०६,८६	३१,३७	१५,२३
३. पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल	२,२६,०६	२,४६,७४	३,१४,७८	४,००,०६	२,६०,०८	२,५३,२५	३८,३४	३७,६७
योग [जिसमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं] ..	४,२१,०४	४,७२,०७	५,७८,६८	७,०१,७५	५,५३,७७	५,१५,६६	७७,८८	६८,०५
(ग) पुनर्निर्यात (संक्रमण व्यापार छोड़कर)	७,२६	६,०७	४,५६	४,०५	५,०४	४,७९	१,१७	१,०७
(घ) कुल निर्यात	४,५८,७२	५,०६,०२	६,०१,३५	७,३२,६४	५,७७,६५	५,२७,६४	७९,८३	७०,११
(ङ) आयात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,५७,१७	५,९४,२४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३६,०७*	५,५१,०२*	१,२४,५७	९६,६५
स्थल द्वारा	८५,०० (अ)	३३,७१	४२,७९	८०,४५	२५,१६	२२,६६	१,३७	२,८३
योग	६,४२,१७	६,२८,०५	६,२३,९६	९,५५,०९	६,६१,२३	५,७३,६८	१,२५,९४	९९,४८
संक्रमण व्यापार छोड़कर		३,१४	६०	८०	१९	१२	१	८
(च) शुद्ध आयात	६,४२,१७	६,२४,९१	६,२३,३६	९,५४,२९	६,६१,०४*	५,७३,५६*	१,२५,९३	९९,४०
(छ) आयात (समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१. खाद्य, पेय और तम्बाकू	१,२७,१२	२,५६,६४	२,२०,६१	२,६२,०७	१,७५,६५	९२,७४	११,०३	९,५५
२. कच्चा माल और उपज तथा मुख्यतः निर्मित वस्तुएँ	१,२७,५७	२,४४,२७	१,९८,८१	२,५६,०८	१,७६,१६	१,९१,५५	३२,३६	४६,८४
३. पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित वस्तुएं	२,६७,६०	२,८८,९३	२,९९,५४	३,५१,४६	२,७६,३७	२,७६,०३	४७,०१	४४,७८
योग [जिसमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं]	५,५७,१७	५,९४,२४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३५,४९	५,४२,२६	१,११,२०	९६,६१
(ज) व्यापारी माल का व्यापार सन्तुलन	—१,८३,४५	—१,१८,८९	—२२,०१	—२,२१,६५	—८६,३९	—४५,९२	—३६,०८	२९,२७

*अनाज दान तथा कर्जे के अन्य आदान का मूल्य भी सम्मिलित है।

(अ) केवल पाकिस्तान के लिये।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) खाद्य, पेय और तम्बाकू

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मछलियाँ (००० हंडरवेट)	प्याज* (००० हंडरवेट)	काजू की गिरी (००० हंडरवेट)	इलायची (००० हंडरवेट)	गोल मिर्च (००० हंडरवेट)	चाय (लाख पौंड)	तम्बाकू, निर्मित (लाख पौंड)	तम्बाकू, निर्मित (००० पौंड)
१९४८-४९	परिमाण	२३५	३०६	३६६	२८	२४२	४४,२०‡	६,६०	४,६७९*
	मूल्य	१,४७	५०	४,६३	७३	२,१७	६६,२४‡	६,४६	५,३८
१९४९-५०	परिमाण	३२१	७३५	३७६	१६	३१३	४४,५०	६,९०	४,२३७*
	मूल्य	१,६१	१,२६	५,६१	१,२५	१४,२०	७२,६१	११,६४	४,१०
१९५०-५१	परिमाण	३८७	१,२५६	५०८	१२	१०८	४४,२०	१०,३०	११,८२८
	मूल्य	२,४६	१,१५	८,५५	१,४८	१०,४०	८०,४२	१४,११	४,३५
१९५१-५२	परिमाण	४३५	६२५	४२६	१४	२६८	४२,६०	११,२०	१२,३५६
	मूल्य	३,२८	१,०७	६,०३	१,६४	२३,२२	६३,८६	१३,१४	६,३६
१९५२-५३	परिमाण	४८८	९६४	५५८	२०	२४८	४२,७०	८,००	५,१४२
	मूल्य	३,८७	११३	१२,६८	१,६६	१३,०६	८०,८८	१२,०३	२,५४
१९५३-५४	परिमाण	५३६	४६६	२७	१८	२४८	४७,१०	६,५०	२,६७८
	मूल्य	४,१६	६८	१०,६३	१,३४	१२,७२	१,०२,१४	१०,२२	२,०४
१९५४-५५ :									
अप्रैल	परिमाण	६	१२	३१	१	३३	६०	२०	२६
	मूल्य	८	१	५७	६	१,२४	२,३१	२७	१
१९५३ ५४ :									
अप्रैल	परिमाण	२३	५०	४७	१	२४	२,००	६०	१४५
	मूल्य	२१	६	१,०१	७	१,६८	३,६२	८६	५

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा।

(अ) विचाराधीन।

‡ अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजे गये माल के आंकड़ों को छोड़कर

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यत: अनिर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		कोयला (००० टन)	अबरक (००० हंडरवेट)	लाख (००० हंडरवेट)	चमड़ा, कच्चा (००० हंडरवेट)	खालें, कच्ची (००० हंडरवेट)	पुराना लोहा व इस्पात पुनर्निर्माण के लिये (००० टन)	खनिज लोहा (००० टन)	खनिज लोहक (००० टन)	आँवले (००० हंडरवेट)	हड्डियाँ कारखानों के लिये (००० टन)
१९४८-४९	परिमाण	१,३३२	३४०	४५१	४२	२०४	नगण्य		३०६	६१२	३१
	मूल्य	४,४८	५,६४	८,६६	४६	४,६८	नगण्य		१,८१	५५	५७
१९४९-५०	परिमाण	२,३२३	२६८	४५६	१६	२५८	०.२	४	७३६	८४५	१७
	मूल्य	७,६३	६,८५	८,०६	२१	६,५६	०.३१	१	५,८५	६०	६६
१९५०-५१	परिमाण	९९४	४०७	६६२	३८	२४८	२	८५	८२१	८२१	४५
	मूल्य	३,४४	१०,००	१९,८६	६६	८,७४	४	२२	~,०१	१,०३	१,१६
१९५१-५२	परिमाण	२,८०१	४०८	७१४	२४	२२०	४३	२८०	१,१२५	८६७	४६
	मूल्य	६,५५	१३,२१	१४,८७	६२	७,६२	७०	१,००	१५,६६	१,२३	२,२८
१९५२-५३	परिमाण	२,९६८	२८४	६८८	१	२२६	४७६	८११	१,४४०	५६३	७२
	मूल्य	१०,०३	६,०१	७,६१	२	५,५४	१०,२३	३,७१	२१,७६	४८	२,२७
१९५३-५४	परिमाण	१,९१७	२५०	५३८		२०७	२५०	१,२००	१,५६८	६६७	६६
	मूल्य	६,८८	७,६५	६,७६		६,०६	४,६७	५,५३	२४,२५	६२	२,०४
१९५४-५५ अप्रैल	परिमाण	१६१	१४	२७		२३	७	४६	७६	१६	६
	मूल्य	५५	४०	३७		७२	१२	१८	९५	१	१६
१९५३-५४ अप्रैल	परिमाण	१७७	३१	४३		१८	५६	८३	१४१	२१	७
	मूल्य	६४	७४	४४		५२	१,१६	३७	१,९३	२	२१

(अ) विचाराधीन।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यत अनिर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मूंगफली का तेल (००० गैलन)	अरण्डी का तेल (००० गैलन)	अलसी का तेल (००० गैलन)	मूंगफली (००० टन)	अरण्डी का बीज (००० टन)	अलसी (००० टन)	रूई, कच्ची (००० टन)	रूई, रद्दी (००० हंडरवेट)	पटुआ, कच्चा (००० हंडरवेट)	ऊन, कच्ची (००० पौंड)
१९४८-४९	परिमाण	८,६५१*	३,००६	२,२८१	३८		२५	७६	१,०१७	६६५	८,६५८
	मूल्य	६,७०	२,१८	१,४८	३,१३		१,३६	१४,०१	५,१५	३,३६	१,०६
१९४९-५०	परिमाण	७,०४६*	१,११८	१,७७३	११६	५	७१	५८	१,५११	३४१	२७,३६३
	मूल्य	५,४४	९९	१,२८	६,०४	२८	४,५६	१०,६१	८,२२	१,७५	३,७१
१९५०-५१	परिमाण	१६,६६१	५,८६८	१,३५६	३-	७६	६८	१५	१,३०७	२७१	२५,३७१
	मूल्य	१६,७४	४,३५	१,१०	३,५७	५,६२	५,९७	४,६४	१२,४१	१,२८	७,८७
१९५१-५२	परिमाण	५,११६	५,५२२	६,०७७	२०	१	७	३३	९२३	४१७	१८,२९५
	मूल्य	४,३२	६,५७	५,६६	२,३५	१६	७०	१३,६८	७,३५	२,४८	४,६०
१९५२-५३	परिमाण	१६,१६०	८,६२७**	६,८१२*	१३	४	नगण्य	७१	१,२५६	३४२	३७,६६६
	मूल्य	१०,४७	७,७२	४,८२	१,४०	९८	०.५३	१६,३१	६,६४	१,४२	८,४१
१९५३-५४	परिमाण	३६०	४,५६५**	६३८**	५			३५	१,२६६	३५५	२०,६६१
	मूल्य	२५	३,२६	५६	६३			६,४०	६,८७	१,१४	५,८७
१९५४-५५ अप्रैल	परिमाण		४७३	५१	५४		..	२	८५	३१	४,२१८
	मूल्य		२८	३	५३			६८	७०	६	१,१४
१९५३-५४ अप्रैल	परिमाण	२६५	१,७०१	२८८	२			६	६१	२२	१,०७३
	मूल्य	१८	१,१४	२७	३८			१,६३	७३	७	३१

* केवल समुद्र मार्ग द्वारा।

** अपूर्ण।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		कमाया हुआ चमड़ा (००० हंडरवेट)	कमाई हुई खालें १००० हंडरवेट)	रुई ओटी हुई (००० पौंड)	सूती होज़ियरी	सूती कपड़ा (करघे का) (लाख गज)	सूती कपड़ा (मिल का) (लाख गज)	सिलाई का धागा (मुख्यतः सूती माल से बना हुआ)	बोरिया (०००टन)	टाट (०००टन)	नकली रेशम का कपड़ा (००० गज)	ऊनी कालीन व कम्बल (००० पौंड)	नारियल की जटा से बनी वस्तुएं (००० हंडरवेट)
१९४८-४९	परिमाण	१८६	१०४	७,४०८			३६,१०**		४५७	४३५	२४,४८०	८,३३४	८६६
	मूल्य	४,६६	७,७०	१,२६	६५		३६,५४**	५१	६१,४७	८०,७२	५,१६	२,६१	४,४७
१९४९-५०	परिमाण	३१५	१६२*	६७,८३५(अ)			७० ६०		४३४	३०६	१२,२३०	१०,४६५	१,४२४
	मूल्य	८,५३	११,८३	१२,४०	७६		५६,६८	८१	६२,८२	५७,२५	१,४६	३,११	७,२१
१९५०-५१	परिमाण	३४१	१४८(अ)	७५,०६१		६,००	१,२२,५०		३४५	२६६	६,६६०	१४,०६१	१,५६०
	मूल्य	१२,०२	१३,३३	१७,२८	८६	१०,८८	१,१२,१७	१,७१	५५,३६	५२,६१	६७	५,५६	१०,८१
१९५१-५२	परिमाण	३३५	१२४(अ)	६,१८२(अ)		४,०० (अ)	३८,८०		४७३	२८७	८,४१४	११,५६१	१,२१६
	मूल्य	१३,६१	११,४१	१,६७	१,८०	८,१०	४२,६५	२,४६	१,३५,२६	१,२४,५८	१,१७	५,८८	१०,१६
१९५२-५३	परिमाण	३१३	१५५*	१८,०४३		५,५०	५६,५०(अ)		३७१(अ)	३०४	३,६७५	७,१२८	१,२८२
	मूल्य	६,३२	१०,८६	४,४१	६६	८,७४	५३,२८	२,५५	६१,३६	६३,०८	५२	२,८०	७,१६
१९५३-५४	परिमाण	३६४	१६८	७२,५८४		६,३०	७०,६०(अ)		३५४	३८६	३,१७७(अ)	८,६६७	१,५२२
	मूल्य	१०,८३	१३,६३	४,७६	१,७१	६,५५	५३,५४	३,२६	४०,२६	६६,५०	४६	३,३६	८,१६
१९५४-५५ अप्रैल	परिमाण	१४*	७*	५६		२०	५,८०		३४	२४	१५५	८११	६३
	मूल्य	४८*	६२*	१	६	३५	४,१८	२३	४,०८	४,०८	३	३२	५८
१९५३-५४ अप्रैल	परिमाण	२७*	१२*	२,५८४	..	४०	५ २०		२३	२६	१२१	७२५	८७
	मूल्य	८०*	६६*	५२	६	६८	३,६७	३५	२,६२	४,६२	२	३०	४७

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा। (अ) अपूर्ण।

** इसमें अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया माल सम्मिलित नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) पूर्णत अथवा मुख्यत निर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		पैराफीन मोम (००० टन)	तैयार वस्त्र (होजियरी और जूट तथा जूतों के अतिरिक्त)	ग्लिसरीन* (००० हंडरवेट)	इसबगोल की भूसी** (००० हंडरवेट)	कच्चा लोहा (००० टन)	धातु के बनन तथा कटलरी	यंत्र उपकरण आदि	कांच तथा मिट्टी का सामान	मशीनें और कारखानों का सामान (सीने की मशीनों सहित)	कागज गोंद, गत्ता तथा लिखने की सामग्री	रबड़ से बनी वस्तुयें	धातुएं (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९४८ ४९	परिमाण	१०				४५							
	मूल्य	१,११	७४			६३	५४	६४	२ ३२	२९	४९	१,६७	६८
१९४९ ५०	परिमाण	१६				७१							
	मूल्य	१,५८	५१			६६	६१	७४	३२	६६	३१	६९	५६
१९५० ५१	परिमाण	२०				५४							
	मूल्य	२,२६	१ १५			८६	७-	६६	२६	४७	३३	१,६५	१,२४
१९५१ ५२	परिमाण	३२				२०							
	मूल्य	१,८२	८२			४१	१ २१	१,४७	४३	६५	१,१६	१,०८	१,४१
१९५२ ५३	परिमाण	१६		६१		११							...
	मूल्य	१,३३	२,६५	६०		४१	११०	१,५५	३५	१,२७	८७	१,४२	२,६७
१९५३ ५४	परिमाण	२४		४५	३०	१५							...
	मूल्य	१,५५	१,४६	६६	५३	२१	११२	१,६१	२६	६२	८६	१,७४	१,७७
१९५४ ५५ अप्रैल	परिमाण	२		३	३								
	मूल्य	१३	७	२	४		७	८	२	६	[illegible]	९	१०
१९५३ ५४ अप्रैल	परिमाण	१		६	२					...		...	
	मूल्य	[illegible]	१४	१०	५		६	१२	२	५	४	१३	२६

* अप्रैल १९५२ [illegible] यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

** अप्रैल १९५२ से यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ग) आयात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मूल्य लाख रुपयों मे)

वर्ष	मशीन के पट्टे	रासायनिक पदार्थ	तारकोल के रंग	फल व तरकारियां	अनाज, दालें और आटा*	धातु के बर्तन	यन्त्र, उपकरणादि	हर प्रकार की मशीनें (मशीन के पट्टों सहित)	लोहा, इस्पात तथा तत्सम्बन्धी बनी वस्तुएं	धातुएं (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९४८-४९	२,१२	२०,५७	१२,३४	८,२५*	१,०१,७०	५,६६	१८,८१	८१,५६	१२,११	२२,३३
१९४९-५०	१,०१	७,७६	७,६६	१०,५८	१,३३,८८	६,१४	२०,७९	१,०५,५२	१३,७०	१८,१८
१९५०-५१	१,१९	९,२२	११,९८	१३,५७	८०,७६	४,५७	१७,७९	९३,००	१६,५०	२७,८४
१९५१-५२	१,०७	१६,६०	१४,२७	१३,६०	२,३०,३०	६,१४	२०,४३	१,०४,३१	२१,६७	१,६७
१९५२-५३	१,६१	१२,६८	७,५१	१३,७४	१,५६,७३	४,०५	२२,२२	८७,८६	२३,७१	१६,३७
१९५३-५४	१,०८	१२,६६	१५,७५	१३,७८	७२,४६	४,४७	२१,५६	८५,८४	२१,५७	१४,५१
१९५४-५५ -										
अप्रैल	७	२,४०	१,२१	७२	४	४४	२,६७	६,५४	१,९१	१,५५
१९५३-५४ -										
अप्रैल	४	२,०१	५४	६७	१५,२६	३४	२,१८	८,१३	१,६२	६०

† इनमें अनाज, दाल तथा आटे के अन्य आयात की वस्तुएं भी सम्मिलित हैं।

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

वर्ष	कागज	रूई, कच्ची	ऊन, कच्ची	नकली रेशम का सूत	मोटर आदि गाड़ियों के नीचे के ढांचे	मोटर कारें (टैक्सी गाड़ियां सहित)	औषधियां और दवाइयां	सूती कपड़े	रूई ओटी हुई और सूत	ऊनी माल	रेल भण्डार की वस्तुएं	जूट, कच्चा
१९४८-४९	१३,३७	६४,४८	३,१८	१२,८३	८,६२	७,६४	८,१२*	६,३०	४,५०	३,१०	७,०८	७१,२४
१९४९-५०	७,७४	६३,७६	३,०२	१०,४६	५,३८	३,१८	८,०४	१०,७०	५,७७	१,६४	७,३०	२१,१७
१९५०-५१	९,५०	१,००,७७	५,६२	१४,७१	२,६६	३,२४	१०,५२	१,३१	३०	१३	६,०२	२७,५७
१९५१-५२	१३,१६	१,३७,१८	२,६०	१७,२६	२,८७	४,७६	१५,६०	२,३७	१,८२	४५	१०,८४	६७,०७
१९५२-५३	११,२२	७२,६७	६६	७,८९	२,८८	२,६६	११,४६	१,२९	२,०९	६२	५,७१	१६,४८
१९५३-५४	११,२५	४२,७१	१,६४	१२,०४	३,१५	२,८२	१२,४५	१,०२	१,३१	८५	६,४२	१४,१२
१९५४-५५												
अप्रैल	८४	७,९२	३	६८	२३	२३	९७	८	११	४	५६	८४
१९५३-५४ -												
अप्रैल	६३	७,३८	१२	१,४९	११	३४	१,१२	६	४	४	७४	३५

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	ब्रिटेन		फ्रांस		बेलजियम		जर्मनी		नीदरलैण्ड	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८ ४९	१,५२,९९	१,०२,२६	३,०१	७,३८	७,१०	५,८६	२,२८	२,६१	५,४८	७,१६
१९४९ ५०	१,४३,६६	१,१८,१४	३,८१	५ ४२	७,६२	६ २३	६,४२	६,५१	४,६६	७,३७
१९५० ५१	१,३१,४०	१,३६,८२	११,०७	६ ०१	६,०४	६,८२	१२,०४	१०,६३	६,६८	१०,१६
१९५१ ५२	१,५८,१३	१,८६,६६	१०,७२	१२,३७	६,५२	८,३६	२८,३४	६,३८	१०,६२	७,६२
१९५२ ५३	१,३८,८४	१,२३,२६	१३,५५	५ ६६	६ ६०	६ ६-	२२,६४	१२,४८	१०,८०	१०,३६
१९५३ ५४	१,४२,७१	१,४६,८६	६,६३	५,९२	७,६७	४ ५७	३१,१४	११,५६	११,३०	९,८६
१९५४ ५५ अप्रैल	१३,०६	६३२	६१	२६	४५	२२	२६६	६३	१,१२	४६
१९५३ ५४ अप्रैल	१२ ३६	८,४६	१,०३	५०	३२	४१	१,११	७५	७२	५५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

वर्ष	आस्ट्रिया		हंगरी		पोलैण्ड		चेकोस्लोवाकिया		योगोस्लोविया		तुर्की	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८ ४९	८०	३५	१२	४५	८	३२	२,०८	२,१६	१०	१०	३	६२
१९४९ ५०	५६	५३	६	२३	२६	६८	२,८१	१ ४६	६१	४४	१४	२,३१
१९५० ५१	१,६४	४३	१०	३	३०	४०	२ ७७	१,०८	१२	६	३	२,२६
१९५१ ५२	२,४७	१,०१	३२		३४	२६	२,८१	१,२६	१४	२६	१३	३,५५
१९५२ ५३	२,८६	४२	१६	४	२६	४	२,३५	२,१८	६	११	० ८३	४,६५
१९५३ ५४	२,५१	५७	१०	२	२६	१५	१,१४	३,०६	७	१	० ३१	२,५८
१९५४ ५५ अप्रैल	२६	नगण्य	१	नगण्य	१		१०	७	१		० १	५
१९५३ ५४ अप्रैल	१७	७	० ४६	१	१	१	१२	१३	१	० ३६	नगण्य	४

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—यूरोप (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	स्विट्जरलैण्ड		इटली		स्वीडन		नारवे		फिनलैण्ड		रूस	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८,६६	१,२२	१८,३१	६,५५	६,०६	२,११	४,३५	८६	१,३८	१६	३,७६	५,३६
१९४९-५०	७,५५	२,५४	१४,८३	५,६६	६,२०	२,३६	२,४४	१,०६	१,२७	२०	१६,६८	३,७४
१९५०-५१	७,६१	२,२३	१६,६०	१५,००	५,७८	२,६८	२,२३	१,३३	१,४६	२१	२३	१,३७
१९५१-५२	६,६४	२,०६	२७,६६	७,०६	७,४७	२,५४	३,५८	१,६०	३,१५	१,०६	१,३८	६,६२
१९५२-५३	६,६५	६२	१२,०२	१०,६१	५,६६	१,८२	२,७६	८८	१,८०	३५	२४	८५
१९५३-५४	६,१२	८२	२३,०७	५,१२	६,१८	१,५३	२,६२	४१	१,८७	१२	६०	१,१५
१९५३-५४ अप्रैल	५१	.	१,६३	३६	४८	१२	२१	३	११	१	१	७४
१९५३-५४ अप्रैल	१,३४	४	२,०५	६२	४१	१५	१३	२	१०	१	१	

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	अदन		इराक		ईरान		पाकिस्तान		पूर्व अफ्रीका		मिस्र	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,७७	२,००	१,२७	१,३६	२०,५०	३,१४*	१,०७,३७	७६,६६	१४,०२	५,५४	३१,६०	६,७२
१९४९-५०	१,४३	७,११	३,३८	४,०२	३२,५०	४,८२	४४,०५	४३,३०	१८,४२	६,०३	४०,२४	७,६४
१९५०-५१	१,१६	६,७६	४,२६	२,८६	३७,१४	५,६८	४३,६५	३०,६०	२२,४३	६,०६	३२,८७	५,८७
१९५१-५२	८६	६,३०	३,६१	३,१६	२८,६३	४,१७	८७,५०	४६,२६	२३,६६	१२,१०	४०,४६	६,४६
१९५२-५३	५६	६,३२	२,०५	२,११	२,५०	२,०७	२१,८८	३२,१४	२४,१३	११,३६	१५,१२	५,६६
१९५३-५४	३२	६,०३	२,५६	२,४४	२,०४	१,५३	१६,३०	८,०४	२०,१७	१०,७६	२७,६६	३,५३
१९५४-५५ अप्रैल	१	५०	१६	१२	५५	१६	१,०४	६७	२,२७	६५	३,६८	१२
१९५३-५४ अप्रैल	३	१,४६	६	१३	५	२	६०	३८	३,८५	८०	३,१७	५२

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका *(गत तालिका से आगे)*

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	मोजाम्बिक		लंका		बर्मा		मलाया संघ, (सिंगापुर सहित)		थाईलैण्ड		जापान	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	२,४७	८७	२,७३	११,३१	२६,२९	१०,४६	६,६०	५,३४	८,५३	३,३७	३,३८	४,५६
१९४९-५०	३,००	६२	२,७३	१६,८२	१४,१७	१४,६३	१४,४८	१७,६८	१२,२४	४,१६	२१,३८	५,८७
१९५०-५१	४,४४	५२	४,५३	१६,६८	१८,८०	२२,४९	१६,६६	३६,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५१-५२	३,४२	६२	९,६०	१६,८१	२३,३५	१६,७६	२२,०६	१५,८१	११,६४	८,७६	२४,६५	१४,८१
१९५२-५३	५,६५	६४	४,२६	२०,०८	२६,४७	२२,३८	१४,८२	१८,८६	७,७२	४,३६	१५,८२	३१,६६
१९५३-५४	४,४८	७०	५,०८	१८,१२	१७,५५	२१,०६	२०,४५	१४,२१	४५	३,६२	१३,०६	२३,६०
१९५४-५५ : अप्रैल	२४	४	६५	५४	३२	१,४९	२,०२	६६	०.२७	३०	७४	१,१८
१९५३-५२ : अप्रैल	६२	६	२८	१,०६	१,६१	१,३९	१,११	१,१०	१	३०	१,२७	२,६५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका		कनाडा		अर्जेन्टाइना		आस्ट्रेलिया	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,०६,१३	७०,६८	१०,६६	८,३६	१३,८८	१६,६८	३०,०३	३०,६५
१९४९-५०	६५,४१	८१,५३	२२,६३	११,०६	८,६६	७,७८	४७,७५	२६,३६
१९५०-५१	१,२७,८७	१,१५,३८	२१,०२	१३,७६	५	१०,६५	३३,४९	३०,४१
१९५१-५२	२,८८,७०	१,३२,३६	१८,८१	१६,२६	७६	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५२-५३	१,८१,४१	१,१२,७९	२६,३१	१२,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,६८
१९५३-५४	७६,२९	६०,४६	१४,२०	१३,०६	२	१६,५७	२५,६६	१७,९३
१९५४-५५ : अप्रैल	६,५०	६,१०	३४	१,२४	नगण्य	४१	४७	१,७६
१९५३-५४ अप्रैल	१२,७१	८,७०	१,५०	१,२३		६१	२,८६	१,०५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३ रु० आ० पा०	जनवरी रु० आ० पा०	फरवरी रु०आ०पा०	मार्च रु०आ०पा०	अप्रैल रु०आ०पा०
खाद्य पदार्थ							
१ चावल							
(१) साधारण (न)	कलकत्ता	मन	१६ १२ ०	१६ १२ ०	१६ १२ ०	१६ १२ ०	१६ १२ ०
(२) लाल	पटना	,,	२४ ० ०	१६ ० ०	१७ ० ०	१७ ० ०	१७ ० ०
(३) अन्नगड्डा (उ)	विजयवाड़ा	,,	१४ ६ ३	१४ ६ ३	१४ ६ ३	१४ ६ ३	१४ ६ ३
२ गेहूं							
(१) साधारण	सम्बलपुर	,,	२१ ५ ०	१८ १३ ०	१८ ६ ०	१७ ६ ०	१५ १२ ०
(२) ,,	अमृतसर	,,	१४ २ ५	१६ ० ०	१६ १२ ०	१६ १४ ०	१८ ११ ०
(३) ,,	हापुड़	,,	१६ १४ ०	१७ ४ ०	१६ ४ ०	१५ ५ ०	१६ ० ०
३ ज्वार	अमरावती	,,	११ ४ ०	१० १० ०	१० ४ ०	९ १० ०	१० २ ०
४ बाजरा	हैदराबाद शहर	२४० पौंड का पल्ला	२६ ० ०	२४ १२ ०	२५ १५ ०	२८ ८ ०	२७ ० ०
५ चना							
(१) देशी	पटना	मन	१७ ८ ०	१५ ० ०	१५ ० ०	१३ ० ०	१२ ८ ०
(२) ,,	हापुड़	,,	१६ १२ ०	१४ ८ ०	१३ ८ ०	११ १० ०	१३ ० ०
६ दाल							
अरहर	,,		१४ ६ ०	१० ० ०	१० ४ ०	९ १४ ०	१० १२ ०
७ चाय							
(१) आन्तरिक उपभोग के लिए	कलकत्ता	पौंड	१ ६ ३	१ १३ २	१ ९ ११	१ १४ ९	२ १ ०
(२) निर्यात —							
(क) निम्न मध्यम ब्रोकन पीको	,,	,,	१ ११ ०	अप्राप्त	२ १ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम ब्रोकन पीको	,,	,,	१ १२ ६	अप्राप्त	२ २ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
८ काफी							
(१) प्लाण्टेशन पानेरी (गोला)	मंगलौर	हण्ड्रेडवेट	५९ ० ०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२३२ ८ ०
(२) दशा चपनी	,,	,,	१६० ० ०	१७३ ८ ०	१६६ ० ०	१६० ० ०	१४७ ८ ०
९. चीनी (क)							
(१) डी २८	कानपुर	मन	२९ ३ ३	३० ० ४	३० ६ ७	३० ५ ३	३३ १४ ४
(२) ना २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) ई २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१० गुड़							
(१) खाने के लिये	अहमदनगर	,,	२४ ० ०	१९ ८ ०	१८ ० ०	१६ ० ०	१९ ० ०
(२) ,, ,,	मुजफ्फरनगर	,,	२१ १४ ०	१५ १४ ०	१५ १० ६	१६ ६ ०	२१ ११ ०

(न) नियन्त्रित मूल्य (उ) उचित मूल्य मन = ८२—२ ७ पौंड।

(क) कारखाने से चलते समय का मूल्य। बंगाल मन = ८२—२ १५ पौंड।

* इस तालिका में सम्मत भाव प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह के लिये गये हैं।

के भाव : १९५४*

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०				
१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२ ०	अप्राप्त				
१७- ०-०	१४- ०-०	१४- ० ०	१५ ० ०				
१४- ६-३	१४- ६-३	१४- ६-३	१५ १० ८				
१४- ६-०	१४- ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त				
१४- ०-६	१०- ०-०	१०-१४-०	१२- ६-०				
१३- ८-०	११ १२-०	१२- ४-०	१२- २ ०				
१०- २-०	९- ०-०	९- ४-०	अप्राप्त				
२३-१२-०	२६- ९-०	२७ ० ०	२९ ४-०				
१२- ८-०	११- ०-०	१० ८-०	११ ०-०				
१२- ४-०	१०- ४-०	१० ०-०	९- ८-०				
१०- ५-०	८- २-०	७-१५-०	७ ४-०				
१-१२-८	अप्राप्त	२ ०-११	२ २-७				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२ १२-०				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२ १२-९				
२२२- ८ ०	२१९- ०-०	२२०- ०-०	२२०- ० ०				
१५२- ०-०	१६२- ८-०	अप्राप्त	अप्राप्त				
३१- ९-४	३०- ८ ७	३१- ० ५	३१-१२-०				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३०- २-०				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त				
अप्राप्त	१९- ०-०	१७ ८ ०	१७ ८ ०				
२०-१०-०	१७ १०-०	१९ ०-०	२१- ८-०				

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
११ नमक			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(१) साम्भर (न)	ग्ल्ला	मन	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०
(२) काला	बम्बई	,,	१ २ ०	१ २ ०	१ २ ०	१ २ ०	१ २ ०
१२ तम्बाकू							
नानी पूला मध्यम (साधारण औसत दर्जे का)	कलकत्ता	बंगाल मन	११० १३ ६	१२० १३ ६	१२० १३ ६	१२० १३ ६	अप्राप्त
१३ काली मिर्च							
(१) एलेप्पी (बिना छुआ हुइ)	,,	,,	३२० ० ०	२२० ० ०	१८० ० ०	१६० ० ०	१७० ० ०
(२) छुआ हुइ	कोचीन	हन्डरवेट	२०१ ११ ०	२२५ ० ०	२१० ० ०	२६७ ८ ०	२६० ० ०
१४ काजू							
भारतीय	मंगलौर	मन	७१ ६ ६	१२ १० ७	१२ १० ७	१३ १४ १०	१५ ३ ०

औद्योगिक कच्चा माल

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ रुई, कच्ची							
(१) जाराला एम जी एफ	बम्बई	७८४ पौंड का कैंडी	७ ७ ० ०	७६३ ० ०	८२० ० ०	७५४ ० ०	७५२ ० ०
(२) २१६ एफ पा अमेरिका एम जी	,,	,,	६ ७ ० ०	अप्राप्त	६८६ ० ०	६१८ ० ०	६१७ ० ०
(३) बंगाल देशिया एम जी	,,		५८० ० ०	६२५ ० ०	६४० ० ०	६२० ० ०	५६५ ० ०
२ जूट कच्चा							
(१) फस्ट्स	कलकत्ता	४०० पौंड की गांठ	१६० ० ०	१७० ० ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०	१७५ ० ०
(२) लाइटनिंग		,,	१४५ ० ०	१६० ० ०	१५० ० ०	१५० ० ०	१६० ० ०
(३) भारतीय जूट मिश्रित	,,	मन	३२ ० ०	३५ ० ०	३२ ८ ०	३२ ० ०	३३ ० ०
३ रेशम कच्चा							
(१) ४०० तन्तु खामरू	मान्डा	सेर	५ ० ०	५५ ० ०	५६ ० ०	६२ ० ०	६४ ० ०
(२) चरखा बान्धा किस्म का	बंगलौर	२६ तोले का पौंड	५ ८ ०	२८ ० ०	२७ ८ ०	३१ ० ०	२६ ८ ०
४ ऊन, कच्चा							
(१) जोरिया सफेद बढ़िया	बम्बई	मन	२७७ ८ ०	अप्राप्त	२७० १० ०	२६७ १० ०	२७७ ११ ३
(२) तिब्बती	कालिम्पांग पहुँचने पर	,,	१ ५ ० ०	१३५ ० ०	१६७ ८ ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०				
२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८ ०				
१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०				
अप्राप्त	१०५-१३-९	१०५-१३-९	९६-१३-९				
१५५- ०-०	१५०- ०-०	१३०- ०-०	१३०- ०-०				
२४०- ०-०	१५५- ०-०	१८७-१५-०	२४९- ३-०				
१२-१०-६	१३-१४-९	१२-१०-७	१२-१५-७				
७५०- ०-०	७२५- ०-०	६९७- ०-०	७०७- ०-०				
९१०- ०-०	८८८- ०-०	८५७- ०-०	८९३- ०-०				
६०५- ०-०	५७५- ०-०	५५०- ०-०	५१५- ०-०				
१६५- ०-०	१५५- ०-०	१४०- ०-०	१४०- ०-०				
१५०- ०-०	१४०- ०-०	१२५- ०-०	१२५- ०-०				
३२- ८-०	अप्राप्त	२७- ०-०	२७- ० ०				
६६- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०				
३०- ०-०	अप्राप्त	२८- ०-०	२९ ०-०				
२७७-११-३	२७७-११-३	२७२- ९-०	२६७- ७-०				
१७२- ८-०	१७५- ०-०	१७५- ०-०	१६५- ०-०				

३. देश मे वस्तुओं

वस्तुए	बाजार	इकाइ	अगस्त १६५३	जनवरा	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
५ मूॅगफली							
(१) बडादाना	बम्बइ	हडरवेट	४८ ८ ०	३५ १० ०	३४ ४ ०	३५ १२ ०	३५ ४ ०
(२) मशीन ■ छिला हुइ	मङ्गलार	मन	३६ ४ ०	२४ १० २	२४ १३ ०	२५ ६ ०	२५ २ ०
६ अलसी							
(१) बडादाना	बम्बइ	हडरवेट	३० १२ ०	२८ ८ ०	२६ ० ०	२५ ४ ०	२५ ८ ०
(२) ५% रिफ्रेक्शन छोटा दाना (तैयार)	कलकत्ता	मन	२२ ५ ०	२१ ८ ०	२१ ४ ०	२० ४ ०	१६ ० ०
७ अरण्डी का बीज							
(१) सलेम किस्म का	मद्रास	,,	२१ ० ०	१८ ० ०	१५ १५ ०	१५ ७ ०	१४ १५ ०
(२) छोटा साधारण औसत दर्जे का हैदराबादी	बम्बइ	हडरवेट	३० १२ ०	२४ ८ ०	२४ ४ ०	२२ ४ ०	२३ २ ०
८ तिल							
(१) सफेद बडादाना ८५%	,,	,,	५७ ० ०	४२ ० ०	४१ ० ०	४० ८ ०	४८ ० ०
(२) मिश्रित (गाजर)	झासी	मन	४० ० ०	२८ ८ ०	२५ ८ ०	२४ ८ ०	२७ ० ०
६ तोरिया							
(१) मिश्रित पन्ना खुदरा	कलकत्ता	बगाल मन	३१ ० ०	२६ ४ ०	३१ ० ०	२६ ८ ०	२६ ८ ०
(२) लाल	बम्बइ	मन	२६ ७ ०	२३ १४ ०	२५ ० ०	२३ ८ ०	२३ १४ ०
(३) सरसो काला	कानपुर	,,	२६ १४ ०	२८ ८ ०	२४ ४ ०	२१ १० ०	२३ १२ ०
१० बिनौला							
(१)	बम्बइ	हडरवेट	१८ १४	१५ ७ ६	१६ ६ ५	१५ १४ ६	१४ १५ ७
(२)	अमरावती	८० पौंड का मन	११ १४ २	१० ७ ३	६ १४ ४	६ २ ५	१० २ २
११ नारियल का गोला							
साधारण औसत दर्जे का	कोचीन	६५५ ६ पौंड की कैंडी	३४७ ११ ०	३६५ ७ ०	३५४ ६ ०	३४० ० ०	३२३ १५ ०
१२ कोयला (न)							
(१) चुना हुआ झरिया	कोलाइरी साईडिंग में पहुॅचने पर	टन	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०
(२) देशगढ़	,	,	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०
(३) म०प्र० प्रथम श्रेणी			१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०
१३ कच्चा लोहक							
निर्गत मूल्य	विशाखापटनम	,,	१३७ १३ ४	१४१ ४ ६	११६ १४ ४	१६१ ६ ४	१७६ ७ ४

(न) नियन्त्रित मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०				
३६- ४-०	३१- ४-०	३१ ४- ०	२७ ४ ०				
२३-११-४	२०-१५-०	२२ ८ ०	१९ ६ ०				
२७- ४-०	२४- ८ ०	२३- ४- ०	२३ ८ ०				
१९-१०-०	१७- ० ०	१७ ८- ०	१६ ४ ०				
१६- ७-०	१४- ७ ०	१४ ७ ०	१४ १५ ०				
२३-१० ०	२१- ४-०	२२ २ ०	१९ १० ०				
अप्राप्त	४२ ०-०	४५ ० ०	३८ ० ०				
२७- ०-०	२५- ०-०	२४- ० ०	२६ ०-०				
२७- ०-०	२४- ०-०	२६- ०- ०	२७ ० ०				
अप्राप्त	२१- ५-०	२२-१२ ०	२४ ४ ०				
२३-१२-०	अप्राप्त	२२ १ ५	२४- ० ०				
१५- ६-१	१५ ३-२	१३ १३-१०	१३- ८ ५				
१० ४-११	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त				
३२७- ८ ०	३००- ०-०	३१०- ३- ०	३२० १२ ०				
१५ १२-०	१५ १२-०	१५ १२ ०	१५ १२-०				
१६- ४-०	१६- ४-०	१६ ४- ०	१६ ४-०				
१७- ८-०	१७ ८-०	१७- ८ ०	१७- ८ ०				
१६२-३ १०	१५४ ११ ५	१२१- ४- ८	१४१ ०-७				

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
१४. चमड़ा, कच्चा							
(१) नमक लगा सूखा गाय का	कलकत्ता	२० पौंड	१७- ०-०	१६- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०
(२) नमक लगा गीला भैंस का	कलकत्ता	२० पौंड	९- १-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०
(३) नमक लगा गीला गाय का	कानपुर	कोड़ी	२८०- ०-०	२६०- ०-०	२०५- ०-०	२७५- ०-०	२०५- ०-०
(४) नमक लगा गीला भैंस का	,,	२० पौंड	९- ६-७	९-११-२	१०-१०-८	११- ६-१	१०- ५-६
१५. खालें, कच्ची							
बकरी की, औसत किस्म की	कलकत्ता	१०० थान	३२५- ०-०	३५०- ०-०	३५०- ०-०	३५०- ०-०	३५०- ०-०
१६. लाख							
(१) चपड़ा शुद्ध टी० एन०	,,	बंगाल मन	९७- ०-०	१०८- ०-०	९५- ८-०	८७- ०-०	९१- ०-०
(२) बटन शुद्ध	,,	,,	१०४- ०-०	१२०- ०-०	११४- ०-०	१०९- ८-०	११२- ८-०
१७. रबड़							
RMA IX RSS	कोटायम	१०० पौंड	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०

अर्द्ध निर्मित वस्तुएं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१. चमड़ा							
(१) गाय का चमड़ा	मद्रास	पौंड	३- ३-०	३- ०-३	३- १-०	२-१५-०	२-१४-३
(२) भैंस का चमड़ा	,,	,,	२- ०-९	२- १-९	२- १-९	२- ०-९	२ ०-३
(३) भेड़ की खालें	,,	,,	६- ५-०	६- ३-०	५-१५-०	५-११-०	५- ८-०
(४) बकरी की खालें	,,	,,	४-१४-०	४-१४-०	४-१४-०	४-१४-०	४-१३-०
२ खनिज तेल							
(क) मिट्टी का तेल (न)							
(१) घटिया थोक	कलकत्ता	८ गैलन	१०- ७-६	९-१५-०	९-१५-०	९-१५-०	९-१५-०
(२) बढ़िया थोक	,,	,,	१०-१४-६	१०- ७-०	१०- ७-०	१० ७-०	१०- ७-०
(ख) पैट्रोल (न)							
(१) थोक पम्प पर	,,	गैलन	२ १२-०	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६
(२) ,,	दिल्ली	,,	२-१४ ६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६
(३ ,,	मद्रास	,,	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०
३ वनस्पति तेल							
क नारियल का तेल							
(१) साधारण औसत ड्रमों का (तैयार)	कोचीन	६५४ पौंड की कैंडी	५०८-१०-२	५६२- ६-०	५२५-१२-५	४९५- ०-७	४८०- १-३
(२) कोचीन का बढ़िया, खुदरा	कलकत्ता	बंगाल मन	७६ ०-०	८०- ०-०	८४ ०-०	७४- ०-०	७२- ०-०
(३) खुला	बम्बई	क्वार्टर	२३- ७-०	२६- २-०	२५- ४-०	२३ ०-०	२२- ४-०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०				
१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०				
१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०				
२४५- ०-०	२३०- ०-०	२३०- ०-०	२४०- ०-०				
११- ०-७	११-११-७	११- ०-७	११- ०- ७				
३५०- ७-०	३५०- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-७				
११४- ०-०	१३८- ०-०	१४३- ०-०	१३७- ०-०				
१२३- ०-०	१४२- ०-०	१५०- ०-०	१५६- ०-०				
१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०				
२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३				
२- ०-०	२- ०-०	२- ०-६	२- ०-६				
५- ८-०	५- ८-०	५- ०-०	५- ३-०				
४-१३-०	४-१३-०	४-१२-०	४-१४-०				
९-१५-०	९-१५-०	९-१५-०	९-१५-०				
१०- ७-०	१० ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०				
२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६				
२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६				
२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०				
४८६- ५-०	४४३-१४-७	४५३-१४-३	४७०- ०-७				
७२- ०-०	६६- ०-०	६६- ०-०	६४- ०-०				
२२-१०-०	२१- ०-०	२१- ४-०	२०-१२-०				

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाइ	अगस्त १६५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
ख मूँगफली का तेल							
(१) खुदरा	मद्रास	५०० पौंड का कैंडी	४७० ० ०	३१८ ० ०	३१० ० ०	३०८ ० ०	३१२ ० ०
(२) खुला	बम्बई	क्वाटर	२७ ० ०	१८ १० ०	१७ ४ ०	१७ २ ०	१८ २ ०
(३) गुण्टूर (टान बन्द)	कलकत्ता	बंगाल मन	८७ ० ०	६० ० ०	५७ ० ०	५७ ० ०	५८ ८ ०
ग सरसों का तेल							
(१) खुदरा (मिल से निकलते समय)	,,	,,	७२ ० ०	७४ ८ ०	६६ ८ ०	६० ० ०	६३ ८ ०
(२)	पटना	मन	७० ० ०	७३ ० ०	६५ ० ०	५६ ० ०	६० ० ०
(३)	कानपुर	,,	६६ ८ ०	६६ ६ ०	५८ ० ०	५४ ० ०	५८ ० ०
घ अरण्डी का तेल							
(१) न० १ बढ़िया पीला (जहाज पर)	कलकत्ता	मन	७६ ० ०	७२ ० ०	७१ ० ०	६३ ० ०	६६ ० ०
(२)	मद्रास	५०० पौंड की कैंडी	२६५ ० ०	२८५ ० ०	२३० ० ०	२१० ० ०	२२० ० ०
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	क्वाटर	२६ ११ ११	२० ० ०	१६ ८ ०	१८ १२ ०	२१ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) कच्चा खुदरा (मिल से निकलते समय)	कलकत्ता	मन	५१ ८ ०	५१ ० ०	४८ ० ०	४७ ० ०	४४ ० ०
(२)	बम्बई	क्वाटर	१७ १२ ०	१६ ० ०	१५ ८ ०	१३ १२ ०	१४ १२ ०
४. खली							
(१) मूंगफली	कलकत्ता	मन	६ १२ ६	७ ८ ०	७ ८ ०	७ ० ०	७ ८ ०
(२) नारियल	बम्बई	१॥ हंडरवेट	२० १० ०	२५ ८ ०	२७ ० ०	२७ ० ०	२४ ० ०
(३) तिल	,,	टन	३२५ ० ०	३२५ ० ०	३३५ ० ०	३२५ ० ०	३३० ० ०
५ सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरी	कलकत्ता	५ पौंड	६ ८ ०	६ १० ०	६ १४ ०	६ ६ ०	६ १० ०
(२) २० ,,	,,		८ ७ ६	८ ३ ०	८ ८ ०	८ ६ ०	८ १२ ०
(३) ४० ,,	,,	,,	१२ ० ६	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०
(४) सूत २० नम्बरी	बंगलोर	१ पौंड	१७ १२ ०	१६ ११ ०	१७ ४ ०	१७ ८ ०	१७ १० ०
६ नारियल की सुतली							
(१) अलसी अलापी	कोचीन	६ हन्डरवेट की कैंडी	२४६ ११ ०	२७५ ० ०	२७५ ० ०	२७३ ५ ०	२७८ ५ ०
(२) अनजेंगो बढ़िया	,,	,,	२७४ ३ ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०

(न) नियन्त्रित मूल्य ।

के भाव : १५९४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०				
३०९- ०-०	२६५- ०-०	२७२- ०-०	२३५- ०-०				
१८- ३-०	१५- ६-०	१५-१२-०	१४- ०-०				
५९- ०-०	४९- ०-०	५१- ०-०	४३- ८-०				
६७- ८-०	६०- ८-०	६१- ८-०	६४- ०-०				
६८- ०-०	६०- ०-०	५७- ०-०	६०- ०-०				
६०- ०-०	५४- ८-०	५५- ०-०	५८- ८-०				
६६- ०-०	५६- ०-०	५६- ०-०	५३- ०-०				
२२७- ०-०	१८७- ०-०	२००- ०-०	१८०- ०-०				
२१- ०-२	अप्राप्त	२०- ०-०	१६- ८-०				
४४- ८-०	३६- ०-०	३६- ८-०	३४- ८-०				
१५-१२-०	१२-१२-०	१२-१४-०	१२-१२-०				
८- ८-०	९- ०-०	८- ८-०	८- ०-०				
२४- ०-०	२१- ०-०	२०- ०-०	१९- ०-०				
३४०- ०-०	३२०- ०-०	३३०- ०-०	३२०- ०-०				
६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०				
९- ०-०	९-० -०	९- ०-०	९- ०-०				
१२- ०-०	१२-० -०	१२- ०-०	१२- ०-०				
१७-१२-०	१८- २-०	१७-१४-०	अप्राप्त				
२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२६५- ०-०				
३०३- ५-०	२८८- ५-०	२८०- ०-०	२७४- ३-०				

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
७ लोहा और इस्पात			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
क कच्चा लोहा (न)							
(१) फाउंड्री नं० १	कलकत्ता पहुँचने पर	टन	१४१ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०
(२) लोहा ब्लूम	,,	,,	१२७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०
ख अर्द्ध शुद्ध (न)							
फिर गलाने के लिये टुकड़े	कलकत्ता	,,	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०
८ धातु (लोह के अतिरिक्त)							
(१) जस्ता स्पेल्टर (विलायती वाला) मुलायम	,,	हंडरवेट	५ ८ ०	५४ ० ०	५३ ८ ०	५३ ० ०	५७ ८ ०
(२) पीतल वाला धातु-सम्मान (ब्रजियर) ४"×४"	,,	,,	१६५ ० ०	१४६ ४ ०	१५७ १२ ०	१६५ ० ०	१७७ ८ ०
(३) पीतल का चादरें (विलायती)	बम्बई	,,	१५० ० ०	१४६ ० ०	१५५ ० ०	१५६ ० ०	१६० ० ०
(४) ताम्बे का चादरें (इण्डियन)	,,	,,	१९७ ८ ०	१९५ ८ ०	२०२ ० ०	१९६ ० ०	२०१ ० ०
९ लकड़ी							
धातौन के गोल लट्ठे ५ फुट और उससे अधिक परिधि वाले	बल्लारशाह (दक्षिण चान्दा, मध्य प्रदेश)	घन फुट	६ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०

निर्मित वस्तुएं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ टेक्सटाइल							
क जूट का माल							
टाट							
(१) १०-१२ औंस ४०"	कलकत्ता	१०० गज	४८ २ ०	४७ १० ०	४८ २ ०	४६ ० ०	४५ १० ०
(२) ८ औंस ४०"	,,	,,	३६ ४ ०	३७ १४ ०	३७ १२ ०	३७ ४ ०	३६ ० ०
बोरियाँ							
(१) बी ट्विल	,,	१०० बोरियाँ	१०७ ४ ०	१०५ ८ ०	१०३ २ ०	१०८ ० ०	१०६ ० ०
(२) बी भारी बोरियाँ	,,	,,	१०३ ४ ०	१०३ ० ०	१०४ ८ ०	११२ ८ ०	११८ ८ ०
ख सूती माल							
(१) कोरा कमीज का कपड़ा १-१ ३५" × ३८ गज×७ पौंड	बम्बई	एक थान	१६ ३-८	१६ ३-८	१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६
(२) कोरा स्पेशल कमीज का कपड़ा—२८ गज	,,	पौंड	२ ० ०	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १४ ७
(३) छींट ४४८८ ४३"× ३८ गज	,,	एक थान	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२६ २ ०	२६ २ ०
(४) कोरा धोतियाँ मध्यम ४२"× १०.४ गज×२.६ १६ पौंड	,,	एक जोड़ा	अप्राप्त	५ ११ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	६ ६-०

(न) नियन्त्रित मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०				
१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०				
१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०				
२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०				
५७- ८-०	५६- ८-०	५८- ८-०	५३- ८ ०				
१७२- ०-०	१६७- ०-०	१६८- ०-०	१६३- ८ ०				
१६४- ०-०	१६५- ०-०	१६०- ०-०	१५६- ०-०				
२०१- ८-०	२०१- ८-०	१९६- ८-०	१९६- ८ ०				
११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ० ०				
४५-१२-०	४६- ४-०	४७- ८-०	४७- ४-०				
३६- २-०	३७- ०-०	३७- ८-०	३६-१२-०				
११२-१४-०	११३- ६-०	१०६- ८-०	१०४-१२ ०				
११५- ८-०	११४- ८-०	१११-१२-०	१०४- ८-०				
१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६				
१-१४-७	१-१४-७	१-१४ ७	१-१४-३				
२६- २-०	२६- २-०	२६- २-०	२४-१५-०				
६- ८-०	६- ८-०	६- ८-०	६- ६-०				

३. देश मे वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(५) रगान म्प—कमीज का कपडा	मद्रास	गज	१ ० ६	० १५ ३	० १५ ६	० १५ ६	० १५ ६
(६) एम—५०१ ब्लीच किया मलमल ४८"×२०" गज	"	२० गज	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०
ग रेयन और रेशम का माल							
(१) टैफेटा कोरो २६–५०", ४–३/४ १ से ५ पौंड तक (रेयन)	बम्बई	गज	० ८ ०	० ७ ०	० ८ ३	० ९ ०	० ९ ६
(२) फूजी (चीनी रेशम)	"	५० गज का थान	२७५ ० ०	अप्राप्त	३१० ० ०	३४० ० ०	४०० ० ०
२ लोहे और इस्पात से निर्मित वस्तुए (न)							
लोहे और इस्पात की पनालीदार चादरें २४ गज	कलकत्ता	हडरवेट	३४ ० ०	३४ ० ०	३४ ० ०	३४ ० ०	३५ ० ०
३ अन्य निर्मित वस्तुए							
(क) सीमेंट (न)							
भारतीय (स्वस्तिका)	"	टन	८२ १४ ०	८२ ९ ०	८२ ९ ०	८७ ९ ०	८७ १५ ०
(ख) कॉँच (खिडकियों का)							
(१) बडा साइज	"	१०० वर्ग फुट	६० ० ०	६० ० ०	६० ० ०	६० ० ०	६० ० ०
(२) मध्यम साइज	"	"	५५ ० ०	५३ ० ०	५३ ० ०	५५ ० ०	५५ ० ०
(ग) कागज							
सफेद छपाई, डिमाइ १४ पौंड और ऊपर	"	पौंड	० १० ७	० १० ७	० १० ७	० १० ७	० १० ०
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फटकरी	"	हडरवेट	१५ ० ०	१३ ० ०	१३ ० ०	१३ ० ०	१३ ० ०
(२) गधक का तेजाब	"	टन	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२३५ ० ०	२३५ ० ०
(ङ) रग							
लाल साभे का सूखा असली	"	हडरवेट	९० ८ ०	८६ ० ०	८६ ० ०	८६ ० ०	८६ ० ०

(न) नियान्त्रत मूल्य।

के भाव : १६५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०				
०-१५-६	१- ०-०	१- ०-०	१- ०-०				
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०				
०-१०-०	०- ८-०	०- ८-०	०- ८-६				
अप्राप्त	३४०- ०-०	३४०- ०-०	अप्राप्त				
३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०				
८७-१५-०	८७-१५-०	८८- ०-०	८८- ५-०				
६०- ०-०	६५- ०-०	४५- ०-०*	४३ ०-०*				
५५- ०-०	६०- ०-०	४३- ०-०*	४०- ०-०*				
०-१०-०	०-१०-७	०-१०-७	० १०-७				
१३- ०-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०				
२३५- ०-१	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०				
८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ० ०	८८- ०-०				

*२६-६-५४ को समाप्त होने वाले सप्ताह से भारतीय काच के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये काच के मूल्य दिये गये हैं।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत अंक में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहां दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अन्तिम नहीं मान लेना चाहिये। —सम्पादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप
अजवाइन का सत	Thymol	पायरेथ्रम	Pyrethrum
अदरक	Ginger	पूरक पेंशन योजना	Supplementary Pension Scheme
अधिवास	Domicile		
अन्तर	Gap	पोषक	Nutritive
अन्य देशीय	Alien	प्रदर्शन दल	Demonstration Parties
अभिप्राय	Opinion	प्रवेश	Access
अक्षमता	Incompetency	प्रारम्भिक	Preliminary
इलायची	Cardamom	फिटकरी	Alum
उपयोगिता	Utility	बच	Orris Root
कबाब चीनी	Cubeb	बेंत का काम	Cane-work
कलाकौशल केन्द्र	Art & Crafts Centre	बिक्री केन्द्र	Sale Centre
कस्तूरी	Musk	भण्डार	Emporia
कातना, रेशम का	Reeling	मच्छर नाशक	Anti-Mosquito
केसर	Saffron	मजीठ	Madder
कोया, रेशम का	Cacoon	माजूफल	Gall nut
कोरे रेकार्ड	Blank Record	मुद्रावर्ग	Currency group
क्रोम का छीलन	Chrome Shavings	यन्त्रीकरण	Mechanisation
गुलदाउदी	Chrysanthemum	लच्छी	Hanks
गेरू	Ruddle	लक्ष्य	Target
गोल मिर्च	Pepper	लाल मिर्च	Chillies
गृह उद्योग	Cottage Industries	लौंग	Clove
चमड़े का गत्ता	Leather Board	विटामिनयुक्त	Vitaminised
चलते फिरते	Mobile	शुल्क सीमान्त	Custom Frontier
छोटे उद्योग	Small scale Industries	सनाय	Senna
जायफल	Nutmeg	सिंगरिफ	Cinnabar
जावित्री	Mace	सिनेमा के तैयार फिल्म	Exposed Films
जीरा	Cumin	सोहागा	Borax
जीविका	Subsistence	सोंठ	Ginger Dry
तेजपात	Cassia	सौंफ	Aniseed
तैलयुक्त	Oiliferous	स्तर	Level
दालचीनी	Cinnamon	हरी वनस्पति का सत	Fecula
नमकीन पानी	Brine	हल्दी	Turmeric
पानरोश	Pyrethrum	हींग	Asfoetida

परिशिष्ट

१. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार-प्रतिनिधि ।

२. भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि ।

नाम और पता	कार्यक्षेत्र
आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड	
(१८) सिडनी श्री एम० बी० पटेल, आई० एफ० एस०, भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, प्रूडेन्शल बिल्डिंग, ३९-४९, मार्टिन प्लेस, सिडनी (आस्ट्रेलिया)। तार का पताः—आस्ट्रिण्ड (AUSTRIND), सिडनी।	आस्ट्रेलिया
(१९) वेलिंगटन श्री एन० केशवन, न्यूज़ीलैण्ड में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), विन्डसर बिल्डिंग, ४९, विलिस स्ट्रीट, वेलिंगटन, (न्यूज़ीलैण्ड)। तार का पताः—ट्रैकोमिण्ड (TRACOMIND), वेलिंगटन।	न्यूज़ीलैण्ड
एशिया	
(२०) टोकियो डा० ए० एस० शर्मा, जापान में भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), एम्पायर हाउस (नाइगाइ बिल्डिंग), मारूनोची, टोकियो (जापान)। तार का पताः—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), टोकियो।	जापान
(२१) कोलम्बो श्री के० आर० एफ० खिलनानी, आई० एफ० एस०, लंका में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), पो० बा० नं० ८८६, फोर्ट, कोलम्बो। तार का पताः—ट्रेडिण्ड (TRADIND), कोलम्बो।	लंका
(२२) रंगून श्री एम० पी० माथुर, आई० एफ० एस०, भारत के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), रनटैरिया बिल्डिंग, फ़ायरे स्ट्रीट, पो०बा०नं० ७५१, रंगून (बर्मा)। तार का पताः—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रंगून।	बर्मा
(२३) कराची श्री एम० थाम, आई०, एफ० एस०, पाकिस्तान में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), चार्टर्ड बैंक चेम्बर्स, "वलीका महल," एन० जे० सेटना रोड, न्यू टाउन, कराची-५ (पश्चिमी पाकिस्तान)। तार का पताः—इण्ट्राकम (INTRACOM), कराची।	पाकिस्तान
(२४) ढाका श्री पी० दासगुप्ता, पाकिस्तान में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), गोपी कृष्ण लेन, पो० आ० रामना, ढाका (पूर्वी पाकिस्तान)। तार का पताः—"गुडविल" (GOODWILL), ढाका।	पूर्वी पाकिस्तान
(२५) सिंगापुर श्री जे० कोइल्हो, आई० एफ० एस०, मलाया में भारत सरकार के प्रतिनिधि के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), इण्डिया हाउस, पो० बा० नं० ८३६, सिंगापुर (मलाया)। तार का पताः—इण्डिट्रेकम (INDITRACOM), सिंगापुर।	मलाया
(२६) मनीला मन्त्री, व्यापारिक विभाग, भारतीय लेगेशन, ९१४-नेकाम्का, मनीला (फिलिपाइन)। तार का पताः—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), मनीला।	फिलिपाइन
(२७) जकार्ता श्री ए०डी० मणि, आई० एफ०एस० भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी, पो०बा०नं० १७८ ४४, केबुन सिरिह, जकार्ता (इण्डोनेशिया)। तार का पता.—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), जकार्ता।	इण्डोनेशिया
(२८) बैंकाक श्री गुरबचनसिंह, आई० एफ० एस०, भारतीय राजदूतावास के सकेण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), बैंकाक (थाईलैण्ड)। तार का पताः—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बैंकाक।	थाईलैण्ड

सूचनाः—(१) तिब्बत में निम्नलिखित अधिकारी भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं.—

१. गंगटोक सिक्किम में भारतीय पोलिटिकल अफसर के व्यापारिक सेक्रेटरी।
२. भारत के व्यापार एजेन्ट, यातुंग (तिब्बत)।

(२) जिन देशों में अलग व्यापारिक प्रतिनिधि नहीं हैं, उनमें भारतीय राजदूत और कमिश्नर अफसर भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं

परिशिष्ट—२

भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि

देश	पद	पता
१. अफगानिस्तान	भारत में शाही अफगान राजदूतावास के आर्थिक एटेची।	२४, रेटण्डन रोड, नई दिल्ली।
२. अमेरिका	भारत में अमेरिकन दूतावास के आर्थिक मामलों के कौंसिलर।	बहावलपुर हाउस, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली।
३. आस्ट्रिया	भारत में आस्ट्रिया के व्यापार प्रतिनिधि।	क्वीन्स मैनशन, बैस्टियन रोड, फोर्ट, बम्बई।
४. आस्ट्रेलिया	(१) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैंटाइल बैंक बिल्डिंग, ५२/६६, महात्मा गांधी रोड, जनरल पो० आ० बा० न० २१७, बम्बई।
	(२) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	२, फेअरली प्लेस, कलकत्ता।
५. इटली	भारत में इटली के राजदूतावास के व्यापारिक सेक्रेटरी।	१७, यार्क रोड, नई दिल्ली।
६. इण्डोनेशिया	भारत मे इण्डोनेशियन दूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	२१, कर्जन रोड, नई दिल्ली।
७. कनाडा	(१) भारत में कनाडा हाई कमीशन के व्यापारिक कौंसिलर।	४, औरंगजेब रोड, नई दिल्ली।
	(२) भारत मे कनाडा हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	ग्रेशम एश्योरेन्स हाउस, मिंट रोड, बम्बई।
८. चीन	भारत मे चीनी गणतन्त्र के राजदूतावास के व्यापारिक मामलों के कौंसिलर।	कींद हाउस, लिटन रोड, नई दिल्ली।
९. चेकोस्लोवाकिया	(१) भारत मे चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक एटेची।	२५, औरंगजेब रोड, नई दिल्ली।
	(२) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	हिमालय हाउस, पालटन रोड, बम्बई।
१०. जर्मनी	भारत मे जर्मनी के संघीय गणराज्य के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	८६, सुन्दर नगर, मथुरा रोड, नई दिल्ली।
११. जापान	भारत में जापानी दूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	४, सरक्युलर रोड, डिप्लोमेटिक एनक्लेव, नई दिल्ली।
१२ डेनमार्क	भारत मे शाही डैनिश लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर।	पोलोन्जी मैनशन, न्यू क्राफ परेड, बम्बई।
१३. तुर्की	भारत में तुर्की दूतावास के व्यापारिक एटेची।	मेडन्स होटल, दिल्ली।
१४. नारवे	(१) भारत मे नारवे लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर।	५२, मेडन्स होटल, दिल्ली।
	(२) भारत मे नारवे के कंसलेट जनरल के व्यापारिक एटेची।	इम्पीरियल चेम्बर्स, विलसन रोड, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई।
१५. नीदरलैण्ड	भारत में नीदरलैण्ड राजदूतावास के व्यापारिक एटेची।	२६८, बाजार गेट स्ट्रीट, बम्बई।
१६. न्यूजीलैण्ड	भारत मे न्यूजीलैण्ड सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैंटाइल बैंक बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, महात्मा गांधी रोड, बम्बई-१।

देश	पद	पता
१७. पाकिस्तान	भारत में पाकिस्तान हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	शेरशाह रोड मेस, नई दिल्ली।
१८. फिनलैंड	भारत में फिनिश लीगेशन के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	१, हुमायूं रोड, नई दिल्ली।
१९. फ्रांस	भारत में फ्रेंच दूतावास के आर्थिक मामलों के कौंसिलर।	२३, थियेटर कम्यूनिकेशन बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली—१।
२०. बर्मा	भारत में बर्मा यूनियन के व्यापार कमिश्नर।	ब्लाक 'ए', कर्ज़न रोड, नई दिल्ली।
२१. ब्रिटेन	(१) भारत में ब्रिटेन के हाई कमिश्नर के आर्थिक सलाहकार और (२) भारत में ब्रिटेन के सीनियर व्यापार कमिश्नर।	६, अलबूकर्क रोड, नई दिल्ली।
	(३) कलकत्ता में ब्रिटेन के मुख्य व्यापार कमिश्नर।	१, हैरिंगटन स्ट्रीट, कलकत्ता—१६।
	(४) मद्रास में ब्रिटेन के व्यापार कमिश्नर।	पो० बा० नं० १५७५, आरमीनियन स्ट्रीट, मद्रास।
२२. बेलजियम	भारत में बेलजियम राजदूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	थियेटर कम्यूनिकेशन बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली—१।
२३. मिस्र	भारत में मिस्री दूतावास के व्यापारिक एटेची।	कमरा नं० ३६, स्विस होटल, दिल्ली।
२४. रूमानियां	भारत में रूमानिया के व्यापार प्रतिनिधि।	होटल एसप्लाइनस, बम्बई।
२५. रूस	भारत में रूस के व्यापार प्रतिनिधि।	४, कामक स्ट्रीट, कलकत्ता।
२६. लंका	भारत में लंका हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	सीलोन हाउस, ब्रूस स्ट्रीट, बम्बई।
२७. स्विटजरलैण्ड	भारत में स्विटजरलैण्ड के व्यापार कमिश्नर।	पो० बा० १०२, प्रथम एश्योरेन्स हाउस, बम्बई।

सूचना :—जिन देशों के अलग व्यापार प्रतिनिधि नहीं हैं, उनके व्यापारिक हितों को, भारत में स्थित उनके राजनैतिक व दफ्तर विभाग, ध्यान में रखते हैं।

भारतीय रुपये का मूल्य : विभिन्न देशों की मुद्राओं में

देश	भारतीय मुद्रा		विदेशी मुद्रा
१. पाकिस्तान	१०० रु०	=	६६ पाकिस्तानी रु० ६ आ०
२. लंका	१०० रु० ६ आ०	=	१०० लका के रु०
३. बरमा	१०० रु० ४ आ०	=	१०० क्यात
४. अमेरिका	४७५ रु०	=	१०० डालर
५. कनाडा	४८२ रु० ११ आ०	=	१०० डालर
६. मलाया	१५६ रु०	=	१०० डालर
७. हागकांग	८३ रु० ४ आ०	=	१०० डालर
८. ब्रिटेन	१ रु०	=	१ शि० ५-३१/३२ पैंस
९. न्यूजीलैण्ड	१ रु०	=	१ शि० ५-३१/३२ पैंस
१०. आस्ट्रेलिया	१ रु०	=	१ शि० १०-३/८ पैंस
११. दक्षिणी अफ्रीका	१ रु०	=	१ शि० ५-१५/१६ पैंस
१२. पूर्वी अफ्रीका	६७ रु० २ आ०	=	१०० शि०
१३. मिस्र	१३ रु० १३ आ०	=	१ पौंड
१४. फ्रांस	१०० रु०	=	७,३५० फ्रान्क
१५. बेलजियम	१०० रु०	=	१,०४५ फ्रान्क
१६. स्विटजरलैंड	१०० रु०	=	९१-३/८ फ्रान्क
१७. पश्चिमी जर्मनी	१०० रु०	=	८७-११,१६ मार्क
१८. नीदरलैंड	१०० रु०	=	७९-११,३२ गिल्डर
१९. नारवे	१०० रु०	=	१४९-१/४ क्रोनर
२०. स्वीडन	१०० रु०	=	१०८-५ ८ क्रोनर
२१. डनमार्क	१०० रु०	=	१४५-१/१६ डेनमार्क क्रोनर
२२. इटली	१ रु०	=	१३० लीरा
२३. जापान	१ रु०	=	७८ येन
२४. फिलिपाइन	२३७ रु०	=	१०० पीसो
२५. ईराक	१,३३८ रु०	=	१०० दीनार

(ये विनिमय दरें मई १९५४ मे भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार हैं।)

उद्योग-व्यापार पत्रिका



सत्यमेव जयते

मिलने का पता --

मोहन न्यूज एजेन्सी कोटा

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

दिसम्बर १९५४

उद्योग व्यापार पत्रिका

ग्राहकों से निवेदन

वार्षिक चन्दा ६ रु०, एक प्रति ८ आने।

मनीआर्डर, क्रास किये चैक अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा रुपया नीचे लिखे पते पर भेजकर आप किसी भी अंक से ग्राहक बन सकते है।

एजेन्टों को सूचना

जो सज्जन पत्रिका की एजेन्सी लेना चाहे वे कमीशन आदि के लिये शीघ्र पत्र-व्यवहार करें। एजेन्ट केवल सीमित संख्या में ही बनाने का निश्चय हुआ है। अतः इस के लिये शीघ्रता करनी चाहिए।

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,

वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय,

भारत सरकार, नई दिल्ली।

उद्योग-व्यापार पत्रिका

(उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पंजाब, अजमेर और सौराष्ट्र के शिक्षा विभागों द्वारा
शिक्षा संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत)

खण्ड ३] नई दिल्ली, दिसम्बर १९५४ [अङ्क ६

★★★ ३ टन प्रतिदिन उत्पादन करने वाला कारखाना स्थापित किया जाय

दुग्ध चूर्ण और उसका विकास

सावधानी से योजना बनाकर काम करने की आवश्यकता

युद्धकाल में विदेशों से माल आना बन्द हो जाने पर देश में ही दुग्धचूर्ण बनाने की ओर कुछ औद्योगिकों का ध्यान गया और उसका उत्पादन आरम्भ भी हो गया। युद्ध के बाद विदेशों से आने वाले दुग्ध चूर्ण से प्रतिस्पर्धा न कर सकने के कारण भारतीय कारखाना बन्द हो गया। अब समस्त दुग्धचूर्ण विदेशों से आता है। १९५३-५४ में ३.? करोड़ रु० का आयात हुआ। अब फिर प्रयत्न आरम्भ हुए हैं और निकट भविष्य में ही देश में दुग्ध चूर्ण बनने लगने की आशा है।

इस समय प्रतिवर्ष भारत विदेशों से ११,२६० टन मक्खन निकला दुग्धचूर्ण और ?,?०७ टन शुद्ध दुग्ध चूर्ण मगाता है।

प्रस्तुत लेख वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय की विकास शाखा ने तैयार किया है जिसमें दुग्ध चूर्ण तैयार करने की प्रणालियां इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है।

पहले प्रयत्न असफल क्यों हुए ?

दुग्धचूर्ण का उत्पादन भारत में पहली बार व्यापारिक आधार पर १९३८ में कलकत्ते के नेशनल न्यूट्रिमेन्ट्स लि० (National Nutriments Ltd, Calcutta) ने बेलन प्रणाली से आरम्भ किया। द्वितीय महायुद्ध में जब विदेशों से दुग्ध चूर्ण का आना बन्द हो गया तो देश में बने दुग्ध चूर्ण की मांग होने लगी थी, परन्तु युद्ध बन्द होते ही विदेशों से फिर माल आने लगा और तब कलकत्ते का कारखाना विदेशी माल से किस्म और मूल्य किसी में भी प्रतिस्पर्धा न कर सका। अन्त में १९५१ में यह कम्पनी टूट गई। यद्यपि फिर दो तीन दल देश में दुग्ध चूर्ण के कारखाने निकट भविष्य में ही चालू करने के विषय में गम्भीरतापूर्वक सोच रहे हैं तथापि इस समय इसका कोई कारखाना नहीं है। जो लोग पुनः कारखाने खोलने का विचार कर रहे हैं उनमें एक तो आनन्द की खेड़ा जिला सहकारी दूध उत्पादन यूनियन लि० है जो आनन्द में बम्बई सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तर्राष्ट्रीय बाल आपत्कालीन कोष (Unicef) की सहायता से अपना कारखाना स्थापित करना चाहती है। इसमें फुहार द्वारा दूध सुखाने की मशीनें लगाने का विचार है। इस कारखाने में प्रतिदिन मक्खन निकले दूध से ४ टन दुग्ध चूर्ण तैयार किया जायगा। अक्तूबर १९५५ से काम आरम्भ हो जाने की आशा है और प्रतिदिन २,५०,००० पौण्ड दूध काम में लाने का प्रस्ताव है। इसका अधिकांश भाग पैस्टराइज करके बम्बई सरकार की दूध योजना के अनुसार बम्बई भेजा जाया करेगा। शेष दूध का दुग्ध चूर्ण, घी, मक्खन, घनीभूत दूध और केसीन बनाया जायगा। खेड़ा यूनियन में दूध उत्पादकों की ६२ सहकारी समितियां सम्मिलित हैं जिनमें कुल ११,३०७ व्यक्ति हैं। खेड़ा यूनियन डेरी उद्योग के विकास के लिये विशेषतः यत्न करती है और इसके लिये उसे बम्बई सरकार प्रति वर्ष ३ लाख रु० का अनुदान देती है।

सीमाशुल्क बोर्ड की सिफारिशें

१९४८ में नेशनल न्यूट्रीमेन्ट्स लि० द्वारा संरक्षण के लिये दिये गये आवेदनपत्र पर सीमाशुल्क बोर्ड ने विचार किया। बोर्ड ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि देश में दुग्ध चूर्ण उद्योग का विकास मुख्यत. पर्याप्त दूध उपलब्ध होने पर निर्भर है। इस समय देश में जनता की आवश्यकता पूरी करने के लिये पर्याप्त दूध उपलब्ध नहीं है और सभी बड़े नगरों में इसकी भारी कमी है। विभाजन के पश्चात् नगरों में बहुत से शरणार्थी आ जाने से दूध की माग और भी बढ़ गई है जिसके फलस्वरूप उसके भाव पर्याप्त चढ़ गये हैं। इतने पर भी देश में कुछ भाग ऐसे भी हो सकते हैं जहां दूध के अनेक उत्पादन हो जाने पर भी कुछ परिमाण में शुद्ध अथवा मक्खन निकला दूध बरबाद हो जाता है। इस फालतू दूध का चूर्ण बना देने से स्थानीय लोगों की आय बढ़ेगी और देश के दूसरे भागों को अधिक दूध मिलने लगेगा। अत यदि दुग्ध चूर्ण तैयार करने वाले कारखाने फालतू दूध वाले क्षेत्रों में खोले जाय तो उनसे राष्ट्र को लाभ होगा।

दुग्ध चूर्ण का आयात

भारत सरकार बच्चों और बीमारों को देने तथा होटलों में प्रयुक्त होने के लिये दुग्ध चूर्ण के आयात की अनुमति देना आई है। बिस्कुट, मिठाइयां, आइसक्रीम, केक, डबलरोटी आदि बनाने में भी दुग्ध चूर्ण का उपयोग होता है। यदि कोई कारखाना देश में अच्छी किस्म का दुग्ध चूर्ण बना कर उचित मूल्य पर देने तो उसका चलना कठिन नहीं होगा। अब तक देश में उत्पादन न होने के कारण विदेशों से दुग्ध चूर्ण का आयात जिस प्रकार हुआ है उसके आंकड़े नीचे की तालिका में दिये गये हैं —

वर्ष	शुद्ध दुग्ध चूर्ण परिमाण (हण्ड्रवेट)	शुद्ध दुग्ध चूर्ण मूल्य रु० में	मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण परिमाण (हण्ड्रवेट)	मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण मूल्य रु० में
१९५०-५१	७३,८९१	६४,६३,४६४	१,२०,४०७	८५,६६,६६६
१९५१-५२	७१,०८६	[illegible] ८५,००२	२,३०,६३४	१,८३,००,४७२
१९५२-५३	८,२८६	१८,११,६०१	१,८८,०३६	३,०४,६५,८११
१९५३-५४	२५,०७५	२६,२०,०१२	०,५०,७२६	२,८४,८६,८०६

गत चार वर्षों के आयात का वार्षिक औसत २,२५,७११ हण्ड्रवेट अथवा ११,२१० टन मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण और २२,१३० हंडरवेट अथवा १,१०७ टन शुद्ध दुग्ध चूर्ण रहा है। १९५३-५४ में लगभग ३ करोड़ रु० का दुग्ध चूर्ण विदेशों से मगाया गया। अत दुग्ध चूर्ण उद्योग का देश में विकास करने से पर्याप्त विदेशी मुद्राओं की बचत हो सकती है।

देश में शुद्ध दुग्ध चूर्ण की अपेक्षा मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण अधिक परिमाण में मगाया जाता है। इसका कारण यह है कि बम्बई सरकार अपनी वर्तमान योजनाओं के सम्बन्ध में बहुत सा मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण विदेशों से मगाती है। मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण शुद्ध की अपेक्षा सस्ता भी होता है और विदेशों से मगाने पर उस पर कोई सीमाशुल्क भी नहीं लगता। दूसरी ओर शुद्ध दुग्ध चूर्ण पर मूल्य का २५ प्रतिशत सीमाशुल्क लिया जाता है। मक्खन निकले दूध में केवल घी के अंश को छोड़ कर दूध के अन्य सभी पोषक तत्व उपस्थित रहते हैं। दुर्भिक्ष जांच आयोग (१९४५) की राय में मक्खन निकले सूखे दुग्ध चूर्ण को विदेशों से मगाने से कुछ सीमा तक दूध की कमी पूरी हो सकती है अतः इस प्रकार के लाभप्रद और साथ ही सस्ते दूध का स्कूली बच्चों में वितरण करना सर्वथा उचित होगा।

कृषि बिक्री व्यवस्था सलाहकार द्वारा प्रकाशित भारत में दुग्ध की बिक्री सम्बन्धी रिपोर्ट (१९५०) The Report on the Marketing of Milk in the Indian Union (1950) के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष ४,८१५.५ लाख पौंड दूध उत्पन्न होता है। कुछ महत्वपूर्ण राज्यों में दूध का उत्पादन इस प्रकार होता है —

(लाख मनों में)

राज्य	तरल दूध का वार्षिक उत्पादन
उत्तर प्रदेश	१,११६
मद्रास	५७८
बिहार	४४३
पूर्वी पंजाब	५६८
बम्बई (बड़ौदा सहित)	३१८
पश्चिमी बंगाल	१६५
सौराष्ट्र	१८३
राजस्थान	१८४
पेप्सू	१३१
मध्य भारत	१४३
हैदराबाद	१६५

उपर्युक्त रिपोर्ट में उद्धृत निम्न आंकड़ों से प्रकट होता है कि विभिन्न रूपों में दूध का किस प्रकार उपयोग किया जाता है :—

(लाख मनों में)

रूप	परिमाण	उत्पादन का प्रतिशत
तरल रूप में उपयोग	१,७४० ६६	३६ २
घी बनाकर उपयोग	२,०८५ १६	४३ ३
दही के रूप में उपयोग	४३८ ४४	९.१
मक्खन के रूप में उपयोग	२९१ ८५	६ ०
खोआ के रूप में उपयोग	१९६ ५०	४.१
आइसक्रीम के रूप में उपयोग	१९ ६६	० ४
अन्य के रूप में उपयोग	२९.६३	०.६
	४,८१५.५०	१००

दुग्ध चूर्ण के लिये तरल दुग्ध

ऊपर कंडिका ३ में बताया जा चुका है कि देश में मक्खन निकले और शुद्ध दूध की मांग का वार्षिक औसत क्रमशः ११,२६० टन और १,१०७ टन होता है। इस हिसाब से दुग्ध चूर्ण बनाने के लिये प्रायः १,३३,००० टन अथवा ३६ लाख मन तरल दूध की आवश्यकता होगी। इसके लिये नियमित रूप से डेरी उद्योग चलाने और इस प्रकार दूध का अधिक उत्पादन करने की आवश्यकता है।

घी, मक्खन अथवा खोआ के समान अच्छी किस्म का दुग्ध चूर्ण छोटे परिमाण पर तैयार नहीं किया जा सकता। यद्यपि वर्ष में किसी एक समय बहुत अधिक दूध उपलब्ध हो सकता है तथापि उसे अधिक परिमाण में निरन्तर वर्ष भर उपलब्ध रखने के लिये उस क्षेत्र में विशेष व्यवस्था करनी पड़ेगी जहां दुग्ध चूर्ण का कारखाना खोला जायगा। यह भी विचार करना पड़ेगा कि इसे तैयार करने में गाय का, भैंस का अथवा दोनों का मिला हुआ दूध काम में लाया जाय। देश की वर्तमान सहयोगी दूध समितियां को गाय और भैंस दोनों का मिला हुआ दूध चलाना अधिक व्यावहारिक लगा है। भारतीय दूध में चिकनाई और अन्य पदार्थों का प्रतिशत इस प्रकार रहता है :—

	चिकनाई का न्यूनतम प्रतिशत	अन्य पदार्थों का न्यूनतम प्रतिशत
गाय का दूध ...	३.५	८.५
भैंस का दूध ...	६.०	९.०
मिलाजुला दूध	३.५	८६-९.०

ऊपर के आंकड़ों से स्पष्ट है कि चिकनाई की दृष्टि से गाय और भैंस के दूध में कितना अन्तर पड़ता है। भैंस के दूध से दुग्ध चूर्ण तैयार करने के लिये उसके परीक्षण करके यह देखना होगा कि सुखाते समय वह किस प्रकार रूप बदलता है। ये परीक्षण भारतीय डेरी गवेषणाशाला बंगलौर, केन्द्रीय खाद्य गवेषणाशाला मैसूर और बम्बई विश्वविद्यालय के केमीकल टेक्नोलाजी विभाग में किये जा सकते हैं। भैंस के दूध में मक्खन निकला हुआ तरल दूध मिला कर उसकी चिकनाई का प्रतिशत घटाया जा सकता है और तब उससे दुग्ध चूर्ण तैयार करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

कारखाना और उसकी पूंजी

खाद्य उद्योग मण्डल (१९४७) ने बताया है कि यह कहना बहुत कठिन है कि भारत में कितना बड़ा कारखाना स्थापित करना लाभप्रद होगा। ज्ञात हुआ है कि अमेरिका की कम्पनियां कहीं भी दुग्धचूर्ण का कारखाना खोलने से पूर्व यह निश्चय कर लेती हैं कि उस क्षेत्र में कम से कम १०-१५ टन दूध प्रतिदिन मिल सकेगा या नहीं। परन्तु भारत की अवस्था अमेरिका से सर्वथा भिन्न है। अतः यह कहना भी कठिन है कि इसी आधार पर चलाये जाने वाले कारखाने भारत में निश्चय ही सफल हो जायगे। मुख्य कठिनाई प्रचुर परिमाण में और साथ ही सस्ते दामों पर दूध उपलब्ध होने की होगी। अतः वर्तमान परिस्थितियों में सब कुछ देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि ५ टन दूध प्रतिदिन सुखाने वाला कारखाना भली प्रकार भारत में चल सकेगा।

प्रतिदिन ५ टन दूध सुखाने वाले कारखाने में ५/८ टन शुद्ध दुग्ध चूर्ण नित्य तैयार हो सकेगा। खाद्य उद्योग मण्डल ने सम्भवतः यह मान लिया है कि कारखाना को वर्ष भर निर्बाध गति से तरल दूध मिलता रहेगा। परन्तु ऐसा तो अमेरिका और आस्ट्रेलिया में भी नहीं होता। परन्तु प्रस्तावित कारखानों की शक्ति इतनी अवश्य होनी चाहिये जिससे वर्ष में जब अधिक दूध उत्पन्न होने लगता है तो वे उस सबको खपा सकें। इसे ध्यान में रखते हुये भारत के लिये ऐसा कारखाना अत्यन्त उपयुक्त हो सकता है जिसमें प्रतिदिन ३ टन दूध खप सके। खेड़ा यूनियन फुहार द्वारा दूध सुखाने का कारखाना लगा रही है जिसमें प्रतिदिन ४ टन मक्खन निकले दूध का चूर्ण तैयार किया जा सकेगा। प्रतिदिन ३—५ टन दूध सुखाने वाले ऐसे कारखाने की लागत प्रायः ४ लाख रु० होगी। इमारतों आदि पर २ लाख रु० और व्यय होंगे।

दूध से जल का अंश सफलतापूर्वक सुखा कर उसका चूर्ण बनाने के लिये तरल दूध का स्वच्छ होना भी नितान्त आवश्यक है। सुखाते समय गरमी के कारण यद्यपि दूध के अनेक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं तथापि इस प्रकार अस्वच्छता और अशुद्धता दूर नहीं होती। इस कारण शुद्धतम दूध का ही प्रयोग करना चाहिए और मशीन में डालने से पहले उसका भली प्रकार रासायनिक ढंग से परीक्षण भी कर लेना चाहिए।

दुग्ध चूर्ण बनाने की दो प्रणालियां

दुग्ध चूर्ण बनाने की दो प्रणालियां आजकल चल रही हैं, एक तो बेलन प्रणाली और दूसरी फुहार प्रणाली।

बेलन प्रणाली—इसमें दो ठोस बेलन होते हैं जिनकी लम्बाई प्रायः ५ फीट और व्यास प्रायः ५॥ फाट होता है। ये एक दूसरे से ०.०२ इंच दूर होते हैं। इन्हें ४० से ७० पौण्ड के दबाव पर भाप द्वारा गरम करते रहते हैं। दोनों बेलनों के बीच दूध बराबर छोड़ा जाता है। गरमी पाकर इसकी पतली परत बेलनों पर बराबर जमती जाती है जो एक ओर लगे हुये चाकुओं से खुरचती जाती है। दोनों बेलन खूब चिकने होते हैं अन्यथा चूर्ण अच्छा नहीं बनता। यह भी ध्यान रखा जाता है कि बेलनों पर जमने वाले चूर्ण का कोई भी भाग बेलनों पर जमा न रह जाय। यदि कहीं भी चूर्ण जमा रह जाता है तो वह जम कर काला पड़ जाता है और फिर चूर्ण का स्वाद और रंग दोनों ही खराब हो जाते हैं। खुरचे हुये चूर्ण को ठंडा करके पीसा और छाना जाता है। सुखाने से पहले तरल दूध को १८ प्रतिशत तक गाढ़ा कर लिया जा सकता है। प्रतिमानित ढंग के बेलनों की एक जोड़ी से प्रति घन्टे ६० गैलन तक दूध सुखाया जा सकता है। यदि गाढ़े दूध को काम में लाया जाय तो एक घन्टे में १२० से १३० गैलन दूध सुखाया जा सकता है।

फुहार प्रणाली—इस प्रणाली के अन्तर्गत पहले दूध को गरम कर के गाढ़ा कर लेते हैं। फिर इसकी एक पतली फुहार शङ्कु के आकार वाले एक विशाल पात्र में छोड़ी जाती है जिसमें गरम हवा भरी होती है दूध की फुहार तत्काल ही चूर्ण बन कर पात्र के पार्श्वों और तली में जम जाती है। फिर इसे ठंडा करके निर्वात अथवा नाइट्रोजनयुक्त पात्रों में भर देते हैं। अच्छी किस्म का चूर्ण बनाने के लिये पहले दूध को गरम कर लेना आवश्यक होता है। परन्तु गरम करते समय १६०° अंश फारेनहाइट से अधिक ताप नहीं होना चाहिये अन्यथा दूध का प्रोटीन अंश बिगड़ जायेगा और फिर वह पानी में घुलेगा नहीं। दूध को गाढ़ा कर लेना भी आवश्यक है। यदि गाढ़ा किये बिना दूध काम में लाया जायगा तो सुखाते समय मशीनों पर अधिक जोर पड़ेगा और उत्पादन कम होगा। परन्तु गाढ़ा करने की भी एक सीमा है। दबाव के साथ फुहार छोड़ने में अत्यन्त गाढ़े दूध से बाधा पड़ती है।

दोनों प्रणालियों के अपने लाभ बताये जाते हैं। बेलन प्रणाली का एक दोष यह बताया जाता है कि इसके द्वारा तैयार होने वाला दुग्ध चूर्ण पानी में भली प्रकार नहीं घुलता। परन्तु इस प्रणाली के अपने लाभ भी हैं। फुहार प्रणाली की अपेक्षा यह अधिक सरल और सस्ती होती है। ब्रिटेन और अमेरिका में अब भी बहुत सा दुग्ध चूर्ण इसी प्रणाली से तैयार किया जा रहा है। यह भी कहा जाता है कि बेलन प्रणाली में दूध को सूखते समय गरमी अच्छी मिल जाती है जिससे उसके जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। फुहार प्रणाली से बना चूर्ण कम गरमी लगने और बारीक तैयार होने के कारण ही पानी में अच्छा घुलता है। यदि तरल दूध में सोडियम अथवा पोटेशियम कार्बोनेट मिला दें तो उससे बेलन प्रणाली द्वारा तैयार होने वाला दुग्ध चूर्ण और भी अच्छा घुलने लगता है। ब्रिटेन में फुहार प्रणाली में काम आने वाले दूध में सोडियम अथवा पोटेशियम कार्बोनेट नहीं मिलाया जाता परन्तु बेलन प्रणाली में प्रयुक्त होने वाले दूध में यह प्रायः ही ०.१२ प्रतिशत तक मिला दिया जाता है। अमेरिकन विशेषज्ञ इसके मिलाने के पक्ष में नहीं हैं।

बेलन प्रणाली विदेशों में अब भी चल रही है। अतः भारत में भी इसके एक दो कारखाने खोले जा सकते हैं। भारत में बिस्कुट, आइसक्रीम आदि बनाने में बहुत सा दुग्ध चूर्ण प्रयुक्त होता है। इन कार्यों में तो बेलन प्रणाली से तैयार किया गया दुग्ध चूर्ण बड़े आराम से काम में लाया जा सकता है।

५ वर्ष का लक्ष्य

भारत में दुग्ध चूर्ण उद्योग का ५ वर्ष में विकास करने के लिये जो लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं वे नीचे की तालिका में दिखाये गये हैं। देश में शुद्ध दुग्ध चूर्ण का वार्षिक माग केवल १,१०० टन है जब कि मक्खन निकले दुग्ध चूर्ण की माग ११,२९० टन है। इसलिये नीचे की तालिका के आंकड़े मक्खन निकले दुग्ध चूर्ण के विषय में हैं।—

विवरण	पहला वर्ष	दूसरा वर्ष	तीसरा वर्ष	चौथा वर्ष	पांचवा वर्ष
१. प्रतिवर्ष खुलने वाले दुग्ध चूर्ण तैयार करने वाले कारखानों की संख्या	२	४	५	५	६
२. कारखानों की संख्या में वृद्धि	२	६	११	१६	२२
३. वर्ष की समाप्ति पर कारखानों की कुल उत्पादन क्षमता, टनों में	६	१८	३३	४८	६६
४. प्रत्येक कारखाने के काम के न्यूनतम अनुमानित दिनों की संख्या	१२०	१५०	१८०	१८०	१८०
५. वर्ष की समाप्ति पर मक्खन निकले दुग्ध चूर्ण का कुल वार्षिक उत्पादन, टनों में ..	१,०८०	२,७००	५,९४०	८,६४०	११,८८०
६. मक्खन निकले दुग्ध चूर्ण की वार्षिक माग और उत्पादन अन्तर, टनों में	—१०,२१०	—८,५९०	—५,३५०	—२,६५०	+५९०
७. तरल दूध की आवश्यकता का अनुमान, यह मानते हुए कि ११ भाग दूध से १ भाग दुग्ध चूर्ण बनेगा, टनों में	११,८८०	२९,७००	६५,३४०	९५,०४०	१,३०,६८०
८. .. .. मनों में	३,२०,७६०	८,०१,९००	१७,६४,१८०	२५,६६,०८०	३५,२८,३६०

आरम्भ के दो वर्षों में केवल २ कारखानों का ही प्रस्ताव किया गया है जिससे हानि होने की आशंका न रहे। दुग्ध चूर्ण उद्योग के साथ साथ दुग्ध उत्पादन उद्योग का विस्तार होता रहना भी आवश्यक है। ५ वर्ष में दुग्ध चूर्ण के २२ कारखाने खुल सकेंगे जो प्रत्येक कारखाने की उत्पादन क्षमता, देश में दुग्ध चूर्ण की मांग और तरल दूध की उपलब्धि का ध्यान में रखते हुये स्थापित किये जायगे।

आरम्भ में दुग्ध चूर्ण के कारखानों को केवल उन दिनों में ही पर्याप्त दूध मिल सकेगा जब उसका उत्पादन बढ़ जाता है। यदि डेरी उद्योग के विकास को प्राथमिकता भी दी जाय फिर भी वह शीघ्र ही अधिक दूध प्रदान नहीं कर सकेगा। इस लिये यह अनुमान लगाया गया है कि दुग्ध चूर्ण बनाने वाले कारखाने पहले वर्ष में केवल ४

महीने, दूसरे वर्ष में ९ महीने और फिर तीसरे, चौथे और पांचवें वर्षों में ६ ६ महीने चलेंगे।

उपर्युक्त विवेचना से प्रकट होता है कि देश की दुग्ध चूर्ण सम्बन्धी वर्तमान माग ५ वर्षो के पश्चात् पूर्णत. देशी उत्पादन से ही पूरी हो जाया करेगी। जब तक ऐसा नहीं होने लगेगा दुग्ध चूर्ण का आयात होता रहेगा।

निष्कर्ष और सिफारिशें

(१) गत वर्षों में हुए औसत आयात के आधार पर प्रति वर्ष मक्खन निकले दुग्ध चूर्ण की देश में अनुमानत ११,२६० टन और शुद्ध दुग्ध चूर्ण की १,१०७ टन खपत हो सकती है।

(२) भारत मे दूध की बिक्री सम्बन्धी रिपोर्ट (१९५०) के अनुसार देश मे प्रतिवर्ष ४,८१५.५ लाख मन दूध उत्पन्न होता है। उत्तर प्रदेश, मद्रास, पूर्वी पजाब, बिहार और बम्बई राज्य दूध उत्पादन मे प्रमुख है।

(३) दुग्ध चूर्ण तैयार करने के उपयुक्त क्षेत्रों में अधिक दूध उत्पन्न करने के लिये गम्भीर प्रयत्न करना आवश्यक है। दुग्ध चूर्ण तैयार करने के उद्देश्य से देश मे डेरी उद्योग का विकास करने के लिये केन्द्रीय सरकार या खाद्य और कृषि मन्त्रालय तथा राज्यों की सरकारें सभी प्रकार की सहायता दें।

(४) मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण बनाने मे गाय और भैंस का मिला जुला दूध काम मे लाया जा सकता है।

(५) भैंस के शुद्ध दूध का दुग्ध चूर्ण बनाने के परीक्षण करने की आवश्यकता है।

(६) दुग्ध चूर्ण जैसे नये उद्योग का देश में सुनियोजित ढंग से विकास होना चाहिये। इसलिये नये कारखानों के स्थानों का निश्चय राज्य सरकारों और केन्द्रीय खाद्य तथा कृषि मन्त्रालय के परामर्श से भली प्रकार सोच विचार कर किया जाना चाहिए। इस उद्योग की मशीनों आदि का आयात करने के लाइसेन्स केवल उन्हीं लोगों को दिये जाने चाहिए जिनकी योजनाएं वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय अन्तिम रूप से स्वीकार कर ले।

(७) दुग्ध चूर्ण कारखानों मे सुशिक्षित विशेषज्ञ और वैज्ञानिक रखे जाने चाहिए जिसमे दूध और दुग्ध चूर्ण की स्वच्छता, शुद्धता और तत्वों को सुरक्षित रखने पर विशेष ध्यान रखा जा सके।

(८) फुहार प्रणाली से मक्खन निकले दूध का प्रतिदिन २ टन चूर्ण तैयार करने वाला कारखाना खोलना ही लाभप्रद रहेगा।

(९) फुहार प्रणाली से बनाया गया चूर्ण घुलता अच्छा है, अत इसी प्रणाली के कारखाने खोलने की सिफारिश की जा सकती है। परन्तु बेलन प्रणाली के एक दो कारखाने भी चलाये जा सकते है।

(१०) *देश की माग पूरी करने के लिये अगले ५ वर्षों मे दुग्ध चूर्ण तैयार करने वाले ११ कारखाने स्थापित किये जा सकते हैं।*

★★★ कपड़ा निर्यात का लक्ष्य एक अरब गज भविष्य में भी रहना चाहिए.....

हाथकरघा उद्योग को सुधारने के सुझाव

भारत सरकार की कपड़ा जांच समिति की सिफारिशें

कपड़ा उद्योग जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट कुछ दिन पूर्व प्रकाशित की है। यह समिति मिल, हाथकरघा और शक्तिचालित करघा उद्योगों की विशद जांच करके उनमें सुधार करने के उपाय सुझाने के लिये भारत सरकार ने नियुक्त की थी।

समिति का मत है कि मिलों के कताई विभागों का विस्तार न करके उनके अतिरिक्त सूत को हाथकरघों को दिया जाना चाहिए।

हाथकरघों को सुधारने के भी समिति ने उपाय सुझाये हैं। उसका कहना है कि इन करघों के स्थान पर स्वचालित और शक्तिचालित करघे लगाये जाने चाहिए और इन्हें प्रतिवर्ष ५,००० करघे के हिसाब से बदलना चाहिए।

विदेशों को एक अरब गज कपड़ा प्रतिवर्ष भेजते रहने का लक्ष्य आगे भी हमें बनाये रखना चाहिए।

जांच समिति का संगठन

भारत सरकार द्वारा नियुक्त की गई कपड़ा उद्योग समिति की रिपोर्ट हाल में ही प्रकाशित हुई है। यह समिति नवम्बर १९५२ में नियुक्त की गई थी और इसके अध्यक्ष संसद सदस्य श्री नित्यानन्द कानूनगो थे जो अब वाणिज्य और उद्योग उपमन्त्री हैं। उनके अतिरिक्त सर्वश्री एम० सी० दामप्पा, बी० एन० तिवारी, ए० आर० भट्ट, प्रो० एन० के० मुरंजन, प्रो० आर० बालकृष्ण, प्रो० एम० के० [illegible], श्री एम० पी० चोपड़ा, श्री टी० स्वामीनाथन आई० सी० एस० सुब्रह्मण्यम समिति के सदस्य थे। समिति को सूती कपड़ा उद्योग के विभिन्न अंगों अर्थात मिलों, शक्तिचालित करघों और हाथकरघा के विषय में भी जांच करने का कार्य सौंपा गया था जिससे यह ज्ञात हो सके कि देश की अर्थ व्यवस्था में इनका क्या स्थान है और आपस में उनके क्या सम्बन्ध हैं।

उद्योग के मिल विभाग के विषय में समिति का कहना है कि १ जनवरी १९५४ को देश में सूती कपड़ा उद्योग सम्बन्धी ४०० मिल थे। इनमें से ११४ केवल कताई का काम करते थे और २६८ कताई बुनाई दोनों करते थे। इन मिलों में कुल ११०.१९ तकुवे थे जिनमें १.८९ लाख स्थायी रूप से बन्द पड़े रहते थे। इस प्रकार कुल ११४.३ लाख तकुवे चलते थे। इनमें से ९८.०६ लाख कताई बुनाई दोनों करने वाले मिलों में थे और १६.०८ लाख केवल कताई करने वाले मिलों में थे। इसी तारीख को समस्त मिलों में २,०१,७१८ करघे थे जिनमें से केवल १९७,००० करघे चलते थे।

भारत के कपड़ा मिल भी अमेरिका और जापान के मिलों की भांति रुई की धुनाई से लेकर कपड़ा बुनने और रंगने तक के सभी काम स्वयं करते हैं। परन्तु अमेरिका और जापान के मिलों में जहां अधिकांश स्वचालित करघे काम में लाये जाते हैं वहां भारत में ब्रिटेन के लंकाशायर के मिलों की भांति साधारण करघे ही लगे हुए हैं।

महायुद्धों से सहायता

समिति का कहना है कि दोनों महायुद्धों के कारण भारत के कपड़ा उद्योग का विस्तार होने में सहायता मिली है। परन्तु अधिकांश भारतीय मिलों की मशीनें और उपकरण पुराने हैं जिनके स्थान पर नयी मशीनें लगाने की आवश्यकता है। योजना कमीशन ने १९५५-५६ के लिये प्रति व्यक्ति पीछे १५ गज कपड़े का लक्ष्य रखा है, जिसे पूरा करने के लिये मिलों को ४७,००० लाख गज और हाथकरघों को १७,००० लाख गज कपड़ा देना चाहिए और १०,००० लाख गज निर्यात के लिये रहना चाहिए। मिलों ने १९५२ में ही अपना वह लक्ष्य पूरा कर लिया जो १९५५-५६ के लिये निर्धारित किया गया था। इस समय तो उनका उत्पादन और भी बढ़ गया है। १९५४ की पहली छमाही में २४,५१०

लाख गज उत्पादन हुआ और जुलाई १९५४ का अनुमान ४,४१० लाख गज है जो पिछले सभी उत्पादनों से अधिक है। इस प्रकार मिलों ने पञ्चवर्षीय योजना में निर्धारित लक्ष्य से कहीं अधिक उत्पादन कर दिखाया है। हाथकरघों और शक्तिचालित करघों का सम्मिलित उत्पादन भी १५,००० लाख गज हो जाने का अनुमान है।

युक्तियुक्त संगठन

समिति का यह भी कहना है कि पहले भारत विदेशों से बहुत सा कपड़ा मंगाया करता था, परन्तु द्वितीय महायुद्ध में और उसके बाद वह कपड़े का उलटा निर्यात करने लगा। भविष्य में भी इसी प्रकार निर्यात होते रहने के लिये यह आवश्यक है कि कपड़ा उद्योग की स्थिति मजबूत की जाय। इसके लिये समिति ने सिफारिश की है कि कपड़ा मिलों के साधारण करघों को प्रति वर्ष प्राय ५,००० के हिसाब से हटा कर उनके स्थान पर स्वचालित करघे लगाये जाय। इस प्रकार २० वर्ष में कपड़ा मिलों के लगभग आधे करघे बदल कर स्वचालित करघे हो जायगे। ऐसा हो जाने पर भारतीय कपड़ा मिल अच्छी किस्म का कपड़ा सस्ते मूल्यों पर बनाने लगेंगे और इस प्रकार वे स्वचालित करघा द्वारा सस्ता कपड़ा तैयार करने वाले अन्य देशों के मिलों से प्रति पर्धा कर सकेंगे। परन्तु स्वचालित करघे लगाने का कार्य मजदूरों से समझौता करके और सरकार द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार किया जाना चाहिए।

कपड़ा मिल उद्योग को नये रूप में सगठित करने के लिये धन की जो आवश्यकता होगी उसके विषय में समिति का मत है कि इस उद्योग को जिन साधनों से धन मिल रहा है उन्हीं से नये रूप में सगठित करने के लिये भी मिल जायगा।

उद्योग में लगे हुए व्यक्तियों को यथावत् लगाये रखने की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए समिति ने सिफारिश की है कि उद्योग के बुनाई कार्य का अब और विस्तार करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। मिलों द्वारा इस समय प्राय ५०,००० लाख गज कपड़े का प्रति वर्ष उत्पादन हो रहा है। यह उत्पादन इसी सीमा पर स्थिर रखना चाहिए। समिति का यह भी कहना है कि यदि इस उद्योग का विभिन्न स्थानों पर विस्तार किया जाय तो वे सभी सामाजिक और सास्कृतिक दोष दूर किये जा सकते हैं जो एक स्थान पर केन्द्रित करने से उत्पन्न हो जाते हैं।

अहमदाबाद कपड़ा उद्योग गवेषणा सघ की प्रयोगशाला तथा अन्य स्थानों में हुए गवेषणा कार्य की प्रशसा करते हुए समिति ने व्यवस्था सम्बन्धी गवेषणा करने पर भी जोर दिया है। उसका कहना है कि व्यवस्था का सर्वोत्तम और श्रेष्ठतम होना अत्यावश्यक है। धन की व्यवस्था, आवश्यक सामान और कच्चे माल की प्राप्ति, लागत और उसकी प्रणाली और मजदूरों तथा कर्मचारियों की व्यवस्था सभी पर यह लागू होता है। कपड़ा उद्योग की मशीनों और इजीनियरी कार्य के विषय में भी और अधिक गवेषणा होनी चाहिए।

करघों में वृद्धि का प्रश्न

तथाकथित "घाटे" के मिलों के विषय में समिति ने यह बात नहीं मानी है कि तकुओं की सख्या को देखते हुए करघों की सख्या कम होने के कारण ही इन मिलों में घाटा होता है। समिति का कहना है कि देश में "अनेक वर्षों से ऐसे अनेक मिल बड़ी अच्छी तरह से चल रहे हैं जो केवल कताई का काम ही करते हैं। समिति ने कहा है कि यदि केवल तकुओं और करघों का सन्तुलन ठीक न होने के कारण ही इन मिलों में घाटा होता है तो उन्हें या तो तकुओं की सख्या बढ़ाने में सहायता देनी चाहिए अथवा उन्हें अन्य मिलों में मिला देना चाहिए। समिति ऐसे मिलों में भी करघों की सख्या बढ़ाने के विरुद्ध है, क्योंकि कपड़े की माग बढ़ने के साथ भविष्य में सूत की माग भी अवश्य बढ़ेगी और सूत का उत्पादन और बिक्री करने में भी अच्छा लाभ होगा।

शक्ति चालित करघा उद्योग

समिति को ज्ञात हुआ है कि देश में शक्ति-चालित करघा उद्योग को चले अभी थोड़े ही दिन हुए हैं। यह उद्योग कपड़ा मिल उद्योग से भिन्न है। शक्ति चालित करघा उद्योग एक प्रकार से हाथ करघा उद्योग का ही विकसित रूप है। शक्ति चालित करघों के कारखानों में साधारणतः १ से लेकर ५ तक करघे लगाये जाते हैं। शक्ति चालित करघों का काम हाथ करघे के काम से भिन्न है। हाथ करघे का बुनकर जहा एक थान तैयार करता है, वहा शक्तिचालित करघे का बुनकर उतने ही समय में प्राय चार थान तैयार करता है। इस प्रकार वह हाथ करघे की अपेक्षा चौगुना उपार्जन करता है।

शक्ति चालित करघों के बड़े कारखाने साधारणत फैक्टरी अधिनियम के अन्तर्गत आ जाते हैं और किसी किसी पर तो कानून द्वारा निश्चित न्यूनतम मजदूरी भी लागू हो जाती है। समिति ने यह निष्कर्ष निकाला है कि वास्तव में उद्योग के केवल दो क्षेत्र ही होने चाहिए, अर्थात् एक तो सुधरे करघा तथा साधारण हाथ करघा उद्योग तथा छोटे परिमाण पर चलने वाला शक्ति चालित करघा उद्योग और दूसरा मिल उद्योग का क्षेत्र।

हाथ करघा उद्योग के विषय में समिति का कहना है कि भारत में अब भी हाथ करघा द्वारा नाना प्रकार की डिजायनों के सुन्दर और आकर्षक कपड़े तैयार होते हैं। ढाका की मलमल, बड़ौदा के पटोला, आसाम, मणिपुर, उड़ीसा और दक्षिण भारत के अनेक प्रकार के वस्त्र यदि जग प्रसिद्ध रहे हैं तो अपनी श्रेष्ठता के कारण ही। ये बारीक से बारीक तैयार किये जाते हैं। बुनकरों ने हाथ-करघा उद्योग द्वारा अपनी कला का सुन्दर तम प्रदर्शन किया है।

अर्द्ध स्वचालित करघे

हाथकरघा उद्योग की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि बहुत ही थोड़ी पूजी से यह काम चलाया जा सकता है। कोई भी बुनकर केवल ५० से लेकर १०० रु० तक लगा कर ही अपना काम चालू कर सकता है। परन्तु करघे आदि कम पूजी वाले होने के कारण बुनकर को परिश्रम अधिक करना पड़ता है। घटिया करघे द्वारा वह बेचारा केवल २ से ५ गज तक ही कपड़ा प्रतिदिन बुन पाता है। फ्लाई शटल वाले करघे से

आधार पर हाथ करघा, शक्ति-चालित करघा तथा मिल उद्योगों के लिये उत्पादन के क्षेत्र अलग-अलग निर्धारित कर देना सम्भव नहीं होगा।

प्रतिस्पर्धा बचाई जाय

कपड़ा उद्योग के तीनों अंगों के मध्य केवल दूसरी कारण संघर्ष होता है कि तीनों द्वारा बनाये जाने वाले कपड़ों में कोई अन्तर नहीं किया जा सकता और इन तीनों के उत्पादनों में आपस में प्रतिस्पर्धा होती है। इस कारण समिति ने यह मत व्यक्त किया है कि हाथकरघा उद्योग की वर्तमान आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में व्याघात किये बिना उसे अधिक उन्नत बनाया जाय और इसके लिये जहां कहीं आवश्यक हो उसमें शक्ति का प्रयोग किया जाय।

हाथ-करघा उद्योग समस्त देश में बिखरा हुआ है। अतः इसके उत्पादनों की लागत का कोई निश्चय नहीं किया जा सकता। परन्तु जब से ४० प्रतिशत धोतियों का उत्पादन इसके लिये सुरक्षित कर दिया गया है तब से यह पहले की अपेक्षा अधिक सस्ते दामों पर धोतियां बनाकर बेचने लगा है।

समिति का अनुमान है कि १२ लाख सामान्य हाथ-करघे प्रतिदिन ६ गज कपड़ा बनाकर वर्ष में २०० दिन काम करके प्रायः १४,००० लाख गज कपड़ा तैयार कर रहे हैं। यह उत्पादन प्रति वर्ष बराबर बढ़ता जा रहा है और एक दो वर्ष में यह १६,००० लाख गज हो जाने की आशा है। समिति के मत से इतना उत्पादन करने के लिये वर्ष में ३०० दिन काम करने वाले केवल ९ लाख करघों की आवश्यकता होगी। इस प्रकार ३ लाख करघे बन्द हो जायेंगे, जिससे प्रायः ३.७५ लाख बुनकर अथवा पूरे दिन काम करने वाले प्रायः ४ लाख बुनकर बेकार हो जायेंगे।

१९६० तक कितना उत्पादन होगा

समिति का अनुमान है कि निर्यात के लिये १०,००० लाख गज छोड़कर देश में उपयोग के लिये १९५४ में अनुमानतः ५६,००० लाख गज कपड़ा उपलब्ध रहेगा। १९६० तक देश की मांग पूरा करने के लिये १६,००० लाख गज अतिरिक्त कपड़े की आवश्यकता होगी। बुनकरों को यथावत् लगाये रखने और पूंजी की बचत करने के उद्देश्य से समिति ने सिफारिश की है कि यह अतिरिक्त उत्पादन कपड़ा उद्योग के विकेन्द्रित अंग द्वारा किया जाना चाहिए जिसमें ऐसे अर्द्ध स्वचालित करघों का प्रयोग किया जाय जो प्रतिदिन (८ घण्टे के) २० से २४ गज तक कपड़ा तैयार करें। स्वचालित के अतिरिक्त शक्ति चालित करघों का भी प्रयोग किया जाय जो प्रति पाली ३० अथवा अधिक गज कपड़ा तैयार करें। इसके लिये २.१३ लाख उन्नत हाथ अथवा शक्ति चालित करघों की आवश्यकता होगी जो वर्ष में ३०० दिन काम करके प्रतिदिन २५ गज के हिसाब से १६,००० लाख गज अतिरिक्त कपड़ा तैयार करेंगे। इसका यह अर्थ होगा कि हाथकरघा उद्योग के वर्ष में काम के दिनों की संख्या २०० से बढ़ाकर ३०० कर देने से २.१३ लाख अतिरिक्त उन्नत ढंग के हाथ अथवा शक्ति-चालित करघे बढ़ा देने होंगे।

समिति को आशा है कि २.१३ लाख नये करघों में प्रायः २.५ लाख बुनकरों को काम मिल जायगा। इस प्रकार ६ वर्षों में केवल १.२५ लाख बुनकर ही बेकार होंगे, अर्थात् प्रति वर्ष केवल २०,००० और इतने से कोई भारी सामाजिक अथवा आर्थिक उपद्रव नहीं होगा। फिर अगली पंचवर्षीय योजना के फलस्वरूप कृषि, उद्योग तथा अन्य साधनों का विकास होने के कारण काम के इतने साधन उपलब्ध होंगे कि जनसंख्या में होने वाली वृद्धि के अतिरिक्त इधर से बेकार हुए व्यक्ति भी इनमें खप जायेंगे।

मोटे तौर पर समिति का सुझाव है कि ६ वर्षों में साधारण हाथकरघों के स्थान पर ६०,००० शक्तिचालित करघे और १.५ लाख उन्नत अर्द्ध स्वचालित करघे लगा देने चाहिए। ऐसा करने से प्रति वर्ष २ करोड़ रु० व्यय होंगे। इस प्रकार हमारी योजना यह होनी चाहिए कि प्रति वर्ष २०,००० हाथकरघों को हटा कर उनके स्थान पर १०,००० शक्ति-चालित करघे और ३८,००० हाथकरघों को हटाकर उनके स्थान पर २५,००० उन्नत अर्द्ध स्वचालित करघे लगाये जाने चाहिए।

सहकारी समितियों का प्रयोग

समिति का मत है कि इस प्रकार हाथ करघे बदलने का कार्य सहकारी समितियों द्वारा होना चाहिए अन्यथा देश में कपड़े का उत्पादन घट जायगा। इसका इस कारण और भी विशेषतः ध्यान रखना है कि मिलों में बुनाई विभाग का विस्तार नहीं किया जा रहा है। यदि सहकारी ढंग से यह काम तेजी के साथ न हो सके तो ज्वायन्ट स्टाक कम्पनी आदि के ढंग पर बड़े साधनों से इसे करना होगा। समिति ने इस बात पर बल दिया है कि मौजूदा कारखानों को छोड़कर अन्य सभी अवस्थाओं में प्रयत्न यही होना चाहिए कि करघे का स्वामी बुनकर ही रहे, फिर चाहे सहकारिता के ढंग पर काम किया जाय अथवा ज्वायन्ट स्टाक कम्पनी के ढंग पर। करघों के बदलने का काम तेजी के साथ करने के लिये ज्वायन्ट स्टाक कम्पनी जैसे साधनों का भी प्रयोग करना चाहिए। शक्ति-चालित करघों की कुछ संख्या निजी औद्योगिकों, जैसे उस्ताद बुनकरों के लिये सुरक्षित कर देनी चाहिए। सहकारी संगठनों द्वारा जो परिवर्तन होगा उसमें इस उद्देश्य से सरकार द्वारा दिये गये धन का प्रयोग होगा।

समिति का विचार है कि साधारण करघों को बदलने का काम इस प्रकार से चलने पर जो ९ लाख करघे शेष रह जायेंगे उन्हें भी २-३ पंचवर्षीय अवधियों में बदल दिया जायगा। इस प्रकार १५-२० वर्षों के बाद केवल ऐसे २०,००० हाथकरघों को छोड़कर जो विशेष प्रकार के पेचीदा डिजायन वाले कपड़े तैयार करने के काम आते हैं, शेष सभी हाथकरघे बदल जायेंगे और उनके स्थान पर उन्नत ढंग के अर्द्ध स्वचालित अथवा घरों में ही शक्ति से चलने वाले हाथकरघे लग जायेंगे।

समिति ने इस अवधि में मिलों के केवल कताई विभाग में वृद्धि होने की सिफारिश की है। बुनाई विभाग का प्रतिवर्ष ५०,००० लाख गज की शक्ति से अधिक विस्तार नहीं होना चाहिए। आगामी ६ वर्षों में जो

प्रतिदिन ४ से ८ गज तक कपड़ा निकलता है। अर्द्ध स्वचालित मदनपुरा करघे से एक बुनकर प्रतिदिन १० गज तक कपड़ा बना लेता है। आशा है कि मदरास में बनाये गये अर्द्ध स्वचालित करघों तथा अन्य सुधरी प्रणालियों द्वारा और अधिक कपड़ा बनाया जा सकेगा। विशाल परिमाण पर काम चलाया जाय तो इस प्रकार के उन्नत करघे को लगाने में प्राय २०० रु० व्यय होता है।

समिति का मत है कि समस्त देश में हाथकरघा बुनकरों को सहकारिता के आधार पर संगठित कर देना चाहिए। यह संगठन ऐसा होना चाहिए जिससे बुनकरों को उचित मजदूरी मिलती रहे। बुनकरों से यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि वे अपना कच्चा माल, रंग इत्यादि सहकारी समिति से खरीदें और अपना अधिक से अधिक माल भी समिति द्वारा ही बेचें।

समिति द्वारा किये गये एक पर्यवेक्षण के अनुसार प्रकट हुआ है कि १९५१ में की गई गणना के बराबर ही आज भी हाथकरघों की संख्या है। गणना के समय देश में कुल २१.६ लाख करघे थे। एक दो स्थानों को छोड़कर प्राय सर्वत्र हाथकरघा का बुनकर अपना करघा चलाने के अतिरिक्त अन्य कोई काम नहीं करता। उसके पास खेत अथवा जीविका का अन्य कोई साधन भी नहीं होता। २० लाख हाथकरघों में से केवल १० लाख ही व्यापारिक ढंग पर चल रहे हैं। इनमें खपने वाले सूत के आधार पर यह हिसाब लगाया गया है। यह हिसाब लगाने में यह भी मान लिया गया है कि जो बुनकर वर्ष में २०० दिन करघा नहीं चलाता वह इस उद्योग का पूरे समय वाला कारीगर नहीं है। साथ ही यह भी माना गया है कि एक बुनकर प्रतिदिन औसतन ६ गज कपड़ा तैयार करता है। प्रत्येक करघे से प्राय २.२५ व्यक्तियों को पूरे समय का काम मिलता है। अतः इस समय हाथकरघा उद्योग से ४५ लाख व्यक्तियों की जीविका चलती है।

हाथकरघा बनाम शक्तिचालित करघा

कुछ विशेष किस्मों के कपड़े का उत्पादन हाथकरघा उद्योग के लिये सुरक्षित कर दिया गया है। इससे हाथकरघा उद्योग को कोई सहायता मिली है या नहीं इस सम्बन्ध में बहुत विवाद हुआ है। समिति को अपने दौरे में जो मौखिक साक्षियाँ प्राप्त हुई हैं और उसके द्वारा जारी की गई प्रश्नावली के जो उत्तर आये हैं उनसे प्रकट होता है कि रंगीन तथा चारखाने की साड़ियों और कपड़ों का उत्पादन हाथकरघा के लिये सुरक्षित कर देने से इस उद्योग को निश्चित रूप से सहायता मिली है। एक तर्क यह भी दिया जाता है कि हाथकरघा उद्योग कुछ विशेष प्रकार के कपड़े तैयार करने के लिये अत्यन्त उपयुक्त है। इस सम्बन्ध में समिति का कहना है कि अत्यधिक पेचीदी बुनाई के कपड़े छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार के कपड़े तैयार करने के लिये हाथ करघा, मिल अथवा स्वचालित करघे से अधिक उपयुक्त नहीं है। हाथकरघा केवल उस कपड़े को बुनने के लिये ही अधिक उपयुक्त है जिसमें बारम्बार रुक कर ताना बदलना पड़ता है। जहाँ ताने की लम्बाई अधिक लम्बी नहीं रखनी होती वहाँ भी हाथकरघा सुविधाजनक रहता है। अतः रंगीन साड़ियाँ बनाने के लिये हाथकरघा अथवा छोटा शक्तिचालित करघा अत्यन्त उपयुक्त है। कमजोर सूत की बुनाई के लिये भी हाथकरघा अन्य करघों की अपेक्षा अच्छा रहता है।

भारतीय कपड़े का निर्यात

भारतीय कपड़े के निर्यात बाजारों का विश्लेषण करने के बाद समिति का विचार है कि हम कपड़े के निर्यात का लक्ष्य १०,००० लाख गज ही रखना चाहिए। समिति ने यह भी स्वीकार किया है कि हाल के महीनों में जापान ने अपने कपड़े का निर्यात बढ़ाने का विशेष प्रयत्न आरम्भ किया है। इसके अतिरिक्त नीदरलैण्ड, पश्चिमी जर्मनी, इटली और स्पेन ने भी कपड़े का निर्यात करना आरम्भ कर दिया है। इस सम्बन्ध में समिति का कहना है कि रूस और चीन कपड़े के बड़े अच्छे बाजार हैं परन्तु इन दोनों देशों की माँग क्या हो सकती है इसके विषय में अभी तक कोई निश्चित जानकारी नहीं मिली है। परन्तु इस समय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की प्रगति को देखते हुए हम मान सकते हैं कि इन दोनों के ही साथ सभी कपड़ा उत्पादक देशों के अच्छे सम्बन्ध रहने की आशा है। यद्यपि रूस और चेकोस्लोवाकिया तथा हंगरी जैसे देशों से भी कपड़े का निर्यात होने लगने की सम्भावना है तथापि अभी चीन तो पर्याप्त समय तक विदेशी कपड़े से ही अपना काम चलायेगा। समिति का मत है कि यदि देश में ही कपड़े की माँग आशा से कहीं अधिक बढ़ गई तो १०,००० लाख गज कपड़ा निर्यात कर सकना कठिन हो जायगा। १९५२ में करघे के कुल ६,६६४ लाख कपड़े में से केवल ६९८ लाख गज ही विदेशों को भेजा जा सका। यदि निकट भविष्य में ही करघे का कपड़ा अधिक अच्छा और अधिक सस्ता नहीं बनाया जायगा तो इसका निर्यात बढ़ाना सम्भव नहीं होगा। अतः निकट भविष्य में हमारे देश से निर्यात होने वाला अधिकांश कपड़ा मिलों का ही होगा करघे का नहीं। यद्यपि करघे के कपड़े का निर्यात बढ़ाने के लिये अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड अच्छा प्रयत्न कर रहा है।

समिति का मत है कि विदेशी विनिमय प्राप्त करने और मिलों में अधिक से अधिक लोगों को काम देने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हम प्रति वर्ष १०,००० लाख गज कपड़े का निर्यात करते रहें। मोटे और बारीक सूत के कपड़े के बनाने में जो खर्च पड़ता है उसे देखते हुए यदि बारीक और बहुत बारीक सूत के कपड़ों का निर्यात किया जाय तो हमें अधिक विदेशी मुद्राएँ प्राप्त होंगी। फिर धारीदार की अपेक्षा रंगीन, छपा हुआ अथवा तैयार कपड़ा विदेशों को भेजने से भी अधिक लाभ होगा।

समिति का मत है कि जब तक हाथकरघा बुनकरों को वर्ष में २०० दिनों का काम नहीं मिलने लगता और हाथकरघा, शक्तिचालित करघा और उद्योगों के कपड़ों की डिजायनें अपेक्षाकृत स्थिर नहीं हो जातीं तब तक हाथकरघा उद्योग के लिये विशेष प्रकार के कपड़ों का निर्माण सुरक्षित रखना होगा। समिति ने यह भी कहा है कि केवल शैल्पिक

आधार पर हाथ-करघा, शक्ति चालित करघा तथा मिल उद्योगों के लिये उत्पादन के क्षेत्र अलग-अलग निर्धारित कर देना सम्भव नहीं होगा।

प्रतिस्पर्धा बचाई जाय

कपड़ा उद्योग के तीनों अंगों के मध्य केवल इसी कारण संघर्ष होता है कि तीनों द्वारा बनाये जाने वाले कपड़ों में कोई अन्तर नहीं किया जा सकता और इन तीनों के उत्पादनों में आपस में प्रतिस्पर्धा होती है। इस कारण समिति ने यह मत व्यक्त किया है कि हाथकरघा उद्योग की वर्तमान आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में व्याघात किये बिना उसे अधिक उन्नत बनाया जाय और इसके लिये जहां कहीं आवश्यक हो उसमें शक्ति का प्रयोग किया जाय।

हाथ करघा उद्योग समस्त देश में बिखरा हुआ है। अत इसके उत्पादनों की लागत का कोई निश्चय नहीं किया जा सकता। परन्तु जब से ४० प्रतिशत धोतियों का उत्पादन इसके लिये सुरक्षित कर दिया गया है तब से यह पहले की अपेक्षा अधिक सस्ते दामों पर धोतियां बनाकर बेचने लगा है।

समिति का अनुमान है कि १५ लाख साधारण हाथ-करघे प्रतिदिन ६ गज कपड़ा बनाकर वर्ष में २०० दिन काम करके प्राय. १४,००० लाख गज कपड़ा तैयार कर रहे हैं। यह उत्पादन प्रति वर्ष बराबर बढ़ता जा रहा है और एक दो वर्ष में यह १६,००० लाख गज हो जाने की आशा है। समिति के मत से इतना उत्पादन करने के लिये वर्ष में ३०० दिन काम करने वाले केवल ६ लाख करघों की आवश्यकता होगी। इस प्रकार ३ लाख करघे बन्द हो जायेंगे, जिससे प्राय. २.७५ लाख बुनकर अथवा पूरे दिन काम करने वाले प्राय. ४ लाख बुनकर बेकार हो जायेंगे।

१९६० तक कितना उत्पादन होगा

समिति का अनुमान है कि निर्यात के लिये १०,००० लाख गज छोड़कर देश में उपयोग के लिये १९५४ में अनुमानतः ५६,००० लाख गज कपड़ा उपलब्ध रहेगा। १९६० तक देश की मांग पूरा करने के लिये १६,००० लाख गज अतिरिक्त कपड़े की आवश्यकता होगी। बुनकरों को यथावत् लगाये रखने और पूंजी की बचत करने के उद्देश्य से समिति ने सिफारिश की है कि यह अतिरिक्त उत्पादन कपड़ा उद्योग के विकेन्द्रित अंग द्वारा किया जाना चाहिये जिसमें ऐसे अर्द्ध स्वचालित करघा का प्रयोग किया जाय जो प्रतिदिन (८ घण्टे के) २० से २४ गज तक कपड़ा तैयार करे। स्वचालित के अतिरिक्त शक्ति चालित करघा का भी प्रयोग किया जाय जो प्रति पाली ३० अथवा अधिक गज कपड़ा तैयार करें। इसके लिये २.१३ लाख उन्नत हाथ अथवा शक्ति चालित करघों की आवश्यकता होगी जो वर्ष में ३०० दिन काम करके प्रतिदिन २५ गज के हिसाब से १६,००० लाख गज अतिरिक्त कपड़ा तैयार करेंगे। इसका यह अर्थ होगा कि हाथकरघा उद्योग के वर्ष में काम के दिनों की संख्या २०० से बढ़ाकर ३०० कर देने से २.१३ लाख अतिरिक्त उन्नत ढंग से हाथ अथवा शक्ति-चालित करघे बढ़ा देने होंगे।

समिति को आशा है कि २.१३ लाख नये करघों में प्राय. २.५ लाख बुनकरों को काम मिल जायगा। इस प्रकार ६ वर्षों में केवल १.२५ लाख बुनकर ही बेकार होंगे, अर्थात् प्रति वर्ष केवल २०,००० और इतने से कोई भारी सामाजिक अथवा आर्थिक उपद्रव नहीं होगा। फिर अगली पंचवर्षीय योजना के फलस्वरूप कृषि, उद्योग तथा अन्य साधनों का विकास होने के कारण काम के इतने साधन उपलब्ध होंगे कि जनसंख्या में होने वाली वृद्धि के अतिरिक्त इधर से बेकार हुए व्यक्ति भी इनमें खप जायंगे।

मोटे तौर पर समिति का सुझाव है कि ६ वर्षों में साधारण हाथकरघों के स्थान पर ६०,००० शक्तिचालित करघे और १.५ लाख उन्नत अर्द्ध स्वचालित करघे लगा देने चाहिए। ऐसा करने में प्रति वर्ष २ करोड़ रु० व्यय होंगे। इस प्रकार हमारी योजना यह होनी चाहिए कि प्रति वर्ष २०,००० हाथकरघों को हटा कर उनके स्थान पर १०,००० शक्ति-चालित करघे और ३८,००० हाथकरघों को हटाकर उनके स्थान पर २५,००० उन्नत अर्द्ध स्वचालित करघे लगाये जाने चाहिए।

सहकारी समितियों का प्रयोग

समिति का मत है कि इस प्रकार हाथ करघे बदलने का कार्य सहकारी समितियों द्वारा होना चाहिए अन्यथा देश में कपड़े का उत्पादन घट जायगा। इसका इस कारण और भी विशेषत. ध्यान रखना है कि मिलों में बुनाई विभाग का विस्तार नहीं किया जा रहा है। यदि सहकारी ढंग से यह काम तेजी के साथ न हो सके तो ज्वायन्ट स्टाक कम्पनी आदि के ढंग पर बड़े साधनों से इसे करना होगा। समिति ने इस बात पर बल दिया है कि मौजूदा कारखानों को छोड़कर अन्य सभी अवस्थाओं में प्रयत्न यही होना चाहिए कि करघे का स्वामी बुनकर ही रहे, फिर चाहे सहकारिता के ढंग पर काम किया जाय अथवा ज्वायन्ट स्टाक कम्पनी के ढंग पर। करघों के बदलने का काम तेजी के साथ करने के लिये ज्वायन्ट स्टाक कम्पनी जैसे साधनों का भी प्रयोग करना चाहिए। शक्ति-चालित करघों की कुछ संख्या निजी औद्योगिकों, जैसे उस्ताद बुनकरों के लिये सुरक्षित कर देनी चाहिए। सहकारी संगठनों द्वारा जो परिवर्तन होगा उसमें इस उद्देश्य से सरकार द्वारा दिये गये धन का प्रयोग होगा।

समिति का विचार है कि साधारण करघों को बदलने का काम इस प्रकार से चलने पर जो ६ लाख करघे शेष रह जायंगे उन्हें भी २-३ पंचवर्षीय अवधियों में बदल दिया जायगा। इस प्रकार १५-२० वर्षों के बाद केवल ऐसे २०,००० हाथकरघों को छोड़कर जो विशेष प्रकार के पेचीदी डिजायन वाले कपड़े तैयार करने के काम आते हैं, शेष सभी हाथकरघे बदल जायंगे और उनके स्थान पर उन्नत ढंग के अर्द्ध स्वचालित अथवा घरों में ही शक्ति से चलने वाले हाथकरघे लग जायंगे।

समिति ने इस अवधि में मिलों के केवल कताई विभाग में वृद्धि होने की सिफारिश की है। बुनाई विभाग का प्रतिवर्ष ५०,००० लाख गज की शक्ति से अधिक विस्तार नहीं होना चाहिए। आगामी ६ वर्षों में जो

१६,००० लाख गज अतिरिक्त कपड़े की आवश्यकता होगी उसके लिये ४॥ गज प्रति पौण्ड के हिसाब से प्रायः ३,६०० लाख पौण्ड अतिरिक्त सूत की आवश्यकता होगी। इस अतिरिक्त सूत के लिये १७.५ लाख अतिरिक्त तकुओं की आवश्यकता होगी। प्रत्येक तकुवे पर ५॥ औंस प्रति पाली सूत निकलेगा, जबकि कारखानों में प्रतिदिन २ पालियां होंगी और वह महीने में २५ दिन काम करेगा। करघा को बदलने और मिलों में अतिरिक्त कताई का प्रबन्ध करने में ६ वर्षों में ५० करोड़ रु० व्यय होंगे।

हाथ करघों के लिये सूत की व्यवस्था

करघा उद्योग को किस मूल्य पर सूत दिया जाय इस सम्बन्ध में समिति का कहना है कि जब तक मिल सिर्फ उद्योग क्षेत्र में आगे रहेंगे तब तक उन्हें केवल कताई का काम साथ लेकर सूत देने को विवश नहीं किया जा सकता। करघों को सूत प्रदान करने के लिए एक अखिल भारतीय सूत वितरण बनाने की समस्या का बड़ा कठिन समाधान हुआ। समिति ने कहा है कि इस समय केन्द्रीय सरकार अथवा अन्य सरकारों द्वारा विशाल परिमाण पर सूत दिलाने की जो व्यवस्था है उसे चालू रखना चाहिए। इसके साथ ही कुछ सहकारी आधार पर बैंने हा कताई मिल भी खोले जाने चाहिए जैसा कि मद्रास में ही गुडाल्म में खोला गया है और दूसरा मद्रास राज्य के तिरुनेलवेली में खोला जाने का प्रस्ताव है। समिति ने यह आशा प्रकट की है कि सरकार सूत दिलाने वाले सहकारी संगठनों और प्रमुख सूत उत्पादकों के मध्य बिक्री सम्बन्धी कोई समझौता कराने का यत्न करेगी।

मिलों द्वारा पर्याप्त परिमाण में रंगा हुआ सूत तैयार कराने के प्रश्न पर समिति का कहना है कि उपर्युक्त स्थानों पर सूत के रंगाई घर खोलने का प्रस्ताव बहुत अच्छा है और उनकी अनुमति दी जानी चाहिए। इन रंगाई घरों का निरीक्षण रंगाई के विशेषज्ञ द्वारा होना चाहिए। समिति ने कहा है कि हाथ करघा उद्योग के उत्पादन और बिक्री की व्यवस्था करने के लिये सहकारी संगठन सर्वोत्तम रहेंगे और इस सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते।

समिति ने सिफारिश की है कि पुदुकोटा में कावेरी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स द्वारा जो परीक्षण किये जा रहे हैं उन्हीं के अनुसार हाथ करघा उद्योग और कताई मिलों का सहयोग होना चाहिए। पंजाब में सिंचाई की व्यवस्था हो जाने से रुई का उत्पादन काफी बढ़ा है। अतः वहां कताई मिलों और हाथ करघों के मध्य योजना पूर्वक सम्बन्ध स्थापित किये जाने चाहिए।

समिति संगठित मिल के बुनाई अंग का विस्तार करने के पक्ष में नहीं है। हाथ करघा उद्योग के आगे मिल और बिक्री की समस्याएं उग्ररूप में उपस्थित रहने के कारण मिलों और हाथ करघों को सम्बद्ध कर देने का प्रस्ताव समिति को बहुत पसन्द आया है। यदि किसी क्षेत्र के मिल अपने यहां तैयार सूत का कपड़ा हाथ करघा द्वारा तैयार कराके बेचना स्वीकार कर लें तो इस क्षेत्र के हाथ करघों को बदल कर उनके स्थान पर स्वचालित अथवा शक्तिचालित करघे लगाने की अनुमति विशेषज्ञ दे देनी चाहिए। बदले में लगाये जाने वाले उन्नत करघे प्रारम्भ में मिल अथवा उन संगठन के होंगे जो उन पर व्यय करेगा परन्तु धीरे-धीरे उन्हें मिलों और बुनकर के मध्य समझौते कराके बुनकर की सम्पत्ति बना देनी चाहिए।

उत्पादन सुरक्षित करने का प्रश्न

उत्पादन के क्षेत्र सुरक्षित करने के विषय में समिति का कहना है कि यह वर्तमान के समान उन्नत हाथ करघों के लिये भी सुरक्षित बना रहना चाहिये। परन्तु करघों को बदलने की पहली अवधि अर्थात् १९६० तक इसमें और कोई वृद्धि नहीं होनी चाहिये। पांच अथवा उससे अधिक स्वचालित करघों वाले कारखानों को भी सुरक्षित कपड़े बनाने की अनुमति होनी चाहिए परन्तु उन्हें यह स्पष्ट बता देना चाहिये कि १९६० के बाद उन्हें भी संगठित मिलों के अन्तर्गत ही माना जायगा। बम्बई राज्य में ही शक्तिचालित करघा उद्योग केन्द्रित होने के कारण समिति की सिफारिश है कि बम्बई सरकार को इस उद्योग से सम्बन्ध रखने वाले सभी मामलों की जांच करनी चाहिये और उसके उत्पादन की अच्छा करने के लिये आवश्यक उपाय करने चाहिए। समिति का यह भी मत है कि हाथ करघों पर मलमल वगैरह आदि के बनाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिये।

हाथ करघा उत्पादन सम्बन्धी गवेषणा के विषय में समिति का कहना है कि बनारस टैक्सटाइल इन्स्टीट्यूट (Banaras Textile Institute) ने हाथ करघों में सुधार सुझाये हैं और बुनाई की प्रणालियों में भी सुधार करने के उपाय बताये हैं। समिति का कहना है कि बनारस की इन्स्टीट्यूट और अन्य संस्थाओं को करघा तथा अन्य उपकरणों के सुधारने के लिये और भी प्रयत्न करने चाहिये। परन्तु इस कार्य के लिए कोई भारी खर्चीला संगठन नहीं बनाना चाहिए।

खादी के विषय में जांच

समिति ने खादी के विषय में विशेष जांच करने की सिफारिश की है। समिति ने करघा उद्योग के आंकड़े एकत्रित किये जाने पर भी जोर दिया है और आशा प्रकट की है कि इसके लिये कोई स्थायी संगठन बना दिया जायगा। साधारण करघों को बदल कर उन्नत करघे लगाने के लिये तो समिति ने आंकड़ों का विशेष महत्व माना है। समिति ने यह भी सिफारिश की है कि अब नये करघे लगाने की अनुमति नहीं देनी चाहिये।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कपड़े की किस्म अंकित करने की जो योजना चालू की गई है वैसी ही योजना हाथ करघे के समस्त कपड़े पर लागू करने की भी समिति ने सिफारिश की है।

समिति ने करघा उद्योग के लिये एक सलाहकार समिति स्थापित करने की आवश्यकता भी स्वीकार की है। इसके मुख्य कार्य इस प्रकार होंगे :—

(१) हाथ करघे बदलने की प्रगति का सिंहावलोकन करते रहना और कताई मिलों तथा सुधरे हुए शक्तिचालित करघा उद्योग के मध्य सामञ्जस्य स्थापित करना।

(२) सरकार को समय-समय पर यह सलाह देते रहना कि कताई के अतिरिक्त तकुए कहां और किस प्रकार लगाना सर्वोत्तम होगा, जिससे जनसंख्या में वृद्धि होने और रहन सहन का प्रतिमान ऊंचा हो जाने के कारण कपड़े की जो मांग बढ़े वह पूरी की जा सके। [शेष पृष्ठ ४२६ पर]

कुछ विशेष आवश्यकताएं—

★ ईमानदारी का व्यवहार हो।

★★ माल की किस्म अच्छी रहे।

★★★ निश्चित समय पर माल भेजा जाय।

न्यूज़ीलैण्ड की उपेक्षा हम क्यों करें

भारत से अनेक प्रकार का माल भेजने का सुन्दर अवसर

[ले० श्री एन० केशवन, प्रथम सचिव, व्यापारिक, भारतीय हाई कमीशन, न्यूज़ीलैण्ड]

अब तक भारतीय निर्यातक अपना माल भेजने के सम्बन्ध में सिंगापुर, हांगकांग और जापान को जाते रहे है। दक्षिणी गोलार्द्ध के एक कोने में स्थित न्यूज़ीलैण्ड की प्रायः उपेक्षा ही होती रही है। परन्तु अब यदि इधर भी ध्यान दिया जाय तो भारतीय वस्तुओं को खपाने का एक नया क्षेत्र प्राप्त हो सकता है।

न्यूज़ीलैण्ड में जनसंख्या बहुत कम है। वहां जितने मजदूर है वे सभी फर्मों के लिये आवश्यक हैं। मजदूरों की कमी के कारण बड़े उद्योग स्थापित नहीं किये जा रहे हैं। ऐसी दशा में न्यूज़ीलैण्ड विदेशों से ही उपभोग का सामान मंगाता है। भारत इसमें बहुत बड़ा भाग ले सकता है।

न्यूज़ीलैण्ड में भारतीय माल को खपाने के लिये भारतीय निर्यातकों को कुछ विशेष बातों पर ध्यान देना चाहिये। प्रस्तुत लेख में इन पर भी प्रकाश डाला गया है।

व्यक्तिगत सम्पर्क बनाने की आवश्यकता

व्यापार बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत सम्पर्क कितना महत्वपूर्ण सिद्ध होता है यह बताने की आवश्यकता नहीं है। विदेशों को माल भेजने वाले भारतीय उत्पादक और व्यापारी यह जानने के लिये यूरोप, अमेरिका और जापान को प्रायः ही जाते रहते हैं कि वहां उनका माल किस प्रकार अधिक परिमाण में खप सकता है। इन देशों के आयात नियन्त्रण के कारण उन्हें अनेक बार बड़ी निराशा भी हुई है। इधर न्यूज़ीलैण्ड की यह दशा है कि यहां बहुत कम उद्योग हैं। अतः आयात करने वाले व्यापारी माल देखने के लिये प्रायः ब्रिटेन और यूरोप के देशों को जाते रहते है, जिससे वहां से माल मंगाने के लिये एजेन्सियां आदि का प्रबंध किया जा सके। न्यूज़ीलैण्ड ब्रिटिश उपनिवेश होने के कारण यहां के बहुत से निवासियों के मूल परिवार अब भी ब्रिटेन में ही निवास करते हैं। पारिवारिक सम्बन्धों का यह आकर्षण भी उन्हें ब्रिटेन की ओर खींचा करता है। ब्रिटेन जाने के लिये ये व्यापारी मार्ग में अमेरिका भी जाते हैं, जिससे उन्हें वहां के बाजारों का भी पता चल जाता है। परन्तु भारत होकर तो शायद ही कोई व्यापारी जाते होंगे। अतः भारतीय व्यापारियों को इस स्थिति में सुधार करने का यत्न करना चाहिये।

भारत के निर्यातकों ने अब तक यह नहीं समझा है कि न्यूज़ीलैण्ड में भारतीय माल खपने का कितना सुन्दर क्षेत्र है। हो सकता है कि न्यूज़ीलैण्ड संसार के एक कोने में होने के कारण यहां के बाजारों के विषय में भारतीय निर्यातकों को पता ही न हो।

यह भी हो सकता है कि यहां के बाजारों में ब्रिटेन का एकाधिकार मानकर ही यहां कोई व्यापारी अपना माल भेजने का विचार न करते हों। परन्तु बात ऐसी नहीं है। प्रस्तुत लेख में न्यूज़ीलैण्ड के बाजारों की अवस्था और यहां माल खपाने की विधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला जाता है।

कम जनसंख्या का प्रभाव

व्यापारिक आंकड़ों के अध्ययन से विदित होता है कि १९५३ में न्यूज़ीलैण्ड में जो माल विदेशों से आया उसका औसत प्रति व्यक्ति पीछे ८० पौंड वार्षिक पड़ा है। २० लाख निवासियों के छोटे से देश में यह औसत बहुत अधिक है। और यह बात केवल १९५३ की ही नहीं है वरन्

गत ५ वर्षों में भी यही दशा रही है और १९५४ में भी यही रहने की आशा है।

संसार में ऐसे बहुत कम देश हैं जहां देशी उत्पादन ने उदारतापूर्ण आयात करने की नीति को प्रभावित न किया हो। न्यूज़ीलैण्ड भी एक ऐसा देश है। जनसंख्या कम होने के कारण यहां विशाल परिमाण पर उद्योग चलाना लाभप्रद नहीं होता। यहां की सरकार तथा औद्योगिक जनता दोनों ही भली प्रकार समझते हैं कि आत्मनिर्भर होने का प्रयत्न यहां केवल अव्यावहारिक ही नहीं होगा वरन् उससे यहां विभिन्न कार्यों के लिए उपलब्ध श्रम वर्ग का सन्तुलन भी बिगड़ जायगा। न्यूज़ीलैण्ड में कृषि और उससे सम्बद्ध उद्योगों पर बल दिया जाता है। मुख्यतः मांस और दुग्ध उत्पादनों के निर्यात द्वारा ही यह देश विदेशों से धन कमाता है। खेतों में मशीनों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। फिर भी खेतों के लिए मजदूर उपलब्ध करना एक समस्या बना रहता है। ऐसी दशा में यहां जो थोड़े से कारखाने खोले गये हैं उनके कारण खेतों के मजदूर भाग कर कारखानों में आने लगे हैं जिससे खेती का कार्य और भी कठिन होने लगा है। जाति विशेष के लोगों को ही चुन चुन कर यहां ला बसाने की नीति के कारण यह स्थिति सुधरने नहीं पाती। इस प्रकार मजदूरों की यह कमी यहां कारखाने खोले जाने में भारी बाधा उत्पन्न कर रही है। इसके अतिरिक्त अन्य कारण भी ऐसी ही बाधाएं डाल रहे हैं।

ऊपर यह बताया जा चुका है कि न्यूज़ीलैण्ड अपने फार्मों के उत्पादनों के निर्यात पर ही बहुत कुछ निर्भर रहता है। इन उत्पादनों को जो देश उससे लेंगे उन्हीं से वह अपने उपभोग की वस्तुएं मंगायेगा। इन देशों में ब्रिटेन सबसे आगे है, जो न्यूज़ीलैण्ड का ८० प्रतिशत माल लेता है। परन्तु न्यूज़ीलैण्ड की सरकार केवल ब्रिटेन से ही बंधी रहना नहीं चाहती। यह अपेक्षाकृत निकटवर्ती देशों, भारत, पाकिस्तान, लंका इत्यादि में भी अपना माल खपाना चाहती है। इसे ध्यान में रखते हुए भारत को भी अपना माल न्यूज़ीलैण्ड में खपाने की आशा रखनी चाहिये।

उदारतापूर्ण आयात नीति

न्यूज़ीलैण्ड की आयात नीति अत्यन्त उदारतापूर्ण है। भारत ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल का देश होने के कारण उसे यहां बाहर के अन्य देशों की अपेक्षा प्राथमिकता प्राप्त है और इस कारण उसे माल भेजने की अपेक्षाकृत अधिक सुविधाएं मिलेंगी। चूंकि भुगतान स्टर्लिङ्ग में होता है, इस कारण भी भारत का यहां व्यापार करने में सुविधा रहेगी। यहां की बहुत सी प्रसिद्ध फर्मों के पास पर्याप्त स्टर्लिङ्ग पावना होने के कारण वे संसार के किसी भी देश से माल खरीद सकती हैं। स्टर्लिङ्ग देशों के विरुद्ध यहां कोई भावना भी नहीं है। इधर यहां वालों ने यह भावना भी प्रकट की है कि यदि माल अच्छा और सस्ता हो तो उसे ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल से बाहर के देशों से भी खरीदा जाय। वास्तव में वह एक खरीदार देश होने के कारण वह अपना लाभ देखकर किसी भी देश से माल खरीदने को स्वतन्त्र है। ऐसी वस्तुओं की संख्या बहुत कम है जिनके आयात के लाइसेन्स नहीं दिये जा सकते। इन्हें छोड़ कर अन्य सब वस्तुओं का आयात किया जा सकता है और खरीदार को पसन्द आने पर उन्हें यहां भली प्रकार बेचा जा सकता है। परन्तु इस सम्बन्ध में यह भी ध्यान रखना चाहिये कि यहां वाले चुनी हुई वस्तुएं लेते हैं। उपभोग की वस्तुओं का अब भी पर्याप्त आयात हो रहा है। अतः किसी भी प्रकार का माल यहां लाकर पटक देने से कोई लाभ नहीं होगा। जब यहां माल की कमी थी तब भी लोग अच्छा माल ही खरीदते थे और रद्दी माल लेने की अपेक्षा बिना लिये रह जाना पसन्द करते थे।

लोगों की क्रयशक्ति और रुचि दोनों ही अच्छी होने के कारण व्यापार अच्छा होता है। अतः ईमानदारी और व्यापारिक **सिद्धान्तों का मान बहुत ऊंचा है। मूल्य चुकता होने में कोई देरी नहीं होती। आर्डर केवल इसी आधार पर दिये जाते हैं कि माल नमूने के बिलकुल अनुरूप दिया जायगा। न्यूज़ीलैण्ड के बाजारों में प्रतिस्पर्धा कड़ी होने के कारण व्यापार में छोटी सी बेईमानी अथवा लापरवाही होते ही आयातक दूसरे देशों से** *माल लेने लगते हैं। भारतीय निर्यातकों को इन बातों का* **विशेषतः ध्यान रखना होगा।**

न्यूज़ीलैण्ड के साथ व्यापार होने में सबसे बड़ी असुविधा जहाजों की है। भारत और न्यूज़ीलैण्ड के बीच जहाज बहुत कम चलते हैं अतः कभी कभी तो माल भेजने में ६ महीने का विलम्ब हो जाता है। इस कारण भारत के निर्यातकों को अपना माल इस प्रकार भेजने का प्रबन्ध करना होगा कि वह समय पर पहुँचता रहे। ऐसा न होने पर न्यूज़ीलैण्ड के व्यापारियों को बड़ी असुविधा होती है और उनकी साख में बट्टा लगता है।

व्यापार की वर्तमान अवस्था

ऊपर कुछ ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी ओर से भारतीय व्यापारियों को सावधान रहने की आवश्यकता है। इसका यह आशय कदापि नहीं कि भारतीय व्यापारी इनका ध्यान नहीं रखते। यहां अब भी बहुत सी भारतीय वस्तुएं आ रही हैं और इन्हें भेजने में हमारे निर्यातकों ने सच्चाई और व्यापार के ऊंचे सिद्धान्तों का निर्वाह किया है। जहां भी कोई कमी रही है तो वह केवल वैसी सावधानी न करने के कारण जैसी कि निर्यात होने वाले माल के विषय में करनी चाहिए। पैकिंग अथवा निर्माण में की गई लापरवाही के कारण न्यूज़ीलैण्ड के निवासी यह समझने लगते हैं कि उन्हें ठगने की कोशिश की जा रही है। कई बार ऐसा हुआ है कि भारत में बनी वस्तु या तो उच्चकोटि की परन्तु उसका पैकिंग खराब होने के कारण ही उसके प्रति न्यूज़ीलैण्ड वालों की भावना बिगड़ गई। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि न्यूज़ीलैण्ड में इस कार्य के लिये आदमी उपलब्ध नहीं हैं कि विदेशों से आये हुए माल को बिक्री के लिए दूकानों में रखने से पूर्व फिर ठीक ठाक कर लिया जाय। थोक व्यापारी प्रायः ही माल को ज्यों का त्यों पैक किया हुआ खुदरा व्यापारी को दे देता है और यह भी नहीं देखता कि उसके भीतर माल कैसा है। वह साधारणतः यह

विश्वास कर लेता है कि माल अच्छी अवस्था में होगा। यदि माल खराब निकलता है तो खुदरा व्यापारी आकर थोक व्यापारी से उसकी शिकायत करता है और फिर बाद में उसको क्षतिपूर्ति कर देने से भी उसे आगे के लिये ग्राहक बनाये रखना कठिन हो जाता है। अत पहले से ही अच्छा माल भेजना श्रेयस्कर होगा।

माल खपने की सम्भावना

न्यूजीलैण्ड मे बहुत प्रकार के माल खप सकते हैं। कपडा धातु का सामान, जूट की वस्तुए, चाय, बिरामिच, तिरपाल, दस्तकारी की वस्तुए, रेशमी रूमाल, मसाले, तेल, मेवा, नारियल की चटाइया, कालीन आदि इनमे उल्लेखनीय है। इन सभी की यहा अच्छी माग हो सकती हैं। जिन द्वीपों पर न्यूजीलैण्ड सरकार का नियन्त्रण है उनमें से कुछ में तो भारतीय माल की बहुत अच्छी खपत हो सकती है।

व्यापार के मुख्य केन्द्र ये नगर है :—आकलैण्ड, वेलिंगटन, क्राइस्ट चर्च और ड्यूनेडिन। इन सभी में वायु यातायात का सुन्दर प्रबन्ध है। सिडनी से वायुयान द्वारा चलकर वेलिंगटन होते हुए आकलैण्ड तक जा सकते हैं और फिर अन्य नगरों को भी सुविधापूर्वक पहुँच सकते हैं। आकलैण्ड से सुदूर पूर्व और अमेरिका के लिये भी वायुयान जाते है। जो भारतीय व्यापारी सिंगापुर, हागकाग और जापान जाया करते हैं वे यदि आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड भी आया करें तो इससे बडा लाभ हो सकता है।

न्यूजीलैण्ड आने के इच्छुक व्यापारियों के लिये नीचे लिखी जानकारी बडी उपयोगी सिद्ध हो सकती है —

१. *प्रवेश पत्र*—इनका ले लेना आवश्यक है। ये न्यूजीलैण्ड सरकार के बम्बई स्थित व्यापार कमिश्नर से प्राप्त हो सकते हैं।

२. *विनिमय*—न्यूजीलैण्ड में पौण्ड चलता है जो मूल्य में स्टर्लिंग के बराबर होता है।

३. *होटल*—सभी होटलों का यहा सरकार द्वारा वर्गीकरण कर दिया गया है। सब से महगे होटल मे प्रतिदिन २ पौण्ड १० शि० से अधिक व्यय नहीं होता। इसमें ठहरने के साथ भोजन का व्यय भी सम्मिलित है।

४. *इनाम*—होटलों में नौकरों को इनाम देने का साधारणत प्रोत्साहित नहीं किया जाता।

५. *पाच दिनों का सप्ताह*—सप्ताह में केवल ५ दिन अर्थात् सोमवार से शुक्रवार तक व्यापार होता है। अत. यहा रविवार की रात को अथवा सोमवार को प्रात पहुँचना चाहिए, फिर शनिवार को यहा से प्रस्थान किया जा सकता है।

६. *व्यापार के सर्वोत्तम दिन*—जून से नवम्बर तक के दिन व्यापार के लिये सर्वोत्तम रहते है।

कुछ अन्य उपयोगी जानकारी

जहा कहीं भी सम्भव हो माल के नमूने सदा साथ रहने चाहिए। खरीदार इन नमूनों को बाद मे भेजे जाने वाले माल से तुलना करने के लिये प्राय ही ले लेते हैं।

ढुलाई भाडा सहित मूल्य, माल देने की तारीख आदि का बताना आवश्यक है। तारीख देने के लिये जहाजी कम्पिनियों से पूछताछ कर लेनी चाहिए।

न्यूजीलैण्ड के ये पाच बैंक प्रमुख हैं —(१) दी बैंक आफ न्यूजीलैंड, (२) दी नेशनल बैंक आफ न्यूजीलैण्ड, (३) दी आस्ट्रेलिया एण्ड न्यूज़ीलैण्ड बैंक, (४) दी बैंक आफ न्यू साउथ वेल्स और (५) दी कमर्शल बैंक आफ आस्ट्रेलिया। जो व्यापारी इन बैंकों का उल्लेख करेंगे उनकी साख के विषय में अच्छा मत रखे जाने की आशा है।

हाथ करघा उद्योग को सुधारने के सुझाव

[पृष्ठ ४२६ का शेषाश]

इस समिति में ऐसे व्यक्ति रखे जाने चाहिये जिन्हे आर्थिक तथा प्रशासनिक मामलों का अच्छा ज्ञान हो। इसका अध्यक्ष कोई योग्यता, ज्ञान, अनुभव और सच्चाई के लिये प्रसिद्ध व्यक्ति होना चाहिये।

समिति ने अखिल भारतीय हाथ करघा बोर्ड द्वारा किये गये कार्य की प्रशंसा की है और सुझाव दिया है कि उसे और भी विस्तृत एव शक्तिशाली कर देना चाहिये जिससे वह शक्तिचालित करघे लगाने के लिये आवश्यक जानकारी, प्रोत्साहन आदि प्रदान कर सके। समिति ने यह सिफारिश भी की है कि प्रत्येक राज्य में एक सगठन बनाया जाना चाहिए जिस पर हाथ करघा, उन्नत हाथ करघा और शक्तिचालित करघा उद्योग का दायित्व रहे। इस का भार एक मन्त्री पर रहना चाहिए और ये सब केवल एक ही विभागीय अधिकारी के अधीन रहने चाहिए।

समिति ने बनारस के हाथ करघा उद्योग की विशेषत. जाच करने की सिफारिश की है। यहा की कारीगरी बडी प्राचीन और जगत्प्रसिद्ध है। यदि इसे आधुनिक आधार पर सगठित कर दिया जाय तो इससे अधिक लोगों को काम मिलेगा और विदेशी विनिमय भी अधिक परिमाण मे अर्जित किया जा सकेगा। समिति ने अन्त में कहा है कि यदि सहकारी आधार पर सगठित करके उद्योगों को विकसित किया जाय तो उच्चतम प्रजातन्त्रीय आदर्शों के अनुसार जीवन चलाया जा सकेगा।

★ नये उद्योग चलाना और नयी वस्तुएं बनाना आत्मनिर्भरता की कुंजी है ★

औद्योगिक इतिहास में युग परिवर्तन

राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की स्थापना

गत अक्तूबर मास में कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की रजिस्ट्री हुई है। भारत के औद्योगिक इतिहास में यह एक युग परिवर्तनकारी घटना रहेगी। देश में नये उद्योगों का तेजी से विकास करने और वर्तमान उद्योगों में नयी वस्तुओं का उत्पादन कराने की ओर यह निगम विशेषतः यत्नशील रहेगा।

निजी औद्योगिकों को ऋण आदि दे कर निगम उनके द्वारा भी नये उद्योग चलवाने का यत्न करेगा। उत्पादक वस्तुओं के उद्योग चालू करने को निगम प्राथमिकता देगा।

जो नये उद्योग जम जायंगे उन्हें बाद को निजी औद्योगिकों के हाथ बेच दिया जायगा और इस प्रकार प्राप्त धन की सहायता से नये उद्योग चालू किये जायंगे। निगम के उद्देश्यों और कार्यों आदि पर प्रस्तुत लेख में संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

निगम की स्थापना का उद्देश्य

गत २० अक्तूबर १९५४ को राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम (National Industrial Development Corporation) की भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत रजिस्ट्री हो गई। इसके बाद २२ अक्तूबर को निगम के डाइरेक्टरों के बोर्ड की बैठक हुई। देश के औद्योगिक इतिहास में ये दोनों युग-प्रवर्तक घटनाएं रहेंगी। इस प्रकार यह निगम बनाकर भारत सरकार ने पहली बार देश की औद्योगिक प्रगति को तीव्र करने के लिये दृढ़ और निश्चित कदम उठाया है। इस निगम की स्थापना बड़े ही उपयुक्त समय पर हुई है। दूसरी पंचवर्षीय योजना में इसका महत्वपूर्ण भाग रहेगा, क्योंकि इसमें औद्योगीकरण पर और अधिक बल दिये जाने की आशा है।

गत वर्ष जब यह अनुभव किया गया था कि कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में देश का औद्योगिक विकास पिछड़ गया है तो इस प्रकार का संगठन स्थापित करने का विचार उत्पन्न हुआ था। यह आशा की गई थी कि उपभोग का माल तैयार करने वाले उद्योगों को बाहर से थोड़ी सहायता मिल जाने से ही निजी कारखाने देश की आवश्यकताएं पूरी कर सकेंगे। परन्तु महत्वपूर्ण और आधारभूत उद्योगों के एक विशाल क्षेत्र का विकास करने के लिये सर्वथा भिन्न प्रकार की कार्रवाई की आवश्यकता अनुभव की गई। इस क्षेत्र में निजी प्रबन्ध अधिक सफलता नहीं प्राप्त कर सकते थे। हां, वे अपने अनुभव और ज्ञान द्वारा तथा अपना रुपया लगाकर सहायता कर सकते थे। निगम की स्थापना की प्रेरणा देने वाला मूल विचार यही था कि देश में उद्योगों की स्थापना करने के लिये निजी औद्योगिक क्षेत्र के नेताओं का सहयोग लिया जाए।

नये उद्योग और नये उत्पादन

राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम साधारणतः अपना ध्यान देश में नये उद्योग स्थापित करने और नये उत्पादन कराने की ओर ही देगा। इस सम्बन्ध में वह आवश्यक पहल करेगा और आवश्यक टिकाऊ तथा अर्द्ध टिकाऊ वस्तुएं तैयार करने की दृष्टि से नये कारखानों की योजनाएं बनावेगा। वह लकड़ी की लुग्दी, रासायनिक पदार्थ आदि कुछ आवश्यक औद्योगिक कच्चे माल के उत्पादन का भी प्रबन्ध करेगा, जिससे देश की *आर्थिक स्थिरता सुदृढ़ हो सके।*

सरकार द्वारा स्थापित संगठन से अनेक लाभ होते हैं। चूंकि निगम के डाइरेक्टरों में देश के प्रमुख औद्योगिक, इन्जीनियर, वैज्ञानिक और सम्बद्ध मन्त्रिमण्डलों के प्रतिनिधि हैं, इस कारण यह समस्त क्षेत्रों के सम्बन्ध में प्रारम्भिक शिल्पिक अध्ययन करने, योजना बनाने और कारखानों की रूपरेखा तैयार करने के लिये सर्वथा उपयुक्त है। अधिकांश अवस्थाओं में किसी एक रूपरेखा का सम्बन्ध अन्य क्षेत्रों के कारखानों की रूपरेखाओं से भी होता है। अतः निगम सरकार को ऐसे प्रयत्न की रूपरेखा प्रदान कर सकेगा जिसमें सभी क्षेत्रों से सम्बन्ध रखने वाले प्रयत्न आ जाएं। इस समय जो साधन उपलब्ध हैं उनकी सहायता से निगम नये उत्पादन करा

सकेगा। सरकारी संगठन होने के कारण वह विभिन्न कारखानों के उत्पादनों का एकीकरण भी कर सकेगा।

मुख्य कार्य

तैयार की जाने वाली योजनाओं को अमल में लाना ही निगम का सब से महत्वपूर्ण कार्य होगा। उसका मुख्य उद्देश्य एकीकृत ढंग से और तेजी के साथ देश का औद्योगीकरण करना है। अतः निगम को अपनी योजनाएं सर्वोत्तम उपलब्ध साधनों द्वारा अमल में लानी होंगी। यदि किसी कारखाने की योजना ऐसी है कि उसे स्थायी रूप से सरकार द्वारा ही चलाया जायगा तो उसे सम्बद्ध मन्त्रालय, जैसे उत्पादन, रक्षा इत्यादि के द्वारा कार्यान्वित किया जायगा। जब यह निश्चय करना सम्भव न होगा कि कोई कारखाना सरकार द्वारा चलाया जाय अथवा जनता द्वारा तो स्वयं निगम उसे चालू कर सकेगा। इसे चलाने के लिये एक ऐसी कम्पनी बनाई जा सकेगी जिसके सभी हिस्सों का स्वामी निगम होगा। उन मामलों में ऐसा करना ठीक भी होगा जिनमें बाद को सुविधाजनक अवसर आने पर हिस्से जनता को हस्तान्तरित कर देने का विचार हो। कारखानों को चालू करने का एक दूसरा उपाय यह हो सकता है कि विभिन्न अनुपातों में जनता का सहयोग प्राप्त कर लिया जाय। जब निजी औद्योगिकों से शैल्पिक अथवा व्यवस्था सम्बन्धी सहायता लेने की आवश्यकता हो तो यह प्रणाली बड़ी उपयुक्त होगी। यह सहायता सच्चे हृदय से प्राप्त करने के लिये कारखानों की पूंजी में ऐसे निजी औद्योगिकों का भाग होना आवश्यक होगा। ऐसा करने से सरकार को भी कम रुपया लगाना पड़ेगा। इन कारखानों के लिये सहायक कम्पनियां बनानी पड़ेंगी जिनके संगठन का रूप उन में निजी औद्योगिकों के भाग के ऊपर निर्भर रहेगा।

कपड़ा और जूट उद्योगों को विशेष ऋण

निगम निजी औद्योगिकों को नये कारखाने चालू करने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। इसके लिये वह उन्हें (१) ऋण दे सकता है, (२) डिबेंचर खरीद सकता है, (३) नये जारी किये जाने वाले सभी अथवा कुछ हिस्सों को खरीद सकता है और (४) उपयुक्त पारश्रमिक के विषय में गारण्टी दे सकता है। इस पारश्रमिक के रूप में वह निजी औद्योगिकों को मुफ्त हिस्से अथवा भविष्य में किसी तिथि के बाद मुनाफे का कुछ अंश दे सकता है। यह ध्यान रहे कि ऊपर बताई गई किसी भी प्रणाली द्वारा स्थापित किये गये बड़े कारखानों को चलाने के लिये प्रायः ही अन्य कारखानों द्वारा कुछ आवश्यक उत्पादन कराना होगा। इसके लिये निगम इन कारखानों को उपर्युक्त किसी भी उपाय से सहायता दे सकता है। किसी समय किसी विशेष उत्पादन के विकास के लिये वर्तमान सरकारी अथवा गैर सरकारी कारखानों की उत्पादन शक्ति का विकास मात्र करना होगा। इन अवस्थाओं में निगम या तो उन कारखानों को सहायता देगा या उन में पूंजी लगायेगा और सम्बद्ध फर्मों की कार्रवाइयों को मिलाने के लिये आवश्यक समझौते करायेगा। यदि निजी औद्योगिकों द्वारा किसी उद्योग की योजना बनाई जायगी परन्तु उसके बनाने वालों के पास न तो उसमें लगाने के लिये रुपया होगा और न उसे वे औद्योगिक वित्त निगम (Industrial Finance Corporation) अथवा प्रस्तावित पूंजी लगाने वाले निगम (Investment Corporation) से प्राप्त कर सकेंगे तो यह निगम उनको ऋण आदि देकर सहायता करेगा अथवा इसके लिये सरकार से उनकी सिफारिश कर देगा। कपड़ा और जूट उद्योगों का नये सिरे से संगठन करने के लिये विशेष सहायता देने में निगम सरकार की एजेन्सी के रूप में कार्य करेगा। यदि सरकार किसी अन्य उद्योग को इसी प्रकार सहायता देने का निश्चय करेगी तो उसे भी इसी प्रकार निगम सहयोग देगा।

उत्पादक वस्तुओं के उद्योग

राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम देश के औद्योगीकरण को किस प्रकार तेज कर सकेगा उसका कुछ आभास इसी बात से हो सकता है कि उसने बहुत से नये उत्पादनों के उद्योग चालू करने पर बल दिया है। इसमें भी उसने विशेष वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता दी है। इस सम्बन्ध में जो गवेषणा हो रही है उसमें उत्पादक वस्तुओं के उद्योगों को अधिक महत्व दिया गया है। ये उद्योग इस प्रकार हैं :

१ निम्न उद्योगों और उद्देश्यों के लिये मशीनों और उपकरणों का निर्माण —

निर्माण कार्य, जूट, कपड़ा, चीनी, कागज, सीमेण्ट, रासायनिक पदार्थ, खुदाई, खनिज और इंजन आदि की मशीनें।

२ लोह मिश्रित धातुएं लोहे मैंगनीज और लोह क्रोम।

३ अल्यूमीनियम।

४ ताम्बा, जस्ता और अन्य अलोह धातुएं।

५. डीजल इंजन—जहाजों, रेलगाड़ियों और बिजली उत्पन्न करने के।

६ भारी रासायनिक पदार्थ।

७ रासायनिक खाद।

८ कोक की भट्ठी और तारकोल से उत्पादन।

९. मीथेनल फारमेल्डीहाइड।

१० कारबन की कालिख।

११ कागज, अखबारी कागज, रेयन आदि के बनाने में काम आने वाली लकड़ी की लुग्दी।

१२. औषधियाँ, विटामिन और हारमोन।

१३ एक्सरे और डाक्टरी के उपकरण, और

१४. कटा गला, अवशोषक रूई आदि।

औद्योगीकरण की उपर्युक्त योजना क्रियान्वित करने के लिये निगम ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की एक इंजीनियरी फर्म को भारत में अपना एक कार्यालय खोलने के लिये निमन्त्रित किया है। इस फर्म की सेवाएं केवल निगम के लिये ही नहीं वरन् निजी उद्योगों को भी उपलब्ध रहेंगी। इस फर्म का भारत में कार्यालय खुल जाने से ऐसी ही औद्योगिक सलाह देने वाली विदेशी फर्मों की स्थापना को प्रोत्साहन मिलेगा। निगम तीन चार अनुभवी इंजीनियरों का एक केन्द्र भी बनायेगा जो उसे सभी मामलों में परामर्श दिया करेंगे। ये निगम को उपर्युक्त उद्योग चुनने में भी सहायता किया करेंगे।

अन्य संगठनों से तुलना

राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम के कार्य औद्योगिक वित्त निगम तथा औद्योगिक पूंजी निगम से सर्वथा भिन्न हैं। वित्त निगम तो केवल ऋण देने वाला संगठन है जो केवल पहले से चालू उद्योग को ही सहायता देता है और जो साधारण ढंग से ऋण की सुरक्षा का आश्वासन दे सकते हैं। वित्त निगम के लिये नये उद्योगों को सहायता देना कठिन है। नया प्रस्तावित पूंजी निगम साथ ऋणों के अतिरिक्त अन्य प्रकार की वित्त का प्रबन्ध करेगा। यह निगम भी व्यापारिक आधार पर चालू किया जायगा। अतः यह भी अपने साधनों का एक छोटा अंश ही किसी एक उद्योग में लगा सकेगा। इसका अर्थ यह है कि वह उन नये उद्योगों की सहायता नहीं कर सकेगा जिन्हें आरम्भ में भारी पूंजी की आवश्यकता होगी। राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम का उद्देश्य इन दोनों निगमों से भिन्न है। इस निगम के उद्देश्य नये उद्योग चालू कराना अथवा नये उत्पादन कराना है। यह कार्य उपकरण प्रदान करके, विभिन्न कारखानों में एकीकरण इत्यादि कराके किया जायगा। इन कार्यों में धन लगाने की भी आवश्यकता होगी परन्तु केवल धन लगाना ही निगम का मुख्य कार्य नहीं होगा। इस सम्बन्ध में यह सदा ध्यान रखना चाहिये कि यह निगम उन साधनों का उपयोग करके औद्योगीकरण करेगा जो साधारणतः निजी औद्योगिकों को उपलब्ध नहीं होते। पूर्णतः सरकारी स्वामित्व और नियन्त्रण वाली संस्था होने के कारण यह विभिन्न कारखानों के विकास और उत्पादन कार्यक्रमों का एकीकरण कर सकेगा। इसे कोई भी निजी निगम नहीं कर सकता। डायरेक्टरों के रूप में देश के प्रमुख औद्योगिकों का सहयोग मिल जाने से सरकार को योजनाएं बनाने में न केवल उनके ज्ञान, अनुभव आदि का लाभ प्राप्त हो जायगा वरन् इन योजनाओं का पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से उनके साधनों द्वारा क्रियान्वित होना भी सम्भव हो सकेगा। दूसरे शब्दों में, सरकार आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन में निजी साधनों को लगवा सकेगी। इस प्रकार की पहल करके सरकार अपने पास से एक सीमित परिमाण में पूंजी लगाकर विशाल परिमाण पर पूंजी लगवा सकेगी। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय औद्योगिक विकास की योजनानुसार निजी उद्योगों को मिलाकर एक करने में निगम एक शक्तिशाली साधन प्रमाणित हो सकेगा।

यहां यह बात भी स्मरणीय है कि निगम के जितने भी औद्योगिक डायरेक्टर होंगे वे सरकार द्वारा मनोनीत किये जायेंगे। उनके प्रत्यक्ष हित उस प्रकार के नहीं होंगे जैसे कि प्रायः ही इस शब्द के साथ निहित होते हैं।

उद्योगों को बेचकर नये उद्योग

नये चलाए जाने वाले उद्योगों को बाद में निजी औद्योगिकों को बेच देने के विषय में सरकार की कोई पक्की पूर्व निश्चित नीति नहीं है। यह तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित की जायगी। सरकार का मुख्य उद्देश्य निगम द्वारा लगाई गई पूंजी से अधिकतम लाभ उठाना होगा। यह लाभ अधिकाधिक नवीन उद्योगों के रूप में होगा। जमे जाने वाले उद्योगों को बेच कर नये उद्योगों के लिये धन प्राप्त हो सकेगा। यदि इसके लिये अन्य रीतियों से साधन प्राप्त हो सके तो सरकार उन्हें भी अपनायेगी।

अभी राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की रजिस्टर्ड १ करोड़ रु० की अधिकृत पूंजी और १० लाख रु० की अदा हुई पूंजी से की गई है। यह पूंजी अपेक्षाकृत बहुत थोड़ी है और सम्भव है इससे निगम के पूरे क्षेत्र का उचित आभास न मिले। परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि निगम उद्योगों का विकास करने के लिये केवल अपने हिस्सों की पूंजी पर ही निर्भर नहीं होगा। जब योजनाएं तैयार होंगी और उन्हें अमल में लाने की प्रणाली निर्धारित हो जायगी तो निगम सरकार से आवश्यक धन प्राप्त करेगा।

"आयोजन के प्रति गतिशील दृष्टिकोण रखा जाय।"

देश के विकास कार्य को आगे बढ़ाने के यत्न

राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक द्वारा सिंहावलोकन

राष्ट्रीय विकास परिषद की जो बैठक अभी गत मास नई दिल्ली में हुई है उस में देश के विकास कार्य को आगे बढ़ाने के लिये कुछ नये निश्चय किये गये हैं। केन्द्र तथा राज्यों के मध्य इस सम्बन्ध में घनिष्टतम सहयोग करने के लिये कुछ राज्यों के मुख्य मन्त्रियों और योजना कमीशन के सदस्यों को मिलाकर एक स्थायी समिति नियुक्त कर दी गई है, जिसकी वर्ष में ६ बार बैठकें हुआ करेगी। सम्पूर्ण विकास परिषद की वर्ष में दो बार बैठकें हुआ करेगी।

प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने कहा कि यदि डाक्टरी पढ़ने वालों को तब डिग्री दी जाय जब वे एक वर्ष तक गांवों में काम कर लें तो बहुत अच्छा होगा।

बैठक में योजना के अनुसार हुए कार्य पर विचार होते समय राज्यों के मुख्य मन्त्रियों ने अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने ग्रामों में कार्य करने वाले कर्मचारियों की शिक्षा पर जोर दिया। इस सम्बन्ध में बताया गया कि ५-६ हजार ग्राम कर्मचारियों को शिक्षा दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त महिलाओं में विकास कार्य के लिये रुचि उत्पन्न करने के लिये गांवों में महिला समितियां बनाने की योजना है।

(१)

विकास परिषद के तीन उद्देश्य

राष्ट्रीय विकास परिषद हमारे प्रधान मन्त्री के शब्दों में ऐसा संगठन है जिसके द्वारा राज्य सरकारों और केन्द्रीय सरकार के मध्य राष्ट्रीय विकास के समस्त कार्यों के विषय में घनिष्टतम सहयोग रहता है। परिषद के तीन उद्देश्य हैं :—

(१) पंचवर्षीय योजना के समर्थन में राष्ट्र के प्रयत्न और साधनों को सुदृढ़ और संलग्न करना,

(२) समस्त अत्यावश्यक क्षेत्रों में सामान्य अर्थ नीतियों को प्रगति देना, और

(३) देश के समस्त भागों के सन्तुलित और त्वरित विकास को सुनिश्चित करना।

परिषद के अध्यक्ष प्रधान मन्त्री स्वयं हैं और 'क', 'ख' और 'ग' श्रेणी के राज्यों के मुख्य मन्त्री और योजना कमीशन के सदस्य इसके सदस्य हैं। गत ६ नवम्बर १६५४ को नई दिल्ली में परिषद की बैठक हुई, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण निश्चय किये गये। यह बैठक इस दृष्टि से भी बड़ी महत्वपूर्ण थी कि अब प्रथम पंचवर्षीय योजना के समाप्त होने में १८ से भी कम महीनों का समय शेष रह गया है और बैठक में दूसरी पंचवर्षीय योजना की तैयारी के विषय में भी विचार हुआ।

प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषण में योजना के प्रति गतिशील दृष्टिकोण रखकर उसके प्रत्येक रूप पर ध्यान देते हुए अंतिम लक्ष्य पर दृष्टि गड़ाये रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। योजना कमीशन के उपाध्यक्ष श्री वी० टी० कृष्णमाचारी ने अपने भाषण में योजना की तीन वर्षों में हुई प्रगति पर प्रकाश डाला। आपने योजनाओं के लिये धन की व्यवस्था के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि समस्त देश में बचत करने के गहरे प्रयत्न होने चाहिए। दूसरी पंचवर्षीय

मन्त्री के इस प्रश्न का, कि यदि कोई राज्य अपनी योजना के लिये धन देने में असमर्थ ही हो तो क्या होगा, श्री देशमुख ने यह उत्तर दिया कि यदि किसी अन्य राज्य में हुई बचत से यह कमी पूरी न की जा सके तो उस राज्य को अपनी योजना कम कर देनी होगी।

श्री देशमुख ने यह भी बताया कि कर जांच आयोग की रिपोर्ट शीघ्र ही आने वाला है। उससे ज्ञात होगा कि राज्यों और केन्द्र ने आय के साधन बढ़ाने के लिये पूरा प्रयत्न किया है या नहीं। उसकी रिपोर्ट में बताये जाने वाले साधनों से केन्द्र आय को बढ़ाने का प्रयत्न करेगा।

परिषद् की बैठक के विषय में श्री देशमुख ने कहा कि राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठक वर्ष में दो बार तो हो सकता है परन्तु प्रतिमास नहीं। इस कठिनाई को दूर करने के लिये पांच मुख्य मन्त्रियों और योजना कमीशन के सदस्यों की एक समिति होनी चाहिए।

आयोजन के लिये स्थायी समिति

राष्ट्रीय विकास परिषद् ने एक स्थायी समिति नियुक्त कर दी है जिससे केन्द्र और राज्यों के मध्य घनिष्ठतम परामर्श हो सके। समिति में बम्बई, हैदराबाद, मद्रास, मैसूर, पंजाब, राजस्थान, त्रावनकोर कोचीन, उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बंगाल के मुख्य मन्त्री तथा योजना कमीशन के सदस्य रहेंगे।

इस समिति की वर्ष में ६ बैठकें हुआ करेंगी। आवश्यकता होने पर एक या अधिक राज्यों के मन्त्रियों को भी समिति की बैठकों में निमन्त्रित कर लिया जाया करेगा।

राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठकें वर्ष में दो बार हुआ करेंगी।

(२)

सामुदायिक योजनाएं और विस्तार सेवाएं

राष्ट्रीय विकास परिषद ने सामुदायिक योजनाओं और विस्तार सेवाओं की प्रगति पर भी विचार किया। शिक्षण के कार्यक्रम को तेज करने, स्वीकृतियों की प्रणाली को ढीला और संक्षिप्त करने, और काम में तीव्रता लाने के उद्देश्य से स्थानीय अफसरों को अधिकार देने के विषय में निश्चय किए गये।

इस सम्बन्ध में विचार आरम्भ करते हुए योजना कमीशन के उपाध्यक्ष श्री वी० टी० कृष्णमाचारी ने कहा कि राष्ट्रीय विस्तार सेवा और सामुदायिक योजनाओं का आन्दोलन अब प्राय ५० हजार गांवों में चल रहा है। हाल में ही हमने २४९ खण्डों के लिये और स्वीकृति दी है जिनके अन्तर्गत ३० हजार गांव हैं। इस प्रकार यह कार्य अब कुल ८० हजार गांवों में फैल जायगा। उद्देश्य यह है कि योजना अवधि समाप्त होने तक यह कार्य १ लाख २० हजार गांवों में पहुँच जायगा, जिनमें भारत की एक चौथाई जनसंख्या निवास करती है। इस कार्य का उद्देश्य भारत के गांवों में रहने वाले ७ करोड़ परिवारों को ऐसी सहायता देना है जिससे वे अपने जीवन का निर्माण कर सकें। यह एक मानवीय समस्या है जो हमारे देशवासियों के दृष्टिकोण को ही बदल रही है। हमने देखा है कि गांव वालों ने इस आन्दोलन का स्वागत किया है और इसमें आशा से कहीं अधिक सहायता दी है। स्थानीय रूप से जितना व्यय हुआ है उससे कहीं अधिक गांव वालों से प्राप्त हो गया है।

अन्त में संक्षेप में इसके प्रशासनीय संगठन के विषय में भी कुछ कहना चाहता हूँ। यह आन्दोलन आरम्भ करने के समय गांवों में काम करने के लिये ऐसे सब व्यक्तियों को भर्ती कर लिया गया जो यह काम करने के योग्य थे। इन्हें तीन से लेकर ६ महीने तक की शिक्षा दी गई। हम राज्यों को परामर्श देना चाहते हैं कि वे इन्हें नियमित रूप से शिक्षा दें। भविष्य के लिये हमने शिक्षण योजनाएं भी स्वीकृत कर दी हैं। इस शिक्षण के दो भाग हैं। एक तो कृषि, पशुपालन, सहकारिता आदि की आधारभूत शिक्षा जो कम से कम एक वर्ष के लिये दी जाती है, और दूसरे विस्तार सेवा की शिक्षा जो छः महीने के लिये दी जाती है। हमारा विश्वास है कि जब नयी योजना के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त गांव में काम करने वाले अफसर हमें प्राप्त हो जायगे तो हमारा यह आन्दोलन बड़े सुन्दर ढंग से चलेगा। परन्तु योजना कमीशन गैर सरकारी ग्राम संगठनों को अधिक महत्व देता है। बहुत से क्षेत्रों में ग्राम सभाएं बन गई हैं और उपयोगी काम कर रही हैं। गांवों में गैर सरकारी संगठनों का होना आवश्यक है जो आन्दोलन को स्फूर्ति प्रदान करेंगे और ग्राम अफसरों और ग्राम परिवारों के मध्य सम्पर्क रखेंगे।

स्वावलम्बन पर आधारित योजना

ग्रामों के स्तर से ऊपर आने के बाद अभी सभी विकास विभागों ने मिल जुलकर काम करना आरम्भ नहीं किया है। जिला कलक्टरों और

जिला विकास अफसरों के मध्य भी अभी एकीकरण नहीं हुआ है। परन्तु इसमें सुधार हो रहा है। स्थानीय विकास कार्य का राष्ट्रीय महत्व है। इसके द्वारा मानजातियों को वे सुविधाएं मिलती हैं जो उन्हें अब तक न मिली था। यह योजना स्वावलम्बन के आधार पर तैयार की गई है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सामुदायिक योजना के सर्वोत्तम क्षेत्र में कृषि, पशुपालन आदि के कार्यों से २० प्रतिशत परिवारों को लाभ पहुँच रहा है। अन्य क्षेत्रों में यह लाभ ५ से १० प्रतिशत परिवारों तक को पहुँचता है। सहकारिता का आन्दोलन अभी नहीं फैला है। हम यह कार्य भारत के गाव गाव में फैला देना चाहते हैं। इसके लिये कर्मचारियों को शिक्षा दी जा रही है।

इस सम्बन्ध में हुई बहस में परिषद को बताया गया कि अब तक ५६ हजार ग्राम कार्यकर्ताओं को शिक्षा दी जा चुकी है। स्त्रियों को भी यह शिक्षा दी जा रही है और वे ग्रामों में स्त्रियों का संगठन बनायेंगी। प्रत्येक योजना क्षेत्र में समाज शिक्षा संगठन करने के लिए एक महिला कार्यकर्त्री भी होगी। इसका काम महिलाओं की समितियां बनाना होगा। समस्त भारत के लिये कुल ५०,००० पुरुष और १० ० ० स्त्री कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगी। वर्तमान योजनाओं में देश का एक चौथाई क्षेत्र सम्मिलित कर लिया जायगा, जिसके लिये १५,००० कर्मचारियों की आवश्यकता होगी। इनमें ३,००० स्त्रियां होंगी।

सामुदायिक योजनाओं के प्रशासक ने बताया कि प्रत्येक गाव में महिला समिति बनाई जा रही है जिससे अधिकाधिक स्त्रियों को गावों के उन्नति कार्य में लगाया जा सके। बैठक में यह प्रस्ताव भी किया गया कि प्रत्येक ग्रेजुएट को तभी डिग्री अथवा डिप्लोमा दिया जाय जब वह, पुरुष हो या स्त्री, एक वर्ष तक मुफ्त राष्ट्रीय सेवा कार्य करे। यह नियम बना देने का भी सुझाव दिया गया कि सरकारी नौकरियों के लिये आवेदनपत्र देने वालों के लिये राज्यों और केन्द्र के पब्लिक सर्विस कमीशनों को यह अनिवार्य कर देना चाहिए कि उनके आवेदनपत्रों पर तब तक विचार नहीं होगा जब तक कि उनके साथ सामुदायिक योजना अधिकारियों का इस आशय का प्रमाणपत्र नहीं होगा कि वे एक वर्ष तक राष्ट्रीय सेवा कार्य कर चुके हैं।

श्री टी० टी० कृष्णामाचारी ने यह आशा प्रकट की कि विश्वविद्यालयों से निकलने वालों के लिये राष्ट्रीय विस्तार सेवा में काम करने की कोई व्यवस्था की जायगी जिसमें उन्हें ग्रामीण समस्याओं का ज्ञान प्राप्त हो जाय। प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने कहा कि डाक्टरी पढ़ कर निकलने वालों से कहना चाहिये कि वे डाक्टरी की डिग्री मिलने से पहले एक वर्ष तक गावों में काम करें।

(३)

बेकारी दूर करने पर ज़ोर

परिषद की बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि बेकारी का पर्यवेक्षण करने के लिये एक व्यापक प्रणाली बनानी चाहिए और बेकारी की एक प्रतिमानित परिभाषा भी निर्धारित कर लेनी चाहिए जिससे इस समस्या को कारगर ढङ्ग से हल किया जा सके।

देश में बेकारी की समस्या के विषय में योजना मन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने कहा कि हमें इस बात से बड़ी असुविधा होती है कि हमें किसी समय विशेष पर यह ठीक-ठीक ज्ञात नहीं होता कि बेकारी अथवा अर्द्ध बेकारी का परिमाण क्या है। आंकड़ों के अभाव में यह भी नहीं बता पाते कि योजना के अन्तर्गत व्यय करने से कितने नये लोगों को काम मिला है। इसे दूर करने के लिये राज्यों, योजना कमीशन और कलकत्ते की भारतीय सांख्यकी शाला में अध्ययन किये जा रहे हैं और इसके फलस्वरूप आशा है हम शीघ्र ही इस सम्बन्ध में अंकों द्वारा स्थिति का पता लगा सकेंगे। परन्तु प्रस्तुत लक्षणों और काम दिलाऊ केन्द्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार काम देने की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। आपने आगे कहा कि राज्यों से इस ओर जागरूक रहने को कहा गया है।

भूमि सुधार

भूमि सुधार के विषय में हुई बहस के सम्बन्ध में आयोजन मन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने कहा कि योजना में यह सिफारिश की गई है कि भूमि जोतने वालों और सरकार के बीच जो लोग हैं उन्हें हटा देना चाहिए। इस दिशा में काफी प्रगति हो चुकी है। यह सिफारिश १२ राज्यों में पूर्णतः और ३ में अंशतः क्रियान्वित की जा चुकी है। तीन राज्यों में आवश्यक कानून पास हो चुके हैं और शेष में इसके लिये यत्न चल रहे हैं।

योजना में यह भी सिफारिश की गई है कि भूमि जोतने वालों के पट्टे सुरक्षित कर देने चाहिये। सात राज्यों में इसके लिये प्रबन्ध हो चुका है और ६ अन्य राज्यों में इस दिशा में प्रयत्न आरम्भ हो गये हैं। ६ राज्यों में कुछ श्रेणियों के किसानों को अपनी जोत खरीद लेने के अधिकार भी दिये गये हैं।

योजना के अनुसार भावी पट्टों की न्यूनतम अवधि निश्चित कर देनी चाहिये। ऐसा आठ राज्यों में किया गया है। १२ राज्यों में अभी लगान का नियमन अथवा कम करने के लिये कार्यवाई होनी शेष है। इन सुधारों द्वारा भूमि जोतने वाले के साथ न्याय करने का यत्न किया गया है। योजना में खेती का पुनः संगठन करने और चकबन्दी, सहकारी खेती आदि प्रणालियों द्वारा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ करने के यत्न किये गये हैं। ५ राज्यों में चकबन्दी का काम सन्तोषजनक ढङ्ग से हुआ है। सहकारी खेती के तो केवल यहां वहां बहुत थोड़े परीक्षण हुए हैं।

कानून के अमल में देरी

एक प्रश्न की ओर विशेषतः ध्यान देना है। वह है कानून बनने के बाद उसे अमल में होने वाली देरी। राज्यों से ३१ मई १९५४ को एक पत्र लिखकर इस देरी के कारण पूछे गये हैं, परन्तु उनके उत्तरों से कोई सन्तोषजनक जानकारी नहीं मिली। हाल में ही राज्यों के मन्त्रियों को फिर एक पत्र भेजा गया है। इस प्रकार बीच वाले जमींदारों आदि को हटाने, पट्टी में सुधार करने, अधिकतम लगान निश्चित करने आदि के कार्य क्रमशः करके योजना अवधि में सम्पूर्ण हो जाने चाहिए।

सहकारी खेती के विषय में भी इसी प्रकार का कार्यक्रम बनाया जाना चाहिये, जो ७ वर्षों में अमल में लाया जाय। इस सम्बन्ध में कुछ राज्यों के उत्तर मिल चुके हैं। जोतों की गणना का काम भी चल रहा है। काम का आसान करने के लिये राज्य सरकारों को यह छूट दी गई है कि वे चाहे तो गणना का कार्य बड़ी अर्थात् १०एकड़ तककी जोता तक सीमित रख सकते है। इस प्रकार यह कार्य ६ महीने में समाप्त होने की आशा है। इसे समाप्त करने की अवधि अप्रैल १९५५ और अधिक से अधिक मई १९५५ के अन्त तक रखी गई है।

(४)

औद्योगिक नीति

औद्योगिक नीति के विषय में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि हम निजी उद्योगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं परन्तु इसमें भी बढ़कर हम सरकारी उद्योगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं। आपने इसे गलत बताया कि निजी उद्योग को अपने लिये कार्य क्षेत्र चुनने का पहले अवसर मिलना चाहिए। श्री नेहरू ने कहा कि १९४८ में औद्योगिक नीति विषयक जो वक्तव्य दिया गया था उसमें अब कुछ संशोधन होना चाहिए।

श्री के० सी० नियोगी ने कहा कि विशाल उद्योगों में राज्य सरकारों के साधनों और शक्तियों के लगाने से लाभ नहीं होगा। केन्द्र इन्हें सीधा स्वयं अथवा राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम द्वारा चलायेगा। ये निजी उद्योगों के पूरक होंगे। आपने बताया कि इस निगम ने अनेक उद्योगों के विषय में विचार करना आरम्भ कर दिया है। जब एक बार यह निश्चय हो जायगा कि कोई उद्योग सरकारी ढङ्ग पर चलाया जाय तो बाद में इसका निश्चय किया जायगा कि उसे केन्द्रीय अथवा राज्यों की सरकारें चलायें या विकास निगम। यह निश्चय राष्ट्रीय साधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने की दृष्टि से किया जायगा।

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

मई में ब्रिटेन ने भारत से कम माल मंगाया

नेपाल में वस्तुओं के मूल्य चढ़े

ब्रिटेन मे भारत से आने वाला माल मई मे घट कर ७५ लाख पौण्ड रह गया, जब कि गत मास यह ६१ लाख पौण्ड रहा था।

तुर्की न सीमा शुल्क की नयी दरे लागू कर दी ह। जिन वस्तुओं के सीमा शुल्क के विषय में समझौते हो चुके ह उन पर ये लागू नहीं होंगी।

नेपाल में आवश्यक वस्तुओं के भाव अगस्त में चढते रहे।

हागकाग का भारत के साथ होने वाला व्यापार अप्रैल में थोडा घट गया।

मारीशस का व्यापार सन्तुलन १६५३ मे २३१ लाख रु० से उसके अनुकूल रहा, जबकि १६५२ मे २०६ लाख रु० से रहा था।

ब्रिटेन : जनवरी-जून १६५४ में प्रतिकूल व्यापार-संतुलन

जून १६५४ मे ब्रिटेन का नियात, गत मास का अपेक्षा ११२ लाख पौंड घटकर, २,१७० लाख पौंड रह गया। परन्तु इस मास मे आयात १०६ लाख पौंड बढ़कर २,६१० लाख पौंड हो गया।

जून १६५४ मे पुनर्निर्यात ८८ लाख पौंड का हुआ, जब कि मई १६५४ में यह ६० लाख पौंड का हुआ था। अत ब्रिटेन के व्यापार की प्रत्यक्ष कमी, मई १६५४ मे ४२५ लाख पौंड से बढ़कर, जून १६५४ मे ६४५ लाख पौंड हो गई।

१६५४ का प्रथम छमाही मे ब्रिटेन का औसत नियात (पुनर्नियात को छोड कर) प्रतिमास २,२४१ लाख पाउ रहा। यह १६५३ की इसी अवधि के नियात की अपेक्षा, ■ प्रतिशत अधिक है। जनवरी जून १६५४ की अवधि मे औसत आयात प्रतिमास २,७६२ लाख पाउ रहा। अत इसमे गत वर्ष का प्रथम छमाही का अपेक्षा, १ प्र० श० की कमी रहा। १६५४ का प्रथम छमाही म प्रत्यक्ष व्यापार-सन्तुलन ३,७६४ लाख पाउ से उसके प्रतिकूल रहा। यह १६५३ की इसी अवधि म ३,८०६ लाख पौंड प्रतिकूल सन्तुलन स लगभग ६,०१० लाख पाउ कम है।

भारत-ब्रिटेन का व्यापार

मइ १६५४ मे ब्रिटेन मे भारत से कम आयात हुआ। इस महीने यह ७४,८५,१७० पौंड का हुआ, जब कि अप्रैल १६५४ म ६०,८८,४०२ पौंड का हुआ था। मइ १६५४ म ब्रिटेन म भारत को हुआ नियात व पुनर्निर्यात २४,७०,५७६ पौंड बढ़कर, १,१४,०७,७६१ पाउ हो गया। अत. मई १६५४ मे भारत का ब्रिटेन से व्यापार सन्तुलन २६,२२,६०१ पाउ से उसके प्रतिकूल रहा, जबकि अप्रैल १६५४ के व्यापार मे १,५१,२०७ पाउ की कमी रही थी।

मइ १६५४ मे भारत स निम्न मुख्य वस्तुओं के आयात मे, अप्रैल १६५४ की अपेक्षा वृद्धि हुइ :—

वस्तु	अप्रैल (पाउ)	मइ (पाउ)
चमडा और उससे बना माल	१०,२० ६०२	१२,३४,६४५
तम्बाकू और उससे बना माल	३,७६,०६६	१७,०२,४३१
ऊन तथा अन्य पशुओं के बाल	२,७५,७४५	३,६६,०२४
पेट्रोलियम और उससे बना वस्तुए	५८,३६७	६३,१३२

मइ १६५४ मे भारत स मगाइ गइ निम्न वस्तुओं में, अप्रैल १६५४ की अपेक्षा, कमी रही —

वस्तु	अप्रैल (पाउ)	मइ (पौंड)
१	२	३
विविध बुना हुआ माल	१५,८६ ३२७	६,६५,४५६
सूत और कपडा	६,१६,११४	४,००,११४
धातु खनिज व टुकड़े	५,६०,४५२	२,०४,५७२
लौहक खनिज	४,६८,२७७	१,४०,०८३
रूई	२,६४,२६१	१,३१,४११

१	२	३
तेल निकालने के लिये तेलहन व गिरियां	१,४२,२४०	१४,८०२
चमड़ा व खालें	६५,३३६	५४,७००
फल व तरकारियां	८०,९८८	४८,५०५
रासायनिक पदार्थ	६१,३३२	४५,८००

मई १९५४ में ब्रिटेन द्वारा भारत को भेजी गई मुख्य वस्तुओं में अप्रैल १९५४ की अपेक्षा, वृद्धि हुई। इस मास में मशीनों (बिजली की मशीनों को छोड़कर), औजारों व उपकरणों, रासायनिक पदार्थों, विविध बुने हुए माल, सड़कों पर चलने वाली गाड़ियों व हवाई जहाजों, रेल के डिब्बों, धातुओं से निर्मित सामान लोहे व इस्पात का निर्यात, अप्रैल १९५४ की अपेक्षा, बढ़ गया।

तुर्की : सीमाशुल्क की नयी दरें

सीमा शुल्क की नई दरें ७ जून १९५४ से लागू हो गई हैं। इसके अन्तर्गत सीमाशुल्क परिमाण के बदले मूल्य के आधार पर लिया जायगा। परन्तु यह दरें उन वस्तुओं पर लागू नहीं होंगी जिन्हें किन्हीं समझौतों के कारण पुरानी दरों से लाभ पहुँचता है अथवा जिन पर व्यापार व सीमा शुल्क विषयक सामान्य करार लागू होता है या जिनके विषय में तुर्की द्वारा अन्य देशों से १ जुलाई १९५५ तक के लिये व्यापार व भुगतान करार किये गये हैं। इस तिथि के बाद नई दरें सभी देशों पर समान रूप से लागू कर दी जायगी।

विदेशी व्यापार

तुर्की के मई १९५४ तथा जनवरी से मई १९५४ की अवधि के आयात व निर्यात आंकड़े नीचे दिये गये हैं। तुलना की दृष्टि से १९५३ की इन्हीं अवधियों के आंकड़े भी दे दिये गये हैं —

निर्यात

(लाख तलारिस)

वस्तुएं	मई १९५४	मई १९५३	जनवरी-मई १९५४	जनवरी मई १९५३
(क) वस्तुओं के अनुसार				
अनाज ..	१७२	३७१	१,२०८	१,५४०
तम्बाकू	१०५	१६६	६१८	८८८
रूई	१०८	१९८	९२८	१,०२९
फल	३७	७४	३६१	३५८
तेलहन	४	६	४४	८१
खनिज पदार्थ	८०	१३२	३०८	४६७
अन्य	९३	११८	४००	५१७
योग .	५९९	१,०१५	३,८६७	४,८८०
(ख) देशानुसार				
देश				
पश्चिमी जर्मनी	२६	१९१	३७९	९८४
ब्रिटेन	३२	३८	१६६	२७०
अमेरिका	४६	२३०	३६८	८१२
इटली	७२	२२६	३४५	१,०७७
फ्रांस	८	१९	१६०	२५९
बेलजियम	२	५	२०	३६
अन्य	४१३	३०६	२,४२९	१,४४२
योग ..	५९९	१,०१५	३,८६७	४,८८०

आयात

(लाख तलारिस)

वस्तुएं	मई १९५४	मई १९५३	जन० मई १९५४	जन० मई १९५३
(क) वस्तुओं के अनुसार				
मशीनें	४२८	३२०	१,४०५	१,४२४
लोहा और इस्पात	१४८	१५१	६९०	६८८
परिवहन आदि	६६	८०	५११	५८२
खनिज तेल	१०६	९०	३७६	३८९
सूती माल व सूत	३०१	१३०	१,१०५	७७३
रासायनिक पदार्थ	५६	८०	४७०	३२७
अन्य	३८९	४८२	१,५८६	१,३९५
योग	१,४९४	१,१३३	५,९६३	५,५७८
(ख) देशानुसार				
देश				
पश्चिमी जर्मनी	२४८	२०६	१,०१९	१,१२७
ब्रिटेन	११३	१७५	५५८	९३४
अमेरिका	२५५	११६	८९९	५९५
इटली	१०९	५७	४२५	४४०
फ्रांस	९३	७८	४४८	२३८
बेलजियम	२८	६७	१८०	२७९
अन्य	६४८	४१४	२,५३४	१,९६५
योग	१,४९४	१,१३३	५,९६३	५,५७८

तुर्की का १ तलारिस = १ २ ३ भारतीय रुपया।

पूर्वी पाकिस्तान : बकरी की कच्ची खालों का निर्यात

पाकिस्तान सरकार ने ३१ मार्च १६५५ को समाप्त होने वाली अवधि के लिये बकरी की कच्ची खालो के निम्न गन्तव्य कोटे घोषित किये है :—

गन्तव्य स्थान	पूर्वी पाकिस्तान	पश्चिमी पाकिस्तान	योग
	कोटा थानो मे		
फ्रास	२५,०००	७५,०००	१,००,०००
जर्मनी	५,००,०००	४,५०,०००	६,५०,०००
भारत	१,००,०००	—	१,००,०००
इटली	४,५०,०००	१०,००,०००	१४,५०,०००
हालैण्ड	२५,०००	१,२५,०००	१,५०,०००
स्वीडन	—	२,५०,०००	२,५०,०००
ब्रिटेन	१४,२५,०००	२५,०००	१४,५०,०००
अन्य देश	१,००,०००	१,००,०००	२,००,०००
योग	२६,२५,०००	२०,२५,०००	४६,५०,०००

मई में कच्चे जूट का निर्यात

जनवरी से मई १६५४ की अवधि मे पूर्वी बगाल का भारत से निर्यात व आयात व्यापार क्रमश: ६६६ लाख भारतीय रुपये व १६१ लाख पा० रुपये का हुआ। मई १६५४ मे पूर्वी बगाल ने कच्चे जूट की कुल ५,०८,३७४ गाठो का निर्यात किया, जिनमे से १,३२,४१७ गाठे भारत को तथा ३,७५,६५७ गाठें अन्य देशो को भेजी गयी। जुलाई १६५३ से मई १६५४ तक की ११ महीनो की अवधि मे कुल ५१.५१ करोड पाकिस्तानी रुपये मूल्य की ४७,६०,५८० गाठो का निर्यात हुआ, जिनमें से भारत ने ६.६० करोड पाकिस्तानी रुपये मूल्य की १२,४५,४२६ गाठें मगायी।

औद्योगिक उत्पादन

फरवरी १६५४ मे, पूर्वी बगाल के कारखानो मे ११,७१,०८२ पौण्ड सूत बनाया गया, जबकि गतवर्ष के इसी महीने मे ८,६२,०७७ पौण्ड सूत बनाया गया था। इसमे ३० से ४० नम्बरी सूत ५,१४,७२३ पौण्ड, २० से ३० नम्बरी ३,१६,६१६ पौण्ड, १० से २० नम्बरी २,१८,३५५ पौण्ड और ८० से अधिक नम्बर का ४,१२७ पौण्ड रहा। दोहरे सूत का उत्पादन केवल ७,८६१ पौण्ड रहा।

इस महीने सूती कपड़े (धोती, साडी, कमीज का कपडा लट्ठा आदि) का उत्पादन ५१,२६,८४५ गज आका गया, जबकि जनवरी १६५३ मे ४४,६७,७२० गज आँका गया था। इनमे धोतिया २३,०६,८६२ गज, साडिया २०,६५,४०२ गज, कमीज का कपडा और लट्ठा ४,१७,४८५ गज तथा मारकीन और अन्य विविध किस्मो का कपडा ३,०७,०६६ गज रहा।

अन्य वस्तुए जिनके उत्पादन के मासिक आकड़े प्राप्त थे व इस प्रकार है —चाय २,४६,१२३ मन, दियासलाई १,४१,१२० डिब्बिया और सीमेंट २,८४० टन।

नेपाल : अगस्त १६५४ में मूल्यों की वृद्धि

नेपाली व भारतीय मुद्राओं की विनिमय दर मे असमानता रहने के कारण अगस्त १६५४ मे भी नेपाल की आर्थिक स्थिति बिगडती गयी। आवश्यक वस्तुओं, विशेषत घी, चाय, चीनी व गेहूँ के मूल्य चढते रहे। अगस्त के अन्त मे विनिमय दर १८१ नेपाली रुपये बराबर १०० भारतीय रुपये थी।

भारत से व्यापार

अगस्त मास मे भारत स आई वस्तुओ मे मोटर व साइकिलो के टायर व ट्यूब, कपडा, चाय, चीनी और पेट्रोल मुख्य हैं। विदेशो से मिट्टी का तेल, भलाई करने के बिजली के उपकरण, शल्य चिकित्सा का सामान, सिगरेटें, शराब आदि मगाई गयीं। उपर्युक्त वस्तुओ का विवरण इस प्रकार है :—

भारतीय माल

कपडा	२३७ गाठें
चाय	१२२ पेटिया
चीनी	४८१ बोरिया
पेट्रोल	३,४०० गैलन
साइकिल टायर	५६४ सख्या
साइकिल ट्यूब	३०० सख्या
मोटर टायर	४८ सख्या
मोटर ट्यूब	३६ सख्या

अन्य देशों का माल

मिट्टी का तेल	८,६४४ गैलन
भलाइ के लिए बिजली के उपकरण	२ गट्ठे
शल्य चिकित्सा का सामान	१ गट्ठा
लोहे का सामान	४५ पेटिया
सिगरेटें	४ पेटिया
शराब	४५ पेटिया
साइकिल के ताले	१ पेटी

हांगकांग : भारत से व्यापार घटा

अप्रैल १९५४ में हांगकांग का व्यापार कुल ४,६१५ लाख हांगकांग डालर का हुआ, जब कि मार्च १९५४ में ४,६१५ लाख हांगकांग डालर व अप्रैल १९५३ में ६,३२७ लाख हांगकांग डालर का हुआ था।

अप्रैल १९५४ में हांगकांग का आयात व निर्यात व्यापार क्रमशः २,७५७ लाख हांगकांग डालर व १,८५८ लाख हांगकांग डालर का हुआ।

भारत से व्यापार

अप्रैल मास में भारत के साथ हुए हांगकांग के कुल व्यापार का मूल्य थोड़ा घटकर ६८ लाख हांगकांग डालर रह गया, जब कि मार्च १९५४ में यह ७४ लाख हांगकांग डालर रहा था। निर्यात व आयात की गई विभिन्न वस्तुएं तथा उनके मूल्य निम्न प्रकार हैं :—

आयात

	हा० डालर
कोयला	१२,७१,३३६
चमड़ा	४,२१,६३६
कमीज का कपड़ा (कोरा)	११,८७,२६६
जूट की बोरियां	४,२१,३१२
विविध	१८,१०,३४०
योग	५१,१२,२२६

निर्यात

	हा० डालर
हांगकांग में बनी बिजली की टार्चें	४,८६,५१४
विविध	१२,११,१५०
योग	१६,९७,६६४

व्यापार नियन्त्रण में उदारता

अब आवश्यक वस्तु पूर्ति प्रमाणपत्रों के बिना ही लाइसेंस द्वारा विद्युत अवरोध परीक्षण यन्त्रों का आयात किया जा सकता है। इन पर अब विनिमय और क्षेत्रीय नियन्त्रण सम्बन्धी प्रतिबन्ध ही रहेंगे। लायसेन्स के अन्तर्गत इन का पुनर्निर्यात किसी भी देश को करने की अनुमति है।

फिजी : १९५३ में भारत से कम आयात

फिजी सरकार ने १९५३ का वार्षिक व्यापार विवरण प्रकाशित कर दिया है। इस उपनिवेश के व्यापार में २ वर्ष तक लगातार घाटा रहने के पश्चात्, आलोच्य वर्ष में व्यापार-सन्तुलन उसके अनुकूल रहा है। परन्तु भारत का फिजी को निर्यात, १९५२ में ८,०४,९६० पौंड से घटकर, १९५३ में ५,८६,९३६ पौंड रह गया। सब से अधिक कमी 'जूट के माल' में हुई है, जिनका मूल्य १९५२ में ४,५६,०१५ पौंड से घट कर आलोच्य वर्ष में कवल १,४१,३२६ पौंड रह गया। सम्भवत, गतवर्ष का स्टाक बचे रहने के कारण ही यह कमी हुई है। इसके विपरीत 'खाद्य, पेय व तम्बाकू' तथा 'चमड़ा व चमड़े से बने माल' के अन्तर्गत सम्मिलित वस्तुओं के निर्यात में कुछ वृद्धि हो गई है।

व्यापार की संभावनाएं

भारत में बने बिजली के सामान तथा इस्पात के फरनीचर जैसे कि फोल्डिंग कुर्सियां और सामान्य उपभोग की वस्तुओं की यहां काफी मांग दिखाई पड़ती है। उनके मूल्य व किस्म ब्रिटेन व आस्ट्रेलिया से मंगाई जाने वाली इन्हीं वस्तुओं से, स्पर्धा में टिक सकने वाले होने चाहिए।

मारीशस : १९५३ में व्यापार सन्तुलन की अनुकूलता में वृद्धि

१९५३ में मारीशस के कुल व्यापार का मूल्य ५,२५३ लाख रु० रहा। इस में निर्यात २,७४२ लाख रु० और आयात २,५११ लाख रु० का हुआ। आलोच्य वर्ष में व्यापार-सन्तुलन २३१ लाख-रु० से मारीशस के अनुकूल रहा, जबकि १९५२ में यह २०६ लाख रु० से अनुकूल रहा था।

आलोच्य वर्ष में ४,८१,८८७ टन चीनी का निर्यात किया गया। आयात निम्न प्रकार रहा :—

वस्तुएं	(००० रु०)
खाद्य पदार्थ ...	६५,८१६
पेय पदार्थ व तम्बाकू — —	५,१३६
खाने के काम न आने वाला कच्चा माल (लकड़ी को छोड़कर) ..	४,५६२
खनिज तेल, चिकनाई लाने वाले तेल और सम्बद्ध वस्तुएं ..	१३,५३८
पशुओं तथा वनस्पतियों से प्राप्त तेल और चर्बियां	६,०१०
रासायनिक पदार्थ	२०,६२४
निर्मित माल	५२,२७०
मशीनें और परिवहन का सामान	३६,६६०
विविध निर्मित माल ...	१२,८५२
विविध वस्तुएं जिनका अन्यत्र उल्लेख नहीं है ..	२६०

जानकारी विभाग

औद्योगिक विषय

जुलाई १९५४ में बिजली का उत्पादन

इस वर्ष जुलाई में ६६३ लोकोपयोगी बिजली केन्द्रों से ६३ करोड़ १३ लाख किलोवाट बिजली पैदा की गयी, जिसमें से ५१ करोड़ ५८ लाख किलोवाट बिजली उपभोक्ताओं को बेची गयी। इस उत्पादन में *तीन नये डीजल बिजली उत्पादक केन्द्रों का उत्पादन भी शामिल है,* जो इन स्थानों पर लगाये गये हैं — एक भिण्ड (मध्य भारत) में तथा एक-एक बारागाव, जमखुण्डी (बम्बई) में है। जून की तुलना में, बिजली का उत्पादन ६० लाख किलोवाट अधिक हुआ।

जुलाई १९५३ में बिजली का उत्पादन ५८ करोड़ ४ लाख किलोवाट था और ४७ करोड़ १० लाख किलोवाट बिजली बेची गयी थी।

दूध और दूध से बने पदार्थ

हाल में दुग्धशाला गवेषणा के निर्देशक डा० के० सी० सेन की अध्यक्षता में दुग्धशाला विज्ञान समिति की बैठक हुई। समिति ने खेड़ा जिला दूध सहकारी संघ की एक योजना को स्वीकार करने की सिफारिश की। इसके अनुसार 'दुग्ध संघ' के अधीन आनन्द में एक कारखाना खोला जा रहा है जहां दूध से मक्खन, क्रीम, सूखा दूध आदि पदार्थ बनाये जायेंगे।

समिति ने एक अन्य योजना स्वीकार की है, जिसके अन्तर्गत पंजाब विश्वविद्यालय में दूध के रासायनिक तत्त्वों का विश्लेषण किया जायगा।

एक दूसरी योजना को स्वीकार करने की सिफारिश की गयी है, जिसके अनुसार मद्रास, अजमेर मेरवाड़ा, मध्य भारत, भोपाल, आंध्र, बम्बई, मध्य प्रदेश, मैसूर, हैदराबाद और कच्छ के कुछ क्षेत्रों में तैयार होने वाले घी की किस्म की जांच की जायगी। इसके अलावा, दूध घी से सम्बन्धित अन्य कई मुख्य योजनाओं की सिफारिश की गयी, जिन्हें बंगलोर स्थित, भारतीय दुग्धशाला गवेषणा संस्थान अपने हाथ में लेगा।

समिति को सम्बोधित करते हुए, डा० सेन ने बताया कि भारत सरकार अगले वर्षों में देश में दुग्धशाला कार्य के विकास को बढ़ावा देना चाहती है। 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन देश में काफी सफल रहा है, अतः अब दुधारू पशुओं की उन्नति तथा दूध का उत्पादन बढ़ाने पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

आशा है दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत योजना आयोग विभिन्न राज्यों में दुग्धशाला योजनाओं के विस्तार के लिए तथा भारतीय दुग्धशाला गवेषणा संस्थान के अन्तर्गत अन्वेषण कार्य और कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त रकम की सिफारिश करेगा। पंच-वर्षीय योजना की अवशिष्ट अवधि में भी बम्बई तथा पश्चिमी बंगाल को दुग्ध उत्पादन तथा पशु धन के सुधार के लिए आर्थिक सहायता मिल सकती है।

सितम्बर में कोयले का उत्पादन बढ़ा

सितम्बर १९५४ में भारत की खानों से ३१,७१.४०४ टन कोयला निकाला गया। अगस्त १९५४ में ३१.५७,६१९ टन कोयला निकाला गया था। सितम्बर में २८,८७,६१३ टन भेजा गया जबकि अगस्त में २९,२५,९६९ टन भेजा गया था। सितम्बर के आरम्भ में खानों के क्षेत्रों में ३३,७९,८९८ टन कोयले का स्टाक था जो महीने के अंत में घटकर ३२,०९,८०० टन रह गया। इस महीने ८२९ खानों में काम चालू रहा जिनमें औसतन ३,३७,७३० मजदूर काम करते रहे। खनिकों और लादने वाले मजदूरों का औसत उत्पादन प्रति पाली १.०७ टन जमीन के भीतर और खुले में काम करने वाले दूसरे मजदूरों का ०.५८ टन और बाकी मजदूरों का ०.३७ टन रहा। अनुपस्थिति १२.९८ प्र० श० रही।

खानों के और दूसरी जगहों के कोक बनाने वाले कारखानों ने कुल ३,६६,१९२ टन कोक तैयार किया और २,०१,२९४ टन कोक भेजा गया।

लोहे की खानों में उत्पादन-वृद्धि

खानों के मुख्य निरीक्षक द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार भारत में लोहे की खानों का कुल अनुमानित उत्पादन अगस्त १९५४ में २,६६,२०१ टन से बढ़कर सितम्बर, १९५४ में २,७०,७८० टन हो गया। सितम्बर १९५४ के लिए ६७ खानों से जो विवरण प्राप्त हुए हैं, उनसे पता चलता है कि लोहा और इस्पात के कारखानों को २,४९,२८५ टन और निर्यात-मंडियों को ४७,२६४ टन कच्चा लोहा भेजा गया। महीने के अन्त में ८,३६,९३१ टन का स्टाक शेष था।

२ अरब टन लिगनाइट (भूरे) कोयले का भंडार

मद्रास राज्य के अंतर्गत दक्षिण अरकाट जिले में नइवेली स्थान पर वैज्ञानिक मजदूर एक करोड़ वर्ष पुराने लिगनाइट कोयले के भंडार को खोजने का प्रयत्न कर रहे हैं। दो अरब टन लिगनाइट कोयले का यह

भंडार मिलने पर दक्षिण भारत की अर्थ व्यवस्था का कायापलट हो जायगा।

मद्रास राज्य इस कार्य का खर्च दे रहा है और खदान का लगभग ८५ फीसदी काम हो चुका है। अभी उद्देश्य ६०० फुट लम्बा, ६०० फुट चौड़ा और १८० फुट गहरा गड्ढा खोदकर १०० वर्ग फुट लिगनाइट कोयले की सतह खोल देना है।

इस प्रयोग से जो अनुभव, जानकारी तथा टेक्नीकल ज्ञान प्राप्त होगा, उसका उपयोग लिगनाइट की खानों की बड़े पैमाने पर खुदाई में किया जायगा।

केन्द्रीय सरकार तथा अमरीकी टेकनीकल सहयोग मिशन से इस कार्य के लिये मशीनें मिली हैं। इसके अतिरिक्त ५ मार्च १९५३ से अब तक मद्रास सरकार इस खदान के काम पर ४१ लाख रुपये से भी अधिक रकम खर्च चुकी है। कोलम्बो योजना के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार ने टेकनीकल परामर्श देने के लिये एक ब्रिटिश कम्पनी की सेवायें भी प्राप्त की है।

लिगनाइट क्या है ?

लिगनाइट वह कोयला है, जो अभी कोयले का रूप धारण नहीं कर सका। इसमें लगभग ३० से ३५ प्रतिशत तक नमी रहती है, किन्तु इसको ठीक करके ईंधन के रूप में काम में लाया जा सकता है। यह लिगनाइट का ईंधन काम में अन्य प्रकार के ईंधन के समान है। इससे इंजन चलाने, बिजली बनाने, और खाना पकाने आदि का काम लिया जा सकता है। इसके अलावा कृत्रिम पेट्रोल, रसायनों तथा रासायनिक खादों के उद्योगों में भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

दक्षिण भारत को लाभ

१०० वर्गमील से भी अधिक इलाके में फैले हुए लिगनाइट के इस भंडार से मद्रास, आंध्र, तिरुवांकुर-कोचीन, हैदराबाद तथा मैसूर राज्यों के लोगों के लिये उन्नति के नये द्वार खुल जायेंगे। कारखानों को चलाने के लिये दक्षिण भारत में कोयले का जो अभाव है, लिगनाइट से उसकी बहुत कुछ पूर्ति हो सकेगी। हजारों मील दूर बिहार तथा पश्चिमी बंगाल से कोयले लाने का खर्चा भी बच जायगा। लिगनाइट कोयले से बिजली भी पैदा की जा सकेगी।

अन्य लाभ

जिस स्थान पर लिगनाइट की खुदाई का काम हो रहा है, वहां अन्य पदार्थों का भी भंडार है। वहीं पर सफेद मिट्टी की मोटी तह पाई जाती है, जिससे चीनी मिट्टी के बर्तन के उद्योग के विकास में सहायता मिलेगी। लिगनाइट में 'मोंटन मोम' काफी मात्रा में पाया जाता है, जो सैनिक उद्योग के लिये अत्यन्त आवश्यक है। खुदाई से जो पानी बाहर निकलेगा, उसका उपयोग सिंचाई के लिये आसानी से किया जा सकेगा। इस प्रकार खदान से निकलने वाली सभी वस्तुओं का भलीभांति उपयोग किया जा सकेगा।

प्रयोगशाला

खदान के पास अभी एक कामचलाऊ प्रयोगशाला है। यहां लिगनाइट तथा अन्य पदार्थों का विश्लेषण किया जाता है। इस वर्ष के अन्त तक ब्रिटिश फर्म की रिपोर्ट आने पर कामकाज जोर शोर से शुरू कर दिया जायगा।

यहां वैज्ञानिक लोग लिगनाईट के विश्लेषण करने में व्यस्त हैं, मजदूर इस गड्ढे को प्रतिदिन गहरा करते जा रहे हैं। एक मजदूर ने ही १९३० के करीब एक कुएं की खुदाई के समय लिगनाइट के इस भंडार का पता लगाया था।

लकड़ी जोड़ने का कारखाना

काश्मीर सरकार ने लकड़ी जोड़ने का एक कारखाना स्थापित किया है जो भारत में अपनी तरह का पहला है। इस कारखाने में लकड़ी चीरी और तैयार की जाती है और उसे जोड़ कर दरवाजे, खिड़की तथा लकड़ी के अन्य सामान बनाये जाते हैं। यह श्रीनगर से सात मील आगे जम्मू के मार्ग पर पम्पोरमें स्थापित किया गया है, ताकि बारहों महीने सामान लाने-ले जाने की सुविधा रहे। पास ही झेलम नदी बहती है, जिससे कारखाने तक लकड़ी बहा ले आने में सहायता मिलती है।

कारखाना फरवरी १९५२ में स्वीडन की एक कम्पनी की सहायता से बनाया गया था। तब से इस कारखाने से २ लाख रुपये से भी अधिक की आय हो चुकी है, जो कुल लागत पूंजी का दसवां भाग है।

औसत उत्पादन

कारखाना साल में औसतन २६ हजार दरवाजे और लगभग इतनी ही खिड़कियां तैयार करता है। प्रतिवर्ष लगभग १४ लाख वर्ग फुट इमारती लकड़ी खर्च होती है। कारखाने में चाय की पेटियां, गोलाबारूद रखने के सन्दूक, फर्श की लकड़ी और परतदार घरने बनाई जाती हैं।

अधिकतर देवदार की लकड़ी ही काम में लाई जाती है परन्तु कुछ चीजों के लिए चीड़ और सरो का भी उपयोग किया जाता है। वन विभाग के कर्मचारी कश्मीर की घाटी के पश्चिमी हिस्से से पेड़ चुनते और काटते हैं, जिन्हें झेलम नदी की धार में बहा कर लाया जाता है।

इन लकड़ी की बल्लियों को नदी में ही एक किनारे लगा दिया जाता है ताकि उनकी ताजगी बनी रहे। बाद में बिजली की चरखी से इन्हें चिराई के लिए आरों की मशीन तक पहुँचाया जाता है।

इमारती लकड़ी का टाल

चीरने के बाद इन तख्तों को आकार-प्रकार के अनुसार छांट कर सूखने के लिए ऐसे ढंग से रख दिया जाता है कि इन्हें हवा लगती रहे। यहां ये तख्ते लगभग पांच महीने तक रहते हैं। बाद में इन्हें काम में लाने के लिए उपयुक्त आकार में चीरा जाता है।

अब लकड़ी को सिक्काई के कारखाने में ले जाते हैं। यहां सुखाने के कमरे होते हैं। इनमें गर्म हवा छोड़ी जाती है। हवा की गरमी बनाये

रखने के लिए कमरे के चारों ओर ऊष्मानली लगी रहती है । हवा का रुख बदलने के लिए हवा बाहर फेंकने के भी पखे लगे रहते हैं जिससे तख्तों के सूखने का क्रम एकसा बना रहे ।

अन्तिम तैयारी

लकड़ी को सीलन, दीमक, भुकड़ी, सड़ने और गलने से बचाने के लिए उस पर विशेष प्रकार के रासायनिक द्रव्य लगाये जाते हैं तथा उसे आधुनिकतम वैज्ञानिक तरीकों से 'दबाया' जाता है । इस प्रकार यह लकड़ी अधिक समय तक चलती है ।

अन्त में इन तख्तों को कारखाने में ले जाते हैं, जहां इन्हें रेता जाता है और सरेस यथा वार्निश लगा कर इन पर पालिश कर दी जाती है । सब जोड़ने वाले कमरे में ले जाकर इनमें छेद करते हैं, किनारों को तेज करते हैं और पालिश आदि करके तैयार कर देते हैं । कारखाने में लकड़ी का बुरादा कहीं भी नजर नहीं आता क्योंकि हर कमरे में हवा की नालियां लगी हैं जो इस बुरादे को खींच कर भट्टी तक ले जाती हैं । कारखाने में सिवा इसके और कोई ईंधन इस्तेमाल नहीं होता । इसके बाद परिवहन विभाग इन्हें अच्छी तरह ग्राहकों के पास हिफाजत से पहुँचाता है ।

बम्बई में तेलशोधनशाला का उद्‌घाटन

बम्बई में स्टैनवैक तेलशोधनशाला का उद्‌घाटन करते हुए, केन्द्रीय उत्पादन मन्त्री श्री के० सी० रेड्डी ने कहा कि भारत के औद्योगिक विकास में इस तेलशोधनशाला से जो सहायता प्राप्त होगी, वह अकथनीय है । जिस तेजी से इस शोधनशाला का निर्माण हुआ है, उस पर हर किसी को गर्व हो सकता है ।

श्री रेड्डी ने बताया कि अनेक बाधाओं के होते हुए भी शोधनशाला का निर्माण कार्य समय से ६ महीने पहले पूरा हो गया है । इस शोधन शाला के बन जाने से लोग यह समझ सकेंगे कि विदेशी पूंजी भारत के राष्ट्रीय विकास में कितनी सहायक हो सकती है ।

श्री रेड्डी ने कहा कि भारत में सबसे आधुनिक ढङ्ग की यह पहली शोधनशाला है और स्वतन्त्रता के बाद भारत में यह विदेशी पूंजी का सब से बड़ा नियोजन है ।

भारत के तेल-साधन

तेल प्रकृति की देन है और भारत इस अमूल्य वस्तु से वंचित है । हाल ही में भारत सरकार ने बंगाल में तेल की खोज करने के लिये स्टैंडर्ड वैकुअम आयल कम्पनी के साथ एक करार किया है । इस कम्पनी ने काम शुरू कर दिया है भारत में मिट्टी का तेल काफी परिमाण में खर्च होता है, पर यह ज्यादातर बाहर से ही मगाया जाता है ।

स्वतन्त्रता के बाद सरकार का ध्यान इस स्थिति की ओर गया और उसने बाहर से मगाये हुए कच्चे तेल को साफ करने के लिए यहीं कारखाने बनाने का निश्चय कर लिया । भारत सरकार आरम्भ से ही इस बात को समझती थी कि विदेशी पूंजी और शिल्पिक कर्मचारियों की सहायता के बिना कारखाने नहीं चलाये जा सकेंगे, इसलिए १९४८ में उसने स्टैंडर्ड वैकुअम आइल कम्पनी, बर्मा शैल और कालटैक्स इन तीन बड़ी तेल-कम्पनियों से सहायता मांगी । ये कम्पनियां रुपया लगाने के लिए राजी हो गयीं और उन्होंने भारत सरकार के साथ करार कर लिये ।

आयात पर निर्भरता

यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि शोधनशालाओं के बन जाने पर भी बिना साफ किया हुआ तेल तो बाहर से मगाना ही पड़ेगा, फिर इन शोधनशालाओं से क्या लाभ ? यह ठीक है कि इन शोधनशालाओं के बन जाने पर भी हमको अशुद्ध तेल बाहर से मगाना पड़ेगा :—फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि अशुद्ध तेल मगाने और शुद्ध तेल मगाने में बहुत अन्तर है । अशुद्ध तेल एक तो आसानी से मिल जाता है, दूसरे कई स्थानों से मगाया जा सकता है । साफ किया हुआ तेल कठिनता से मिलता है । यह भी बात है कि जब हमारे देश में ही तेल निकलने लगेगा तो स्थिति और भी सुधर जायगी ।

तेल शोधनशालाओं से एक ओर तो विदेशी विनिमय की बचत होगी, दूसरी ओर इनके लाभ पर कर मिलने से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी ।

इन शोधनशालाओं से एक लाभ यह भी है कि बहुत से भारतीय नवयुवकों को तेल शोधन का प्रशिक्षण मिल जायगा । इस कम्पनी ने हमारे नवयुवकों को काम सिखाने का वादा किया है । इस लिए भविष्य में तेल-शोधन के लिए भारत को विदेशी शिल्पियों पर निर्भर रहना न पड़ेगा । इस से तेल के अलावा अन्य बहुत से उप उद्योग भी विकसित होंगे ।

यह स्टैनवैक शोधनशाला भारत के औद्योगिक विकास में एक महत्व पूर्ण स्थान रखती है । मुझे यह जान कर बड़ी प्रसन्नता है कि विशेषज्ञों की राय में इस की स्थिति बहुत अच्छी है ।

इसोनिआज़िड (Isoniazid) उद्योग के संरक्षण की जांच

भारत सरकार ने निश्चय किया है कि भारत में इसोनिआज़िड (Isoniazid) उद्योग के संरक्षण का प्रश्न सीमा शुल्क आयोग को जांच के लिये दिया जाय । जिन फर्मों तथा व्यक्तियों को इस उद्योग अथवा इसोनिआज़िड की खपत पर निर्भर रहने वाले किसी उद्योग में दिलचस्पी हो और जो यह चाहते हों कि सीमाशुल्क आयोग उनके विचारों पर ध्यान दे, वे सेक्रेटरी, टैरिफ कमीशन, कन्ट्रेक्टर बिल्डिंग, निकल रोड, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई १ को लिखें ।

खली से तेल निकालने के कारखाने

खली में शेष रह जाने वाले तेल के अंश को घोल प्रणाली द्वारा निकाल लेने के कारखाने लगाने अथवा इस समय चालू कारखानों में विस्तार कर देने या उद्योग (विकास और नियमन) अधिनियम के अन्तर्गत जिन कारखानों को लाइसेन्स दिये जा चुके हैं उन के विषय में भारत सरकार ने नये आवेदन पत्र लेने का निश्चय किया है । इच्छुक व्यक्तियों को अपने आवेदन पत्र वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय के पास भेज देने चाहिये ।

राष्ट्रीय विकास निगम के डाइरेक्टर

गत २७ अक्तूबर १९५४ को नई दिल्ली में राष्ट्रीय विकास निगम की एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के रूप में रजिस्ट्री हुई है। निगम के बोर्ड में १५ डाइरेक्टर हैं। वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी इस बोर्ड के अध्यक्ष रहेंगे।

अन्य डाइरेक्टर इस प्रकार हैं: श्री जे० आर० डी० ताता, श्री घनश्याम दास बिड़ला, श्री श्रीराम, श्री कस्तूर भाई लालभाई, श्री शान्ति प्रसाद जैन, श्री धीरेन एन० मित्रा, डा० जे० सी० घोष, प्रो० डी० आर० गाडगिल, श्री एस० भूतलिंगम आई० सी० एस०, श्री एम० के० वेलोदी आई० सी० एस०, श्री पी० सी भट्टाचार्य, श्री एस० एस० खेडा आई० सी० एस०, श्री के० आर० पी० आयंगार और डा० ए० नागराज राव।

गृह उद्योग

हाथ करघा उद्योग की उन्नति

१७ नवम्बर १९५४ की सूचना के अनुसार भारत सरकार ने हाथकरघा उद्योग के विकास के लिये राज्यों को और अनुदान तथा ऋण देने की स्वीकृति दी है।

अखिल भारतीय हथकरघा मंडल को 'क' और 'ख' भाग के राज्यों के सामूहिक योजना क्षेत्रों में हथकरघे की चीजों का प्रदर्शन करने के लिये ८५ हजार रु० दिये गये हैं। ६७८९ रु० मद्रास को इसलिए दिये गये हैं कि मद्रास स्टेट हैंडलूम वीवर्स कोआपरेटिव सोसायटी ने लंका के हथकरघा एम्पोरियम के लिये जो मोटर गाड़ी खरीदी है उसका खर्च पूरा हो सके।

मध्य भारत को १,४५,१०५ रु० का अनुदान दिया गया है जो और बातों के अलावा एक रंगाई केन्द्र खोलने के काम आयेगा।

पांच दूकानें और एक गवेषणा केन्द्र स्थापित करने के लिये सौराष्ट्र को ६५,२६६ रु० का अनुदान दिया गया है।

कच्छ को २०,७५० रु० का ऋण और १६,५०० रु० का अनुदान दिया गया है। यह ऋण बुनकरों की सहकार समितियों की पूंजी और अनुदान हथकरघे के कपड़े पर छूट देने तथा करघों के सुधार के काम आयेगा।

विंध्य प्रदेश को करघों का सामान खरीदने के लिये १४,५०० रु० का अनुदान दिया गया है।

मणिपुर को ८,९६० रु० का ऋण, प० बंगाल ५,५०० रु० का अनुदान और दिल्ली को ५,२१० रु० का अनुदान दिया गया है।

खादी और ग्राम उद्योगों की उन्नति

१३ नवम्बर १९५४ को प्राप्त सूचना के अनुसार देश में खादी और ग्राम उद्योगों के विकास के लिये भारत सरकार ने अखिल भारतीय खादी और ग्राम उद्योग बोर्ड को और अधिक अनुदान तथा ऋण स्वीकृत किया है।

खादी का उत्पादन बढ़ाने के लिये बोर्ड को ६ लाख रुपये का ऋण दिया गया है। इस रकम में से राजस्थान खादी संघ, चौमू को ३ लाख रुपये और ग्राम उद्योग समिति, बम्बई को १ लाख रुपये दिये जायेंगे। यह रकम खादी उत्पादन के लिये औजारों तथा कच्चा सामान खरीदने में काम आयेगी।

बोर्ड को ५ लाख रुपये का अनुदान दिया गया है। यह खादी उत्पादक केन्द्रों व संस्थाओं के बढ़े हुए खर्चों और घाटे को पूरा करने तथा नये केन्द्र खोलने के काम में लाया जायगा।

ग्राम उद्योग से बनी वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिये बोर्ड को ५ लाख रुपये दिये गये हैं। यह रकम बाद में सरकार को वापस मिलेगी।

देहात के घानी के तेल की बिक्री बढ़ाने के लिये ४ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया है। यह रकम २॥ रुपये प्रतिमन की दर से तेल की बिक्री पर छूट देने के लिये काम में लायी जायगी।

खादी विकास के लिये ऋण

भारत सरकार ने अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड को २४ लाख रु० का और ऋण देना स्वीकार किया है। यह धन खादी विकास के लिये निम्न संस्थाओं को दिया जायगा:—

गांधी आश्रम, मेरठ १० लाख रु०, बिहार खादी समिति मुजफ्फरपुर ३ लाख रु०, पंजाब खादी और ग्रामोद्योग संघ आदमपुर दोआबा ३ लाख रु०, हैदराबाद खादी समिति, हैदराबाद ३ लाख रु०, सौराष्ट्र रचनात्मक समिति राजकोट ३ लाख रु० और राजस्थान खादी संघ, चौमू २ लाख रु०।

ये संस्थाएं इस ऋण को अन्य कार्यों के सिवा रुई, ऊन और रेशम तथा सूत खरीदने में लगायेंगी। खादी उत्पादन से सम्बद्ध अन्य कार्यों के लिये आवश्यक कच्चे माल और औजारों को भी इस धन से खरीदा जायगा।

व्यापार की उन्नति

चीन से तम्बाकू और रेशम का करार

१४ अक्तूबर १९५४ को भारत और चीन के मध्य जो व्यापार करार हुआ है उसके अनुसार भारत और चीन की सरकारों ने भारत से चीन को अधिक परिमाण में तम्बाकू भेजने और चीन से भारत को अधिक परिमाण में कच्चा रेशम भेजना स्वीकार किया है। इस करार के अनुसार ६० लाख पौंड वर्जिनिया तम्बाकू भारत से चीन भेजी जायगी और ६० टन कच्चा रेशम चीन से भारत आयेगा।

चीन भेजी जाने वाली ६० लाख पौण्ड तम्बाकू में से ४७ लाख पौण्ड १९५३ की फसल में से और ४३ लाख पौण्ड चालू वर्ष की फसल में से दी जायगी। यह तम्बाकू ५ विभिन्न किस्मों की होगी और इसका मूल्य ४ आ० २ पाई प्रति पौण्ड से लेकर ७ आ० प्रति पौण्ड मद्रास, विशाखापट्टनम और काकीनाडा में जहाज तक छोड़ने के लिये होगा। चीन से आने वाला कच्चा रेशम चार प्रकार का होगा और उसके मूल्य २८ से २६ शिलिंग प्रति पौण्ड (सी० आई० एफ० भारतीय बन्दरगाह) तक होंगे।

करार के अनुसार तम्बाकू और कच्चे रेशम के सौदों के लिये एक मास की अवधि रखी गई है। तम्बाकू के लिये ये सौदे चीन की ओर से राष्ट्रीय चीनी आयात और निर्यात निगम (National China Import & Export Corporation) और कच्चे रेशम के लिये चीनी राष्ट्रीय रेशम निगम करेगा। भारत में सौदे उन व्यक्तियों के साथ किये जायगे जिन्हें भारत सरकार इनके लिये स्वीकृति देगी। इन सौदों की शर्तें दोनों सरकारों ने स्वीकार कर ली है और वे करार की अनुसूची में दी गई हैं।

चीनी सरकार ने अपने राष्ट्रीय चीनी आयात और निर्यात निगम द्वारा १९५२ की फसल में से भी तम्बाकू का आयात करना स्वीकार किया है। इसी सम्बन्ध में भारत सरकार ने स्वीकृति प्राप्त व्यक्तियों के द्वारा उन्नत किस्म के कैंटनी कच्चे रेशम को मगाना स्वीकार किया है।

बिजली की बत्तियों के पीतल के होल्डर

बिजली की बत्तियों के पीतल के होल्डर बनाने के उद्योग को संरक्षण दिये रहने के विषय में सीमाशुल्क आयोग (Tarriff Commission) ने जो रिपोर्ट दी है उसमें यह भी सिफारिश की गई है कि इन होल्डरों के समस्त निर्माताओं को अपने उत्पादनों पर "भारत में बना" ये शब्द अवश्य अंकित करने चाहिए। भारत सरकार ने यह सिफारिश स्वीकार करके भारतीय व्यापारी माल चिन्ह अधिनियम १८८६ (१८८६ के चौथे) के अन्तर्गत इस आशय की एक विज्ञप्ति जारी कर दी है कि भारत में बनाये जाने वाले बिजली की बत्तियों के पीतल के होल्डरों और उनके गत्ते के डिब्बों पर "भारत में बना" अवश्य लिखना चाहिए। यह आदेश ५ फरवरी १९५५ से लागू होगा जिससे निर्मातागण इस का यथोचित रीति से पालन कर सकें।

व्यापार नियन्त्रण

कार्क से निर्मित वस्तुएं सामान्य खुले लाइसेन्स से मुक्त की गई

भारत सरकार ने ११ नवम्बर १९५४ के भारतीय असाधारण गजट में प्रकाशित आदेश द्वारा यह घोषित किया है कि कार्क से निर्मित जिन वस्तुओं का उल्लेख अन्यत्र नहीं है और जो आई० टी० सी० अनुसूची की क्रम संख्या ९५४/४ के अन्तर्गत आती हैं, उन्हें खुले सामान्य लायसेन्स न० ३६ से मुक्त कर दिया गया है।

सुलभ मुद्रा देशों से इनका आयात करने के लायसेन्स १०० प्र० श० कोटा के आधार पर दिये जायगे। इसके लिये सम्बद्ध बन्दरगाहों पर १५ दिसम्बर १९५४ को या उससे पहले आवेदन पत्र देने चाहिए।

रूई पर निर्यात शुल्क

भारत सरकार ने निश्चय किया है कि मठिया, कालागिन, धोलेरा सी० पी० १, सी० पी० २, मध्य भारतीय देशी रूई की किस्मों का निर्यात शुल्क १२ नवम्बर १९५४ से घटाकर २०० रु० से १५० रु० प्रति गाठ (४०० पौंड की) कर दिया है। बंगाल देशी रूई का निर्यात शुल्क १२५ रु० से बढ़ा कर १५० रु० प्रति गाठ (४०० पौंड) कर दिया है।

बंगाल देशी रूई के निर्यात के अतिरिक्त कोटे

भारत सरकार ने बंगाल देशी रूई के निर्यात के सम्बन्ध में निश्चय किया है कि १९५४-५५ के रूई वर्ष में २५,००० गाठ अतिरिक्त निर्यात करने की अनुमति दी जाय।

अरण्डी के तेल के निर्यात के अतिरिक्त कोटे

यह निश्चय किया गया है कि पुराने निर्यातकों को निर्यात के लिये अरण्डी के तेल के और कोटे दिये जाय। बन्दरगाहों पर लायसेन्स अधिकारी पुराने निर्यातकों द्वारा जुलाई से अक्तूबर १९५४ की अवधि में किये गये निर्यात के ५० प्र० श० के बराबर ये कोटे दिये जायगे। कम से कम कोटा ५ टन का होगा।

इन कोटों के अनुसार जनवरी १९५५ तक माल भेजा जा सकेगा।

चाय का निर्यात कोटा बढ़ा

भारत सरकार ने चाय की इस वर्ष की फसल में से निर्यात के लिये ४,१७६ लाख पौण्ड दे दिये हैं। यह परिमाण प्रतिमानित निर्यात का १२० प्रतिशत है। फसल की स्थिति पर विचार करके सरकार ने प्रतिमानित निर्यात कोटे का ६ प्रतिशत मात्र और भी देने का निश्चय किया है। इस प्रकार निर्यात कोटे का भाग १२६ प्रतिशत हो जाता है जबकि अधिक से अधिक १३५ प्रतिशत निर्यात की अनुमति दी जाती है।

इस प्रकार निर्यात के लिये दी गई चाय का कुल परिमाण ४,४६२ ३ लाख पौण्ड हो जायगा।

नाइजर तथा करडो का निर्यात

नाइजर तथा करडो के बीजों के निर्यात सम्बन्धी नीति पर विचार करके भारत सरकार ने निश्चय किया है कि जहाजी सुविधाओं के आधार पर दिसम्बर १९५४ तक इनके निर्यात लायसेन्स खुले कर दिये जाय। परन्तु निर्यात के परिमाण की जो सीमा निर्धारित कर दी गई है उतने के ही लाइसेन्स दिये जायगे।

ब्रिटेन की जहाजी हड़ताल के दिनों में समाप्त लाइसेंस

भारत सरकार ने घोषित किया है ब्रिटेन मे जहाज घाट की हडताल के दिनों मे जिन आयात लाइसेन्सों की अवधि (रियायत के १५ दिन मिला कर) समाप्त हुई है, उनके द्वारा १५ दिसम्बर १९५४ तक माल मगाया जा सकेगा। अब और रियायती दिन नहीं दिये जायगे और इस बढाई हुई अवधि के दिनों में कोई साखपत्र आरम्भ नहीं करना चाहिए।

मूंगफली के तेल का निर्यात शुल्क घटा

भारत सरकार ने गत ४ नवम्बर १९५४ से मू गफली का निर्यात शुल्क १२५ रु० प्रति टन से घटा कर १०० रु० प्रति टन कर दिया है।

वैज्ञानिक गवेषणा

नाहोर और पोलंग के तेलों का शोध

पूना की राष्ट्रीय रासायनिक गवेषणाशाला मे साबुन बनाने के काम आने वाले, नाहोर और पोलग तेलों को साफ करने की विधि निकाली गयी है। नाहोर एक जंगली वृक्ष है जो आसाम, बर्मा दक्षिण भारत, श्री लका, अडमान और पूर्वी बगाल की पहाड़ियों पर बहुतायत से पाया जाता है। इसके फल की गिरी से ६० से ७७ प्र० श० तक तेल निकलता है जो लाल भूरे रंग का होता है।

पोलग का वृक्ष भी पश्चिमी प्रायद्वीप, उड़ीसा, दक्षिण भारत, बर्मा तथा श्री लका मे पाया जाता है। इसके फल की गिरी से भी ७०-७५ प्र० श० तेल निकाला जाता है। नाहोर के तेल मे यह दोष है कि इसके साबुन से कपडे का रग खराब हो जाता है। पोलग के तेल मे भी कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जिनके कारण इससे साबुन नही बनाया जा सकता। नयी विधि से इन दोनों तेलो को साफ करके जो साबुन बनाया जाता है उससे कपडे पर कोई रग नहीं उतरता।

सुपारी सम्बन्धी गवेषणा के लिये नई योजनायें

भारत की केन्द्रीय सुपारी समिति ने अपने छठे वार्षिक अधिवेशन में जो नई योजनाए स्वीकार की उन मे से कुछ ये हैं :—पश्चिमी बगाल में एक गवेषणा-उपकेन्द्र की स्थापना के लिये योजना, गोहाटी विश्वविद्यालय में चलाई जाने वाली सुपारी-उपोत्पादन के अधिक अच्छे उपयोग सम्बन्धी योजना का विस्तार, मैसूर मे नारियल और सुपारी की उपज के आकडे इकट्ठे करने के लिये सम्मिलित योजना और आध्र राज्य में एक सुपारी पौद घर की स्थापना के लिए योजना।

इस अधिवेशन में बम्बई, मद्रास, मैसूर, तिरुवाकुर कोचीन, पश्चिम बगाल और आसाम राज्यों के कृषि-विभागों के पदाधिकारियो और उत्पादकों, व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। समिति ने विभिन्न योजनाओ की प्रगति के बारे में आये प्रतिवेदनो, पर विचार किया।

सरसों और राई के तेलों में मिलावट की पहचान

पूना की राष्ट्रीय रासायनिक गवेषणाशाला ने जो अनुसधान किये हैं उनके परिणामस्वरूप यह पता लगा है कि राई और सरसो के तेलो की शुद्धता की जाच इन तेलों में पाये जाने वाले एक प्रकार के तेजाब, एरयूसिक एसिड की मात्रा जान लेने से हो सकती है। इस तरीके से यह भी पता चल सकता है कि तेल मे दूसरे तेल की कितनी मिलावट है।

वनस्पति तेलों की शुद्धता की जाच का प्रचलित तरीका अधिक सतोषजनक नहीं है। सरसों और राई मे ५०-५७ प्र० श० एरयूसिक एसिड होता है और भारत मे पाये जाने वाले दूसरे तेलो में यह बिल्कुल नही होता। अतः तेल के तत्वों की जाच से मिलावट सहज ही पकड़ी जा सकती है।

भारत में इंजीनियरिंग गवेषणा

इंजीनियरिंग गवेषणा बोर्ड की देख रेख में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक गवेषणा परिषद ने हाल मे इस बात का पता लगाया है कि इजीनियरिंग की विभिन्न शाखाओं में हुई प्रगति को ध्यान में रखते हुए देश में गवेषणा के कितने साधन उपलब्ध है और इजीनियरिंग कालेजो, सस्थाओ तथा उद्योग मे गवेषणाओ के लिए क्या क्या सुविधाए मिलती है? यह कार्य भारतीय राष्ट्रीय भौतिक प्रयोग शाला, नयी दिल्ली के एप्लाइड मैकेनिक्स एण्ड मैटीरियल्स विभाग के प्रधान श्री वी० कादम्बे को सौंपा गया था। उनकी खोज का विवरण 'इजीनियरिंग रिसर्च इन इडिया' शीर्षक प्रतिवेदन मे प्रकाशित किया गया है।

श्री कादम्बे द्वारा किये गये पर्यवेक्षण से ज्ञात होता है कि जहा एक ओर 'सिविल इजीनियरिंग' तथा 'हाइड्रोलिक्स' और सिचाई के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है, वहा दूसरी ओर गवेषणाओं को क्रियात्मक रूप न देने के कारण, 'मैकेनीकल इजीनियरिंग' गवेषणा तथा विकास कार्य नगण्य ही रहा।

इजीनियरिंग उद्योगो मे तीव्र प्रगति न हो सकने के मुख्य कारण ये है :—आधारभूत सामग्री की कमी, उपयुक्त मशीनों, औजारो आदि का अभाव, डिजाइनो तथा निर्माण के विषय मे टैक्नीकल ज्ञान की कमी।

इस समय मशीनो तथा औजारों के डिजायन विदेशो से मगाये जाते हैं। यदि देश मे ही उनका विकास करना है, तो यह आवश्यक है कि काफी मात्रा मे गवेषणा तथा विकास-कार्य किया जाय। विभिन्न प्रकार के औजारो तथा यन्त्रों के लिए अलग अलग सगठन बनाना आवश्यक है। कारखाने के टैक्नीकल कामो के सम्बन्ध मे भरपूर गवेषणा पर भी जोर दिया गया है। यह भी कहा गया है कि कपडा, चीनी, तम्बाकू तथा अन्य उद्योगो के लिये आवश्यक मशीनो के डिजायन बनाने के लिये जाच पडताल की जाय।

श्रम

अगस्त के महीने में औद्योगिक झगड़े

अगस्त १९५४ में औद्योगिक झगड़ों के अस्थायी आंकड़ों से पता चलता है कि इस महीने नये झगड़े कुल ५४ हुए। इन में से ५३ झगड़ों में ३४,८२९ श्रमिकों ने भाग लिया। पिछले महीने झगड़ों की संख्या इससे अधिक थी, पर विवादग्रस्त श्रमिकों की संख्या कम थी। इस महीने ऐसा कोई समय न था, जब कि कम से कम ७३ झगड़े न चल रहे हों। इनमें से ७१ में ४६,६३६ श्रमिकों ने भाग लिया और ७० झगड़ों में ३,१४,९४५ श्रमिक-दिनों की हानि हुई। इन आंकड़ों से प्रकट होता है कि पिछले महीने की अपेक्षा इस महीने झगड़ों की संख्या में तो कमी हुई, पर विवादग्रस्त श्रमिकों की संख्या और श्रमिक दिनों की हानि बढ़ गयी। इस महीने ८ झगड़े ताला-बन्दी के बारे में हुए। इनमें ६,८१८ श्रमिक शामिल हुए और उनसे १,२५,७५४ श्रमिक-दिनों की हानि हुई।

इस महीने ५१ झगड़े समाप्त हुए। इनमें से ३६ तो ऐसे थे जो ५-५ दिन से अधिक न चले, और ३ ऐसे थे जो ३० ३० दिन से भी अधिक चले। ३५ झगड़े कर्मचारियों के सम्बन्ध में और १३ छुट्टी के सम्बन्ध में थे। १९ झगड़ों में श्रमिकों को पूरी या आंशिक सफलता मिली, और २२ झगड़ों में वे असफल रहे। १७ झगड़ों का परिणाम अनिश्चित रहा और एक का अंत नहीं हुआ।

राज्यों में, पश्चिमी बंगाल का राज्य ऐसा था, जहां सब से अधिक झगड़े हुए, सबसे अधिक श्रमिकों ने भाग लिया, और सब से अधिक श्रमिक दिनों की हानि हुई। आन्ध्र, बिहार, मद्रास, पंजाब, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में श्रमिक दिनों की हानि कम हुई।

उद्योगों में, कपास और छपाई उद्योग ऐसे थे, जिनमें सब से अधिक श्रमिक दिनों की हानि हुई। नगरपालिकाओं, रूई ओटने के कारखानों और खानों में इस महीने कोई झगड़ा नहीं हुआ।

सितम्बर में नियोजन की स्थिति

सितम्बर १९५४ में काम दिलाऊ केन्द्रों में नये नाम दर्ज कराने वालों की संख्या में कमी हो गई। दशहरे के दिनों में हमेशा यह कमी हो जाया करती है। परन्तु इसके साथ सूचित किये गये रिक्त स्थानों की संख्या में कुछ वृद्धि हो जाने से सितम्बर १९५४ के अन्त तक इन केन्द्रों द्वारा काम पाने के इच्छुक रजिस्टर्ड व्यक्तियों की कुल संख्या घट गई। इस मास में १,२०,३१२ व्यक्तियों ने अपने नाम दर्ज कराये, जब कि गतमास में १,२७,७२४ व्यक्तियों ने नाम दर्ज कराये थे। आलोच्य मास में १४,३५७ व्यक्तियों को काम पर लगाया जा सका, जब कि गत मास में यह संख्या १२,०६२ रही थी। इस मास के अन्त में, काम दिलाऊ केन्द्रों द्वारा काम चाहने वाले रजिस्टर्ड व्यक्तियों की संख्या ५,६०,५०८ रही। यह गत मास के अन्त तक के आंकड़ों से ८,८२२ कम है। परन्तु विवरण से ज्ञात होता है कि देश में नियोजन की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ।

इस मास के अन्त तक श्रम मन्त्रालय की प्रशिक्षण योजनाओं के अन्तर्गत ८,४०० व्यक्ति विभिन्न प्रशिक्षण संस्थाओं और केन्द्रों में ट्रेनिंग पा रहे थे। इनमें ६०५ स्त्रियां और २,३०९ विस्थापित थे। इसके अतिरिक्त कोनी बिलासपुर की केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्था में १०८ उम्मेदवार शिक्षक व उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल में विस्थापितों के लिये "उम्मेदवार शिक्षण योजना" के अन्तर्गत ८३९ उम्मेदवार शिक्षार्थी प्रशिक्षण पा रहे हैं।

आयोजन और विकास

दूसरी पंचवर्षीय योजना के लिये राज्यों के प्रस्ताव

संसद की लोक सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि अभी तक केवल चार राज्यों ने दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत बड़े उद्योगों की स्थापना और वर्तमान उद्योग के विकास की अपनी योजनायें योजना आयोग के पास भेजी हैं। इनका विवरण इस प्रकार हैं :—

*मद्रास :—*दक्षिण अरकाट में लिगनाइट निकालना और फिर उसका उपयोग करना, सालेम में लोहे और इस्पात के कारखाने की स्थापना, अलूमीनियम के कारखाने की स्थापना, पापनाशम में कागज, मेट्टूर में डी० डी० टी० और तूतीकोरिन में मोटे के कारखाने की स्थापना।

*मैसूर :—*मैसूर आयरन ऐंड स्टील वर्क्स का विस्तार, सरकारी साबुन कारखाने का विस्तार, फलों के रक्षण और डिब्बा में बन्द करने के कारखाने की स्थापना, मैसूर इम्प्लीमेंट फैक्टरी का यन्त्रीकरण, सरकारी रेशम कारखाने का विस्तार, रासायनिक खाद, अलूमीनियम, चीनी, कागज तथा अन्य उत्पादनों के उद्योग प्रारम्भ करना।

*हैदराबाद :—*रासायनिक खाद, बनाने के कारखाने की स्थापना, हैदराबाद और सिकन्दराबाद को गैस पहुँचाने के लिये एक कारखाना तथा २ हजार किलोवाट का बिजली घर बनाना।

*राजस्थान :—*जायर माइन्स कारपोरेशन रासायनिक खाद का कारखाना, खेतड़ी में ताम्बा कारपोरेशन, दगमगेन कारपोरेशन, सीमेंट गंधक कारखाना तथा बीकानेर और जयपुर में शीशे और अलवर तथा बीकानेर में चीनी के बरतनों के कारखाने स्थापित करना।

खाद्य और खेती

तेलहन की पैदावार बढ़ाई जाय

भारत की केन्द्रीय तेलहन समिति की वार्षिक बैठक के उद्घाटन अवसर पर केन्द्रीय कृषि मंत्री डा० पंजाबराव देशमुख के भाषण में बताया गया है कि देश में तेलहन की पैदावार इतनी बढ़ाई जाय कि अपनी आवश्यकता पूर्ति के बाद भी कुछ तेल बाहर भेजा जा सके और विदेशी मुद्रा प्राप्त की जा सके।

पिछले साल मैंने आशा प्रकट की थी कि पहली पंचवर्षीय योजना में तेलहन की पैदावार का जो लक्ष्य ५५ लाख टन रखा गया है, पैदावार उससे अधिक होगी। हर्ष की बात है कि १९५३-५४ में तेलहन की पैदावार बहुत ही अच्छी हुई।

सुधरे ढंग

मैं आप को याद दिला दूं कि धान की खेती में हमने सहज बुद्धि से काम लिया और हमें वह फल मिला जो बड़ी बड़ी गवेषणाओं से भी न मिल सकता था। धान के बारे में हमने जापानी तरीके से जो कुछ किया वह और फसलों के बारे में भी किया जा सकता है। चाहे जापान हो या रूस, उनकी जैसी पैदावार बढ़ाने के लिये कार्यक्रमों और गवेषणा के क्षेत्र में हमें अभी बहुत कुछ करना है।

निर्यात बढ़ाने की आवश्यकता

हमें अपने देश की आवश्यकता के लिये ही और अधिक तेल नहीं चाहिये बल्कि निर्यात के लिये भी। इन सालों में हमारी नीति तेल का निर्यात बढ़ाने की रही है। कई तरह के तेलों का निर्यात शुल्क समाप्त कर दिया गया है और कई का घटा दिया गया है।

बीच वालों द्वारा शोषण किये जाने के बारे में डा० देशमुख ने कहा कि इनका इलाज सहकारी समितियां हैं और इनसे उत्पादक और उपभोक्ता दोनों का लाभ होगा। इस काम के लिये एक अखिल भारतीय सहकारी हाट-व्यवस्था मंडली बनाई जा रही है। मुझे विश्वास है कि यह संस्था तेलहन की बिक्री व्यवस्था की ओर भी ध्यान देगी।

भारत में अन्न की अधिकतम उपज

जून में समाप्त, कृषि वर्ष १९५३-५४ में देश में ६ करोड़ ६० लाख टन अन्न (५ करोड़ ६१ लाख टन मुख्य खाद्यान्न और ९९ लाख टन दालें) पैदा हुआ जो १९५५-५६ में पंचवर्षीय योजना लक्ष्य से ४४ लाख टन अधिक है। इस अवधि में अन्न की खेती का क्षेत्रफल भी हमेशा से अधिक रहा और यह २६ करोड़ १० लाख एकड़ था।

१९५३-५४ में क्षेत्रफल में भी काफी वृद्धि हुई। पंचवर्षीय योजना के आधार वर्ष १९४९-५० में मुख्य अन्नों की खेती का कुल क्षेत्रफल १९ करोड़ ५५ लाख एकड़ था जबकि सभी खाद्यान्नों की खेती का कुल क्षेत्रफल २४ करोड़ ५३ लाख एकड़ था। योजना में १९५५-५६ के अन्त तक मुख्य अन्नों की खेती के क्षेत्रफल में १५ लाख एकड़ और सभी खाद्यान्नों की खेती के क्षेत्रफल में ७ लाख एकड़ वृद्धि की व्यवस्था की गई थी। १९ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि में मुख्य अन्नों की खेती का, और २४ करोड़ ६० लाख एकड़ में सभी खाद्यान्नों की खेती का लक्ष्य १९५२-५३ में ही पार किया जा चुका है जब कि सभी खाद्यान्नों की खेती का कुल क्षेत्रफल २५ करोड़ २० लाख एकड़ था। १९५३-५४ में सभी खाद्यान्नों की खेती के क्षेत्रफल में ९० लाख एकड़ की और वृद्धि हुई। इस तरह अन्न की खेती का कुल क्षेत्रफल २६ करोड़ १० लाख एकड़ से भी अधिक हो गया।

लक्ष्य से अधिक अन्न

यद्यपि खाद्यान्न की खेती का क्षेत्रफल १९५५-५६ के लक्ष्य से १९५२-५३ में ही बढ़ गया था, परन्तु उत्पादन उस वर्ष १९५५-५६ के लक्ष्य से लगभग ३५ लाख टन कम रहा था। १९४९-५० में खाद्यान्नों का उत्पादन ५ करोड़ ४० लाख टन था और योजना में १९५५-५६ तक ७६ लाख टन के लक्ष्य तक पहुँचने की व्यवस्था थी। १९५२-५३ में उत्पादन ५ करोड़ ८१ लाख टन रहा। यदि ७६ लाख टन के लक्ष्य को योजना के ५ वर्षों में बांटा जाये, तो १९५२-५३ में उत्पादन ५ करोड़ ७० लाख टन हो जाना चाहिये। १९५२-५३ के उत्पादन में १९५३-५४ का ७९ लाख टन और जोड़ कर कुल संख्या ६ करोड़ ६० लाख टन हुई। इस तरह १९५३-५४ का उत्पादन न सिर्फ योजना के तीसरे वर्ष के अनुमानित लक्ष्य से ही ७५ लाख टन अधिक है, बल्कि १९५५-५६ के लक्ष्य से भी ४४ लाख टन अधिक है।

उत्पादन वृद्धि का कारण सिर्फ क्षेत्रफल की वृद्धि ही नहीं है, क्योंकि क्षेत्रफल में केवल ६.४ प्र०श० की वृद्धि हुई है जबकि उत्पादन २२.२ प्र०श० बढ़ा है। यह स्पष्ट है कि १९४९-५० की अपेक्षा १९५३-५४ में प्रति एकड़ औसत पैदावार में वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के, मौसम की अनुकूलता आदि कई कारण हैं।

अन्न वार उत्पादन

उत्पादन का अन्न वार विवरण इस प्रकार है :—

(करोड़ टनों में)

खाद्यान्न	पञ्चवर्षीय योजना का आधार वर्ष १९४९-५०	वास्तविक उत्पादन १९५२-५३	वास्तविक उत्पादन १९५३-५४	आयोजित उत्पादन १९५५-५६
चावल	२.३२	२.२५	२.७१	२ ७२
गेहूँ	.६३	.७४	.७८	.८३
अन्य खाद्यान्न ...	१.६५	१.९२	२.१२	१ ७०
कुल मुख्य अन्न	४.६०	४.९१	५.६१	५.२५
चना ...	.३७	.४२	.४६	—
दूसरी दालें ...	.४३	.४८	.५३	—
कुल मुख्य अन्न	.८०	.९०	.९९	.९१
कुल खाद्यान्न	५.४०	५.८१	६.६०	६.१६

१९५३-५४ में चावल का उत्पादन १९५२-५३ की अपेक्षा ४६ लाख टन बढ़ गया। १९५४-५४ का आनुमानिक लक्ष्य २ करोड़ ५६ लाख टन था जबकि उत्पादन २ करोड़ ७१ लाख टन रहा। यह १९५५-५६ के अन्त में २ करोड़ ७२ लाख टन के लक्ष्य के लगभग बराबर है। चावल के उत्पादन में इस वृद्धि का कारण कुछ तो यह है कि १९५३-५४ में ४ लाख एकड़ से अधिक जमीन में जापानी तरीके से धान की खेती की गई और कुछ मौसम की अनुकूलता है। १९५३-५४ में गेहूं का उत्पादन ७८ लाख टन रहा जो इस वर्ष के आनुमानित लक्ष्य से ३ लाख टन अधिक है। १९५३-५४ में ज्वार-बाजरा तथा दूसरे मोटे अनाजों का उत्पादन भी काफी अच्छा रहा। यह १९५३-५४ के १ करोड़ ६८ लाख टन के आनुमानित लक्ष्य से लगभग ४४ लाख टन, १९५५-५६ के १ करोड़ ७० लाख टन के लक्ष्य से ४० लाख टन अधिक है। १९५३-५४ में चने का उत्पादन ४५ लाख टन रहा।

विदेशी आयात में कमी

अधिक उत्पादन के कारण विदेशी आयात में भारी कमी हुई है। १९५१ में भारत ने २ अरब १६ करोड़ ८० लाख खर्च करके विदेशों से ४७ लाख टन अन्न मंगाया गया, परन्तु १९५२ में २ अरब १० करोड़ ६० से ३९ लाख टन अन्न का आयात किया गया। १९५२ में आयात में और भी कमी हुई और ८६ करोड़ ६० के मूल्य से केवल २० लाख टन अन्न का आयात किया गया। १९५३ में कुल जितने अन्न का आयात किया गया, १९५४ में अब तक उसका कुल पांचवां हिस्सा आयात किया गया है।

भारत में योजना अवधि के अन्त में प्रति व्यक्ति अन्न की खपत, प्रति प्रौढ़ प्रतिदिन १५.८१ औंस आंकी गई है। पोषण सलाहकार समिति द्वारा निर्धारित संतुलित खुराक प्रति प्रौढ़ प्रतिदिन १७ औंस है। अनुमान लगाया गया है कि ३१ मार्च १९५४ को भारत की जनसंख्या ३७ करोड़ ४० लाख थी और खाद्यान्न की उपलब्धि प्रति व्यक्ति १८.६५ औंस बैठती है जो संतुलित खुराक से .६५ औंस अधिक है।

हाथ से कुटे चावल

भारत सरकार ने एक चावल कूटने सम्बन्धी समिति नियुक्त कर दी है जो इस बात की जांच करेगी कि देश में हाथ से चावल कूटने को किस प्रकार प्रोत्साहन दिया जाता है और हाथ से कुटे हुए चावल से देश की कितनी आवश्यकता पूरी हो सकती है। यह समिति अगले दो तीन महीनों में विभिन्न राज्यों का दौरा करेगी। इस विषय पर जो व्यक्ति अथवा संस्थाएं अपने सुझाव देना चाहेंगे उनका समिति स्वागत करेगी। ये सुझाव सेक्रेटरी, राइस मिलिंग कमेटी, खाद्य मन्त्रालय, जामनगर हाउस, नई दिल्ली को भेजे जा सकते हैं।

फसल का अनुमान

खरीफ की दालों का प्रथम अनुमान

खाद्य और कृषि मन्त्रालय के अर्थ और अंक विभाग ने अरहर को छोड़ कर १९५४-५५ की खरीफ की दालों का जो प्रथम अखिल भारतीय अनुमान लगाया है उसके अनुसार चालू वर्ष में इन दालों का क्षेत्रफल १,०१,४६,००० एकड़ है, जबकि गत वर्ष का समायोजित क्षेत्र १,०५,०६,००० एकड़ था। इस प्रकार गत वर्ष की अपेक्षा क्षेत्र में ३,६०,००० एकड़ अथवा ३.७ प्रतिशत की कमी हो गई है।

यह कमी अधिकांश में राजस्थान, बम्बई, कच्छ और मध्य भारत में बुआई के समय मौसम खराब रहने के कारण हुई है। दालों के हिसाब से यह कमी बम्बई में 'अन्य दालों' के, हैदराबाद में कुल्थी के, कच्छ में मोठ के, और राजस्थान तथा मध्य भारत में 'पूरी दालों' के क्षेत्र में हुई है। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश, हैदराबाद, मध्य प्रदेश और पंजाब में दालों का क्षेत्र बढ़ जाने से क्षेत्र की कमी कुछ सीमा तक पूरी हो गई। दालों के अनुसार वृद्धि उत्तर प्रदेश और हैदराबाद में उड़द के, हैदराबाद में मूंग के और बम्बई में कुल्थी के क्षेत्र में हुई है।

इस अनुमान में मैसूर की जानकारी पहला बार सम्मिलित की गई है। यह १९५४-५५ में ७,५५,००० एकड़ और १९५३-५४ में ७,८५,००० एकड़ रहा है।

इस अनुमान में साधारणतः अगस्त १९५४ के अन्त की अवधि आ गई है। तब तक फसल की दशा सामान्यतः अच्छी बताई गई थी। केवल बम्बई राज्य के कुछ स्थानों में फसल को गलत समय पर वर्षा होने और कुछ सीमा तक कीड़े मकोड़ों के कारण हानि पहुंची है।

अरहर का पहला अनुमान

खाद्य एवं कृषि मंत्रालय के अर्थ व अंक विभाग ने १९५४-५५ में अरहर के अखिल भारतीय पहले अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में अरहर की खेती का क्षेत्रफल ५५ लाख २६ हजार एकड़ आंका है, जब कि पिछले वर्ष यह ५४ लाख ५६ हजार एकड़ था। इस प्रकार खेती के क्षेत्रफल में ६७ हजार एकड़ (१.२ प्र० श०) की वृद्धि हुई है।

इस अनुमान में अगस्त १९५४ के अन्त तक की अवधि शामिल है। उस समय तक की फसल की स्थिति सतोषजनक बताई जाती थी।

मूंगफली का दूसरा अनुमान

अर्थशास्त्र और अंकसंकलन निर्देशालय ने १९५४-५५ के लिये मूंगफली का जो अखिल भारतीय द्वितीय अनुमान प्रकाशित किया है, उसके अनुसार चालू वर्ष में १,०८,३३,००० एकड़ भूमि में मूंगफली बोई गई, जबकि १९५३-५४ में १,००,५०,००० एकड़ में ही बोई गई थी। इससे प्रकट होता है कि मूंगफली के क्षेत्रफल में ७,८३,०० एकड़ या ७.८ प्र० श० की वृद्धि हुई।

चालू वर्ष में सौराष्ट्र, हैदराबाद, बम्बई, मैसूर, आन्ध्र और मद्रास में मूंगफली अधिक बोई गई और मध्य प्रदेश तथा मध्य भारत में कम।

इस अनुमान में जो जानकारी दी गई है वह सितम्बर १९५४ के अन्त तक की है। तब तक फसल की दशा सामान्यतः अच्छी बताई जाती थी। केवल आन्ध्र, बम्बई, मध्यप्रदेश और मद्रास में वर्षा की कमी और कीड़ों से फसल को नुकसान हुआ था।

इस अनुमान में पहला बार मैसूर के बिजापुर जिले और उत्तर प्रदेश को शामिल किया है।

विविध

सितम्बर १९५४ में थोक मूल्यों का उतार-चढ़ाव

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि (अगस्त १९३९ में समाप्त वर्ष को आधार अर्थात् १०० मानते हुए) थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ०.५ प्र० श० और बढ़ कर ३८४.४ हो गया। पिछले महीने यह अंक ३८२.३ और पिछले साल ४०३.८ अर्थात् ४.८ प्र० श० अधिक था। सितम्बर में 'खाद्य वस्तुओं' का अंक ०.३ प्र० श० बढ़कर ३६३.६, 'औद्योगिक कच्चे माल' का अंक १.२ प्र० श० बढ़कर ४२६.०, 'अर्ध तैयार माल' का अंक ०.४ प्र० श० बढ़कर ३५३.३ और 'तैयार माल' का अंक ०.५ प्र० श० बढ़ कर ३७७.७ हो गया। 'फुटकर वस्तुओं का अंक ०.२ प्र० श० गिरकर ६०७.८ रह गया।

खाद्य वस्तुएं—कलकत्ता और विजयवाड़ा में चावल तथा अमृतसर में गेहूँ का मूल्य बढ़ने के बावजूद भी ज्वार, बाजरा, पटना में चावल और हापुड़ में गेहूँ का मूल्य घटने के कारण 'खाद्यान्न' समूह का अंक १.० प्र० श० गिरकर ४०२ रह गया। अरहर की दाल का मूल्य बढ़ने के कारण 'दाल' समूह का अंक १.४ प्र० श० बढ़कर २६६ हो गया। चने का मूल्य नीचे गिरा। चाय का मूल्य बढ़ने के कारण 'अन्य खाद्य वस्तुओं' का अंक २.२ प्र० श० बढ़कर ३१६ हो गया। चीनी का मूल्य बढ़ा और गुड़ का मूल्य गिरा।

औद्योगिक कच्चा माल—कच्चे जूट और ऊन का मूल्य बढ़ने के कारण 'रेशे' वाली वस्तुओं का अंक २.६ प्र० श० बढ़कर ४९८ हो गया। कपास और कच्चे रेशम का मूल्य नीचे गिरा। मूंगफली, तिल और बिनौलों का मूल्य गिरने के कारण 'तिलहन' का अंक १.८ प्र० श० नीचे गिरकर ४३३ रह गया। अलसी, रेंडी, राई और खोपरा का मूल्य ऊपर चढ़ा। कच्चे मैंगनीज के मूल्य (बाहर भेजे जाने वाले) में कमी होने के कारण 'खनिज' वस्तुओं का अंक २.६ प्र० श० गिरकर ४०५ रह गया। कच्चे चमड़े और लाख का मूल्य बढ़ने के कारण अन्य औद्योगिक कच्चा माल का अंक १.२ प्र० श० बढ़कर ४०६ हो गया।

अर्ध तैयार माल—गाय और भैंसे के चमड़े के मूल्य में कमी होने के कारण 'चमड़े' का अंक ०.३ प्र० श० नीचे गिरकर ३७१ रह गया। बकरी और भेड़ के चमड़े का मूल्य ऊपर गया। 'खनिज तेल' का अंक २२१ ही रहा। तिल के तेल को छोड़ कर बाकी सभी प्रकार के तेलों का मूल्य बढ़ने के कारण 'वनस्पति तेल' का अंक ९.० प्र० श० बढ़कर ४४६ हो गया। 'सूत' का अंक ०.४ प्र० श० घटकर ४५५ रह गया। 'धातुओं' का अंक ०.८ प्र० श० घटकर २६६ हो गया। मूंगफली और तिल की खली के मूल्य चढ़ने के कारण 'तेल की खली' का अंक १.२ प्र० श० बढ़कर ४१६ हो गया। नारियल के रेशे का मूल्य बढ़ने के कारण 'अन्य अर्ध तैयार माल' का अंक १.३ प्र० श० बढ़कर ३०५ हो गया।

तैयार माल—जूट की वस्तुओं का मूल्य बढ़ने के कारण 'कपड़ा उद्योग' का अंक १.० प्र० श० बढ़कर ४२२ हो गया। सूती वस्तुओं का अंक ०.२ प्र० श० घटकर ४१५ और नकली रेशम तथा रेशम की वस्तुओं का अंक १.५ प्र० श० घटकर ४५६ रह गया। 'धातुओं' और 'अन्य तैयार माल' के अंक पिछले महीने के अंकों के ही बराबर क्रमशः ३४० और २८६ रहे।

फुटकर—तमाखू की पत्ती, ईंट और टाइल (खपरैल) का मूल्य गिरने के कारण समूह का अंक ०.२ प्र० श० नीचे गिरकर ६०७.८ रह गया। कलकत्ते में काली मिर्च, लाल मिर्च, हल्दी और जीरा, मंगलौर में काजू, तथा पान के मूल्य बढ़े।

थोक मूल्यों के साप्ताहिक सूचक अंक

९ अक्तूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि (अगस्त १९३९ में समाप्त वर्ष को आधार बराबर १०० मानते हुए) ९ अक्तूबर, १९५४ को समाप्त सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ०.५ प्र० श० और बढ़कर ३८२.४ हो गया। पिछले महीने के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक ०.५ प्र० श० और पिछले साल के इसी सप्ताह की अपेक्षा ३.३ प्र० श० फिर भी कम है।

१६ अक्तूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह

अगस्त १९३९ को समाप्त वर्ष को आधार १०० मानकर थोक मूल्यों का सूचक अंक १६ अक्तूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह में पिछले सप्ताह से ०.३ प्र. श. बढ़कर ३८३.६ हो गया। पिछले सप्ताह यह अंक ३८२.४ था। यह सूचक अंक एक महीने पहले के सूचक अंक के बराबर ही रहा पर पिछले साल के इसी सप्ताह से २.७ प्र० श० कम रहा।

२३ अक्तूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह

अगस्त १९३९ में समाप्त वर्ष को आधार अर्थात् १०० मानते हुए, २३ अक्तूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ०.४ प्र० श० और गिरकर ३८२.० रह गया। पिछले महीने के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक ०.६ प्र० श० और पिछले साल के इसी सप्ताह की अपेक्षा २.८ प्र० श० नीचा है।

३० अक्तूबर को समाप्त सप्ताह

३० अक्तूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह में, थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक (अगस्त १९३९ को समाप्त वर्ष को आधार = १०० मानकर) पिछले सप्ताह के सूचक अंक, ३८२.३ से, ०.८ प्र० श० घटकर ३७९.२ प्र० श० रह गया। पिछले महीने और पिछले साल के इसी सप्ताह के सूचक अंकों से भी यह ०.३ प्र० श० और ३.८ प्र० श० कम रहा। अक्तूबर मास का सूचक अंक ३८१.६ रहा। सितम्बर मास का सूचक अंक ३८४.४ रहा और अक्तूबर १९५३ का ३९३.६ रहा था।

६ नवम्बर १९५४ को समाप्त सप्ताह

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय से प्रकाशित एक विज्ञप्ति मे बताया गया है कि (अगस्त १९३९ मे समाप्त वर्ष आधार १०० मानते हुए) ६ नवम्बर १९५४ को समाप्त सप्ताह मे थोक मूल्यो का सरकारी सूचक अक ०.४ प्र० श० बढ कर ३८०.६ हो गया। पिछले महीने और पिछले साल के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अक क्रमश ०.४ प्र० श० और २.८ प्र० श० कम है।

थोक कीमतों के आंकड़े : जांच समिति की सिफारिशें

कृषि पदार्थों की कीमतो के बारे मे जाच-पडताल करने के लिये जो समिति बनाई गयी थी उसकी मुख्य सिफारिशें इस प्रकार हैं :—थोक कीमतो की सूचना देने के लिए उपयुक्त सस्था की स्थापना, कीमतो के बारे मे जानकारी के सग्रहण पर समुचित देख-रेख की व्यवस्था, और इस समय विभिन्न अभिकरणा द्वारा सगृहीत जानकारी का वैज्ञानिकन।

यह समिति गत वर्ष नवम्बर मे भारत सरकार ने कृषि पदार्थों की कीमतो के बारे मे सूचना देने वाली वर्तमान सस्था की जाच करने के लिये और उसके सुधार के उपाय सुझाने के लिये बनाई गई थी। समिति ने इस बात की जाच की है कि केन्द्र और राज्यो मे इस समय कीमतों के बारे मे जानकारी प्राप्त करने की क्या व्यवस्था है, और जाच पडताल करने के बाद वह इस परिणाम पर पहुँची है कि यद्यपि इस समय थोक कीमतो के बारे मे काफी जानकारी एकत्र की जा रही है, परन्तु उसके एकत्र करने, निरीक्षण करने और काम मे लाने का ढङ्ग ठीक नहीं है। कुछ राज्यों में जानकारी एकत्र करने के कार्य की समुचित देख रेख भी नहीं की जा रही। समिति का कहना है कि न तो केन्द्रों का चुनाव ठीक ढङ्ग से किया जाता है, न 'थोक कीमत' का अर्थ ही समझा जाता है, और न जानकारी का ठीक प्रकाशन ही होता है। इन त्रुटियो के कारण उपलब्ध जानकारी के आधार पर कीमतो के उतार चढाव के बारे मे ठीक ठीक परिणाम नहीं निकाले जा सकते।

कीमतों के बारे में सूचना देने के लिये संस्था

समिति की मुख्य सिफारिश थोक कीमतों की सूचना देने के लिये उपयुक्त अभिकरण स्थापित करने के बारे मे है। जिन राज्यों मे कृषि-पदार्थ-बाजार कानून लागू हो गया है और उस कानून के अनुसार नियमित बाजार स्थापित हो गये हैं, उन राज्यो में बाजार-समितियो के कर्मचारी कीमतो के बारे में सूचना देने के सर्वोत्तम साधन हैं। जिन राज्यो मे ऐसा कानून नहीं बना वहा जल्दी ही बन जाना चाहिये और लागू हो जाना चाहिये, ताकि वहा भी कीमतों की सूचना देने के लिये आवश्यक अभिकरण स्थापित किया जा सके। समिति ने विभिन्न राज्यों में नियन्त्रित बाजारों की भिन्न-भिन्न प्रणालियों का भी अध्ययन किया है और हैदराबाद की प्रणाली को अपनाने की सिफारिश की है।

समिति ने कीमतो की जानकारी को इकट्ठा करने के काम की समुचित देखभाल की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया है और यह बताया है कि किस राज्य में किस अभिकरण से यह काम लेना चाहिये। जहा बाजार-अभिकरणो के द्वारा कीमतों के आकडे इकट्ठे किये जाते हों वहा हाट व्यवस्था विभाग के अफसरों से यह काम लेना चाहिये, अन्यथा पूरा समय देकर काम करने वाले इन्सपेक्टर नियुक्त कर लेने चाहिये।

निरीक्षण की स्थायी व्यवस्था के सम्बन्ध में समिति ने यह सिफारिश की है कि प्रत्येक जिले मे एक अक-सग्रहण अफसर नियुक्त किया जाय जो सब प्रकार के आकडो के सग्रहण-कार्य की देखभाल करे।

कीमतों की जानकारी का वैज्ञानिकन

समिति की एक और मुख्य सिफारिश कीमतों की जानकारी के वैज्ञानिकन के सम्बन्ध मे है। समिति ने यह सुझाया है कि जिला-अधिकारी, राज्य सरकार, केन्द्रीय खाद्य और कृषिमन्त्रालय तथा वाणिज्य एव उद्योग मन्त्रालय मे आर्थिक सलाहकार को कीमतों के बारे मे सूचना देने के लिये बाजार केन्द्रों की चार सूचिया तैयार की जायें। खाद्य और कृषि मन्त्रालय से कहा गया है कि वह अनाज तथा अन्य कृषि पदार्थों की थोक कीमतो के सूचक अक प्रादेशिक आधार पर और भी अधिक केन्द्रों के बारे मे तैयार करने का उपक्रम करे तथा कीमतो के उतार-चढाव के स्पष्ट ज्ञान के लिये बड़े बडे राज्य भी थोक कीमतों के सूचक अक तैयार करने की बात सोचें।

प्रतिवेदन के प्रौद्योगिक पहलू

समिति ने कीमतों सम्बन्धी प्रतिवेदन के प्रौद्योगिक पहलू पर भी विचार किया है और पहली बार समस्त मूल्य अक सग्रहण-अभिकरणों द्वारा अपनाये जाने के लिये एकसा तरीका निश्चित किया है और व्यापारिक पदार्थों की किस्म और श्रेष्ठता के परिमाण की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित कराया है।

यद्यपि समिति की मुख्य सिफारिश थोक कीमतों के ही बारे में है, उसने खुदरा कीमतों के बारे में भी सुझाव दिये हैं।

भारत सरकार ने सामान्यतः समिति की सिफारिशों को मान लिया है और उन्हें राज्य सरकारों तथा अन्य सरकारी विभागों के पास परिपालन के लिये भेज दिया है। आशा की जाती है कि इन सिफारिशों के परिपालन से कीमतों सम्बन्धी आकडे अधिक विश्वसनीय हो जायेंगे और उनका सकलन ठीक ढङ्ग से होने लगेगा।



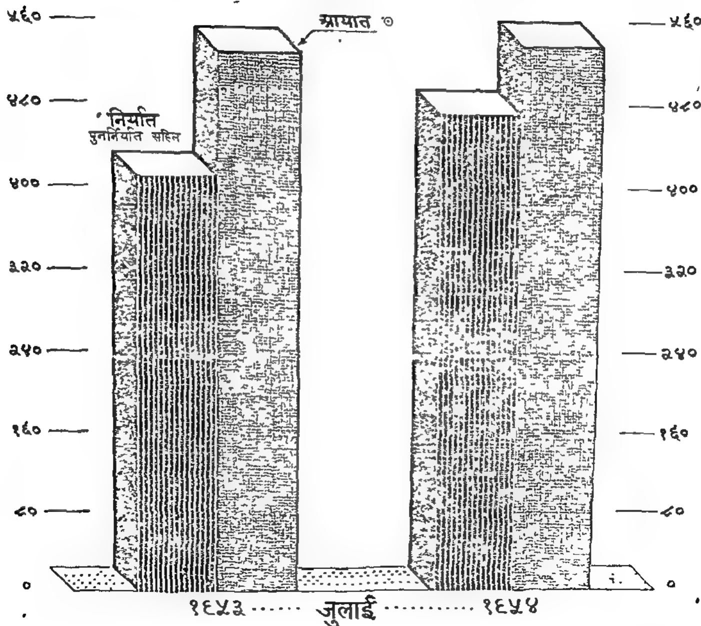
ग्राफ विभाग

१. भारत का विदेशी व्यापार।
२. आयात की चुनी हुई वस्तुएं।
३. निर्यात की चुनी हुई वस्तुए।
४. कच्चे और निर्मित माल के स्टाक।
५. कच्चे और निर्मित माल का उपभोग।

भारत का विदेशी व्यापार

समुद्र, वायु और स्थल द्वारा

दस लाख रुपयों में

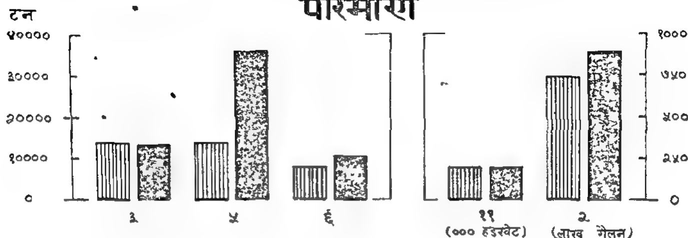


° संक्रमण व्यापार छोडकर परन्तु अनाज, स्टोर्स आदि के लिये किये गये उस आयात को मिला कर जिसका विस्तृत विवरण अभी उपलब्ध नहीं हुआ है।

अ. घोष
म. सं. प्रधान

सेन्ट्रल स्टैटिस्टिकल ऑर्गेनाइज़ेशन
क. ३१८/१०-५४-२

आयात की चुनी हुई वस्तुएं



मूल्य

१९५३ जुलाई १९५४

दस लाख रुपयों में

८० ६० ४० २० ०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

- मशीनें और मिलों का सामान ... १
- खनिज तेल ... २
- कच्ची रूई ... ३
- लोहा और इस्पात ... ४
- लोहा और इस्पात के अतिरिक्त अन्य धातु ... ५
- रासायनिक पदार्थ ... ६
- चमड़ा कमाई और रंगाई की वस्तुएं ... ७
- औषधियां ... ८
- औजार : बिजली के छोड़कर ... ९
- बिजली का सामान ... १०
- कागज ... ११
- गाडियां ... १२

अ घोष
म श प्रधान

सेन्ट्रल स्टैटिस्टिकल ऑर्गेनाइज़ेशन
क्र. ३१९/१०-५४-२

निर्यात की चुनी हुई वस्तुएं

१९५४ जुलाई १९५३

परिमाण

मूल्य
दस लाख रुपयों में

दस लाख गज
करघे का कपड़ा

मिल का कपड़ा

००० हंडरवेट
तेल

चमड़ा और खालें, कच्ची

चमड़ा और खालें, कमायी हुई

लाख

अबरक

काली मिर्च

००० टन
रुई कच्ची

काजू की गिरी

जूट का माल

खनिज मैंगनीज

१५१.३

दस लाख पौंड
तम्बाकू कच्ची

चाय

००० पौंड
ऊनी कालीन और कम्बल

८१६

७५१

१२० १००. ८० ६० ४० २० ०

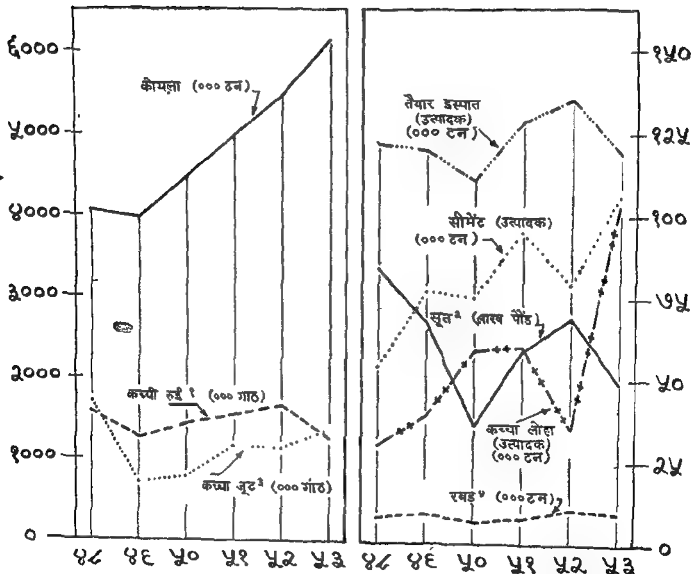
० २० ४० ६० ८० १०० १२०

अ घोष
म श प्रधान

सेन्ट्रल स्टैटिस्टिकल ऑर्गेनाइजेशन, क ३२०/१० ५४-२

कच्चे और निर्मित माल के स्टाक

प्रति वर्ष के अन्त में



(१). ये आंकडे मिलो मे मौजूद स्टाक के है। वार्षीक आंकड़े ३१ अगस्त को समाप्त वर्ष के सम्बन्ध में है। १ गांठ = ३९२ पौंड।

(२). ये आंकडे भारतीय जूट मिल्स एसोसियेशन के सदस्य मिलों के हैं। १ गांठ = ४०० पौंड।

(३). ये आंकडे उन मिलो की खपत के है जो कताई और बुनाई दोनो करते है।

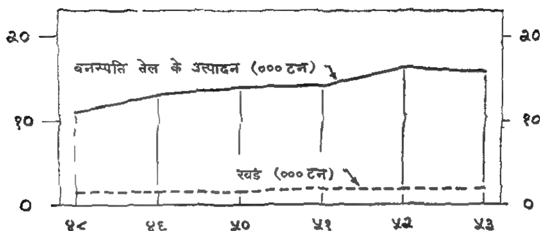
(४) रबड के बगीचो, व्यापारियो और निर्माताओं के पास उपस्थित स्टाक भी इसमें सम्मिलित है।

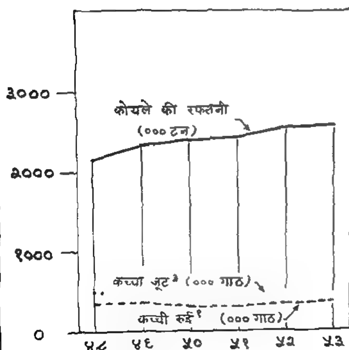
प्र घोष
म शं प्रधान

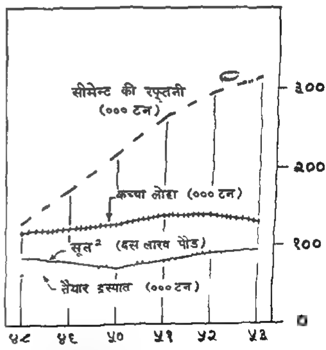
सेन्ट्रल स्टॅटिस्टिकल ऑर्गेनाइझेशन
क ३२२/१०-५४-२

कच्चे और निर्मित माल का उपभोग

मासिक औसत







(१) ये आकडे मिलो मे हुई खपत के है और मासिक औसत ३१ अगस्त को समाप्त वर्ष से सम्बन्ध रखते है। १ गाठ = ३९२ शुद्ध पौंड।
(२) ये आकडे उन मिलो मे होने वाली खपत के है जो कताई और बुनाई दोनो करते है।
(३) भारतीय जूट मिल्स एसोसियेशन के सदस्य मिलो की खपत के आकडे।

सेन्ट्रल स्टैटिस्टिकल ऑर्गेनाइजेशन
क्र ३२१/१० ५४

अ घोष
म श प्रधान

सांख्यकी विभाग

१. औद्योगिक उत्पादन*

(१) बुनाई उद्योग

वर्ष	१ सूत (लाख पौंड)	२ सूती कपड़ा (लाख गज)	३ [क] जूट का माल (००० टन)	४ [ख] ऊनी माल (००० पौंड)	५ पट्टे (टन)
१९४६	१३,६६८	३६,०८४	१,०८८ ४	२७,०००	
१९४७	१२,६६०	३७,६२०	१,०५१ २	२४,०००	६१५ ६
१९४८	१४,४७२	४३,१८८	१,०८० ४	२०,००४	६६० ०
१९४९	१३,५६६	३९,०४८	९४५ ६	२१,०००	४०२ ०
१९५०	११,७४८	३६,६६८	८३९ २	१८,०००	५१० ०
१९५१	१३,०४४	४०,७६४	८७४ ८	१७,७००	६७९ ६
१९५२	१४,४६६	४५,९८४	९५१ ६	१६,५८४	७०६ २
१९५३	१५,०६०	४८,९००	८६८ ८	१७,०२८	७६५ ६
१९५४ जनवरी	१,३१७	४,१७	६७ ३	१,२२०	६८ ■
फरवरी	१,२२१	३,९७६	६८ ३	१,३७४	५९ ०
मार्च	१,२५३	४,०४८	७९ ६	१,३१८	५३ ०
अप्रैल	१,२६०	४,२६०	७५ ०	१,२३५	६४ ०
मई	१,२६०	४,२७०	७१ ३	१ ४३७	७० ०
जून	१,२८०	४,३२०	७४ ६	१,६०२	६० ०
जुलाई	१,३६०	४,४१०	८० ७	१,७८२	७७ ०
अगस्त	१,३२०	४,१६०	७८ २	१ ७४५	अप्राप्त
सितम्बर					
अक्तूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९४९ से ये आंकड़े इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन की सदस्यता वाले मिलों तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में हैं। [ख] इसमें जम्मू और कश्मीर के आंकड़े भी सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	६ कच्चा लोहा (००० टन)	७ सीधी ढलाई (००० टन)	८ लोह मिश्रित धातु (००० टन)	९ इस्पात के पिण्ड और ढलाई (००० टन)	१० अधूरा तैयार इस्पात (००० टन)	११ तैयार इस्पात (००० टन)	१२ इस्पात की नलियाँ (टन)
१९४६	१,३४६ ४	७५ ६	१५ ६	१,२९३ ६	१,०३० ८	८९० ४	
१९४७	१,३२० ०	६७ २	१८ ०	१,२५६ ४	१,०२७ २	८९२ ८	
१९४८	१,४०५ २	५१ ६	७ २	१,२५६ ४	१,०११ ६	८५६ ८	
१९४९	१,५२७ ६	६३ ६	११ २	१,३५२ ४	१,१०५ २	९३० ०	४७० ४
१९५०	१,५९२ ४	६८ ४	१८ ०	१,४३७ ६	१,२४२ ४	१,००४ ४	४२७ २
१९५१	१,७०८ ८	९२ ४	३४ ०	१,५०० ०	१,२४९ २	१,०७६ ४	४५६ ०
१९५२	१,६८४ ८	१२६ ६	४० ८	१,५७८ ०	१,३०८ ०	१,१०२ ८	२१४ ८
१९५३	१,६५४ ८	११५ २	७ २	१,५०७ २	१,२३० ■	१,०१७ ६	अप्राप्त
१९५४ जनवरी	१६३ २	७ ३	० १	१५४ २	१३१ ४	१०६ ७	शून्य
फरवरी	१४४ ०	१२ ३	० ४	१३२ ९	११४ २	९९ १	१२ १
मार्च	१५६ १	७ ७	० ३	१४७ ५	१२५ ९	११४ ५	अप्राप्त
अप्रैल	१३८ ६	१० ०	० ४	१२८ ७	१०९ ७	९९ १	अप्राप्त
मई	१४३ ८	११ ८	० ४	१२७ ७	१०६ ४	९८ २	अप्राप्त
जून	१३८ ४	१३ ३	४ ८	१३१ ०	११५ ३	९६ ९	अप्राप्त
जुलाई	१४६ ०	१२ ३	५ ८	१४१ ४	१२२ ५	१०२ ९	अप्राप्त
अगस्त	१५१ ५	१२ ३	६ ३	१४२ २	१२३ ५	९७ ०	अप्राप्त
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

*नवीन रिपोर्टों के अनुसार इन अंकों में संशोधन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष	१३ लकड़ी के पेच (००० ग्रोस)	१४ मशीनी पेच (००० ग्रोस)	१५ रेजर ब्लेड (लाख)	१६ हरीकेन लालटेनें (०००)	१७ गैस के लैम्प (०००)	१८ तामचीनी का सामान (००० सख्या)	१९ बढ़ाई हुई धातु (टन)	२० डुप्लिकेटिंग (सख्या)
१९४६				४७० ४	२५ ६			
१९४७	७४ ४		•	९०९ ६	२६ २	८,५३२ ०	९७२	१९८
१९४८	१६८ ०	३१ २		९७९ २	३८ ४	६,७३३ २	१,४६४	३४८
१९४९	३४४ ४	८७ ६	७५ ६	१,७२८ ०	३२ ४	९,५९० ४	३००	५४१
१९५०	७०३ २	१५९ ६	२०६ ८	२,८०६ ८	३८ ४	५,४४५ ६	२,१४८	७५१
१९५१	७९६ ८	१२७ २	२२९ २	३,९७६ ८	६२ ४	८,१३० ०	१,८९९	१,५६०
१९५२	१,३२९ ६	१४७ ६	१०८ ०	३,५२३ २	३४ ८	७,९९० ८	२,०१९	१,०२०
१९५३	२,५७१ ६	१६- ०	२३१ ६	४,३१२ ८	३० ०	९,४८३ ६	१,६५९	९२४
१९५४ जनवरी	२६२ १	१८ ३	५२ ८	४०२ ७	२ २	१,२८९ ५	१८२	१०२
फरवरी	३१० ९	१६ ४	५७ २	३५९ ४	२ ६	१,२७३ ९	२२५	६५
मार्च	४४६ ३	२२ ०	६४ ६	४०८ ५	२ ४	१,२५९ २	२२४	८०
अप्रैल	४१२ ०	२० ३	८१ ५	४२३ ५	३ ६	१,२६६ २	१७०	१२०
मई	४२६ ९	२० ६	९२ ३	४१७ ७	३ ४	१,२६७ ६	२१६	६४
जून	५१२ ०	१८ ४	६६ ८	४३१ १	५ २	१,२६८ ३	२२५	२८
जुलाई	४२२ ०	१७ ८	१११ ७	४६१ २	३ ७	१,२७३.२	२३७	७४
अगस्त	४५७ ०	अप्राप्त	अप्राप्त	४६० ६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[४] मशीनें (बिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष	२१ डीज़ल इंजिन (सख्या)	२२ शक्ति चलित पम्प (०००)	२३ सिलाई की मशीनें (सख्या)	२४ मशीनों के औजार (मूल्य ००० रुपये)	२५ ट्विस्ट ड्रिल्स (०००)	२६ केलिको करघे (सख्या)	२७ रिंग स्पिनिंग फ्रेम (पूर्ण) (सख्या)	२८ पिसाई के चक्के (००० पौंड)	२९ धुनाई की मशीनें घूमने वाली चपटी (सख्या)
१९४६	४६८		६,१२० [ग]	६,१२४ ८	६३ ६				
१९४७	६८५	६ ०	५,८५६	४,५८७ ६	२३५ २				
*९४८	१,०२०	८ ४	२०,०१६	५,४७३ २	२७६ ०				
१९४९	२,०७६	१४ ४	२५,०३२	४ ७२६ २	४०० ८			७०६ ८	
१९५०	४,५९६	३० ०	३०,८८८	२,६६० ४	४४७ २			५०० ४	
१९५१	७,२४८	४- ०	४४,४६०	४,७३० ४	१,०१७ ६	२,२८०	२७६	७०८ ०	
१९५२	४,२४८	३२ ४	५०,०४०	४,४३७ ६	७७५ २	१,३६८	२८८	८६५ २	१०८
१९५३	३,७२०	२५ २	६२,४२४	४,४०७ ६	३३४ ८	१,८१२	२०४	८०७ ६	१६२
१९५४ जनवरी	६६५	२ ५	६ ७६५	३०२ ३	३६ ५	२४	१४	१०० ३	३०
फरवरी	५४५	२ ४	७,११२	३२५ ७	३६.८	२८	२०	१०८ १	२०
मार्च	७१६	२ ३	७,०६३	४४० १	४७ ४	४०	१२	९३ ४	३०
अप्रैल	६८०	२ ३	७,२४६	४३५ ७	४० १	२४२	१४	९१ ८	३०
मई	६६२	२ ३	६,८२५	४७८ १	४६ १	१५८	२४	७६ ४	३५
जून	७७३	२ ६	६,४७०	४३१ ०	२७ ३	१९९	२४	१०४	४०
जुलाई	७०४	२ ७	७,१०५	५५१ १	३९ ९	१८७	२३	८३ २	४०
अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	६,४१८	अप्राप्त	५१ २	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	४०
सितम्बर									
अक्तूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

[ग] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आँकड़े।

१. औद्योगिक उत्पादन

[५] अलौह धातुएं

वर्ष	३० अलूमीनियम (टन)	३१ सुरमा (टन)	३२ ताँबा (टन)	३३ सीसा (टन)	३४ लोहे से असम्बद्ध धातुओं के नल (टन)	३५ सोना (औंस) [घ]
१९४६	३,२३६ ४	१३२ ०	६,३१० ८	शून्य		१,३१,७७२
१९४७	२,२१४ ८	२३५ २	५,६३१ ६	१८६ ६		१,७१,७८०
१९४८	३,३६१ २	३३० ०	५,८६४ ४	६२५ २	३२४ ०	१,८०,८५१
१९४९	३,४८६ ६	९९ ६	६ ३९० ०	५६४ ०	३६० ०	१,६४,२४८
१९५०	३,५९६ ४	३७५ ६	६,६१४ ४	६२७ ६	३३१ २	१,९६,८४८
१९५१	३,८४८ ४	३२७ ६	७,०८३ ६	८५९ २	२४८ ४	२,२६,२३३
१९५२	३,५९६ ४	१८१ २	६,०७९ २	१,१३१ ६	३७० ८	२,५२,६००
१९५३	३,७५८ ४	१३० ८	४,६२० ०	१,६१४ ४	३५७ ६	२,३३,०२०
१९५४ जनवरी	३०२ ३	६ २	३१० ०	१८०	२० ५	१९,२८९
फरवरी	२९५ २	४४ ०	६२० ०	११५	१९ ८	१९,८३०
मार्च	३८७ ५	३७ ६	६६५ ०	२००	१६ ६	२०,६०१
अप्रैल	३७८ २	१२ ०	६३० ०	१६७	० ९	२०,८१५
मई	३१५ २	४० ०	६१५ ०	१३०	२ ३	१८,६८५
जून	२३४ ६	५६ ०	५६० ०	८५	३ ४	२१,२०१
जुलाई	४३८ ६	५ ८	६२३ ०	१५०	१ ७	२१,१३७
अगस्त	५१४ ६	३५ ०	६०६ ०	१३१	३ १	२१,८८६
सितम्बर						
अक्तूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैदराबाद में हुए सोने का उत्पादन भी इन आँकड़ों में सम्मिलित है।

[६] बिजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई बिजली [क] (लाख किलोवाट प्रति घण्टा)	३७ बिजली ले जाने की नलिया (००० फुट)	३८ सूखे सेल (लाख)	३९ संग्रह की बैटरी (०००)	४० बिजली के मोटर (००० हार्स पावर)	४१ बिजली के ट्रान्स फार्मर (००० के.वी ए)	४२ बिजली की बत्तिया (०००)
१९४६	३८ ९१०		८७९ ६	२७ ६	४५ ६	३८ ४	८,११२
१९४७	४०,७३०		८७९ ६	९९ ६	३८ ४	३२ ४	७,६२०
१९४८	४५,७५०	१,७०७ ६	१,२३८ ४	११० ४	६० ०	८१ ६	९,२५२
१९४९	४९,०९०	२,६४८ ४	१,५२१ ६	१०६ ८	६८ ४	१०९ २	१३,६४४
१९५०	५०,८८०	२,६६६ ४	१,३८१ २	१८७ २	८१ ६	१७१ ६	१४,३०४
१९५१	५८,५१७	३,६६९ ६	१,४३४ ०	२१२ ४	१४१ ६	१९४ ४	१५,५१६
१९५२	६१,२४८	३,६६४ ८	१,३०२ ०	१५८ ४	१५७ २	२१४ ८	२०,८८०
१९५३	६६,२७६	३,७१६ ४	१,४८४ ४	१७६ ४	१६१ ०	३०८ ४	१९,७७६
१९५४ जनवरी	५,८०७	४४२ ६	१२६ ४	१२ ७	१२ ६	३० ०	१,७६४
फरवरी	५,४२७	५१५,६	१२१ १	८ ९	१४ ३	२४ ७	१,५८४
मार्च	५,८५७	६०३ ६	११७ २	१२ ४	१५ ०	३४ ०	१,९२८
अप्रैल	६,०४९	५१८ [illegible]	१५५ ७	१७ ०	१४ ३	२६ ६	१,८२२
मई	६,३१९	५४९ ३	१६८ ७	१७ ३	१५ ३	३२ ४	१,८३८
जून	६,२५२	५५४ ८	१६६ ९	१६ ६	१५ २	२९ ४	१,९७८
जुलाई	६,३१३	४७९ ४	१६१ ८	१८ ०	१७ ६	३९ ४	२०,१७६
अगस्त	अप्राप्त	४६४ ९	अप्राप्त	१७ ०	अप्राप्त	अप्राप्त	२,०४१
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[क] जम्मू और काश्मीर के आंकडे भी सम्मिलित हैं। अन्य दो स्टेशनों के साथ सार्वजनिक उपयोग के कार्यों के सब स्टेशनभी इसमे आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन

(६) बिजली के उद्योग (गत पृष्ठ से आगे)

वर्ष	४३ बिजली के पंखे (०००)	४४ रेडियो रिसीवर (संख्या)	४५ तार: तांबे के खुले हुए (टन)	लपेटने के (टन)	रबड चढ़े हुए (लाख गज)	४६ घर में लगाने वाले मीटर (संख्या)	४७ घरेलू रेफ्रीजरेटर (संख्या)
१९४६	११०.४ [च]		७,८६०	२१६	२२५.६		
१९४७	१४६.६	३,०३६					
१९४८	१८०.०	२४,६६६	५,८८०	३३६	२७६.६		
१९४९	१७८.८	२६,८३६	५,७२४	३३६	२६३.२		
१९५०	१९३.२	४४,३४०	८,६७६	२५२	३२६.६		
१९५१	२१२.४	[illegible]	३,०००	३००	४११.६		
१९५२	१९५.६	७१,४[illegible]६	५,६२[illegible]	३६६	३२[illegible].८	३४,३५६	६००
१९५३	२०७.६	५६,२६८	७,३६८	२२[illegible]	४८४.८	८०,६७६	१,१४०
१९५४ जनवरी	१९.७	४,५६२	४०६	८	३३.६	६,४८२	१०२
फरवरी	१६.६	५,१७६	३३५	६	३८.०	१२,५८५	३०
मार्च	२०.०	६,३०१	३३२	१६	३५.८	१३,१६२	१५०
अप्रैल	२१.५	५,०२८	२३७	१५	४०.२	११,६२०	१५०
मई	२०.७	४,४२६	१४	२२	४३.६	१२,४५५	१००
जून	१९.८	५,२६३	३४२	२६	५५.४	१३,२६४	१७५
जुलाई	२१.७	५,५६२	५०२	३२	६०.६	११,७७१	११८
अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१०५
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[च] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आंकड़े।

(७) रासायनिक पदार्थ

वर्ष	४८ गंधक का तेजाब (टन)	४९ कास्टिक सोडा (टन)	५० सोडा ऐश (टन)	५१ तरल क्लोरीन (टन)	५२ ब्लीचिंग पाउडर (टन)	५३ बाइक्रोमेट (टन)	५४ सुपर-फास्फेट (टन)	५५ अमोनियम (टन)	५६ तूतिया (टन)
१९४६	६०,०००	२,६०४	१२,०००	१,५००	२,००४	२,०७६	४,५००	२२,४६४	
१९४७	६०,०००	३,३१२	१३,६२०	१,७०४	२,५५६	२,३०४	५,००४	२१,२७३	
१९४८	[illegible]०,००४	४,३[illegible]०	२६,१४८	१,८००	२,८३२	२,६४०	२१,३६०	३५,२०८	४३२
१९४९	६६,४५६	६,३००	१७,६१६	२,६५२	२,४७२	१,७१६	४६,७२[illegible]	४४,६३६	४५६
१९५०	१,०२,४८०	१०,[illegible]४	४३,७[illegible]	३,६७	३,३१२	२,६८०	५२,४२८	४७,३०४	४३३
१९५१	१,०६,६३७	१४,७२४	४७,५३२	५,२६८	३,५८८	३,२७[illegible]	६१,०२०	५२,६०४	५०४
१९५२	९९,०[illegible]४	१०,०६४	४४,३२[illegible]	६,२४०	७१२	१,४६४	४६,६५६	२,२०,३०८	३३६
१९५३	८०,९२१	२२,६०८	५६,८६८	८,१३६	१,६४४	२,५०८	४८,३००	३,१[illegible],६२०	५१६
१९५४ जनवरी	११,१३७	२,३३७	४,[illegible]५६	६७३	२६२	२३०	७,६०८	२४,५३५	५०
फरवरी	१२,०००	२,१६६	४,३६६	५४६	२६४	२०७	८,३००	२३,७३५	४२
मार्च	११,५१५	२,३४८	४,०३०	८५१	२४३	२७२	७,८२५	२५,१६५	३०
अप्रैल	११,४८०	२,३२७	४,३६०	७५६	२४७	३०६	८,५३०	२४,१६६	४४
मई	११,६५०	२,३४७	४,२६२	७६१	१६५	३०७	६,१५०	२४,४६०	७१
जून	११,४२०	२,३१४	२,६७८	७[illegible]७	२७१	२६५	१०,७००	२७,०५७	७६
जुलाई	११,६८०	२,३३७	३,१३२	७६२	२६४	२२०	१०,६५०	२६,६७५	६५
अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२८,०६०	८६
सितम्बर									
अक्तूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

१. औद्योगिक उत्पादन

(८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	५७ रंगलेप और वारनिशें (टन)	५८ दियासलाई [छ] (००० पेटियां) [ज]	५९ साबुन [झ] (टन)	६० सरेस (हंडरवेट)	६१ गैसें धातुओं को जोड़ने की — आक्सीजन (लाख घन फुट)	६१ गैसें धातुओं को जोड़ने की — एसिटलीन (लाख घन फुट)	६२ ग्लिसरीन (टन)	६३ बेकलाइट या साँचे बनाने का चूरा (००० पौंड)
१९४६	३८,४००	४११ ६					१,७८८	
१९४७	३८,६०४	४६५ ६					१,३३२	
१९४८	३५,७२४	५३२ ८	७५,६००	१२,२६४			२,१४८	
१९४९	३०,९२४	५२६ ८	७१,००४	१२,१४४			१,७४०	
१९५०	२७,९४८	५२३ २	७२,६६६	१३,५००			२,००४	
१९५१	३३,४८०	५७७ २	८३,४३६	१४ ११२	१,४१२ ०	२९८ ८	२,४२४	४५९ ६
१९५२	३२,१७२	६०८ ४	८६,३७६	१४ ६४०	१,६२६ ६	३११ ६	२,२२०	६६७ २
१९५३	३२,०५२	५९० ४	८३,२००	१७,२००	१ ८८१ ६	३४६ ८	२,५०८	८३७ ६
१९५४ जनवरी	३,१८१	४५ ६	५,१२२	१,६१२	१७० ०	३३ ०	५४	१४ ०
फरवरी	२,४४७	४१ २	५,२४०	१,६७३	१६८ ८	३२ ०	२१८	२३ ६
मार्च	३,११५	४५ ७	६,२७१	१,८९४	१८९ ८	३४ ०	२०२	७३ ९
अप्रैल	२,६९९	३८ ७	५,६८०	१,३१[illegible]	१९८ ०	३४ ०	[illegible]	७४ ४
मई	२,६६७	४३ ९	७,०३६	१,३[illegible] ०	१९१ ०	३५ ०	[illegible]८२	८२ ४
जून	२ ९७८	३४ १	८,५००	१,३०७	१९२ ०	३३ ०	१४८	६३ ४
जुलाई	२,४५७	४६ ३	७,३००	१,४१३	१९९ ०	३६ [illegible]	२२६	१०८ ४
अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१,४५३	१५७ ३	३५ ०	अप्राप्त	१६० ७
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[छ] इसमें जम्मू और काश्मीर के आंकड़े भी शामिल हैं।

[झ] ये आंकड़े संगठित कारखानों के उत्पादन के हैं।

[ज] ६० तीलियों वाली डिबियों के ५० ग्रोस।

(८) रसायनिक उद्योग

वर्ष	६४ लिवर का सत्व — इंजेक्शन (००० सी सी)	६४ लिवर का सत्व — खाने वाला (००० पौंड)	६५ रेयन (टन)	६६ अलकोहल (००० गैलनों में खुला हुआ) — इंजनों में जलने वाला	६६ अलकोहल — शुद्ध स्पिरिट	६६ अलकोहल — मिश्रित स्पिरिट	६७ अलसी का तेल, पोता हुआ टाट (लिनोलियम) (००० ली० गज)	६८ प्लास्टिक के साँचे (००० ग्रोस)
१९४६				२,३६७ ६	२,१४६ ८	१,०२३ ६		
१९४७				२,७३६ ०	१,७७४ ८	१,०८४ ८	...	
१९४८				३,७७६ ४	२,३८९ २	१,४०१ ६		
१९४९	७,३१८ ८	१८१ २		४,२३० ०	१,९५० ०	१,०९५ ६		
१९५०	११,१४५ ६	३०१ २		४,४९७ ६	३,४३१ ६	१,४७७ २		
१९५१	१०,६८२ ४	३१९ २	२,०४०	५,८०९ २	५,०१९ ६	१,९६६ ८		१ ४४६ ०
१९५२	१०,३७२ ८	३१० ८	३,५८८	७,७४२ ४	४ ६६८ ०	२,१७[illegible] ०	१५९ ६	१,५५४ ४
१९५३	१०,१३८ ८	२०४ ४	४,३१६	८,२२० ४	४,३७६ ४	२,४९३ ६	१६३ २	१,३५७ ६
१९५४ जनवरी	१,४९६ ०	२५ २	३८८	९३८ ६	४४१ १	३२१ ४	२० ७	११७ ५
फरवरी	९१३ ४	२३ १	३५२	९२९ ४	४७[illegible] ६	२२७ ३	२८ ५	१०४ ९
मार्च	१,२५४ ०	२१ ९	३९९	९७९ ३	४०५ १	२७२ ८	३६ ५	१०४ ६
अप्रैल	१,०५३ ७	२२ १	३९५	८८८ ४	३७६ ०	२७६ १	२६ ६	११४ ८
मई	१,१२३ २	२२ १	४०४	७०० ०	३३० ४	२४० ५	२७ १	११४ ३
जून	९२१ ४	१८ ५	३८४	६३७ २	३८५ ८	२१० ४	१८ ७	अप्राप्त
जुलाई	१,३४३ ९	४८ ३	३७३	४४९ ५	३६३ १	२४३ [illegible]	३१ ४	अप्राप्त
अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	४१७	५५४ ०	अप्राप्त	अप्राप्त	४० २	अप्राप्त
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(९) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष		६९ सीमेंट (००० टन)	७० सीमेंट की चादरें, एसबेसटस (००० टन)	७१ सफेद माल (टन)	७२ स्वच्छता के लिये बनाया गया माल (टन)	७३ पत्थर का सामान (००० टन)	७४ चीनी की पालिश वाले नल (००० दर्जन)	७५ कच्ची आंच सहन करने वाली मिट्टी की ईंटें (००० टन)	७६ घिसने वाला सामान (००० रीम)	७७ बिजली-अवरोधक (इन्सूलेटर) एच.टी. (०००)	७७ बिजली-अवरोधक (इन्सूलेटर) एल.टी. (०००)
१९४६		१,५४२ ०	२५ २	—				१५७ २	६१ २		
१९४७		१,४४७ १	.					१७५ २	४० ८	७४ ४	१,४२० ४
१९४८		१,५५२ ८	७६ ८	५,३७६	२,४६४	२५ ६	.	१८६ ६	४५ ६	६० ०	२,५०३ २
१९४९		२,१०२ ४	८६ ४	३,७३२	१,६०८	२२ ८		२०८ ८	२५ २	१३६ ८	२,३३९.१
१९५०		२,६१२ ४	८६ ४	६,०६०	१,७८८	२६ ४	९२ ४	२३६ ४	३२ २	१७४ ०	१,२७९.१
१९५१		३,१९५ ६	८२ ८	६,१६२	६४८	३० ०	३१० ८	२३७ ६	३७ २	२४४ ८	१,४३२ ८
१९५२		३,५३७ ६	८७ ६	६,०६०	४३२	३३ ६	३४५ ६	२४३ ६	५५ २	३३५ २	३,०७८ ०
१९५३		३,७८० ०	७५.६	१०,४४०	६८८	३३ ६	३७४ ४	२२८ ०	५७ ६	४६३ २	२,४६० ०
१९५४	जनवरी	३६२ ८	७ ७	९८४	५६	२ ८	२२ ६	१८ ७	४ ६	३९ ८	४४८ ६
	फरवरी	३५१ ६	७ ५	६०६	५०	३ ५	३७ ५	१७ ८	५ ३	४२ ४	२४७ ६
	मार्च	३८६.०	७ ०	८८०	१०५	३ २	४५ ६	२० ७	५ ५	४८ १	१९४ ०
	अप्रैल	३५६.८	६ ३	९३३	१०६	३ ५	२९ ३	२० ५	७ ०	४८ ८	२६३ १
	मई	३७३ ४	६ ७	९१६	११६	३ ४	३- ५	१७ ७	५ २	५२ ४	२६३ १
	जून	३५२ ५	५ ६	८१६	१११	३ २	३३ ३	१८ ०	६ १	४८ २	२४९.०
	जुलाई	३५५ १	६ ५	८५४	१०३	३ २	३२ ६	१९ ३	६ ०	४२ १	२४८ ३
	अगस्त	३४२ ५	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१८ ८	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	सितम्बर										
	अक्तूबर										
	नवम्बर										
	दिसम्बर										

(१०) काँच और काँच का सामान-

वर्ष		७८ काच की चादरें (००० वर्ग फुट)	७९ प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	८० बिजली की बत्तियों के खोल (लाख बत्तियां)	८१ काच का अन्य सामान (टन)
१९४६		८,७३६.०			
१९४७		५,७१६.२	—		.
१९४८		६,२५५.६	१,६२०	१११ ६	३३,५१६
१९४९		३,४५१ २	१,६८०	९१ २	६४ ४२८
१९५०		६,५७० ०	२,२६०	१२९ ६	७२,२१६
१९५१		११,०८९.२	१,६८०	१४४ ०	९०,३२४
१९५२		६,०४३ २	१,४७६	१६६ ८	८५,२६८
१९५३		२२,७८६ ८	१,३२०	२६९.२	७२,४४४
१९५४	जनवरी	२,२५३ ४	१७०	१७ ३	७,२१६
	फरवरी	२,२४- ४	२१९	२३ ४	५,२६०
	मार्च	२,४०६ ८	२१६	१४ ४	७,२७३
	अप्रैल	२,२६७ २	२१६	१३ ०	७,२५२
	मई	४९० ८	२१४	१६ १	७,२४२
	जून	५९९.१	२११	१५ ६	७,२०३
	जुलाई	७९३ ४	२०७	१६ ७	६,११३
	अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	सितम्बर				
	अक्तूबर				
	नवम्बर				
	दिसम्बर				

१. औद्योगिक उत्पादन

(११) रबड़ उद्योग

वर्ष	८२ रबड़ के जूते (लाख जोड़े)	८३ रबड़ चटा सामान, खिलौने गुब्बारे आदि (लाख दर्जन)	८४ टायर: मोटर गाड़िया (०००)	८४ टायर: साइकिलें (०००)	८४ टायर: ट्रैक्टर (संख्या)	८४ टायर: वायुयान (संख्या)	८४ टायर: तार (००० फुट)	८५ ट्यूब: मोटर गाड़िया (०००)	८५ ट्यूब: साइकिलें (०००)	८५ ट्यूब: ट्रैक्टर (संख्या)	८५ ट्यूब: वायुयान (संख्या)
१९४६	१४४ ०		७९० ०	२,९४८ ६				७००	३,७८४ ४		
१९४७			८१० ०	३,२२ ०				८१० ८	४,३२२ ४		
१९४८	१८७ २	२११ ४	७७० ४	३ ३९९ ६				७५० ०	३,७८९ ६		
१९४९	१७७ ६	६८ ४	६८६ ४	४ ६११ ६				७०२ ०	३,१२८ ४		
१९५०	१६५ ६	१०५ ६	६३८ ४	३,३२५ २				६९८ ४	४ २०७ २		
१९५१	२३० ४	११० ४	८७० ०	३,९४० ८		२,४७२	३७३ २	८२० ८	४,८९७ २		९९६
१९५२	२२८ ०	१३८ ०	७२१ २	४ १८९ २	३ ८५२	६८४	३८५ २	६६१ २	४,१६६ ४	५ ६८४	९८४
१९५३	२४० ०	१२४ ८	७६८ ०	४,६४५ २	९ ६१२	१,२६६	४४२ ८	६५८ ८	४,६०० ८	८,१३६	५२८
१९५४ जनवरी	२४ ३	९ ५	७० ५	४३१ ३	८२८	२९९	२३ ४	५३ ९	४५५ ९	३९१	१०६
फरवरी	२५ ४	१० ४	७२ ५	४३९ ०	१,०६३	४०१	४३ ७	६२ १	४८५ ६	७ ६	१३३
मार्च	२२ १	१० ४	७३ ६	३९७ ५	१,४२६	३८७	३७ ८	६७ ९	४२८ ७	९३७	१४२
अप्रैल	२६ ३	१३ १	७४ २	४६४ ३	१ ३११	३७	३३ १	७१ ४	४९९ ९	७६७	५६
मई	२५ ५	१२ ९	७४ ०	४४७ ७	२,२७४	३३२	१७८	७० ९	४८३ ६	१,०७७	१०१
जून	२७ ७	१७ ७	७३ ०	४०९ १	१ ५८४	४२१	२५ ७	६५ ६	५०२ ७	८८८	१११
जुलाई	२५ ४	१७ ९	६८ १	४४६ ३	१६,१३	२७९	१३ ६	६४	४५१ ९	२ ४८६	२१९
अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	७१ १	४८८ ७	१,४५१	१८०	अप्राप्त	६८ ३	५३३ २	१ ५१४	१९२
सितम्बर											
अक्तूबर											
नवम्बर											
दिसम्बर											

रबड़ उद्योग (शेषांश)

वर्ष	८६ रबड़ के नल: रेडिएटर (०००)	८६ रबड़ के नल: वेकुअम ब्रेक (०००)	८६ रबड़ के नल: अन्य प्रकार के (००० फुट)	८७ पत्ता के पट्टे (०००)	८८ रेलों का रबड़ का सामान (०००)	८९ इबोनाइट (००० पौंड)	९० पानी रोकने वाले वस्त्र (००० गज)	९१ रबड़ के स्पंज (००० पौंड)
१९४६								
१९४७								
१९४८								
१९४९	१०० ८	३२७ ६	१,८८५ २	४८ ०	१,४१० ०			
१९५०	२०६ ४	३३३ ६	२,८२० ०	१६० ८	९६१ २			
१९५१	२३० ८	४७२ ८	३,४७४ ०	२९८ ८	७४८ ८	१९९ २	१,५७६ ८	४७१ ६
१९५२	२५४ ८	४४४ ०	३,८४९ ६	५५८ ०	१,२१६ ८	१२६ ०	१,२९४ ८	६३९ ६
१९५३	१४० ४	४७२ ८	४,४२२ ०	४३२ ०	१,२३३ ६	८८ ८	२,०५४ ४	४९५ ६
१९५४ जनवरी	११ ४	२७ २	३५१ १	५३ ४	१२८ ०	८ ७	१८० ३	५१ ७
फरवरी	८ ६	२७ ०	३४७ ०	४८ ९	११४ ६	९ ७	१९२ ६	७४ ०
मार्च	१० ७	३५ ४	३५० १	४३ २	१०४ ७	७ ३	१७२ ६	६८ १
अप्रैल	१२ ६	५० १	३६३ ०	४० ३	५० ७	७ २	२०७ ६	७३ २
मई	१२ २	७० २	४०४ ७	३८८	९२ ५	६ ६	२५० ५	७८ ३
जून	११ ५	७२ ६	१८०	३७ ५	११ ०६	८ ९	२१९ २	९१ ९
जुलाई	१६ ८	५३ २	४४२ ९	३७ ८	१२४ ८	१० २	१७१ ८	९६ ७
अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन

(१२) खाद्य और तम्बाकू

वर्ष		९२ [अ] गेहूँ का आटा (००० टन)	९३ [ट] चीनी (००० टन)	९४ [ठ] कॉफी (टन)	९५ [ड] चाय (दस लाख पौंड)	९६ नमक (००० मन)	९७ वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुएं (टन)	९८ सिगरेट (लाख)
१९४६		-	९२२ ८	२४,०४८	५५२ ०	४७,८६८	१,३५,०९९	
१९४७			९०१ २	१९,८४८	५६१ ६	५१,६००	९५,२१२	१,८८,७ ६
१९४८			१,०७५ २	१९,१२८	५६८ ८	६३,५८८	१,२६,६९९	२,१८,२४४
१९४९		४१७ ६	१,००० ८	२२,३८०	५८५ ६	५५,६२०	१,५५,५४४	२,१८,६०४
१९५०		४७७ ६	९७६ ८	२०,५३२	६१३ २	७१,२१६	१,७१,६९९	२,३०,२६१
१९५१		४८६ ०	१,११४ ८	१८,०९९	८६८ ८	७४,३७६	१,७२,३२०	२,१४,४८८
१९५२		५१२ ४	१,४९४ ०	२१,०९९	६१४ ४	७६,८६०	१,६०,८१२	२,०१,१६२
१९५३		४८३ ६	१,२६१ २	२२,५७२	६०८ ४	८६,३१६	१,६१,३५२	१,६८,३३६
१९५४	जनवरी	३५ ४	२०३ ६	२,६०९	६ ४	७,८८६	२५,८६३	१७,६३६
	फरवरी	३६ २	२५१ १	४,८४१	५ ८	३,६८३	१८,२१७	१६,७३३
	मार्च	३६ १	१५५ १	६,१६०	१० १	६,६६२	१६,८०३	१४,७१५
	अप्रैल	४० ७	४२ ५	४,३८४	३४ ८	१२ ५५६	२२,८२०	१५,६६०
	मई	३६ ८	२ ६	३,७३६	५६ ०	१७,८९४	२३,२७९	१५,५७०
	जून	३० ६	शून्य	१ ६२५	६६ ३	१६,२४३	१६,०८४	१६,६४०
	जुलाई	३८ ३	शून्य	१,०६६	८५ ४	६,३३३	१६,७४७	१८,४४०
	अगस्त	अप्राप्त	३ ३	१,२३५	६१ ८	१,७०१	१४,४४७	अप्राप्त
	सितम्बर							
	अक्तूबर							
	नवम्बर							
	दिसम्बर							

[अ] ये आँकड़े केवल बड़ी आटा मिलों के हैं। [ट] ये आँकड़े फसली साल (नवम्बर से अक्तूबर) तक के हैं और केवल गन्ने से बनने वाली चीनी के विषय में हैं। [ठ] ये आँकड़े शोधन और पीसने के पश्चात् कॉफी भण्डार में दे दी जाने वाली कॉफी के विषय में हैं। [ड] ये मासिक आँकड़े पंजाब (काँगड़ा और मण्डी रियासत) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष		९९ जूते, पश्चिमी ढंग के (००० जोड़े)	१०० जूते, देशी ढंग के (००० जोड़े)	१०१ कमाये चमड़े का मोम (०००)	१०२ वनस्पति साधनों से कमाया हुआ गाय-भैंस का चमड़ा (०००)	१०३ चमड़े जैसा कपड़ा (००० गज)
१९४६						..
१९४७						
१९४८		३,२०१ ६	२,०६७ ६	१,०८७ २	१,६५८ ४	
१९४९		२,८५० ०	२,१०८ ४	५८० ८	१,८३४ ८	
१९५०		२,८३६ ८	१,९९६ ८	४९५ ६	१,५१४ ४	
१९५१		३,६४० ८	२,०७३ ६	८७९ ६	१,७०८ ०	१,६१८ ८
१९५२		३,३६७ २	१,८०६ ०	६५० ४	१,४७८ ४	९५४ ०
१९५३		३,३४८ ०	२ २०४ ४	७०० ८	१,३६८ ४	९८५ २
१९५४	जनवरी	२९९ ४	१९५ ६	५९ ६	१२० २	८२ ३
	फर्वरी	३१७ ५	१८७ ८	६६ १	१२० ६	९५ २
	मार्च	३२२ १	१३८ ३	७१ ९	१३८ ४	९७ ८
	अप्रैल	२९४ ९	१४५ ५	६६ ६	१२१ ४	८७ ४
	मई	२७० १	१६२ ४	५९.३	९२.८	९५.१
	जून	२५२ ३	१६० ३	५७ ३	९१ ७	९१ ५
	जुलाई	२९४ २	२०३ ०	५२.६	९३ १	१०६.२
	अगस्त	२९२.८	१८९.०	३३ ४	१०० ५	१०८ १
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

१. औद्योगिक उपादन

(१४) अन्य उद्योग

वर्ष		१०४ खनिज कोयला (००० टन)	चाय की पेटिया	१०५ प्लाइवुड (००० वर्ग फुट)			१०६ कागज (टन)			
				व्यापारिक	छपाई और लिखाई का	योग	लपेटने का	विशेष किस्म का मैंटा	गत्ते	योग
१९४६		२८,८८४	३५,४००	२३,४००	५८,८००	६४,८९६	१५,६८४	६,८२८	१८,५८८	१,०५,९९६
१९४७		३०,०००	२८,५६०	५,७३६	३४,२६६	५२,७७६	१६,८४८	५,३१६	१८ ११६	९३ ०९६
१९४८		२९,८२०	४५,१०८	८,६२८	५३,७३६	५०,३७६	१७,३८८	१२,९१२	१७,२३२	९७,९०८
१९४९		३१,४५२	३८,४००	९,२४०	४७,६४०	५६,४८४	१२,८७६	११,९०४	१८,९३६	१,०३,२००
१९५०		३१,९९२	४१,३७६	८,८४४	५०,२२०	७०,१५२	१४,६१६	५,१६६	१८,९४८	१,०८,९१२
१९५१		३४,३०८	६०,६४८	१०,२००	७०,८४८	७९,२६०	२५,४८८	३,१२०	२४,०४८	१,३१,९१६
१९५२		३१,२२८	७८,२१८	१२,३१२	६०,५४०	९१,४०८	२१,५४०	२,८२०	२१,७१०	१,३७,५०८
१९५३		३५,८४४	४९,७८८	११,३७६	६०,८७६	९५,६२८	२१,१४४	३,८२०	१६ ५१२	१,३९,७०४
१९५४	जनवरी	२,९०३	४,२६३	८६३	५,१२६	६,४८४	२,१७७	२०२	१,४६५	१०,३२८
	फरवरी	३,०५६	४,७८९	८८९	५,६७८	५,८४७	२,००८	८६८	१,२८६	९,४०६
	मार्च	३,०७१	६,२४४	१,२११	७,४५५	७,३६७	२,१६४	३००	२,६१३	११,४७४
	अप्रैल	३,०३७	५,७१४	१,२७४	६,९८८	८,८३०	२,२६०	५६३	२,११२	१२,७९८
	मई	२,९७७	५,१८७	१,०७४	६,२११	६,६७३	१,२०३	३०२	१,६२०	१२,९९८
	जून	२,८८५	४,३६०	६४६	४,९७६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१२,७०६
	जुलाई	२,९९६	४,९६२	७६४	५,४५६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१३,२५२
	अगस्त	२,९५८	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	सितम्बर									
	अक्तूबर									
	नवम्बर									
	दिसम्बर									

(१४) अन्य उद्योग (शेषांश)

परिवहन

वर्ष		१०७ मोटर गाड़िया (संख्या)			१०८ साइकिलें	
		कारें	ट्रक	योग	पूरी तैयार (मूल्य ००० रुपये)	हिस्से
१९४६					४२,९८४ (द)	९९३ ६ (ह)
१९४७					३१,८६० (द)	१,७१८ ४ (ह)
१९४८					५५,४५३	१,११४.८ (ख)
१९४९		६,६७२	१५,१३२	२१,८०४	६४,४२८	१,७९९ ४ (ख)
१९५०		६,५८८	८,०१६	१४,६०४	१,०३,१५२	६,४५२ २ (ख)
१९५१		१२,३८४	९,८८८	२२ २७२	१,२४,२७८	४९,४८८ ४
१९५२		६,६४८	८,३४०	१५,२८८	१,९६,६५६	८,२४७ ६
१९५३		४,९३२	८,९८८	१३,९२०	२,६४,१६८	१०,१९४ ०
१९५४	जनवरी	२७७	९९६	१,२७३	१८,६००	८९७ ०
	फरवरी	४२३	७९०	१,२१३	२२,५६३	८५३ ०
	मार्च	५००	७९९	१,२९९	२७,८३५	९२९ ७
	अप्रैल	४७१	३६५	८३६	२६,३०४	१,०७६ ३
	मई	४०३	४१६	८१९	३३,०७३	१ ०२० ९
	जून	४४२	३१३	७५५	३४,४१७	१,१६८ ०
	जुलाई	४७५	५२१	९९६	३०,८४२	१,०३८ ५
	अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	सितम्बर					
	अक्तूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

[ह] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आकड़े। [ख] १९४८ से १९५० तक के वर्षों के अंको मे पूरी साइकिल बनाने वाली फर्मों द्वारा तैयार किये गये हिस्से शामिल नहीं हैं।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लाख रुपया में)

व्यापारी माल	१९४८-४९	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५३-५४ (अप्रैल-अगस्त)	१९५४-५५ (अप्रैल-जुलाई)
(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	४,२१,०४	४,७२,०७	५,७८,९८	७,०१,७५	५,५३,७७	५,१५,६६	१,९६,३०	२,००,७१
स्थल द्वारा	३०,३९(क)	२७,८८	१७,८१	२७,१४	१८,८४	[illegible],४६	२,४७	१,४१
योग	४,५१,४३	४,९९,९५	५,९६,७९	७,२८,८९	५,७२,६१	५,–३,१२	१,९८,७७	२,०२,११
(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात (केवल समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, पेय और तम्बाकू	९२,३०	१,१५,८८	१,३५,८१	१,५८,४५	१,४३,३०	१,५२,१३	५०,५९	६०,६५
२ कच्चा माल तथा ईंधन और मुख्यतः अनिर्मित माल	९७,८७	१,०४,२६	१,२५,७७	१,३६,९८	१,४९,३७	१,०६,८३	४६,०६	३७,११
३ पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल	२,२६,०६	२,४९,७४	२,१४,७८	४,००,०२	२,६०,०–	२,५३,२५	९७,९२	१,००,६६
योग [जिनमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएं भी सम्मिलित हैं]	४,२१,०४	४,७२,०७	५,७८,९८	७,०१,७५	५,५३,७७	५,१५,६६	१,९६,३१	२,००,७१
(ग) पुनर्निर्यात (सरकारी व्यापार छोड़कर)	७,–६	६,०७	४,५६	४,०५	५,०४	४,७६	२,१०	२,११
(घ) कुल निर्यात	४,५८,७२	५,०६,०२	६,०१,३५	७,३२,६४	५,७७,६५	५,२७,६४	२,००,८७	२,०५,५८
(ङ) आयात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,५७,१७	५,९४,३४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३६,०७*	५,५१,०२*	२,६४,६४*	२,३७,२६*
स्थल द्वारा	–५,०० (क)	३३,७१	४२,७९	८०,४८	२५,१६	२२,६६	८,५६	७,१२
योग	६,५२,१७	६,२८,०५	६,२३,९६	९,५५,१२	६,६१,२३	५,७३,६८	२,७३,५३*	२,४४,४१
सरकारी व्यापार [illegible]		३,१४	६०	८०	१६	१२	६	६
(च) शुद्ध आयात	६,५२,१७	६,२४,९१	६,२३,३६	९,५४,५२	६,६५,०५*	५,७३,८६*	२,७३,४७*	२,४४,३२*
(छ) आयात (समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, पेय और तम्बाकू	१,२७,१२	१,५६,६५	१,२०,६२	२,६२,०७	१,७५,६५	९२,७४	६५,०७	२७,७४
२ कच्चा माल और ईंधन तथा मुख्यतः अनिर्मित वस्तुएं	१,२७,२७	१,४४,२७	१,६८,८१	२,५६,०८	१,७८,१६	१,६[illegible],५५	८२,३४	६२,२४
३ पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित वस्तुएं	२,८७,९०	२,८८,६३	२,६६,५४	३,९१,४६	२,७६,२७	२,८६,०३	१,०६,१६	१,१६,१६
योग [जिनमें (४) जीवित पशु और (५) डाक द्वारा भेजी गई वस्तुएं भी सम्मिलित हैं]	५,५७,१७	५,९४,३४	५,८१,१७	८,७४,६४	६,३१,४०	५,४२,२२	२,५७,११	२,३७,२६
(ज) व्यापारी माल का व्यापार सन्तुलन	—१,८३,४५	—१,१८,८६	—२२,०१	—[illegible] ६५	—[illegible] ३६	—४५,[illegible]२	—७२,६०	—३९,०४

*सरकार, दान तथा [illegible] के अन्य आयात का मूल्य भी सम्मिलित है।

(क) केवल पाकिस्तान के लिये।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) खाद्य, पेय और तम्बाकू

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मछलियाँ (००० हंडरवेट)	प्याज* (००० हंडरवेट)	काजू की गिरी (००० हंडरवेट)	इलायची (००० हंडरवेट)	गोल मिर्च (००० हंडरवेट)	चाय (लाख पौंड)	तम्बाकू, अनिर्मित (लाख पौंड)	तम्बाकू, निर्मित (००० पौंड)
१९४८-४९	परिमाण	२३५	३०६	३६६	१८	१४२	४४,३०‡	९,६०	४,६७९*
	मूल्य	१,४७	५०	४,६३	७३	२,६७	६६,२४‡	६,४६	५,६८
१९४९-५०	परिमाण	३२१	७३५	३७९	१६	३१३	४४,५०	६,२०	४,२६७*
	मूल्य	१,६१	१,२६	५,६१	१,२५	१४,५०	७२,६१	११,६४	४,३०
१९५०-५१	परिमाण	३८७	१,१५६	५०८	११	१०८	४४,२०	१०,६०	११,८२८
	मूल्य	२,४६	१,१५	८,५५	१,४८	२०,४०	८०,४२	१४,११	४,३५
१९५१-५२	परिमाण	४३५	६१५	४११	१४	२६८	४२,६०	११,२०	१२,१५६
	मूल्य	३,२८	१,०७	६,०३	१,६४	३१,२२	६३,८६	११,१४	६,२६
१९५२-५३	परिमाण	४८८	६६४	५५८	१०	२४८	४२,७०	८,००	५,१४२
	मूल्य	३,८७	११३	१२,६८	१,६६	१६,०६	८०,८८	११,०३	२,५४
१९५३-५४	परिमाण	५३६	४६६	२७	१८	२५८	४७,१०	६,५०	२,६७८
	मूल्य	४,११	६८	१०,६३	१,३४	१२,७२	१,०२,१४	१०,२२	१,०४
१९५४-५५ :									
जुलाई	परिमाण	१६	२८	१	१	२७	४,२०	१,००	२,५२
	मूल्य	१८	४	१,३५	६	७६	११,३६	१,६४	६
१९५३-५४ :									
जुलाई	परिमाण	३६	३५	६	२	६	३,६०	५०	२,०४
	मूल्य	३३	१८	१,२८	१०	५६	८,२८	८६	७

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा।

‡ अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजे गये माल के आंकड़ों को छोड़कर

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		कोयला (००० टन)	अबरक (००० हण्डरवेट)	लाख (००० हण्डरवेट)	चमड़ा, कच्चा (००० हण्डरवेट)	खालें, कच्ची (००० हण्डरवेट)	पुराना लोहा व इस्पात पुनर्निर्माण के लिये (००० टन)	खनिज लोह (००० टन)	खनिज लोहक (००० टन)	आँवले (००० हण्डरवेट)	हड्डियाँ कारखानों के लिये (००० टन)
१९४८-४९	परिमाण	२,३३२	३४०	४६१	४२	२०४	नगण्य		३०६	६१२	३१
	मूल्य	४,५८	५,६४	८,३६	४६	४,६८	नगण्य	...	१,८१	५५	५७
१९४९-५०	परिमाण	२,३२३	२६८	४५३	१६	२५८	० २	४	७३६	८४५	[illegible]
	मूल्य	७,६३	६,८५०	८,०६	२१	६,५६	०.३१	१	५,८५	६०	६१
१९५०-५१	परिमाण	६६४	४०७	६६२	३८	२८८	२	८५	८२१	८२२	४५
	मूल्य	३,४४	१०,००	११,८६	६६	८,७४	४	२२	८,०१	१,०३	१,११
१९५१-५२	परिमाण	२,८०१	४०८	७१४	२४	३३०	४१	३८०	१,१२५	८६७	४१
	मूल्य	६,५५	१३,२१	१४,८७	६२	७,६२	७०	१,००	१५,६६	१,१३	२,२८
१९५२-५३	परिमाण	२,६६८	२८४	६८८	१	२२६	४७६	८११	१,४४०	५६६	७१
	मूल्य	१०,०३	६,०१	७,६१	२	५,५४	२०,२३	३,७१	२१,७६	४८	२,३७
१९५३-५४	परिमाण	१,६१७	२५०	५३८		२०७	२५०	१,२००	१,२६८	३६७	६६
	मूल्य	६,८८	७,६५	६,७६		६,०६	४,६७	५,५३	२४,२५	६२	२,०४
१९५४-५५ * जुलाई	परिमाण	१८०	३०	५६		२८	२४	३७	५१	८५	८
	मूल्य	५५	५७	१,०५	...	५४	२०	१६	८८	६	२७
१९५३-५४ : जुलाई	परिमाण	१८४	१६	४३	...	१६	२४	६४	२४१	५१	४
	मूल्य	६३	७६	५०		६०	२४	२६	१,८४	४	१३

(अ) स्थल मार्ग के आँकडे छोड़ कर।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		मूँगफली का तेल (००० गैलन)	अरण्डी का तेल (००० गैलन)	अलसी का तेल (००० गैलन)	मूँगफली (००० टन)	अरण्डी का बीज (००० टन)	अलसी (००० टन)	रूई, कच्ची (००० टन)	रूई, रद्दी (००० हंडरवेट)	पटुआ, कच्चा (००० हंडरवेट)	ऊन, कच्ची (००० पौंड)
१९४८-४९	परिमाण	८,९११*	३,००९	२,२८१	३८		२५	७६	१,०१७	९९५	८,९५८
	मूल्य	६,७०	२,१८	१,४८	३,१३		१,३६	२४,०१	५,१५	३,३६	१,०६
१९४९-५०	परिमाण	७,०४६*	१,१३८	१,७०१	१२६	५	७२	५८	२,५१३	३४२	१७,११३
	मूल्य	५,४४	६६	१,२८	६,०४	२८	४,५६	१०,६१	८,२२	१,७५	३,७१
१९५०-५१	परिमाण	१६,६६१	५,८९८	१,११९	१८	७६	९८	१५	१,३०७	२७१	२५,३७१
	मूल्य	१६,७४	४,३५	१,१०	३,५७	५,६२	५,३७	४,६४	१२,४१	१,२८	७,८७
१९५१-५२	परिमाण	५,११६	५,५२२	६,०७७	२०	— १	७	३१	९२३	४१७	१८,२६५
	मूल्य	४,३२	६,५७	२,६६	२,३५	२६	७०	११,९८	७,३५	२,४८	५,६०
१९५२-५३	परिमाण	१६,२६०	८,६२७**	६,८१२*	१२	४	नगण्य	७१	१,२५६	३४२	१७,६६६
	मूल्य	१०,५७	७,७२	४,८२	१,४०	३८	०.५३	१६,२३	६,६४	१,४६	८,४१
१९५३-५४	परिमाण	३६०	४,५६५**	६३८**	५	..	..	३५	१,२९९	३५५	१०,६६१
	मूल्य	२५	३,१६	५६	६३	...	...	६,४०	६,८७	१,२४	५,८७
१९५४-५५:											
जुलाई	परिमाण	४	६१५	२७	नगण्य	...	...	१	६५	१६	२,१५८
	मूल्य	०.३	५७	१	०.१	...	...	३७	७५	७	६८
१९५३-५४:											
जुलाई	परिमाण	३	२३४	२३	नगण्य	...	...	१	१०३	३६	१,६१६
	मूल्य	०.२	१८	१	०.२	...	...	३१	८०	१२	४६

* केवल समुद्र मार्ग द्वारा।

** अपूर्ण।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष		कमाया हुआ चमड़ा (००० हंडरवेट)	कमाई हुई खालें (००० हंडरवेट)	रूई ओटी हुई (००० पौंड)	सूती होजियरी	सूती कपड़ा (करघे का) (लाख गज)	सूती कपड़ा (मिल का) (लाख गज)	बिसाती का बाना (मुख्यतः सूती माल से बना हुआ)	बोरिया (०००टन)	टाट (०००टन)	नकली रेशम का कपड़ा (००० गज)	ऊनी कालीन व कम्बल (००० पौंड)	नारियल की जटा से बनी वस्तुएं (००० हंडरवेट)
१९४८ ४९	परिमाण	१८६	१०४	७,४०८			३६,१०**		४५७	४३५	२४,४८०	८,३३४	८६६
	मूल्य	४,६६	७,२०	२,२६	६५		३६,५४**	५१	६१,४७	८०,७२	५,१६	२,६१	४,४७
१९४९ ५०	परिमाण	३१५	१६२*	६७,८३५(अ)			७०,६०		४३४	३०६	१२,२३०	१०,४६५	१,४२४
	मूल्य	८,५३	११,८३	१२,४०	७६		५६,६५	८१	६३,८२	४७,२५	१,४६	३,३१	७,२१
१९५० ५१	परिमाण	३५१	१४८(अ)	७५,०११		६,००	१,२२,४०		३४५	३६६	३,६६०	१४,०११	१,५३०
	मूल्य	१२,०२	१३,३३	१७,२८	८६	१०,८८	१,१२,१७	१,७१	५५,३६	५२,६१	६७	५,५६	१०,८१
१९५१ ५२	परिमाण	३३५	१२४(अ)	६,१८२(अ)		४,०० (अ)	३८,८०		४७३	२८७	८,४१४	११,५६१	१,२१६
	मूल्य	१३,६१	११,४२	१,६७	१,८०	६,२०	४२,६५	२,४६	१,३५,२६	१,२४,५८	१,३७	५,८८	१०,१६
१९५२ ५३	परिमाण	३१३	१५५*	१८,०५३		५,५०	५६,५०(अ)		३७१(अ)	३०४	३,६७५	७,११८	१,२८२
	मूल्य	६,२२	१०,८६	४,४१	६६	८,७४	५३,२८	२,५५	३१,३६	३३,०८	५२	२,८०	७,१६
१९५३ ५४	परिमाण	३६४	१६८	२२,५८५		६,३०	७०,६०(अ)	..	३५४	३८६	३,१७७(अ)	८,६६७	१,५२२
	मूल्य	१०,८३	१३,६२	४,७६	१,२३	६,६५	५३,५४	३,२६	४०,२६	३६,५०	४६	३,३६	८,३१
१९५४ ५५* जुलाई	परिमाण	२४*	२०*	...	.	५०	६,४०	...	४०	३१	२५६	८१५	१११
	मूल्य	७०*	८५*	...	७	७६	४,६१	१७	४,६७	५,३५	४	३२	६५
१९५३ ५४ जुलाई	परिमाण	३०*	६*	१,३१६	...	५०	४,६०	..	२८	३६	२६२	७४१	६०
	मूल्य	८७*	७६*	३१	१०	८५	३,६१	१६	३,२६	६,६६	५	२६	४६

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा। (अ) अपूर्ण।

** इसमें अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया माल सम्मिलित नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णत अथवा मुख्यत निर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपयो मे)

वर्ष		पैराफीन मोम (००० टन)	तैयार वस्त्र (होजियरी और जूट तथा जूतों के अतिरिक्त)	ग्लिसरीन* (००० हन्डरवेट)	इसबगोल की भूसी** (००० हन्डरवेट)	कच्चा लोहा (००० टन)	धातु के बर्तन तथा कटलरी	यंत्र उपकरण आदि	कांच तथा मिट्टी का सामान	मशीनें और कारखानों का सामान (सीने की मशीनों सहित)	कागज गोंद, गत्ता तथा लिखने की सामग्री	रबड़ से बनी वस्तुएं	धातुएं (लोहा इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त
१९४८ ४९	परिमाण	१०				४५							
	मूल्य	१,१३	७४			६३	५४	६४	२,३२	२६	४६	१,६७	६८
१९४९ ५०	परिमाण	२६				७१							
	मूल्य	१,५८	५१			६६	६१	७४	३२	३६	३१	६६	५३
१९५० ५१	परिमाण	२०				५४							
	मूल्य	२,२६	१,१५			८३	[illegible]	६६	२६	४७	३३	[illegible]	[illegible]
१९५१ ५२	परिमाण	३२				२०							
	मूल्य	२,८२	८२			४१	१ २१	१ ४७	४३	६८	१,१६	१,०८	१,४१
१९५२ ५३	परिमाण	१६		६१		११							
	मूल्य	१ ३३	१,६५	६०		४१	११०	१,५५	३५	१,२७	८७	१,४२	२,१७
१९५३ ५४	परिमाण	२४		४५	३०	१५							
	मूल्य	१,५५	१,४६	६६	५३	२१	११३	१,६१	२६	६२	८६	१ ७४	१,७७
१९५४ ५५ जुलाई	परिमाण	२		२	६								
	मूल्य	१७	१२	२	८		६	२६	३	[illegible]	६	८	११
१९५३ ५४ जुलाई	परिमाण	३		२	४	७							
	मूल्य	१६	६	४	८	८	११	८	३	४	५	[illegible]	२०

* अप्रैल १९५२ से यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

** अप्रैल १९५३ से यह वस्तु व्यापार लेखे में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ग) आयात की मुख्य वस्तुएं*

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	मशीन के पुर्जे	रासायनिक पदार्थ	तारकोल के रंग	फल व तरकारियां	अनाज, दालें और आटा†	धातु के बर्तन	यन्त्र, उपकरणादि	हर प्रकार की मशीनें (मशीन के पुर्जों सहित)	लोहा, इस्पात तथा तत्सम्बन्धी बनी वस्तुएं	धातुएं (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९४८ ४९	२,१२	२०,५७	१२,३४	८,२५*	१,०१,७०	५,६६	१८,८१	८१,५६	१२,३१	२२,३३
१९४९ ५०	१,०१	७,७६	७,६६	१०,५८	१,३३,८८	६,१४	२०,७५	१,०९,५१	१३,७०	१८,१८
१९५० ५१	१,१६	६,२२	११,६८	१३,५७	८०,७६	४,५७	१७,७९	६३,००	१६,००	२७,८४
१९५१ ५२	१,०७	१६,६०	१४,२७	१३,६०	२,३०,३०	६,१४	२०,४३	१,०४,३१	२१,६७	१,६७
१९५२ ५३	१,६१	१२,६८	७,५१	१३,७४	१,९६,७३	४,०५	२२,२१	८७,८६	३३,७१	१६,३७
१९५३ ५४	१,०८	१२,६६	१५,४९	१३,७	७२,४६	४,४७	२१,९६	८५,८४	२१,५७	१४,५१
१९५४ ५५										
जुलाई	६	१,३८	१,४४	८५	६,४०	४०	१,४८	६,६४	१,५६	२,४२
१९५३ ५४										
जुलाई	१३	१,०४	१,२०	६२	६,६३	३२	२,३७	६,६६	१,७०	१,६३

† इसमें अनाज, दाल तथा आटे के अन्य आयात की वस्तुएं भी सम्मिलित हैं

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

वर्ष	कागज	रूई, कच्ची	ऊन, कच्ची	नकली रेशम का सूत	मोटर आदि गाड़ियां व नीचे के ढांचे	मोटर कारें (बसों गाड़ियों सहित)	औषधियां और दवाइयां	सूती कपड़े	रूई छोटी रूई और मूल	ऊनी माल	तैल भण्डार की वस्तुएं	जूट, कच्चा
१९४८ ४९	१३,२७	६४,४८	३,१८	१२,८३	८,६२	७,६४	,१२*	९,३०	४,५०	३,१०	७,०८	७१,२१
१९४९ ५०	७,७४	६३,७६	३,०३	१०,४६	५,३८	३,१	८,०४	१०,७०	५,७७	१,६४	७,३०	२१,१७
१९५० ५१	६,५०	१,००,७७	५,६२	१४,७१	२,६६	३,२४	१०,५२	१,३१	३०	१३	६,०१	२७,५७
१९५१ ५२	१३,१६	१,३७,१८	२,६०	१७,२६	२,८७	४,७	१५,६०	२,३७	१,८२	४५	१०,८४	६७,०७
१९५२ ५३	११,२२	७६,६७	६६	७,८५	२,८८	२,६६	११ ४६	१,२५	२,०६	६२	५,७१	१६,४८
१९५३ ५४	१५,२५	५२,७१	१,६४	१२,०४	२ १५	२ [illegible]	१२ ४५	१,०२	२,३१	८५	६,४२	१४,३३
१९५४ ५५												
जुलाई	६४	६ २०	६	१,०३	३०	४८	१,२७	३	१३	२	५३	८७
१९५३ ५४												
जुलाई	६६	६,०७	२५	६५		३३	६३	५	७	४	८०	२,१२

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष	ब्रिटेन		फ्रांस		बेलजियम		जर्मनी		नीदरलैण्ड	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,५२,९९	१,०३,२९	३,०१	७,३५	७,१०	६,८६	१,२८	२,६१	५,४४	७,२६
१९४९-५०	१,५३,६६	१,१८,२४	३,८१	५,४२	७,६२	६,२३	६,४२	६,५१	४,१६	७,३७
१९५०-५१	१,३१,४०	१,३६,८२	११,०७	६,०१	६,०४	६,८१	११,०४	१०,६३	६,९८	१०,१६
१९५१-५२	१,५८,१३	१,८६,६६	१०,७२	११,३७	६,५२	८,३६	२८,३४	६,३८	१०,६२	७,६२
१९५२-५३	१,३८,८४	१,२३,२९	१३,५५	५,६६	६,६०	६,६८	२२,६४	१२,४८	१०,८०	१०,३६
१९५३-५४	१,४२,७१	१,४६,९९	६,१३	५,३२	७,६७	४,५७	३१,२४	११,५६	११,३०	६,८६
१९५४-५५ जुलाई	१२,३६	१५,३१	१,००	३५	१,२८	४१	२,४६	८६	१,०६	५६
१९५३-५४ जुलाई	१३,१८	११,५३	६६	३६	६१	४६	२,०६	७२	६३	५२

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

वर्ष	आस्ट्रिया		हंगरी		पोलैण्ड		चेकोस्लोवाकिया		योगोस्लाविया		टर्की	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८०	३४	१२	२५	८	३२	२,०८	२,१६	१०	१०	३	६२
१९४९-५०	५६	५३	६	२३	२६	६८	२,८१	१,४६	६१	४४	१४	२,३१
१९५०-५१	१,६४	४३	१०	३	३०	४०	२,७७	१,०८	१२	६	३	२,२६
१९५१-५२	२,४७	१०१	३२		३४	२६	२,८१	१,३६	१४	२६	१३	३,५५
१९५२-५३	१,८६	४२	१६	४	२६	४	१,३५	१,१८	६	११	०.८३	४,६५
१९५३-५४	२,५१	५७	१०	२	१६	१५	१,१४	३,०६	७	१	०.३१	२,५८
१९५४-५५ जुलाई	२२	५	१	नगण्य	१	०.२	६	५	२	१	नगण्य	४
१९५३-५४ जुलाई	२४	२	०.३	.	१	नगण्य	६	१८	०.२	०.३	नगण्य	२०

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—यूरोप (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	स्विट्जरलैण्ड		इटली		स्वीडन		नार्वे		फिनलैण्ड		रूस	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८,६६	१,२२	१८,३१	६,५५	६,०९	२,११	४,३५	८६	१,३८	१६	३,७६	५,३६
१९४९-५०	७,५५	२,५४	१४,८३	५,६६	६,७०	१,३९	२,४४	१,०८	१,१७	१०	१६,३८	३,७४
१९५०-५१	७,६१	२,२३	१६,६०	१५,००	५,७८	२,६८	२,२३	१,३३	१,४९	२१	३३	१,१७
१९५१-५२	६,६४	२,०९	१७,६६	७,९९	७,४७	२,५४	३,५८	१,६०	२,१५	१,०६	१,३८	६,६२
१९५२-५३	६,६५	६१	१२,०१	१०,६१	४,६६	१,८२	२,७_	८८	१,८०	२५	२४	८५
१९५३-५४	६,१२	८२	२२,०७	८,१२	६,१८	१,५३	२,६२	४१	१,८७	१२	६०	१,१५
१९५४-५५ जुलाई	७७	८	१,९१	३७	४५	१६	१८	३	१७	२	२	८
१९५३-५४ जुलाई	५४	४	१,७३	२६	३७	१०	३४	?	२०	१	२	

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	अदन		ईराक		ईरान		पाकिस्तान		पूर्वी अफ्रीका		मिस्र	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,७७	२,००	१,२७	१,३६	२०,५०	३,१४*	१,०७,३७	७६,६६	१४,०३	५,५४	३१,६०	६,७२
१९४९-५०	१,४६	७,११	३,३८	४,०२	३२,५०	४,८२	४४,०५	४३,३०	१५,४२	६,०१	४०,२४	७,६४
१९५०-५१	१,१६	६,७६	४,२९	२,८६	३७,१४	५,९८	४३,६५	३०,६०	२२,४३	६,०९	३२,८७	५,८७
१९५१-५२	८६	६,३०	३,६१	३,१६	२८,६३	४,१७	८७,५०	४५,२९	२३,६६	१२,१०	४०,४९	६,४६
१९५२-५३	५९	६,३३	२,०५	२,११	२,५०	२,०७	२२,८८	३३,१४	३४,१३	११,३६	१५,१२	५,६६
१९५३-५४	३२	६,०३	२,५६	२,४४	२,०४	१,५३	१६,३०	८,०४	२०,१७	१०,७९	२७,६६	३,५१
१९५४-५५ जुलाई	१	५८	१	२७	१०	३५	१,३५	७९	२,२५	१,३०	७६	६४
१९५३-५४ जुलाई	२	६१	४	२६	११	८	२,५९	४१	२,७८	६६	२,३०	२०

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष	मोजाम्बिक		लंका		बर्मा		मलाया संघ, (सिंगापुर सहित)		थाईलैण्ड		जापान	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	२,४७	८७	२,७३	१२,३१	२६,२५	१०,५६	६,९०	५,३४	८,५१	२,३७	६,३८	४,५९
१९४९-५०	३,००	६२	२,७३	१६,८२	२४,२७	२४,६३	१४,४८	१७,९८	११,२४	४,१९	२१,३८	५,८७
१९५० ५१	४,४४	५२	४,५३	१९,६८	१८,८०	२२,४५	१६,६६	३६,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५१-५२	३,४२	९२	५,६०	१६,८१	२३,३५	१६,७९	२२,०९	१५,८१	११,६४	८,७१	२४,६५	१४,८१
१९५२-५३	५,६५	६४	४,२९	२०,०८	२६,४७	२२,३८	१४,८२	१८,८६	७,७२	४,३६	१५,८७	२१,९९
१९५३-५४	४,४८	७०	५,०८	१८,१२	१७,५५	२१,०९	२०,४५	१४,२१	४५	३,६२	१२,०६	२३,६०
१९५४-५५ :												
जुलाई	७६	९	३५	१,२८	६,११	१,२२	२,१५	८४	१	२९	६६	६४
१९५३-५४ :												
जुलाई	४३	४	५८	१,५५	१,३२	१,८४	१,८४	८८	१	१३	८९	१,२७

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका		कनाडा		अर्जेन्टाइना		आस्ट्रेलिया	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,०६,१३	७०,९८	१०,६६	८,१९	१२,८८	१६,९८	१०,०३	२०,६५
१९४९-५०	६५,४१	८१,५३	२३,६३	११,०६	८,६६	७,७८	४७,७५	२६,३९
१९५०-५१	१,१७,८७	१,२५,३८	२१,०२	१३,७९	५	१०,६५	३३,४८	३०,४१
१९५१-५२	२,८८,७०	१,३२,३६	१८,८१	२६,२९	७९	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५२-५३	१,८१,४१	१,१२,७५	२६,३१	१२,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,९८
१९५३-५४	७९,२५	९०,४६	१४,२०	१३,०९	२	१६,५७	२५,९९	१७,५३
१९५४-५५ :								
जुलाई	८,२९	६,६५	५१	१,२०	१	२,३३	·१,०७	२,१५
१९५३-५४:								
जुलाई	५,९०	७,४६	३,१४	१,०७	---	२,७७	४,३४	१,०७

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	नवम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु० आ० पा०	रु० आ० पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
खाद्य पदार्थ							
१. चावल							
(१) साधारण (न)	कलकत्ता	मन	१६ १२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०
(२) लाल	पटना	,,	१६- ०-०	१६- ०-०	१७- ०-०	१७- ०-०	१७- ०-०
(३) अक्कगड्डा (उ)	विजयवाडा	,,	१४ ६-३	१४- ६-३	१४- ६-३	१४- ६-३	१४- ६-३
२. गेहूँ							
(१) साधारण	जबलपुर	,,	१८ १२-०	१८-१२-०	१८- ६-०	१७- ६-०	१५-१२-०
(२) ,,	अमृतसर	,,	१४-१०-०	१६- ०-०	१३-१२-०	१६-१४-०	१८-११-०
(३) ,,	हापुड़	,,	१५ १०-०	१७- ४-०	१३- ४-०	१५- ५-०	१६- ०-०
३. ज्वार	अमरावती	,,	९ १२-०	१०-१०-०	१०- २-०	९-१०-०	१०- २-०
४. बाजरा	हैदराबाद शहर	२४० पौंड का पल्ला	३२-११-०	३४-१३-०	३२-१२-०	२८- ८-०	२७- ०-०
५. चना							
(१) देशी	पटना	मन	१७- ०-०	१५ -०-०	१५- ०-०	१३- ०-०	१२- ८-०
(२) ,,	हापुड़	,,	१४- ८-०	१४- ८-०	१३- ८-०	११-१०-०	१३- ०-०
६. दाल							
अरहर	,,	,,	१२- ०-०	१२- ०-०	१०- ४-०	९-१२-०	१०-१२-०
७. चाय							
(१) आंतरिक उपभोग के लिए	कलकत्ता	पौंड	१- ९-६	१-१३-२	१-९-११	१-१२-९	२- १-०
(२) निर्यात :—							
(क) निम्न मध्यम ब्रोक पीको	,,	,,	१-१२-९	अप्राप्त	२- १-६	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम ब्रोक पीको	,,	,,	१-१३-३	अप्राप्त	२ २-६	अप्राप्त	अप्राप्त
८. काफी							
(१) प्लान्टेशन पीबेरी (गोला)	मंगलौर कोयम्बतूर*	हंडरवेट	२३९ ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२३२- ८-०
(२) देशी चपटी	,, ,,	,,	अप्राप्त	१७३- ८-०	१६६- ०-०	१६०- ०-०	१४७- ८-०
९. चीनी (क)							
(१) डी. २८	कानपुर	मन	२९-३-१०	३०- ०-४	३०- ६-७	३०- ५-३	३३-१४-४
(२) डी. २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) ई. २७	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१०. गुड़							
(१) खाने के लिये	अहमदनगर	,,	२५- ०-०	१९- ८-०	१८- ०-०	१६- ०-०	१९- ०-०
(२) ,, ,,	मुजफ्फरनगर	,,	१५-१४-०	१५-१४-०	१५-१०-६	१६- ६-०	२१-११-०

(न) नियन्त्रित मूल्य (उ) उचित मूल्य मन=८२—२/७ पौंड।

(क) कारखाने से चलते समय का मूल्य। बंगाल मन=८२—२/१५ पौंड।

* प्रतिवर्ष जनवरी से जून तक मंगलौर बाजार के मूल्य और जुलाई से सितम्बर तक कोयम्बतूर बाजार के मूल्य दिये जाते हैं।

† इस तालिका में समस्त भाव प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह के दिये गये हैं।

के भाव : १९५४*

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सेतम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	
१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१७- ८-०	१७-१२-०	१६-१५-०	१६-१२-०	
१७- ०-०	१४- ०-०	१४- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१३- ०-०	१३-० -०	
१४- ९-३	१४- ९-३	१४- ९-३	१५-१०-८	१६- ५-४	१६- ०-०	१५-१०-८	
१४- ६-०	१४- ०-०	अप्राप्त	१३- ८-०	१३- ४-०	१४- ०-०	१५- ०-०	
१४- ०-६	१०- ०-०	१०-१४-०	१२- ६-०	१३-१३-०	१४- ७-३	१४- ८-०	
१३- ८-०	११-१२-०	१२- ४-०	१२- २-०	१२- ०-०	१२- ८-०	१२- ४-०	
१०- २-०	९- ०-०	९- ४-०	९- ८-०	८- ८-०	८- ४-०	अप्राप्त	
२३-१२-०	२६- ९-०	२७- ०-०	२९- ४-०	२९- ०-०	२४- ०-०	३०- ०-०	
१२- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०	१०- ८-०	१०- ८-०	
१२- ४-०	१०- ४-०	१०- ०-०	९- ८-०	१०- ०-०	९-१२-०	८- ८-०	
१०- ५-०	८- २-०	७-१५-०	७- ४-०	८- २-०	७- ८-०	७- ०-०	
१-१२-८	अप्राप्त	२-०-११	२- २-७	२- ८-७	अप्राप्त	२- २-७	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-०	३- १-०	अप्राप्त	३- ३-०	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-९	३- १-६	अप्राप्त	३- ३-६	
२२२- ८-०	२१९- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०	२२०- ०-०	२२८- ०-०	
१५२- ०-०	१६२- ८-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	बिक्री नहीं	बिक्री नहीं	
३१- ९-४	३०- ८-७	३१- ०-५	३१-१२-०	३२- २-०	३१-१५-४	३१-१०-६	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३०- २-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	
अप्राप्त	१९- ०-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१८- ०-०	१३- ०-०	
२०-१०-०	१७-१०-०	१९- ०-०	२१- ८-०	२०- ४-०	२१-१२-०	१२- ८-०	

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	नवम्बर १९५२	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
११ नमक			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(१) साम्भर (न)	दिल्ली	मन	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०	२ ८ ०
(२) काला	बम्बई	,,	१ २ ०	१ २ ०	१ २ ०	१ २ ०	१ [illegible] ०
१२ तम्बाकू							
जाति पूरा मध्यम (साधारण औसत दर्जे का)	कलकत्ता	बंगाल मन	१२० १२ ६	१२० १२ ६	१४० १३ ६	१४० १२ ६	अप्राप्त
१३. काली मिर्च							
(१) एलेप्पी (बिना कुटा हुआ)	,,	,,	२३० ० ०	२२० ० ०	१८० ० ०	१६० ० ०	१७० ० ०
(२) कुटा हुआ	कोचीन	हण्ड्रेडवेट	३१६ ११ ०	३२५ ० ०	३१० ० ०	२६७ ८ ०	४६० ० ०
१४ काजू							
भारतीय	मंगलौर	मन	१२ १० ७	१२ १० ७	१२ १० ७	१३ १४ १०	१५ ३ ०

औद्योगिक कच्चा माल

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	नवम्बर १९५२	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ रुई, कच्ची							
(१) जागला एम जी एफ,	बम्बई	७८४ पौंड की कैंडी	६७० ० ०	७६३ ० ०	८२० ० ०	७५४ ० ०	७५२ ० ०
(२) २१६ एफ पी अमरीका एम जी	,,	,,	अप्राप्त	अप्राप्त	६८६ ० ०	६१८ ० ०	६१७ ० ०
(३) बंगाल देशी एम जी	,,	,,	५५५ ० ०	६२५ ० ०	६४० ० ०	६२० ० ०	५६५ ० ०
२ जूट कच्चा							
(१) फर्स्ट्स	कलकत्ता	४०० पौंड की गांठ	१६५ ० ०	१७० ० ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०	१७५ ० ०
(२) लाइटनिंग	,,	,,	१५० ० ०	१६० ० ०	१५० ० ०	१५० ० ०	१६० ० ०
(३) मार्गनाब ... मिडिल	,,	मन	२४ ० ०	३५ ० ०	३२ ८ ०	३२ ० ०	२५ ० ०
३ रेशम कच्चा							
(१) २४०० तना खामरू	मालदा	सेर	५० ० ०	५५ ० ०	५६ ० ०	६३ ० ०	६४ ० ०
(२) कच्चा ... किस्म का	बंगलौर	३६ तोले का पौंड	२२ ८ ०	२८ ० ०	२७ ८ ०	३१ ० ०	२६ ८ ०
४ ऊन, कच्चा							
(१) जोरिया सफेद बढ़िया	बम्बई	मन	२८० ७ ०	अप्राप्त	२७० १० ०	२६७ १० ०	२७७ ११ [illegible]
(२) ...ता	फालम्पाग पहुँचने पर	,,	१२० ० ०	१३५ ० ०	१६७ ८ ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०

(न) नियंत्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	
२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	
१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०	अप्राप्त	
अप्राप्त	१०५-१३-९	१०५-१३-९	९६-१३-९	९४-१३-९	अप्राप्त	१००-१३-६	
१५५- ०-०	१५०- ०-०	१३०- ०-०	१३०- ०-०	१६०- ०-०	१६५- ०-०	१७०- ० ०	
२४०- ०-०	१५५- ०-०	१८७-१५-०	२४९- ३-०	२२५- ०-०	१९०- ०-०	१६५- ०-०	
१२-१०-६	१३-१४-९	१२-१०-७	१२-१५-७	१४- ९-४	१२-१०-७	१२-१५-८	
७५०- ०-०	७२५- ०-०	६६७- ०-०	७०७- ०-०	७१४- ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	
९१०- ०-०	८८८- ०-०	८५७- ०-०	८६३- ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	
६०५- ०-०	५७५- ०-०	५५०- ०-०	५१५- ०-०	५४०- ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	
१६५- ०-०	१५५- ०-०	१४०- ०-०	१४०- ०-०	१५०- ०-०	अप्राप्त	१८०- ०-०	
१५०- ०-०	१४०- ०-०	१२५- ०-०	१२५- ०-०	१३५- ०-०	अप्राप्त	१६५- ०-०	
३२- ८-०	अप्राप्त	२७- ०-०	२७- ०-०	३२- ०-०	३२ -८ ०	३५- ८-०	
६६- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६५- ०-०	५६- ०-०	
३०- ०-०	अप्राप्त	२८- ०-०	२९- ०-०	२७- ८-०	अप्राप्त	२८- ०-०	
२७७-११-३	२७७-११-३	२७२- ९-०	२६७- ७-०	२७२- ९-०	२६७- ७-०	२६७- ७-०	
१७२- ८-०	१७५- ०-०	१७५- ०-०	१६५- ०-०	१६५- ०-०	१८०- ०-०	१८०- ०-०	

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	नवम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
५ मूँगफली							
(१) [illegible]	बम्बई	हन्डरवेट	६ ८ ०	५ १० ०	२४ ४ ०	२५ १२ ०	२५ ४ ०
(२) मशीन से छिला हुआ	कड्डालोर	मन	१ ६ ०	२४ १० २	४ १० ०	५ ६ ०	५ ४ ०
६ अलसी							
(१) [illegible]	बम्बई	हन्डरवेट	६ ० ०	८ ८ ०	६ ० ०	५ ४ ०	२५ ८ ०
(२) ५% मिश्रण छोटे दाने (बोल्ड)	कलकत्ता	मन	१६ १४ ०	२१ ८ ०	१ ४ ०	२० ४ ०	१६ ० ०
७ अरण्डी का बीज							
(१) सफेद किस्म का	मद्रास	,,	१७ १५ ०	१८ ० ०	१५ १५ ०	१५ ७ ०	१४ १५ ०
(२) छोटा मध्यम औसत ... का हैदराबाद	बम्बई	हन्डरवेट	७ ० ०	२८ ८ ०	४ ४ ०	२९ ४ ०	२३ ०
८ तिल							
(१) सफेद [illegible] ८५%	,,	,,	४ ० ०	४२ ० ०	४१ ० ०	४० ८ ०	४८ ० ०
(२) मिश्रित (काला)	मद्रास	मन	२ ४ ०	२८ ८ ०	५ ८ ०	२४ ८ ०	२७ ० ०
९ [illegible]							
(१) [illegible]	कलकत्ता	[illegible] मन	८ ८ ०	६ ४ ०	२१ ० ०	२६ ८ ०	२६ ८ ०
(२) [illegible]	बम्बई	मन	१ १२ ०	२ १४ ०	२५ ० ०	२२ ८ ०	२ १४ ०
(३) [illegible]	कानपुर	,,	२५ १२ ०	२८ ८ ०	२४ ४ ०	२१ १० ०	२२ १२ ०
१० बिनौला							
(१)	बम्बई	हन्डरवेट	१ ६ ६	१५ ७ ६	१६ ६ ५	१५ १४ ६	१४ १५ ७
(२)	अमरावती	८० पौंड का मन	८ २ ७	१० ७ ३	६ १४ ४	६ २ ५	१० २ २
११ नारियल का गोला							
मालाबार औसत [illegible] का	कालीकट	६५५.६ पौंड का कैंडी	२८ १ ०	२६५ ७ ०	३५४ ६ ०	३४० ० ०	३३२ १५ ०
१२ कोयला (न)							
(१) धुला हुआ [illegible]	[illegible] में पहुँचने पर	[illegible]	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०	१५ १२ ०
(२) [illegible]	,,	,,	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०
(३) न० ३० प्रथम श्रेणी	,,		१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०
१३ कच्चा लोहा							
नियत मूल्य	विशाखापटनम	,,	२५१ १२ ३	२४२ ४ ६	११६ १४ ४	१६१ ६ ४	१७६ ७ ४

(न) नियंत्रित मूल्य।

के भाव : १६५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	
३६- ४-०	३१- ४-०	३१- ४- ०	२७- ४-०	२६-१२-०	२६- ०-०	२४- ४-०	
२३-११-४	२०-१५-०	२२- ८- ०	१६- ६-०	१८- २-०	१७- १-०	१५-१३-०	
२७- ४-०	२४- ८-०	२३- ४- ०	२३- ८-०	२३- ४-०	२३- ८-०	२३- ०-०	
१६-१०-०	१७- ०-०	१७- ८- ०	१६- ४-०	१७- ६-०	१७- २-०	१६- २-०	
१६- ७-०	१४- ७-०	१४- ७- ०	१४-१५-०	१४-१५-०	१७-१५-०	१४- ०-०	
२३-१० ०	२१- ४-०	२२- २- ०	१६-१०-०	१६-१४-०	१६- ४-०	१८-१०-०	
अप्राप्त	४२- ०-०	४५- ०- ०	३८- ०-०	३३-१२-०	२८- ०-०	२५-१२-०	
२७- ०-०	२५- ०-०	२४- ०- ०	२६- ०-०	२१- ०-०	१६- ०-०	१५- ८ ०	
२७- ०-०	२४- ०-०	२६- ०- ०	२७- ०-०	२६- ०-०	२७- ०-०	२८- ०-०	
अप्राप्त	२१- ५-०	२२-१२- ०	२४- ४-०	२२- ६-०	२३- ८-०	२५- ०-०	
२३-१२-०	अप्राप्त	२२- १- ५	२४- ० ०	२४-१०-०	२४-१०-०	२२-१२-०	
१५- ६-१	१५- ३-२	१३-१३-१०	१३- ८-५	१२- ४-०	१२- ५-४	१२- ६-६	
१० ४-११	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	७- ८-०	
३२७- ८-०	३००- ०-०	३१०- ३- ०	३२०-१२-०	३२३- ८-०	३३१- ६-०	३२५-१४-०	
१५ १२-०	१५-१२-०	१५-१२- ०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४- ०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	
१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८- ०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	
१६२-३-१०	१५४-११-५	१२१- ४- ८	१४३- ०-७	१३४- ०-६	१४३-१-१०	अप्राप्त	

३. देश मे वस्तुश्रा

वस्तुए	बाजार	इकाइ	नवम्बर १६५३	जनवरा	फरवरा	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
१४ चमडा, कच्चा							
(१) नमक लगा सूखा गाय का	कलकत्ता	२० पौंड	अप्रात	१६ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०	१५ ० ०
(२) नमक लगा गाला भैंस का	कलकत्ता	२० पौंड	अप्राप्त	१० ० ०	१० ० ०	१० ० ०	१० ० ०
(३) नमक लगा गाला गाय का	कानपुर	कोडा	२६० ० ०	२६० ० ०	२७५ ० ०	२७५ ० ०	२०५ ० ०
(४) नमक लगा गाला भैंस का	,,	२० पौंड	६ ११ २	६ ११ २	१० १०-८	११ ६ १	१० ५ ६
१५ खालें, कच्ची							
बकरा का, औसत किस्म का	कलकता	१०० थान	अप्रात	३५० ० ०	३५० ० ०	३५० ० ०	३५० ० ०
१६ लाख							
(१) चपडा शुद्ध टा० एन०	,,	बंगाल मन	१०६ ८ ०	१०८ ० ०	६५ ८ ०	८७ ० ०	६१ ० ०
(२) बटन शुद्ध	,,	,,	११८ ० ०	१२० ० ०	११४ ० ०	१०६ ८ ०	११२ ८ ०
१७ रबड							
RMA IX RSS	कोटायम	१०० पौंड	१३२ ० ०	१३३ ० ०	१३३ ० ०	१४३ ० ०	१३३ ० ०

अर्द्ध निर्मित वस्तुए

वस्तुए	बाजार	इकाइ	नवम्बर १६५३	जनवरा	फरवरा	मार्च	अप्रैल
१. चमडा							
(१) गाय का चमडा	मद्रास	पौंड	३ १ ६	३ ० ३	३ १ ०	२ १५ ०	२ १४ ३
(२) भैंस का चमडा	,,	,,	२ ० ६	२ १ ६	२ १ ६	२ ० ६	२ ० ३
(३) भेड की खालें	,,	,	६ ८ ०	६ ३ ०	५ १५ ०	५ ११ ०	५ ८ ०
(४) बकरी का खालें	,,	,,	४ १० ६	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १३ ०
२ खनिज तेल							
(क) मिट्टी का तेल (न)							
(१) घान्या थाक	कलकत्ता	८ गैलन	१० ७ ६	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०
(२) बान्या थाक	,,	,	१० १४ ६	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०
(ख) पैट्रोल (न)							
(१) थाक पम्प पर	,,	गैलन	२ १२ ०	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६
(२) ,,	दिल्ली	,	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६
(३ ,	मद्रास	,,	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०
३ वनस्पति तेल							
क नारियल का तेल							
(१) साधारण औसत दर्जे का (तैयार)	कोचीन	६५४ पौंड का कैंडी	४८३ १३ १	५६२ ६ ०	५२५ १२ ५	४६५ ० ७	४८० १ ३
(२) कोचीन का बान्या, खुदरा	कलकत्ता	बंगाल मन	७४ ० ०	८० ० ०	८४ ० ०	७४ ० ०	७२ ० ०
(३) खुला	बम्बई	क्वार्टर	२२ ८ ०	२६ २ ०	२५ ४ ०	२ ० ०	२२ ४ ०

(न) नियंत्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	अक्तूबर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	
१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	
१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१४- ०-०	
२४५- ०-०	२३०- ०-०	२३०- ०-०	२४०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ० ०	
११- ०-७	११-११-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	
३५०- ७-०	३५०- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-७	३००- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-०	
११४- ०-०	१३८- ०-०	१४३- ०-०	१३७- ०-०	१४६- ०-०	१३६- ८-०	१५५- ८-०	
१२३- ०-०	१४२- ०-०	१५०- ०-०	१५६- ०-०	१६०- ०-०	१४७- ०	१६४- ८-०	
१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	
२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-११-६	२- ७-६	२-१०-६	
२- ०-०	२- ०-०	२- ०-६	२- ०-६	२- १-०	१-१५-६	२- १-०	
५- ८-०	५- ८-०	५- ०-०	५- ३-०	५- ३-०	५- ३-०	४-१४ ६	
४-१३-०	४-१३-०	४-१२-०	४-१४-०	४-१४-०	५- ०-०	५- ०-०	
६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	
१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१० -७-०	१०- ७-०	
२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	
२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	
२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	
४८६- ५-०	४४३-१४-७	४५३-१४-३	४७०- १-७	४७०- १-७	४८३-१३-१	४७८-१३-३	
७२- ०-०	६६- ०-०	६६- ०-०	६४- ०-०	६४- ०-०	अप्राप्त	६४- ०-०	
२२-१०-०	२१- ०-०	२१- ४-०	२०-१२-०	२१- ८-०	२१- ८-०	२१- ४-०	

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	नवम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
ख. मूँगफली का तेल							
(१) खुदरा	मद्रास	५०० पौंड की कैंडी	२६५ ० ०	३१८ ० ०	३१० ० ०	३०८ ० ०	३२४ ० ० *
(२) खुला	बम्बई	क्वाटर	१६ ८ ०	१८ १० ०	१७ ४ ०	१७ २ ०	१८ २ ०
(३) गुण्टूर (टीन बन्द)	कलकत्ता	बंगाल मन	६० ० ०	६० ० ०	५७ ० ०	५७ ० ०	५८ ८ ०
ग सरसों का तेल							
(१) खुदरा (मिल से निकलते समय)	”	”	६४ ४ ०	७४ ८ ०	६६ ८ ०	६० ० ०	६१ ८ ०
(२)	पटना	मन	६३ ८ ०	७३ ० ०	६५ ० ०	५९ ० ०	६० ० ०
(३)	कानपुर	”	६० ० ०	६९ ९ ०	५८ ० ०	५४ ० ०	५८ ० ०
घ अरण्डी का तेल							
(१) नं० १ बढ़िया वाला (जहाज पर)	कलकत्ता	मन	७५ ० ०	७२ ० ०	७१ ० ०	६३ ० ०	६६ ० ०
(२)	मद्रास	५०० पौंड की कैंडी	२६५ ० ०	२८५ ० ०	२३० ० ०	२१० ० ०	२२० ० ०
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	क्वाटर	अप्राप्त	२० ० ०	१९ ८ ०	१८ १२ ०	२१ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) कच्चा खुदरा (मिल से निकलते समय)	कलकत्ता	मन	४४ ८ ०	५१ ० ०	४८ ० ०	४७ ० ०	४४ ० ०
(२)	बम्बई	क्वाटर	१४ १२ ०	१६ ० ०	१५ ८ ०	१३ १२ ०	१४ १२ ०
[illegible]. खली							
(१) मूंगफली	कलकत्ता	मन	११ ० ०	७ ८ ०	७ ८ ०	७ ० ०	७ ८ ०
(२) नारियल	बम्बई	१॥ हंडरवेट	२३ ४ ०	२५ ८ ०	२७ ० ०	२७ ० ०	२४ ० ०
(३) तिल	”	टन	३०० ० ०	३२५ ० ०	३३५ ० ०	३२५ ० ०	३३० ० ०
५ सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरी	कलकत्ता	५ पौंड	६ १२ ०	६ १० ०	६ १४ ०	६ ९ ०	६ १० ०
(२) २० ”	”	”	८ ५ ६	८ ३ ०	८ ८ ०	८ ९ ०	८ १२ ०
(३) ४० ”	”	”	१२ ०-०	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०	१२ ० ०
(४) सूत २० नम्बरी	बंगलौर	१ पौंड	१७ २ ०	१६ ११ ०	१७ ४ ०	१७ ८ ०	१७ १० ०
६ नारियल की सुतली							
(१) अल्मा अलापन	कोचीन	६ हन्डरवेट की कैंडी	२६५ ० ०	२७५ ० ०	२७५ ० ०	२७३ ५ ०	२७८ ५ ०
(२) अनजेंगो बढ़िया	”	”	३१० ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०	३१५ ० ०

(न) नियंत्रित मूल्य। * समायोजित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	
३०६- ०-०	२६५- ०-०	२७२- ०-०	२३५- ०-०	२२७- ०-०	२२०- ०-०	२१५- ०-०	
१८- ३-०	१५- ६-०	१५-१२-०	१४- ०-०	१४- ०-०	१३-१०-०	२१-१०-०	
५६- ०-०	४६- ०-०	५१- ०-०	४३- ८-०	४३- ८-०	अप्राप्त	४०- ०-०	
६७- ८-०	६०- ८-०	६१- ८-०	६४- ०-०	६७- ०-०	६७- ८-०	६४- ८-०	
६८- ०-०	६०- ०-०	५७- ०-०	६०- ०-०	६५- ०-०	६१- ०-०	६३- ०-०	
६०- ०-०	५४- ८-०	५५- ०-०	५८- ८-०	६४- ०-०	६७- ८-०	५६- ०-०	
६६- ०-०	५६- ०-०	५६- ०-०	५३- ०-०	५३- ०-०	५५- ०-०	५२- ०-०	
२२७- ०-०	१८७- ०-०	२००- ०-०	१८०- ०-०	१७८- ०-०	१८५- ०-०	१७६- ०-०	
२१- ०-२	अप्राप्त	२०- ०-०	१६- ८-०	१५- ७-११	१४- ०-०	१३- ०-०	
४४- ८-०	३६- ०-०	३६- ८-०	३४- ८-०	३७- ०-०	३६-१२-०	३४- ८-०	
१५-१२-०	१२-१२-०	१२-१४-०	१२-१२-०	१३- ०-०	१३- २-०	१२- ८-०	
८- ८-०	९- ०-०	८- ८-०	८- ०-०	८- ८-०	८- ४-०	८- ०-०	
२४- ०-०	२१- ०-०	२०- ०-०	१९- ०-०	२०- ०-०	१८- ८-०	१८- ८-०	
३४०- ०-०	३२०- ०-०	३३०- ०-०	३२०- ०-०	३२५- ०-०	३२५- ०-०	३८५- ०-०	
६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६- ८-०	६- ८-०	
९- ०-०	९-० -०	९- ०-०	९- ०-०	९- ०-०	९- ०-०	९- ०-०	
१२- ०-०	१२-० -०	१२- ०-०	१२- ०-०	१२- ०-०	१३- ०-०	१३- ०-०	
१७-१२-०	१८- २-०	१७-१४-०	१७-१४-०	१७-१४-०	१७-१२-०	अप्राप्त	
२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२६५- ०-०	२८०- ०-०	२८२- ८-०	२८५- ०-०	
३०३- ५-०	२८८- ५-०	२८०- ०-०	२७४- ३-०	३००- ०-०	३१०- ०-०	३०५- ०-०	

२. देश मे वस्तुओं

वस्तुए	बाजार	इकाइ	नवम्बर १६५३	जनवरी	फरवरा	मार्च	अप्रैल
७ लोहा आर इस्पात			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
क कच्चा लाहा (न)							
(१) फाउडरी ०० १	कलकता पहुचने पर	टन	१४३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०	१६३ ० ०
(२) लाहा बेसिक	,,	,,	१२७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०	१४७ ० ०
ख अर्द्ध शुद्ध (न)							
फिर गलान के लिये टुकडे	कलकता	,,	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०	२८६ ० ०
ग धातु (लोहे के अतिरिक्त)							
(१) जस्ता स्पेल्टर (बिजला वाला) मुलायम	,,	हडरवट	५४ ० ०	५४ ० ०	५३ ८ ०	५३ ० ०	५७ ८ ०
(२) पातल पाली धातु-सधान (ब्र सियर) ४"×४"	,,	,,	१५२ ८ ०	१४६ ४ ०	१५७ १२ ०	१६५ ० ०	१७७ ८ ०
(३) पातल का चादरें (गिलेपडस)	बम्बई	,,	१४७ ० ०	१४६ ० ०	१५५ ० ०	१५६ ० ०	१६० ० ०
(४) ताम्बे का चादरें (इरिडयन)	,	,,	१८६ ० ०	१६५ ८ ०	२०२ ० ०	१६६ ० ०	२०१ ० ०
घ लकडी							
सागौन के गोल लट्ठे ५ फीट और उससे अधिक परिधि वाले	बल्लारशाह (दक्षिण चादा, मध्य प्रदेश)	घन फुट	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०	११ ० ०

निर्मित वस्तुएं

वस्तुए	बाजार	इकाइ	नवम्बर १६५३	जनवरी	फरवरा	मार्च	अप्रैल
१ टेक्सटाइल							
क जूट का माल							
टाट							
(१) १० १/२ औंस ४०"	कलकता	१०० गज	५१ ६ ०	४७ १० ०	४८ २ ०	४६ ० ०	४५ १० ०
(२) ८ औंस ४०"	,,	,,	३६ ४ ०	३७ १४ ०	३७ १२ ०	३७ ४ ०	३६ ० ०
बोरियाँ							
(१) बी टि्वल	,,	१०० बोरियाँ	१०२ ८ ०	१०५ ८ ०	१०३ २ ०	१०८ ० ०	१०६ ० ०
(२) सी भारा बोरियाँ	,	,,	१०० १२ ०	१०३ ० ०	१०४ ८ ०	११२ ८ ०	११८ ८ ०
ख सूती माल							
(१) कोरा कमीज का कपडा १२१ ३५"× ३८ गज×७ पौंड	बम्बई	एक थान	१६ ३ ८	१६ ३ ८	१७ ३ ६	१७ ३ ६	१७ ३ ६
(२) कोरा स्टैंडर्ड कमीज का कपडा ३८ गज	,,	पौंड	२ ० ०	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १४ ७
(३) छींट ४५८८ ४३"× ३८ गज	,,	एक थान	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२६ २ ०	२६ २ ०
(४) कोरी धोतियाँ मध्यम ४३"× १०/२ गज× २ ६/१६ पौंड	,,	एक जोडा	५ ११ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	६ ६ ०

(न) नियंत्रित मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	
१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	
१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	
२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	
५७- ८-०	५९- ८-०	५८- ८-०	५२- ८-०	६०- ०-०	६२- ०-०	५८- ०-०	
१७२- ०-०	१६७- ०-०	१६८- ०-०	१६३- ८-०	१६० -८-०	१६३- ८-०	१६४- ८-०	
१६४- ०-०	१६५- ०-०	१६०- ०-०	१५६- ०-०	१५४ -०-०	१६३- ०-०	१६०- ०-०	
२०१- ८-०	२०१- ८-०	१९६- ८-०	१९६- ८-०	२०० -०-०	२१६- ०-०	२०९ ०-०	
११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११ -०-०	११- ०-०	११- ०-०	
४५-१२-०	४६- ४-०	४७- ८-०	४७- ४-०	४९ -०-०	४६- ८-०	४८ ०-०	
३६- २-०	३७- ०-०	३७- ८-०	३६-१२-०	३८ -८-०	३८- ०-०	३८- २-०	
११२-१४-०	११३- ६-०	१०९- ८-०	१०४-१२-०	११७ -८-०	११३- २-०	१२०-१०-०	
११५- ८-०	११४- ८-०	१११-१२-०	१०४- ८-०	११५ -०-०	११८ ८-०	१२२- ८-०	
१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७ -३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	
१-१४-७	१-१४-७	१-१४-७	१-१४-३	१-१४-३	१-१४-३	१-१४-३	
२६- २-०	२६- २-०	२६- २-०	२४-१५-०	२४-१५-०	२४-१५-०	२४-१५-०	
६- ८-०	६- ८-०	६- ८-०	६- ६-०	६ -६-०	६- ६-०	६- ६-०	

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	नवम्बर १६५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(५) रंगीन केप—कमीज का कपडा एफ० एम०—१०५	मद्रास	गज	१- ०६	०-१५-३	०-१५-६	०-१५-६	०-१५-६
(६) एम—५०१ ब्लीच किया मलमल ४८"×२०" गज	,,	२० गज	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४ ०	१६- ४-०	१६- ४-०
ग. रेयन और रेशम का माल							
(१) टैफेटा कोरा २६–५०", ४–३/४ १ से ५ पौंड तक (रेयन)	बम्बई	गज	०- ७ ०	०- ७-०	०- ८-३	०- ६-०	०- ६ ६
(२) फूजी (चानी रेशम)	,,	५० गज का थान	२७५- ०-०	अप्राप्त	३१०- ० ०	३४०-०-०	४००- ०-०
२. लोहे और इस्पात से निर्मित वस्तुएं (न)							
लोहे और इस्पात की पनालीदार चादरें २४ गज	कलकत्ता	हंडरवेट	३४ ०-०	३४- ० ०	३४- ० ०	३४- ०-०	३५- ०-०
३. अन्य निर्मित वस्तुएं							
(क) सीमेंट (न) भारतीय (स्वस्तिका)	,,	टन	८२- ६-०	८२- ६-०	८२- ६-०	८७- ६-०	८७-१५ ०
(ख) काँच (खिड़कियों का)							
(१) बड़ा साईज३०"×२४" तक	,,	१०० वर्ग फुट	६०- ०-०	६०- ०-०	६०- ०-०	६०- ०-०	६०- ० ०
(२) मध्यम साईज	,,	,,	५५- ०-०	५३- ०-०	५३- ०-०	५५- ०-०	५५- ० ०
(ग) कागज सफेद छपाई, डिमाई १४ पौंड और ऊपर	,,	पौंड	० १०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-०
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फटकरी	,,	हंडरवेट	१२- ८-०	१३- ०-०	१३ ०-०	१३- ०-०	१३- ०-०
(२) गंधक का तेजाब	,,	टन	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०
(ङ) रंग लाल सीसे का सूखा असली	,,	हंडरवेट	६०- ८-०	८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०

(न) नियन्त्रित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	
०-१५-६	१- ०-०	१- ०-०	१- ०-०	१- ०-०	१- ०-०	१- ०-०	
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	
०-१०-०	०- ८-०	०- ८-०	०- ८-६	०- ८-६	०- ७-६	०- ७-६	
अप्राप्त	३४०- ०-०	३४०- ०-०	३१५- ०-०	३१५- ०-०	३३०- ०-०	३४२- ८-०	
३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	
८७-१५-०	८७-१५-०	८८- ०-०	८८- ५-०	८८- ५-०	८८ ५-०	८९- ०-०	
६०- ०-०	६५- ०-०	४५- ०-०*	४३- ०-०	४३- ०-०	४३- ०-०	४३- ०-०	
५५- ०-०	६०- ०-०	४३- ०-०*	४० ०-०	४०- ०-०	४०- ०-०	४० ०-०	
०-१०-०	०१-०-७	०-१०-७	० १०-७	०-१०-७	० १०-७	०-१०-७	
१३- ०-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४ ०	
२३५- ०-१	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२२०- ०-०	२२०- ० ०	२२०- ०-०	
८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ० ०	८८- ०-०	८८- ०-०	८८- ०-०	८८- ०-०	

*२६ ६-५४ को समाप्त होने वाले सप्ताह से भारतीय काच के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये काच के मूल्य दिये गये हैं।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत अङ्क में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहां दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अन्तिम नहीं मान लेना चाहिये। —सम्पादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप
अभिरक्षता	Custody	फुहार प्रणाली	Spray Precess
अम्लता	Acidity	बदल	Substitute
अर्द्ध स्वचालित	Semi-automatic	बाना	Weft
अलाभप्रद	Unprofitable	बिनौला	Cottonseed
अवधि	Period	बुनाई मिल	Weaving Mill
उचित मजूरी	*Reasonable Wage*	बेलन प्रणाली	Roller Process
उथल पुथल	Upheaval	मक्खन निकला दूध	Skimmed Milk
उपभोग	Consumption	मलमल	Muslin
उपार्जन	Earning	मान्यता	Credit
कण्डिका	Para	मौखिक साक्षी	Oral Evidence
कटौती	Deduction	लागत	Cost
कताई मिल	Spinning Mill	विस्तार	Expansion
कपड़े	Fabrics	वृद्धि	Rise
कारीगरी	Workmanship	व्यापक	Comprehensive
क्रियाशील	*Dynamic*	शंकु	Cone
खपत	Consumption	शक्तिचालित करघा	Powerloom
खली	Oil Cake	शुद्ध दूध	Whole Milk
घटना	Event	श्रेणी	Category
घरेलू	Domestic	श्रेष्ठता	Efficiency
चमड़े के थान	Hide pieces	संगठित मिल उद्योग	*Organised Mill Industy*
छपा हुआ	Printed	सम्पर्क	Contact
तकुवा	Spindle	सम्बद्ध	Affiliated
तरल	Fluid	सम्बन्ध	*Relation*
ताना	Warp	सहकारी समिति	Co operative Society
तीव्र गति	Rapid Rate	सुधरे हुए	*Improved*
दुग्धचूर्ण	Milk Powder	सुरक्षितीकरण	Reservation
देय ऋण	Debt due	सूती कपड़ा उद्योग	*Cotton Textile Industry*
नियोजन	Employment	सृजन	Creation
पूंजी	*Capital*	स्वचालित	Automatic
पाली	Shift	स्थिर रखना	*To keep pegged*
पीपा	Drum	हाथ करघा	Hand loom
प्रसंविदा	Covenant	क्षेत्र, निजी	Private Sector
प्रस्तावित	Proposed	क्षेत्र, सरकारी	Public Sector

परिशिष्ट

१. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार-प्रतिनिधि।

२. भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि।

परिशिष्ट—१

विदेशों में भारत सरकार के व्यापार प्रतिनिधि

नाम और पता	कार्य क्षेत्र
यूरोप	
(१) लन्दन	
( ) श्री एल० आर० एस० सिंह, आई० सी० एस०, मन्त्री (व्यापारिक), (२) डा० डी० आ० मेनन और (३) श्री जे० एम० शाह, ब्रिटेन में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)। 'इण्डिया हाउस', आल्डविच, लन्दन, डब्ल्यू० सी० २। तार का पता :—हिकोमिण्ड (HICOMIND), लन्दन।	ब्रिटेन और आयर
(२) पेरिस	
श्री एस० जी० रामचन्द्रन, आई० एफ० एस०, भारतीय दूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), १५, रियू अलफ्रेड डेहोडेंक, पेरिस १६ एमे (फ्रांस)। तार का पता :—इण्डाट्रेकम (INDATRACOM), पेरिस।	फ्रांस और नारवे
(३) जनेवा	
श्री एम० सेन, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, १-३ रियू चन्टेपोलेट, मैशन प्लाजा (दूसरी मंजिल), जनेवा (स्विटजरलैण्ड)। तार का पता :—कनजेण्डिया (CONGENDIA) जनेवा।	स्विटजरलैण्ड
(४) रोम	
श्री एम० एस० बाजपेई, भारतीय राजदूतावास के व्यापारिक परामर्शदाता, व्या फ्रैंसिस्को डेन्जा ३६ रोम (इटली)। तार का पता :—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रोम।	इटली, यूनान और यूगोस्लाविया
(५) बोन	
श्री बी० पी० आदरकर, जर्मनी में भारतीय राजदूतावास के मन्त्री (व्यापारिक), २६२, कोब्लेन्जर स्ट्रासे, बोन (जर्मनी)। तार का पता :—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बोन।	जर्मनी
(६) वायना	
डा० के० वी० रामस्वामी, आस्ट्रिया में भारत के वाइस कंसल और एजेन्सी, भारतीय लीगेशन, १७, गेयरगैसे, वायना, १८ (आस्ट्रिया)। तार का पता :—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), वायना।	आस्ट्रिया
(७) ब्रसेल्स	
बेलजियम में भारतीय राजदूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), ६८, [illegible], ब्रसेल्स (बेलजियम)। तार का पता :—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), ब्रसेल्स।	बेलजियम
(८) स्टाकहोम	
श्री पी० टी० बी० मेनन, भारतीय लीगेशन के व्यापारिक एजेन्ट, स्ट्रैण्डवेजेन ४७, स्टाकहोम (स्वीडन)। तार का पता :—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), स्टाकहोम।	स्वीडन, फिनलैण्ड और डेनमार्क

नाम और पता	कार्यक्षेत्र
अमेरिका	
(९) न्यूयार्क	
श्री ए० एस० लाल, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, २ ईस्ट ६४ स्ट्रीट, न्यूयार्क, २१, एन० वाई०। तार का पता:—कनजेण्डिया (CONGLNDIA), न्यूयार्क।	पूर्वी संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और क्यूबा
(१०) सेन फ्रांसिस्को	
श्री एम० ए० हुसैन, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, ४१७, मान्टगोमरी स्ट्रीट, सेन फ्रांसिस्को, कैलीफोरनिया।	पश्चिमी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका
(११) वाशिंगटन	
श्री एस० कृष्णमूर्ति, आई० एफ० एस०, भारतीय दूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), २१०७, मैसेचुसेट्स एवेन्यू, एन० डब्ल्यू० वाशिंगटन—८ डी० सी० (संयुक्त राष्ट्र अमेरिका)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), वाशिंगटन।	संयुक्तराष्ट्र अमेरिका और मैक्सिको
(१२) ओटावा	
श्री आर० अगजेल खान, कनाडा में भारतीय हाई कमीशन के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), २०० मेकलोरन स्ट्रीट, ओटावा, ओन्टेरियो (कनाडा)। तार का पता:—हिकोमिण्ड (HICOMIND), ओटावा।	कनाडा
अफ्रीका और मध्यपूर्व	
(१३) मोम्बासा	
श्री ए० बी० थदानी, मोम्बासा में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, जुबली इन्श्योरेन्स बिल्डिंग, पो० बा० नं० ६१४, मोम्बासा (केनिया)। तार का पता:—इण्डोकम (INDOCOM), मोम्बासा।	पूर्वी अफ्रीका (केनिया, उगाण्डा और टांगानिका), जन्जीबार, उत्तरी रोडेशिया, दक्षिणी रोडेशिया और न्यासालैण्ड
(१४) सिकन्दरिया	
श्री रघुनाथ सिन्हा, आई० एफ० एस०, मिस्र में भारत के कंसल जनरल तथा सूडान, सीरिया साइप्रस और जार्डन में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, अल-बसीर बिल्डिंग, नं० ५, रूय आदिब बे इसाक, अवेन्यू डि ला रेनी नाज़्लो, सिकन्दरिया (मिस्र)। तार का पता:—"इण्डियाकम (INDIACOM), सिकन्दरिया।	मिस्र, सूडान, सीरिया, लेबनान, साइप्रस और ट्रांसजार्डन
(१५) तेहरान	
श्री एम० के० रे, भारतीय राजदूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), अवेन्यू शाह रजा, तेहरान (ईरान)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), तेहरान।	ईरान
(१६) बगदाद	
डा० जगदीश चन्द्र, भारतीय राजदूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), ८/८, सफी-अल-दीन-इल हिली स्ट्रीट, वजीरिया, बगदाद (ईराक)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बगदाद।	ईराक
(१७) अदन	
श्री ए० एस० चवन, अदन में भारत सरकार के कमिश्नर, अदन। तार का पता:—कोमिण्ड (COMIND), अदन।	अदन, ब्रिटिश सोमालीलैण्ड और इटैलियन सोमालीलैण्ड

नाम और पता	कार्यक्षेत्र
आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड	
(१८) सिडनी श्री एस० वी० पटेल, आई० एफ० एस०, भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, प्रुडेन्शल बिल्डिंग, ३९-४९, मार्टिन प्लेस, सिडनी (आस्ट्रेलिया)। तार का पता:—आस्ट्रिण्ड (AUSTRIND), सिडनी।	आस्ट्रेलिया
(१९) वेलिंगटन श्री एन० केशवन्, न्यूज़ीलैण्ड में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), विन्डसर बिल्डिंग, ४९, विलिस स्ट्रीट, वेलिंगटन, (न्यूज़ीलैण्ड)। तार का पता:—ट्रैकोमिण्ड (TRACOMIND), वेलिंगटन।	न्यूज़ीलैण्ड
एशिया	
(२०) टोकियो डा० ए० एस० शर्मा, जापान में भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), एम्पायर हाउस (नांगाइ बिल्डिंग), मारूनोची, टोकियो (जापान)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), टोकियो।	जापान
(२१) कोलम्बो श्री के० आर० एफ० खिलनानी, आई० एफ० एस०, लंका में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), पो० बा० न० ८९६, फोर्ट, कोलम्बो। तार का पता:—ट्रेडिण्ड (TRADIND), कोलम्बो।	लंका
(२२) रंगून श्री एम० पी० माथुर, आई० एफ० एस०, भारत के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), स्लटेरिया बिल्डिंग, फायरे स्ट्रीट, पो०बा०न० ७५१, रंगून (बर्मा)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रंगून।	बर्मा
(२३) कराची श्री एन० थान, आई०, एफ० एस०, पाकिस्तान में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), चारटर्ड बैंक चैम्बर्स, "वलीका महल," एन० जे० रेटना रोड, न्यू टाउन, कराची-५ (पश्चिमी पाकिस्तान)। तार का पता:—इण्ट्राकम (INTRACOM), कराची।	पाकिस्तान
(२४) ढाका श्री पी० दासगुप्ता, पाकिस्तान में भारत के हाई कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), गोपी कृष्ण लेन, पो० आ० रामना, ढाका (पूर्वी पाकिस्तान)। तार का पता:—"गुडविल" (GOODWILL), ढाका।	पूर्वी पाकिस्तान
(२५) सिंगापुर श्री जे० कोहल्हो, आई० एफ० एस०, मलाया में भारत सरकार के प्रतिनिधि के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), इण्डिया हाउस, पो० बा० न० ८३६, सिंगापुर (मलाया)। तार का पता:—इण्डिट्रेकम (INDITRACOM), सिंगापुर।	मलाया
(२६) मनीला मन्त्री, व्यापारिक विभाग, भारतीय लीगेशन, ६१४-नेग्रास्त्रा, मनीला (फिलिपाइन)। तार का पता:—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), मनीला।	फिलिपाइन
(२७) जकार्ता श्री के०डी० मसीन, आई० एफ०एस० भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी, पो०बा०न० १७८-४४, केबुन सिराह, जकार्ता (इण्डोनेशिया)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), जकार्ता।	इण्डोनेशिया
(२८) बैंकाक श्री गुरुबचनसिंह, आई० एफ० एस०, भारतीय राजदूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक), बैंकाक (थाइलैण्ड)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बैंकाक।	थाइलैण्ड

सूचना:—(१) तिब्बत में निम्नलिखित अधिकारी भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं:—
१. गंगटोक, सिक्कम में भारतीय पालिटिकल अफसर के व्यापारिक सेक्रेटरी।
२. भारत के व्यापार एजेन्ट, यातुंग (तिब्बत)।

(२) जिन देशों में अलग व्यापारिक प्रतिनिधि नहीं हैं, उनमें भारतीय राजदूत और कन्सलर अफसर भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं।

परिशिष्ट—२

भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि

देश	पद	पता
१. अफग़ानिस्तान	भारत में शाही अफगान राजदूतावास के आर्थिक एटैची।	२४, रैटण्डन रोड, नई दिल्ली।
२. अमेरिका	भारत में अमेरिकन दूतावास के आर्थिक मामलों के कौंसिलर।	बहावलपुर हाउस, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली।
३. आस्ट्रिया	भारत में आस्ट्रिया के व्यापार प्रतिनिधि।	कोन्स मैनशन, बेस्टियन रोड, फोर्ट, बम्बई।
४. आस्ट्रेलिया	(१) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकेंटाइल बेंक बिल्डिंग, ५२/६६, महात्मा गांधी रोड, जनरल पो० आ० बा० न० २१७, बम्बई।
	(२) भारत मे आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	२, फेअरली प्लेस, कलकत्ता।
५. इटली	भारत में इटली के राजदूतावास के व्यापारिक सेक्रेटरी।	१७, यार्क रोड, नई दिल्ली।
६. इण्डोनेशिया	भारत में इण्डोनेशियन दूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	२१, कर्जन रोड, नई दिल्ली।
७. कनाडा	(१) भारत में कनाडा हाइ कमीशन के व्यापारिक कौंसिलर।	४, औरंगजेब रोड, नई दिल्ली।
	(२) भारत में कनाडा हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	ग्रेशम एश्योरेन्स हाउस, मिंट रोड, बम्बई।
८. चीन	भारत में चीनी गणतन्त्र के राजदूतावास के व्यापारिक मामलों के कौंसिलर।	जींद हाउस, लिटन रोड, नई दिल्ली।
९. चेकोस्लोवाकिया	(१) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक एटैची।	२५, औरंगजेब रोड, नई दिल्ली।
	(२) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	हिमालय हाउस, पालटन रोड, बम्बई।
१०. जर्मनी	भारत में जर्मनी के संघीय गणराज्य के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	८६, सुन्दर नगर, मथुरा रोड, नई दिल्ली।
११. जापान	भारत मे जापानी दूतावास के सेकण्ड सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	४, सरक्युलर रोड, डिप्लोमेटिक एनक्लेव, नई दिल्ली।
१२ डेनमार्क	भारत में शाही डैनिश लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर।	पोलोन्जी मैनशन, न्यू काफ परेड, बम्बई।
१३. तुर्की	भारत में तुर्की दूतावास के व्यापारिक एटैची।	मेडन्स होटल, दिल्ली।
१४. नारवे	भारत मे नारवे के व्यापार कमिश्नर।	इम्पीरियल चेम्बर्स, विलसन रोड, पो० आ०बा० न० २६४, बम्बई १।
१५. नीदरलैंड	भारत में नीदरलैंड राजदूतावास के व्यापारिक एटैची।	२६८, बाजार गेट स्ट्रीट, बम्बई।
१६. न्यूज़ीलैंड	भारत मे न्यूज़ीलैंड सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैंटाइल बैंक बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, म० गांधी रोड, बम्बई-१।